ख प्रौढाके भावको प्राप्त भई और कोई एक मानवती घने दिनोंसे मानकर रही हुती सो पतिको रणमें उद्यमी जान मान तज पतिके गले लगी अर अति स्नेह जनाया, अर रणयोग्य शिक्षा देती भई अर कोई एक कमलनयनी भरतारके वदनको ऊंचाकर स्नेहकी दृष्टिकर देखती भई अर युद्धमें दृढ करती भई अर कोईयक सामंतनी पतिके वक्षस्थल में अपने नखका चिन्हकर होनहार शस्त्रोंके घावनको मानों स्थानक करती भई। या भांति उपजी है चेष्टा जिनके ऐसी राणी रौताणी अपने प्रीतमोंको नाना प्रकारके स्नेहकर वीर रसमें दृढ करती भई।

तब महा संग्रामके करणहारे योधा तिनसे कहते भए—हे प्राणवल्लभे। नर वेई हैं जे रणमें प्रशंसा पावें तथा युद्धके सन्मुख जीव तजें तिनकी शत्रु कीर्ति करें हाथिनिके दांतिनिविषै पग देय शत्रुवोंके घाव कर तिनकी शत्रु कीर्ति करें पुण्यके उदय बिना ऐसा सुभटपना नाहीं। हाथियोंके कुंभस्थल विदारणहारे नरसिंह तिनको जो हर्ष होय है सो कहिवेको कौन समर्थ है? हे प्राणप्रिये! क्षत्रीका यही धर्म है जो कायरोंको न मारें, शरणागतको न मारें, न मारिवे देय। जो पीठ देंय तापर चोट न करें, जापै आयुध न होय तासों युद्ध न करें सो बाल वृद्ध दीनको तजकर हम योधावोंके मस्तक पर पड़ेंगे, तुम हर्षित रहियो हम युद्धविषै विजय कर तुमसे आय मिलेंगे। या भांति अनेक वचननिकर अपनी अपनी रौताणियोंको धीर्य बंधाय योधा संग्रामके उद्यमी घरसे रणभूमिको निकसे। कोई एक सुभटानी चलते पतिके कण्ठ विषै दोनों भुजासे लिपट गई अर हीडती भई जैसे गजेन्द्रके कंठविषै कमलनी लटकै अर कोई एक रौताणी स्त्री वक्तर पहिर पतिके अंग से लग अंगका स्पर्श न पाया सो खेदखिन्न होती भई अर कोई एक अर्द्ध बाहुलिका कहिए पेटी सो वल्लभके अंगसे लागी देख ईर्षाके रससे स्पर्श करती भई कि हम टार इनके दूजी इनके उरसे कौन लगे यह जान लोचन संकोचे तब पति प्रियाको अप्रसन्न जान कहते भए-हे प्रिये! यह आधा वक्तर है स्त्रीवाची शब्द नाहीं, तब पुरुषका शब्द सुन हर्षको प्राप्त भई, कोई एक अपने पतिको ताम्बूल चबावती भई अर आप तांबूल चावती भई। कोई एक पतिने रुखसत करी तौभी केतीक दूर पतिके पीछे पीछे जाती भई पतिके रणकी अभि-

लापा सो इनकी ओर निहारै नाहीं अर रणकी भेरी वाजी सो योद्धानिका चित्त रणभूमिविषै गमन अर स्त्री निसूं विदा होना सो दोनों कारण पाय योधावोंका चित्त मानों हिंडोले हींडता भया। रौतानियोंको तज रावत चले तिन रौतानियोंने आंसू न डारे, आंसू अमंगल हैं अर कैएक योद्धा युद्धविषै जायवेकी शीघ्रता कर वक्तर भी न पहिर सके, जो हथियार हाथ आया सोही लेकर गर्वके भरे निकसे, रणभेरी सुन उपजा है हर्ष जिनको शरीर पुष्ट होय गया सो वक्तर अंगविषै न आवै अर कई एक योधावोंके रणभेरीका शब्द सुन हर्ष उपजा सो पुराने घाव फट गए तिनमेंसे रुधिर निकसता भया अर काहूने नवा वक्तर बनाय पहिरा सो हर्षके होनेसे टूटगया सो मानों नया वक्तर पुराने वक्तरके भावको प्राप्त भया अर काहूके सिरका टोप ढीला होय गया सो प्राणवल्लभा दृढकर देती भई अर कोईएक सुभट संग्रामका लालसी ताके स्त्री सुगन्ध लगायवेकी अभिलाषा करती भई सो सुगन्धमें चित्त न दिया, युद्धको निकसा अर ते स्त्रियां व्याकुलतारूप अपनी अपनी सेजपर पड़ रहीं।

अथानन्तर प्रथमही लंकासे हस्त प्रहस्त राजा युद्धको निकसे। केसे हैं दोनों? सर्वमें मुख्य जो कीर्ति सोई भया अमृत ताके आस्वादनमें लालसी अर हाथियोंके रथपर चढे, नाहीं सहसके हैं वैरियोंका शब्द अर महा प्रतापके धारक शूरवीर, सो रावणको विना पूछे ही निकसे। यद्यपि स्वामीकी आज्ञा विना कार्य करना दोष है तथापि धनीके कार्य को विना आज्ञा जांय तो दोष नाहीं, गुणके भावको भजे है। मारीच सिंह जघन्य स्वयम्भू शंभू प्रथम विस्तीर्ण वलसे मंडित शुक अर सारस चांद सूर्य सारिखे गज अर बीभत्स तथा वज्राक्ष वज्रभूति गम्भीरनाद नक्र मकर वज्रघोष उग्रनाद सुन्द निकुम्भ कुंभ संध्याक्ष विभ्रम क्रूर माल्यवान खर निश्चर जम्बू माली शिखि वीरउद्धर्तक महाबल यह सामंत नाहरोंके रथ चढे निकसे अर वज्रोदर शक्रप्रभ कृतान्त विकटोदर महामणि अशनिघोष चन्द्र चन्द्रनख मृत्युभीषण वज्रोदर धूम्राक्ष मुदित विद्युज्जिहव महा मारीच कनक क्रोधनु क्षोभण द्वन्द्व उद्दाम डिंडी डिंडम डिंभव प्रचंड डमर चंड कुंड हालाहल इत्यादि अनेक राजा व्याघ्रोंके रथ चढे निकसे। वह कहै मैं आगे रहूं वह कहै मैं आगे रहूं। शत्रुके विध्वंस करनेको है

प्रवृत्त बुद्धि जिनकी, विद्याकौशिक विद्याविख्याक सर्पवाहू महाद्युति शंख प्रशंख राजभिन्न अंजनप्रभ पुष्पक्रूर महारक्त घटाश्रु पुष्पखेचर अनंगकुसम कामावर्त्त स्मरायण कामाग्नि कामराशि कनकप्रभ शशिमुख सौम्यवक्र महाकाम हैमगौर यह पवन सारिखे तेज तुरंगोंके रथ चढे निकसे अर कदंब विटप भीमनाद अपनाद भयानक शार्दूल सिंह वलांग विद्युदंग ल्हादन चपल चाल चंचल इत्यादि हाथियोंके रथ चढे निकसे। गौतम स्वामी राजा श्रेणिकसूं कहे हैं--हे मगधाधिपति। कहां लग सामतोंके नाम कहें सवनिमें अग्रेसर अढाई कोडि निर्मलवंशके उपजे राक्षसोंके कुमार देवकुमार तुल्य पराक्रमी प्रसिद्ध हैं यश जिनके सकल गुणोके मंडल युद्धको निकसे, अर महा वलवान मेघवाहन कुमार इन्द्र समान रावणका पुत्र अतिप्रिय इन्द्रजीत सो भी निकसा। जयंत समान धीरबुद्धि कुम्भकरण सूर्यके विमान तुल्य ज्योतिप्रभव नामा विमान ता विषै आरूढ त्रिशूलका आयुध धरे निकसा अर रावण भी सुमेरुके शिखर तुल्य पुष्पकनामा अपने विमानपर चढ इन्द्र तुल्य पराक्रम जिसका सेनाकर आकाश भूमिको आच्छादित करता संता दैदीप्यमान आयुधोंको धरैं सूर्य समान है ज्योति जाकी सोहू अनेक सामंतनिसहित लंकासे वाहिर निकसा। ते सामंत शीघ्रगामी वहुरूपके धरणहारे वाहनों पर चढे, कैयकोंके रथ कैयकोंके तुरंग कैयकोंके हाथी कैयकोंके सिंह तथा शूरसांभर वलध भैंसा उष्ट्र मींढा मृग अष्टापद इत्यादि स्थलके जीव अर मगर मच्छ आदि अनेक जलके जीव अर नाना प्रकारके पक्षी तिनका रूप धरे देवरूपी वाहन तिनपर चढे अनेक योधा रावणके साथ निकसे। भामंडल अर सुग्रीवपर रावणका अतिक्रोध जो राक्षसवंशीनसों युद्धको उद्यमी भए। रावणको पयान करते अनेक अपशकुन भए। तिनका वर्णन सुनो—दाहिनी तरफ शल्यकी कहिए सेह मंडलको बांधे भयानक शब्द करती प्रयाणको निवारण करे है अर गृद्ध पक्षी भयंकर अपशब्द करते आकाशविषै भ्रमते मानों रावणका क्षय ही कहे हैं अन्यहू अनेक अपशकुन भए स्थलके जीव आकाशके जीव व्याकुल भए क्रूर शब्द करते भए रुदन करते भये सो यद्यपि राक्षसोंके समूह सव ही पंडित है, शास्त्रका विचार जाने हैं तथापि शूरवीरताके गर्वकर मूढ भए महासेनासहित संग्रामके अर्थी निकसे। कर्मोंके उदयसे जीवनिका जव काल आवे है तव अवश्य ऐसा ही कारण

तब राक्षसोंकी सेना पराङ्मुख भई। गौतम स्वामी राजा श्रेणिकसे कहे हैं-हे मगधाधिपति! सेनाके लोक सेनापतिको जबलग देखें तबलग ही ठहरें अर सेना पतिके नाश भए सेना विखर जाय जैसे मालके टूटे अरहटकी घड़ी विखर जाय अर सिर विना शरीर भी न रहे यद्यपि पुण्याधिकारी बड़े राजा सब बातमें पूर्ण हैं तथापि विना प्रधान कार्यकी सिद्धि नाहीं, प्रधान पुरुषोंका संबंधकर मनवांछित कार्यकी सिद्धि होय है और प्रधान पुरुषोंके संबंध बिना मंदताको भजे हैं जैसे राहुके योगसे सूर्यको आच्छादित भए किरणोंका समूह मन्द होय है॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषा वचनिकाविषै हस्त प्रहस्तका मरण वर्णन करनेवाला अठावनवा पर्व पूर्ण भया॥५८॥

अथानन्तर राजा श्रेणिक गौतक स्वामीसे पूछता भया-हे प्रभो! हस्त प्रहस्त जैसे सामंत महा विद्यामें प्रवीण हुते बड़ा आश्चर्य है नल नीलने कैसे मारे? इनके पूर्वभवका विरोध है कै याही भवका? तब गणधर देव कहते भए-हे राजन्! कर्मनिकर बंधे जीव तिनकी नाना गति हैं, पूर्व कर्मके प्रभावकर जीवोंकी यही रीति है जाने जाको मारा सो वह हू ताको मारनहारा है अर जाने जाको छुड़ाया सो ताका छुडावनहारा है। या लोकमें यही मर्यादा है। एक कुशस्थल नामा नगर वहां दोय भाई निर्धन, एक माताके पुत्र इंधक अर पल्लव ब्राह्मण खेतीका कर्म करें, पुत्र स्त्री आदि जिनके कुटुम्ब बहुत स्वभावहीसे दयावान साधुनिकी निंदातैं पराङ्मुख सो एक जैनी मित्रके प्रसंगतैं दानादि धर्मके धारक भए अर एक दूजा निर्धन युगल सो महा निर्दई मिथ्यामार्गी हुते राजाके दान बटा सो विप्रोंमें परस्पर कलह भया सो इंधक पल्लवको इन दुष्टोंने मारा सो दानके प्रसादतैं मध्यभोग भूमिमें उपजे दोय पल्यकी आयु पाय मूए सो देव भए अर वे क्रूर इनके मारणहारे अधर्म परणामनिकर मूवे सो कालिंजर नामा वनमें सूस्या भए मिथ्यादृष्टि साधुनिके निंदक पापी कपटी तिनकी यही गति है बहुरि तिर्यंचगतिमें चिरकाल भ्रमण कर मनुष्य भए सो तापसी भए, बढी है जटा जिनके, फल पत्रादिकके आहारी, तीव्र तप कर शरीर कृश किया कुज्ञानके अधिकारी दोनों मूए सो विजियार्धकी दक्षिण श्रेणीमें अरिंजयपुर, तहां का राजा अग्निकुमार राणी अश्विनी ताके ये दोयपुत्र जगत्

सागर सागर उरग मनोग्य जिन जिनपति इत्यादि योद्धा नानावर्णके विमानोंपर चढे महाप्रबल सन्नाह कहिए बखतर पहिर युद्धको निकसे। रामचन्द्र लक्ष्मण सुग्रीव हनूमान ये हंस विमान चढे, जिनसे आकाशविषैं शोभते भए। रामके सुभट महामेघमाला सारिखे नानाप्रकारके वाहन चढे लंकाके सुभटोंसे लड़नेको उद्यमी भए। प्रलयकालके मेघ समान भयंकर शब्द शंख आदि वादित्रनिके शब्द होते भए, जंझा भेरी मृदंग कंपाल धुधुमंद्य आमलातके हंकार दूदूंकान ऊरदरहेमगुंज काहल वीणा इत्यादि अनेक बाजे बाजते भए अर सिंहोंके तथा हाथियोंके घोड़ोंके भैंसोंके रथोंके ऊटों मृगों पक्षियोंके शब्द होते भए। तिनसे दशोंदिशा व्याप्त भई। जब राम रावणकी सेनाका संघट्ट भया तब लोक समस्त जीवनेके सन्देहको प्राप्त भए। पृथिवी कंपायमान भई, पहाड कांपे, योद्धा गर्वके भरे निगर्वसे निकसे। दोनों कटक अतिप्रबल लखिवेमें न आवें। इन दोनों सेनामें युद्ध होने लगा, सामान्य चक्र करोंत कुठार सेल खड्ग गदा शक्तिबाण भिंडिपाल इत्यादि अनेक आयुधोंसे परस्पर युद्ध होता भया। योद्धाहेलाकर योद्धावोंको बुलावते भए, कैसे हैं योद्धा? शस्त्रोंसे शोभित हैं भुजा जिनकी अर युद्धका है सर्व साज जिनके ऐसे योद्धावोंपर पडते भए। अतिवेगसे दोड, कर सेनामें प्रवेश करते भए, परस्पर अति युद्ध भया लंकाके योद्धाओंने वानरवंशी योद्धा दवाये जैसे सिंह गजोंको दवावे। बहुरि वानरवंशियोंके प्रबल योद्धा अपने योद्धावोंका भङ्ग देखकर राक्षसोंके योद्धावोंको हणते भए अर अपने योद्धावोंको धीर्य वधाया। वानरवंशियोंके आगे लङ्काके लोकोका चिगते देख बड़े २ स्वामीभक्त रावणके अनुरागी महाबलसे मंडित हाथियोंके चिन्हकी है ध्वजा जिनके, हाथियोंके रथ चढे, महायोद्धा हस्त प्रहस्त वानरवंशियों पर दौड़े अर अपने लोगोंको धीर्य बंधाया-हो सामंत हो! भय मत करो। हस्त प्रहस्त दोनों महा तेजस्वी वानरवंशियोंके योद्धाओंको भगावते भए तब वानरवंशियोंके महा प्रतापी हाथियोंके रथ चढे महा शूरवीर परम तेजके नायक धारक सुग्रीवके काकाके पुत्र नल नील महाभयंकर क्रोधायमान होय नाना प्रकारके शस्त्रनिकर युद्ध करनेको उद्यमी भए। अनेक प्रकार शस्त्रोंसे घनीवेर युद्ध भया दोनों तरफके अनेक योद्धा मुवे नलने उछलकर हस्त को हता अरनीलने प्रहस्तको हता जब यह दोनों पड़े

तब राक्षसोंकी सेना पराङ्मुख भई । गौतम स्वामी राजा श्रेणिकसे कहे हैं-हे मगधाधिपति ! सेनाके लोक सेनापतिको जबलग देखें तबलग ही ठहरें अर सेना पतिके नाश भए सेना विखर जाय जैसे मालके टूटे अरहटकी घड़ी विखर जाय अर सिर विना शरीर भी न रहे यद्यपि पुण्याधिकारी बड़े राजा सब बातमें पूर्ण हैं तथापि विना प्रधान कार्यकी सिद्धि नाहीं, प्रधान पुरुषोंका संबंधकर मनवांछित कार्यकी सिद्धि होय है और प्रधान पुरुषोंके संबंध विना मंदताको भजे हैं जैसे राहुके योगसे सूर्यको आच्छादित भए किरणोंका समूहमन्द होय है ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषा वचनिकाविषै हस्त प्रहस्तका मरण वर्णन करनेवाला अठावनवा पर्व पूर्ण भया ॥५८॥

अथानन्तर राजा श्रेणिक गौतक स्वामीसे पूछता भया-हे प्रभो ! हस्त प्रहस्त जैसे सामंत महा विद्यामें प्रवीण हुते वड़ा आश्चर्य है नल नीलने कैसे मारे ? इनके पूर्वभवका विरोध है कै याही भवका ? तब गणधर देव कहते भए-हे राजन् ! कर्मनिकर बंधे जीव तिनकी नाना गति हैं, पूर्व कर्मके प्रभावकर जीवोंकी यही रीति है जाने जाको मारा सो वह हू ताको मारनहारा है अर जाने जाको छुड़ाया सो ताका छुडावनहारा है । या लोकमें यही मर्यादा है । एक कुशस्थल नामा नगर वहां दोय भाई निर्धन, एक माताके पुत्र इंधक अर पल्लव ब्राह्मण खेतीका कर्म करें, पुत्र स्त्री आदि जिनके कुटुम्ब बहुत स्वभावहीसे दयावान साधुनिकी निंदातैं पराङ्मुख सो एक जैनी मित्रके प्रसंगतैं दानादि धर्मके धारक भए अर एक दूजा निर्धन युगल सो महा निर्दई मिथ्यामार्गी हुते राजाके दान बटा सो विप्रोंमें परस्पर कलह भया सो इंधक पल्लवको इन दुष्टोंने मारा सो दानके प्रसादतैं मध्यभोग भूमिमें उपजे दोय पल्यकी आयु पाय मूए सो देव भए अर वे क्रूर इनके मारणहारे अधर्म परणामनिकर मूवे सो कालिंजर नामा वनमें सूस्या भए मिथ्यादृष्टि साधुनिके निंदक पापी कपटी तिनकी यही गति है बहुरि तिर्यंचगतिमें चिरकाल भ्रमण कर मनुष्य भए सो तापसी भए, बढी हैं जटा जिनके, फल पत्रादिकके आहारी, तीव्र तप कर शरीर कृश किया कुज्ञानके अधिकारी दोनों मूए सो विजियार्धकी दक्षिण श्रेणीमें अरिंजयपुर, तहां का राजा अग्निकुमार राणी अश्विनी ताके ये दोयपुत्र जगत्

प्रसिद्ध रावणके सेनापति भए और ते दोनों भाई इंधक अर पल्लव देवलोकतें चयकर मनुष्य भए बहुरि श्रावकके व्रतपाल स्वर्गमें उत्तम देव भए अर स्वर्गतें चयकर किहकंधापुरविषैं नल नील दोनों भाई भए पहिले हस्त प्रहस्तके जीवने नल नीलके जीव मारे हुते सो नीलने हस्त प्रहस्त मारे जो काहूको मारे है सो ताकर मारा जाय है अर जो काहूको पाले है सो ताकर पालिए है अर जो जासूं उदासीन रहे है सो भी तासूं उदासीन रहे जाहि देख निःकारण क्रोध उपजे सो जानिए परभवका शत्रु है अर जाहि देख चित्त हर्षित होय सो निस्संदेह पर भवका मित्र है, जो जलविषै जहाज फट जाय है अर मगर मच्छादि बाधा करे हैं अर थलविषै म्लेछ बाधा करे हैं सो सब पापका फल है पहाड समान माते हाथी अर नाना प्रकारके आयुध धरे अनेक योधा अर महा तेजको धरें अनेक तुरंग अर बक्तर पहिरे बड़े बड़े सामंत इत्यादि जो अपार सेनासे युक्त जो राजा अर निःप्रमाद तौ भी पुण्यके उदयविना युद्धमें शरीरकी रक्षा न होय सके अर जहां तहां तिष्ठता अर जाके कोऊ सहाई नाहीं ताकी तप अर दान रक्षा करे, न देव सहाई न बांधव सहाई अर प्रत्यक्ष देखिए है, धनवान् शूरवीर कुटुम्बका धनी सर्व कुटुम्बके मध्य मरण करे है कोऊ रक्षा करने समर्थ नाहीं। पात्रदानसे व्रत अर शील अर सम्यक्त अर जीवोंकी रक्षा होय है। दयादानसे जाने धर्म न उपार्जा अर बहुत काल जीया चाहे सो कैसे बने? इन जीवनिके कर्म तप विना न विनशें ऐसा जानकर जो पंडित हैं तिनको वैरियों पर भी क्षमा करनी। क्षमा समान और तप नाहीं, जे विचक्षण पुरुष है वे ऐसी बुद्धि न धरें कि यह दुष्ट विगाड़ करें है। या जीवका उपकार अर विगाड केवल कर्माधीन है कर्म ही सुख दुःख का कारण है। ऐसा जानकर जे विचक्षण पुरुष हैं ते बाह्य सुख दुःखके निमित्त कारण अन्य पुरुषों पर राग द्वेष भाव न धरें। अन्धकारसे आच्छादित जो पंथ तामें नेत्रवान् पृथिवीपर पड़े सर्प पर पग धरै अर सूर्यके प्रकाशसे मार्ग प्रकट होय तब नेत्रवान् सुखसे गमन करै तैसे जौंलग मिथ्यात्वरूप अन्धकारसे मार्ग नाहीं अवलोके तौलग नरकादि विवरमें पड़े अर जब ज्ञान सूर्यका उद्योत होय तब सुखसे अविनाशीपुर जाय पहुचें॥

इति श्रीरविषेणाचार्य विरचित महापद्मपुराण भाषावचनिका विषैं हस्त प्रहस्त नल नीलके पूर्वभवका वर्णन करनेवाला उनसठवां पर्व पूर्ण भया॥५९॥

अथानन्तर हस्त प्रहस्त, नल नीलने हते सुन वहुत योद्धा क्रोधकर युद्धको उद्यमी भए। मारचि सिंह जघन स्वयंभू शंभू ऊर्जित शु क सारण चन्द्र अर्क जगत्वीभत्स निस्वन ज्वर उग्र क्रमकर वज्राक्ष आत्मनिष्ठु र गंभीरनाद संनद संवृद्ध वाहू अनुसिदन इत्यादि राक्षस पक्षके योद्धा वानरवंशियोंकी सेनाको क्षोभ उपजावते भए। तिनको प्रवल जान वानरवंशियोंके योद्धा युद्धको उद्यमी भए। मदन मदनांकुर संताप प्रथित आक्रोशनन्दन दुरित अनघ पुष्पास्त्र विघ्न प्रियंकर इत्यादि अनेक वानरवंशी योद्धा राक्षसोंसे लड़ते भए। याने वाको ऊंचे स्वरसे बुलाया वाने याको बुलाया इनके परस्पर संग्राम भया, नाना प्रकारके शस्त्रों से आकाश व्याप्त होय गया। संताप तो मारीचसे लड़ता भया अर अप्रथित सिंहज घनसे अर विघ्न उद्यानसे अर आक्रोश सारणसे नन्दनसे इन समान योद्धाओंमें अद्भुत युद्ध भया तव मारीचने संतापका निपात किया अर नन्दनने ज्वरके वक्षस्थलमें वरछी दई अर सिंहकटिने प्रथितिके अर उद्दामकीर्तिने विघ्नको हणा। ता समय सूर्य अस्त भया अपने अपने पतिको प्राणरहित भए सुन इनकी स्त्री शोकके सागरमें मग्न भई सो उनकी रात्रि दीर्घ होती भई।

दूजे दिन महा क्रोधके भरे सामन्त युद्धको उद्यमी भए वज्राक्ष अर क्षु भितार मृगेन्द्रदमन अर विधि शंभू अर स्वयम्भू चन्द्रार्क अर वज्रोदर इत्यादि राक्षस पक्षके वड़े वड़े सामन्त अर वानरवंशियोंके सामन्त परस्पर जन्मान्तरके उपार्जित वैर तिनसे महा क्रोधरूप होय युद्ध करते भए। अपने जीवनमें निस्पृह संक्रोधने महाक्रोधकर खिपितारको महा ऊंचा स्वरकर बुलाया अर वाहुवलीने मृगारिदमनको बुलाया अर वितापीने विधिको बुलाया इत्यादि योद्धा परस्पर युद्ध करते भए अर योद्धा अनेक मूए शार्दूलने वज्रोदरको घायल किया अर खिपितार संक्रोधको मारता भया अर शंभूने विशालद्युति मारा अर स्वयम्भूने विजयको लोहयष्टिसे मारा अर विधिने वितापीको गदासे मारा वहुत कष्टसे या भांत योद्धाओंने युद्धमें अनेक योद्धा हते सो वहुत वेरतक युद्ध भया। राजा सुग्रीव अपनी सेनाको राक्षसोंकी सेनासे खेद-खिन्न देख आप महा क्रोधका भरा युद्ध करनेको उद्यमी भया तव अंजनीका पुत्र हनूमान हाथियोंके रथपर चढ़ा राक्षसोंसे युद्ध करता भया सो राक्ष-

सोंके सामन्तोंके समूह पवन-पुत्रको देखकर जैसे नाहरको देख गाय डरे तैसे डरते भए अर राक्षस परस्पर वात करते भए कि यह हनूमान वानरध्वज आया सो आज घनोंकी स्त्रियोंको विधवा करेगा तब याके सन्मुख माली आया ताहि आया देख हनूमान धनुषमें वाण तान सन्मुख भए, तिनमें महायुद्ध भया। मंत्री मन्त्रियोंसे लड़ने लगे, रथी रथियोंसे लड़ने लगे, घोड़ोंके असवार घोड़ोंके असवारोंसे लड़ते भए, हाथियोंके असवार हाथियोंके असवारोंसे लड़ते भए। सो हनूमानकी शक्तिसे माली पराङ्मुख भया। तव वज्रोदर महा पराक्रमी हनूमानपर दौड़ा, युद्ध करता भया, चिरकाल युद्ध भया सो हनूमानने वज्रोदरको रथरहित किया, तव वह और दूजे रथपर चढ़ हनूमानपर दौड़ा तव हनूमानने वहुरि ताको रथरहित किया तव वहुरि पवनसे हू अधिक है वेग जाका ऐसे रथपर चढ़ हनूमानपर दौड़ा तव हनूमानने ताहि हता सो प्राणरहित भया तव हनूमानके सन्मुख महा वलवान् रावणका पुत्र जम्बूमाली आया सो आवता ही हनूमानकी ध्वजा छेद करता भया तव हनूमानने क्रोधसे जम्बूमालीका वक्तर भेदा, धनुष तोड़ डारा जैसे तृणको तोड़ें। तव मंदोदरीका पुत्र नवा वक्तर पहिर हनूमानके वक्षस्थलविषै तीक्ष्ण वाणोंसे घाव करता भया सो हनूमानने ऐसा जाना मानों नवीन कमलकी नालिकाका स्पर्श भया। कैसा है हनूमान? पर्वत समान निश्चल है वुद्धि जाकी. वहुरि हनूमानने चन्द्रवक्र नामा वाण चलाया सो जम्बूमालीके रथके अनेक सिंह जुते हुते सो छूट गए, तिनहीके कटकविषै पड़े तिनकी विकराल ढाढ़ विकराल वदन भयंकर नेत्र तिनसे सकल सेना विह्वल भई मानों सेनारूप समुद्रविषै ते सिंह कल्लोलरूप भए उछलते फिरे हैं अथवा दुष्ट जलचर जीवनि समान विचरे हैं अथवा सेनारूप मेघविषै विजली समान चमके हैं अथवा संग्राम ही भया संसार चक्र, ताविषै सेनाके लोक तेई भए जीव तिनको ये रथके छूटे सिंह कर्मरूप होय महादुखी करे हैं इनसे सर्व सेना दुखरूप भई तुरंग गज रथ पियादे सव ही विह्वल भए, रणका उद्यम तज दशोंदिशाको भाजे, तव पवनका पुत्र सवोंको पेल रावण तक जाय पहुचा, दूरसे रावणको देखा, सिंहके रथ चढ़ा हनूमान धनुषवाण लेय रावणपर गया, रावण सिंहोंसे सेनाको भयरूप देख अर हनूमानको काल समान महादुर्द्धर जान आप युद्ध करनेको उद्यमी भया। तव महोदर राव-

णको प्रणामकर हनूमानपर महाक्रोधसे लड़नेको आया सो याके अर हनूमानके महायुद्ध भया। ता समयविषै वे सिंह योधाओंने वश किए, सो सिंहोंको वशीभूत भए देख महाक्रोधकर समस्त राक्षस हनूमानपर पड़े तव अंजनीका पुत्र महाभट पुण्याधिकारी तिन सवको अनेक वाणोंसे थांभता भया अर अनेक राक्षसोंने अनेक वाण हनूमानपर चलाए, परन्तु हनूमानको चलायमान न करते भए। जैसे दुर्जन अनेक कुवचन रूप वाण संयमीके लगावे, परन्तु तिनके एक न लगे, तैसे हनूमानके राक्षसोंका एक वाण भी न लगा, अनेक राक्षसोंसे अकेला हनूमानको वेढा देख वानरवंशी विद्याधर युद्धके निमित्त उद्यमी भए, सुषेण नल नील प्रीतिकर विराधित संत्रासित हरिकट सूर्यज्योति महावल जांवूनन्द। कोई नाहरोंके रथ कोई गजोंके रथ कोई तुरंगोंके रथ चढ़े रावणकी सेनापर दौडे, सो वानरवंशियोंने रावणकी सेना सव दिशाविषै विध्वंस करी, जैसे क्षुधादि परीषह तुच्छ व्रतियोंके व्रतोंको भंग करें।

तव रावण अपनी सेनाको व्याकुल देख आप युद्ध करनेको उद्यमी भया तव कुम्भकरण रावणको नमस्कारकर आप युद्धको चला तव याहि महाप्रवल योद्धा रणमें अग्रगामी जान सुषेण आदि सवही वानरवंशी व्याकुल भए। जव वे चन्द्ररश्मि जयस्कंध चन्द्राहु रतिवर्धन अंग अंगद सम्मेद कुमुद कशमंडल वालचंड तरंगसार रत्नजटी जय वेलक्षिपी वसन्त कोलाहल इत्यादि अनेक योद्धा रामके पक्षी कुम्भकर्णसे युद्ध करने लगे तो कुम्भकर्णने सवको अपनी निद्रानामा विद्यासे निद्राके वश किए जैसे दर्शनावरणीय कर्म दर्शनके प्रकाशको रोके तैसे कुम्भकर्णकी विद्या वानरवंशियोंके नेत्रनिके प्रकाशको रोकती भई। सव ही कपिध्वज निद्रासे घूमने लगे अर तिनके हाथोंसे हथियार गिरपड़े तव इन सवोंको निद्रावश अचेतन समान देख सुग्रीवने प्रतिवोधिनी विद्या प्रकाशी सो सव वानरवंशी प्रतिवोध भए अर हनूमानादि युद्धको प्रवर्ते। वानरवंशियोंके वलमें उत्साह भया अर युद्धमें उद्यमी भए अर राक्षसोंकी सेना दवी तव रावण आप युद्धको उद्यमी भए, तव वड़ा वेटा इन्द्रजीत हाथ जोड़ सिर नवाय वीनती करता भया—हे तात हे नाथ! यदि मेरे होने आप युद्धको प्रवर्तें तो हमारा जन्म निष्फल है जो तृण नखहीसे उपड़ आवे उसपर फरसी उठावना कहा?

तातैं आप निश्चिंत होवें, मैं आपकी आज्ञा प्रमाण करूंगा। ऐसा कहकर महाहर्षित भया पर्वत समान त्रैलोक्यकंटक नामा गजेंद्रपर चढ़ युद्धको उद्यमी भया। कैसा है गजेंद्र ? इंद्रके गज समान अर इंद्रजीतको अतिप्रिय अपना सब साज लेय मंत्रियोंसहित ऋद्धिसे इन्द्रसमान रावणका पुत्र कपियोंपर क्रूर भया सो महाबलका स्वामी मानो आवत प्रमाण ही बानरवंशियोंका बल अनेक प्रकार आयुधोंसे जो पूर्ण हुता सो सब विह्वल किया। सुग्रीवकी सेनाविषै ऐसा सुभट कोई न रहा जो इन्द्रजीतके बाणनिकरि घायल न भया। लोक जानते भए जो यह इंद्रजीत कुमार नहीं अग्निकुमारोंका इंद्र है अथवा सूर्य है सुग्रीव अर भामंडल ये दोऊ अपनी सेनाको इंद्रजीत कर दबी देख युद्धको उद्यमी भए। इनके योद्धा इंद्रजीतके योद्धानिसे अर ये दोनों इंद्रजीतसे युद्ध करने लगे सो परस्पर योद्धा योद्धाओंको हंकार हंकार बुलावते भए। शस्त्रोंसे आकाशमें अंधकार होय गया, योद्धाओंके जीवनकी आशा नहीं, गजसे गज, रथसे रथ, तुरंगसे तुरंग सामंतोंसे सामंत उत्साहकर युद्ध करते भए। अपने अपने नाथके अनुरागविषै योद्धा परस्पर अनेक आयुधनिकर प्रहार करते भए। ताही समय इंद्रजीत सुग्रीवको समीप आयो देख ऊंचे स्वरकर अपूर्व शस्त्ररूप दुर्वचननिकर छेदता भया—अरे बानरबंशी पापी स्वामिद्रोही ! रावणसे स्वामीको तज स्वामीके शत्रुका किंकर भया। अब मुझसे कहां जायगा तेरे शिरको तीक्ष्ण बाणनिकर तत्काल छेदूंगा। वे दोनों भाई भूमिगोचरी तेरी रक्षा करें। तब सुग्रीव कहता भया ऐसे वृथा गर्वके वचन कर कहा तू मानशिखर पर चढ़ा है सो अबार ही तेरा मान भंग करूंगा। जब ऐसा कहा तब इंद्रजीतने कोपकर धनुप चढ़ाय बाण चलाया अर सुग्रीवने इंद्रजीतपर चलाया दोनों महायोद्धा परस्पर बाणनिकर लडते भए, आकाश बाणोंसे आच्छादित होय गया। मेघवाहनने भामण्डलको हंकारा सो दोनों भिडे अर विराधित अर वज्रनक्र युद्ध करते भये सो विराधितने वज्रनक्रके उरस्थलमें चक्रनामा शस्त्रकी दई, अर वज्रनक्रने विराधितके शूरवीर घात पाय शत्रुके घाव न करें तो लज्जा है, चक्रोंसे वक्तर पीसे गए तिनके अग्निकी कणका उछली सो मानों आकाशसे उलकाओंके समूह पड़े हैं। लंकानाथके पुत्रने सुग्रीवपै अनेक शस्त्र चलाए। लंकेश्वरके पुत्र संग्राममें अ

चल हैं जा समान दूजा योद्धा नाहीं, तव सुग्रीवने वज्रदंडसे इंद्रजीतके शस्त्र निराकरण किए जिनके पुण्यका उदय है तिनका घात न होय फिर क्रोधकर इंद्रजीत हाथीसे उतर सिंहके रथ चढ़ा समाधानरूप है वुद्धि जाकी नानाप्रकारके दिव्य शस्त्र अर सामान्य शस्त्र इनमें प्रवीण सुग्रीवपर मेघवाण चलाया सो संपूर्ण दिशा जलरूप होय गई तव सुग्रीवने पवनवाण चलाया सो मेघवाण विलाय गया अर इंद्रजीतका छत्र उडाया अर ध्वजा उडाई अर मेघवाहनने भामंडलपर अग्निवाण चलाया सो भामंडलका धनुष भस्म होय गया अर सेनामें अग्नि प्रज्वलित भई तव भामण्डलने मेघवाहनपर मेघवाण चलाया सो अग्निवाण विलाय गया अर अपनी सेनाकी वहुरि रक्षा करी। मेघवाहनने भामण्डलको रथरहित किया तव भामण्डल दूजे रथ चढ़ युद्ध करने लगा। मेघवाहनने तामसवाण चलाया सो भामण्डलकी सेनामें अन्धकार होय गया अपना पराया कुछ सूझे नाहीं मानों मूर्छाको प्राप्त भए तव मेघवाहनने भामंडलको नागपाशसे पकड़ा मायामई सर्प सर्व अंगमें लिपट गए जैसे चन्दनके वृक्षके नाग लिपट जावें कैसे हैं नाग ? भयंकर जे फण तिनकर महा विकराल हैं भामण्डल पृथिवीपर पडा अर याही भांति इंद्रजीतने सुग्रीवको नागपाशकर पकड़ा सो धरती पर पड़ा।

तव विभीषण जो विद्यावलमें महाप्रवीण, श्रीरामलक्ष्मणसे दोनों हाथ जोड़ सीस नवाय कहता भया हे राम महावाहो! लक्ष्मण! महावीर इंद्रजीतके वाणोंसे व्याप्त सव दिशा देखो धरती-आकाश वाणोंसे आच्छादित है, उल्कापातके स्वरूप नाग वाण तिनसे सुग्रीव अर भामण्डल दोनों भूमिविषै वंधे पड़े हैं मंदोदरीके दोनों पुत्रोंने अपने दोनों महाभट पकडे अपनी सेनाके जे दोनों मूल हुते वे पकडे गए, तव हमारे जीवनेसे कहा इन विना सेना शिथिल होय गई है, देखो दशों दिशाको लोक भागे हैं अर कुम्भकर्णने महा युद्धकर हनूमानको पकडा है कुम्भकर्णके वाणोंसे हनूमान जरजरे भए, छत्र उड़ गए, ध्वजा उड़ गई धनुष टूटा वक्तर टूटा रावणके पुत्र इंद्रजीत अर मेघवाहन युद्धविषै लग रहे हैं अर वे आयकर सुग्रीव भामण्डलको ले जायंगे सो वे न ले जायें तासे पहिले आप उनको ले आवें वे दोनां चेष्टारहित हैं सो मैं उनके लेवनेको जाऊं हूं अर आप भामण्डल सुग्रीवकी सेना निर्नाथ होय गई है सो ताहि थांभो या भांति विभीषण राम

लक्ष्मणसे कहे है ताही समय सुग्रीवका पुत्र अंगद छाने छाने कुम्भकर्ण पर गया अर ताका उत्तरासनवस्त्र परे किया सो लज्जाके भारकर व्याकुल भया वस्त्रको थांभे तौलग हनूमान इसकी भुजाफांससे निकसि गया जैसे नवा पकड़ा पक्षी पिंजरेसे निकस जाय हनूमान नवीन जन्मको धरे अर अंगद दोनों एक विमान बैठे ऐसे शोभते भए मानों देव ही हैं अर अंगदका भाई अंग अर चंद्रोदयका पुत्र विराधित इन सहित लक्ष्मण सुग्रीवकी अर भामण्डलकी सेनाको धैर्य बंधाय थांभते भए अर विभीषण इंद्रजीत मेघवाहन पर गया सो विभीषणको आवता देख इंद्रजीत मनमें विचारता भया जो न्याय विचारिए तो हमारे पितामें अर इनमें कहां भेद है ? तातें इनके सन्मुख लडना उचित नाहीं सो याके सन्मुख खडा न रहना यही योग्य है अर ये दोनों भामण्डल सुग्रीव नागपाशमें बंधे सो निःसंदेह मृत्युको प्राप्त भए अर काकासे भाजिए तो दोष नाहीं ऐसा विचार दोनों भाई महा अभिमानी न्यायके वेत्ता विभीषणसे टरि गए अर विभीषण त्रिशूलका है आयुध जिसके रथसे उतर सुग्रीव भामण्डलके समीप गया सो दोनोंको नागपाशसे मूर्छित देख खेदखिन्न होता भया तब लक्ष्मणने रामसे कहा हे नाथ ! ए दोनों विद्याधरोंके अधिपति महासेनाके स्वामी महा शक्तिके धनी भामंडल सुग्रीव रावणके पुत्रोंने शक्तिरहित कीए मूर्छित होय पड़े हैं सो इन बगैर आप रावणको कैसे जीतेंगे तब राम को पुण्यके उदयतें गरुड़ेंद्रने वर दिया हुता सो चितार लक्ष्मणसूं राम कहते भए।

हे भाई ! वंशस्थल गिरिपर देशभूषण कुलभूषण मुनिका उपसर्ग निवारा तासमय गरुडेंद्रने वर दिया हुता ऐसा कह महालोचन रामने गरुडेंद्रको चितारा सो सुख अवस्था विषै तिष्ठै था सो सिंहासन कम्पायमान भया तब अवधिकर राम लक्ष्मणको काम जान चिंतावेग नामा देवको दोय विद्या देय पठाय सो आयकर बहुत आदरसे राम लक्ष्मणसे मिला अर दोऊ विद्या तिनको दई, श्रीरामको सिंहवाहिनी विद्या दई अर लक्ष्मणको गरुडवाहिनी विद्या दई तब यह दोऊ धीर विद्या लेय चिंतावेगका बहुत सन्मानकर जिनेन्द्रकी पूजा करते भए अर गरुडेंद्रकी बहुत प्रशंसा करी। वह देव इनको जलबाण अग्नि बाण पवनबाण इत्यादि अनेक दिव्य शस्त्र देता भया अर चांद सूर्य सारिखे दोऊ भाइनिको छत्र दिए अर चमर दिए नाना प्रकारके

रत्न दिए कांतिके समूह अर विद्युद्वक्र नाम गदा लक्ष्मणको दई अर हल मूसल दुष्टोंको भयके कारण रामको दिए। या भाँति वह देव इनको देवोपनीत शस्त्र देय अर सैकड़ों आशिष देय अपने स्थानको गया। यह सर्व धर्मका फल जान जो समयविषै योग्य वस्तुकी प्राप्ति होय। विधिपूर्वक निर्दोष धर्म अराधा होय ताके ये अनुपम फल हैं जिनको पायकरि दुःखकी निवृत्ति होय महा धीर्यके धनी आप कुशलरूप अर औरोंको कुशल करैं मनुष्यलोककी सम्पदाकी कहा वात ? पुण्याधिकारियोंको देवलोककी वस्तु भी सुलभ होय है तातैं निरन्तर पुण्य करहु। अहो प्राणि हो। जो सुख चाहो तो सर्व प्राणियोंको सुख देवहु जो धर्मके प्रसादकरि सूर्य समान तेजके धारक होहु अर आश्चर्यकारी वस्तुनिका संयोग होय।

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषा वचनिकाविषै राम लक्ष्मणको विद्याका लाभ वर्णन करनेवाला साठवां पर्व पूर्ण भया ॥ ६० ॥

अथानन्तर राम लक्ष्मण दोऊ बीर तेजके मंडलविषै मध्यवर्ती लक्ष्मीके निवास श्रीवत्स लक्षणको धरे महामनोज्ञ कवच पहिरे सिंहवाहन गरुड़वाहनपर चढ़े महासुन्दर सेनासागरके मध्य सिंहकी अर गरुड़की ध्वजा धरे परपक्षके क्षय करनेको उद्यमी महासमर्थ सुभटोंके ईश्वर संग्राम भूमिके मध्य प्रवेश करते भए आगे आगे लक्ष्मण चाल्या जाय है दिव्य छत्रके तेजकर सूर्यके तेजको आच्छादित करता संता हनूमान आदि बड़े बड़े योद्धा वानरवंशी तिनकर मंडित वर्णनविषै न आवै ऐसा देवनि कैसा रूप धारें सूर्यकीसी ज्योती लिये लक्ष्मणको विभीषणने देखा सो जगत्को आश्चर्य उपजावै ऐसे तेजकर मंडित सो गरुड़वाहनके प्रतापकर नागपाशका बन्धन भामंडल सुग्रीवका दूर भया। गरुड़के पंखनिकी पवन क्षीर सागरके जलको क्षोभरूप करै ताकरि वे सर्प बिलाय गये जैसे साधुनिके प्रतापकर कुभाव मिट जाय गरुड़के पक्षनिकी कांतिकर लोक ऐसे होय गए मानों सुवर्णके रसकर निरमाये हैं तब भामंडल सुग्रीव नागपाशसे छूट विश्रामको प्राप्त भए मानों सुख निद्रा लेय जागे अधिक शोभते भए तब इनको देख श्रीवृक्ष प्रथादिक सब विद्याधर विस्मयको प्राप्त भए अर सब ही श्रीराम लक्ष्मणकी पूजाकर विनती करते भए—हे नाथ! आजकीसी बिभूति हम अब तक कभी न देखी वाहन शस्त्र सम्पदा छत्र ध्वजाविषै अद्भुत शोभा दीखे है। तब श्रीरामने जबसे अयो-

ध्यासे चले-तबसे लेय सर्व वृत्तांत कहा कुलभूषण देशभूषणका उपसर्ग दूर किया सो सब वृत्तान्त कहा। तिन्होंको केवल उपजा अर कहा हमसे गरुड़ेन्द्र तुष्टायमान भया सो अवार उसका चिंतवन किया ताकरि यह विद्याकी प्राप्ति भई। तब वे यह कथा सुन परम हर्षको प्राप्त भए अर कहते भए या ही भवविषै साधु सेवाकर परमयश पाइए है अर अतिउदार चेष्टा होय है अर पुण्यकी विधि प्राप्ति होय है अर जैसा साधु सेवासे कल्याण होय तैसा न माता न पिता न मित्र न भाई कोई जीवनिका न करे। साधु या प्राणीकूं धर्मविषै उत्तम बुद्धि देय कल्याण करै, या भांति साधु सेवाको प्रशंसाविषै लगाया है चित्त जिन्होंने, जिनेन्द्रके मार्गकी उन्नतविषै उपजी है श्रद्धा जिनके ते राजा बलभद्र नारायणका आश्रयकर महाविभूतिकर शोभते भए। ये भव्य जीवरूप कमल तिनको प्रफुल्लित करनहारी यह पवित्र कथा ताहि सुनकर ये सर्व ही हर्षके समुद्रविषै मग्न भए अर श्रीराम लक्ष्मणको सेवाविषै अति प्रीति करते भए अर भामंडल सुग्रीव हनुमान मूर्छारूप निद्रासे रहित भए हैं नेत्रकमल जिनके श्रीभगवानकी पूजा करते भए। ते विद्याधर श्रेष्ठ देवों सारिखे सर्वथा धर्मविषै श्रद्धा करते भए। जो पुण्याधिकारी जीव हैं सो या लोकविषै परम उत्सवके योगको प्राप्त होय हैं प्राणी अपने स्वार्थसे संसारविषै महिमा नाहीं पावै है, केवल परमार्थसे महिमा होय है, जैसा सूर्य परपदार्थको प्रकाश करै तैसे शोभा पावै है॥

इति श्री रविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषावचनिकाविषै सुग्रीव भामंडलका नागपाशतै छूटना अर हनुमानका कुंभकर्णकी भुजापाशतैं छूटना राम लक्ष्मणको सिंहविमान गरुडविमानकी प्राप्ति वर्णन करनेवाला इकसठवा पर्व पूर्ण भया॥ ६१॥

अथानन्तर श्रीरामके पक्षके योद्धा महापराक्रमी रणरीतिके वेत्ता शूरवीर युद्धको उद्यमी भए वानरवंशिनिकी सेनासे आकाश व्याप्त भया अर शंख आदि वादित्रोंके शब्द अर गजोंकी गर्जना अर तुरंगोंके हींसिवेका शब्द सुनकर कैलाशका उठावनहारा जो रावण अति प्रचंड है बुद्धि जाकी महामानी देवन सारिखी है विभूति जाके महाप्रतापी बलवान सेनारूप समुद्रकर संयुक्त शस्त्रोंके तेजकर पृथिवीविषै प्रकाश करता पुत्र भ्राताद़िक सहित लंकासे निकसा, युद्धको उद्यमी भया, दोऊ सेनाके योद्धा बक्तर पहिर संग्रामके अभिला-

पी नानाप्रकार वाहनपर आरूढ़ अनेक आयुधोंके धरणहारे पूर्वोपार्जित कर्मसे महाक्रोधरूप परस्पर युद्ध करते भए, चक्र करौंत कुठार धनुषबाण खड्ग लोहयष्टि वज्र मुद्गर कनक परिघ इत्यादि अनेक आयुधनिकर परस्पर युद्ध भया, घोड़निके असवार घोड़के असवारोंसे लड़ने लगे हाथियोंके असवार हाथियोंके असवारोंसे, रथोंके रथियोंसे महाधीर लड़ने लगे, सिंहोंके असवार सिंहोंके असवारोंसे, पयादे पयादोंसे भिड़ते भए। बहुत वेरमें कपिध्वजोंकी सेना राक्षसोंके योद्धाओंसे दबी तब नल नील संग्राम करने लगे सो इनके युद्धकर राक्षसनिकी सेना चिगी तब लंकेश्वरके योद्धा समुद्रकी कल्लोल सारिखे चंचल अपनी सेनाको कंपायमान देख विद्युद्वचन मारीच चन्द्रार्क सुखसारण कृतांत मृत्यु भूतनाद संक्रोधन इत्यादि महा सामंत अपनी सेनाको धीर्य बंधायकर कपिध्वजोंकी सेनाको दबावते भए। तब मर्कटवंशी योधा अपनी सेनाको चिगी जान हजारां युद्धको उठे, सो उठतेही नाना प्रकारके आयुधनिकर राक्षसनिकी सेनाको हणते भए, अति उदार है चेष्टा जिनकी, तब रावण अपनी सेनारूप समुद्रको कपिध्वजरूप प्रलय कालकी अग्निसे सूकता देख आप कोपकर युद्ध करनेको उद्यमी भया सो रावणरूप प्रलय कालकी पवनसे वानरवंशी सूके पात उड़ने लगे तब विभीषण महायोधा वानरवंशिनको धीर्य बंधाय तिनकी रक्षा करवेको आप रावणसे युद्धको सन्मुख भया। तब रावण लहुरे भाईको युद्धमें उद्यमी देख क्रोधकर निरादर वचन कहता भया—रे बालक! तू लघु भ्राता है सो मारवे योग्य नाहीं मेरे सन्मुखतें दूर हो, मैं तोहि देख प्रसन्न नाहीं। तब विभीषण रावणसूं कही--कालके योगसे तू मेरी दृष्टि पड़ा तब मोपै कहाँ जायगा। तब रावण अति क्रोधकर कहता भया रे पुरुषत्वरहित क्लिष्ट धृष्ट पापिष्ठ कुचेष्टि नरकाधिकार तो सारिखे दीनको मारे मोहि हर्ष नाहीं, तू निर्बल रंक अवध्य है अर तो सारिखा मूर्ख अर कौन जो विद्याधरोंकी सन्तानमें होयकर भूमिगोचरियोंका आश्रय करै जैसे कोई दुर्बुद्धि पापकर्मके उदयतें जिन धर्मको तज मिथ्यात्वका सेवन करै तब विभीषण बोला हे रावण! बहुत कहने कर कहा तेरे कल्याणकी बात तुझे कहूहूं सो सुन—ऐती भई तोहू कछु बिगड़ा नाहीं जो तू अपना कल्याण चाहे है तो रामसे प्रीतिकर सीता रामको सौंप अर अभिमान तज रामको प्रसन्नकर स्त्रीके निमित्त अपने कुलको कलं-

ङ्क मत लगावो अथवा तू मेरे वचन नहीं माने है सो जानिए है तेरी मृत्यु नजीक आई है समस्त बलवन्तोंमें मोह महा बलवान है तू मोहकर उन्मत्त भया है ये वचन भाईके सुनकर रावण अति क्रोधरूप भया, तीच्ण बाण लेय विभीषणपर दौड़ा और भी रथ घोड़े हाथियोंके असवार स्वामी भक्तिविषै तत्पर महा युद्ध करते भए। विभीषणने हू रावणको आवता देख अर्धचन्द्र बाणसे रावणकी ध्वजा उड़ाई अर रावणने क्रोधकर बाण चलाया सो विभीषणका धनुष तोड़ा अर हाथतें बाण गिरा तब विभीषणने दूजा धनुष लेय बाण चलाया सो रावणका धनुष तोड़ा। या भांति दोऊ भाई महायोधा परस्पर जोरसे युद्ध करते भए अर अनेक सामंतनिका चय भया तब इंद्रजीत महायोद्धा पिताभक्त पिताका पच्च कर विभीषण पर आया तब ताहि लक्ष्मणने रोका जैसे पर्वत सागरको रोके अर श्रीरामने कुंभकर्णकों घेरा अर सिंहकटिसे नील अर स्वयंभूसे नल अर शंभूसे दुर्मति अर घटोदरसे दुर्मुख शक्रासनसे दुष्ट, चंद्रनखसे काली, भिन्नांजनसे स्कंध, विघ्नसे विराधित अर मयसे अंगद अर कुम्भकर्णका पुत्र जो कुम्भ तासे हनूमानका पुत्र अर सुमालीसे सुग्रीव अर केतुसे भामंडल कामके दृढस्थ, चौमसे बुध इत्यादि बड़े २ राजा परस्पर युद्ध करते भए अर समस्त ही योधा परस्पर रण रचते भए वह वाहि बुलावे। बराबरके सुभट कोई कहे हैं—मेरा शस्त्र आवे है ताहि तू झेल, कोई कहें हैं तू हमसे युद्ध योग्य नाहीं, बालक है, वृद्ध है, रोगी है निर्बल है तू जा फलाना सुभट युद्धयोग्य है सो आवे। या भांतिके वचनालाप होय रहे हैं कोई कहे याहि छेदो याहि भेदो कोई कहे है—बाण चलावो, कोई कहे हैं मार लेवो, पकड़ लेवो, बाँध लेवो गृहण करो छांड़ो चूर्ण करो घाव लगे ताहि सहो, घाव देहु, आगे होवो, मूर्छित मत होवो, सावधान होवो, तू कहा डरे है, मैं तोहि न मारूं, कायरोंको न मारना, भागोंको न मारना, पड़ेको न मारना, आयुधरहित पर चोट न करना तथा रोगसे ग्रसा मूर्छित दीन बाल वृद्ध यती व्रती स्त्री शरणागत तपस्वी पागल पशु पच्ची इत्यादिको सुभट न मारें यह सामंतनिकी वृत्ति है कोई अपने वंशियोंको देख धिक्कार शब्द कहे हैं अर कहे हैं तू कायर है नष्ट है मति कांपे कहां जाय है धीरा रहो अपने समूहविषै खड़ा रहु तोसूं कहा होय है ? तोसूं कौन डरे, तू काहेका चत्री शूर अर कायरोंके परखनेका यह समय है,

मोठा मीठा अन्न तो वहुत खाते यथेष्ट भोजन करते अब युद्धमें पीछे काहे होवो । या भांति धीरोंकी गर्जना अर वादित्रोंका बाजना तिनसे दशोंदिशा शब्दरूप भईं अर तुरंगोंके खुरकी रजसे अंधकार होय गया चक्र शक्ति गदा लोहयष्टि कनक इत्यादि शस्त्रोंसे युद्ध भया मानों ये शस्त्र कालकी डाढ ही हैं । लोग घायल भए, दोनों सेना ऐसी दीखें मानों लाल अशोकका वन है अथवा टेसूका वन है अर अथवा पारिभद्र जातिके वृक्षोंका वन है । कोऊ योद्धा अपने वक्तरको टूटा देख दूजा वक्तर पहरता भया जैसें साधु व्रतमें दूषण उपजा देख वहुरि पीछे दोष स्थापना करे अर कोई दांतोंसे तरवार थांभ कमर गाढी कर वहुरि युद्धको प्रवृत्ता कईयक सामंत माते हाथिनिके दांतोंके अग्रभागसे विदारा गया है वक्षस्थल जाका सो हाथीके चालते जे कान तेई भए वीजना उससे मानों हवासे सुखरूपकर रहे हैं अर कोईयक सुभट निराकुल बुद्धि हुआ हाथीके दांतोंपर दोनों भुजा पसार सोवे है मानों स्वामीके कार्यरूप समुद्रसे उतरा अर कैयक योधा युद्धसे रुधिरका नाला वहावते भए जैसे पर्वतमें गेरुकी खानसे लाल नीझरने वहैं अर कैयक योधा पृथिवीमें साम्हने मुंहसे पड़े होठ डसते शस्त्र जिनके करमें टेढी भौंह विकराल वदन या रीतिसे प्राण तजे हैं अर कैएक भव्यजीव महा संग्रामसे अत्यंत घायल होय कषायका त्यागकर सन्यास धर अविनाशी पदका ध्यान करते देहको तज उत्तम लोकको पावे हैं कैएक धिरवीर हाथियोंके दांतोंको हाथसे पकड़कर ही देहके रुधिरकी छटा शरीरसे पड़े है शस्त्र हैं हाथोंमें जिनके अर कैयक काम आय गए तिनके मस्तक गिर पड़े अर सैड़कां धड़नचे हैं कैएक शस्त्ररहित भए अर घावसे जरजरे भए तृषातुर होय जल पीवनेको वैठे हैं जीवनेकी आशा नाहीं ऐसे भयंकर संग्रामके होते परस्पर अनेक योधावोंका क्षय भया इन्द्रजीत तीक्ष्ण वाणनिसे लक्ष्मणको आच्छादने लगा अर लक्ष्मण उसको सो इंद्रजीतने लक्ष्मण पर तामस बाण चलाया सो अंधकार होयगया तव लक्ष्मणने सूर्यवाण चलाया उससे अन्धकार दूर भया वहुरि इन्द्रजीतने आशीविष जातिके नागवाण चलाए सो लक्ष्मण अर लक्ष्मणका रथ नागोंसे वेष्ठित होने लगा तव लक्ष्मणने गरुडबाणके योगसे नागवाणका निराकरण किया जैसे योगी महातपसे पूर्वोपार्जित पापोंके समूहको निराकरण करें अर लक्ष्मणने इन्द्रजीतको रथरहित कि-

या। कैसा है इन्द्रजीत ? मन्त्रियोंके मध्य तिष्ठै है अर हाथियोंकी घटावोंसे वेष्टित है सो इन्द्रजीत दूजे रथपर अपनी सेनाको वचनसे कृपाकर रचा करता संता लक्ष्मण पर तसवाण चलावता भया ताहि लक्ष्मण ने अपनी विद्यासे निवार इंद्रजीतपर आशीविष जातिका नागवाण चलाया सो इन्द्रजीत नागवाणसे अचेत होय भूमिमें पड़ा जैसे भामंडल पड़ा हुता अर रामने कुम्भकरणको रथरहित किया वहुरि कुम्भकरणने सूर्य वाण रामपर चलाया सो रामने ताका वाण निराकरण कर नागवाणकर ताहि वेढा सो कुम्भकरण भी नागोंका वेढा थका धरती पर पड़ा।

यह कथा गौतमगणधर राजा श्रेणिकतें कहे हैं-हे श्रेणिक ! वड़ा आश्चर्य है ते नागवाण धनुषके लगे उल्कापात स्वरूप होय जाय हैं अर शत्रुवोंके शरीरके लग नागरूप होय उसको वेढे हैं यह दिव्य शस्त्र देवोपनीत हैं मन वांछित रूप करे हैं एक क्षणमें वाण एक क्षणमें दंड चक्र एकमें पाशरूप होय परणवे हैं जैसे कर्म पाशकर जीव वंधे तैसे नागपाशकर कुम्भकरण वंधा सो रामकी आज्ञापाय भामंडलने अपने रथमे राखा, कुम्भकरणको रामने भामंडलके हवाले किया अर इन्द्रजीतको लक्ष्मणने पकड़ा सो विराधितके हवाले किया सो विराधितने अपने रथमें राखा खेद खिन्न है शरीर जाका ता समय युद्धमें रावण विभीषणको कहता भया जो यदि तू आपको योधा माने है तो एक मेरा घाव सह, जाकर रणकी खाज वुझै। यह रावणने कही। कैसा है विभीषण ? क्रोधकर रावणके सन्मुख है अर विकराल करी है रणक्रीड़ा जाने, रावणने कोपकर विभीषणपर त्रिशूल चलाया कैसा है त्रिशूल प्रज्वलित अग्निके स्फुलिंगोंकर प्रकाश किया है आकाशमें जाने, सो त्रिशूल लक्ष्मणने विभीषण तक आवने न दिया, अपने वाणकर वीच ही भस्म किया। तव रावण अपने त्रिशूलको भस्म किया देख अति क्रोधायमान भया अर नागेन्द्रकी दई शक्ति महादारुण सो ग्रही अर आगे देखे तो इन्दीवर कहिये नीलकमल ता समान श्याम सुन्दर महा देदीप्यमान पुरुषोत्तम गरुड़ध्वज लक्ष्मण खड़े हैं तव काली घटा समान गम्भीर उदार है शब्द जाका ऐसा दशमुख सो लक्ष्मणको ऊंचे स्वरकर कहता भया मानो ताड़ना ही करे है तेरा वल कहां ? जो मृत्युके कारण मेरे शस्त्र तू झेलै, तू

औरनिको तरह मोहि मत जाने हे दुर्बुद्धि लक्ष्मण ! जो तू मूवा चाहे है तो मेरा यह शस्त्र झेल, तब लक्ष्मण यद्यपि चिरकाल संग्राम कर अति खेदखिन्न भया है तथापि विभीषणको पीछेकर आप आगे होय रावणकी तरफ दौड़े तब रावणने महा क्रोध करि लक्ष्मण पर शक्ति चलाई । कैसी है शक्ति ? निकसे हैं तारावोंके आकार स्फुलिंगनिके समूह जाविषै सो लक्ष्मणका वक्षस्थल महा पर्वतके तट सामान ता शक्ति कर विदारा गया कैसी है शक्ति ? महा दिव्य अति देदीप्यमान अमोघरूपा कहिए वृथा नाहीं है लगना जाका, सो शक्ति लक्ष्मणके अंगसों लग कैसी सोहती भई मानो प्रेमकी भरी वधू ही है । सो लक्ष्मणशक्तिके प्रहार कर पराधीन भया है शरीर जाका सो भूमि पर पडा जैसे वज्रका मारा पहाड परै सो ताहि भूमि पर पडा देख श्रीराम कमललोचन शोकको दबाय शत्रुके घात करिवे निमित्त उद्यमी भए, सिंहोंके रथ चढ़े क्रोधके भरे शत्रुको तत्कालही रथरहित किया तब रावण और रथ चढ़ा तब रामने रावणका धनुष तोड़ा बहुरि रावण दूजा धनुष लिया तितेन रामने रावणका दूजा रथ भी तोड़ा सो रामके बाणनिकर विहवल हुआ रावण धनुषवाण लेयवे असमर्थ भया तीव्र वाणनिकर राम रावणका रथ तोड डारें वह बहुरि रथ चढ़े सो अत्यन्त खेदखिन्न भया छेदा है धनुष वक्तर जाका सो छहबार रामने रथरहित किया तथापि रावण अद्भुत पराक्रमका धारी राम कर हता न गया तब राम आश्चर्य्य पाय रावणसे कहते भए तू अल्पआयु नाहीं, कोईयक दिन आयु बाकी है तातें मेरे बाणनिकर न मूवा मेरी भुजाकर चलाये बाण महातीक्ष्ण तिनकर पहाड़ भी भिद्जाय मनुष्यकी तो कहा बात ? तथापि आयुकर्मने तोकूं बचाया अब मैं तोहि कहूं सो सुन हैं विद्याधरोंके अधिपति ! मेरा भाई संग्राममें शक्तिकर तैंने हना सो याकी मृत्यु क्रियाकर मैं तोसे प्रभात ही युद्ध करूंगा, तब रावण कही ऐसे ही करो, यह कह रावण इंद्रतुल्य पराक्रमी लंकामें गया । कैसा है रावण ? प्रार्थना भंग करिवेको असमर्थ है । रावण मनमें विचारे है इन दोनों भाइयोंमें एक यह मेरा शत्रु अति प्रबल था सो तो मैं हत्या यह विचार कछु इक हर्षित होय महिलाविषै गया, कैयक जो योधा युद्धसे जीवते आए तिनको देख हर्षित भया । कैसा है रावण ? भाइनिमें है वात्सल्य जाके, बहुरि सुनी इन्द्र-

जीत मेघनाद पकडे गए अर भाई कुम्भकर्ण पकड़ा गया सो या वृत्तात कर रावण अति खेदखिन्न भया। तिनके जीवनेकी आशा नाहीं। यह कथा गौतमस्वामी राजा श्रेणिकसूं कहे हैं—हे भव्योत्तम! अनेक रूप अपने उपार्जे कर्मोंके कारणसे जीवनिके नानाप्रकारकी साता असाता होय है, देख! या जगत्‌विषे नानाप्रकारके कर्म तिनके उदयकर जीवनिके नानाप्रकारके शुभाशुभ होय है अर नानाप्रकारके फल होय है, कैयक तो कर्मके उदयकर रणविषै नाशको प्राप्त होय हैं अर कैयक वैरियोंको जीत अपने स्थानको प्राप्त होय हैं अर काहूकी विस्तीर्ण शक्ति विफल होय जाय है अर बंधनको पावे हैं सो जैसे सूर्य पदार्थोंके प्रकाशनेमें प्रवीण है तैसे कर्म जीवनिको नानाप्रकारके फल देनेमें प्रवीण है॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषा वचनिकाविषै लक्ष्मणके रावणके हाथकी शक्तिका लगना अर भूमिविषै अचेत होय पडना वर्णन करनेवाला बासठवा पर्व पूर्ण भया॥ ६२॥

अथानतर श्रीराम लक्ष्मणके शोकसे व्याकुल भए जहां लक्ष्मण पड़ा हुता तहां आय पृथिवी मंडलमा मंडन जो भाई ताहि चेष्टारहित शक्तिसे आलिंगित देख मूर्छित होय पडे, बहुरि घनो वेरमें सचेत होयकर महाशोकसे संयुक्त दुःखरूप अग्निसे प्रज्वलित अत्यन्त विलाप करते भए—हा वत्स! कर्मके योगकर तेरी यह दारुण अवस्था भई आप दुर्लंध्य समुद्र तर यहां आए, तू मेरी भक्तिमें सदा सावधान मेरे कार्य निमित्त सदा उद्यमी शीघ्र ही मेरेसे वचनालाप कर कहा मौन धरे तिष्ठै है? तू न जाने मैं तेरे वियोगकों एक क्षणमात्र भी सहिवे सक्त नाहीं, उठ, मेरे उरसे लग, तेरा विनय कहां गया तेरे भुज गजके सूंड समान दीर्घ भुजबन्धननिकर शोभित सो ये क्रियारहित प्रयोजनरहित होय गए भाव मात्र ही रहगए अर तू माता पिताने मोहि धरोहर सौंपा हुता सो अब मैं महानिर्लज्ज तिनको कहा उत्तर दूंगा अत्यन्त प्रेमके भरे अति अभिलाषी राम, हा लक्ष्मण हा लक्ष्मण ऐसा जगत्‌में हितु तो समान नाहीं या भान्तिके वचन कहते भए, लोक समस्त देखे हैं अर महादीन भए भाइसों कहे हैं, तू सुभटनिमें रत्न है तो विना मैं कैसे जीऊंगा मैं अपना जीतव्य पुरुषार्थ तेरे विना विफल मानूं हूं, पापोंके उदयका चरित्र मैंने प्रत्यक्ष देखा मोहि तेरे विना

सीता कर कहा अर अन्य पदार्थ निकर कहा ? जा सीताके निमित्त तेरे सारिखे भाईको निर्दय शक्तिकर पृथिवीपर पड़ा देखूं हूं सो तो समान भाई कहां ? काम अर्थ पुरुषोंको सब सुलभ है अर और और सम्बन्धी पृथिवी पर जहां जाईये वहां सब मिलें परन्तु माता पिता अर भाई न मिलें। हे सुग्रीव ! तैंने अपना मित्र पणामुझे अति दिखाया अब तुम अपने स्थानको जावो अर हे भामण्डल ! तुम भी जावो अब मैं सीताकी भी आशा तजी, अर जीवनेकी भी आश तजी अब मैं भाईके साथ निसंदेह अग्निमें प्रवेश करूंगा। हे विभीषण ! मोहि सीताका भी सोच नहीं अर भाईका सोच नाहीं परन्तु तिहारा उपकार हमसे कछु न बना सो यह मेरे मनमें महबाधा है। जे उत्तमपुरुष हैं ते पहिले ही उपकार करें अर जे मध्यम पुरुष हैं ते उपकार पीछे उपकार करें अर जो पीछे भी न करें वे अधम पुरुष हैं सो तुम उत्तम पुरुष हो हमारा प्रथम उपकार किया ऐसे भाईसे विरोधकर हम पे आए अर हमसे तिहारा कछु उपकार न बना तातैं मैं अतिआतापरूप हूं। हो भामंडल सुग्रीव चिता रचो मैं भाईके साथ अग्निमें प्रवेश करूंगा, तुम जो योग्य होय सो करियो यह कहकर लक्ष्मणको राम स्पर्शने लगे तब जाबूनन्द महा बुद्धिमान मने करता भया—हे देव ! यह दिव्यास्त्रसे मूर्छित भया है तिहारा भाई सो स्पर्श मत करो। यह अच्छा हो जायगा ऐसे होय है तुम धीरताको धरो, कायरता तजो, आपदामें उपाय ही कार्यकारी है। यह विलाप उपाय नाहीं, तुम सुभट जन हो तुमको विलाप उचित नाहीं, यह विलाप करना क्षुद्र लोगोंका काम है तातैं अपना चित्त धीर करो कोई एक उपाय अब ही बनै है यह तिहारो भाई नारायण है सो अवश्य जीवेगा। अबार याकी मृत्यु नाहीं यह कह सब विद्याधर विषादी भए अर लक्ष्मणके अंगसे शक्ति निकसनेका उपाय अपने मनमें सब ही चिंतवते भए। यह दिव्य शक्ति है याहि औषधकर कोऊ निवारबे समर्थ नाहीं अर कदापि सूर्य उगा तो लक्ष्मणका जीवना कठिन है यह विद्याधर बारम्बार विचारते हुए उपजी है चिन्ता जिनके सो कमरबंध आदिक सब दूर कर आध निमिषमें धरती शुद्धकर कपड़ेके डेरे खड़े किए अर कटककी सात चौकी मेलीं सो बड़े २ योधा बक्तर पहिरे धनुष बाण धारे बहुत सावधानीसे चौकी बैठे, प्रथम चौकी नील बैठे धनुषबाण हाथमें धरे हैं अर दूजी चौकी नल बैठे गदा करमें लिए

अर तीजी चौकी विभीषन बैठे महा उदारमन त्रिशूल थांभे अर कल्पवृक्षोंकी माला रत्नोंके आभूषण पहरे ईशानइन्द्र समान अर चौथी चौकी तरकश बांधे कुमुद बैठे महा साहस धरे, पांचवी चौकी बरछी संभारे सुषेण बैठे, महा प्रतापी अर छठी चौकी महा दृढ भुज आप सुग्रीव इंद्र सारिखा शोभायमान भिंडिपाल लिए बैठे, सातवीं चौकी महा शस्त्रका निकन्दक तरवार सम्हाले आप भामंडल बैठा, पूर्वके द्वार अष्टापदकी ध्वजा जाके ऐसा सोहता भया मनों महावली अष्टापद ही है अर पश्चिमके द्वार जाम्बुकुमार विराजता भया अर उत्तरके द्वार मंत्रियोंके समूह सहित बालीका पुत्र महा बलवान चन्द्रमरीच बैठा या भांति विद्याधर चौकी बैठे सो कैसे सोहते भये जैसे आकाशमें नक्षत्र मण्डलभासे अर वानरवंशी महाभटके सब दक्षिण दिशाकी तरफ या बैठेभांति चौकीका यत्नकर विद्याधर तिष्ठे लक्ष्मणके जीनेमें संदेह जिनके, प्रबल है शोक जिनका, जीवोंके कर्मरूप सूर्यके उदयकर फलका प्रकाश होय है ताहि न मनुष्य न देव न नाग न असुर कोई भी निवारवे समर्थ नाहीं यह जीव अपना उपार्जा कर्म आप ही भोगवे है ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण ताकी भाषावचनिकाविषै लक्ष्मणके शक्ति लगना अर रामका विलाप वर्णन करनेवाला त्रेसठवां पर्व पूर्ण भया ॥ ६३ ॥

अथानन्तर रावण लक्ष्मणका निश्चयसे मरण जान अर अपने भाई दोऊ पुत्रनिकों बुद्धिमें मरण रूप ही जान अत्यन्त दुःखी भया। रावण विलाप करै है—हाय भाई कुम्भकरण परम उदार अत्यंत हितु कहा ऐसी बन्धन अवस्थाको प्राप्त भया, हाय इंद्रजीत मेघनाद महा पराक्रमके धारी हो, मेरी भुजा समान दृढ कर्मके योगकर बंधको प्राप्त भए, ऐसी अवस्था अबतक न भई, मैं शत्रुका भाई हना है सो न जानिए शत्रु व्याकुल भया कहा करे तुम सारिखे उत्तम पुरुष मेरे प्राण वल्लभ दुःख अवस्थाको प्राप्त भए या समान मोकों अति कष्ट कहा ऐसे रावण गोप्य भाई अर पुत्रनिका शोक करता भया अर जानकी लक्ष्मणके शक्ति लगी सुन अति रुदन करती भई—हाय लक्ष्मण! विनयवान गुणभूषण! तू मो मन्दभागिनीके निमित्त ऐसी अवस्थाको प्राप्त भया, मैं तोहि ऐसी अवस्थाविषै हू देखा चाहू हू सो दैवयोगसे देखने नहीं पाऊं हूं

तो सारिखे योद्धाको पापी शत्रु ने हना सो कहा मेरे मरणका संदेह न किया, तो समान पुरुष या संसारमें
और नाहीं जो वड़े भाईकी सेवामें आसक्त है चित्त जाका समस्त कुटुम्बको तज भाईके साथ निकसा अर
समुद्र तिर यहां आया ऐसी अवस्थाको प्राप्त भया तोहि मैं कव देखूं । कैसा है तू बालक्रीड़ामें प्रवीण अर
महा विनयवान महा मिष्टवाक्य वा अद्भुतकार्यका करणहारा ऐसा दिन कव होयगा जो तुझे मैं देखूं सर्व
देव सर्वथा प्रकार तेरी सहाय करहु हे सर्वलोकके मनके हरणहारे तू शक्तिकी शल्यसे रहित होय । या भांति
महा कष्टतैं शोकरूप जानकी विलाप करे । ताहि भावनिकर अति प्रीतिरूप जे विद्याधरी तिनने धीर्य वंधाय
शांतचित्त करी—हे देवि ! तेरे देवरका अवतक मरनेका निश्चय नाहीं तातैं तू रुदन मत कर अर महा धीर
सामन्तोंकी यही गति है अर या पृथिवीविषै उपाय भी नाना प्रकारके हैं ऐसे विद्याधारियोंके वचन सुन सीता
किंचित् निराकुल भई । अव गौतम स्वामी राजा श्रेणिकते कहे हैं हे राजन् ! अव जो लक्ष्मणका वृत्तान्त
भया सो सुन एक योद्धा सुन्दर है मूर्ति जाकी सो डेरोंके द्वार पर प्रवेश करता भामण्डलने देखा अर पूछा कि
तू कौन अर कहां से आया अर कौन अर्थ यहां प्रवेश करै है यहां ही रह आगे मत जावो । तव वह कहता
भया मोहि महीने ऊपर कई दिन गए हैं मेरे अभिलाषा रामके दर्शनकी है सो रामका दर्शन करूंगा अर जो
तुम लक्ष्मणके जीवनेकी वांछा करो हो तो मैं जीवनेका उपाय कहूंगा जव वाने ऐसा कहा तव भामंडल अति
प्रसन्न होय द्वार आप समान अन्य सुभट मेल ताहि लार लेय श्रीरामपै आया सो विद्याधर श्रीरामसे नमस्का-
रकर कहता भया—हे देव ! तुम खेद मत करो लक्ष्मण कुमार निश्चय सेती जीवेगा देवगतिनामा नगर त-
हां राजा शशिमण्डल राणीसुप्रभा तिनका पुत्र मैं चंद्रप्रीतम सो एक दिन आकाशविषै विचरता हुता सो
राजा वेलाध्यक्षका पुत्र सहस्रविजय सो वासे मेरा यह वैर कि मैं वाकी मांग परणी सो वह मेरा शत्रु ताके अर
मेरे महा युद्ध भया सो ताने चण्डरवा नाम शक्ति मेरे लगाई सो मैं आकाशसे अयोध्याके महेन्द्रनामा उद्या-
नमें पड़ा सो मोहि पड़ता देख अयोध्याके धनी राजा भरत आय ठाढ़े भए, शक्तिसे विदारा मेरा वक्षस्थल
वे महा दयावान उत्तम पुरुष जीवदाता मुझे चन्दनके जलकर छांटा सो शक्ति निकस गई मेरा जैसा

रूप हुता वैसा होय गया अर कुछ अधिक भया वो नरेंद्र भरतने मोहि नवा जन्म दिया जाकर तिहारा दर्शन भया। यह वचन सुन श्रीरामचन्द्र पूछते भए कि वा गन्धोदककी उत्पत्ति तू जाने है तब ताने कहा हेदेव। जानू हूं, तुम सुनों। मैं राजा भरतको पूछी अर ताने मोहि कही जो यह हमारा समस्त देश रोगनिकर पीड़ित भया सो काहू इलाजसे अच्छा न होय, पृथिवीविषै कौन कौन रोग उपजे सो सुनो—उरोघात महा दाहज्वर लालपरिश्रम सर्वशूल अर छिरदसोई फोरे इत्यादि अनेक रोग सर्वदेशके प्राणियोंको भए, मानों क्रोधकर रोगनिकी धाड़ ही देशविषै आई अर राजा द्रोणमेघ प्रजासहित निरोग तब मैं ताको बुलाया अर कही—हे मामा! तुम जैसे निरोग हो तैसा शीघ्र मोहि अर मेरी प्रजाको करो। तब राजा द्रोणमेघने जाकी सुगन्धतासे दशोंदिशा सुगन्ध होय ता जलकर मोहि सींचा सो मैं चंगा भया अर ता जलकर मेरा राजलोक भी चंगा अर नगर तथा देश चंगा भया, सवरोग निवृत्त भए सो हजारो रोगोंकी करणहारी अत्यन्त दुस्सह वायु मर्मकी भेदनहारी ता जलसे जाती रही तब मैंने द्रोणमेघको पूछा यह जल कहांका है जाकर सर्वरोगका विनाश होय तब द्रोणमेघने कही—हे राजन्! मेरे विशिल्यानामा पुत्री सर्वविद्याविषै प्रवीण महागुणवती सो जब गर्भविषै आई तब मेरे देशविषै अनेक व्याधि हुतीं सो पुत्रीके गर्भविषै आवते ही सर्व रोग गए, पुत्री जिनशासनविषै प्रवीण है भगवान्‌की पूजाविषैं तत्पर है सर्व कुटुम्बकी पूजनीक है ताके स्नानका यह जल है ताके शरीरकी सुगन्धतासे जल महासुगंध है, क्षणमात्रविषै सर्व रोगका विनाश करे है। ये वचन द्रोणमेघके सुनकर मैं अचिरजोंको प्राप्त भया ताके नगरविषै जाय ताकी पुत्रीकी स्तुति करी, अर नगरीसे निकस सत्वहित नामा मुनिको प्रणामकर पूछा हे प्रभो! द्रोणमेघकी पुत्री विशल्याका चरित्र कहो तब चार ज्ञानके धारक मुनि महावात्सल्यके धरणहारे कहते भए—हे भरत! महाविदेह क्षेत्रविषै स्वर्ग समान पुंडरीक देश तहां त्रिभुवनानन्द नामा नगर तहां चक्रधर नाम चक्रवर्ती राजा राज्य करै ताके पुत्री अनंगशरा गुण ही हैं आभूषण जाके, स्त्रीनिविषै ता समान अद्भुत रूप औरका नाहीं सो एक प्रतिष्ठितपुरका धनी राजा पुनर्वसु विद्याधर चक्रवर्तीका सामन्त सो कन्याको देख कामबाणकर पीड़ित होय विमानमें बैठाय लेय गया सो चक्रवर्त्तीने को-

धायमान होय किंकर भैजे सो तासूं युद्ध करते भए ताका विमान चूर डारा तव ताने व्याकुल होय कन्या आकाशतें डारी सो शरद्के चन्द्रमाकी ज्योति समान पुनर्वसुकी पर्ण लघुविद्याकर अटवीविषै आय पड़ी सो अटवी दुष्ट जीवनिकर महा भयानक जाका नाम श्वापद रौरव जहां विद्याधरोंका भी प्रवेश नाहीं, वृक्षनिके समूहकर महा अंधकाररूप नाना प्राकारकी वेलनिकर बेढे नाना प्रकारके ऊंचे वृक्षनिकी सघनतासे जहां सूर्य-की किरणका भी प्रवेश नाहीं अर चीता व्याघ्र सिंह अष्टापद गेंडा रीछ इत्यादि अनेक वनचर विचरें अर नीची ऊंची विषमभूमि जहां बड़े २ गर्त (गढे) सो यह चक्रवर्तीकी कन्या अनंग सरा बालक अकेली ता वनमें महाभयकर युक्त अति खेदखिन्न होती भई नदीके तीर जाय दिशा अवलोकनकर माता पिताको चि-[illegible]र रुदन करती भई—हाय ! मैं चक्रवर्तीकी पुत्री मेरा पिता इन्द्रसमान ताके मैं अति लाड़ली दैवयोगकर [illegible] अवस्थाको प्राप्त भई अव कहा करूं ? या वनका छोर नाहीं यह वन देखे दुःख उपजे, हाय पिता महा-[illegible]राक्रमी सकल लोक प्रसिद्ध, मैं या वनमें असहाय पड़ी मेरी दया कौन करे, हाय माता ऐसे महा दुःखकर [illegible]मोहि गर्भमें राखी अव काहेसे मेरी दया न करो हाय मेरे परिवारके उत्तम मनुष्य हो। एक क्षणमात्र मोहि न छोड़ते सो अव क्यों तज दीनी अर मैं होती ही क्यों न मरगई, काहेसे दुःखकी भूमिका भई, चाही मृत्यु भी न मिले, कहा करूं कहां जाउं मैं पापिन कैसे तिष्ठूं यह स्वप्न है कि साक्षात् है। या भांति चिरकाल विलापकर महा विह्वल भई ऐसे विलाप किए जिनको सुन महा दुष्ट पशुका भी चित्त कोमल होय। यह दी-नचित्त क्षुधा-तृषासे दग्ध शोकके सागरमें मग्न फल पत्रादिकसे कीनी है आजीविका जाने, कर्मके योग ता वनमें कई शीतकाल पूर्ण किए। कैसे हैं शीतकाल ? कमलनिके वनकी शोभाका जो सर्वस्व ताके हरणहारे अ-र जिनने अनेक ग्रीष्मके आताप सहे, कैसे हैं ग्रीष्म आतप ? सूके हैं जलोंके समूह अर जले हैं दावानलोंसे अनेक बन-वृक्ष अर जरे हैं मरे हैं अनेक जन्तु जहां अर जाने ता वनमें वर्षाकाल भी बहुत व्यतीत किए ता समय जलधाराके अन्धकारकर दव गई है सूर्यकी ज्योति अर ताका शरीर वर्षाका धोया चित्रामके समान हो-य गया, कांतिरहित दुर्वल विखरे केश मलयुक्त शरीर लावण्यरहित ऐसा होय गया जैसे सूर्यके प्रकाशकर

चन्द्रमाकी कलाका प्रकाश चीण होय जाय, कैथका वन फलनिकर नम्रीभूत वहां वैठी, पिताको चितार या भांतिके वचन कहकर रुदन करे कि मैं जो चक्रवर्तीके तो जन्म पाया अर पूर्व जन्मके पापकर वनमें ऐसी दुःख अवस्थाको प्राप्त भई। या भांति आंसुओंकी वर्षा कर चातुर्मासिक किया अर जे वृक्षोंसे टूटे फल सूकजांय तिनका भक्षण करे अर वेला तेला आदि अनेक उपवासनिकर चीण होय गया है शरीर जाका सो केवल फल अर जलकर पारणा करती भई, अर एक ही वार जल ताही समय फल। यह चक्रवर्तीकी पुत्री पुष्पनिकी सेज पर सोवती अर अपने केश भी जाको चुभते सो विषम भूमिपर खेदसहित शयन करती भई अर पिताके अनेक गुणीजन राग करते तिनके शब्द सुन प्रबोधको पावती सो अब स्याल आदि अनेक वनचरोंके भयानक शब्दसे रात्रि व्यतीत करती भई। या भांति तीन हजार वर्ष तप किया सूके फल तथा सूके पत्र अर पवित्र जल आहार किये अर महावैराग्यको प्राप्त होय खान पानका त्यागकर धीरता धर संलेषणा मरण आरम्भा एक सौ हाथ भूमि पावोंसे पैर न जाऊं यह नियम धार तिष्ठी, आयुमें छह दिन बाकी हुते अर एक अरहदास नामा विद्याधर सुमेरुकी वन्दना करके जावे था सो आय निकसा सो चक्रवर्तीकी पुत्रीको देख पिताके स्थानक लेजाना विचारा संलेषणाके योगकर कन्याने मने किया।

तव अरहदास शीघ्रही चक्रवर्ती पर जाय चक्रवर्तीको लेय कन्या पै आया सो जा समय चक्रवर्ती आया ता समय एक सर्प कन्याको भखे था सो कन्याने पिताको देख अजगरको अभयदान दिवाया अर आप समाधि धारणकर शरीर तज तीजे स्वर्ग गई पिता पुत्रीकी यह अवस्था देखकर वाईस हजार पुत्रनि सहित वैराग्यको प्राप्त होय मुनि भया कन्याने अजगरसे क्षमाकर अजगरको पीड़ा न होने दई सो ऐसी दृढ़ता ताहीसूं वनै अर वह पुनर्वसु विद्याधर अनंगसराको देखता भया सो न पाई तव खेदखिन्न होय द्रुमसेन मुनिके निकट मुनि होय महातप किया सो स्वर्गमें देव होय महासुन्दर लक्ष्मण भया, अर वह अनंगसरा चक्रवर्तीकी पुत्री स्वर्गलोकतें चयकर द्रोणमेघके विशल्या भई अर पुनर्वसुने ताके निमित्त निदान किया हुता, सो अब लक्ष्मण याहि वरेगा यह विशल्या या नगरविषै या देशविषै तथा भरतक्षेत्रमें महा गुणवन्ती है पूर्व भवके तप के प्रभावकर

महा पवित्र है ताके स्नानका यह जल है सो सकल विकारको हरै है याने उपसर्ग सहा महा तप किया ताका फल
है याके स्नानके जलकर जो तेरे देशमें वायु विषम विकार उपजा हुता सो नाश भया। ये मुनिके वचन सुन
भरतने मुनिसे पूछी हे प्रभो ! मेरे देशमें सर्वलोकोंको रोगविकार कोन कारणसे उपजा तब मुनिने कहा गज
पुर नगरमें एक व्यापारी महा धनवन्त विन्ध्यनामा सो रासभ (गधा) ऊंट भैंसा लादे अयोध्यामें आया अर
ग्यारह महीना अयोध्यामें रहा ताके एक भैंसा सो बहुत बोझके लगनेसे घायल हुआ, तीव्र रोगके भारसे पी-
ड़ित या नगरमें मूवा सो आकामनिर्जराके योगकर अश्वकेतु नामा वायुकुमार देव भया जाका विद्यावर्त नाम,
सो अवधिज्ञानसे पूर्वभवको चितारा कि पूर्व भव विषै मैं भैंसा था पीठ कट रही हुती अर महा रोगों कर
पीड़ित मार्ग विषै कीच में पड़ा हुता सो लोक मेरे सिरपर पांव देय देय गए। यह लोक महानिर्दई अब मैं
देव भया सो मैं इनका निग्रह न करूं तो मैं देव काहेका ? ऐसा विचार अयोध्या नगरविषै अर सुकौशल-
देशमें वायु रोग विस्तारा सो समस्त रोग विशल्याके चरणोदकके प्रभाव से विलाय गया बलवानसे अधिक
बलवान है सो यह पूर्णकथा मुनिने भरतसे कही अर भरतने मोसे कही सो मैं समस्त तुमको कही विशल्या-
का स्नान जल शीघ्र ही मंगावो लक्ष्मणके जीवनेका अन्य यत्न नाहीं। या भांति विद्याधरने श्रीरामसे कहा
सो सुनके प्रसन्न भए। गौतमस्वामी कहे हैं कि हे श्रेणिक ! जे पुण्याधिकारी हैं तिनको पुण्यके उदयकरि
अनेक उपाय मिलै हैं। अहो महंतजन हो, तिन्हें आपदाविषै अनेक उपाय सिद्ध होय हैं॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण ताकी भाषावचनिकाविषै विशल्याका पूर्वभव वर्णन करनेवाला चौसठवां पर्व पूर्ण भया॥६४॥

अथानन्तर ये विद्याधरके वचन सुनकर रामने समस्त विद्याधरनि सहित ताकी अति प्रशंसा करी अर हनूमान भामंडल तथा अंगद इनको मंत्रकर अयोध्याकी तरफ विदा किए। ये क्षणमात्रमें गए जहां महा-प्रतापी भरत विराजे हैं सो भरत शयन करते हुते तिनको रागकर जगावनेका उद्यम किया सो भरत जागते भए तब ये मिले सीताका हरण रावणसे युद्ध अर लक्ष्मणके शक्तिका लगना ये समाचार सुन भरतको शोक अर क्रोध उपजा अर ताही समय युद्धकी भेरी दिवाई सो संपूर्ण अयोध्याके लोग व्याकुल भए अर विचार

करते यह राजमंदिरमें कहा कलकलाट शब्द है ? आधीरातके समय कहा अतिवीर्यका पुत्र आय पड़ा ? कोईयक सुभट अपनी स्त्रीसहित सोता हुता ताहि तजकर वक्तर पहिरे अर खड्ग हाथमें समारा अर कोइक मृगनैनी भोरे बालकको गोदमें लेय अर कुचोंपर हाथ धर दिशावलोकन करती भई अर कोई स्त्री निद्रारहित भई सोते कंथको जगावती भई अर कोई एक भरतजीका सेवक जानकर अपनी स्त्रीको कहताभया—हे प्रिये ! कहां सोवे है ? आज अयोध्यामें कछु भला नाहीं राजमन्दिरमें प्रकाश हो रहा है अर रथ, हाथी, घोड़े, प्यादे, राजद्वारकी तरफ जाय हैं जो सयाने मनुष्य हुते ते सब सावधान होय उठ खड़े हुये अर कईएक पुरुष स्त्रीसे कहते भए ये सुवर्ण कलश अर मणि रत्नोंके पिटारे तहखानोंमें अर सुन्दर वस्त्रोंकी पेटी भूमिग्रहमें धरी और भी द्रव्य ठिकाने धरो अर शत्रुघन भाई निद्रा तज हाथी चढ़ मंत्रियोंसहित शस्त्रधारक योद्धाओंको लेय राजद्वार आया और भी अनेक राजा राजद्वार आए सो सबको युद्धका आदेश देय उद्यमी भया तब भामण्डल हनूमान अंगद भरतको नमस्कार कर कहते भये—हे देव ! लंकापुरी यहांसे दूर है अर बीच समुद्र है तब भरतने कही कहा करना ? तब उन्होंने विशल्याका वृत्तान्त कहा—हे प्रभो ! राजा द्रोणमेघकी पुत्री विशल्या ताके स्नानका उदक देवो शीघ्रही कृपा करो जो हम लेजांय सूर्यका उदय भए लक्ष्मणका जीव.ा कठिन है तब भरतने कही ताके स्नानका जल क्या वाही लेजावो। मोहि मुनिने कही हुती यह विशल्या लक्ष्मणकी स्त्री होयगी तब द्रोणमेघके निकट एक निज मनुष्य ताही समय पठाया सो द्रोणमेघने लक्ष्मणके शक्ति लग सुन अति कोप किया अर युद्धको उद्यमी भया अर ताके पुत्र मंत्रिनि सहित युद्धको उद्यमी भए तब भरत अर माता केकईने आप द्रोणमेघको जायकर ताको समझाय विशल्याको पठावना ठहराया तब भामण्डल हनूमान अंगद विशल्याको विमानमें बैठाय एक हजार अधिक राजाकी कन्या सहित लेय रामकटकमें आए, एक क्षणमात्रमें संग्राम भूमि आय पहुंचे विमानसे कन्या उतरी ऊपर चमर ढुरै हैं कन्याके कमल सारिखे नेत्र सो हाथी, घोड़े, बड़े बड़े योद्धानिको देखती भई ज्यों ज्यों विशल्या कटकमें प्रवेश करै त्यों त्यों लक्ष्मणके शरीरमें साता होती भई, वह शक्ति देवरूपिणी लक्ष्मणके अंगसे निकसी ज्योतिके समूहसे युक्त

विशल्याकी सर्व जगतमें कीर्ति विस्तरी। या भांति जे उत्तम पुरुष हैं अर पूर्वजन्ममें महा शुभ चेष्टा करी है तिनको मनोग्य वस्तुका संबन्ध होय है अर चांद सूर्यकीसी उनकी कांति होय है।

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषा वचनिकाविषै विशल्याका समागम वर्णन करने वाला पैंसठवां पर्व पूर्ण भया ॥६५॥

अथानन्तर लक्ष्मणका विशल्यासूं विवाह अर शक्तिका निकासना यह सव समाचार रावणने हलकार-निके मुख सुने अर सुनकर मुलकि कर मन्दवुद्धि कर कहता भया—शक्ति निकसी तो कहा अर विशल्या व्याही तो कहा ? तव मारीच आदि मंत्री मंत्रमे प्रवीण कहते भये हे देव ! तिहारे कल्याणको बात यथार्थ कहेंगे तुम कोप करो अथवा प्रसन्न होवो सिंहवाहनी गरुड़वाहनी विद्या राम लक्ष्मणको यत्न विना सिद्ध भई सो तुम देखी अर तिहारे दोऊ पुत्र अर भाई कुम्भकर्णको तिन्होंने वांध लिए सो तुम देखे अर तिहारी दिव्य शक्ति सो निरर्थक भई तिहारे शत्रु महाप्रवल हैं उनकर जो कदाचित् तुम जीते भी तो भ्राता पुत्रों का निश्चय नाश है तातैं ऐसा जानकर हम पर कृपा करो, हमारी विनती अव तक आपने कदापि भंग न करी तातैं सीताको तजो अर जो तिहारे धर्म बुद्धि सदा रही हैं सो राखो सर्व लोकको कुशल होय राघवसे संधि करो यह बात करनेमें दोष नाहीं, महागुण है तुम ही कर सर्व लोकविषै मर्यादा चले हैं धर्मकी उत्पत्ति तुमसे जैसे समुद्र तें रत्ननि की उत्पत्ति होय ऐसा कहकर बड़े मंत्री हाथ जोड़ नमस्कार करते भये हाथ जोड़ विनती करते भये। सबने यह मन्त्र किया जो एक सामन्त दूतविद्याविषै प्रवीण संधिके अर्थि राम पै पठाइये सो एक वुद्धिसे शुक्रसमान महा तेजस्वी प्रतापवान मिष्टवादी ताहि बुलाया सो मंत्रिनिने महा सुन्दर महाअमृत औषधि समान वचन कहे परन्तु रावणने नेत्रकी समस्या कर मंत्रिनिका अर्थ दूषित कर डाला जैसे कोई विषसे महा औषधिको विषरूप कर डारे तैसे रावण संधिकी वात विग्रहरूप जताई सोतदू स्वामीको नमस्कारकर जायवेको उद्यमी भया। कैसा है दूत ? बुद्धिके गर्वकर लोकको गोपद समान निरखे है, आकाशके मार्ग जाता रामके कटकको भयानक देख दूतको भय न उपजा। याके वादित्र सुन वानरबंशियोंकी सेना क्षोभको प्राप्त भई रावणके आगमकी शंका करी जव नजीक आया तव जानी यह रावण नाहीं कोई

जाय तिष्ठे तैसे वह विशल्या सुलक्षणा महा भाग्यवती सखियोंके वचनसे लक्ष्मणके समीप तिष्ठी वह नव यौवन जाके मृगीकैसे नेत्र, पूर्णमासीके चन्द्रमा समान मुख जाका अर महा अनुरागकी भरी उदारमन पृथ्वी विषै सुखसे सूते जो लक्षण तिनको एकांतविषै स्पर्श कर अर अपने सुकुमार करकमल सुन्दर तिनकर पतिके पांव पलोटने लगी अर मलयागिरि चन्दनसे पतिका सर्व अंग लिप्त किया अर याकी लार हजार कन्या आई थीं तिनने याके करसे चन्दन लेय विद्याधरनिके शरीर छांटे सो सब घायल आछे भए अर इन्द्रजीत कुम्भकर्ण मेघनाद घायल भए हुते सो उनको हू चन्दनके लेपसे नीके किए सो परम आनन्दको प्राप्त भए जैसे कर्मरोगरहित सिद्धपरमेष्ठी परम आनन्दको पावें अर भी जे योद्धा घायल भए हुते हाथी घोड़े पियादे सो सब नीके भए घावोंकी शल्य जाती रही सब कटक अच्छा भया अर लक्ष्मण जैसे सूता जागै तैसे वीण के नाद सुन अति प्रसन्न भए अर लक्ष्मण मोहशय्या छोड़ते भए स्वाँस लिए आंख उघड़ी उठकर क्रोधके भरे दशों दिशा निरखि ऐसे वचन कहते भए कहां गया रावण कहां गया वो रावण ? ये वचन सुन राम अति हर्षित भए, फूल गये हैं नेत्र कमल जिनके महा आनन्दके भरे बड़े भाई रोमांच होय गया है शरीरमें जिनके अर अपनी भुजानिकर भाईसे मिलते भए अर कहते भए हे भाई ! वह पापी तोहि शक्तिसे अचेत कर आपको कृतार्थ मान घर गया अर या राजकन्याके प्रसादतें तू नीका भया अर जामवन्तको आदि देय सब विद्याधरनिने शक्तिके लागवे आदि निकसवे पर्यन्त सब वृत्तांत कहा अर लक्ष्मणने विशल्या अनुरागकी दृष्टिकर देखी । कैसी है विशिल्या ? श्वेत श्याम आरक्त तीन वर्ण कमल तिन समान हैं नेत्र जाके अर शरदकी पूर्णिमाके चन्द्रमा समान है मुख जाको अर कोमल शरीर क्षीण कटि दिग्गजके कुम्भस्थल समान स्तन हैं जाके नव यौवन मानों साक्षात् मूर्तिवन्ती कामकी क्रीड़ा ही है मानों तीन लोककी शोभा एकत्रकर नामकर्मने याहि रचा है ताहि लक्ष्मण देख आश्चर्यको प्राप्त होय मनमें विचारता भया, यह लक्ष्मी है एक इन्द्रकी इन्द्राणी है अथवा चन्द्रकी कांति है यह विचार करे है अर विशल्याकी लारकी स्त्री कहती भई—हे स्वामी ! तिहारा यासूं विवाहका उत्सव हम देखा चाहे हैं तब लक्ष्मण मुलके अर विशल्याका पाणिग्रहण किया अर

विशल्याकी सर्व जगतमें कीर्ति विस्तरी। या भांति जे उत्तम पुरुष हैं अर पूर्वजन्ममें महा शुभ चेष्टा करी है तिनको मनोग्य वस्तुका संबन्ध होय है अर चांद सूर्यकीसी उनकी कांति होय है।

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषा वचनिकाविषै विशल्याका समागम वर्णन करनेवाला पैंसठवां पर्व पूर्ण भया ॥ ६५ ॥

अथानन्तर लक्ष्मणका विशल्यासूं विवाह अर शक्तिका निकासना यह सब समाचार रावणने हलकारनिके मुख सुने अर सुनकर मुलकि कर मन्दबुद्धि कर कहता भया—शक्ति निकसी तो कहा अर विशल्या व्याही तो कहा? तब मारीच आदि मंत्री मंत्रमें प्रवीण कहते भये हे देव! तिहारे कल्याणकी बात यथार्थ कहेंगे तुम कोप करो अथवा प्रसन्न होवो सिंहवाहनी गरुड़वाहनी विद्या राम लक्ष्मणको यत्न विना सिद्ध भई सो तुम देखी अर तिहारे दोऊ पुत्र अर भाई कुम्भकर्णको तिन्होंने बांध लिए सो तुम देखे अर तिहारी दिव्य शक्ति सो निरर्थक भई, तिहारे शत्रु महाप्रवल हैं उनकर जो कदाचित् तुम जीते भी तो भ्राता पुत्रों का निश्चय नाश है तातें ऐसा जानकर हम पर कृपा करो, हमारी विनती अब तक आपने कदापि भंग न करी तातें सीताको तजो अर जो तिहारे धर्म बुद्धि सदा रही है सो राखो सर्व लोकको कुशल होय राघवसे संधि करो यह बात करनेमें दोष नाहीं, महागुण है तुम ही कर सर्व लोकविषै मर्यादा चले हैं धर्मकी उत्पत्ति तुमसे जैसे समुद्र तें रत्ननि की उत्पत्ति होय ऐसा कहकर वड़े मंत्री हाथ जोड़ नमस्कार करते भये हाथ जोड़ विनती करते भये। सबने यह मन्त्र किया जो एक सामन्त दूतविद्याविषै प्रवीण संधिके अर्थि राम पै पठाइये सो एक बुद्धिसे शुक्रसमान महा तेजस्वी प्रतापवान मिष्टवादी ताहि बुलाया सो मंत्रिनिने महा सुन्दर महाअमृत औषधि समान वचन कहे परन्तु रावणने नेत्रकी समस्या कर मंत्रिनिका अर्थ दूषित कर डाला जैसे कोई विषसे महा औषधिको विषरूप कर डारे तैसे रावण संधिकी वात विग्रहरूप जताई सोतदू स्वामीको नमस्कारकर जायवेको उद्यमी भया। कैसा है दूत? बुद्धिके गर्वकर लोकको गोपद समान निरखे है, आकाशके मार्ग जाता रामके कटकको भयानक देख दूतको भय न उपजा। याके वादित्र सुन वानरवंशियोंकी सेना क्षोभको प्राप्त भई रावणके आगमकी शंका करी जब नजीक आया तब जानी यह रावण नाहीं कोई

और पुरुष है तब वानरवंशियोंकी सेनाको विश्वास उपजा दूत द्वारे आय पहुंचा तब द्वारपालने भामंडलसे कही। भामंडलने रामसे विनतीकर केतेक लोकनि सहित निकट बुलाया अर ताकी सेना कटकमें उतरी।

रामसे नमस्कारकर दूत वचन कहता भया—हे रघुचन्द्र! मेरे वचननिकर मेरे स्वामीने तुमको कुछ कहा है सो चित्त लगाय सुनहु, युद्धकर कछु प्रयोजन नाहीं आगे युद्धके अभिमानी बहुत नाशको प्राप्त भए तातें प्रीतिही योग्य है युद्धकर लोकनिका क्षय होय है अर महा दोष उपजे हैं अपवाद होय है, आगे संग्रामकी रुचि-कर राजा दुर्वर्तक शंख धवलांग असुर सम्बरादिक अनेक राजा नाशको प्राप्त भए तातें मेरे सहित तुमको प्रीति ही योग्य है अहो जैसे सिंह महा पर्वतकी गुफाको पायकर सुखी होय है तैसे अपने मिलापकर सुख होय है मैं रावण जगत्प्रसिद्ध कहा तुमने न सुना, जाने इन्द्रसे राजा बन्दीगृहविषै किए जैसे कोई स्त्रीनिको अर सामान्यलोकोंको पकड़ै तैसे इन्द्र पकड़ा अर जाकी आज्ञा सुर असुरनिकर न रोकी जाय, न पातालविषै न जलमें न आकाशविषै आज्ञाको कोई न रोक सके नाना प्रकारके अनेक युद्धोंका जीतनहारा वीर लक्ष्मी जाको वरै ऐसा मैं सो तुमको सागरांत पृथिवी विद्याधरोंसे मंडित दूंहूं अर लंकाके दोयभागकर बांट दूंहूं- भावार्थ—समस्त राज्य अर आधीलंका दूंहूं तुम मेरा भाई अर दोनों पुत्र मोपै पठावो अर सीता मोहि देवो जाकर सब कुशल होय अर जो तुम यों न करोगे तो जो मेरे पुत्र भाई बन्धनमें हैं तिनको, तो बलात्कार छुटाय लूंगा अर तुमको कुशल नाहीं। तब राम बोले मोहि राज्यसे प्रयोजन नाहीं अर और स्त्रियोंसे प्रयो-जन नाहीं सीता हमारे पठावो हम तिहारे दोऊ पुत्र अर भाईको पठावें अर तिहारे लंका तिहारे ही रहो अर समस्त राज्य तुम ही करो मैं सीतासहित दुष्टजीवनिसंयुक्त जो वन ताविषै सुखसूं विचरूंगा। हे दूत! तू लंकाके धनीसे जाय कह याही बातमें तिहारा कल्याण है और भांति नाहीं। ऐसे श्रीरामके सर्व पूज्य वचन सुख साताकर संयुक्त तिनको सुनकर दूत कहता भया— हे नृपति! तुम राज काजविषै समझते नाहीं, मैं तुमको बहुरि कल्याणकी बात कहूं हूं निर्भय होय समुद्र उलंघ आए हो सो नीके न करी अर यह जानकीकी आशा तुमको भली नाहीं यदि लंकेश्वर कोप भया तब जानकीकी कहा बात? तिहारा जीवना भी कठिन है अर राज-

नीतिविषै ऐसा कहा है जे बुद्धिमान् हैं तिनको निरन्तर अपने शरीरकी रक्षा करनी स्त्री अर धन इनपर दृष्टि न धरनी अर जो गरुड़ेन्द्रने सिंहवाहन गरुड़वाहन तुमपै भेजे तो कहा अर तुम छलछिद्रकर मेरे पुत्र अर सहोदर बांधे तो कहा ? जौलग मैं जीवूं हूं तौं लग इनवातोंका गर्व तुमको वृथा है जो तुम युद्ध करोगे तो न जानकीका न तिहारा जीवन, तातैं दोऊ मत खोवो, सीताका हठ छांड़हु अर रावणने यह कही है जे] बड़े २ राजा विद्याधर इन्द्रतुल्य पराक्रम जिनके सो समस्त शास्त्रविषै प्रवीण अनेक युद्धनिके जीतनहारे ते मैं नाशको प्राप्त किए हैं तिनके कैलाशपर्वतके शिखर हाड़नके समूह देखो। जब ऐसा दूतने कहा तब भामंडल क्रोधायमान भया ज्वाला समान महा विकराल मुख ताकी ज्योतिसे प्रकाश किया है आकाशविषै जानें। भामण्डलने कही—रे पापीदूत ! स्याल चातुर्यतारहित दुर्बुद्धि वृथा शङ्कारहित कहा भाषै है सीताकी कहा वार्ता ? सीता तो राम लेहींगे यदि श्रीराम कोपें तब रावण राक्षस कुचेष्टित पशु कहा ? ऐसा कह ताके मारवेको खड्ग सम्हारा। तब लक्ष्मणने हाथ पकड़ अर मने किया। कैसे हैं लक्ष्मण ? नीति ही हैं नेत्र जिनके, भामंडलके क्रोधकर रक्त नेत्र होय गए वक्र होय गए जैसी सांझकी लाली होय तैसा लाल बदन होय गया। तब मंत्रिनिने योग्य उपदेशःकह समताको प्राप्त किया। जैसे विषका भरा सर्प मंत्रसे वश कीजिये है। हे नरेन्द्र ! क्रोध तजो यह दीन तिहारे योग्य नाहीं, यह तो पराया किंकर है जो वह कहावै सो कहै,याके मारवेकर कहा स्त्री, बालक, दूत, पशु, पक्षी, वृद्ध, रोगी, सोता, आयुधरहित, शरणागत, तपस्वी, गाय, ये सर्वथा अबध्य हैं। जैसे सिंह कारी घटा समान गाजते जे गज तिनका मर्दन करनेहारा सो मींडकनिपर कोप न करै तैसे तुमसे नृपति दूतपर कोप न करें, यह तो वाके शब्दानुसार है जैसे छाया पुरुष है (छाया पुरुषकी अनुगामिनी है) अर सूवाको ज्यों पढ़ावें तैसे पढ़ै अर यंत्रको ज्यों बजावें त्यों बजै तैसे यह दीन वह बकावे त्यों बकै। ऐसे शब्द लक्ष्मणने कहे तब सीताका भाई भामण्डल शांतचित्त भया। श्रीराम दूतको प्रकट कहते भए—रे मूढ़ दूत ! तू शीघ्र ही जा अर रावणको ऐसे कहियो तू ऐसे मूढ़ मंत्रियोंका बहकाया खोटे उपायकर आपा ठगावेगा तू अपनी बुद्धिकर विचार, किसी कुबुद्धिको पूछे मत, सीताका प्रसंग तज, सर्व पृथिवीका इन्द्र हो

पुष्पक विमानमें बैठा जैसे भ्रमे था तैसे विभवसहित भ्रम, यह मिथ्या हठ छोड़ दे, क्षुद्रनिकी बात मत सुनहु करने योग्य कार्यविषै चित्त धर जो सुखकी प्राप्ति होय । ये वचन कह श्रीराम तो चुप होय रहे अर और पुरुषनिने दूतको बहुरि बात न करने दई, निकाल दियो । दूत रामके अनुचरनिने तीक्ष्ण बाणरूप वचननिकर बींधा अर अति निरादर किया तब रावणके निकट गया, मनविषै पीड़ा थका, सो जायकर रावणसों कहता भया हे नाथ ! मैं तिहारे आदेश प्रमाण रामसों कहीं जो या पृथिवी नाना देशनिकर पूर्ण समुद्रांत महा रत्ननिकी भरी विद्याधरोंके समस्त पट्टन सहित मैं तुमको दूं हूं अर बड़े २ हाथी रथ तुरंग दूं हूं अर यह पुष्पक विमान लेवो जो देवोंसे न निवारा जाय याविषै बैठ विचरो अर तीन हजार कन्या मैं अपने परवारकी तुमको परणाय दूं अर सिंहासन सूर्य समान अर चन्द्रमा समान छत्र वे लेहु अर निःकंटक राज करो ऐती बात मुझे प्रमाण है जो तिहारी आज्ञाकर सीता मोहि इच्छे यह धन अर धरा लेवो अर मैं अल्प विभूति राख बेंतहीके सिंहासनपर बैठ रहूंगा । विचक्षण हो तो एक वचन मेरा मानहु, सीता मोहि देवो । ए वचन मैं बार बार कहे सो रघुनन्दन सीताका हठ न छोड़ें, केवल वाके सीताका अनुराग है और वस्तुकी इच्छा नाहीं । हे देव ! जैसे मुनि महाशांत चित्त अट्ठाईस मूलगुणोंकी क्रिया न तजें वह क्रिया मुनिव्रतका मूल हैं तैसे राम सीताको न तजें, सीता ही रामके सर्वस्व है। कैसी है सीता ? त्रैलोक्यविषै ऐसी सुन्दरी नाहीं अर रामने तुमसू यह कही है कि हे दशानन ! ऐसे सर्वलोकनिन्द्य वचन तुमसे पुरुषनिको कहना योग्य नाहीं ऐसे वचन पापी कहे हैं। उनकी जीभके सौ टूक क्यों न होंय ? मेरे या सीता बिना इन्द्रके भोगनिकर कार्य नाहीं । यह सर्व पृथिवी तू भोग, मैं वनवास ही करूंगा अर तू परदारा हरकर मरवेको उद्यमी भया है तो मैं अपनी स्त्रीके अर्थ क्यों न मरूंगा अर मुझे तीन हजार कन्या देहे सो मेरे अर्थ नाहीं, मैं वनके फल अर पत्रादिक ही भोजन करूंगा अर सीतासहित वनमें विहार करूंगा अर कपिध्वजोंका स्वामी सुग्रीव ताने हंसकर मोह कही—जो कहा तेरा स्वामी आग्रहरूप ग्रहके वश भया है ? कोऊ वायुका विकार उपजा है जो ऐसी विपरीत वार्त्ता रंक हूवा बकै है अर कहा लंकामें कोऊ वैद्य नाहीं, अक मन्त्रवादी नहीं वायके तैलादिककर यत्न क्यों न करे नातर संग्रामविषै लक्ष्मण सर्वरोग निवारेगा । भावार्थ—मारेगा ।

तब यह वचन सुन मैं क्रोधरूप अग्निकर प्रज्वलित भया अर सुग्रीवसूं कही—रे बानरध्वज! तू ऐसे वके है जैसे गजके लार स्वान बकै, तू रामके गर्वकर मूवा चाहे है जो चक्रवर्त्तिकूं निन्दाके वचन कहै है सो मेरे अर सुग्रीवके वहुत बात भई अर रामसों कहा—हे राम! तुम महारणविषै रावणका पराक्रम न देखा, कोऊ तिहारे पुण्यके योग कर वह वीर विकराल क्षमामें आया है। वह कैलाशका उठावनहारा तीन जगत्में प्रसिद्ध प्रतापी तुमसे हित किया चाहे है अर राज्य देय है ता समान और कहा तुम अपनी भुजानिकर दशमुखरूपसमुद्रकूं कैसे तरोगे। कैसा है दशमुखरूपसमुद्र? प्रचंड सेना सोई भई तरंगनिकी माला तिनकर पूर्ण है अर शस्त्ररूप जलचरनिके समूह कर भरा है। हे राम! तुम कैसे रावणरूप भयंकर बनविषै प्रवेश करोगे, कैसा है रावणरूप वन? दुगम कहिए जा विषै प्रवेश करना कठिन है अर व्याल कहिए दुष्ट गज तेई भए नाग तिनकर पूर्ण है अर सेनारूप वृक्षनिके समूह कर महा विषम है, हे राम! जैसे कमल-पत्रको पवनकर सुमेरु न डिगे अर सूर्यकी किरण कर समुद्र न सूके अर बलदके सींगोंसे धरती न उठाई जाय तैसे तुम सारिखे नरनिकर नरपति दशानन जीता न जाय ऐसे प्रचण्ड वचन मैं कहे तब भामण्डलने महाक्रोध--रूप होय मोहि मारवेकोखडग काढ़ा तब लक्ष्मणने मने किया जो दूतको मारना न्यायमें नहीं कहा। स्याल पर सिंह कोप न करे जो सिंह गजेन्द्रके कुम्भस्थल अपने नखनिसे विदारै तातैं हे भामण्डल! प्रसन्न होवो क्रोध तजो जे शूरवीर नृपति हैं महा तेजस्वी ते दीननिपर प्रहार न करें। जो भयकर कम्पायमान होय ताहि न हने श्रमण कहिये मुनि अर ब्राह्मण कहिए व्रतधारी गृहस्थी अर शून्य कहिए सूना अर स्त्री बालक वृद्ध पशु-पक्षी दूत ऐ अवध्य हैं इनको शूरवीर सर्वथा न हने इत्यादि वचननिके समूहकर लक्ष्मण महापंडित ताने समझाय भामण्डलको प्रसन्न किया अर कपिध्वजनिके कुमार महाक्रूर तिन वज्र समान वचननिकर मोहि बांधा तब मैं उनके असार वचन सुन आकाशमें गमनकर आयु कर्मके योगसे आपके निकट आया हूं। हे देव! जो लक्ष्मण न होय तो आज मेरा मरण ही होता जो शत्रुनिके अर मेरे विवाद भया सो मैं सब आपसूं कहा मैं कछु शंका न राखी, अब आपके मनमें जो होय सो करो, हम सारिखे किंकर तो वचन करे हैं जो कहो सो

करें। या भांति दूत दशमुखसे कहता भया। यह कथा गौतम गणधर श्रेणिकसे कहे हैं—हे श्रेणिक ! जो अनेक शास्त्रनिके समूह जानें अर अनेक नयविषै प्रवीण होंय अर जाके मंत्री भी निपुण होंय अर सूर्यसारिखा तेजस्वी होय तथापि मोहरूप मेघपटल कर आच्छादित भया प्रकाशरहित होय है। यह मोह महा अज्ञानका मूल विवेकियोंको तजना योग्य है।

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषा वचनिकाविषै रावणके दूतका आगम बहुरि,पाछा रावण पास गमन वर्णन करनेवाला छियासठवा पर्व पूर्ण भया ॥ ६६ ॥

अथानन्तर लंकेश्वर अपने दूतके वचन सुन क्षण एक मन्त्रके ज्ञाता मंत्रियोंसे मन्त्रकर कपोलपर हाथ धर अधोमुख होय कछुएक चिन्ता रूप तिष्ठा अपने मनमें विचारै है जो शत्रुको युद्धविषै जीतू हूं तो भ्राता पुत्रनिकी अकुशल दीखे है अर जो कदाचित् वैरिनिके कटकमें मैं रति हावकर कुमारनिको ले आऊं तो या शूरतामें न्यूनता है। रतिहाव क्षत्रियोंके योग्य नाहीं कहा करूं कैसे मोहि सुख होय ? यह विचार करते रावणको यह बुद्धि उपजी जो मैं बहुरूपिणी विद्या साधूं। कैसी है बहुरूपणी जो कदाचित् देव युद्ध करैं तो भी न जीती जाय, ऐसा विचारकर सब सेवकनिकों आज्ञा करी श्रीशांतिनाथके मंदिरमें समीचीन तोरणादिकनिकर अति शोभा करो सो सर्व चैत्यालयोंमें विशेष पूजा करो सर्व भार पूजा प्रभावनाका मन्दोदरीके सिरपर धरया। गौतम गणधर कहे हैं--हे श्रेणिक ! वह श्रीमुनिसुव्रतनाथ बीसमां तीर्थंकरका समय ता समय या भरतक्षेत्रविषै सर्व ठौर जिनमंदिर हुते यह पृथिवी जिनमन्दिरनिकर मण्डित हुती चतुरविध संघकी विशेष प्रवृत्ति राजा श्रेष्ठि ग्रामपति अर प्रजाकेलोग सकल जैनी हुते सो महा रमणीक जिनमन्दिर रचे जिनमंदिर जिनशासनके भक्त जो देव तिनसे शोभायमान वे देव धर्मकी रक्षामें प्रवीण शुभ कार्यके करणहारे, ता समय पृथिवी भव्य जीवनिकर भरी ऐसी सोहती मानों स्वर्ग विमान ही है ठौर २ पूजा ठौर २ प्रभावना ठौर २ दान। हे मगधाधिपति ! पर्वत पर्वतविषै गांव गांवविषै नगर २ विषै बन २ विषै पट्टन २ विषै मन्दिर २ विषै जिनमंदिर हुते महा शोभाकर संयुक्त शरदके पूनोंकी चन्द्रमासमान उज्वल गीतोंकी ध्वनिकर मनोहर नाना

प्रकारके वादित्रनिके शब्दकर मानों समुद्र गाजे है अर तीनों सन्ध्या वन्दनाको लोग आवें सो साधुओंके संग से पूर्ण नानाप्रकारके आश्चर्यकर संयुक्त नानाप्रकारके चित्रामको धरें अगर चन्दनका धूप अर पुष्पनिकी सुगन्धताकर महासुगन्धमई महा विभूतिकर युक्त नाना प्रकारके वर्णकर शोभित महा विस्तीर्ण महा उतंग महा ध्वजानिकर विराजित ।तनमें रत्नमई तथा स्वर्णमई पंचवर्णकी प्रतिमा विराजें विद्याधरनिके स्थानविषै अति सुन्दर जिनमंदिरनिके शिखर तिनकर अति शोभा होय रही है ता समय नानाप्रकारके रत्नमई उपवनादिसे शुभित जे जिनभवन तिनकर यह जगत व्याप्त अर इन्द्रके नगरसमान लंकाका अन्तर बाहिर जिनेंद्रके मन्दिरनिकर मनोग्य था सो रावण विशेष शोभा कराई अर आप रावण अठारह हजार राणी वेई भई कमलनिके वन तिनको प्रफुल्लित कर्ता वर्षाके मेघसमान है स्वरूप जाका सो महानागसमान है भुजा जाकी पूर्णमासीके चन्द्रमासमान वदन सुन्दर केतकीके फूलसमान लाल होंठ विस्तीर्ण नेत्र स्त्रीनिका मन हरणहारा लक्ष्मण समान श्यामसुन्दर दिव्यरूपका धरणहारा सो अपने मन्दिरनिविषै तथा सर्व क्षेत्रविषै जिनमन्दिरनिकी शोभा करावता भया। कैसा है रावणका घर ? लग रहे हैं लोगनिके नेत्र जहां अर जिनमन्दिरनिकी पंक्तिकर मण्डित नानाप्रकारके रत्नमई मन्दिरके मध्य उतंग श्रीशांतिनाथका चैत्यालय जहां भगवान शांतिनाथ जिनकी प्रतिमा विराजे। जे भव्य जीव हैं ते सकल लोकचरित्रको असार अशाश्वता जानकर धर्म विषै बुद्धि धर जिनमन्दिरनिकी महिमा करो। कैसे हैं जिनमन्दिर ? जगतकर बन्दनीक हैं अर इन्द्रके मुकुटके शिखरविषै लगे जे रत्न तिनकी ज्योतिको अपने चरणनिके नखोंकी ज्योतिकर बढ़ावनहारे हैं, धन पावनेका यही फल जो धर्म करिए सो गृहस्थका धर्म दान पूजारूप अर यतिका धर्म शांतभावरूप। या जगतविषै यह जिनधर्म मनबांछित फलका देनहार है जैसे सूर्यके प्रकाशकर नेत्रनिके धारक पदार्थनिका अवलोकन करे हैं तैसे जिनधर्मके प्रकाशकर भव्यजीव निज भावका अवलोकन करे हैं।

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषावचनिकाविषै श्रीशान्तिनाथके चैत्यालयका वर्णन करनेवाला सरसठवां पर्व पूर्ण भया॥ ६७॥

अथानन्तर फाल्गुणसुदी अष्टमीसूं लेय पूर्णमासी पर्यन्त सिद्धचक्रका व्रतहै जाहि अष्टाह्निका कहे हैं

सो इन आठ दिननिमें लंकाके लोग अर लशकरके लोग नियम ग्रहणको उद्यमी भए। सर्व सेनाके उत्तम लोक मनमें यह धारणा करते भए जो यह आठ दिन धर्मके हैं सो इन दिननिमें न युद्ध करें न और आरम्भ करें यथाशक्ति कल्याणके अर्थ भगवानकी पूजा करेंगे अर उपवासादि नियम करेंगे। इन दिननिविषै देव भी पूजा प्रभावनाविषै तत्पर होय हैं। चीरसागरके जे सुवर्णके कलश जलकर भरे तिनकर देव भगवानका अभिषेक करे हैं कैसा है जल? सत्पुरुषनिके यश समान उज्वल अर और भी जे मनुष्यादि हैं तिनको भी अपनी शक्तिप्रमाण पूजा अभिषेक करना। इन्द्रादिक देव नंदीश्वरद्वीप जायकर जिनेश्वरका अर्चन करे हैं तो कहा ये मनुष्य अपनी शक्ति प्रमाण यहाँके चैत्यालयोंका पूजन न करें? करें ही करें। देव स्वर्ण रत्ननिके कलशनिसे अभिषेक करें हैं अर मनुष्य अपनी संपदा प्रमाण करें महानिर्धन मनुष्य होय तो पलाश पत्रनिके पुटहीसे अभिषेक करै। देव रत्न स्वर्णके कमलनिसे पूजा करें हैं निर्धन मनुष्य चित्तही रूप कमलनिसे पूजा करें हैं। लंकाके लोक यह विचारकर भगवानके चैत्यालयनिको उत्साहसहित ध्वजा पताकादिकर शोभित करते भए वस्त्र स्वर्ण रत्नादिकर अति शोभा करी, रत्नोंकी रज अर कनकरज तिनके मण्डल मांडे अर देवालयनिके द्वार अति सिंगारे अर मणि सुवर्णके कलश कमलनिसे ढके दधि दुग्ध घृतादिसे पूर्ण मोतियोंकी माला है कण्ठमें जिनके, रत्ननिकी कांतिकर शोभित, जिन विम्वोंके अभिषेकके अर्थ भक्तिवन्त लोक लाये जहां भोगी पुरुषोंके घरमें सैकड़ों हजारों मणिसुवर्णोंके कलश हैं, नंदनवनके पुष्प अर लंकाके वनोंके नानाप्रकारके पुष्प कर्णिकार अतिमुक्त कदम्ब सहकार चम्पक पारिजात मन्दार जिनकी सुगन्धताकर भ्रमरनिके समूह गुन्जार करें हैं अर मणि सुवर्णादिकके कमल तिनकर पूजा करते भए अर ढोल मृदङ्ग ताल शङ्ख इत्यादि अनेक वादित्रनिके नाद होते भए लङ्कापुरके निवासी वैर तज आनन्दरूप होय आठ दिनमें भगवानकी अति महिमाकर पूजा करते भए, जैसे नंदीश्वर द्वीपविषे देवपूजाके उद्यमी होंय तैसे लङ्काके लोक लङ्काविषै पूजाके उद्यमी भए अर रावण विस्तीर्ण प्रतापका धारक श्रीशांतिनाथके मन्दिरविषै जाय पवित्र होय भक्तिकर महा मनोहर पूजा करता भया जैसे पहले प्रतिवासुदेव करे, गौतम गणधर कहे हैं—हे श्रेणिक! जे महाविभव

कर युक्त भगवानके भक्त महाविभूतिवन्त अति महिमाकर प्रभुका पूजन करे हैं तिनके पुण्यके समूहका व्याख्यान कौन कर सके ? वे उत्तम पुरुष देवगतिके सुख भोग बहुरि चक्रवर्तियोंके भोग पावें बहुरि राज्य तज जैन मतके व्रतधार महातप कर परम मुक्ति पावैं। कैसा है तप ? सूर्यहूतें अधिक है तेज जाका।

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषावचनिकाविषै श्रीशांतिनाथके चैत्यालयविषै अष्टाह्निकाका उत्सव वर्णन करनेवाला अड़सठवां पर्व पूर्ण भया ॥ ६८ ॥

अथानन्तर महाशांतिका कारण श्रीशांतिनाथका मन्दिर कैलाशके शिखर अर शरद्के मेघ समान उज्ज्वल महा देदीप्यमान मन्दिरोंकी पंक्तिकर मण्डित जैसे जम्बूद्वीपके मध्य महा उतङ्ग सुमेरु पर्वत सोहै तैसे रावण के मन्दिरके मध्य जिनमन्दिर सोहता भया। तहां रावण जाय विद्याके साधनमें आसक्त है चित्त जाका अर स्थिर है निश्चय जाका परम अद्भुत पूजा करता भया। भगवानका अभिषेक कर अनेक वादित्र बजावता अति मनोहर द्रव्यनिकर महासुगन्ध धूपकर नानाप्रकारकी सामग्री कर शांतचित्त भया शांतिनाथकी पूजा करता भया मानों दूजा इन्द्र ही है। शुक्ल वस्त्र पहिरे महासुन्दर जे भुजबन्ध तिनकर शोभित है भुजा जाकी, सिरके केश भली भांति बांध तिनपर मुकुटधर तापर चूड़ामणि लहलहाट करती महाज्योतिको धरे रावण दोनों हाथ जोड़ गोड़ोंसे धरतीको स्पर्शता मन वचन कायकर शांतिनाथको प्रणाम करता भया। श्रीशांतिनाथके सन्मुख निर्मल भूमिमें खड़ा अत्यन्त शोभता भया। कैसी है भूमि ? पद्मराग मणिको है फर्श जा विषै अर रावण स्फटिकमणिकी माला हाथविषै अर उरविषै धरे कैसा सोहता भया मानों बक पंक्तिकर संयुक्त कारी घटाका समूह ही है। वह राक्षसनिका अधिपति महाधीर विद्याका साधन आरम्भता भया। जब शांतिनाथके चैत्यालय गया तो पहिले मन्दोदरीको यह आज्ञा करी जो तुम मंत्रिनिको अर कोटपालको बुलायकर यह घोषणा नगरमें फेरियो जो सर्वलोक दयाविषैं तत्पर नियम धर्मके धारक होवें समस्त व्यापार तज जिनेंद्रकी पूजा करो अर अर्थी लोगोंको मन वांछित धन देवो अहंकार तजो। जौलग मेरा नियम न पूरा होय तौलग समस्त लोग श्रद्धाविषे तत्पर संयमरूप रहो जो कदाचित् कोई बाधा करै तो निश्चयसेती सहियो

महाबलवान होय सो बलका गर्व न करियो। इन दिवसनिविषै जो कोऊ क्रोधकर विकार करेगा सो अवश्य सजा पावेगा। जो मेरे पिता समान पूज्य होय अर इन दिननिविषै कषाय करे, कलह करे ताहि मैं मारूं, जो पुरुष समाधिमरणकर युक्त न होय सो संसार समुद्रको न तिरे जैसे अन्धपुरुष पदार्थनिको न परखे तैसे अविवेकी धर्मको न निरखै तातैं सब विवेकरूप रहियो कोऊ पापक्रिया न करने पावे, यह आज्ञा मंदोदरीको कर रावण जिनमन्दिर गए अर मन्दोदरी मन्त्रियोंको अर यमदण्डनामा कोटपालको द्वारे बुलाय पतिकी आज्ञा प्रमाण आज्ञा करती भई। तब सबने कही जो आज्ञा होयगी सोही करेंगे। यह कह आज्ञा सिरपर धर गए अर संयमरहित नियम धर्मके उद्यमी होय नृपकी आज्ञा प्रमाण करते भए। समस्त प्रजाके लोग जन पूजाविषै अनुरागी होते भए अर समस्त कार्य तज सूर्यकी कान्तितैं हू अधिक है कान्ति जिनकी ऐसे जे जिन मन्दिर तिनविषै तिष्ठे, निर्मल भावकर युक्त संयम नियमका साधन करते भए।

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषा वचनिकाविषै लङ्काके लोगनिका अनेकानेक नियम धारण वर्णन करनेवाला उनसठवां पर्व पूर्ण भया ॥ ६६ ॥

अथानन्तर श्रीरामके कटकमें हलकारोंके मुख यह समाचार आए कि रावण बहुरूपिणी विद्याके साधने को उद्यमी भया श्रीशांतिनाथके मन्दिरमें विद्या साधै है, चौवीस दिनमें यह बहुरूपिणी विद्या सिद्ध होयगी। यह विद्या ऐसी प्रबल है जो देवनिका मद हरे सो समस्त कपिध्वजनि ने यह विचार किया कि जो वह नियम में बैठा विद्या साधे है सो ताको क्रोध उपजावें जो ताकों यह विद्या सिद्ध न होय तातैं रावणको कोप उपजावनेका यत्न करना, जो वाने विद्या सिद्ध कर पाई तो इन्द्रादिक देवनिकरहू न जीता जाय, हम सारिखे रंकनिकी कहा बात? तब विभीषण कही—जो कोप उपजावनेका उपाय करो शीघ्रही करो। तब सबने मन्त्रकर रामसे कहा कि लङ्का लेनेका यह समय है। रावणके कार्यमें विघ्न करिए अर अपनेको जो करना होय सो करिए तब कपिध्वजनिके यह वचन सुन श्रीरामचन्द्र महाधीर महापुरुषनिकी है चेष्टा जिनकी, सो कहते भये हो विद्याधर हो! तुम महामूढ़ताके वचन कहो हो, क्षत्रिनिके कुलका यह धर्म नाहीं जो ऐसे कार्य करें।

अपने कुलकी यह रीति है जो भयकर भाजै ताका बध न करना तो जे नियमधारी जिनमन्दिरमें बैठे हैं तिनसे उपद्रव कैसे करिए यह नीचनिके कर्म हैं सो कुलवंतनिको योग्य नाहीं। यह अन्याय प्रवृत्ति क्षत्रियनिकी नाहीं, कैसे हैं क्षत्री ? महामान्यभाव अर शस्त्रकर्मविषै प्रवीण। यह वचन रामके सुन सबने विचारी जो हमारा प्रभु श्रीराम महा धर्मधारी है, उत्तम भावका धारक है सो इनको कदाचित् हू अधर्मविषै प्रवृत्ति न होयगी तब लक्ष्मणकी जानमें इन विद्याधरनिने अपने कुमार उपद्रवको विदा किए अर सुग्रीवादिक बडे बडे पुरुष आठ दिनका नियम धर तिष्ठे अर पूर्णचन्द्रमा समान बदन जिनके कमल समान नेत्र नाना लक्षणके धरणहारे सिंह व्याघ्र वराह गज अष्टापद इनकर युक्त जे रथ तिनविषै बैठे तथा विमाननिमें बैठे परम आयुधनिको धरे कपियोंके कुमार रावणको कोप उपजायबेका है अभिप्राय जिनके मानों यह असुरकुमार देव ही हैं प्रीतंकर दृढरथ चन्द्राभ रतिवर्धन वातायन गुरुभार सूर्यज्योति महारथ सामंतबल नंदन सर्वदृष्ट सिंह सर्वप्रिय नल नील सागर घोषपुत्र सहित पूर्णचन्द्रमा स्कंध चन्द्र मारीच जांबव संकट समाधि बहुल सिंहकट चन्द्रासन इन्द्रामणि बल तुरंग सब इत्यादि अनेक कुमार तुरंगनिके रथ चढे अर अन्य कैयक सिंह बाराह गज व्याघ्र इत्यादि मनहूतें जे चंचल बाहन तिनपर पयादनिके पटल तिनके मध्य महातेजको धरें नाना प्रकारके चिन्ह तिनकर युक्त हैं छत्र जिनके अर नानाप्रकारकी ध्वजा फहरे हैं जिनके, महा गंभीर शब्द करते दशोंदिशाको आच्छादित करते लंकापुरीमें प्रवेश करते भए। मनविषै विचार करते भए बड़ा आश्चर्य है जो लंकाके लोक निश्चिंत तिष्ठे हैं। जानिये है कछू संग्रामका भय नाहीं, अहो लंकेश्वरका बड़ा धीर्य महागंभीरता देखहु जो कुम्भकर्णसे भाई अर इन्द्रजीत मेघनादसे पुत्र पकड़े गए हैं तौ हू चिंता नाहीं अर प्रहस्तादिक अनेक योद्धा युद्धविषै हते गए, हस्त प्रहस्त सेनापति मारे गए तथापि लंकापतिको शंका नाहीं, ऐसा चिंतवन करते परस्पर वार्ता करते नगरमें बैठे तथा विभीषणका पुत्र सुभूषण कपिकुमारनिको कहता भया तुम निर्भय लंकामें प्रवेश करो, बाल वृद्ध स्त्रीनिको तो कछु न कहना अर सबको व्याकुल करेंगे। तब याका वचन मान विद्याधर कुमार महा उद्धत कलहप्रिय आशीविष समान प्रचण्ड अतरहित चपल चंचल सं-

काविषै उपद्रव करते भए। सो तिनके महाभयानक शब्द सुन लोक अति व्याकुल भए अर रावणके महल हू में व्याकुलता भई जैसे तीव्र पवनकर समुद्र क्षोभको प्राप्त होय तैसे लंका कपिकुमारनिसे उद्वेगको प्राप्त भई। रावणके महिलविषै राजलोकनिको चिंता उपजी। कैसा है रावणका मन्दिर ? रत्ननिकी कांतिकर देदीप्यमान है अर जहां मृदंगादिकके मंगल शब्द होवे हैं जहां निरन्तर स्त्रीजन नृत्य करे हैं अर जिनपूजाविषै उद्यमी राजकन्या धर्म मार्गविषै आरूढ सो शत्रु सेनाके क्रूर शब्द सुन आकुलता उपजी स्त्रीनिके आभूषणनिके शब्द होते भए मानों वीणा बाजे हैं। सब मनमें विचारती भई—न जानिए कहा होय। या भांति समस्त नगरीके लोग व्याकुलताको प्राप्त होय विह्वल भए तब मन्दोदरीका पिता राजा मय विद्याधरनिविषै दैत्य कहावे सो सब सेनासहित बक्तर पहिर आयुध धार महा पराक्रमी युद्धके अर्थ उद्यमी होय राजद्वार आया जैसे इन्द्रके भवन हिरण्यकेशी देव आवैं तब मन्दोदरी पितासे कहती भई—हे तात ! जा समय लंकेश्वर जिनमन्दिर पधारे तासमय आज्ञा करी जो सबलोक सम्वररूप रहियो कोई कषाय मत करियो तातैं तुम कषाय मत करो। ये दिन धर्मध्यानके हैं सो धर्म सेवो और भांति करोगे तो स्वामीकी आज्ञा भंग होयगी अर तुम भला फल न पावोगे ये वचन पुत्रीके सुन राजा मय उद्धतता तज महा शांत होय शस्त्र डारते भए जैसे अस्त समय सूर्य किरणोंको तजे, मणियोंके कुण्डलनिकर मंडित अर हारकर शोभे है वक्षस्थल जाका, अपने जिनमन्दिरमें प्रवेश करता भया अर ये वानरवंशी विद्याधरनिके कुमारनिने निज मर्यादा तज नगरका कोट भंग किया वज्रके कपाट तोडे, दरवाजा तोडे।

अथानन्तर इनको देख नगरके बासियोंको अति भय उपजा घर घर में ये बात होय हैं भजकर कहां जाइये ये आए बाहिर खडे मत रहो भीतर धसो, हाय मात यह कहा भया ? हे तात देखो, हे भ्रात हमारी रक्षा करो हे आर्यपुत्र महाभय उपजा है ठिकाने रहो। या भांति नगरीके लोक व्याकुलताके वचन कहते भए। लोक भाग रावणके महिलमें आये अपने वस्त्र हाथनिमें लिये अति विह्वल बालकनिको गोदमें लिये स्त्रीजन कांपती भागी जाय हैं, कैएक गिर पड़ीं सो गोडे फूट गये, कैएक चली जाय हैं हार टूट गए सो बड़े

बड़े मोती बिखरे हैं जैसे मेघमाला शीघ्र जाय तैसे जाय हैं त्रासको पाई जो हिरणी ता समान हैं नेत्र जिनके अर ढीले होयगये हैं केशनिके बन्ध जिनके अर कोई भयकर प्रीतमके उरसे लिपट गई। या भांति लोकनिको उद्वेग रूप महा भयभीत देख जिन शासनके देव श्रीशांतिनाथके मन्दिरके सेवक अपनी पक्षके पालनेको उद्यमी करुणावन्त जिन शासनके प्रभाव करनेको उद्यमी भए। महा भैरव आकार धरे शांतिनाथके मंदिरसे निकसे, नाना भेष धरे विकराल हैं दाढ जिनकी, भयंकर है मुख जिनका, मध्यान्हके सूर्य समान तेज हैं नेत्र जिनके, होंठ डसते दीर्घ हैं काया जिनकी, नाना वर्ण भयंकर शब्द महा विषम भेषको धरे, विकराल स्वरूप तिनको देखकर बानरवंशियों के पुत्र महा भयकर अत्यन्त विह्वल भए। वे देव क्षणमें सिंह क्षणविषै मेघ क्षणविषै हाथी क्षण विषै सर्प क्षण विषै वायु क्षणमें वृक्ष क्षण विषै पर्वत, सो इनकर कपिकुमारनिको पीड़ित देख कटकके देव मदद करते भए। देवनिमें परस्पर युद्ध भया लंकाके देव कटकके देवनिसे। अर कपिकुमार लंकाके सन्मुख भए तब यक्षनिके स्वामी पूर्णभद्र मणिभद्र महा क्रोधको प्राप्त भए दोनों यक्षेश्वर परस्पर वार्ता करते भए देखो ये निर्दई कपिनिके पुत्र महाविकारको प्राप्त भए हैं। रावण तो निराहार होय देहविषै निस्पृह सर्व जगतका कार्य तज पोसे बैठा है सो ऐसे शांतचित्तको यह छिद्र पाय पापी पीडा चाहे हैं, सो यह योद्धाओंकी चेष्टा नाहीं। यह वचन पूर्णभद्रके सुन मणिभद्र बोला—अहो पूर्णभद्र! रावणको इन्द्र भी पराभव करिवे समर्थ नाहीं, रावण सुन्दर लक्षणनिकर पूर्ण शांत स्वभाव है। तब पूर्णभद्रने कही—जो लंकाको विघ्न उपजा है सो आपा दूर करेंगे, यह वचन कहकर दोनों धीर सम्यक्‌दृष्टि जिनधर्मी यक्षनिके ईश्वर युद्धको उद्यमी भए सो बानरवंशिनिके कुमार और उनके पक्षी देव सब भागे। ये दोनों यक्षेश्वर महावायु चलाय पाषाण बरसावते भए अर प्रलय कालके मेघ समान गाजते भए। तिनके जांघोंकी पवनकर कपिदल सूके पानकी न्याईं उडे तत्काल भाग गए। तिनके लार ही ये दोनों यक्षेश्वर रामके निकट उलाहना देनेको आए। सो पूर्णभद्र सुबुद्धि रामको स्तुति कर कहते भए राजा दशरथ महाधर्मात्मा तिनके तुम पुत्र अर अयोग्य कार्यके त्यागी सदा योग्य कार्यनिके उद्यमी शास्त्र समुद्रके पारगामी शुभ गुणनिकर सबनविषै

उन्च, तिहारी सेना लंकाके लोकनिको उपद्रव करै। यह कहांकी बात ? जो जाका द्रव्य हरे सो ताका प्राण ह-
रे है यह धन जीवनिके बाह्य प्राण हैं। अमोलिक हीरे वैडूर्य मणि मूंगा मोती पद्मराग मणि इत्यादि अनेक
रत्ननिकर भरी लंका उद्वेगको प्राप्त करी। तब यह वचन पूर्णभद्रके सुन रामका सेवक गरुडकेतु कहिये
लक्ष्मण नीलकमल समान, सो तेजसे विविधरूप वचन कहता भया—ये श्रीरघुचन्द्र तिनके राणी सीता प्रा-
णहूतें प्यारी शीलरूप आभूषणकी धरणहारी वह दुरात्मा रावण छलकर हर लेगया ताका पक्ष तुम कहा करो,
हे यक्षेन्द्र ! हमने तिहारा कहा अपराध किया अर ताने कहा उपकार किया जो तुम भृकुटी वांकीकर अर स-
न्ध्याकी ललाई समान अरुण नेत्रकर उलहना देनेको आए सो योग्य नाहीं एती वार्ता लक्ष्मणने कही अर
राजा सुग्रीव अति भयरूप होय पूर्णभद्रको अर्घ देय कहता भया—हे यक्षेन्द्र ! क्रोध तजो अर हम लंका-
विषै कछु उपद्रव न करें परन्तु यह वार्ता है रावण बहुरूपिणी विद्या साधै है सो जो कदाचित् ताको विद्या सिद्ध होय
तो वाके सन्मुख कोई ठहर न सकै जैसे जिनधर्मके पाठकके सन्मुख वादी न टिकै तातैं वह क्षमावन्त होय
विद्या साधै है सो ताको क्रोध उपजावेंगे जो विद्या साध न सकै जैसे मिथ्यादृष्टि मोक्षको साध न सकै, तब
पूर्णभद्र बोले—ऐसें ही करो परन्तु लंकाके एक जीर्ण तृणको भी बाधा न कर सकोगे अर तुम रावणके अंग-
को बाधा मत करो अर अन्य बातनिकर क्रोध उपजावो परन्तु रावण अतिदृढ है ताहि क्रोध उपजना कठिन
है। ऐसें कह वे दोनों यक्षेन्द्र भव्यजीवनि विषै है वात्सल्य जिनका, प्रसन्न हैं नेत्र जिनके मुनिनके समूहोंके
भक्त, वैयावृतविषै उद्यमी जिनधर्मी अपने स्थानक गए रामको उलाहना देने आये थे सो लक्ष्मण के वचन-
निकर लज्जावान भये, समभावकर अपने स्थानक गये सो जाय तिष्ठे। गौतमस्वामी कहे हैं—हे श्रेणिक !
जौलग निर्दोषता होय तौलग परस्पर अतिप्रीति होय अर सदोषता भए प्रीतिभंग होय जैसे सूर्य उत्पात-
सहित होय तो नीका न लगे ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषा वचनिकाविषै रावणका विद्या साधना अर कपिकुमारनिका
लंका गमन बहुरि पूर्णभद्र मणिभद्रका कोप, क्रोधकी शांति वर्णन करनेवाला सत्तरवां पर्व पूर्ण भया ॥ ७० ॥

अथानन्तर पूर्णभद्र मणिभद्रको शांतभाव जान सुग्रीवको पुत्र अंगद ताने लंकाविषै प्रवेश किया सो अंगद किहकंधकांड नामा हाथीपर चढा मोतिनिकी माला कर शोभित उज्वल चमरनिकर युक्त ऐसा सोहता भया जैसा मेघमालाविषैं पूर्णमासीका चन्द्रमा सोहै, अतिउदार महासामंत तथा स्कंध इन्द्र नील आदि बडी ऋद्धिकर मंडित तुरंगनिपर चढे कुमार गमनको उद्यमी भए अर अनेक पयादे चन्दन कर चर्चित हैं अंग जिनके तांबूलनिकर लाल अधर कांधे ऊपर खड्ग धरे सुन्दर वस्त्र पहिरे स्वर्णके आभूषणकर शोभित सुन्दर चेष्टा धरे आगे पीछे अगल बगल पयादे चले जांय है वीणा वांसुरी मृदंगादि वादित्र वाजे हैं नृत्य होता जाय हैं कपिवंशियोंके कुमार लंकाविषै ऐसे गए जैसे स्वर्गपुरीविषै असुरकुमार प्रवेश करें, अंगदको लंकाविषै प्रवेश करता देख स्त्रीजन परस्पर वार्ता करती भईं—देखो ! यह अंगदरूप चन्द्रमा दशमुखकी नगरीविषै निर्भय भया चला जाय है। याने कहा आरम्भा ? आगे अब कहा होयगा ? या भांति लोक वात करें हैं। ये चले चले रावणके मंदिरविषै गए सो मणियोंका चौक देख इन्होंने जानी ये सरोवर हैं सो त्रासको प्राप्त भए। बहुरि निश्चय देख मणियोंका चौक जाना तब आगे गए सुमेरुकी गुफा समान महारत्ननिकर निर्मापित मंदिरका द्वार देखा मणियोंके तोरणनिकर देदीप्यमान तहां अंजन पर्वत सारिखे इन्द्रनीलमणिनिके गज देखे महास्कंध कुम्भस्थल जिनके स्थूल दंत अत्यन्त मनोग्य अर तिनके मस्तकपर सिंहनिके चिन्ह जिनके सिरपर पूंछ हाथियोंके कुम्भस्थलपर सिंह विकराल वदन तीक्ष्ण दाढ डरावने केश तिनको देख पयादे डरे। जानिए सांचे ही हाथी हैं तब भयकर भागे अतिविह्वल भए अंगदने नीके समझाए तब आगे चले। रावणके महलविषै कपिवंशी ऐसे जावें जैसे सिंहकी गुफाविषै मृग जांय, अनेक द्वार उलंघ आगे जायवेको समर्थ भए, घरोंकी रचना गहन सो ऐसे भटके जैसे जन्मका अन्धा भ्रमैं, स्फटिकमणिके महिल तहां आकाशकी आशंकाकर भ्रमको प्राप्त भए अर इन्द्र नीलमणिकी भीति सो अन्धकारस्वरूप भासै मस्तकविषै शिलाकी लागी सो आकुल होय भूमिमें पडे, वेदनाकर व्याकुल हैं नेत्र जिनके, काहू प्रकार मार्ग पायकर आगे गए जहां स्फटिक मणिकी भीति सो घनोंके गोडे फूटे ललाट फटे दुखी भए तब उलटे

फिरे सो मार्ग न पावें आगे एक रत्नमई स्त्री देखी साक्षात् स्त्री जान तासे पूछते भए सो वह कहा कहै ? तव महाशंकाके भरे आगे गए विह्वल होय स्फटिक मणिकी भूमिमें पडे, आगे शांतिनाथके मंदिरका शिखर नजर आया परन्तु जाय सकें नाहीं स्फटिककी भीति आडा तव वह स्त्री दृष्टि-परी थी त्यों एक रत्नमई द्वारपाल दृष्टिपडा हेमरूप वैंतकी छडी जाके हाथमें ताहि कहा—श्रीशान्तिनाथके मन्दिरका मार्ग वताओ सो वह कहा वतावे ? तव वाहि हाथसूं कूटा सो कूटनहारेकी अंगुरी चूर्ण होय गई। बहुरि आगे गए, जाना यह इन्द्रनीलमणिका द्वार है, शान्तिनाथके चैत्यालयमें जानेकी वुद्धि करी, कुटिल है भाव जिनके आगे एक वचन वोलता मनुष्य देखा ताके केश पकड़े अर कहा तू हमारे आगे आगे चल, शान्तिनाथका मन्दिर दिखाय जव वह अग्रगामी भया तव ये निराकुल भए श्रीशान्तिनाथके मन्दिर जाय पहुंचे। पुष्पांजलि चढाय जय जय शब्द किए स्फटिकके थम्भनिके ऊपर वडा विस्तार देखा सो आश्चर्यको प्राप्त भए मनमें विचारते भए जैसे चक्रवर्तीके मन्दिरमें जिनमन्दिर होय तैसे हैं। अंगद पहलेही वाहनादिक तज भीतर गया ललाटपर दोनों हाथ धर नमस्कारकर तीन प्रदक्षिणा देय स्तोत्र पाठ करता भया, सेना लार थी सो वाहिरले चौकविषैं छांडी। कैसा है अंगद ? फूल रहे हैं नेत्र जाके रत्ननिके चित्रामकर मंडल लिखा सोलह स्वप्नेका भाव देखकर नमस्कार किया, मंडपकी आदि भीतिविषै वह धीर भगवानको नमस्कार कर शांतिनाथके मंदिरविषै गया अति हर्षका भरा भगवानकी बंदना करता भया। वहुरि देखे तो सन्मुख रावण पद्मासन धरे तिष्ठे है, इंद्र नीलमणिकी किरणनिके समूह समान है प्रजा जाकी, भगवानके सन्मुख कैसा बैठा है जैसे सूर्यके सन्मुख राहु बैठा होय। विद्याको ध्यावे जैसे भरत जिनदीक्षाको ध्यावे सो रावणको अंगद कहता भया—हे रावण ! कहो अव तेरी कहा वात ? तोसे ऐसी करूं जैसी यम न करै तैंने कहा पाखंड रोपा ? भगवानके सन्मुख यह पाखंड कहा ? धिक्कार तुझे पापकर्मीने वृथा शुभक्रियाको आरंभ किया है ऐसा कहकर ताका उत्तरासन उतारया अर याकी राणियोंको याके आगे कूटता भया, कठोर वचन कहता भया अर रावणके पास पुष्प पड़े हुते सो उठाय लीये अर स्वर्णके कमलनिकर भगवानकी पूजा करी, बहुरि

रावणसूं कुवचन कहता भया। अर रावणके हाथमेंसूं स्फटिककी माला छीन लई, सो मणियां बिखर गईं बहुरि मणियें चुन माला परोय रावणके हाथविषै दई बहुरि छिनाय लई बहुरि परोय गलेविषै डाली बहुरि मस्तकपर मेली बहुरि रावणका राजलोक सोई भया कमलनिका वन ताविषै ग्रीषम कर तप्तायमान जो वनका हाथी ताकी न्याईं प्रवेश किया अर निःशंक भया राजलोकमें उपद्रव करता भया जैसे चंचल घोड़ा कूदता फिरे तैसे चपलताकरि परिभ्रमण किया काहूके कंठविषै कपड़ेका रस्सा बनाय बांधा अर काहूके कंठविषै उत्तरासन डार थंभविषै बांध बहुरि छोड़ दिया काहूको पकड़ अपने मनुष्यनिसे कही याहि बेंच आवो ताने हंसकर कही पांच दीनारनिको बेच आया। या भांति अनेक चेष्टा करी। काहूके काननिविषै घुंघरू घाले अर केशनिविषै कटिमेखला पहिराई, काहूके मस्तकका चूडामणि उतार चरणनिविषै पहिराया अर काहूको परस्पर केशनिकर बांधी अर काहूके केशोंविषै शब्द करते मोर बैठाये। या भांति जैसे सांड गायोंके समूहविषै प्रवेश करै अर तिनको व्याकुल करै तैसे रावणके समीप सब राजलोकोंको क्लेश उपजाया अर अंगद क्रोधकर रावणसूं कहता भया—हे अधम राक्षस! तैंने कपट कर सीता हरी, अब हम तेरे देखते तेरी समस्त स्त्रीनिकूं हरे हैं तोमें शक्ति होय तो यत्नकर ऐसा कहकर याके आगे मंदोदरीको पकड़ ल्याया जैसे मृगराज मृगीको ल्यावै, कंपायमान हैं नेत्र जाके चोटी पकड़ रावणके निकट खींचता भया जैसे भरत राजलक्ष्मीको खींचे अर रावणसूं कहता भया—देख! यह पटरानी तेरे जीवहूतैं प्यारी मंदोदरी गुणवंती ताहि हम हर ले जांय हैं। यह सुग्रीवके चमरग्राहिणी चेरी होयगी, सो मंदोदरी आंखनितैं आंसू डारती भई अर विलाप करने लगी। रावणके पायनविषै प्रवेश करे कभी भुजानिविषै प्रवेश करै अर भरतारसों कहती भई--हे नाथ! मेरी रक्षा करहु। ऐसी दशा मेरी कहा न देखो हो, तुम क्या और ही होय गए। तुम रावण हो अक और ही हो। अहो जैसी निरग्रंथ मुनिकी वीतरागता होय तैसी तुम वीतरागता पकडी सो ऐसे दुःखमें यह अवस्था क्या? धिक्कार तिहारे बलको जो या पापीका सिर खड्गसों न काटो। तुम महाबलवान चांद-सूर्य समान पुरुषोंका पराभव न सहो सोऐसे रंकका कैसे सहो। हे लंकेश्वर! ध्यानविषै चित्त लगाया न काहूकी सुनो न देखो अर्ध-

पर्यंकासन धर बैठे अहंकार तज दिया जैसा सुमेरुका शिखर अचल होय, तैसे अचल होय तिष्ठे सर्व इन्द्रियनिकी क्रिया तजी विद्याके आराधनविषै तत्पर निश्चल शरीर महाधीर ऐसे तिष्ठे हो मानों काष्ठके हो अथवा चित्रामके हो, जैसे राम सीताको चिंतवें तैसे तुम विद्याको चिंतवो हो, स्थिरता कर सुमेरुके तुल्य भए हो। जब या भांति मंदोदरी रावणसे कहती भई ताही समय बहुरूपिणी विद्या दशोंदिशाविषै उद्योत करती जय जयकार शब्द उचारती रावणके समीप आय ठाढ़ी भई, अर कहती भई--हे देव! आज्ञामें उद्यमी मैं तुमको सिद्ध भई मोहि आदेश देवहु। एक चक्री अर्धचक्रीको टार तिहारी आज्ञासे विमुख होय ताहि वश करूं या लोकविषै तिहारी आज्ञाकारिणी हूं। हम सारिखनिकी यही रीति है जो हम चक्रवर्तियोंसे समर्थ नाहीं जो तू कहे तो सर्व दैत्यनिको जीतूं, देवनिको वश करूं जो तोसे अप्रिय होय ताहि वशीभूत करूं अर विद्याधर तो मेरे तृण समान हैं। यह विद्याके वचन सुन रावण योग पूर्ण कर ज्योतिका धारक उदार चेष्टाका धरणहारा शांतिनाथके चैत्यालयकी प्रदक्षिणा करता भया। ताही समय अंगद मंदोदरीको छांड़ आकाश गमन कर रामके समीप आया। कैसा है अंगद ? सूर्य समान है तेज जाका ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषावचनिकाविषै श्रीशांतिनाथके मंदिरमें रावणको बहुरूपिणी विद्याको सिद्ध होनेका वर्णन करनेवाला इकहत्तरवां पर्व पूर्ण भया ॥ ७१ ॥

अथानन्तर रावणकी अट्ठारह हजार स्त्री रावणके पास एक साथ सब ही रुदन करती भईं सुन्दर है दर्शन जिनका। हे स्वामिन्! सर्व विद्याधरनिके अधीश तुम हमारे प्रभु सो तुमको होते संते मूर्ख अंगदने आयकर हमारा अपमान किया। तुम परम तेजके धारक सूर्य्य समान सो ध्यानरूढ हुते अर विद्याधर आगिया समान, सो तिहारे मूंह आगिला छोहरा सुग्रीवका पुत्र पापी हमको उपद्रव करै। सुनकर तिनके वचन रावण सबकी दिलासा करता भया अर कहता भया—हे प्रिये! वह पापी ऐसी चेष्टा करै है सो मृत्युके पाशकर बंधा है। तुम दुख तजो जैसे सदा आनन्द रूप रहो हो ताही भांति रहो, मैं सुग्रीवको निग्रीव कहिए मस्तकरहित भूमिपर प्रभात ही करूंगा अर वे दोनों भाई राम लक्ष्मण भूमिगोचरी कीट समान हैं तिनपर कहा कोप, ये

दुष्ट विद्याधर सब इनपै भेले भए हैं तिनका क्षय करूंगा, हे प्रिये ! मेरी भौंह टेढ़ी करनेही में शत्रु विलाय जांय अर अब तो बहुरूपिणी महाविद्या सिद्ध भई मोसे शत्रु कहीं न जीवें। या भांति सब स्त्रीनिको महा धीर्य बंधाय मनमें जानता भया मैं शत्रु हते। भगवानके मंदिरसे बाहिर निकसा नानाप्रकारके वादित्र बाजते भए, गीत नृत्य होते भए, रावणका अभिषेक भया, कामदेव समान है रूप जाका स्वर्ण रत्ननिके कलशनिकर स्त्री स्नान करावती भईं। कैसी हैं स्त्री ? कांति रूप चांदनीसे मंडित है शरीर जिनका चन्द्रमा समान वदन अर सुफेद मणिनिके कलशनिकर स्नान करावें सो अद्भुत ज्योति भासती भई अर कई एक स्त्री कमल समान कांतिको धरें मानों सांझ फूल रही है। अर उगते सूर्य समान सुवर्णके कलश तिनकर स्नान करावें सो मानों सांझ ही जल वरसे हैं अर कई एक स्त्री हरित मणिके कलशनिकर स्नान करावती अतिहर्षकी भरी शोभें हैं मानों साक्षात् लक्ष्मी ही हैं। कमल पत्र हैं कलशनिके मुखपर, अर कैयक केलेके गोभ समान कोमल महासुगन्ध शरीर जिनपर भ्रमर गुंजार करे हैं वे नानाप्रकारके सुगन्ध उबटना कर रावणको नाना-प्रकारके रत्नजडित सिंहासन पर स्नान करावती भईं। सो रावणने स्नानकर आभूषण पहिरे, महा सावधान भावनिकर पूर्ण शांतिनाथके मंदिरमें गया। वहां अरहन्तदेवकी पूजा कर स्तुति करता भया, बारम्बार नमस्कार करता भया बहुरि भोजनशालामें आया, चार प्रकारका उत्तम आहार किया अशन पान खाद्य स्वाद्य बहुरि भोजन कर विद्याकी परख निमित्त क्रीडा भूमिविषै गया, वहां विद्याकर अनेकरूप बनाय नानाप्रकारके अद्भुत कर्म विद्याधरनिसे न बनें सो बहुरूपिणी विद्यासे कीए अपने हाथकी घात कर भूकम्प किया, रामके कटकविषै कपियोंको ऐसा भय उपजा मानों मृत्यु आई अर रावणको मन्त्री कहते भए—हे नाथ ! तुम टार राघवको जीतनहारा और नाहीं, राम महा योद्धा है और क्रोधवान होवे तब कहा कहना ? सो ताके सन्मुख तुम ही आवो अर कोई रणविषै रामके सन्मुख आवनेको सामर्थ नाहीं।

अथानन्तर रावणने बहुरूपिणी विद्यासे मायामई कटक बनाया अर आप उद्यानविषै जहां सीता तिष्ठे तहां गया मंत्रिनिकर मंडित जैसे देवनिकर संयुक्त इंद्र होय, सो सूर्य समान कांतिकर युक्त आवता भया तब

ताको आवता देख विद्याधरी सीतासों कहती भई—हे शुभे ! महा ज्योतिवन्त रावण पुष्पक विमानसे उतरकर आयो जैसे ग्रीषम ऋतुमें सूर्यकी किरणसे आतापको पाता गजेंद्र सरोवरीके ओर आवे तैसे कामरूप अग्निसे तापरूप भया आवै हैं । यह प्रमद नामा उद्यान पुष्पनिकी शोभा कर शोभित जहां भ्रमर गुंजार करे हैं। तब सीता बहुरूपिणी विद्याकर संयुक्त रावणको देखकर भयभीत भई मनमें विचारै है याके वलका पार नाहीं सो राम लक्ष्मण हू याहि न जीतेंगे । मैं मन्दभागिनी रामको अथवा लक्ष्मणको अथवा अपने भाई भामण्डलको मत हना सुनूं । यह विचार कर व्याकुल है चित्त जाको कांपती चिन्तारूप तिष्ठे है वहां रावण आया सो कहता भया—हे देवी मैं पापीने कपट कर तुझे हरी सो यह वात क्षत्री कुलविषै उत्पन्न भए हैं जे धीर अतिवीर तिनको सर्वथा उचित नाहीं, परन्तु कर्मकी गति ऐसी है मोहकर्म वलवान हे अर मैं पूर्व अनंतवीर्यस्वामीके समीप व्रत लिया हुता जो परनारी मोहि न इच्छै ताहि मैं न ग्रहूं उर्वशी रंभा अथवा और मनोहर होय तो भी मेरे प्रयोजन नाहीं । यह प्रतिज्ञा पालते संते मैं तेरी कृपा ही की अभिलाषा करी परन्तु वलात्कार रमी नहीं । हे जगतविषै उत्तम सुन्दरी ! अव मेरी भुजानिकर चलाए जे वाण तिनसे तेरे अवलम्बन राम-लक्ष्मण भिदे ही जान अर तू मेरे संग पुष्पक विमानमें वैठ आनंदसे विहार कर । सुमेरुके शिखर चैत्य वृक्ष अनेक वन उपवन नदी सरोवर अवलोकन करती विहार कर । तब सीता दोनों हाथ कानोंपर धर गद्गद वाणीसे दीन शब्द कहती भई—हे दशानन ! तू वड़े कुलविषै उपजा है तो यह करियो जो कदाचित् संग्रामविषै तेरे अर मेरे वल्लभके शस्त्रप्रहार होय तो पहले यह संदेशा कहे वगैर मेरे कंथको मत हतियो यह कहियो—हे पद्म ! भामंडलकी वहिनने तुमको यह कहा है जो तिहारे वियोगतें महाशोकके भारकर महा दुःखी हूं मेरे प्राण तिहारे जीव ही तक हैं मेरी दशा यह भई है जैसे पवनकी हती दीपककी शिखा, हे राजा दशरथके पुत्र ! जनककी पुत्रीने तुमको वारम्वार स्तुतिकर यह कही है तिहारे दर्शनकी अभिलाषाकर यह प्राण टिक रहे हैं, ऐसा कहकर मूर्छित होय भूमिमें पड़ी जैसे माते हाथीते भग्न करी कल्पवृक्षकी वेल गिर पड़े, यह अवस्था महासतीकी देख रावणका मन कोमल भया परम दुःखी भया यह चिन्ता करता

.नके योग कर इनका निःसन्देह स्नेह है इनके स्नेह का क्षय नाहीं अर धिक्कार ..त अयोग्य कार्य किया जो ऐसे स्नेहवान युगलका वियोग किया, पापाचारी महानीच जन मैं निःकारण अपयशरूप मलसे लिप्त भया, शुद्धचन्द्रमा समान गोत्र हमारा, मैं मलिन किया। मेरे समान दुरात्मा मेरे वंशमें न भया ऐसा कार्य काहूने न किया सो मैंने किया। जे पुरुषोंमें इन्द्र हैं ते नारीको तुच्छ गिने हैं, यह स्त्री साक्षात् विषफल तुल्य है कलेशकी उत्पत्तिका स्थान सर्पके मस्तककी मणि समान अर महा मोहका कारण प्रथम तो स्त्री मात्रही निषिद्ध हैं अर परस्त्रीकी कहा बात? सर्वथा त्याज्य ही है परस्त्री नदी समान कुटिल महा भयंकर धर्म-अर्थका नाश करणहारी सदा सन्तोंको त्याज्य ही है। मैं महा पापकी खान अबतक यह सीता मुझे देवांगनासे भी अति प्रिय भासती थी सो अब विषके कुम्भ तुल्य भासे है यह तो केवल रामसूं अनुरागिनी है। अबलग यह न इच्छती थी परन्तु मेरे अभिलाषा थी अब जीर्णतृणवत् भासे है। यह तो केवल रामसे तन्मय है मोसे कदाचित् न मिले, मेरा भाई महा पण्डित विभीषण सब जानता हुता सो मोहि बहुत समझाया मेरा मन विकारको प्राप्त भया सो न मानी तासे द्वेष किया। जब विभीषणके वचननिकर मैत्रीभाव करता तो नीके था अब महा युद्ध भया अनेक हते गए अब कैसी मित्रता? यह मित्रता सुभटोंको योग्य नाहीं अर युद्ध करके बहुरि दया पालनी यह बने नाहीं, अहो मैं सामान्य मनुष्यकी नाई संकटमें पड़ा हूं जो कदाचित् जानकी रामपै पठावों तो लोग मोहि असमर्थ जानें अर युद्ध करिये तो महा हिंसा होय, कोई ऐसे हैं जिनके दया नाहीं केवल क्रूरता रूप हैं, ते भी कालक्षेप करें हैं अर कई एक दयावान हैं संसार कार्यसे रहित हैं ते सुखसे जीवे हैं मैं मानी युद्धाभिलाषी अर कछु करुणाभाव नाहीं सो हम सारिखे महा दुखी हैं अर रामके सिंहवाहन अर लक्ष्मणके गरुडवाहन विद्या सो इनकर महा उद्योत हैं सो इनको शस्त्ररहित करूं अर जीवते पकड़ूं बहुरि बहुत धन दूं अर सीता दूं तो मेरी बड़ी कीर्ति होय अर मोहि पाप न होय यह न्याय है। यातैं यहीं करूं ऐसा मनमें धार महा विभवसंयुक्त रावण राजलोकविषै गया जैसे माता हाथी कमलनिके वनविषै जाय। बहुरि विचारी अङ्गदने बहुत [illegible]

तें अति क्रोध किया अर लाल नेत्र होय आए रावण होंठ डसता वचन कहता भया—वह पापी सुग्रीव नाहीं
दुग्रीव है ताहि निग्रीव कहिये मस्तकर हत करूंगा ताके पुत्र अंगदसहित चन्द्रहास खड्ग कर दोय टूक
करूंगा अर तमोमण्डलको लोग भामण्डल कहैं सो वह महा दुष्ट है ताहि दृढ़बंधनसे बांध लोहके मुगदरोंसे
कूट मारूंगा अर हनूमानको तीक्ष्ण करोंतकी धारसे काठके युगलमें बांध विहराऊंगा वह महा अनीति हैं
एक राम न्यायमार्गी है ताहि छांडूगा अर समस्त अन्यायमार्गी हैं तिनको शस्त्रनिकर चूर डारूंगा ऐसा वि-
चार कर रावण तिष्ठा। अर उत्पात सैकड़ों होने लगे सूर्यका मण्डल आयुध समान तीक्ष्ण दृष्टि पड़ा अर पू-
र्णमासीका चन्द्रमा अस्त होय गया, आसन पर भूकम्प भया, दशों दिशा कम्पायमान भईं, उल्कापात भए
शृगाली (गीदड़ी) विरसशब्द बोलती भईं, तुरंग नाड हिलाय विरस विरूप हींसते भए, हाथी रूक्ष शब्द
करते भए, सूण्ड से धरती कूटते भए, यक्षनिकी मूर्तिके अश्रुपात पड़े, वृक्ष मूलतें गिर पड़े सूर्य के सन्मुख
काग कटुक शब्द करते भए, ढीले पक्ष किए महा व्याकुल भए अर सरोवर जलकर भरे हुते शोषको प्राप्त
भए अर गिरियोंके शिखर गिर पड़े अर रुधिरकी वर्षा भई थोड़े ही दिनमें जानिए है लंकेश्वरकी मृत्यु होय
ऐसे अपशकुन और प्रकार नाहीं जब पुण्यक्षीण होय तब इंद्र भी न बचें पुरुषमें पौरष पुण्यके उदय कर हो-
य है जो कछू प्राप्त होना होय सोई पाइये है, हीन अधिक नाहीं। प्राणियोंके शूरवीरता सुकृतके बल कर है
देखो, रावण नीति शस्त्रकेविषैं प्रवीण समस्त लौकिक नीति-रीति जानै व्याकरणका पाठी महा गुणनिकर
पंडित सो कर्मनिकर प्रेरा संता अनीति मार्गको प्राप्त भया मूढ़बुद्धि भया लोकविषै मरण उपरांत कोई दुःख
नाहीं सो याको अत्यन्त गर्वकर विचार नाहीं नक्षत्रनिके बलकर रहित अर ग्रह सब ही क्रूर आए सो यह
अविवेकी रणक्षेत्रका अभिलाषी होता भया प्रतापके भंगका है भय जाको अर महाशूरवीरताके रससे युक्त
यद्यपि अनेक शास्त्रनिका अभ्यास किया है तथापि युक्त अयुक्तको न देखै। गौतम स्वामी राजा श्रेणिकसे
कहे हैं--हे मगधाधिपति! रावण महामानी अपने मनविषै विचारे है सो सुन सुग्रीव भामण्डलादिक समस्त-
को जीत अर कुम्भकरण इन्द्रजीत मेघनादको छुड़ाय लंकामें लाऊंगा बहुरि वानरवंशिनिका वंश नाश कर

न वस्त्र प्राप्तलका पराभव करूंगा अर भूमिगोचरिनिको भूमिविषै न रहने दूंगा अर शुद्ध विद्याधरनिको धराविषै थापूंगा तब तीन लोकके नाथ तीर्थंकर देव अर चक्रायुध वलभद्र नारायण हम सारिखे विद्याधरनिके कुलही विषै उपजेंगे ऐसा वृथा विचार करता भया। हे मगधेश्वर! जा मनुष्यने जैसे संचित कर्म किए होंय तैसा ही फल भोगवे। ऐसें न होय तो शास्त्रोंके पाठी कैसे भूलें। शास्त्र हैं सो सूर्य समान हैं ताके प्रकाश होते अन्धकार कैसे रहै परन्तु जे घूघू समान मनुष्य हैं तिनको प्रकाश न होय ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषा वचनिकाविषै रावणके युद्धका निश्चय कथन वर्णन करनेवाला बहत्तरवा पर्व पूर्ण भया ॥७२॥

अथानन्तर दूजे दिन प्रभात ही रावण महादेदीप्यमान आस्थान मंडपविषै तिष्ठा। सूर्यके उदय होते हुए सभाविषै कुबेर वरुण ईशान यम सोम समान जे बड़े बड़े राजा तिनकर सेवनीक जैसे देवनिकर मंडित इन्द्र विराजे तैसे राजानिकर मंडित सिंहासन पर विराजा। परम कांतिको धरे जैसे ग्रह तारा नक्षत्रनिकर युक्त चन्द्रमा सो है अत्यन्त तैसे सुगंध मनोग्य वस्त्र पुष्पमाला अर महामनोहर गज-मोतिनके हार तिनसे शोभे है उरस्थल जाका, महा सौभाग्यरूप सौम्यदर्शन सभाको देखकर चिंता करता भया जो भाई कुम्भकर्ण इन्द्रजीत मेघनाद यहां नाहीं दीखे हैं सो उन बिना यह सभा सोहै नाहीं और पुरुष कुमुदरूप बहुत हैं पर वे पुरुष कमलरूप नाहीं, सो यद्यपि रावण महारूपवान सुन्दर वदन है अर फूल रहे हैं नेत्र-कमल जाके, महा मनोग्य तथापि पुत्र भाईकी चिंतासे कुमलाया वदन नजर आवता भया अर महा क्रोधस्वरूप कुटिल है भृकुटी जाकी मानों क्रोधका भरा आशीविष सर्प ही है महा भयंकर होठ डसे महा विकराल स्वरूप मंत्री देखकर डरे आज ऐसा कौनसे कोप भया यह व्याकुलता भई। तब हाथ जोड़ सीस भूमिमें लगाय राजा मय उग्र, शुक, लोकाक्ष, सारण इत्यादि धरतीकी ओर निरखते चलायमान हैं कुण्डल जिनके विनती करते भए हे नाथ! तिहारे निकटवर्ती योद्धा सबही यह प्रार्थना करैं हैं प्रसन्न होहु अर कैलाशके शिखर तुल्य ऊंचे महल जिनके मणियोंकी भीति मणियोंके झरोखा तिनमें तिष्ठती भ्रमररूप हैं नेत्र जिनके ऐसा सब राणियों सहित मंदोदरी सो याहि देखती भई। कैसा देखा? लाल हैं नेत्र जाके प्रतापका भरा ताहि देखकर मोहित

भया है मन जाका, रावण उठकर आयुधशालामें गया। कैसी है आयुधशाला? अनेक दिव्य शस्त्र अर सामान्य शस्त्र तिनसे भरी अमोघबाण अर चक्रादिक अमोघ रत्न कर भरी जैसे वज्रशालामें इन्द्र जाय। जा समय रावण आयुधशालामें गया ता समय अपशकुन भए प्रथम ही छींक भई सो शकुनशास्त्रविषै पूर्वदिशाको छींक होय तो मृत्यु अर अग्निकोणविषै शोक दक्षिणमें हानि नैऋतमें शुभ पश्चिमविषै मिष्ट आहार वायुकोणमें सर्व संपदा उत्तरविषै कलह ईशानविषै धनागम आकाशविषै सर्वसंहार पातालविषै सर्व संपदा ये दशों दिशाविषै छींकके फल कहे। सो रावणको मृत्युकी छींक भई बहुरि आगे मार्ग रोके महा नाग निरखा अर हा शब्द ही शब्द धिक् शब्द कहां जाय है यह वचन होते भए अर पवनकर छत्रके वैडूर्य मणिका दण्ड भग्न भया अर उत्तरासन गिर पड़ा काग दाहिना बोला इत्यादि और भी अपशकुन भए ते युद्धतें निवारते भए वचनकर कर्मकर निवारते भए। जे नाना प्रकारके शकुन शास्त्रविषै प्रवीण पुरुष हुते वे अत्यन्त आकुल भए अर मंदोदरी शुक सारण इत्यादि बड़े बड़े मंत्रियोंसे कहती भई—तुम स्वामीकी कल्याणकी बात क्यों न कहो हो? अब तक कहा अपनी अर उनकी चेष्टा न देखी। कुम्भकर्ण इंद्रजीत मेघनादसे बंधनमें आए, वे लोकपाल समान महा तेजके धारक अद्भुत कार्यके करणहारे। तब नमस्कारकर मंत्री मंदोदरीसे कहते भए—हे स्वामिनी! रावण महामानी यमराजसा क्रूर आप ही आप प्रधान है ऐसा या लोकविषै कोई नाहीं जाके वचन रावण मानै जो कुछ होनहार है ता प्रमाण बुद्धि उपजै है बुद्धि कर्मानुसारणी है सो इन्द्रादिककर तथा देवोंके समूह कर और भांति न होय संपूर्ण न्यायशास्त्र अर धर्मशास्त्र तिहारा पति सब जानै है परन्तु मोहकर उन्मत्त भया है। हम बहुत प्रकार कहा सो काहू प्रकार मानें नाहीं, जो हठ पकड़ा है सो छांडे नाहीं, जैसे वर्षाकालके समागमविषै महा प्रवाहकर संयुक्त जो नदी ताका तिरना कठिन है तैसे कर्मनिका प्रेरा जो जीव ताका संबोधना कठिन है यद्यपि स्वामीका स्वभाव दुर्निवार है तथापि तिहारा कहा करे तो करे तातैं तुम हितकी बात कहो यामें दोष नाहीं। यह मंत्रिनिने कही तब पटराणी साक्षात् [illegible]मान निर्मल है चित्त जाका सो कम्पायमान पतिके समीप जायवेको उद्यमी भई। महा निर्मल जल

समान वस्त्र पहिरे जैसे रति कामके समीप जाय तैसे चली सिरपर छत्र फिरै हैं अनेक सहेली चमर ढारे हैं जैसे अनेक देवनिकर युक्त इन्द्राणी इन्द्रपै जाय तैसे यह सुन्दरवदनकी धरणहारी पतिपै गई निश्वास नाखती पांय डिगते शिथिल होय गई है कटि मेखला जाकी भरतारके कार्य विषै सावधान अनुरागकी भरी, ताहि स्नेहकी दृष्टिकर देखती भई, आपका चित्त शस्त्रनिविषै अर वक्तरविषै तिनको आदरसे स्पर्शे है सो मंदोदरीसे कहते भए—हे मनोहरे हंसनी समान चालकी चलनहारी हे देवी! ऐसा कहा प्रयोजन है जो तुम शीघ्रतासे आवो हो। हे प्रिये! मेरा मन काहेको हरो हो, जैसे स्वप्नविषै निधान। तब वह पतिव्रता पूर्ण चन्द्रमासमान है वदन जाका फूले कमलसे नेत्र स्वतः उत्तम चेष्टाकी धरणहारी मनोहर जे कटाक्ष तेई भए वाण सो पतिकी ओर चलावनहारी, महा विचक्षण मदनका निवास है अंग जाका महामधुर शब्दकी बोलनहारी स्वर्णके कुम्भसमान हैं स्तन जाके तिनके भारकर नयगया है उदर जाका दाडिमके बीज समान दांत मूंगासमान लालअधर अत्यन्त सुकुमार अति सुन्दरी भरतारकी कृपाभूमि सो नाथको प्रणामकर कहती भई—हे देव! मोहि भर्तारकी भीख देवो आप महादयावन्त धर्मात्माओंसे अधिक स्नेहवन्त मैं तिहारे वियोगरूप नदीविषै डूबूहूं सो महाराज मोहि निकासो। कैसी है नदी? दुःखरूप जलकी भरी संकल्प विकल्परूप लहरकर पूर्ण है, हे महाबुद्धे! कुटुम्बरूप आकाशविषै सूर्यसमान प्रकाशके कर्ता एक मेरी विनती सुनों तिहारा कुलरूप कमलोंका वन महाविस्तीर्ण प्रलय हुआ जाय है सो क्यों न राखो। हे प्रभो! तुम मोहि पटराणीका पद दिया हुता सो मेरे कठोर वचनोंको क्षमा करो, जे अपने हितू हैं तिनका वचन औषध समान ग्राह्य है परिणाम सुखदाई विरोधरहित स्वभावरूप आनन्दकारी है मैं यह कहू हूं तुम काहेको संदेहकी तुला चढ़ो हो। यह तुला चढिवेकी नाहीं, काहेको आप संताप करो हो अर हम सबनिको संतापरूप करो हो, अब हू कहा गया? तिहारा सब राज तुम सकल पृथिवीके स्वामी अर तिहारे भाई पुत्रनिको बुलाय लेहु तुम अपना चित्त कुमार्गतें निवारो अपना मन वश करो तिहारा मनोरथ अत्यन्त अकार्य विषै प्रवरता है सो इन्द्रियरूप तरल तुरंगोंको विवेक रूप दृढ़ लगामकर वश करो इन्द्रियनिके अर्थ कुमार्गविषै मनको कौन

प्राप्त करे तुम अपवादका देनहारा जो उद्यम ता विषै कहा प्रवर्तो हो जैसे अष्टापद अपनी छाया कूपविषै देख क्रोधकर कूपविषै पड़े तैसे तुम आप ही क्लेश उपजाय आपदामें पड़ो हो, यह क्लेशका कारण जो अपयशरूप वृक्ष ताहि तज कर सुखसे तिष्ठो केलिके थंभ समान असार यह विषय ताहि कहा चाहो हो, यह तिहारा कुल समुद्रसमान गंभीर प्रशंसा योग्य ताहि शोभित करो यह भूमि गोचरोंकी स्त्री बड़े कुलवन्तनिको अग्निकी शिखा समान है ताहि तजो। हे स्वामी! जे सामंत सामंतसों युद्ध करे हैं वे मनविषै यह निश्चय करे हैं हम मरेंगे। हे नाथ! तुम कौन अर्थ मरो हो पराई नारी ताके अर्थ कहा मरणा? या मारिवेविषै यश नाहीं अर उन को मारो तिहारी जीत होय तोहू यश नाहीं क्षत्री मरे हैं यशके अर्थ तातैं सीतासम्बन्धी हठको छांडो अर जे बडे २ व्रत हैं तिनकी महिमा तो कहा कही एक यह परदार परित्याग ही पुरुषके होय तो दोऊ जन्म सुधरें शीलवन्त पुरुष भवसागर तिरैं जो सर्वथा स्त्रीका त्याग करे सो तो अतिश्रेष्ठ ही है काजल समान कालिमाकी उपजावनहारी यह परनारी तिनविषै जे लोलुपी तिनविषै मेरु समान गुण होय तोहू तृण समान लघु होय जांय। जो चक्रवर्तीका पुत्र होय अर देव जाका पक्ष होय अर परस्त्री के संगरूप कीचविषै डूबे तो महा अपयशको प्राप्त होय जो मूढमति परस्त्रीसे रति करे है सो पापी आशीविष भुजंगनीसे रमै है, तिहारा कुल अत्यन्त निर्मल सो अपयशकर मलिन मत करो, दुर्बुद्धि तजो, जे महाबलवान हुते अर दूसरोंको निर्बल जानते अर्ककीर्ति अशनघोषादिक अनेक नाशको प्राप्त हुए। सो हे सुमुख! तुम कहा न सुने ये वचन मंदोदरी सुन रावण कमलनयन कारी घटा समान है वर्ण जाका मलयागिरचन्दन कर लिप्त मंदोदरीसे कहता भया—हे कांते! तू काहेको कायर भई मैं अर्ककीर्ति नाहीं जो जयकुमारसे हारा अर मैं अशनघोष नाहीं जो अमिततेजसे हारा अर और हू नाहीं मैं दशमुख हूं तू काहेको कायरताकी बात कहे है मैं शत्रुरूपवृक्षनिके समूहको दावानलरूप हूं। सीता कदाचित् न दूं, हे मंदमानसे तू भय मत करे या कथा कर तोहि कहा? तोकों सीताकी रक्षा सौंपी है सो रक्षा भली भांति कर अर जो रक्षा करिवेको समर्थ नाहीं तो शीघ्र मोहि सौंप देवो, तब मंदोदरी कहती भई तुम उससे रतिसुख वांछो हो तातैं यह कहो हो, मोहि

सौंप देवो सो यह निर्लज्जताकी बात कुलवन्तोंको उचित नाही, बहुरि कहती भई तुमने सीताका कहा माहात्म्य देखा जो ताहि बारंबार वांछो हो वह ऐसी गुणवन्ती नाहीं ज्ञाता नाहीं, रूपवंतियोंका तिलक नाहीं कलाविषै प्रवीण नाहीं, मनमोहिनी नाहीं पतिके छांदे चलनेवारी नाहीं ता सहित रतिविषै बुद्धि करो हो, सो हे कंत ! यह कहा वार्ता, अपनी लघुता होय है सो तुम नाहीं जानो हो, मैं अपने मुख अपनी प्रशंसा कहा करूं अपने मुख अपने गुण कहे गुणोंकी गौणता होय है अर पराए मुख सुने प्रशंसा होय है तातैं मैं कहा कहूं तुम सब नीके जानो हो, विचारी सीता कहा ? लक्ष्मी भी मेरे तुल्य नाहीं तातैं सीताकी अभिलाषा तजो मेरा निरादर कर तुम भूमिगोचरिणीको इच्छो हो, सो मंदमति हो जेसे बालबुद्धि वैडूर्य मणिको तज अर कांचको इच्छे ताका कछू दिव्य रूप नाहीं तिहारे मनविषै क्या रुची यह ग्राम्यजनकी नारी समान अल्पमति ताकी कहा अभिलाषा अर मोहि आज्ञा देवो सोई रूप धरूं, तिहारे चित्तकी हरणहारी मैं लक्ष्मीकारूप धरूं अर आज्ञा करो तो शची इन्द्राणीका रूप धरूं कहो तो रतिका रूप धरूं । हे देव ! तुम इच्छा करो सोई रूप करूं, यह वार्ता मंदोदरीकी सुन रावणने नीचा मुख किया अर लज्जावान भया। बहुरि मन्दोदरी कहती भई—तुम परस्त्री आसक्त होय अपनी आत्मा लघु किया विषयरूप आमिषकी आसक्ती है जाके सो पापका भाजन है धिक्कार है ऐसी क्षुद्र चेष्टाको । यह वचन सुन रावण मंदोदरीसे कहता भया हे—चन्द्र-बदनी ! कमललोचने ! तुम यह कही जो कहो जैसा रूप बहुरि धरूं सो औरोंके रूपसे तिहारा रूप कहा घटती है तिहारा स्वतः ही रूप मोहि अति वल्लभ है हे उत्तमे मेरे अन्य स्त्रीनिकर कहा ? तब हर्षितचित्त होय कहती भई—हे देव ! सूर्यको दीपका उद्योत कहा दिखाइये, मैं जो हितके वचन आपको कहे सो औरोंको पूंछ देखो मैं स्त्री हूं मेरेमें ऐसी बुद्धि नाहीं शास्त्रमें यह कही है जो धनी सबही नय जाने हैं परन्तु दैव योग थकी प्रमाद-रूप भया होय तो जे हितु हैं ते समझावें जैसे विष्णुकुमार स्वामीको विक्रियाऋद्धिका विस्मरण भया तो औरोंके कहे कर जाना, यह पुरुष यह स्त्री ऐसा विकल्प मन्दबुद्धिनिके होय है जे बुद्धिमान हैं हितकारी वचन सबहीका मान लेंय, आपका कृपाभाव मो ऊपर है तो मैं कहूं हूं तुम परस्त्रीका प्रेम तजो, मैं जानकीको

लेकर राम पै जाऊं अर रामको तिहारे पास लाऊं, अर कुम्भकर्ण इन्द्रजीत मेघनादको लाऊं अनेक जीव-
निकी हिंसा कर कहा ? ऐसे वचन मन्दोदरीने कहे तब रावण अतिक्रोधकर कहता भया शीघ्रही जावो जावो
जहां तेरा मुख न देखूं तहां जावो अहो तू आपको वृथा पंडित माने है आपकी ऊंचता तज परपक्षकी प्रशं-
सामें प्रवरती, तू दीनचित्त है योद्धाओंकी माता तेरे इन्द्रजीत मेघनाद कैसे पुत्र अर मेरी पट-
राणी राजा मयकी पुत्री तोमें एती कायरता कहांसे आई ? ऐसा कहा तब मन्दोदरी बोली—हे पति !
सुनो जो ज्ञानियोंके मुख बलभद्र नारायण प्रतिनारायणका जन्म सुनिये है पहिला बलभद्र विजय नारायण
त्रिपृष्ठ, प्रतिनारायण अश्वग्रीव, दूजा बलभद्र अचल नारायण द्विपृष्ट प्रतिहरि तारक इस भांति अबतक
सात बलभद्र नारायण हो चुके सो इनके शत्रु प्रतिनारायण इन्होंने हते अब तुम्हारे समय यह बलभद्र ना-
रायण भए हैं अर तुम प्रतिवासुदेव हो आगे प्रतिवासुदेव हठ कर हते गए तैसे तुम नाशको इच्छो हो जे
बुद्धिमान् हैं तिनको यही कार्य करणा जो या लोक परलोकमें सुख होय अर दुःखके अंकुरको उत्पत्ति न
होय सो करनी यह जीव चिरकाल विषयसे तृप्त न भया तीन लोकविषै ऐसा कौन है जो विषयोंसे तृप्त
होय तुम पापकर मोहित भए हो सो वृथा है अर उचित तो यह है तुमने बहुतकाल भोग किए अब मुनिव्रत
धरो अथवा श्रावकके व्रतधर दुखोंका नाश करो अणुव्रत रूप खड्गकर दीप्त है अंग जाका नियम रूप
छत्रकर शोभित सम्यक् दर्शनरूप बक्तर पहिरे शीलरूप ध्वजा कर शोभित अनित्यादि बारह भावना तेई
चन्दन तिनकर चर्चित है अंग जाका अर ज्ञानरूप धनुषको धरे वश किया है इंद्रियनिका बल जाने, शुभ-
ध्यान अर प्रतापकर युक्त मर्यादारूप अंकुशकर संयुक्त निश्चलरूप हाथीपर चढा जिनभक्तिकी है महाभक्ति
जाके दुर्गतिरूप कुनदी सो महा कुटिल पापरूप है वेग जाका अतिदुःसह सो पंडितनिकर तिरिये है, ताहि
तिरकर सुखी होवो अर हिमवान सुमेरु पर्वतविषै जिनालयको पूजते संते मेरे सहित ढाई द्वीपमें विहार कर
अष्टादश सहस्र स्त्रीनिके हस्त कमल पल्लव तिनकर लडाया संता सुमेरु पर्वतके वनविषै क्रीडा कर, अर
गंगाके तटपर क्रीडा कर अर और भी मनवांछित प्रदेशनिविषै रमणीक क्षेत्रनिविषै हे नरेन्द्र ! सुखसे वि-

हार कर। या युद्ध कर कछू प्रयोजन नाहीं, प्रसन्न होवो, मेरा वचन सर्वथा सुखका कारण है यह लोकोपवाद मत करावो। अपयशरूप समुद्रमें काहेको डूबो हो, यह अपवाद विषतुल्य महानिन्द्य परम अनर्थका कारण भला नाहीं, दुर्जन लोक सहज ही परनिन्दा करें सो ऐसी वात सुनकर तो करे ही करें, या भांतिके शुभ वचन कह यह महासती हाथ जोड़ पतिका परम हित वांछती पतिके पायन पड़ी। तब रावण मन्दोदरी-को उठायकर कहता भया—तू निःकारण क्यों भयको प्राप्त भई। हे सुन्दर वदनी! मोसे अधिक या संसार विषै कोई नाहीं तू स्त्रीपर्यायके स्वभावकर वृथा काहे को भय करै है तैंने कही जो यह वलदेव नारायण हैं सो नाम नारायण अर नाम वलदेव भया तो कहा? नाम भए कार्यकी सिद्धि नाहीं, नाम नाहर भया तो कहा? नाहरके पराक्रम भए नाहर होय, कोई मनुष्य सिद्ध नाम कहाया तो कहा सिद्ध भया? हे कांते! तू कहा कायरताकी वार्ता करै, रथनूपुरका राजा इन्द्र कहावता सो कहा इन्द्र भया? तैसे यह भी नारायण नाहीं, या भांति रावण प्रतिनारायण ऐसे प्रवल वचन स्त्रीको कह महा प्रतापी क्रीडाभवनविषै मन्दोदरी सहित गया जैसे इन्द्र इन्द्राणीसहित क्रीडागृहविषै जाय सांझके समय सांझ फूली सूर्य अस्त समय किरण संकोचने लगा जैसे संयमी कषायोंको संकोचै सूर्य आसक्त होय अस्तको प्राप्त भया, कमल मुद्रित भये चकवा-चकवी वियोगके भयकर दीन वचन रटते भए, मानों सूर्यको बुलावे हैं, अर सूर्यके अस्त होयवेकर ग्रह नक्षत्रनिकी सेना आकाशविषै विस्तरी मानों चन्द्रमाने पठाई रात्रिके समय रत्नद्वीपोंका उद्योत भया दीपोंकी प्रभाकर लंका नगरी ऐसी शोभती भई मानों सुमेरुकी शिखा ही है कोऊ वल्लभा वल्लभसे मिलकर ऐसें कहती भई एक रात्रि तो तुम सहित व्यतीत करेंगे वहुरि देखिए कहा होय? अर कोई एक प्रिया नानाप्रकारके पुष्पनिकी सुगन्धताके मकरंदकर उन्मत्त भई स्वामीके अंग विषै मानों महा कोमल पुष्पनिकी वृष्टि ही पड़ी। कोई नारी कमल तुल्य हैं चरण जाके अर कठिन हैं कुच जाके महा सुन्दर शरीरकी धरणहारी सुन्दरपतिके समीप गई अर कोई सुन्दरी आभूषणनिको पहरती ऐसी शोभती भई मानों स्वर्ण रत्नोंको कृतार्थ करै है। भावार्थ—ता समान ज्योति रत्न स्वर्णनिविषै नाहीं रात्रि समय विद्याकर विद्याधर मन वां-

छित क्रीडा करते भए घर घरविषै भोग भूमकीसी रचना होती भई, महा सुन्दर गीत अर वीण बांसुरियोंका शब्द तिनकर लंका हर्षित भई मानों वचनालाप ही करै है अर ताम्बूल सुगन्ध माल्यादिक भोग अर स्त्री आदि उपभोग सो भोगोपभोगनिकर लोग देवनिकी न्याई रमते भए अर कैएक उन्मत्त भई स्त्रियोंको नाना प्रकार रमावते भए अर कइयक नारी अपने वदनकी प्रतिविम्व रत्ननिकी भीतिविषै देखकर जानती भई कि कोई दूजी स्त्री मन्दिरमें आई है सो ईर्षाकर नील कमलसे पतिको ताड़ना करती भई स्त्रीनिके मुखकी सुगं-धताकार सुगंध होय गया अर वर्फके योगकर नारिनिके नेत्र लाल होय गए अर कोईयक नायिका नवोढाहुती अर प्रीतमने अमल खवाय उन्मत्त करी सो मन्मथ कर्म विषै प्रवीण प्रोढाके भावको प्राप्त भई लज्जारूप सखीको दूर कर उन्मत्ततारूप सखीने क्रीडाविषै अत्यन्त तत्पर करी अर घूमे हैं नेत्र जाके अर स्खलित है वचन जाके स्त्री पुरुष-निकी चेष्टा उन्मत्तताकर विकटरूप होती भई। नरनारिनिके अधर मूंगा समान शोभायमान दीखते भए नर-नारी मदोन्मत्त भए सो न कहनेकी वात कहते भये अर न करनेकी बात करते भये, लज्जा छुटगई, चंद्रमा-के उदयकर मदनकी वृद्धि भई ऐसा ही तो इनका यौवन ऐसेही सुंदर मंदिर अर ऐसा ही अमलका जोर सो सब ही उन्मत्त चेष्टाका कारण आय प्राप्त भया ऐसी निशाविषै प्रभातविषै होनहार है युद्ध जिनके सो संयोगका रोग उत्सवरूप होता भया अर राक्षसनिका इंद्र सुंदर है चेष्टा जाकी सो समस्त ही राज-लोकको रमावता भया वारम्वार मन्दोदरीसे स्नेह जनावता भया। याका वदन रूप चन्द्र निरखते रावणके लोचन तृप्त न भये, मंदोदरी रावणसे कहती भई—मैं एक क्षणमात्र हू तुमको न तजूंगी। हे मनोहर ! सदा तिहारे संग ही रहूंगी जैसे बेल बाहुबलिके सर्व अंगसे लगी तैसे रहूंगी, आप युद्धविषै विजयकर वेग ही आवो, मैं रत्ननिको चूर्ण कर चौक पूरूंगी अर तिहारे अर्घपाद्य करूंगी प्रभुकी महामख पूजा करा-ऊंगी, प्रेमकर कायर है चित्त जाका अत्यन्त प्रेमके वचन कहते निशा व्यतीत भई अर कूकडा बोले नक्षत्र-निकी ज्योति मिटी संध्या लाल भई अर भगवानके चैत्यालयनिविषै महा मनोहर गीतध्वनि होती भई अर सूर्य लोकका लोचन उदयको सन्मुख भया अपनी किरणनिकर सर्व दिशाविषै उद्योत करता संता प्रलय

कालके अग्नि मण्डल समान है आकार जाका प्रभात समय भया तब सब राणी पतिको छोड़ती उदास भईं, तब रावणने सबको दिलासा करी, गम्भीर वादित्र बाजे, शंखोंके शब्द भए रावणकी आज्ञाकर जे युद्धविषै विचक्षण हैं महाभट महा अहंकारको धरते परम उद्धत अतिहर्ष के भरे नगरसे निकसे तुरंग हस्ती रथोंपर चढ़े खड्ग धनुष गदा बरछी इत्यादि अनेक आयुधनिको धरे, जिनपर चमर ढुरते छत्र फिरते महा शोभायमान देवनि जैसे स्वरूपवान् महा प्रतापी विद्याधरनिके अधिपति योद्धा शीघ्र कार्यके करणहारे श्रेष्ठ ऋद्धिके धारक युद्धको उद्यमी भए। ता दिन नगरकी स्त्री कमलनयनी करुणाभावकर दुखरूप होती भईं सो तिनको निरखे दुर्जनका चित्त भी दयालु होय, कोई यक सुभट घरसे युद्धको निकसा अर स्त्री लार लगी आवै है ताहि कहता भया—हे मुग्धे! घर जावो हम सुखसे जाय हैं अर कोई एक स्त्री भरतार चले हैं तिनको पीछेसे जाय कहती भई हे कन्त! तिहारा उत्तरासन लेवो तब पति सन्मुख होय लेते भए। कैसी है मृगनयनी? पतिके मुख देखवेकी है लालसा जाके अर कोई एक प्राणवल्लभा पतिको दृष्टिसे अगोचर होते संते सखियों सहित मूर्च्छा खाय पड़ी अर कोई एक पतिसूं पाछी आय मौन गह सेजपर पड़ी मानों काठकी पुतली ही है अर कोईयक शूरवीर श्रावकके व्रतका धारक पीठ पीछे अपनी स्त्रीको देखता भया अर आगे देवांगनाओंको देखता भया। भावार्थ—जे सामन्त अणुव्रतके धारक हैं वे देवलोकके अधिकारी हैं। अर जे सामन्त पहिले पूर्णमासीके चन्द्रमा समान सौम्यवदन हुते वे युद्धके आगमन विषै कालसमान क्रूर आकार होय गए सिरपर टोप धरें बक्तर पहिरे शस्त्र लिए तेज भासते भए।

अथानन्तर चतुरंग सेनासंयुक्त धनुष छत्रादिक कर पूर्ण मारीच महा तेजको धरे युद्धका अभिलाषी आय प्राप्त भया फिर विमलचन्द्र आया महा धनुषधारी और सुनन्द आनन्द नन्द इत्यादि हजारों राजा आए सो विद्याकर निरमापित दिव्यरथ तिनपर चढ़े अग्नि कैसी प्रभाको धरे मानों अग्निकुमारदेव ही हैं कैयक तीक्ष्ण शस्त्रों कर सम्पूर्ण हिमवान पर्वत समान जे हाथी उनकर सब दिशाओंको आच्छादते हुए आए जैसे बिजुरीसे संयुक्त मेघमाला आवै और कैयक श्रेष्ठ तुरंगोंपर चढ़े पांचों हथियारों कर संयुक्त शीघ्रही ज्योतिष लोकको

उलंघ आवते भए नाना प्रकारके बड़े बड़े वादित्र और तुरंगोंका हीसना गजोंका गर्जना पयादोंके शब्द योद्धानिके सिंहनाद बन्दीजनोंके जय जय शब्द और गुणी जनोंके गीत वीर रसके भरे इत्यादि और भी अनेक शब्द भले भए धरती आकाश शब्दायमान भए जैसे प्रलय कालके मेघपटल होवें तैसे निकसे मनुष्य हाथी घोड़े रथ पियादे परस्पर अत्यंत विभूति कर देदीप्यमान बड़ी भुजानिसे बखतर पहिरे उतंग हैं उरस्थल जिनके विजयके अभिलाषी और पयादे खड्ग सम्हालें हैं महा चंचल आगे २ चले जाय हैं स्वामीके हर्ष उपजावनहारे तिनके समूहकर आकाश पृथ्वी और सर्व दिशा व्याप्त भईं, ऐसे उपाय करते भी या जीवके पूर्व कर्मका जैसा उदय है तैसा ही होय है, यह प्राणी अनेक चेष्टा करै है परन्तु अन्यथा न होय जैसा भवितव्य है तैसा ही होय सूर्य हू और प्रकार करने समर्थ नाहीं ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषा वचनिकाविषै रावणका युद्धविषै उद्यमी होनेका वर्णन करनेवाला तिहत्तरवां पर्व पूर्ण भया ॥७३॥

अथानन्तर लंकेश्वर मंदोदरीसूं कहता भया—हे प्रिये! न जानिये बहुरि तिहारा दर्शन होय वा न होय तब मंदोदरी कहती भई—हे नाथ! सदा वृद्धिको प्राप्त होवो, शत्रुओंको जीत शीघ्र ही आय हमको देखोगे अर संग्रामसे जीते आओगे ऐसा कहा अर हजारां स्त्रियोंकर अवलोका संता राक्षसोंका नाथ मंदिरसे बाहिर गया महा विकटताको धरे विद्याकर निरमापा ऐंद्रीनामा रथ ताहि देखता भया जाके हजार हाथी जुतें मानों कारी घटाका मेघ ही है वे हाथी मदोन्मत्त झरे है मद जिनके, मोतियोंकी माला तिनकर पूर्ण महा घटाके नादकर युक्त ऐरावतसमान नाना प्रकारके रंगोंसे शोभित जिनका जीतना कठिन अर विजयके धाम अत्यन्त गर्जनाकर शोभित ऐसे सोहते भए मानों कारी घटाके समूह ही हैं मनोहर है प्रभा जिनकी ऐसे हाथियोंके रथ चढ़ा रावण सोहता भया भुजबन्ध कर शोभायमान हैं भुजा जाकी मानों साक्षात् इंद्र ही है विस्तीर्ण हैं नेत्र जाके अनुपम है आकार जाका अर तेजकर सकललोकविषै श्रेष्ठ १० हजार आप समान विद्याधर तिनके मंडलकर युक्त रणविषै आया, सो वे महा बलवान देवों सारिखे अभिप्रायके वेत्ता रावणको आया देख सुग्रीव हनूमान क्रोधको प्राप्त भए अर जब रावण चढ़ा तब अत्यन्त

भयानक शब्द भए अर आकाशविषे अभ्र भ्रमत भए आच्छादित किया है सूर्यका प्रकाश जिन्होंने सो ये क्षयके सूचक अपशकुन भए परन्तु रावणके सुभट न मानते भए युद्धको आए ही अर श्रीरामचन्द्र अपनी सेनाविषै तिष्ठते सो लोकोंसे पूछते भए—हे लोको ! या नगरीके समीप यह कौन पर्वत है तब सुषेणादिक तो तत्काल ही जवाब न देय सके अर जांबुवादिक कहते भए यह बहुरूपिणी विद्यासे रचा पद्मनागनामा रथ है घनेनिको मृत्युका कारण अंगदने नगरविषै जायकर रावणको क्रोध उपजाया सो अब बहुरूपिणी विद्या सिद्ध भई हमसे महाशत्रुता लिए है सो तिनके वचन सुनकर लक्ष्मण सारथीसे कहता भया मेरा रथ शीघ्र ही चलाय, तब सारथीने रथ चलाया अर जैसे समुद्र गाजै ऐसे वादित्र बाजे वादित्रोंके नाद सुनकर योद्धा, विकट है चेष्टा जिनकी, लक्ष्मणके समीप आए कोई एक रामके कटकका सुभट अपनी स्त्रीको कहता भया—हे प्रिये ! शोक तज, पीछे जावो मैं लंकेश्वरीको जीत तिहारे समीप आऊंगा, या भांति गर्व कर प्रचण्ड जे योद्धा वे अपनी अपनी स्त्रीनिको धीर्य बंधाय अन्तःपुरसे निकसे. परस्पर स्पर्धा करते बेगसे प्रेरे हैं वाहन रथादिक जिन्होंने ऐसे महायोद्धा शस्त्रके धारक युद्धको उद्यमी भए भूतस्वननामा विद्याधरोंका अधिपति महा हाथियोंके रथ चढ़ा निकसा, गंभीर है शब्द जाका। या विधि और भी विद्याधरनिके अधिपति हर्ष सहित रामके सुभट क्रूर हैं आकार जिनके क्रोधायमान होय रावणके योद्धानिसे जैसा समुद्र गाजे तैसे गाजते गंगाकी उतंग लहर समान उछलते युद्धके अभिलाषी भए अर राम लक्ष्मण डेरानिसे निकसे, कैसे हैं दोनों भाई ? पृथिवीविषै व्याप्त हैं अनेक यश जिनके क्रूर आकारको धरे सिंहनिके रथ चढ़े बखतर पहिरे महाबलवान उगते सूर्यसमान श्रीराम शोभते भए अर लक्ष्मण गरुडकी है ध्वजा जाके अर गरुडके रथ चढ़ा, कारी घटा समान है रंग जाका अपनी श्यामता कर श्याम करी हैं दशोंदिशा जाने मुकुटको धरे कुण्डल पहिरे धनुष चढाय बखतर पहिरे बाण लिए जैसा सांझके समय अंजनगिरि सोहे तैसे शोभता भया। गौतम स्वामी कहे हैं—हे श्रेणिक ! बड़े २ विद्याधर नाना प्रकारके वाहन अर विमाननिपर चढ़े युद्ध करिवेको कटकसे निकसे जब श्रीराम चढ़े तब अनेक शुभशकुन आनन्दके उपजावनहारे भए, रामको चढ़ा जान रावण

शीघ्र ही महा दावानल समान है आकार जाका युद्धको उद्यमी भया, दोनों ही कटकके योद्धा जे महासामंत तिनपर आकाशसे गंधर्व अर अप्सरा पुष्पवृष्टि करती भईं, अंजनगिरिसे हाथी महावतोंके प्रेरे मदोन्मत्त चले पियादों कर वेढे अर सूर्यके रथ समान रथ चंचल हैं तुरंग जिनके सारथीनिकर युक्त जिन पर महा योद्धा चढ़े युद्धको प्रवर्ते, अर घोड़ोंपर चढ़े सामंत गंभीर हैं नाद जिनके परम तेजको धरे गाजते भए अर अश्व हींसते भए परम हर्षके भरे देदीप्यमान हैं आयुध जिनके अर पियादे गर्वके भरे पृथिवीविषै उछलते भए खड्ग खेट बरछी है हाथविषै जिनके युद्धकी पृथिवीविषै प्रवेश करते भए परस्पर अस्पर्धा करे हैं दौड़े हैं हने हैं योद्धानिविषै परस्पर अनेक आयुधनिकर तथा लाठी मूका लोह यष्टिनि कर युद्ध भया परस्पर केश ग्रहण भया, खड्ग कर विदारा गया है शरीर जिनका, केयक बाणोंकर बींधे गये तथापि योद्धा युद्धके आगे ही भए, मारे हैं प्रहार करें हैं गाजे हैं घोड़े व्याकुल भए भ्रमे हैं केयक आसन खाली होय गए असवार मारे गए मुष्टियुद्ध गदायुद्ध भया, केयक बाणनिकर बहुत मारे केयक खड्ग क सेलोंकर घाव खाये, बहुरि शत्रुको घायल करते भए, केयक मनवांछित भोगनिकर इन्द्रियनिको रमावते सो युद्धविषै इन्द्रिय इनको छोड़ती भईं जैसे कार्य परे कुमित्र तजे केयक के आंतनिके ढेर हो गये तथापि खेद न मानते भए शत्रुनिपर जाय पड़े अर शत्रु सहित आप प्राणान्त भए, डसे हैं होंठ जिन्होंने। जे राजकुमार देव कुमार सारिखे सुकुमार रत्ननिके महलोंके शिखर विषै क्रीडा करते महा भोगी पुरुष स्त्रीनिके स्तनकर रमाये संते वे खड्ग चक्र कनक इत्यादि आयुधनिकर विदारे संते संग्रामकी भूमिविषै पड़े, विरूप आकार तिनको गृध्र पक्षी अर स्याल भषे हैं अर जैसे रंग महिलमें रंगकी भरी रामा नखों कर चिन्ह करतीं अर निकट आवतीं तैसे स्यालनी नख दंतनिकर चिन्ह करे हैं अर समीप आवे हैं बहुरि श्वासके प्रकाश कर जीवते जान वे डर जांय हैं जैसे डाकनी मंत्रवादीसे दूर जांय अर सामंतनिको जीवते जान यक्षिणी डर कर उड जाती भईं जैसे दुष्ट नारी चलायमान है नेत्र जिसके पतिके समीपसे जाती रहे जीवोंके शुभाशुभ प्रकृतिका उदय युद्धविषै लखिये है दोनों बराबर अर कोईकी हार होय कोईकी जीत होय अर कबहूं अल्प सेनाका स्वामी महा सेनाके स्वामी

को जीते अर कोई एक सुकृतके सामर्थ्यसे बहुतोंको जीते अर कोई बहुत भी पापके उदयसे हार जाय जिन जीवोंने पूर्व भवविषै तप किया वे राज्यके अधिकारी होय विजयको पावें हैं अर जिन्होंने तप न किया अथवा तप भंग किया तिनकी हार होय है, गौतम स्वामी राजा श्रेणिकसे कहे हैं—हे श्रेणिक ! यह धर्म मर्म की रक्षा करे है अर दुर्जयको जीते है धर्मही बड़ा सहाई है बड़ा पक्ष धर्मका है धर्म सब ठौर रक्षा करै हैं घोड़ोंकर युक्त रथ पर्वत समान हाथी पवन समान तुरंग असुर कुमारसे पयादे इत्यादि सामग्री पूर्ण है परन्तु पूर्व पुण्यके उदय विना कोई राखवे समर्थ नाहीं एक पुण्याधिकारी ही शत्रुओंको जीते हैं, इस भांति राम रावणके युद्धकी प्रवृत्तिविषै योद्धाओंकर योद्धा हते गए तिनकर रण खेत भर गया अवकाश नाहीं आयुधोंकर योद्धा उछले हैं परे हैं सो आकाश ऐसा दृष्टि पड़ता भया मानों उत्पातके बादलों कर मंडित है। मारीच चन्द्रनिकर वज्राक्ष शुकसारण और भी राक्षसोंके अधीश तिन्होंने रामका कटक दबाया तब हनूमान चन्द्रमारीच नील मुकुन्द भूतस्वन इत्यादि रामपक्षके योद्धा तिन्होंने राक्षसनिकी सेना दबाई तब रावणके योद्धा कुंद कुम्भ निकुम्भ विक्रम क्रमाण जंबूमाली काकबली सूर्यार मकरध्वज अशनिरथ इत्यादि राक्षसनिके बड़े बड़े राजा शीघ्रही युद्धको उठे तब भूधर अचल सम्मेद निकाल कुटिल अंगद सुखेण कालचन्द्र उर्मितरंग इत्यादि वानरवंशी योद्धा तिनके संमुख भए उनही समान तासमय कोई सुभट प्रतिपक्षी सुभट विना दृष्टि न पड़ा। भावार्थ-दोनों पक्षके योद्धा परस्पर महा युद्ध करते भए अर अंजनीका पुत्र हाथिनिके रथ पर चढ़कर रणमें क्रीडा करता भया जैसे कमलनिकर भरे सरोवरमें महागज क्रीडा करे। गौतमगणधर कहे हैं—हे श्रेणिक ! वा हनूमान शूरवीरने राक्षसनिकी बड़ी सेना चलायमान करी उसे रुचा जो किया तब राजा मय विद्याधर दैत्यवंशी मन्दोदरीका बाप क्रोधके प्रसंगकर लाल हैं नेत्र जाके सो हनूमानके सन्मुख आया तब वह हनूमान कमल समान हैं नेत्र जाके बाणवृष्टि करता भया सो मयका रथ चकचूर किया तब वह दूजे रथ चढ़कर युद्धको उद्यमी भया तब हनूमानने बहुर रथ तोड़ डाला तब मयको विह्वल देख रावणने बहुरूपिणी विद्या कर प्रज्वलित उत्तम रथ शीघ्र ही भेजा सो राजा मयने वा रथपर चढ़कर हनूमानसे युद्ध

किया अर हनूमानका रथ तोड़ा तब हनूमानको दबा देख भामंडल मदद आया सो मयने बाण वर्षाकर भामंडलका भी रथ तोड़ा तब राजा सुग्रीव इनके मदद आए सो मयने ताको शस्त्ररहित किया अर भूमिमें डारा तब इनकी मदद विभीषण आया सो विभीषणके अर मयके अत्यन्त युद्ध भया परस्पर बाण चले सो मयने विभीषणका बखतर तोड़ा सो अशोकवृक्षके पुष्प समान लाल होय तैसी लालरूप रुधिरकी धारा विभीषणके पड़ी तब बानरवंशियोंकी सेना चलायमान भई अर राम युद्धको उद्यमी भए, विद्यामई सिंहनिके रथ चढ़े शीघ्र ही मयपर आए अर बानरवंशिनिको कहते भए तुम भय मत करो। रावणकी सेना विजुरी सहित कारी घटा समान तामें उगते सूर्य समान श्रीराम प्रवेश करते भए अर पर सेनाका विध्वंस करनेको उद्यमी भए तब हनूमान भामंडल-सुग्रीव विभीषणको धीर्य उपजा अर बानरवंशिनिकी सेना युद्ध करनेको उद्यमी भई। रामका बल पाय रामके सेवकनिका भय मिटा परस्पर दोनों सेनाके योद्धानिविषैं शस्त्रोंका प्रहार भया, सो देख देख देव आश्चर्यकूं प्राप्त भए अर दोनों सेनाविषै अन्धकार होय गया प्रकाशरहित लोक दृष्टि न पड़ें, श्रीराम राजा मयको बाणनिकर अत्यन्त आच्छादते भए, थोड़े ही खेद कर मयको विह्वल किया, जैसे इंद्र चमरेंद्रको करे तब रामके बाणोंकर मयको विह्वल देख, रावण काल समान क्रोधकर राम पर धाया तब लक्ष्मण रामकी ओर रावणको आवता देख महातेज कर कहता भया—हो विद्याधर! तू किधर जाय है मैं तोहि आज देखा, खड़ा रहो। हे रंक! पापी चोर परस्त्रीरूप दीपकके पतंग अधमपुरुष दुराचारी आज मैं तोसों ऐसी करूं जैसी काल न करै, हे कुमानुष! श्रीराघवदेव समस्त पृथिवीके पति तिन्होंने मोहि आज्ञा करी है जो या चोरकूं सजा देहु तब दशमुख महाक्रोध कर लक्ष्मणसे कहता भया—रे मूढ़! तैंने कहा लोकप्रसिद्ध मेरा प्रताप न सुना? या पृथिवीविषै जे सुखकारी सार वस्तु हैं सो सब मेरी ही हैं मैं राजा पृथिवीपति जो उत्कृष्ट वस्तु सो मेरी, घंटा गजके कंठविषै सोहै स्वानके न सोहै है तैसे योग्य वस्तु मेरे घर सोहै औरकै नाहीं। तू मनुष्यमात्र वृथा विलाप करै तेरी कहा शक्ति? तू दीन मेरे समान नाहीं मैं रंकसे क्या युद्ध करूं तू अशुभके उदयसे मोसे युद्ध किया चाहे है सो जीवनेसे उदास भया है, मूवा चाहे है। तब लक्ष्म-

ण बोले तू जैसा पृथिवीपति है तैसा मैं नीके जानूं हूं। आज तेरा गाजना पूर्ण करूं हूं। जब ऐसा लक्ष्मण ने कहा तब रावणने अपने बाण लक्ष्मणपर चलाए, अर लक्ष्मणने रावणपर चलाए, जैसे वर्षाका मेघ जलवृष्टिकर गिरिको आच्छादित करे, तैसे बाणवृष्टिकर वाने वाको वेध्या अर वाने वाको वेध्या सो रावणके बाण लक्ष्मणने वज्रदंडकर बीचही तोड़ डारे, आपतक आवने न दिए, बाणोंके समूह छेद भेद तोडे फोडे चूरकर डारे, सो धरती आकाश बाण खंडनिकर भर गए, लक्ष्मणने रावणको सामान्य शस्त्रनिकर विह्वल किया तब रावणने जानी यह सामान्य शस्त्रनिकर जीता न जाय तब लक्ष्मणपर रावणने मेघबाण चलाया सो धरती आकाश जलरूप होय गए तब लक्ष्मणने पवनबाण चलाया क्षणमात्रमें मेघबाण विलय किया, बहुरि दशमुखने अग्निबाण चलाया सो दशों दिशा प्रज्वलित भई तब लक्ष्मणने वरुणशस्त्र चलाया सो एक निमिषमें अग्निबाण नाशको प्राप्त भया बहुरि लक्ष्मणनें पापबाण चलाया सो धर्मबाणकर रावणने निवारा बहुरि लक्ष्मणने इंधनबाण चलाया सो रावणने अग्निबाण कर भस्म किया बहुरि लक्ष्मणने तिमिरबाण चलाया सो अंधकार होय गया आकाश वृक्षनिके समूहकर आच्छादित भया। कैसे हैं वृक्ष? आसार फलनिको बरसावें हैं आसार पुष्पनिके पटल छाय गए तब रावणने सूर्यबाण कर तिमिरबाण निवारा अर लक्ष्मण पर नागबाण चलाया अनेक नाग चले विकराल हैं फण जिनके, तब लक्ष्मणने गरुडबाणकर नागबाण निवारा, गरुडकी पांखोंकर आकाश स्वर्णकी प्रभारूप प्रतिभासतां भया, बहुरि रामके भाईने रावणपर सर्पबाण चलाया प्रलयकालके मेघ समान है शब्द जाका अर विषरूप अग्निके कणनिकर महाविषम तब रावणने मयूरबाणकर सर्पबाण निवारा अर लक्ष्मण पर विघ्नबाण चलाया सो विघ्नबाण दुर्निवार ताका उपाय सिद्धबाण सो लक्ष्मणको याद न आया तब वज्रदंड आदि अनेक शस्त्र चलाए। रावण हू सामान्य शस्त्रनिकर युद्ध करता भया, दोनों योद्धानिमें समान युद्ध भया जैसा त्रिपृष्ठ अर अश्वग्रीवके युद्ध भया हुता, तैसा लक्ष्मण-रावणके भया। जैसा पूर्वोपार्जित कर्मका उदय होय तैसा ही फल होय, तैसी क्रिया कर जे महा क्रोध के वश हैं अर जो कार्य आरंभा ता विषै उद्यमी हैं ते नर तीव्र, शस्त्रको न गिनें अर अग्निको न गिनें सूर्यको न गिनें वायुको न गिनें ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषावचनिकाविषै रावण-लक्ष्मणका युद्ध वर्णन करनेवाला चौहत्तरवां पर्व पूर्ण भया ॥ ७४ ॥

अथानन्तर गौतम स्वामी राजा श्रेणिकसूं कहे हैं—हे भव्योत्तम ! दोनों ही सेनाविषै तृषावंतोंको शीतल मिष्ट जल प्याइये है अर क्षुधावन्तोंको अमृत समान आहार दीजिए है अर खेदवन्तोंको मलयागिरि चन्दनसे छिड़किये है, ताडवृक्षके बीजनेसे पवन करिए है, बरफके वारिसे छांटिये है तथा और हू उपचार अनेक कीजिए है, अपना पराया कोई होऊ सबके यत्न कीजिए हैं यही संग्रामकी रीति है। दश दिन युद्ध करते भए दोऊ ही महावीर अभंगचित्त रावण लक्ष्मण दोनों समान जैसा वह तैसा वह सो यक्ष गंधर्व किन्नर अप्सरा आश्चर्यको प्राप्त भए अर दोऊनिका यश करते भए दोऊनिपर पुष्प वर्षा करी अर एक चन्द्रवर्धन नामा विद्याधर ताकी आठ पुत्री सो आकाशविषैं विमानविषै बैठी देख तिनको कौतूहलसे अप्सरा पूछती भई—तुम देवियो सारिखी कौन हो ? तिहारी लक्ष्मणविषै विशेष भक्ति दीखै है अर तुम सुन्दर सुकुमार शरीर हो तब वे लज्जासहित कहती भईं तुमको कौतूहल है तो सुनो, जब सीताका स्वयम्बर हुआ तब हमारा पिता हम सहित तहां आया था तहां लक्ष्मणको देख हमको देनी करी अर हमारा भी मन लक्ष्मणविषै मोहित भया, सो अब यह संग्रामविषै वर्ते है, न जानिए कहा होय ? यह मनुष्यनिविषै चन्द्रमा समान प्राण-नाथ है जो याकी दशा सो हमारी ऐसे इनके मनोहर शब्द सुनकर लक्ष्मण ऊपरको चौंके, तब वे आठो ही कन्या इनके देखनेकर परम हर्षको प्राप्त भईं अर कहती भईं—हे नाथ ! सर्वथा तिहारा कार्य सिद्ध होहु तब लक्ष्मणको विघ्नबाणका उपाय सिद्धबाण याद आया, अर प्रसन्न वदन भया सिद्धबाण चलाय विघ्नबाण विलय किया अर आप महाप्रतापरूप युद्धको उद्यमी भया जो जो शस्त्र रावण चलावे सो सो रामका वीर महा धीरशस्त्रनिविषै प्रवीण छेद डारे, अर आप बाणनिके समूहकर सब दिशा पूर्ण करी जैसे मेघपटल कर पर्वत आच्छादित होय रावण बहुरूपिणी विद्याके बल कर रणक्रीड़ा करता भया। लक्ष्मणने रावणका एक सीस छेदा, तब दोय सीस भए दोय छेदे तब चार भए अर दोय भुजा छेदी तब चार भईं अर जब चार छेदीं तब आठ भईं या भांति ज्यों ज्यों छेदीं त्यों त्यों दुगुनी भईं अर सीस दुगुणे भए हजारों सिर अर हजारों भुजा भईं

रावणके कर हाथीके सूंड समान भुज बन्धन कर शोभित सिरमुकुट कर मंडित तिनकर रणक्षेत्र पूर्ण किया मानों रावण रूप समुद्र महा भयंकर ताके हजारों सिर वेई भए ग्राह अर हजारों भुजा वेई भई तरंग तिनकर बढ़ता भया अर रावणरूप मेघ जाके बाहुरूप विजरी अर प्रचण्ड हैं शब्द अर सिर ही भए शिखर तिन कर सोहता भया। रावण अकेला ही महासेना समान भया अनेक मस्तक तिनके समूह जिन पर छत्र फिरैं मानों यह विचार लक्ष्मणने याहि बहुरूप किया जो आगे मैं अकेले अनेकनिसूं युद्ध किया अब या अकेलेसे कहा युद्ध करूं तातैं याहि बहुशरीर किया रावण प्रज्वलित बनसमान भासता भया रत्ननिके आभूषण अर शस्त्रनिकी किरणनिके समूहकर प्रदीप्त रावण लक्ष्मणको हजारों भुजानिकर बाण शक्ति खड्ग बरछी सामान्य चक्र इत्यादि शस्त्रनिकी वर्षाकर आच्छादता भया सो सब बाण लक्ष्मणने छेदे अर महाक्रोध रूप होय सूर्य समान तेज रूप बाणनिकर रावणके आच्छादनेकों उद्यमी भए एक दोय तीन चार पांच छह दस बीस शत सहस्र मयामई रावणके सिर लक्ष्मणने छेदे हजारों सिर भुजा भूमिविषै पड़े सो रणभूमि उन कर आच्छादित भई ऐसी सोहे मानों सर्पनिके फणनि सहित कमलनिके बन हैं, भुजोसहित सिर पड़े वे उल्कापातसे भासें जेते रावणके बहुरूपिणी विद्या कर सिर अर भुज भए तेते सब सुमित्राके पुत्र लक्ष्मणने छेदे, जैसे महामुनि कर्मनिके समूहको छेदे, रुधिरकी धारा निरन्तर पड़ी तिनकर आकाशविषैं मानों सांझ फूली, दोय भुजाका धारक लक्ष्मण ताने रावणकी असंख्यात भुजा विफल करीं, कैसे हैं लक्ष्मण? महा प्रभावकर युक्त हैं। रावण पसेवके समूह कर भर गया है अंग जाका स्वास कर संयुक्त है मुख जाका यद्यपि महाबलवान हुता तथापि व्याकुलचित्त भया। गौतमस्वामी कहै हैं हे श्रेणिक! बहुरूपिणी विद्याके बलकर रावणने महा भयंकर युद्ध किया, पर लक्ष्मणके आगे बहुरूपिणी विद्याका बल न चला तब रावण मायाचार तज सहज रूप होय क्रोधका भरा युद्ध करता भया अनेक दिव्यशस्त्रनिकर अर सामान्य शस्त्रनिकर युद्ध किया परन्तु वासुदेवको जीत न सका। तब प्रलय कालके सूर्य समान है प्रभा जाकी परपक्षका क्षय करणहारा जो चक्ररत्न ताहि चितवता भया। कैसा है चक्ररत्न? अप्रमाण प्रभावके समूहको धरे मोतिनिकी झालरियोंकर

मौजूद महा देदीप्यमान दिव्य वज्रमई महा अद्भुत नाना प्रकारके रत्ननिकर मंडित है अंग जाका दिव्य-माला अर सुगन्धकर लिप्त अग्निके समूह तुल्य धारानिके समूहकर महा प्रकाशवन्त वैडूर्य मणिके सहस्र आरे तिनकर युक्त जिस का दर्शन सहा न जाय, सदा हजार यक्ष जाकी रक्षा करें महा क्रोधका भरा जैसा कालका मुख होय ता समान वह चक्र चितवते ही करविषै आया, जाकी ज्योति कर ज्योतिष देवोंकी प्रभा मन्द होय गई अर सूर्यकी कांति ऐसी होय गई मानों चित्रामका सूर्य है अर अप्सरा विश्वासु तुंवरु नारद इत्यादि गंधर्वनिके भेद आकाशविषै रणका कौतुक देखते हुते सो भयकर परे गए, अर लक्ष्मण अत्यन्त धीर शत्रुको चक्र संयुक्त देख कहता भया, हे अधम नर ! याहि कहा लेरहा है जैसे कृपण कौडीको लेरहै तेरी शक्ति है तो प्रहार कर, ऐसा कहा तब वह महा क्रोधायमान होय दांतनिकर डसे हैं होंठ जाने लाल हैं नेत्र जाके चक्रको फेर लक्ष्मणपर चलाया। कैसा है चक्र ? मेघ मंडल समान है शब्द जाका अर महा शीघ्र-ताको लिए प्रलयकालके सूर्य समान मनुष्यनिको जीतव्यका संशयका कारण ताहि सन्मुख आवता देख लक्ष्मण वज्रमई है मुख जिनका ऐसे बाणनिकर चक्रके निवारिवेको उद्यमी भया और श्रीराम वज्रावर्त धनुष चढाय अमोघ बाणनिकर चक्रके निवारिवेको उद्यमी भए अर हल मूशलनको भ्रमावते चक्रके सन्मुख भए अर सुग्रीव गदाको फिराय चक्रके सन्मुख भए अर भामंडल खड्गको लेकर निवारिवेको उद्यमी भए अर विभीषण त्रिशूल ले ठाढे भए अर हनूमान मुद्गर लांगूल कनकादि लेकर उद्यमी भए, अर अंगद परम नामा शस्त्र लेकर ठाढे भए अर अंगदका भाई अंग कुठार लेकर महा तेज रूप खडे भए और हू दूसरे श्रेष्ठ विद्याधर अनेक आयुधनिकर युक्त सब एक होयकर जीवनेकी आशा तज चक्रके निवारिवेको उद्यमी भए परन्तु चक्रको निवार न सके। कैसा है चक्र ? देव करे हैं सेवा जाकी ताने आयकर लक्ष्मणको तीन प्रद-क्षिणा देय अपना स्वरूप विनयरूप कर लक्ष्मणके करविषै तिष्ठा, सुखदाई शान्त है आकार जाका। यह कथा गौतम स्वामी राजा श्रेणिकसूं कहे हैं—हे मगधाधिपति ! राम लक्ष्मणका महाऋद्धिको धरे यह महा-त्म्य तोहि संक्षेपसे कहा। कैसा है इनका माहात्म्य ? जाहि सुने परम आश्चर्य उपजे अर लोकविषै श्रेष्ठ

है कैएकके पुण्यके उदयकर परम विभूति होय है अर कैएक पुण्यके क्षयकर नाश होय हैं जैसे सूर्यका अस्त होय है चन्द्रमाका उदय होय है तैसे लक्ष्मणके पुण्यका उदय जानना ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचितमहा पद्मपुराण भाषा वचनिकाविषै लक्ष्मणके चक्ररत्नकी उत्पत्ति वर्णन करनेवाला पचहत्तरवां पर्व पूर्ण भया ॥ ७५ ॥

अथानन्तर लक्ष्मणके हाथविषै महासुन्दर चक्ररत्न आया देख सुग्रीव भामण्डलादि विद्याधरनिके अधिपति अति हर्षित भए अर परस्पर कहते भए—आगे भगवान अनन्तवीर्य केवलीने आज्ञा करी जो लक्ष्मण आठवां वासुदेव है अर राम आठवां वलदेव है सो यह महाज्योति चक्रपाणि भया अति उत्तम शरीरका धारक याके वलका कौन वर्णन करसके, अर यह श्रीराम वलदेव जाके रथको महातेजवंत सिंह चलावें जाने राजा मयको पकड़ा अर हल मूसल महा रत्न देदीप्यमान जाके करविषै सोहें। ये वलभद्र नारायण दोऊ भाई पुरुषोत्तम प्रगट भये पुण्यके प्रभावकर परमप्रेमके भरे लक्ष्मणके हाथविषै सुदर्शन चक्रको देख राक्षसनिका अधिपति चित्तविषै चितारे है जो भगवान अनन्तवीर्यने आज्ञा करी हुती सोई भई। निश्चय सेती कर्मरूप पवनका प्रेरा यह समय आया, जाका छत्र देख विद्याधर डरते अर महासेना परकी भाग जाती परसेनाकी ध्वजा अर छत्र मेरे प्रतापसे वहे वहे फिरते अर हिमाचल विंध्याचल हैं स्तन जाके, समुद्र है वस्त्र जाके ऐसी यह पृथिवी मेरी दासी समान आज्ञाकारिणी हुती ऐसा मैं रावण सो रणविषै भूमिगोचरनिने जीत्या यह अद्भुत वात है कष्टकी अवस्था आय प्राप्त भई, धिक्कार या राज्य लक्ष्मीको कुलटा स्त्री समान है चेष्टा जाकी पूज्य पुरुष या पापनीको तत्काल तजें यह इन्द्रियनिके भोग इन्द्रायणके फल समान इनका परिपाक विरस है अनन्त दुःख सम्बन्धके कारण साधुनिकर निन्द्य हैं, पृथिवीविषै उत्तम पुरुष भरत चक्रवर्त्यादि भये ते धन्य हैं जिन्होंने निःकंटक छहखंड पृथिवीका राज्य किया अर विषके मिले अन्नकी न्याईं राज्यको तज जिनेन्द्र व्रत धार रत्नत्रयको आराधन कर परम पदको प्राप्त भए, मैं रंक विषयाभिलाषी मोह वलवानने मोहि जीत्या यह मोह संसार भ्रमणका कारण धिक्कार मोहि जो मोहके वश होय ऐसी चेष्टा करी। रावण तो यह चिंतवन करे है अर आया है चक्र जाके ऐसा जो लक्ष्मण महा तेजका धारक सो विभी-

षणकी ओर निरख रावणसे कहता भया—हे विद्याधर ! अब हू कछू न गया है जानकीको लाय श्रीरामदेवको सोंपदे अर यह वचन कह कि श्रीरामके प्रसादकर जीवूं हूं हमको तेरा कछू चाहिये नाहीं, तेरी राज्य लक्ष्मी तेरे ही रहो तव रावण मंदहास्यकर कहता भया—हे रंक ! तेरे वृथा गर्व उपजा है अवार ही अपने पराक्रम तोहि दिखावूं हूं। हे अधमनर ! मैं तोहि जो अवस्था दिखाऊं सो भोग, मैं रावण पृथ्वीपति विद्याधर तू भूमिगोचरी रंक, तव लक्ष्मण वोले वहुत कहिवे कर कहा ? नारायण सर्वथा तेरा मारणहारा उपजा। तव रावणने कहा इच्छा मात्र ही नारायण हूजिये है तो जो तू चाहे सो क्यों न हो, इन्द्र हो, तू कुपुत्र पिताने देशसे वाहिर किया महा दुखी दलिद्री वनचारी भिखारी निर्लज्ज तेरी वासुदेव पदवी हमने जानी तेरे मनविषै मत्सर है सो मैं तेरे मनोरथ भङ्ग करूंगा यह घेघली समान चक्र है ताकर तू गर्वा है सो रंकोंकी यही रीति है खलिका टूक पाय मनविषै उत्सव करैं, वहुत कहिवे कर कहा ? ये पापी विद्याधर तोसूं मिले हैं तिन सहित अर या चक्रसहित वाहन सहित तेरा नाशकर तोहि पातालको प्राप्त करूंगा, ये रावणके वचन सुनकर लक्ष्मणने कोपकर चक्रको भ्रमाय रावणपर चलाया वज्रपातके शब्द समान भयङ्कर है शब्द जाका अर प्रलयकालके सूर्य समान तेजको धरे चक्र रावणपर आया तव रावण वाणनिकर चक्रके निवारवेको उद्यमी भया वहुरि प्रचंड दण्ड कर अर शीघ्रगामी वज्र वाणकर चक्रके निवारवेका यत्न किया तथापि रावणका पुण्य क्षीण भया सो चक्र न रुका नंजीक आया तव रावण चन्द्रहास खड्ग लेकर चक्रके समीप आया चक्रके खड्गकी दई सो अग्निके कणनिकर आकाश प्रज्वलित भया खड्गका जोर चक्रपर न चला, सन्मुख तिष्ठता जो रावण महाशूरवीर राक्षसनिका इंद्र ताका चक्रने उरस्थल भेदा सो पुण्यक्षयकर अंजनगिरि समान रावण भूमिविषै पड़ा, मानों स्वर्गसे देव चया, अथवो रतिका पति पृथिवीविषै पड़ा ऐसा सोहता भया मानों वीररसका स्वरूप ही है, चढ़ रही है भौंह जाकी डसे हैं होठ जाने स्वामीको पड़ा देख समुद्र समान था शब्द जाका ऐसी सेना भागिवेको उद्यमी भई ध्वजा छत्र वहे वहे फिरे समस्त लोक रावणके विह्वल भए विलाप करते भागे जाय हैं कोई कहे है रथको दूरकर मार्ग देहु पीछेसे हाथी

अब प्रसन्न होवो, हम मान करतीं तो आप प्रसन्न करते मनावते इन्द्रजीत मेघवाहन स्वर्गलोकसे चयकर तिहारे उपजे सो यहां भी स्वर्गलोक कैसे भोग भोगे अब दोऊ बन्धनविषै हैं अर कुम्भकर्ण बन्धनविषै है सो महापुण्याधिकारी सुभट महागुणवन्त श्रीरामचन्द्र तिनसे प्रीतिकर भाई पुत्रको छुडावहु। हे प्राणवल्लभ प्राणनाथ! उठो, हमसे हितकी वात करो, हे देव! बहुत देर सोवना कहा? राजानिको राजनीतिविषै सावधान रहना सो आप राज्य काजविषै प्रवर्तो। हे सुन्दर हे प्राणप्रिय हमारे अंग विरहरूप अग्निकर अत्यन्त जरे हैं सो स्नेहरूप जलकर बुझावो। हे स्नेहियोंके प्यारे तिहारा यह वदनकमल औरही अवस्थाको प्राप्त भया है सो याहि देख हमारे हृदयके सौ टूक क्यों न हो जावें यह हमारा पापी हृदय वज्र का है दुःखका भाजन जो तिहारी यह अवस्था जानकर विनस न जाय है। यह हृदय महा निर्दई है। हाय विधाता हम तेरा कहा बुरा किया जो तैंने निर्दई होयकर हमारे सिरपर ऐसा दुःख डारा। हे प्रीतम जब हम मान करतीं तब तुम उरसे लगाय हमारा मान दूर करते अर वचन रूप अमृत हमको प्यावते महा प्रेम जनावते हमारा प्रेमरूप ताके दूर करवेके अर्थ हमारे पायन पडते सो हमारा हृदय वशीभूत होय जाता अत्यन्त मनोहर क्रीडा करते, हे राजेश्वर हमसे प्रीति करो परम आनन्दकी करणहारी वे क्रीडा हमको याद आवें हैं सो हमारा हृदय अत्यन्त दाहको प्राप्त होय है तातैं अब उठो हम तिहारे पायनि पडे हैं नमस्कार करें हैं जे अपने प्रियजन होंय तिनसे बहुत कोप न करिए प्रीतिविषै कोप न सहै—हे श्रेणिक! या भांति रावणकी राणी ये विलाप करती भईं जिनका विलाप सुनकर कौनका हृदय द्रवीभूत न होय?

अथानन्तर श्रीराम लक्ष्मण भामण्डल सुग्रीवादिक सहित अति स्नेहके भरे विभीषणको उरसे लगाय आंसू डारते महाकरुणावन्त धीर्य बन्धावने विषै प्रवीण ऐसे वचन कहते भए—लोक वृत्तान्तसे सहित हे राजन्! बहुत रोयवे कर कहा? अब विषाद तजो यह कर्मकी चेष्टा तुम कहा प्रत्यक्ष नाहीं जानोहो? पूर्वकर्मके प्रभावकर प्रमोदको धरते जे प्राणी तिनके अवश्य कष्टकी प्राप्ति होय है उसका शोक कहा अर तुम्हारा भाई सदा जगतके हितविषै सावधान परम प्रीतिका भाजन समाधान रूप बुद्धि जिसकी राजकार्यविषै प्रवीण

अथानन्तर रावणके मरणके समाचार रणवासविषै पहुंचे सो राणियां सब अश्रुपातकी धाराकर पृथिवी तलको सीचती भईं अर सर्व ही अन्तःपुर शोककर व्याकुल भया सकल राणी रणभूमिविषै आईं गिरती पडती गिरती पडती डिगे हैं चरण जिनके वे नारी पतिको चेतनारहित देख शीघ्रही पृथिवी विषै पडीं। कैसा है पति पृथिवीकी चूडामणि है। मंदोदरी, रंभा, चन्द्राननी, चन्द्रमण्डला, प्रवरा उर्वशी महादेवी, सुंदरी, कमलानना, रूपिणी, रुक्मिणी, शीला, रत्नमाला, तनूदरी, श्रीकांता, श्रीमती, भद्रा, कनकप्रभा, मृगवती, श्रीमाला, मानवी, लक्ष्मी आनंदा, अनंगसुन्दरी वसुन्धरा, तडिन्माला, पद्मा, पद्मावती, सुखादेवी, कांति, प्रीति, संध्यावली, सुभा, प्रभावती, मनोवेगा, रतिकांता, मनोवती, इत्यादि अष्टादशसहस्र राणी अपने २ परिवारसहित अर सखिनसहित महाशोककी भरी रुदन करती भईं कैयक मोहकी भरी मूर्छाको प्राप्त भईं सो चन्दनके जलकर छांटी कुमलाई कमलिनी समान भासती भईं कैयक पतिके अंगसे अत्यन्त लिपटकर परी अंजनगिरिसों लगी संध्याकी द्युतिको धरती भईं, कैयक मूर्च्छासे सचेत होय उरस्थल कूटती भईं पतिके समीप मानों मेघके निकट विजुरी ही चमके है, कैयक पतिका वदन अपने अंगविषै लेयकर विह्वल मूर्छाको प्राप्त भईं, कोईयक विलाप करे है हाय नाथ! मैं तिहारे विरहसे अतिकायर मोहि तजकर तुम कहां गए तिहारे जन दुःखसागरविषै डूवे हैं सो क्यों न देखो, तुम महा वली महा सुन्दर परम ज्योतिके धारक विभूति कर इन्द्र समान मानों भरतक्षेत्रके भूपति पुरुषोत्तम महाराजनिके राजा मनोरम विद्याधरनिके महेश्वर कौन अर्थ पृथिवीमें पोढे। उठो, हे कांत! करुणानिधे स्वजनवत्सल। एक अमृत समान वचन हमसे कहो, हे प्राणेश्वर प्राणवल्लभ! हम अपराध रहित तुमसे अनुरक्त चित्त हमपर तुम क्यों कोप भए हमसे वोलो ही नाहीं जैसे पहिले परिहास कथा करते तैसे क्यों न करो तिहारा मुखरूपी चन्द्र कांतिरूप चांदनी कर मनोहर प्रसन्नतारूप जैसे पूर्व हमें दिखावते हुते तैसे हमें दिखावो अर यह तिहारा वक्षस्थल स्त्रियोंकी क्रीडाका स्थानक महासुन्दरता विषै चक्रकी धाराने कैसे पग धारा अर विद्रुम समान तिहारे ये लाल अधर अब क्रीड़ारूप उत्तर देनेको क्यों न स्फुटायमान होय हैं? अबतक बहुत देर लगाई क्रोध कबहूं न किया

अब प्रसन्न होवो, हम मान करतीं तो आप प्रसन्न करते मनावते इन्द्रजीत मेघवाहन स्वर्गलोकसे चयकर तिहारे उपजे सो यहां भी स्वर्गलोक कैसे भोग भोगे अब दोऊ वन्धनविषै हैं अर कुम्भकर्ण बन्धनविषै है सो महापुण्याधिकारी सुभट महागुणवन्त श्रीरामचन्द्र तिनसे प्रीतिकर भाई पुत्रको छुडावहु। हे प्राणवल्लभ प्राणनाथ! उठो, हमसे हितकी बात करो, हे देव! बहुत देर सोवना कहा? राजानिको राजनीतिविषै सावधान रहना सो आप राज्य काजषिषै प्रवर्तो। हे सुन्दर हे प्राणप्रिय हमारे अंग विरहरूप अग्निकर अत्यन्त जरे हैं सो स्नेहरूप जलकर बुझावो। हे स्नेहियोंके प्यारे तिहारा यह वदनकमल औरही अवस्थाको प्राप्त भया है सो याहि देख हमारे हृदयके सौ टूक क्यों न हो जावें यह हमारा पापी हृदय वज्र का है दुःखका भाजन जो तिहारी यह अवस्था जानकर विनस न जाय है। यह हृदय महा निर्दई है। हाय विधाता हम तेरा कहा बुरा किया जो तैंने निर्दई होयकर हमारे सिरपर ऐसा दुःख डारा। हे प्रीतम जब हम मान करतीं तब तुम उरसे लगाय हमारा मान दूर करते अर वचन रूप अमृत हमको प्यावते महा प्रेम जनावते हमारा प्रेमरूप ताके दूर करवेके अर्थ हमारे पायन पडते सो हमारा हृदय वशीभूत होय जाता अत्यन्त मनोहर क्रीडा करते, हे राजेश्वर हमसे प्रीति करो परम आनन्दकी करणहारी वे क्रीडा हमको याद आवें हैं सो हमारा हृदय अत्यन्त दाहको प्राप्त होय है तातैं अब उठो हम तिहारे पायनि पडे हैं नमस्कार करें हैं जे अपने प्रियजन होंय तिनसे बहुत कोप न करिए प्रीतिविषै कोप न सहै—हे श्रेणिक! या भांति रावणकी राणी ये विलाप करती भई जिनका विलाप सुनकर कौनका हृदय द्रवीभूत न होय?

अथानन्तर श्रीराम लक्ष्मण भामण्डल सुग्रीवादिक सहित अति स्नेहके भरे विभीषणको उरसे लगाय आंसू डारते महाकरुणावन्त धीर्य बन्धावने विषै प्रवीण ऐसे वचन कहते भए—लोक वृत्तान्तसे सहित हे राजन्! बहुत रोयवे कर कहा? अब विषाद तजो यह कर्मकी चेष्टा तुम कहा प्रत्यक्ष नाहीं जानोहो? पूर्वकर्मके प्रभावकर प्रमोदको धरते जे प्राणी तिनके अवश्य कष्टकी प्राप्ति होय है उसका शोक कहा अर तुम्हारा भाई सदा जगतके हितविषै सावधान परम प्रीतिका भाजन समाधान रूप बुद्धि जिसकी राजकार्यविषै प्रवीण

प्रजाका पालक सवशास्त्रनिके अथकर धोया है चित्त जाने, सो वलवान मोहकर दारुण अवस्थाको प्राप्त भया अर विनाशको प्राप्त भया जव जीवनिका विनाश काल आवे तव बुद्धि अज्ञानरूप होय जाय है। ऐसे शुभ वचन श्रीरामने कहे वहुरि भामण्डल अति माधुर्यताको धरे वचन कहते भये। हे विभीषण महाराज तिहारा भाई रावण महाउदार चित्त कर रणविषे युद्ध करता संता वीर मरणकर परलोककूं प्राप्त भया। जाका नाम न गया ताका कछुही न गया। ते धन्य हैं जिन सुभटता कर प्राण तजे। ते महा पराक्रमके धारक वीर तिनका कहा शोक? एक राजा अरिंदमकी कथा सुनो। अक्षयकुमार नामा नगर तहां राजा अरिंदम जाके महाविभूति सो एक दिन काहू तरफसे अपने मन्दिर शीघ्रगामी घोडे चढा अक-स्मात् आया सो राणीको शृंगाररूप देख अर महलकी अत्यन्त शोभा देख राणीको पूछा—तुम हमारा आगम कैसे जाना। तव राणीने कही कीर्तिधरनामा मुनि अवधिज्ञानी आज आहारको आए थे तिनको मैंने पूछा राजा कव आवेंगे सो तिन्होंने कहा राजा आज अचानक आवेंगे। यह वात सुन राजा मुनिपै गये अर ईर्ष्याकर पूछता भया—हे मुनि तुमको ज्ञान है तो मेरे चित्तमें क्या है तव मुनिने कहा तेरे चित्तमें यह है कि मैं कव मरूंगा सो तू आजसे सातवें दिन वज्रपातसे मरेगा अर विष्टामें कीट होयगा, यह मुनिके वचन सुन राजा अरिंदम घर जाय अपने पुत्र प्रीतिंकर को कहता भया—मैं मरकर विष्टाके घरमें स्थूल कीट होऊंगा ऐसा मेरा रंगरूप होयगा सो तू तत्काल मार डारियो। ये वचन पुत्रको कह आप सातवें दिन मरकर विष्टामे कीडा भया सो प्रीतिंकर कीटके हनिवेको गया सो कीट मरनेके भयकर विष्टामें पैठि-गया। तव प्रीतिंकर मुनिपै जाय पूछता भया—हे प्रभो! मेरे पिताने कही थी जो मैं मलमें कीट होऊंगा सो तू हनियो अव वह कीट मरवेसे डरे है अर भागे है तव मुनिने कही तू विषाद मत कर यह जिस गतिमें जाय है वहां ही रम रहे है इसलिये तू आत्मकल्याण कर, जाकर पापोंसे छूटे अर यह जीव सवही अपने अपने कर्म-का फल भोगवे हैं कोई काहूका नाहीं यह संसारका स्वरूप महादुखका कारण जान प्रीतिंकर मुनि भया, सर्व वांछा तजी, तातैं हे विभीषण! यह नानाप्रकार जगत्की अवस्था तुम कहा न जानो हो, तिहारा भाई महा-

शूरवीर दैव योगसे नारायणने हता ? संग्रामके संमुख महा प्रधान पुरुष ताका सोच क्या तुम अपना चित्त कल्याणमें लगावो यह शोक दुखका कारण ताको तजो यह वचन अर प्रीतिंकरकी कथा भामण्डलके मुखसे विभीषणने सुनी, कैसी है प्रीतिंकर मुनिकी कथा प्रतिबोध देवेमें प्रवीण अर नाना स्वभावकर संयुक्त अर उत्तम पुरुषोंकर कहिबे योग्य सो सर्व विद्याधरनिने प्रशंसा करी सुनकर विभीषण रूप सूर्य शोकरूप मेघ पटलसे रहित भया लोकोत्तर आचारका जाननेवाला ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषावचनिकाविषै विभीषणका शोकनिवारण वर्णन करनेवाला सततरवा पर्व पूर्ण भया ॥ ७७ ॥

अथानन्तर श्रीरामचन्द्र भामण्डल सुग्रीवादि सबनिसूं कहते भए, जो पंडितोंके वैर वैरीके मरण पर्यन्त हीं है। अब लंकेश्वर परलोकको प्राप्त भए सो यह महानर हुते, इनका उत्तम शरीर अग्नि संस्कार करिए तब सबनि प्रणाम करी अर विभीषणसहित राम लक्ष्मण जहां मन्दोदरी आदि अठारह हजार राणीनि सहित जैसे कुरुचि पुकारै तैसे विलाप करती हुती सो वाहनसे उतर समस्त विद्याधरनि सहित दोऊ वीर तहां गए सो वे राम लक्ष्मणको देख अति विलाप करती भईं तोड डारे हैं सर्व आभूषण जिन्होंने अर धूलकर धूसरा है अंग जिनका तब श्रीराम महादयावन्त नानाप्रकारके शुभ वचननिकर सर्व राणीनिकों दिलासा करी धीर्य वन्धाया अर आप सब विद्याधरनिको लेकर रावणके लोकाचारको गए, कपूर अगर मलियागिरि चन्दन इत्यादि नानाप्रकारके सुगन्ध द्रव्यनिकर पद्मसरोवर पर प्रतिहरि का दाह भया बहुरि सरोवरके तीर श्रीराम तिष्ठे, कैसे हैं ? महा कृपालु है चित्त जिनका, गृहस्थाश्रमविषै ऐसे परिणाम कोई विरलेके होय हैं। बहुरि आज्ञा करी कुम्भकर्ण इन्द्रजीत मेघनादको सब सामंतनिसहित छोड़ो तब कैयक विद्याधर कहते भए—वे महा क्रूरचित्त हैं अर शत्रु हैं छोडवे योग्य नाहीं वन्धनहीविषै मरें। तब श्रीराम कहते भए—यह क्षत्रियनिका धर्म नाहीं, जिनशासनविषै क्षत्रीनिकी कथा कहा तुमने नाहीं सुनी है। सूतेको वन्धेको डरतेको शरणागतकुं दन्तविषै तृण लेतेको भागेको वाल वृद्ध स्त्रीनिकूं न हने यह क्षत्रीका धर्म शास्त्रनिमें प्रसिद्ध है। तब सबनि कही आप जो आज्ञा करो सो प्रमाण। बड़े बड़े योद्धा नानाप्रकारके आयुधनिकूं धरें तिनके ल्या-

यवेको गए, कुम्भकरण इन्द्रजीत मेघनाद मारीच तथा मन्दोदरीका पिता राजा मय इत्यादि पुरुषनिको स्थूल वन्धनसहित सावधान योद्धा लिए आवे हैं सो माते हाथी समान चले आवे हैं तिनको देख वानरवंशी योद्धा परस्पर वात करते भए जो कदाचित इन्द्रजीत मेघनाद कुम्भकरण रावणकी चिता जरती देख क्रोध करें तो कपिवंशिनिमें इनके सन्मुख लडनेको कोई समर्थ नाहीं, जो कपिवंशी जहां वेठा था तहांसे उठ न सका अर भामंडलने अपने सव योद्धानिकूं कहा जो इन्द्रजीत मेघनादको यहां तक वंधेही अति यत्नसे लाइयो, अवार विभीषणका भी विश्वास नाहीं है जो कदाचित् भाई भतीजेनिको निर्धन देख भाईका वेर चितारे सो याको विकार उपज आवे, भाईके दुखकर वहुत तप्तायमान है यह विचार भामंडलादिक तिनको अति यत्नकर राम लक्ष्मणके निकट लाए सो वे महाविरक्त राग द्वेषरहित जिनके मुनि होयवेके भाव महा सौम्य दृष्टिकर भूमि निरखते आवें, शुभ हैं आनन जिनके, वे महा धीर यह विचारे हैं कि या असार संसार सागरविषे कोई सारताका लवलेश नाहीं, एक धर्मही सव जीवनका वांधव है सोई सार है ये मनमें विचारे है जो आज वंधनसे छूटें तो दिगम्वर होय पाणिपात्र आहार करें। यह प्रतिज्ञा धरते रामके समीप आए। इंद्रजीत कुम्भकर्णादिक विभीषणकी ओर आय तिष्ठे यथायोग्य परस्पर संभाषण भया वहुरि कुम्भकर्णादिक श्रीराम लक्ष्मणसूं कहते भए—अहो तिहारा परम धीर्य परम गंभीरता अद्भुत चेष्टा देवनिहू कर न जीता जाय ऐसा राक्षसनिका इन्द्र रावण मृत्युकूं प्राप्त किया, पंडितनिके अति श्रेष्ठ गुणनिका धारक शत्रु हू प्रशंसा योग्य है। तव श्रीराम लक्ष्मण इनको वहुत साता उपजाय अति मनोहर वचन कहते भए। तुम पहिले महा भोगरूप जैसे तिष्ठैं तैसे तिष्ठो। तव वह महा विरक्त कहते भए अव इन भोगनिसे हमारे कछु प्रयोजन नाहीं। यह विषसमान महा दारुण महा मोहके कारण महा भयंकर महा नरक निगोदादि दुःखदाई जिनकर कवहूं जीवके साता नाहीं। विचक्षण हैं ते भोगसंवंधको कवहूं न वांछे। राम लक्ष्मणने घना ही कहा तथापि तिनका चित्त भोगासक्त न भया। जैसे रात्रिविषै दृष्टि अंधकार रूप होय अर सूर्यके प्रकाश कर वही दृष्टि प्रकाशरूप होय जाय तैसे ही कुम्भकर्णादिककी दृष्टि पहिले भोगासक्त हुती सो ज्ञानके प्रकाशकर भोगनितैं

विरक्त भई। श्रीरामने तिनके बंधन छुडाये अर इन सबनि सहित पद्म सरोवरविषै स्नान किया। कैसा है सरोवर ? सुगंध है जल जाका, ता सरोवरविषै स्नान कर कपि अर राक्षस सब अपने अपने स्थानक गए। कैयक सरोवरके तीर बैठे विस्मय कर व्याप्त हैं चित्त जिनका शूरवीरोंकी कथा करते भए कैयक क्रूर कर्मको उलाहना देते भए कैयक हथियार डारते भए कैयक रावणके गुणोंकर पूर्ण है चित्त जिनका सो पुकारकर रुदन करते भए कैयक कर्मनिकी विचित्र गतिका वर्णन करते भए अर कैयक संसार वनको निन्दते भए। कैसा है संसार वन जाथकी निकसना अतिकठिन है कैयक भोगविषै अरुचिको प्राप्त भए राज्यलक्ष्मीको महा चंचल निरर्थक जानते भए अर कैयक उत्तम बुद्धि अकार्यकी निंदा करते भए कैयक रावणकी गर्वकी भरी कथा करते भए श्रीरामके गुण गावते भए, कैयक लक्ष्मणकी शक्तिका गुण वर्णन करते भए, कैयक सुकृतके फलकी प्रशंसा करते भए, निर्मल है चित्त जिनका, घरघर मृतकोंकी क्रिया होती भई, बाल वृद्ध सबके मुख यही कथा। लंकाविषै सर्वलोक रावणके शोककर अश्रुपात डारते चातुर्मास्य करते भए शोककर द्रवीभूत भया है हृदय जिनका, सकल लोकनिके नेत्रनिसे जलके प्रवाह बहे सो पृथिवी जलरूप होय गई अर तत्वोंकी गौणता दृष्टि पडी मानों नेत्रोंके जलके भयकर आताप घुसकर लोकोंके हृदयविषै पैठा सर्वलोकोंके मुखसे यह शब्द निकसे धिक्कार धिक्कार अहो बड़ा कष्ट भया हाय हाय यह अद्भुत भया या भांति लोक विलाप करै हैं कैयक भूमिविषै शय्या करते भए मौन धार मुख नीचा करते भए निश्चल है शरीर जिनका मानों काष्ठके हैं कैयक शस्त्रोंको तोड डारते भए कैयकोंने आभूषण डार दिए अर स्त्रीके मुखकमलसे दृष्टि संकोची कैयक अति दीर्घ उष्ण निस्वास नाखे हैं सो कलुष होय गए अधर जिनके मानों दुःखके अंकुरे हैं अर कैयक संसारके भोगनिसे विरक्त होय मनविषै जिनदीक्षाका उद्यम करते भए।

अथानन्तर पिछले पहिर महासंघ सहित अनन्तवीर्य नामा मुनि लंकाके कुसुमायुध नामा वनविषै छप्पन हजार मुनि सहित आए जैसे तारनिकर मण्डित चन्द्रमा सोहै तैसे मुनिकर मंडित सोहते भए, जो ये मुनि

रावणके जीवते आवते तो रावण मारा न जाता लक्ष्मणके अर रावणके विशेष प्रीति होती जहां ऋद्धिधारी मुनि तिष्ठें तहां सर्व मङ्गल होवें अर केवली विराजे जहां चारों ही दशाओंविषें दोयसौ योजन पृथिवी स्वर्ग तुल्य निरुपद्रव होय अर जीवनके वैरभाव मिट जावे जैसे आकाशविषे अमूर्तत्व अवकाश प्रदानता निर्लेपता अर पवनविषे सवीर्यता, निसंगता, अग्नि विषे उष्णता, जलविषे निर्मलता, पृथिवीविषे सहनशीलता तैसे स्वतः स्वभाव महा मुनिके लोकको आनंददायकता होय है अनेक अद्भुत गुणोंके धारक महा मुनि तिन सहित स्वामी विराजे, गौतम स्वामी कहे हैं, हे श्रेणिक! तिनके गुण कौन वर्णन कर सके जैसे स्वर्णका कुम्भ अमृतका भरा अति सोहै तैसे महामुनि अनेक ऋद्धिके भरे सोहते भए निर्जंतु स्थानक वहां एक शिला ता ऊपर शुक्ल ध्यान धर तिष्ठे सो ताही रात्रिविषे केवल ज्ञान उपजा जिनके परम अद्भुत गुण वर्णन किए पापनिका नाश होय तव भयनवासी असुरकुमार नागकुमार गरुडकुमार विद्युतकुमार अग्निकुमार पवनकुमार मेघकुमार दिक्कुमार दीपकुमार उदधिकुमार ये दशप्रकार तथा अष्ट प्रकार व्यंतर किंपुरुष महोरग गंधर्व यक्ष राक्षस भूत पिशाच, तथा पंच प्रकार ज्योतिषी सूर्य ग्रह तारा नक्षत्र अर सोलह स्वर्ग के सर्व ही स्वर्गवासी ये चतुरनिकायके देव सौधर्म इंद्रादिक सहित धातुकीखंडद्वीपके विषै श्रीतीर्थंकर देवका जन्म भया हुता सो सुमेरु पर्वतविषै क्षीर सागरके जलकर स्नान कराए जन्म कल्यानकका उत्सवकर प्रभुको माता पिताको सौंप तहां उत्सवसहित तांडव नृत्यकर प्रभुकी वारम्वार स्तुति करते भये। कैसे हैं प्रभु? वाल अवस्थाको धरे हैं परन्तु बाल अवस्थाकी अज्ञान चेष्टासे रहित हैं। तहां जन्म कल्याणकका समय साधकर सब देव लंकाविषै अनंतवीर्य केवलीके दर्शनको आए। कैयक विमान चढ़े आए, कैयक राजहंसनिपर चढ़े आए अर कई एक अश्व सिंह व्याघ्रादिक अनेक वाहननिपर चढ़े आये, ढोल मृदंग नगारे वीण वांसुरी झांझ मंजीरे शंख इत्यादि नाना प्रकारके वादित्र वजावते मनोहर गान करते आकाश मंडलको आच्छादते केवलीके निकट महा भक्तिरूप अर्ध रात्रिके समय आए, तिनके विमाननिकी ज्योति कर प्रकाश होय गया अर वादित्रनिके शब्दकर दशोंदिशा व्याप्त होय गईं, राम-लक्ष्मण यह वृत्तान्त जान हर्षको प्राप्त भए, समस्त वानरवंशी

अर राक्षसवंशी विद्याधर इंद्रजीत कुम्भकर्ण मेघनाद आदि सब राम लक्ष्मणके संग केवलीके दर्शनके लिये जायबेको उद्यमी भए। श्रीराम लक्ष्मण हाथी चढे अर कईएक राजा रथपर चढे कई एक तुरंगनिपर चढे छत्र चमर ध्वजाकर शोभायमान महा भक्तिकर संयुक्त देवनि सारिखे महा सुगन्ध हैं शरीर जिनके अति उदार अपने वाहननितैं उतर महाभक्ति कर प्रणाम करते स्तोत्र पाठ पढते केवलीके निकट आये। अष्टांग दण्डवत भूमिविषै तिष्ठे, धर्म श्रवणकी है अभिलाषा जिनके, केवलीके मुखतैं धर्म श्रवण करते भए। दिव्यध्वनिमें यह व्याख्यान भया जो ये प्राणी अष्ट कर्मसे बंधे महादुखके कर्म पर चढे चतुर्गतिविषै भ्रमण करे हैं आर्त रौद्र ध्यानकर युक्त नाना प्रकारके शुभाशुभ कर्मनिको करे हैं, महा मोहिनी कर्मने ये जीव बुद्धिरहित किये तातैं सदा हिंसा करै हैं असत्य वचन कहे हैं, पराये मर्म भेदका वचन कहे हैं, परनिन्दा करे हैं, पर द्रव्य हरे हैं, पर स्त्रीका सेवन करे हैं प्रमाणरहित परिग्रहको अंगीकार करे हैं, वढ़ा है महालोभ जिनके। वे कैसे हैं महा निन्द्य कर्म कर शरीर तज अधोलोकविषै जाय हैं तहां महा दुखके कारण सप्त नरक तिनके नाम रत्नप्रभा, शर्करा वालुका, पंकप्रभा, धूमप्रभा, तम, महातम, सदा महा दुःखके कारण सप्त नरक अन्धकारकर युक्त दुर्गन्ध सूंघा न जाय देखा न जाय स्पर्शा न जाय महा भयंकर महा विकराल है भूमि जिनकी सदा रुदन दुर्वचन त्रास नाना प्रकारके छेदन भेदन तिनकर सदा पीडित नारकी खोटे कर्मनितैं पापबन्ध कर बहुत काल सागरों पर्यंत महा तीव्र दुःख भोगवे हैं ऐसा जान पंडित विवेकी पाप बंधसे रहित होय धर्मविषै चित्त धरो। कैसे हैं विवेकी ? व्रत नियमके धरणहारे, निःकपटस्वभाव अनेक गुणनिकर मंडित वे नानाप्रकारके तपकर स्वर्ग लोकको प्राप्त होय हैं। बहुरि मनुष्य देह पाय मोक्ष प्राप्त होय हैं अर जे धर्मकी अभिलाषासे रहित हैं ते कल्याणके मार्गतें रहित बारम्बार जन्म मरण करते महादुखी संसारविषै भ्रमण करे हैं। जे भव्यजीव सर्वज्ञ बीतरागके वचनकर धर्मविषै तिष्ठे हैं ते मोक्षमार्गी शील सत्य शौच सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्रकर जबलग अष्ट कर्मका नाश न करें तबलग इंद्र अहमिंद्र पदके उत्तम सुखको भोगवे हैं। नाना प्रकारके अद्भुत सुख भोग वहां से चय कर महाराजाधिराज होय बहुरि ज्ञान पाय जिनमुद्राधर महातपकर

केवलज्ञान उपाय अष्ट कमरहित सिद्ध होय हैं, अनन्त अविनाशी आत्मिकस्वभावमयी परम आनन्द भोगवे हैं। यह व्याख्यान सुन इंद्रजीत मेघनाद अपने पूर्वभव पूछते भए। सो केवली कहे हैं—एक कौशांवी नामा नगरी वहां दो भाई दलिद्री एकका नाम प्रथम, दूजेका नाम पश्चिम। एक दिन विहार करते भगदत्तनामा मुनि वहां आए सो ये दोनों भाई धर्म श्रवण कर ग्यारमी प्रतिमाके धारक क्षुल्लक श्रावक भए सो मुनि-के दर्शनको कौशांवी नगरीका राजा इन्द्र नामा राजा आया सो मुनि महाज्ञानी राजाको देख जान्या याके मिथ्यादर्शन दुर्निवार है अर ताही समय नन्दीनामा श्रेष्ठी महाजिनभक्त मुनिके दर्शनको आया ताका राजाने आदर किया ताको देख प्रथम अर पश्चिम दोऊ भाईनिमें से छोटे भाई पश्चिमने निदान किया जो मैं या धर्मके प्रसाद कर नंदी सेठके पुत्र होऊं सो वडे भाईने अर गुरुने वहुत सम्बोधा जो जिनशासनविषै निदान महानिन्द्य है सो यह न समझा कुबुद्धि निदानकर दुखित भया मरण कर नंदीके इंदुमुखी नामा स्त्री ताके गर्भविषै आया सो गर्भविषै आवते ही वड़े वड़े राजानिके स्थानकनिविषै कोटका निपात दरवाजनिका निपात इत्यादि नानाप्रकारके चिन्ह होते भए, तब वड़े वड़े राजा याकों नानाप्रकारके निमित्त कर महानर जान जन्महीसे अति आदर संयुक्त दूत भेज भेज कर द्रव्य पठाय सेवते भए। यह वडा भया याका नाम रतिव-र्धन सो सव राजा याको सेवें कौशांवी नगरीका राजा इंदु भी सेवा करै। नित्य आप प्रणाम करै। या भांति यह रतिवर्धन महाविभूति कर संयुक्त भया अर वडा भाई प्रथम मर कर स्वर्ग लोक गया, सो छोटे भाईके जीवको संबोधवेके अर्थ क्षुल्लकका स्वरूप धर आया सो यह मदोन्मत्त राजा मदकर अन्धा होय रहा सो क्षुल्लकको दुष्ट लोकनिकर द्वारविषै पैठने न दिया तब देवने क्षुल्लकका रूप दूरकर रतिवर्धनका रूप किया तत्काल ताका नगर उजाड उद्यान कर दीया अर कहता भया अब तेरी कहा वार्ता? तब वह पांयन पर पड स्तुति करता भया तब ताको सकल वृत्तांत कहा जो आपां दोऊ भाई थे। मैं वडा, तू छोटा। सो क्षुल्लकके व्रत धारे सो तैंने नंदीसेठको देख निदान किया सो मरकर नंदीके घर उपजा, राजविभूति पाई अर मैं स्वर्ग-विषै देव भया। यह सव वार्त्ता सुन रतिवर्धनको सम्यक्त उपजा मुनि भया अर नंदीको आदि दे अनेक

राजा रतिवर्धनके संग मुनि भए। रतिवर्धन तपकर जहां भाइका जीव देव हुता वहां ही देव भया वहुरि दोऊ माई स्वर्ग तैं चयकर राजकुमार भए। एकका नाम उर्व दूजेका नाम उर्वस राजा नरेन्द्र राणी विजयाके पुत्र वहुरि जिनधर्मका आराधनकर स्वर्गविषै देव भए वहांसे चयकर तुम दोऊ भाई रावणके राणी मंदोदरी ताके इंद्रजीत मेघनाद पुत्र भए अर नंदी सेठके इंदुमुखी रतिवर्धनकी माता सो जन्मांतरविषै मंदोदरी भई। पूर्व जन्मविषै स्नेह हुता सो अव हू माताका पुत्रसे अतिस्नेह भया। कैसी है मंदोदरी ? जिनधर्मविषै आसक्त है चित्त जाका, यह अपने पूर्व भव सुन दोऊ भाई संसारकी मायासे विरक्त भए। उपजा है महा वैराग्य जिनको, जैनेश्वरी दीक्षा आदरी अर कुम्भकर्ण मारीच राजा मय अर भी वडे वडे राजा संसारतैं महा विरक्त होय मुनि भए, तजे हैं विषय कषाय जिन्होंने, विद्याधरोंके राजकी विभूति तृणवत् तजी महा योगीश्वर हो अनेक ऋद्धिके धारक भए, पृथिवीविषै विहार करते भव्यनिको प्रति वोधते भये, श्री मुनिसुव्रत नाथके मुक्ति गये पीछे तिनके तीर्थ विषै यह वडे वडे महा पुरुष भए, परम तपके धारक अनेक ऋद्धिसंयुक्त। यह भव्य जीवनिको वारम्वार वंदिवे योग्य हैं अर मंदोदरी पति अर पुत्रनिके विरह कर अतिव्याकुल भई महा शोककर मूर्छाको प्राप्त भई वहुरि सचेत होय कुरचिकी न्याई विलाप करती भई। दुखरूप समुद्रविषै मग्न होय, हाय पुत्र, इंद्रजीत मेघनाद ! यह कहा उद्यम किया, मैं तिहारी माता अतिदीन ताहि क्यों तजी ? यह तुमको कहा योग्य जो दुखकर तप्तायमान जो माता ताका समाधान किए वगैर उठगए। हाय पुत्र हो ! तुम कैसे मुनिव्रत धरोगे। तुम देवनिसारिखे महा भोगी शरीरको लडावनहारे कठोर भूमिपर कैसे शयन करोगे। समस्त विभव तजा समस्त विद्या तजी केवल अध्यात्मविद्याविषै तत्पर भए अर राजा मय मुनि भया ताका शोक करे है—हाय पिता ! यह कहा किया ? जगत्को तज मुनिरूप धरा तुम मोसे तत्काल ऐसा स्नेह क्यों तजा ? मैं तिहारी स्त्री मोसे दया क्यों न करी वालअवस्थाविषै मोपर तिहारी अति कृपा हुती मैं पिता अर पुत्र अर पति सबसे रहित भई, स्त्रीके यही रक्षक हैं। अव मैं कौनके शरण जाऊं, मैं पुण्यहीन महा दुखको प्राप्त भई या भांति मंदोदरी रुदन करै ताका रुदन सुन सवही को दया उपजै अश्रुपातकर

चतुर्मासकर दिया ताहि शशिकान्ता आर्यिका उत्तम वचनकर उपदेश देती भई—हे मूर्खणी ! कहा रोवे है या संसारचक्रविषै जीवनिने अनन्त भव धरे तिनमें नारकी अर देवनिके तो सन्तान नाहीं अर मनुष्य अर तिर्यंचनिके है सो तैंने चतुर्गति भ्रमण करते मनुष्य तिर्यंचनिके भी अत्यन्त जन्म धारे तिनविषै तेरे अनंत पिता पुत्र बांधव भए जिनका जन्म जन्ममें रुदन किया अब कहा विलाप करे है। निश्चलता भज यह संसार असार है, एक जिनधर्म ही सार है। तू जिनधर्मका आराधन कर दुखसे निवृत्त होहु ऐसे प्रतिबोधके कारण आर्यिकाके मनोहर वचन सुन मंदोदरी महा विरक्त भई। उत्तम है गुण जाविषै समस्त परिग्रह तजकर एक शुक्ल वस्त्र धारकर आर्यिका भई। कैसी है मंदोदरी ? मन वचन कायकर निर्मल जो जिनशासन ताविषै अनुरागिणी है अर चन्द्रनखा रावणकी बहिन हू याही आर्यिकाके निकट दीक्षा धर आर्यिका भई। जा दिन मंदोदरी आर्यिका भई ता दिन अडतालीस हजार आर्यिका भई ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषावचनिकाविषै इन्द्रजीत मेघनाद कुम्भकरणका वैराग्य अर मंदोदरी आदि रानीनिका वैराग्य वर्णन करनेवाला अठत्तरवा पर्व पूर्ण भया ॥ ७८ ॥

अथान्तर गौतमस्वामी राजा श्रेणिसूं कहे हैं—हे राजन् ! अब श्रीराम लक्ष्मणका विभूतिसहित लंकामें प्रवेश भया सो सुन। महा विमाननिके समूह अर हाथिनिकी घटा अर श्रेष्ठ तुरंगनिके समूह अर मंदिर समान रथ अर विद्याधरनिके समूह अर हजारां देव तिनकर युक्त दोनों भाई महाज्योतिको धरे लंकामें प्रवेश करते भए, तिनको देख लोक अति हर्षित भए, जन्मान्तरके धर्मके फल प्रत्यक्ष देखते भए, राजमार्गके विषै जाते श्रीराम लक्ष्मण तिनको देख नगरके नर अर नारिनिको अपूर्व आनंद भयां। फूल रहे हैं मुख जिनके स्त्री झरोखानि विषै बैठी जालिनिसे होय देखे हैं। कमल समान हैं मुख, जिनके, महा कौतुककर युक्त परस्पर वार्ता करे हैं—सखी ! देखो यह राम राजा दशरथका पुत्र गुणरूप रत्ननिका राशि पूर्णमासीके चन्द्रमा समान है बदन जाका कमल समान हैं नेत्र जाके अद्भुत पुण्यकर यह पद पाया है अतिप्रशंसा योग्य है आकार जाका धन्य हैं वह कन्या जिन्होंने ऐसे वर पाए। जाने यह वर पाए ताने

कीर्तिका थंभ लोक विषै थापा, जाने जन्मान्तर विषै धर्म आचरा होय सोही ऐसा नाथ पावे तासमान अन्य नारी कौन ? जाका यश अत्यन्त, राजा जनककी पुत्री महाकल्याण रूपिणी, जन्मांतर विषै महा पुण्य उपार्जे हैं तातें यह ऐसे पति जैसे शची इंद्रके तैसे सीता रामके अर यह लक्ष्मण वासुदेव चक्रपाणि शोभै है जाने असुरेंद्रसमान रावण रणविषै हता, नील कमल समान कांति जाकी अर गौर कांतिकर संयुक्त जो बलदेव श्रीरामचंद्र तिनसहित ऐसे सोहैं जैसे प्रयाग विषै गंगा यमुनाके प्रवाहका मिलाप सो है। अर यह राजा चंद्रोदयका पुत्र विराधित है जाने लक्ष्मणसे प्रथम मिलापकर विस्तीर्ण विभूति पाई अर यह राजा सुग्रीव किहकंधापुरका धनी महा पराक्रमी जाने। श्रीराम देवसे परम प्रीति जनाई अर यह सीताका भाई भामंडल राजा जनकका पुत्र चंद्रगति विद्याधरने पाला सो विद्याधरनिका इंद्र है अर यह अंगदकुमार राजा सुग्रीव-का पुत्र जो रावणको बहुरूपिणी विद्या साधते विघ्नको उद्यमी भया अर हे सखी ! यह हनूमान महासुंदर उतंग हाथिनिके रथ चढा पवनकर हाले है वानरके चिन्हको ध्वजा जाके जाहि देख रणभूमि विषै शत्रु पलाय जांय सो राजा पवनका पुत्र अंजनीके उदर विषै उपजा जाने लंकाके कोट दरवाजे ढाहे हैं। ऐसी वार्ता परस्पर स्त्रीजन करे हैं तिनके वचनरूप पुष्पनिकी मालाकर पूजित जो राम सो राजमार्ग होय आगे गए। एक चमर ढारती जो स्त्री ताहि पूछा हमारे विरहके दुःखकर तप्तायमान जो भामंडलकी बहिन सो कहां तिष्ठे है ? तब वह रत्ननिके चूडाकी ज्योति कर प्रकाश रूप हैं भुजा जाकी सो आंगुरी कर समस्याकर स्थानक दिखावती भई। हे देव ! यह पुष्पप्रकीर्ण नामा गिरि निरझरनावोंके जलकर मानों हास्यही करे है तहां नन्दन वन समान महा मनोहर वन ताविषै राजा जनककी पुत्री कीर्तिशील है परिवार जाके सो तिष्ठे है। या भांति रामजीसे चमर ढारती स्त्री कहती भई अर सीताके समीप जो उर्मिका नाम सखी सब सखि-निविषै प्रीतिकी भजनहारी सो आंगुरी पसार सीताको कहती भई—हे देवि ! यह चन्द्रमा समान है छत्र जिनका अर चांद सूर्य समान हैं कुंडल जिनके अर शरदके नीझरने समान है हार जिनके सो पुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्र तिहारे वल्लभ आए। तिहारे वियोगकर मुखविषै अत्यंत खेदको धरे हैं। हे कमलनेत्र ! जैसे

लपटी कल्पवेलि सोहै, भया है रोमांच दोनोंके अंगविषैं परस्पर मिलापकर दोऊ हो अति सोहते भये। ते देवनिके युगल समान हैं जैसे देव देवांगना सोहैं तैसे सोहते भये सीता अर रामका समागम देख देव प्रसन्न भये सो आकाशसे दोनोंपर पुष्पोंकी वर्षा करते भए सुगन्ध जलकी वर्षा करते भए अर ऐसे वचन मुखतैं उचारते भये अहो अनुपम है शील सीताका शुभ है चित्त सीता धन्य है याकी अचलता गम्भीरता धन्य है व्रत शीलकी मनोग्यता भी धन्य है निर्मलपन जाका धन्य है सतीनिविषै उत्कृष्टता जाके, जाने मनहूकर द्वितीय पुरुष न इच्छा, शुद्ध है नियम व्रत जाका या भांति देवनिने प्रशंसा करी ताही समय अति भक्तिका भरा लक्ष्मण आय सीताके पायन पड़ा विनयकर संयुक्त सीता अश्रुपात डारती ताहि उरसों लगाय कहती भई—हे वत्स! महाज्ञानी मुनि कहते जो यह वासुदेव पदका धारक है सो तू प्रगट भया अर अर्धचक्री पदका राज तेरे आया निर्ग्रन्थके वचन अन्यथा न होंय अर यह तेरे बड़े भाई बलदेव पुरुषोत्तम जिन्होंने विरहरूप अग्निविषै जरती जो मैं सो निकासी। बहुरि चन्द्रमा समान है ज्योति जाकी ऐसा भाई भामण्डल बहिनके समीप आया ताहि देख अति मोहकर मिलो। कैसा है भाई? महा विनयवान् है अर सुग्रीव वा हनूमान् नल नील अंगद विराधित चन्द्र सुषेण जांबव इत्यादि बड़े बड़े विद्याधर अपना नाम सुनाय वन्दना अर स्तुति करते भये. नाना प्रकारके वस्त्र आभूषण कल्पवृक्षोंके पुष्पनिकी माला सीताके चरणके समीप स्वर्णके पात्रविषै मेल भेंट करते भए अर स्तुति करते भए—हे देवि। तुम तीन लोकविषै प्रसिद्ध हो महा उदारताको धरो हो गुण संपदाकर सवविषै बड़े हो देवोंकर स्तुति करने योग्य हो अर मंगलरूप है दर्शन तिहारा जैसे सूर्यकी प्रभा सूर्य सहित प्रकाश करै तैसे तुम श्रीरामचन्द्र सहित जयवन्त होहु॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषा वचनिकाविषैं राम अर सीताका मिलाप वर्णन करनेवाला उन्नासीवा पर्व पूर्ण भया॥ ७९॥

अथानन्तर—सीताके मिलापरूप सूर्यके उदय कर फूल गया है मुख कमल जिनका ऐसे जो राम सो अपने हाथ कर सीताका हाथ गह उठे ऐरावत गज समान जो गज ता पर सीतासहित आरोहण किया

मेघ समान वह गज ताकी पीठपर जानकीरूप रोहिणीकर युक्त रामरूप चन्द्रमा सोहते भए समाधान रूप है बुद्धि जिनकी दोऊ अतिप्रीतिके भरे प्राणियोंके समूहको आनन्दके करता वड़े वडे अनुरागी विद्याधर लार लक्ष्मण लार स्वर्ग विमान तुल्य रावणका महल वहां श्रीराम पधारे। रावणके महलके मध्य श्रीशांतिनाथका मन्दिर अति सुन्दर तहां स्वर्णके हजारों थंभ नाना प्रकारके रत्नोंकर मंडित मंदिरकी मनोहर भीति जैसे महाविदेहके मध्य सुमेरु सोहे तैसे रावणके मंदिरविषै शांतिनाथका मन्दिर सोहे जाको देख नेत्र मोहित होय जायं जहां घंटा वाजे हे ध्वजा फहरे हैं महा मनोहर वह शांतिनाथका मंदिर वर्णनविषै न आवे श्रीराम हाथीसे उतर नागेन्द्र समान है पराक्रम जिनका प्रसन्न हैं नेत्र महालक्ष्मीवान जानकीसहित किंचित्काल कायोत्सर्गको प्रतिज्ञा करी, प्रलंबित हैं भुजा जिनकी महा प्रशांत हृदय समायिकको अंगीकार कर हाथ जोड़ शांतिनाथस्वामीका स्तोत्र समस्त अशुभ कर्मका नाशक पढते भए—हे प्रभो! तिहारे गर्भावतारविषै सवलोकविषै शांति भई महा कांतिकी करणहारी सर्वरोग हरणहारी अर सकल जीवनको आनंद उपजे अर तिहारे जन्मकल्याणकविषै इन्द्रादिक देव महा हर्षित होय आए क्षीरसागरके जलकर सुमेरु पर्वतपर तिहारा जन्माभिषेक भया अर तुमने चक्रवर्ती पद धर जगत्‌का राज्य किया वाह्यशत्रु वाह्यचक्रसे जीते अर मुनि होय माहिल मोह रागादिक शत्रु ध्यानकर जीते केवलवोध लहा जन्म जरा मरणसे रहित जो शिवपुर कहिये मोक्ष ताका तुम अविनाशी राज्य दिया कर्म रूप वैरी ज्ञान शस्त्रसे निराकरण किए। कैसे हैं कर्म शत्रु सदा भवभ्रमणके कारण अर जन्म जरा मरण भयरूप आयुधनिकर युक्त सदा शिवपुर पंथके निरोधक। कैसा है वह शिवपुर? उपमारहित नित्य शुद्ध जहां परभावका आश्रय नाहीं केवल निज भावका आश्रय है अत्यन्त दुर्लभ सो तुम आप निर्वाणरूप औरोंको निर्वाणपद सुलभ करो हो, सव जगतको शांतिके कारण हो। हे श्रीशांतिनाथ! मन वचन काय कर नमस्कार तुमको, हे जिनेश! हे महेश! अत्यन्त शांत दिशाको प्राप्त भये हो स्थावर जंगम सर्वजीवोंके नाथ हो जो तिहारे शरण आवै ताके रक्षक हो समाधि वोधके देनहारे तुम एक परमेश्वर सवनके गुरु सवके

बांधव हो मोक्ष मार्गके प्ररूपणहारे सर्व इन्द्रादिक देवनिकर पूज्य धर्मतीर्थके कर्ता हो तिहारे प्रसाद कर सर्व दुःखसे रहित जो परम स्थानक ताहि मुनिराज पावे हैं। हे देवाधिदेव। नमस्कार है तुमको सर्व कर्म विलय किया है। हे कृतकृत्य! नमस्कार तुमको, पाया है परम शांतिपद जिन्होंने, तीनलोकको शांतिके कारण सकल स्थावर जंगम जीवोंके नाथ, शरणागतपालक समाधि बोधके दाता महा कांतिके धारक हो। हे प्रभो! तुम ही गुरु तुमही बांधव तुमहो मोक्षमार्गके नियंता परमेश्वर इन्द्रादिक देवनिकर पूज्य धर्म तीर्थके कर्ता जिनकर भव्य जीवनिको सुख होय सर्व दुःखके हरणहारे कर्मोंके अन्तक नमस्कार तुमको, हे लब्धलभ्य। नमस्कार तुमको, लब्धलभ्य कहिये पाया है पायवे योग्य पद जिन्होंने महा शांत स्वभावविषै विराजमान सर्वदोषरहित हे भगवन्! कृपा करो वह अखंड अविनाशी पद हमें देवो इत्यादि महास्तोत्र पढ़ते कमलनयन श्रीराम प्रदक्षिणा देकर बंदना करते भए महा विवेकी पुण्य कर्मविषै सदा प्रवीण अर रामके पीछे नम्रीभूत है अंग जाका दोऊकर जोड़ें महासमाधानरूप जानकी स्तुति करती भई श्रीरामके शब्द महा दुन्दुभी समान अर जानकी महामिष्ट कोमल बीण समान बोलती भई अर विशल्या सहित लक्ष्मण स्तुति करते भये अर भामण्डल सुग्रीव तथा हनूमान मंगलस्तोत्र पढ़ते भये जोड़े हैं कर कमल जिन्होंने अर जिनराजविषै पूर्ण है भक्ति जिनकी महा गान करते मृदंगादि बजावते महा ध्वनि करते भये मयूर मेघकी ध्वनि जान नृत्य करते भए वारम्वार स्तुति प्रणाम कर जिनमंदिरविष यथायोग्य तिष्ठे। ता समय राजा विभीषण अपने दादा सुमाली अर तिनके लघुवीर माल्यवान् अर सुमालीके पुत्र रत्नश्रवा रावणके पिता तिनको आदि दे अपने बड़े तिनको समाधान करता भया, कैसा है विभीषण संसारकी अनित्यताके उपदेशविषै अत्यन्त प्रवीण सो बड़ोंको कहता भया हे तात। यह सकल जीव अपने उपार्जे कर्मोंको भोगे हैं तातैं शोक करना वृथा है अर अपना चित्त समाधान करो आप जिन आगमके वेत्ता महा शांतिचित्त अर विचक्षण हो औरोंको उपदेश देयवे योग्य आपको हम कहा कहें, जो प्राणी उपजा है सो अवश्य मरणको प्राप्त होय है अर यौवन पुष्पनिको सुगंधतासमान क्षणमात्रविषै और रूप होय है अर लक्ष्मी प-

छत्रोंकी शोभासमान शीघ्रही और रूप होय है अर विजुरीके चमत्कार समान यह जीतव्य है अर पानीके वुदबुदासमान वंधुनिका समागम है अर सांझके वादरके रंग समान यह भोग है जो यह जीव पारमार्थिक नयकर मरण न करे तो हम भावान्तरसे तिहारे वंशविषै कैसे आवते ? हे तात ! अपना ही शरीर विनाशीक है तो हितु जनका अत्यन्त शोक काहेको करिये शोक करना मूढ़ता है सत्पुरुषोंको शोकसे दूर करिवे अर्थ संसारका स्वरूप विचारणा योग्य है देखे सुने अनुभवे जे पदार्थ वे उत्तम पुरुषोंको शोक उपजावे हैं परन्तु विशेष शोक न करना क्षणमात्र भया तो भया या शोककर वांधवका मिलाप नाहीं वुद्धिभ्रष्ट होय है तातैं शोक न करना यह विचारणा या संसार असारविषै कौन कौन न भए ऐसा जान शोक तजना अपनी शक्ति प्रमाण जिनधर्मका सेवन करना। यह वीतरागका मार्ग संसार सागरका पार करणहारा है सो जिनशासनविषै चित्त धर आत्मकल्याण करना इत्यादि मनोहर मधुर वचननिकर विभीषणने अपने वड़निका समाधान किया। बहुरि अपने निवास गया अपनी विदग्धनामा पटराणी समस्त व्यवहारविषै प्रवीण हजारा राणीनिमें मुख्य ताहि श्रीरामके नौतिवेको भेजा सो आयकर सीतासहित रामको अर लक्ष्मणको नमस्कार कर कहती भई—हे देव। मेरे पतिका घर आपके चरणारविन्दके प्रसंगकर पवित्र करहु आप अनुग्रह करिवे योग्य हो या भांति राणी विनती करे है तवही विभीषण आया, अति आदरतैं कहता भया—हे देव ! उठिये मेरा घर पवित्र करिये तव आप याके लार ही याके घर जायवेको उद्यमी भए नाना प्रकारके वाहन कारी घटा समान गज अति उत्तङ्ग अर पवनसमान चंचल तुरंग अर मन्दिरसमान रथ इत्यादि नाना प्रकारके जे वाहन तिनपर आरूढ़ अनेक राजा तिन सहित विभीषणके घर पधारे, समस्त राजमार्ग सामंतनि कर आच्छादित भया। विभीषणने नगर उछाला, मेघकी ध्वनि समान वादित्र वाजते भए, शंखनिके शब्द कर गिरिकी गुफा नाद करती भई झंझा भेरी मृदङ्ग ढोल हजारों वाजते भए, लपाक काहल धुन्धु अनेक वाजे अर दुन्दुभी वाजे दशोंदिशा वादित्रोंके नाद कर पूरी गई। ऐसे हो तो वादित्रनिके शब्द अर ऐसे ही नाना प्रकारके वाहननिके शब्द ऐसे ही सामन्तनिके अट्टहास तिनकर दशों दिशा

पूरित भई कैयक सिंह शार्दूलपर चढ़े हैं, कैयक रथनिपर चढ़े हैं कैयक हाथिनिपर कैयक तुरंगनिपर चढ़े हैं नाना प्रकारके विद्यामई तथा सामान्य वाहन तिनपर चढ़े चले, नृत्यकारिणी नृत्य करे हैं नट भाट अनेक कला अनेक चेष्टा करे हैं अति सुन्दर नृत्य होय है वन्दीजन विरद वखाने हैं उंचो स्वरसे स्तुति करे हैं, अर शरदकी पूर्णमासीके चन्द्रमा समान उज्ज्वल छत्रनिके मंडल कर अंबर छाय रहा है नाना प्रकारके आयुधनिकी कांति कर सूर्यकी किरण दब गई है, नगरके सकल नर नारीरूप कमलनिके वनको आनन्द उपजावने भानु समान श्रीराम विभीषणके घर आये। गौतमस्वामी कहे हैं—हे श्रेणिक ! ता समयकी विभूति कही न जाय, महा शुभ लक्षण जैसी देवनिके शोभा होय तैसी भई। विभीषणने अर्घपाद्य किये, अति शोभा करी। श्रीशांतिनाथके मन्दिरतैं लेय अपने महलतक महा मनोग्य तांडव किये आप श्रीराम हाथीसे उतर सीता अर लक्ष्मण सहित विभीषणके घरमें प्रवेश करते भये, विभीषणके महलके मध्य पद्मप्रभु जिनेंद्रका मन्दिर रत्ननिके तोरणनिकर मंडित कनकमई ताके चौगिर्द अनेक मंदिर जैसे पर्वतनिके मध्य सुमेरु सोहै तैसे पद्मप्रभुका मन्दिर सोहै सुवर्णके हजारा थम्भ तिनके ऊपर अति उंचो देदीप्यमान अति विस्तारसंयुक्त जिनमन्दिर सोहैं, नाना प्रकारके मणिनिके समूह कर मंडित अनेक रचनाको धरे अति सुन्दर पद्मराग मणिमई पद्मप्रभु जिनेंद्रकी प्रतिमा अति अनुपम विराजै जाकी कांतिकर मणिनिकी भूमि विषै मानों कमलनिका वन फूल रहे हैं। सो रामलक्ष्मण सीतासहित वन्दना कर स्तुतिकर यथायोग्य तिष्ठे ॥

अथानन्तर—विद्याधरनिकी स्त्री राम लक्ष्मण सीताके स्नानकी तैयारी करावती भई अनेक प्रकारके सुगन्ध तेल तिनके उबटना किये, नासिकाको सुगन्ध अर देहकूं अनुकूल पूर्व दिशाको मुख कर स्नानकी चौकी पर विराजे, बड़ी ऋद्धिकर स्नानको प्रवरते सुवर्णके मरकत मणिके हीरानिके स्फटिक मणिके इन्द्रनीलमणिके कलश सुगन्ध जलके भरे तिनकर स्नान भया, नाना प्रकारके वादित्र बाजे, गीत गान भये, जब स्नान होय चुका तब महापवित्र वस्त्र आभूषण पहिरे बहुरि पद्मप्रभुके चैत्यालय जाय वन्दना करी ।

विभीषणने रामकी मिजमानी करी ताका विस्तार कहां लग कहिए, दुग्ध दही घी शर्वतकी वावडी भरवाई पक्कान अर अन्नके पर्वत किये अर जे अद्भुत वस्तु नन्दनादि वन विषे पाइये ते मंगाई मनको आनन्दकारी नासिकाको सुगन्ध नेत्रोंको प्रिय अति स्वादको धरे जिह्वाको वल्लभ षटरससहित भोजनकी तैयारी करी, सामग्री तो सर्व सुन्दर ही हुती अर सीताके मिलापकर रामको अति प्रिय लगी रामके चित्तकी प्रसन्नता कथनमें न आवै जब इष्टका संयोग होय तब पांचों इन्द्रियनिके सर्व ही भोग प्यारे लगें नातर नाही, जब अपने प्रीतमका संयोग होय तब भोजन भली भांति रुचै सुगन्ध रुचै सुन्दर वस्त्रका देखना रुचै रागका सुनना रुचै कोमल स्पर्श रुचै मित्रके संयोगकर सब मनोहर लगे, अर जब मित्रका वियोग होय तब स्वर्ग तुल्य विषय भी नरक तुल्य भासै अर प्रियके समागम विषै महा विषमवन स्वर्गतुल्य भासै महा सुन्दर अमृतसारिखे रस अर अनेक वर्णके अद्भुत भक्ष्य तिनकर रामलक्ष्मण सीताको तृप्त किये अद्भुत भोजन किया भई, भूमिगोचरी विद्याधर परिवारसहित अति सन्मानकर जिमाए, चन्दनादि सुगन्धके लेप किये तिनपर भ्रमर गुञ्जार करे हैं अर भद्रसाल नन्दनादिक वनके पुष्पनिसे शोभित किए अर महा सुन्दर कोमल महीन वस्त्र पहिराए नाना प्रकारके रत्ननिके आभूषण दिये कैसे हैं आभूषण ? जिनके रत्ननिकी ज्योतिके समूहकर दशोंदिशाविषै प्रकाश हो रहा है। जेते रामकी सेनाके लोक थे उन सबको विभीषणने सनमान कर प्रसन्न किये सबके मनोरथ पूर्ण किये रात्रि अर दिवस सब विभीषण हीका यश गान करें अहो यह विभीषण राक्षसवंशका आभूषण है, जाने राम लक्ष्मणकी वड़ी सेवा करी यह महा प्रशंसा योग्य है मोटा पुरुष है यह प्रभावका धारक जगतविषै उतंगताको प्राप्त भया, जाके मन्दिर श्रीराम लक्ष्मण पधारे, या भांति विभीषणके गुण ग्रहणविषै तत्पर विद्याधर होते भये। सर्व लोक सुखसे तिष्ठे राम लक्ष्मण सीता अर विभीषणकी कथा पृथिवीविषै प्रवरती।

अथानन्तर—विभीषणादिक सकल विद्याधर राम लक्ष्मणका अभिषेक करनेको विनयकर उद्यमी भये तब श्रीराम लक्ष्मणने कहा अयोध्याविषै हमारे पिताने भाई भरतकूं अभिषेक कराया सो भरत ही

हमारे प्रभु हैं तब सबने कही आपको यही योग्य है परन्तु अब आप त्रिखंडो भए तो यह मंगल स्नान योग्य ही हैं यामें कहा दोष है अर ऐसी सुननेविषै आवे है भरत महा धीर है अर मन वचन काय कर आपकी सेवाविषै प्रवरते है विक्रियाको नाहीं प्राप्त होय है ऐसा कह सबने रामलक्ष्मणका अभिषेक किया जगतविषै बलभद्र नारायणकी अति प्रशंसा भई जैसे स्वर्गविषै इन्द्र प्रतिइन्द्रकी महिमा होइ तैसे लंकाविषै राम लक्ष्मणकी महिमा भई, इन्द्रके नगर समान वह नगर महा भोगनिकर पूर्ण तहां राम लक्ष्मणकी आज्ञासे विभीषण राज्य करे है, नदी सरोवरनिके तीर अर देश पुर ग्रामादिविषै विद्याधर राम लक्ष्मणहीका यश गावते भये, विद्याकरयुक्त अद्भुत आभूषण पहिरे सुन्दर वस्त्र मनोहर हार सुगन्धादिकके विलेपन उनकर युक्त क्रीड़ा करते भए जैसे स्वर्गविषै देव क्रीड़ा करैं अर श्रीरामचन्द्र सीताका मुख देखते तृप्तिको न प्राप्त भए। कैसा है सीताका मुख ? सूर्यके किरणकर प्रफुल्लित भया जो कमल ता समान है प्रभा जाकी, अत्यन्त मनकी हरणहारी जो सीता ता सहित राम निरन्तर रमणीय भूमिविषै रमते भये अर लक्ष्मण विशल्या सहित रतिको प्राप्त भये मन वांछित सकल वस्तुका है समागम जिनके उन दोऊ भाईनिके बहुत दिन भोगोपभोगयुक्त सुखसे एक दिवस समान गये। एक दिन लक्ष्मण सुन्दर लक्षणोंका धरणहारा विराधितको अपनी जे स्त्री तिनके लेयवे अर्थ पत्र लिख बड़ी ऋद्धिसे पठावता भया सो जायकर कन्यानिके पितानिको पत्र देता भया, माता पितानिने बहुत हर्षित होय कन्यानिको पठाया सो बड़ी विभूतिसों आईं दशांग नगरके स्वामी बज्रकर्णकी पुत्री रूपवती महारूपकी धरणहारी अर कूवर स्थानके नाथ वालखिल्यकी पुत्री कल्याण माला परम सुन्दरी अर पृथ्वीपुर नगरके राजा पृथ्वीधरकी पुत्री बनमाला गुणरूपकर प्रसिद्ध अर खेमांजलके राजा जितशत्रुकी पुत्री जितपद्मा अर उज्जैन नगरीके राजा सिंहोदरकी पुत्री यह सब लक्ष्मणके समीप आईं विराधित ले लाया जन्मान्तरके पूर्ण पुण्य दया दान मन इन्द्रियोंको वश करना शील संयम गुरुभक्ति महा उत्तम तप इन शुभ कर्मनिकर लक्ष्मणसा पति पाइये इन पतिव्रतानिने पूर्व महा तप किये हुते रात्रि भोजन तथा चतुर्विधि संघकी सेवा करी तातै वासुदेव पति पाये उनको लक्ष्मण ही वर

योग्य अर लक्ष्मणके ऐसे ही स्त्री योग्य तिनकर लक्ष्मणको अर लक्ष्मणकर तिनको अति सुख होता भया परस्पर सुखी भए गौतम स्वामी राजा श्रेणिकसे कहे हैं—हे श्रेणिक ! जगतविषै ऐसी संपदा नाहीं ऐसी शोभा नाहीं ऐसी लीला नाहीं ऐसी कला नाहीं जो इनके न भई । राम लक्ष्मण अर इनकी राणी तिनकी कथा कहां लग कहैं अर कहां कमल कहां चन्द्र इनके मुखकी उपमा पावे अर कहां लक्ष्मी अर कहां रति इनकी राणियोंको उपमा पावें राम लक्ष्मणकी ऐसी संपदा देख विद्याधरोंके समूहको परम आश्चर्य होता भया । चन्द्रवर्धनकी पुत्री अर और अनेक राजानिकी कन्या तिनसे श्रीराम लक्ष्मणका अति उत्सवसे विवाह होता भया । सब लोकको आनन्दके करणहारे वे दोऊ भाई महा भोगनिके भोगता मनवांछित सुख भोगते भए । इन्द्र प्रतींद्र समान आनन्द कर पूर्ण लंका विषै रमते भए, सीता विषै है अत्यन्त राग जिनका ऐसे श्रीराम तिन्होंने छहवर्ष लंकाविषै व्यतीत किये सुखके सागरविषै मग्न सुन्दर चेष्टाके धरणहारे श्रीरामचन्द्र सकल दुःख भूल गए ॥

अथानन्तर—इन्द्रजीत मुनि सर्व पापनिके हरनहारे अनेक ऋद्धि सहित विराजमान पृथिवीविषै विहार करते भए, वैराग्यरूप पवनकर प्रेरी ध्यानरूप अग्निकर कर्मरूपवन भस्म किये । कैसा है ध्यानरूप अग्नि ? चायिक सम्यक्त्वरूप अरण्यकी लकड़ी ताकर करी है अर मेघवाहन मुनि भी विषरूप ईंधनको अग्नि समान आत्मध्यानकर भस्म करते भये, केवल ज्ञानको प्राप्त भए केवलज्ञान जीवका निजस्वभाव है अर कुम्भकर्ण मुनि सम्यक् दर्शन ज्ञानचारित्रके धारक शुक्ल लेश्या कर निर्मल जो शुक्लध्यान ताके प्रभावकर केवलज्ञानको प्राप्त भए । लोक अर अलोक इनको अवलोकन करते मोहरज रहित इन्द्रजीत कुम्भकर्ण केवली आयु पूर्णकर अनेक मुनिनि सहित नर्मदाके तीर सिद्धपदको प्राप्त भए सुर असुर मनुष्यनिके अधिपतिनिकर गाइये है उत्तम कीर्ति जिनकी शुद्ध शीलके धरणहारे महा देदीप्यमान जगत बन्धु समस्त ज्ञेयके ज्ञाता जिनके ज्ञान समुद्रविषैं लोकालोक गायके खुर समान भासै संसारका क्लेश महा विषम ताके जालसे निकसे : ‾थानक गए बहुरि यत्न नाहीं तहां प्राप्त भये उपमारहित निर्विघ्न अखण्ड सुखको

प्राप्त भए जे कुम्भकर्णादिक अनेक सिद्ध भए ते जिनशासनके श्रोतावोंको आरोग्य पद देवें। नाश किये हैं कर्म शत्रु जिन्होंने ते जिनस्थानकोंसे सिद्ध भये हैं वे स्थानक अद्यापि देखिये है वे तीर्थ भव्यनिकर वंदवे योग्य हैं विंध्याचलकी बनी विषै इन्द्रजीत मेघनाद तिष्टे सो तीर्थ मेघरव कहावे है अर जम्बूमाली महा बलवान तूणीमंत नामा पर्वतविषै अहमिंद्र पदको प्राप्त भये सो पर्वत नाना प्रकारके वृक्ष अर लतानिकर मण्डित अनेक पक्षिनिके समूहकर तथा नाना प्रकारके वनचरनिकर भरा। अहो भव्यजीव हो! जीवदया आदि अनेक गुणनिकर पूर्ण ऐसा जो जिनधर्म ताके सेवनसे कछु दुर्लभ नाहीं, जिनधर्मके प्रसादसे सिद्धपद अहमिंद्रपद इत्यादिके पद सबही सुलभ हैं, जम्बूमालीका जीव अहमिन्द्र पदसे ऐरावतक्षेत्र विषै मनुष्य होय केवल उपाय सिद्धपदको प्राप्त होवेंगे अर मन्दोदरीका पिता चारण मुनि होय महा ज्योतिको धरे अढ़ाईद्वीप विषे कैलाश आदि निर्वाण क्षेत्रनिको अर चैत्यालयोंकी वन्दना करते भए देवोंका है आगमन जहां सो मय महामुनि रत्नत्रय रूप आभूषण कर मंडित महाधीर्यधारी पृथिवीविषै विहार करें अर मारीच मंत्री महा मुनि स्वर्गविषै बड़ी ऋद्धिके धारी देव भए जिनका जैसा तप तैसा फल पाया। सीताके दृढ़व्रत कर पतिका मिलाप भया जाको रावण डिगाय न सका। सीताका अतुल धीर्य अद्भुतरूप महानिर्मल बुद्धि भरतारविषैं अधिकस्नेह जो कहनेविषै न आवै सीता महा गुणनिकर पूर्ण शीलके प्रसादतैं जगतविषै प्रशंसा योग्य भई। कैसी है सीता एक जिनपतिविषै है सन्तोष जाके भवसागरकी तरणहारी परम्पराय मोक्षकी पात्र जाकी साधु प्रशंसा करें। गौतमस्वामी कहै हैं—हे श्रेणिक! जो स्त्री विवाह ही नहीं करे बालब्रह्मचर्य धरे सो तो महा भाग्य ही है अर पतिव्रताका व्रत आदरै मनवचनकायकर परपुरुषका त्याग करै तो यह व्रत भी परम रत्न है स्त्रीको स्वर्ग अर परम्पराय मोक्ष देयवेको समर्थ है शीलव्रत समान और व्रत नाही, शील भवसागरकी नाव है। राजा मय मंदोदरीका पिता राज्य अवस्थाविषै मायाचारी हुता अर कठोरपरणामी हुता, तथापि जिनधर्मके प्रसादकर रागद्वेषरहित हो अनेक ऋद्धिका धारक मुनि भया। यह कथा सुन राजा श्रेणिक गौतमस्वामीको पूछते भये—हे नाथ! मैं इन्द्रजीतादिकका

माहात्म्य सब सुना अब राजा मयका माहात्म्य सुना चाहूंहू अर हे प्रभो । जो या पृथिवीविषै पतिव्रता शी-
लवंती स्त्री हैं निज भारतविषै अनुरक्त हैं वे निश्चयसे स्वर्ग मोक्षकी अधिकारिणी हैं तिनकी महिमा मोहि
विस्तारसूं कहो । तब गणधर कहते भये जे निश्चयकर सीता समान पतिव्रता शीलको धारण करै हैं ते
अल्प भवमें मोक्ष होय हैं पतिव्रता स्वर्गही जाय परम्पराय मोक्ष पावैं, अनेक गुणनिकर पूर्ण । हे राजन् !
जे मनवचनकायकर शीलवन्तो हैं चित्तकी वृत्ति जिन्होंने रोकी है ते धन्य हैं, घोड़निमें हाथिनिमें लोहे-
निविषै पाषाणविषै वस्त्रनिविषै जलविषै वृक्षनिविषै वेलनिविषै स्त्रीनिविषै पुरुषनिविषै बड़ा अंतर है स-
बही नारियोंमें पतिव्रता न पाइये अर सबही पुरुषनिमें विवेकी नाहीं । जे शील रूप अंकुश कर मनरूप
माते हाथीको वश करें ते पतिव्रता हैं । पतिव्रता सबही कुलमें होय हैं अर वृथा पतिव्रताका अभिमान किया
तो कहा ? जे जिनधर्मसे बहिरमुख हैं ते मनरूप माते हाथीको वश करवे समर्थ नाहीं, वीतरागकी वाणी-
कर निर्मल भया है चित्त जिनका तेई मनरूप हस्तीको विवेक रूप अंकुश कर वशीभूत कर दया शीलके
मार्ग विषै चलायवे समर्थ हैं । हे श्रेणिक ! एक अभिमाना नामा स्त्री ताकी संक्षेपसे कथा कहिये है—सो सुन.
यह प्राचीन कथा प्रसिद्ध है एक ध्यानग्रामनामा ग्राम तहां नोदन नामा ब्राह्मण ताके अभिमाना नामा स्त्री
सो अग्निनामा ब्राह्मणकी पुत्री माननी नामा माताके उदरमें उपजी, सो अति अभिमानकी धरणहारी सो
नोदन नामा ब्राह्मण क्षुधाकर पीड़ित होय अभिमानाको तज दई सो गजवनविषै करूरुह नाम राजाको
प्राप्त भई, वह राजा पुष्प प्रकीर्ण नगरका स्वामी लंपट सो ब्राह्मणीको रूपवन्ती जान ले गया, स्नेहकर घ-
रविषै राखी । एक समय रातिविषै ताने राजाके मस्तक विषै चरणकी लात दई । प्रातः समय सभाविषै
राजाने पंडितनिसे पूछी—जाने मेरा सिर पांव कर हता होय ताका कहा करना । तब मूर्ख पंडित कहते
भये—हे देव ! ताका पांव छेदना अथवा प्राण हरना ता समय एक हेमांक नामा ब्राह्मण राजाके अभिप्रा-
यका वेत्ता कहता भया ताके पांवकी आभूषणादि कर पूजा करना तब राजाने हेमांकको पूछी—हे पंडित !
तुमने रहस्य कैसे जाना तब ताने कही—स्त्रीके दंतनिके तिहारे अधरोंविषै चिन्ह दीखे तातैं यह जानी

स्त्रीके पांवकी लागी। तब राजाने हेमांकको अभिप्रायका वेत्ता जान अपना निकट कृपापात्र किया बड़ी ऋद्धि दई सो हेमांकके घरके पास एक मित्रयशा नामा विधवा ब्राह्मणी महादुःखी अमोघ सर नाम ब्राह्मणकी स्त्री है सो रहे सो अपने पुत्रको शिक्षा देती हुती भरतारके गुण चितार चितार कहती भई हे पुत्र ! बाल अवस्था विषै जो विद्याका अभ्यास करै सो हेमांककी न्याईं महा विभूतिको प्राप्त होय, या हेमांकने बाल अवस्थाविषै विद्याका अभ्यास किया सो अब याकी कीर्ति देख अर तेरा बाप धनुषबाण विद्याविषै अति प्रवीण हुता ताके तुम सुपुत्र भये आंसू डार माताने यह वचन कहे ताके वचन सुन माताको धीय बंधाया महा अभिमानका धारक यह श्रीवर्धित नामा पुत्र विद्या सीखनेके अर्थ व्याघ्रपुर नगर गया सो गुरुके निकट शस्त्र शास्त्र सर्व विद्या सीखी अर या नगरके राजा सुकांतकी शीला नामा पुत्री ताहि ले निकसा। तब कन्याका भाई सिंहचन्द्र या ऊपर चढ़ा सो या अकेलेने शस्त्रविद्याके प्रभावकर सिंहचन्द्रको जीता अर स्त्रीसहित माताके निकट आया। माताको हर्ष उपजाया शस्त्र कला कर याकी पृथिवीविषै प्रसिद्ध कीर्ति भई सो शस्त्रके बल कर पोदनापुरके राजा राजा करूरुहको जीत्या अर व्याघ्रपुरका राजा शीलाका पिता मरणको प्राप्त भया ताका पुत्र सिंहचन्द्र शत्रूनिने दबाया सो सुरंगके मार्ग होय अपनी रानीको ले निकसा राज्यभ्रष्ट भया पोदनापुर विषै अपनी बहिनका निवास जान तम्बोलीके लार पानोंकी झोली सिरपर धर स्त्री सहित पोदनापुरके समीप आया रात्रिको पोदनापुरके वनमें रहा ताकी स्त्री सर्पने डसी तब यह ताहि कांधे धर जहां मय महा मुनि विराजे हुते वे वज्रके थम्भ समान महानिश्चल कायोत्सर्ग धरे अनेक ऋद्धिके धारक तिनको भी सर्व औषधि ऋद्धि उपजी हुती सो तिनके चरणारविंदके समीप सिंहचन्द्रने अपनी राणी डारी सो तिनके ऋद्धिके प्रभाव कर राणी निर्विष भई स्त्री सहित मुनिके समीप तिष्ठे थी ता मुनिके दर्शनकूं विनयदत्त नाम श्रावक आया ताहि सिंहचन्द्र मिला अर अपना सब वृत्तांत कहा तब तानें जाय कर पोदनापुरके राजा श्रीवर्धितको कहा जो तिहारा स्त्रीका भाई सिंहचन्द्र आया है तब वह शत्रु जान युद्धको उद्यमी भया तब विनयदत्तने यथावत् वृत्तांत कहा जो तिहारे शरण आया है, तब ताहि

बहुत प्रीति उपजी अर महाविभूतिसे सिंहचन्द्रके सन्मुख आया, दोनों मिले, अति हर्ष उपजा। बहुरि श्रीवर्धित मय मुनिको पूछता भया हे भगवन्! मैं मेरे अर अपने स्वजनोंके पूर्व भव सुना चाहूं हूं—तब मुनि कहते भये—एक शोभपुरनामा नगर वहां भद्राचार्य दिगम्बरने चौमासेविषै निवास किया सो अमलनामा नगरका राजा निरंतर आचार्यके दर्शनको आवै सो एक दिवस एक कोढिनी स्त्री ताकी दुगंध आई सो राजा पांवपयादाही भाग अपने घर गया ताकी दुगंध सह न सका अर वह कोढनीने चैत्यालय दर्शनकर भद्राचार्यके समीप श्राविकाके व्रत धारे. समाधि मरण कर देवलोक गई वहांते चयकर तेरी स्त्री शीला भई अर वह राजा अमल अपने पुत्रको राज्य भार सौंप आप श्रावकके व्रत धारे आठ ग्राम पुत्रपै ले संतोष धरा शरीर तज देवलोक गया वहांसे चयकर तू श्रीवर्धित भया॥ अब तेरी माताके भव सुन—एक विदेशी क्षुधाकर पीड़ित ग्रामविषै आय भोजन मांगता भया सो जब भोजन न मिला तब महा कोपकर कहता भया कि मैं तिहारा ग्राम बालूंगा ऐसे कटुक शब्द कह निकसा। दैवयोगसे ग्रामविषै आग लगी सो ग्रामके लोगनिने जानी ताने लगाई तब क्रोधायमान होय दौड़े अर ताहि ल्याय अग्निविषै जराया सो महा दुःखकर राजाकी रसोवणि भई। मरकर नरकविषै घोर वेदना पाई तहांसे निकसा तेरी माता मित्रयशा भई अर पोदनापुरविषै एक गोवाणिज गृहस्थ मर कर तेरी स्त्रीका भाई सिंहचन्द्र भया अर वह भुजपत्रा ताकी स्त्री रतिवर्धना भई। पूर्वभवविषै पशुओंपै बोझ लादे थे सो या भवविषै भार वहे, ये सर्वके पूर्व जन्म कहकर मय महा मुनि आकाश मार्ग विहार कर गए अर पोदनापुरका राजा श्रीवर्धित सिंहचन्द्रसहित नगरविषैं गया। गौतम स्वामी कहे हैं—हे श्रेणिक! यह संसारकी विचित्र गति है कोईयक तो निर्धनसे राजा हो जाय अर कोईयक राजासे निर्धन हो जाय है। श्रीवर्धित ब्राह्मणका पुत्र सो राजा होय गया अर सिंहचन्द्र राजाका पुत्र सो राज्यभ्रष्ट होय श्रीवर्धितके समीप आया। एक गुरुके निकट प्राणी धर्मका श्रवण करै तिनविषै कोई समाधि मरणकर सुगति पावै कोई कुमरणकर दुर्गति पावै कोई रत्ननिके भरे जहाज सहित समुद्र उलंघ सुखसे स्थानक पहुंचे, कोऊ समुद्रविषै डूवे, कोईको चोर लूट लेय जावै ऐसा जगत्का

तुम शोक तजो मैं शीघ्रही तिहारे पुत्रनिकी वार्ता क्षेम कुशलकी लाऊं हूं मेरे सब बातविषै सामर्थ्य है यह प्रतिज्ञाकर नारद वीणाको उठाय कांधे धरी आकाश मार्ग गमन किया पवन समान है वेग जाका अनेक देश देखता लंकाकी ओर चला सो लंकाके समीप जाय विचारी राम लक्ष्मणकी वार्ता कौन भांति जानिवेविषै आवै जो राम लक्ष्मणकी वार्ता पूछिए तो रावणके लोकनिसे विरोध होय तातैं रावणकी वार्ता पूछिये तो योग्य है रावणकी वार्ता कर उनकी वार्ता जानी जायगी। यह विचार नारद पद्म सरोवर गया तहां अन्तःपुर सहित अंगद क्रीड़ा करता हुता ताके सेवकनिको रावणकी कुशल पूछी वे किंकर सुनकर क्रोधरूप होय कहते भए यह दुष्टतापस रावणका मिलापी है याको अंगदके समीप ले गये जो रावणकी कुशल पूछे है। नारदने कहा मेरा रावणसे कछु प्रयोजन नाहीं तब किंकरनिने कही तेरा कछु प्रयोजन नाहीं तो रावणकी कुशल क्यों पूछे था। तब अंगदने हसकर कहा इस तापसको पद्मनाभिके निकट ले जावो सो नारदको खींचकर ले चले नारद विचारै है न जानिए कौन पद्मनाभी है कौशल्याका पुत्र होय तो मोसे ऐसी क्यों होय, ये मोहि कहां ले जाय हैं, मैं संशयविषै पड़ा हूं। जिनशासनके भक्त देव! मेरी सहाय करो, अंगदके किंकर जाहि विभीषणके मंदिर श्रीराम विराजे हुते तहां ले गए श्रीराम दूरसे देख याहि नारद जान सिंहासनसे उठे अति आदर किया किंकरनिसे कहा इनसे दूर जावो। नारद श्रीराम लक्ष्मणको देख अति हर्षित भया आशीर्वाद देकर इनके समीप बैठा तब राम बोले अहो क्षुल्लक। कहांसे आए बहुत दिननिविषै आए हो नीके हो तब नारदने कहा तिहारी माता कष्टके सागरविषै मग्न है सो वार्ता कहिवेको तिहारे निकट शीघ्र ही आया हूं, कौशल्या माता महासती जिनमती निरन्तर अश्रुपात डारे है अर तुम विना महा दुःखी है जैसे सिंही अपने बालक बिना व्याकुल होय तैसे अति व्याकुल भई विलाप करै है जाका विलाप सुन पाषाण भी द्रवीभूत होय तुमसे पुत्र माताके आज्ञाकारी अर तुम होते माता ऐसी कष्टरूप रहै यह आश्चर्यकी बात, वह महागुणवती सांझ सकारेविषै प्राणरहित होयगी जो तुम ताहि न देखोगे तो तिहारे वियोगरूप सूर्यकर सूक जायगी तातैं मोपै कृपा करो उठो ताहि शीघ्रही देखो या संसार

विषै माता समान पदार्थ नाहीं तिहारी दोनों मातानिके दुख करके केकई सुप्रभा सबही दुखी हैं कौशल्या सुमित्रा दोनों मरणतुल्य होय रही हैं आहार नींद सब गई रात दिन आंसू डारे हैं तिनकी स्थिरता तिहारे दर्शनहीसे होय जैसे कुरुचि विलाप करै तैसे विलाप करे हैं अर सिर अर उर हाथोंसे कूटे हैं दोनों हो माता तिहारे वियोगरूप अग्निकी ज्वाला कर जरे हैं तिहारे दर्शनरूप अमृतकी धारकर उनका आताप निवारो ऐसे नारदके वचन सुन दोनों भाई मातानिके दुःख कर अति दुखी भए शस्त्र डार दिये अर रुदन करने लगे तब सकल विद्याधरनिने धीर्य बंधाया। राम लक्ष्मण नारदसे कहते भये—अहो नारद! तुमने हमारा बड़ा उपकार किया हम दुराचारी माताको भूल गये सो तुम स्मरण कराया तुम समान हमारे और वल्लभ नाहीं वही मनुष्य महा पुण्यवान हैं जो माताके विनयविषै तिष्ठे हैं दास भए माताकी सेवा करें जे माताका उपकार विस्मरण करै हैं वे महा कृतघ्न हैं या भांति माताके स्नेहकर व्याकुल भया है चित्त जिनका दोनों भाई नारदकी अति प्रशंसा करते भये॥

अथानन्तर—श्रीराम लक्ष्मणने ताही समय अतिविभ्रम चित्त होय विभीषणको बुलाया अर भामंडल सुग्रीवादि पास बैठे हैं। दोऊ भाई विभीषणसे कहते भए—हे राजन्! इन्द्रके भवन समान तेरा भवन तहां हम दिन जाते न जाने अब हमारे माताके दर्शनकी अति वांछा है हमारे अंग अति तापरूप हैं सो माताके दर्शनरूप अमृतकर शांतताको प्राप्त होवें। अब अयोध्या नगरीके देखवेका हमारा मन प्रवरता है वह अयोध्या भी हमारी दूजी माता है तब विभीषण कहता भया—हे स्वामिन्! जो आज्ञा करोगे सो ही होयगा अबारही अयोध्याको दूत पठावें जो तिहारी शुभवार्ता मातावोंको कहें अर तिहारे आगमकी वार्ता कहें जो मातावोंके सुख होय अर तुम कृपाकर षोडश दिन यहां ही विराजो। हे शरणागत प्रतिपालक मोसे कृपा करो ऐसा कह अपना मस्तक रामके चरण तले धरा तब राम लक्ष्मणने प्रमाण करी॥ भले भले विद्याधर अयोध्याको पठाये सो दोनों माता महलपर चढ़ी दक्षिणदिशाकी ओर देख रही हुतीं सो दूरसे विद्याधरोंको देख कौशल्या सुमित्रासे कहती भई—हे सुमित्रा। देख दोय यह विद्याधर पवनके प्रेरे मेघ

स्वरूप विचित्र गति जान जे विवेकी हैं ते दया दान विनय वैराग्य जप तप इन्द्रियोंका निरोध शांतता आत्मध्यान तथा शास्त्राध्ययनकर आत्मकल्याण करैं ऐसे मय मुनिके वचन सुन राजा श्रीवर्धित अर पोदनापुरके वहुतलोक शांतचित्त होय जिनधर्मका आराधन करते भये यह मय मुनिका माहात्म्य जे चित्त लगाय पढ़ैं सुनैं तिनको वैरियोंकी पीड़ा न होय सिंहव्याघ्रादि न हतैं सर्पादि न डसैं ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषा वचनिकाविषै मयमुनिका माहात्म्य वर्णन करनेवाला अस्सीवा पर्व पूर्ण भया ॥ ८० ॥

अथानन्तर—लक्ष्मणके वड़े भाई श्रीरामचन्द्र स्वर्गलोक समान लक्ष्मीको मध्यलोकविषै भोगते भए चन्द्र सूर्य समान है कांति जाकी अर इनकी माता कौशल्या भर्तार अर पुत्रके वियोगरूप अग्निकी ज्वालाकर शोकको प्राप्त भया है शरीर जाका महलके सातवें खण वैठी सखियोंकर मंडित अति उदास आंसुनिकर पूर्ण हैं नेत्र जाके जैसे गायको वच्छेका वियोग होय अर वह व्याकुल होय ता समान पुत्रके स्नेहविषै तत्पर तीव्र शोकके सागरविषै मग्न दशों दिशाकी ओर देखै महलके शिखरविषै तिष्ठता जो काग ताहि कहे है हे वायस ! मेरा पुत्र राम आवे तो तोहि खीरका भोजन दूं ऐसे वचन कहकर विलाप करे अश्रुपातकर किया है चातुर्मास जिसने हाय वत्स तू कहां गया मैं तुझे निरन्तर सुखसे लड़ाया था तेरे विदेश भ्रमणकी प्रीति कहांसे उपजी कहा पल्लव समान तेरे चरण कोमल कठोर पंथविषै पीड़ा न पावें ? महा गहन वनविषै किसो वृक्षके तले विश्राम करता होयगा ? मैं मन्दभागिनी अत्यन्त दुःखी मुझे तजकर तू भाई लक्ष्मण सहित किस दिशाको गया ? या भांति माता विलाप करै ता समय नारद ऋषि आकाशके मार्गविषै आय पृथिवीमें प्रसिद्ध सदा अढाई द्वीपविषै भ्रमते ही रहैं सिरपर जटा शुक्ल वस्त्र पहिरे उसको समीप आवता जान कौशल्याने उठकर सन्मुख जाय नारदका आदरसहित सिंहासन बिछाय सन्मान किया तब नारद उसे अश्रुपात सहित शोकवन्ती देख पूछते भये हे कल्याणरूपिणी ! तुम ऐसी दुःखरूप क्यों ? तुमको दुःखका कारण क्या ? सुकौशल महाराजकी पुत्री, लोकविषै प्रसिद्ध राजा दशरथकी राणी प्रशंसा योग्य श्रीरामचन्द्र मनुष्यनिविषै रत्न तिनकी माता महासुन्दर लक्षणकी धरणहारी तुमको कौनने

रुलाई ? जो तिहारी आज्ञा न माने सो दुरात्मा है अवार ही ताका राजा दशरथ निग्रह करें तब नारदको माता कहती भई—हे देवर्षे ! तुम हमारे घरका वृत्तांत नहीं जानो हो तातें कहो हो अर तिहारा जैसा वात्सल्य या वरसूं था सो तुम विस्मरण किया कठोर चित्त होय गए अब यहां आवना ही तजा अब तुम बात ही न बूझो । हे भ्रमणप्रिय ! बहुत दिननिविषे आए । तब नारदने कहा—हे माता ! धातुकी खंड द्वीपविषे पूर्व विदेह क्षेत्र वहां सुरेंद्ररमण नामा नगर वहां भगवान तीर्थंकर देवका जन्मकल्याण भया सो इन्द्रादिक देव आये, भगवानको सुमेरुगिरि ले गये अद्भुत विभूतिकर जन्माभिषेक किया सो देवाधिदेव सब पापके नाशनहारे तिनका अभिषेक में देख्या जाहि देखे धर्मकी बढ़वारी होय वहां देवनिने आनन्दसे नृत्य किया । श्रीजिनेंद्रके दर्शनविषे अनुरागरूप है बुद्धि मेरी सो महामनोहर धातकी खंडविषे तेईस वर्ष मैंने सुखसे व्य-तीत किये, तुम मेरी मातासमान सो तुमको चितार या जम्बूद्वीपके भरतक्षेत्रविषे आया अब कोइयक दिन इस मंडलहीविषे रहूंगा अब मोहि सब वृत्तांत कहो तिहारे दर्शनको आया हूं तब कौशल्याने सब वृत्तांत कहा । भामंडलका यहां आवना अर विद्याधरनिका यहां आवना अर भामण्डलको विद्याधरनिका राज्य अर राजा दशरथका अनेक राजानि सहित वैराग्य अर रामचन्द्रका सीता सहित अर लक्ष्मणके लार विदेशको गमन बहुरि सीताका वियोग सुग्रीवादिकका रामसे मिलाप रावणसे युद्ध लंकेशको शक्तिका लक्ष्मणके ल-गना बहुरि द्रोणमेघकी कन्याका तहां गमन एती खबर हमको है बहुरि क्या भया सो खबर नाहीं, ऐसा कह महा दुःखित होय अश्रुपात डारती भई अर विलाप किया—हाय ! हाय ! पुत्र तू कहां गया, शीघ्र अब मोसे वचन कह में शोकके सागरविषे मग्न ताहि निकास में पुण्यहीन तेरे मुख देखे विना महा दुःखरूप अग्निसे दाहको प्राप्त भई याहि साता देवो अर सीता बाला पापी रावण तोहि वन्दीगृहविषे डारी महा दुः-खसे तिष्ठती होयगी निर्दई रावणने लक्ष्मणके शक्ति लगाई सो न जानिए जीवे है के नाहीं । हाय दोनों दुर्लभ पुत्र हो, हाय सीता ! तू पतिव्रता काहे दुःखको प्राप्त भई ? यह वृत्तांत कौशल्याके मुख सुन नारद अति खेदखिन्न भया वीणा धरतीविषे डार दई अर अचेत होय गया बहुरि सचेत होय कहता भया हे माता !

तुल्य शीघ्र आवे हैं सो हे श्रावके। अवश्य कल्याणको वार्ता कहेंगे यह दोनो भाइयोके भेजे आवे हैं तब सुमित्राने कही तुम जो कहो हो सो हो होय। यह वार्ता दोऊ मातानिमें होय है तब ही विद्याधर पुष्पनिकी वर्षा करते आकाशसे उतरे अतिहर्षके भरे भरतके निकट आये राजा भरत अति प्रमोदका भरा इनका वहुत सन्मान करता भया, अर यह प्रणामकर अपने योग्य आसनपर वेठे, अति सुन्दर है चित्त जिनका यथावत् वृत्तांत कहते भए हे प्रभु! राम लक्ष्मणने रावणको हता विभीषणको लंकाका राज्य दिया श्रीरामको वलभद्रपद अर लक्ष्मणको नारायणपद प्राप्त भया, चक्ररत्न हाथमें आया तिन दोनों भाइयोंके तीन खंडका परम उत्कृष्ट स्वामित्व भया, रावणके पुत्र इन्द्रजीत मेघनाद भाई कुम्भकर्ण जो बन्दीगृहमें थे सो श्रीरामने छोड़े तिन्होंने जिनदीक्षा धर निर्वाण पद पाया अर गरुडेंद्र श्रीराम लक्ष्मणसे देशभूषण कुलभूषण मुनिके उपसर्ग निवारिवे कर प्रसन्न भए थे सो जब रावणतें युद्ध भया उसही समय सिंहवाण अर गरुड़वाण दिये, इस भांति राम लक्ष्मणके प्रतापके समाचार सुन भरत भूप अति प्रसन्न भए तांबूल सुगन्धादिक तिनको दिये अर तिनको लेकर दोनों माताओंके समीप भरत गया, राम लक्ष्मणको माता पुत्रोंकी विभूतिकी वार्ता विद्याधरोंके मुखसे सुन आनन्दको प्राप्त भईं उसही समय आकाशके माग हजारों वाहन विद्यामई स्वर्ण रत्नादिकके भरे आए अर मेघमालाके समान विद्याधरनिके समूह अयोध्यामें आये जैसे देवनिके समूह आवें ते आकाशविषै तिष्ठे नगरविषैं नाना रत्नमई वृष्टि करते भए रत्ननिके उद्योत कर दशों दिशाविषै प्रकाश भया, अयोध्याविषै एक एक गृहस्थके घर पर्वत समान सुवर्ण रत्ननिकी राशि करी अयोध्याके निवासी समस्त लोक ऐसे अति लक्ष्मीवान किये मानों स्वर्गके देव ही हैं अर नगरविषै यह घोषणा फेरी कि जाके जिस वस्तुकी इच्छा होय सो लेवो तव सव लोक आय कर कहते भए हमारे घरमें अटूट भण्डार भरे हैं किसी वस्तुकी वांछा नाही अयोध्याविषै दरिद्रताका नाश भया, राम लक्ष्मणके प्रतापरूप सूर्य कर फूल गए हैं मुख कमल जिनके ऐसे अयोध्याके नर नारी प्रशंसा करते भए अर अनेक सिलावट विद्याधर महा चतुर आय कर रत्न स्वर्णमई मंदिर वनावने भए अर भगवानके चैत्यालय महा-

मनोग्य अनेक वनाये मानों विंध्याचलके शिखर ही हैं हजारनि स्तम्भनि कर मंडित नाना प्रकारके मंडप रचे अर रत्ननि कर जड़ित तिनके द्वार रचे तिनमंदिरनि पर ध्वजानिकी पंक्ति फरहरे हैं तोरणनिके समूह तिन कर शोभायमान जिन मंदिर रचे गिरिनिके शिखर समान ऊंचे तिनविषे महा उत्सव होते भए अनेक आश्चर्य कर भरी अयोध्या होती भई लंकाका शोभाको जीतनहारी संगीतकी ध्वनि कर दशों दिशा शब्दायमान भईं, कारी घटा समान वन उपवन सोहते भए तिन विषैं नाना प्रकारके फल फूल तिनपर भ्रमर गुञ्जार करे हैं समस्त दिशानिविषे वन उपवन ऐसे सोहते भए मानों नन्दन वन ही है अयोध्या नगरी वारह योजन लम्बी नव योजन चौड़ी अतिशोभायमान भासती भई सोलह दिनमें विद्याधर शिलावटनिने ऐसी वनाई जाका सौ वर्षतक वर्णन भी न किया जाय तहां वापीनिके रत्न स्वर्णके सिवा अर सरोवरनिके रत्नके तट तिन विषे कमल फूल रहे हैं, ग्रीष्म विषे सदा भरपूरहो रहें तिनके तट भगवानके मन्दिर अर वृक्षनिकी पंक्ति अति शोभाको धरैं स्वर्गपुरी समान नगरी निरमापी सो वलभद्र नारायण लंकासे अयोध्याकी ओर गमनको उद्यमी भये गौतमस्वामी कहे हैं—हे श्रेणिक ! तिस दिनसे नारदके मुखसे राम लक्ष्मणने मातानिकी वार्ता सुनी ताही दिनसे सब वात भूल गए दोनों मातानिहीका ध्यान करते भये पूर्व जन्मके पुण्य कर ऐसे पुत्र पाइये पुण्यके प्रभावकर सर्व वस्तुको सिद्धि होवे है पुण्य कर क्या न होय इसलिये हे प्राणी हो। पुण्यविषै तत्पर होवो जाकर शोकरूप सूर्यका आताप न होय ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषा वचनिकाविषै अयोध्या नगरीका वर्णन करनेवाला इक्यासीवा पर्व पूर्ण भया ॥ ८१ ॥

अथानन्तर—सूर्यके उदय होतेही वलभद्र नारायण पुष्पक नामा विमान विषै चढ़कर अयोध्याको गमन करते भए नाना प्रकारके वाहननिपर आरूढ़ विद्याधरनिके अधिपति राम लक्ष्मणकी सेवाविषै तत्पर परिवार सहित संग चाले, छत्र अर ध्वजानि कर रोकी है सूर्यकी प्रभा जिन्होंने आकाशमें गमन करते दूरसे पृथिवीको देखते जाय हैं पृथिवी गिरि नगर वन उपवनादिक कर शोभित लवण समुद्रको उलंघकर विद्याधर हर्षके भरे लीलासहित गमन करते आगे आये। कैसा है लवण समुद्र ? नाना प्रकारके जलचरजीवनिके

समूहकर भरा है। रामके समीप सीता सती अनेक गुणनिकर पूर्ण मानों साक्षात् लक्ष्मीही है सो सुमेरु पर्वतको देखकर रामको पूछती भई हे नाथ। यह जंबूद्वीपके मध्य अत्यन्त मनोग्य स्वर्ण कमल समान कहा दीखे है? तब राम कहते भये हे देवि। यह सुमेरु पर्वत है। जहां देवाधिदेव श्रीमुनिसुव्रतनाथका जन्माभिषेक इन्द्रादिक देवनिने किया। कैसे हैं देव? भगवानके पांचों कल्याणकविषै जिनके अति हर्ष है यह सुमेरु रत्नमई ऊंचे शिखरनिकर शोभित जगत विषै प्रसिद्ध है अर बहुरि आगे आयकर कहते भये यह दण्डक वन है जहां लंकापतिने तुमको हरा अर अपना अकाज किया या वनविषै चारण मुनिको हमने पारणा कराया था याके मध्य यह सुन्दर नदी है अर हे सुलोचने! यह वंशस्थल पर्वत जहां देशभूषण कुलभूषणका दर्शन किया ताही समय मुनिनिको केवल उपजा अर हे सौभाग्यवती कल्याणरूपिणी! यह बालखिल्यका नगर जहां लक्ष्मणने कल्याणमाला पाई अर यह दशांग नगर जहां रूपवतीका पिता वज्रकर्ण परम श्रावक राज्य करै बहुरि जानकी पृथिवीपतिको पूछती भई—हे कान्ते! यह नगरी कौन जहां विमान समान घर इन्द्रपुरीसे अधिक शोभा? अबतक यह पुरी मैंने कबहुं न देखी ऐसे जानकीके वचन सुन जानकीनाथ अवलोकन कर कहते भये—हे प्रिये! यह अयोध्यापुरी विद्याधर सिलवटोंने बनाई है लकापुरीकी ज्योतिकी जीतनहारी।

बहुरि आगे आए तब रामका विमान सूर्यके विमान समान देख भरत महा हस्तीपर चढ़ अति आनन्दके भरे इन्द्र समान परम विभूतिकर युक्त सन्मुख आये सर्वदिशा विमाननिकर आच्छादित देखी भरतको आवता देख राम लक्ष्मणने पुष्पक विमान भूमिविषै उतारा भरत गजसे उतर निकट आया स्नेहका भरा दोऊ भाइनिको प्रणामकर अर्घपाद्य करता भया अर ये दोनों भाई विमानसे उतर भरतसे मिले उरसे लगाय लिया परस्पर कुशल वार्ता पूछी बहुरि भरतको पुष्पक विमानविषै चढ़ाय लिया। अर अयोध्याविषै प्रवेश किया। अयोध्या रामके आगमनकर अति सिंगारी है अर नाना प्रकारकी ध्वजा फरहरे हैं नाना प्रकारके विमान अर नाना प्रकारके रथ अनेक हाथी अनेक घोड़े तिनकर मार्गमें अवकाश

नाहीं अनेक प्रकार वादित्रनिके समूह बाजते भए, शंख झांझ भेरी ढोल धूकल इत्यादि वादित्रोंका कहां लग वर्णन करिये महा मधुर शब्द होते भये ऐसे ही वादित्रोंके शब्द ऐसी ही तुरंगोंकी हींस ऐसी ही गजोंकी गर्जना सामन्तोंके अट्टहास मायामई सिंह व्याघ्रादिकके शब्द ऐसे ही वीणा बांसुरीनिके शब्द तिनकर दशों दिशा व्याप्त भईं बन्दीजन विरद बखाने हैं, नृत्यकारिणी नृत्य करे हैं भांड नकल करे हैं नट कला करे हैं, सूर्यके रथ समान रथ तिनके चित्राकार विद्याधर मनुष्य पशुनिके नाना शब्द सो कहां लग वर्णन करिए ? विद्याधरनिके अधिपतिनिने परमशोभा करी दोनो भाई महा मनोहर अयोध्याविषै प्रवेश करते भये अयोध्या नगरी स्वर्गपुरी समान राम लक्ष्मण इन्द्र प्रतीन्द्रसमान समस्त विद्याधर देव समान तिनका कहां लग वर्णन करिए श्रीरामचन्द्रको देख प्रजारूप समुद्रविषै आनन्दकी ध्वनि बढती भई भले २ पुरुष अर्घ्यपाद्य करते भए सोई तरंग भई पंडविषै जगतकर पूज्यमान दोनों वीर महाधीर तिनको समस्त जन आशीर्वाद देते भए—हे देव ! जयवन्त होवो वृद्धिको प्राप्त होवो चिरंजीव होवो नांदो विरदो। या भांति असीस देते भये अर अति ऊंचे विमान समान मन्दिर तिनके शिखरविषै तिष्ठती सुन्दरी फूल गए हैं नेत्रकमल जिनके वे मोतिनिके अक्षत डारती भईं, सम्पूर्ण पूर्णमासीके चन्द्रमा समान राम कमलनेत्र अर वर्षाकी घटा समान लक्ष्मण शुभ लक्षण तिनके देखवेको नर नारी आवते भये अर समस्त कार्य तज झरोखोंविषै बैठी नारी जन निरखे हैं सो मानो कमलोंके वन फूल रहे हैं अर स्त्रीनिके परस्पर संघट्टकर मोतिनिके हार टूटे सो मानो मोतिनिकी वर्षा होय है स्त्रीनिके मुखसे ऐसी ध्वनि निकसे ये श्रीराम जाके समीप राजा जनककी पुत्री सीता बैठी जाकी माता राणी विदेहा है अर श्रीरामने साहसगति विद्याधर मारा वह सुग्रीवका आकार धर आया हुता विद्याधरनिविषै दैत्य कहावे अर यह लक्ष्मण रामका लघुवीर इन्द्र तुल्य पराक्रम जाने लंकेश्वरको चक्रकर हता, अर यह सुग्रीव जाने रामसे मित्रता करी अर भामण्डल सीताका भाई जिसको जन्मसे ही देव हर ले गया बहुरि दयाकर छोड़ा सो राजा चन्द्रगतिके पला आकाशसे वनविषै गिरा राजाने लेकर राणी पुष्पवतीको सौंपा देवोने काननविषै कुण्डल प-

हराकर आकाशसे डाला सो कुण्डलकी ज्योतिकर चन्द्रसमान भासा तातै भामण्डल नाम धरा अर राजा चन्द्रोदयका पुत्र विराधित अर यह पवनका पुत्र हनूमान कपिध्वज या भांति आश्चर्यकरयुक्त नगरकी नारी वार्ता करती भईं ॥

अथानन्तर—राम लक्ष्मण राजमहलविषै पधारे सो मंदिरके शिखर तिष्ठती दोनों माता पुत्रनिके स्नेहविषै तत्पर जिनके स्तनसे दुग्ध झरे महा गुणनिकी धरणहारी कौशिल्या सुमित्रा अर केकई सुप्रभा चारो माता मंगलविषै उद्यमी पुत्रोंके समीप आईं राम लक्ष्मण पुष्पक विमानसे उतर मातावोंसे मिले माताओंको देख हर्षको प्राप्त भए कमल समान नेत्र दोनों भाई लोकपालसमान हाथ जोड़ नम्रीभूत होय अपनी स्त्रियों सहित माताको प्रणाम करते भए वे चारों ही माता अनेक प्रकार असीस देती भईं तिनका असीस कल्याणका करणहारा है अर चारों ही माता राम लक्ष्मणको उरसे लगाय परम सुखको प्राप्त भईं उनका सुख वेही जानें कहिवेविषै न आवे बारम्बार उरसे लगाय सिरपर हाथ धरती भईं, आनन्दके अश्रुपात कर पूर्ण हैं नेत्र जिनके परस्पर माता पुत्र कुशल क्षेम सुख दुःखकी वार्ता पूछ परम संतोषको प्राप्त भए, माता मनोरथ करती थी सो हे श्रेणिक! वांछासे अधिक मनोरथ पूर्ण भए वे माता योद्धावोंकी जन-
न । साधुवोंकी भक्त जिन धर्मविषै अनुरक्त सुन्दरचित्त बेटावोंकी वहू सैकडो तिनको देख चारो ही
षित भईं अपने योधा पुत्र तिनके प्रभाव कर पूर्व पुण्यके उदय कर अति महिमा संयुक्त जगत्-
राम लक्ष्मणका सागरां पर्यन्त कंटक रहित पृथिवीविषै एकछत्र राज्य भया सवपर यथेष्ट
ते भये राम लक्ष्मणका अयोध्याविषै आगमन अर मातावोंसे तथा भाइयोंसे मिलाप। यह अ-
पढ़ै सुनै शुद्ध है बुद्धि जाकी सो पुरुष मनवांछित संपदाको पावै पूर्ण पुण्य उपार्जै शुभमति एक
दृढ़ होय भवनकी शुद्धतासे करै तो अतिप्रतापको प्राप्त होय पृथिवीमें सूर्य समान प्रकाशको करै
त तज नियमादिक धारण करो ॥

षेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषा वचनिकाविषै अयोध्याविषै राम लक्ष्मणका आगमन वर्णन करनेवाला बयासीवां पर्व पूर्ण भया॥८२॥

अथानन्तर—राजा श्रेणिक नमस्कार कर गौतम गणधरको पूछता भया, हे देव! श्रीराम लक्ष्मणकी लक्ष्मीका विस्तार सुननेकी मेरे अभिलाषा है तब गौतमस्वामी कहते भये हे श्रेणिक! राम लक्ष्मण भरत शत्रुघन इनका वर्णन कौन कर सके तथापि संक्षेपसे कहे हैं राम लक्ष्मणके विभवका वर्णन हाथी घरके वियालीस लाख अर रथ एते ही घोड़े नौ कोटि, पयादे व्यालीस कोटि अर तीन खंडके देव विद्याधर सेवक रामके रत्न चार हल मूसल रत्नमाला गदा अर लक्ष्मणके सात संख चक्र गदा खड्ग दण्ड नागशय्या कौस्तुभमणि राम लक्ष्मण दोनों ही वीर महाधीर धनुषधारी अर तिनका घर लक्ष्मीका निवास इन्द्रके भवन तुल्य ऊंचे दरवाजे अर चतुश्शाल नामा कोट महापर्वतके शिखर समान ऊंचा अर वैजन्ती नामा सभा महामनोज्ञ अर कुटुम्बनामा अत्यन्त उत्तंग दशोंदिशाके अवलोकनका गृह अर विंध्याचल पर्वत सारिखा वर्धमानक नामा नृत्य देखवेका गृह अर अनेक सामग्री सहित कार्य करनेका गृह अर कूकडेके अंडे समान महा अद्भुत शीतकालविषै सोवनेका गर्भगृह अर ग्रीष्मविषै दुपहरीके विराजवेका धारा मंडपगृह इकथम्भा महामनोहर, अर राणियोंके घर रत्नमई महासुन्दर दोनों भाइयोंकी सोयवेकी शय्या जिनके सिंहोंके आकार पाये पद्मराग मणिके अति सुन्दर अम्भोदकाण्ड नामा विजुरीकासा चमत्कार धरे वर्षा ऋतुविषै पौढवेका महल अर महाश्रेष्ठ उगते सूर्य समान सिंहासन अर चन्द्रमा तुल्य उज्ज्वल चमर अर निशाकर समान उज्ज्वल छत्र अर महा सुन्दर विषमोचक नाम पावड़ी तिनके प्रभावसे सुखसे आकाशविषै गमन करें अर अमोलिक वस्त्र अर महा दिव्य आभरण अभेद्य बक्तर महा मनोहर मणियोंके कुण्डल अर अमोघगदा खड्ग कनक बाण अनेक शस्त्र महा सुन्दर महारणके जीतनहारे, अर पचास लाख हल कोटिसे अधिक गाय अक्षय भण्डार अर अयोध्या आदि अनेक नगर जिनविषै न्यायकी प्रवृत्ति प्रजा सब सुखी संपदाकर पूर्ण अर महा मनोहर वन उपवन नानाप्रकार फल पुष्पोंकर शोभित अर महा सुन्दर स्वर्ण रत्नमई सिवाणोंकर शोभित क्रीड़ा करवे योग्य वापिका अर पुर तथा ग्रामोंविषै लोक अति सुखी जहां महल अति सुन्दर अर किसाणोंको किसी भांतिका दुःख नाहीं जिनके गाय भैंसोंके समूह सर्व भांतिके सुख अर

लोकपालो जैसे सामंत अर इन्द्र तुल्य विभवके धरणहारे महा तेजवन्त अनेक राजा सेवक अर रामके स्त्री आठ हजार अर लक्ष्मणके स्त्री देवांगना समान सोलह हजार जिनके समस्त सामग्री समस्त उपकरण मनवांछित सुखके देनहारी श्रीरामने भगवानके हजारां चैत्यालय कराये जैसे हरिषेण चक्रवर्तीने कराये थे वे भव्यजीव सदा पूजित महा ऋद्धिके निवास देशग्राम नगर वन गृह गली सर्व ठौर २ जिनमन्दिर करावते भये सदा सर्वत्र धर्मकी कथा लोक अतिसुखी सुकौशल देशके मध्य इन्द्रपुरी तुल्य अयोध्या जहां अति उतंग जिनमंदिर जिनका वर्णन किया न जाय अर क्रीड़ा करवेके पर्वत मानों देवोंके क्रीड़ा करवेके पर्वत हैं प्रकाशकर मंडित मानो शरदके वादर ही है अयोध्याका कोट अति उतंग समुद्रकी वेदिका तुल्य महाशिखर कर शोभित स्वर्ण रत्नोंका समूह अपनी किरणों कर प्रकाश किया है आकाशविषै जिसने जिसकी शोभा मनसे भी अगोचर निश्चयसेती यह अयोध्या नगरी पवित्र मनुष्योंकर भरी सदा ही मनोग्य हुती अब श्रीरामचन्द्रने अति शोभित करी जैसें कोई स्वर्ग सुनिये है जहां महा सम्पदा है मानों रामलक्ष्मण स्वर्गसे आये सो मानों सर्व सम्पदा ले आये आगे अयोध्या हुती तातैं रामके पधारे अति शोभायमान भई पुण्यहीन जीवोंको जहांका निवास दुर्लभ अपने शरीर कर तथा शुभ लोकोंकर तथा स्त्री धनादि कर रामचन्द्रने स्वर्ग तुल्य करी, सर्व ठौर रामका यश परन्तु सीताके पूर्व कर्मके दोषकर मूढ लोग यह अपवाद करें देखो विद्याधरोंका नाथ रावण उसने सीता हरी सो राम बहुरि ल्याये अर गृहविषै राखी यह कहा योग्य ? राम महा ज्ञानी बड़े कुलीन चक्री महा शूरवीर तिनके घरविषै जो यह रीति तो और लोकोंकी क्या बात इस भांति सब जन वार्ता करें ॥ स्वर्ग लोकको लज्जा उपजावे ऐसी अयोध्यापुरी तहां भरत इन्द्रसमान भोगनिकर भी रति न मानते भये, अनेक स्त्रीनिके प्राणवल्लभ सो निरन्तर राज्य लक्ष्मीसे उदास सदा भोगोंकी निन्दा ही करें। भरतका मंदिर अनेक मन्दिरनिकर मण्डित नाना प्रकारके रत्ननिकर निर्मापित मोतिनिकी मालाकर शोभित फूल रहे हैं वृक्ष जहां अनेक आश्चर्यका भरा सब ऋतुके विलासकर युक्त जहां वीण मृदङ्गादिक अनेक वादित्र वाजैं देवांगना समान अति सुन्दर स्त्री जनोंकर पूर्ण जाके चौगिरद

मदोन्मत्त हाथी गाजें श्रेष्ठ तुरङ्ग हींसें गीत नृत्य वादित्रनिकर महामनोहर रत्नोंके उद्योतकर प्रकाशरूप महारमणीक क्रीड़ाका स्थानक जहां देवोंको रुचि उपजै परन्तु भरत संसारसे भय भीत अति उदास उसे तहां रुचि नाहीं जैसे पारधीकर भयभीत जो मृग सो किसी ठौर विश्राम न लहै भरत ऐसा विचार करै कि मैं यह मनुष्य देह महाकष्टसे पाई सो पानीके बुदबुदावत् क्षणभंगुर अर यह यौवन भोगोंके पुञ्ज समान अति असार दोषोंका भरा अर ये भोग अति विरस इनविषै सुख नाही यह जीतव्य स्वप्न समान अर कुटुम्बका सम्बन्ध जैसे वृक्षनिपर पक्षियोंका मिलाप रात्रिको होय प्रभात ही दशों दिशाको उड़ जावें ऐसा जान जो मोक्षका कारण धर्म न करै सो जराकर जर्जरा होय शोकरूप अग्निकर जरै यह नव यौवन मूढ़ोंको वल्लभ याविषै कौन विवेकी राग करे कदाचित न करै यह अपवादके समूहका निवास सन्ध्याके उद्योत समान विनश्वर अर यह शरीररूपी यन्त्र नाना व्याधिके समूहका घर पिताके वीर्य माताके रुधिरसे उपजा याविषै कहा रति, जैसे इंधनकर अग्नि तृप्त न होय अर समुद्र जलसे तृप्त न होय तैसे इन्द्रियनिके विषयनिकर तृप्ति न होय यह विषय अनादिसे अनन्तकाल सेए परन्तु तृप्तिकारी नाहीं यह मूढ़ जीव कामविषै आसक्त अपना भला बुरा न जाने पतंग समान विषयरूप अग्निविषै पड़ पापो महा भयङ्कर दुःखको प्राप्त होय यह स्त्रीनिके कुच मांसके पिण्ड महावीभत्स गलगंड समान तिनविषै कहा रति, अर स्त्रीनिका मुखरूप विल दंतरूप कीड़ोंकर भरा तांबूलके रसकर लाल छुरीके घाव समान ताविषै कहा शोभा अर स्त्रीनिकी चेष्टा वायुविकार समान विरूप उन्मादकर उपजी उसविषै कहा प्रीति अर भोगरोग समान हैं महा खेदरूप दुःखके निवास इनविषै कहा विलास अर यह गीत वादित्रोंके नाद रुदन समान तिनविषै कहा प्रीति, रुदनकर भी महल गुम्मट गाजे अर गानकर भी गाजें। नारियोंका शरीर मल मूत्रादिकर पूर्ण, चर्मकर वेष्ठित याके सेवनविषै कहा सुख होय विष्टाके कुम्भ तिनका संयोग अतिवीभत्स अति लज्जाकारी महा दुःखरूप नारियोंके भोग उनविषै मूढ़ सुख माने देवनिके भोग इच्छा उत्पन्न होते ही पूर्ण होंय तिनकर भी जीव तृप्त न भया तो मनुष्योंके भोगोंकर कहा तृप्त होय जैसे डाभकी अणीपर जो ओसकी बून्द

तैसे राज्यके भारका धरण- ताकर कहां तृषा बुझे अर जसे इंधनका वेचनहारा सिरपर भार लाय दुःखी होय तैसे राज्यके भारका धरण-
हारा दुखी होय हमारे बड़ोंविषै एक राजा सौदास उत्तम भोजनकर तृप्त न भया अर पापी अभक्ष्यका
आहारकर राज्यभ्रष्ट भया जैसे गंगाके प्रवाहविषै मांसका लोभी काग मृतक हाथीके शरीरको चूथता
तृप्त न भया समुद्रविषै डूब मुवा तैसे यह विषयाभिलाषी भवसमुद्रविषै डूबे हैं यह लोक मींडक समान
मोहरूप कीचविषै मग्न लोभरूप सर्पके ग्रसे नरकविषै पड़े हैं ऐसे चिन्तवन करते शांतचित्त भरतको कैयक
दिवस अति विरससे वीते जैसे सिंह महा समर्थ पींजरेविषै पड़ा खेदखिन्न रहे, ताके वनविषै जायवेकी
इच्छा तैसे भरत महाराजके महाव्रत धारिवेकी इच्छा, सो घरविषै सदा उदास ही रहे महाव्रत सर्व दुः-
खका नाशक, एक दिवस वह शांतचित्त घर तजिवेको उद्यमी भया तब केकईके कहेसे राम लक्ष्मणने
थांभा, अर महा स्नेहकर कहते भये हे भाई ! पिता वैराग्यको प्राप्त भये तब तोहि पृथिवीका राज्य दिया
सिंहासनपर बैठाया सो तू हमारा सर्व रघुवंशियोंका स्वामी है लोकका पालनकर, यह सुदर्शनचक्र यह
देव अर विद्याधर तेरी आज्ञाविषै हैं या धराको नारी समान भोग, मैं तेरे सिरपर चन्द्रमा समान उज्व-
ल छत्र लिये खड़ा रहूं, अर भाई शत्रुघ्न चमर ढारे अर लक्ष्मण सा सुन्दर तेरे मंत्री अर तू हमारा
वचन न मानेगा तो मैं बहुरि विदेश उठ जाऊंगा मृगोंकी नाईं वन उपवनविषै रहूंगा, मैं तो राक्षसोंका
तिलक जो रावण ताहि जीत तेरे दर्शनके अर्थ आया अब तू निःकंटक राज्य कर पीछे तेरे साथ मैं भी मु-
निव्रत आदरूंगा इस भांति महा शुभचित्त श्रीराम भाई भरतसे कहते भए।

तब भरत महानिःस्पृह विषय रूप विषसे अतिविरक्त कहता भया—हे देव ! मैं राज्य सम्पदा तुरन्त
ही तजा चाहूं जिसको तजकर शूरवीर पुरुष मोक्ष प्राप्त भये हे नरेन्द्र ! अर्थ काम महा दुःखके कारण
जीवों के शत्रु महापुरुषों कर निन्द्य हैं तिनको मूढ़ जन सेवे हैं, हे हलायुध ! यह क्षणभंगुर भोग तिन
में मेरी तृष्णा नाहीं यद्यपि स्वर्ग लोक समान भोग तुम्हारे प्रसाद कर अपने घरमें हैं तथापि मुझे रुचि
नहीं यह संसार सागर महा भयानक है जहां मृत्यु रूप पातालकुण्ड महा विषम है अर जन्मरूप क-

ल्लोल उठे हैं अर राग द्वेषरूप नाना प्रकारके भयङ्कर जलचर हैं अर रति अरति रूप चार जल कर पूर्ण हैं जहां शुभ अशुभ रूप चोर विचरे हैं सो मैं मुनिव्रत रूप जहाजमें बैठकर संसार समुद्रको तिरा चाहूं हूं। हे राजेन्द्र! मैं नाना प्रकार योनिविषै अनन्त काल जन्म मरण किए नरक निगोदविषै अनन्त कष्ट सहे गर्भवासादिविषै खेदखिन्न भया, यह वचन भरतके सुन बड़े बड़े राजा आंखोंसूं आंसू डारते भए महा आश्चर्यको प्राप्त होय गदगद वाणीसे कहते भये हे महाराज! पिताका वचन पालो कैयक दिन राज्य करो अर तुम इस राज्यलक्ष्मीको चञ्चल जान उदास भये हो तो कैयक दिन पीछे मुनि हूजियो अबार तो तुम्हारे बड़े भाई आये हैं तिनको साता देवो तब भरतने कही मैं तो पिताके वचन प्रमाण बहुत दिन राज्य संपदा भोगी प्रजाके दुःख हरे पुत्रकी न्याईं प्रजाका पालन किया दान पूजा आदि गृहस्थके धर्म आदरे साधुवोंकी सेवा करी अब जो पिताने किया सो मैं किया चाहूं हूं अब तुम इस वस्तुकी अनुमोदना क्यों न करो प्रशंसायोग्य वस्तुविषै कहा विवाद? हे श्रीराम! हे लक्ष्मण! तुमने महा भयंकर युद्धमें शत्रुवोंको जीत अगले बलभद्र वासुदेवकी न्याईं लक्ष्मी उपार्जी सो तुम्हारी लक्ष्मी अर मनुष्योंकीसी नाहीं तथापि राजलक्ष्मी मुझे न रुचे तृप्त न करे जैसे गंगादि नदियां समुद्रको तृप्त न करैं इसलिये मैं तत्त्वज्ञानके मार्गविषै प्रवर्तूंगा ऐसा कहकर अत्यन्त विरक्त होय राम लक्ष्मणको विना पूछेही वैराग्यको उठा जैसे आगे भरतचक्रवर्ती उठे। यह मनोहर चालका चलन हारा मुनिराजके निकट जायबेको उद्यमी भया तब अतिस्नेह कर लक्ष्मणने थांभा भरतके करपल्लव ग्रहे लक्ष्मण खड़ा ताही समय माता केकई आंसू डारती आई अर रामकी आज्ञासे दोऊ भाईनिकी राणी सबही आईं लक्ष्मी समान है रूप जिनके अर पवनकर चञ्चल जो कमल ता समान हैं नेत्र जिनके, आय भरतको थांभती भईं तिनके नाम-

सीता, उर्वशी, भानुमती, विशल्यासुन्दरी, रौद्र, रत्नवती, लक्ष्मी, गुणमती, बंधुमती, सुभद्रा, कुबेरा, नलकूबरा, कल्याणमाला, चन्दना, मदनोत्सवा, मनोरमा, प्रियनन्दा, चन्द्रकांता, कलावती, रत्नस्थली, सरस्वती, श्रीकांता, गुणसागरी, पद्मावती इत्यादि सब आईं जिनके रूप गुणका वर्णन किया न जाय मनको

हैं आकार जिनके दिव्य वस्त्र अर आभूषण पहिरे बड़े कुलविषै उपजो सत्यवादिनी शीलवन्ती पुण्यकी भू-
मिका समस्त कलाविषै निपुण सो भरतके चौगिर्द खड़ी मानों चारों ओर कमलोंका वन ही फूल रहा है
भरतका चित्त राजसंपदाविषै लगायवेको उद्यमी अति आदर कर भरतको मनोहर वचन कहती भई कि
हे देवर! हमारा कहा मानों कृपा करो आवो सरोवरोंविषै जलक्रीड़ा करो अर चिन्ता तजो जा वात कर
तिहारे बड़े भाइयोंको खेद न होय सो करो अर तिहारी माताके खेद न होय सो करो अर हम तिहारी
भावज हैं सो हमारी विनती अवश्य मानिये तुम विवेकी विनयवान हो ऐसा कह भरतको सरोवरपर ले
गई भरतका चित्त जलक्रीड़ासे विरक्त यह सव सरोवरविषै पैठीं वह विनयकर संयुक्त सरोवरके तीर
ऊभा ऐसा सोहै मानों गिरराज ही है अर वे स्निग्ध सुगन्ध सुन्दर वस्तुनि कर याके शरीरका विलेपन क-
रती भईं अर नाना प्रकार जलकेलि करती भई यह उत्तम चेष्टाका धारक काहूपर जल न डारता भया
वहुरि निर्मल जलसे स्नान कर सरोवरके तीर जे जिनमन्दिर वहां भगवानकी पूजा करता भया उस समय
त्रैलोक्य मण्डन हाथी कारी घटा समान है आकार जाका सो गजवन्धन तुड़ाय भयंकर शब्द करता निज
आवासथको निकसा अपने मद झरवे कर चौमासे कैसा दिन करता संता मेघ गर्जना समान ताका गाज
सुनकर अयोध्यापुरीके लोग भयकर कम्पायन भए, अर अन्य हाथियोंके महावत अपने अपने हाथीको ले
दूर भागे अर त्रैलोक्यमण्डन गिरि समान नगरका दरवाजा भङ्ग कर जहां भरत पूजा करते थे वहां
आया तव राम लक्ष्मणकी समस्त राणी भयकर कम्पायमान होय भरतके शरण आईं, अर हाथी भरतके
नजदीक आया तव समस्त लोक हाहाकार करते भए अर इनकी माता अति विह्वल भई विलाप करती
भई पुत्रके स्नेहविषै तत्पर महा शंकावान भई अर राम लक्ष्मण गज वन्धनविषै प्रवीण गजके पकड़नेको
उद्यमी भए गजराज महा प्रवल सामान्य जनोंसे देखा न जाय महा भयंकर शब्द करता अति तेजवान
नाग फांस कर भी रोका न जाय अर महा शोभायमान कमल नयन भरत निर्भय स्त्रियोंके आगे तिनके
वचायवेको खड़े सो हाथी भरतको देखकर पूर्वभव चितार शांतचित्त भया अपनी सूण्ड शिथिल कर महा

विनयवान भया भरतके आगे ऊभा भरत याको मधुर वाणीकर कहते भए अहो गज ! तू कौन कारण कर क्रोधको प्राप्त भया ऐसे भरतके वचन सुन अत्यन्त शांतचित्त निश्चल भया सौम्य है मुख जाका ऊभा भरतकी ओर देखे है भरत महाशूरवीर शरणागत प्रतिपालक ऐसे सोहैं जैसे स्वर्गविषे देव सोहैं हाथीको जन्मान्तरका ज्ञान भया सो समस्त विकारसे रहित होय गया दीर्घ निश्वास डारे हाथी मनविषे विचारे है यह भरत मेरा परममित्र है छठे स्वर्गविषे हम दोनों एकत्र थे यह तो पुण्यके प्रसाद कर वहांसे चयकर उत्तम पुरुष भया अर मैंने कर्मके योगसे तिर्यञ्चकी योनि पाई काय अकार्यके विवेकसे रहित महानिंद्य पशुका जन्म है मैं कौन योगसे हाथी भया धिक्कार इस जन्मको अब वृथा क्या शोच ऐसा उपाय करूं जिससे आत्मकल्याण होय अर बहुरि संसार भ्रमण न करूं। शोच किए कहा ? अब सर्व प्रकार उद्यमी होय भव दुःखसे छूटिवेका उपाय करूं चितारे हैं पूर्व भव जाने गजेंद्र अत्यन्त विरक्त पाप चेष्टासे परांगमुख होय पुण्यके उपार्जनविषें एकाग्रचित्त भया। यह कथा गौतमस्वामी राजा श्रेणिकसे कहे हैं—हे राजन् ! पूर्व जीवने अशुभ कर्म किए वे संतापको उपजावें तातें हे प्राणी हो ! अशुभ कर्मको तज दुर्गतिके गमनसे छूटो जैसे सूर्य होते नेत्रवान मार्गविषै न अटके तैसे जिनधर्मके होते विवेकी कुमार्गविषै न पड़ें प्रथम अधर्मको तज धर्मको आदरें बहुरि शुभ अशुभसे निवृत्त होय आत्म धर्मसे निर्वाणको प्राप्त होवें ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषा वचनिकाविषै त्रिलोकमंडन हाथीको जातिस्मरण होय उपशान्त होनेका वर्णन करनेवाला तियासीवां पर्व पूर्ण भया ॥ ८३ ॥

अथानन्तर—वह गजराज महा विनयवान धर्मध्यानका चिन्तवन करता रामलक्ष्मणने देखा अर धीरे धीरे इसके समीप आए कारी घटा समान है आकार जाका सो मिष्ट वचन बोले पकड़ा अर निकटवर्ती लोकोंकी आज्ञा कर गजको सर्व आभूषण पहिराए हाथी शांतचित्त भया तब नगरके लोगोंकी आकुलता मिटी हाथी ऐसा प्रबल जाकी प्रचण्ड गति विद्याधरोंके अधिपतिसे न रुके, समस्त नगर विषे लोक हाथीकी कथा करैं यह त्रैलोक्यमंडन रावणका पाट हस्ती है याके बल समान और नाहीं राम लक्ष्मणने पकड़ा वि-

कार चेष्टाको प्राप्त भया था अब शांतचित्त भया सो लोकोंके महा पुण्यका उदय है अर घने जीवोंकी दीर्घ आयु भरत अर सीता विशल्या हाथीपर चढ़े बड़ी विभूतिसे नगरविषै आये अर अद्भुत वस्त्राभरणसे शोभित समस्त राणी नाना प्रकारके वाहनोंपर चढ़ी भरतको ले नगरविषै आईं, अर शत्रुघ्न भाई अश्वपर आरूढ़ महा विभूति सहित महा तेजस्वी, भरतके हाथी आगे नाना प्रकारके वादित्रोंके शब्द होते नंदन वन समान बनसे नगरविषै आए, जैसे देव सुरपुरविषै आवैं, भरत हाथीसे उतर भोजनशालाविषै गए साधुवोंको भोजन देय मित्र बांधवादि सहित भोजन किया, अर भावजोंको भोजन कराया फिर लोक अपने अपने स्थानको गए समस्त लोक आश्चर्यको प्राप्त भए, हाथी रूठा फिर भरतके समीप खड़ा होय रहा सो सबोंको आश्चर्य उपजा गौतमगणधर राजा श्रेणिकसे कहे हैं कि हे राजन्! हाथीके समस्त महावत रामलक्ष्मण पै आय प्रणामकर कहते भए कि हे देव! आज गजराजको चौथा दिन है कछु खाय न पीवे न निद्रा करे सर्व चेष्टा तज निश्चल ऊभा है जिस दिन क्रोध किया था अर शांत भया उसही दिनसे ध्यानारूढ़ निश्चल वरते है हम नाना प्रकारके स्तोत्रों कर स्तुति करे हैं अनेक प्रिय वचन कहे हैं तथापि आहार पानी न लेय है हमारे वचन कान न धरे अपनी सूण्डको दांतोंविषै लिये मुद्रित लोचन ऊभा है मानों चित्रामका गज है जिसे देखे लोकोंको ऐसा भ्रम होय है कि यह कृत्रिम गज है अथवा सांचा गज है। हम प्रिय वचन कहकर आहार दिया चाहे हैं सो न लेय नाना प्रकारके गजोंके योग्य सुन्दर आहार उसे न रुचे चिन्तवान सा ऊभा है निश्वास डारे है समस्त शास्त्रोंके वेत्ता महा पंडित प्रसिद्ध गजवैद्योंके भी हाथ हाथीका रोग न आया गंधर्व नाना प्रकारके गीत गावे हैं सो न सुने अर नृत्यकारिणी नृत्य करे हैं सो न देखे पहिले नृत्य देखे था गीत सुने था अनेक चेष्टा करे था सो सब तजा नाना प्रकारके कौतुक होय हैं सो दृष्टि न धरे मंत्रविद्या औषधादिक अनेक उपाय किये सो न लगे आहार विहार निद्रा जलपानादिक सब तज हम अति विनती करे हैं सो न माने जैसे रूठे मित्रको अनेक प्रकार मनाइये सो न माने न जानिए इस हाथीके चित्तविषै कहा है काहू वस्तुसे काहू प्रकार रीझे नाहीं काहू वस्तुपर लुभावे नाहीं खिजाया संता क्रोध न करे चित्राम

कासा खड़ा है यह त्रैलोक्यमडन हाथी समस्त सेनाका शृङ्गार है जो आपको उपाय करना होय सो करो हमने हाथीका सब वृत्तांत आपसे निवेदन किया, तब लक्ष्मण गजराजकी चेष्टा सुन अति चिन्तावान भए मनमें विचारे हैं यह गजबन्धन तुड़ाय निसरा कौन प्रकार क्षमाको प्राप्त भया अर आहार पानी क्यों न लेय? दोनों भाई हाथीका शोच करते भये॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषा वचनिकाविषै त्रिलोकमडल हाथीका कथन वर्णन करनेवाला चौरासीवा पर्व पूर्ण भया॥ ८४॥

अथानन्तर—गौतमस्वामी राजा श्रेणिकसे कहे हैं, हे नराधिपते! ताही समय अनेक मुनिनि सहित देशभूषण कुलभूषण केवली जिनका वंशस्थल गिरि ऊपर राम लक्ष्मणने उपसर्ग निवारा हुता अर जिनकी सेवा करने कर गरुडेन्द्रने राम लक्ष्मणसे प्रसन्न होय उनको अनेक दिव्यशस्त्र दिये, जिनकर युद्ध में विजय पाई ते भगवान् केवली सुर असुरनिकर पूज्य लोक सिद्ध अयोध्याके नन्दनवन समान महेन्द्रोदय नामा वन विषै महा संघ सहित आय विराजे, तब राम लक्ष्मण भरत शत्रुघन दर्शनके अर्थ प्रभातही हाथिनि पर चढि जायवेको उद्यमी भये अर उपजा है जाति-स्मरण जाको ऐसा जो त्रैलोक्यमण्डन हाथी सो आगे आगे चला जाय है जहां वे दोनों केवली कल्याणके पर्वत तिष्ठे हैं तहां देवनि समान शुभचित्त नरोत्तम गये अर कौशल्या सुमित्रा केकई सुप्रभा यह चारों ही माता साधुभक्तिविषै तत्पर जिनशासनकी सेवक स्वर्गनिवासिनी देवीनि समान सैकड़ा राणीनिसे युक्त चलीं अर सुग्रीवादि समस्त विद्याधर महा विभूति संयुक्त चले, केवलीका स्थानक दूरहीतैं देख रामादिक हाथीतैं उतर आगे गए। दोनों हाथ जोड़ प्रणामकर पूजा करी, आप योग्यभूमिविषै विनयतैं बैठे तिनके वचन समाधानचित्त होय सुनते भए, ते वचन वैराग्यके मूल रागादिकके नाशक क्योंकि रागादिक संसारके कारण अर सम्यक्दर्शन ज्ञान चरित्र मोक्षके कारण हैं केवलीकी दिव्य ध्वनिविषै यह व्याख्यान भया। अणुव्रतरूप श्रावकका धर्म अर महाव्रत रूप यतिका धर्म यह दोनोंही कल्याणके कारण हैं यतिका धर्म साक्षात् निर्वाणका कारण अर श्रावकका धर्म परम्पराय मोक्षका कारण है गृहस्थका धर्म अल्पारम्भ अल्प परिग्रहको लिये कछु सुगम है अर यतिका

धर्म निरारम्भ निपरिग्रह अति कठिन महा शूर वीरनिहीतें सधे है यह लोक अनादिनिधन जाकी आदि अन्त नाहीं ताविषै यह प्राणी लोभकर मोहित नानाप्रकार कुयोनिविषै महादुःखको पावे हैं संसारका तारक धर्म ही है, यह धर्म नामा परम मित्र जीवोंका महा हितू है जिस धर्मका मूल जीवदयाकी महिमा कहिवे विषै न आवे ताके प्रसादसे प्राणी मनवांछित सुख पावे हैं धर्म ही पूज्य है जे धर्मका साधन करें ते ही पंडित हैं यह दयामूल धर्म महाकल्याणका कारण जिनशासन विना अन्यत्र नाहीं जे प्राणी जिनप्रणीत धर्ममें लगें ते त्रैलोक्यके अग्र जो परम धाम है वहां प्राप्त भये यह जिनधर्म परम दुर्लभ है. या धर्मका मुख्य-फल तो मोक्षही है अर गौणफल स्वर्गविषै इन्द्रपद अर पाताल विषै नागेन्द्रपद पृथिवी विषै चक्रवर्त्यादि नरेन्द्रपद यह फल हैं इस भांति केवलीने धर्मका निरूपण किया, तब प्रस्ताव पाय लक्ष्मण पूछते भए हे प्रभो ! त्रैलोक्यमण्डन हाथी गजबन्धन उपाडि क्रोधको प्राप्त भया बहुरि तत्काल शांत भावको प्राप्त भया सो कौन कारण, तब केवली देशभूषण कहते भये, प्रथम तो यह लोकनिकी भीड़ देख मदोन्मत्तता थकी क्षोभको प्राप्त भया बहुरि भरतको देख पूर्वभव चितार शांतभावको प्राप्त भया। चतुर्थ कालके आदि या अयोध्याविषै नाभिराजाके मरु देवीके गर्भ विषै भगवान् ऋषभ उपजे पूर्वभवविषै षोडश कारण भावना भाय त्रैलोक्यको आनन्दका कारण तीर्थंकर पद उपार्जा। पृथिवीविषै प्रगट भये, इन्द्रादिक देवनिने जिनके गर्भ अर जन्मकल्याणक किये सो भगवान् पुरुषोत्तम तीन लोक कर नमस्कार करवे योग्य पृथिवीरूप प-त्नीके पति भये कैसी हैं पृथिवी रूप पत्नी विन्ध्याचल गिरि वेई हैं स्तन जाके अर समुद्र हैं कटिमेखला जाकी सो बहुत दिन पृथिवीका राज्य किया तिनके गुण केवली विना अर कोई जानवे समर्थ नाहीं जिनका ऐश्वर्य देख इन्द्रादिक देव आश्चर्यको प्राप्त भए। एक समय नीलांजसा नामा अप्सरा नृत्य करती हुती सो विलाय गई ताहि देख प्रतिबुद्ध भए ते भगवान् स्वयं बुद्ध महामहेश्वर तिनकी लौकांतिक देवनिने स्तुति करी ते जगत्गुरु भरत पुत्रको राज्य देय वैरागी भए। इन्द्रादिक देवनिने तप कल्याणक किया, तिलक नामा उद्यानविषै महाव्रत धरे तबसे यह स्थान प्रयाग कहाया भगवान्ने एक हजार वर्ष तप किया सुमेरु

समान अचल सर्वपरिग्रहके त्यागी महातप करते भए तिनके संग चार हजार राजा निकसे ते परीषह न सह सकने कर व्रत भ्रष्ट भये स्वेच्छा विहारी होय वन फलादिक भखते भये तिनके मध्य मारीच दण्डीका भेष धरता भया ताके प्रसंगसे सूर्योदय चन्द्रोदय राजा सुप्रभके पुत्रके राणी प्रल्हादनाकी कुक्षीविषे उपजे ते भी चारित्र भ्रष्ट भए मारीचके मार्ग लागे कुधर्मके आचरणसे चतुर्गति संसारमें भ्रमे अनेक भवों विषै जन्म मरण किये वहुरि चन्द्रोदयका जीव कर्मके उदयसे नागपुरनामा नगरविषै राजा हरिपातेके राणी मनोलताके गर्भविषै उपजा कुलंकर नाम कहाया वहुरि राज्य पाया अर सूर्योदयका जीव अनेक भव भ्रमण कर उसही नगरविषै विश्वा नामा ब्राह्मण जिसके अग्निकुण्ड नामा स्त्री उसके श्रुतिरति नामा पुत्र भया सो पुरोहित पूर्व जन्मके स्नेहसे राजा कुलंकरको अतिप्रिय भया, एक दिन राजा कुलंकर तापसियोंके समीप जाय था सो मार्गविषै अभिनन्दन नामा मुनिका दर्शन भया। वे मुनि अवधिज्ञानी सर्व लोकके हितु तिन्होंने राजासे कही तेरा दादा सर्प भया सो तपस्वियोंके काष्ठमध्य तिष्ठे है सो तपसी काष्ट विदारेंगे सो तू रक्षा करियो तव यह तहां गया जो मुनिने कही थी त्योंही दृष्टि पड़ी इसने सर्प वचाया अर तापसियोंका मार्ग हिंसा रूप जाना तिनसे उदास भया मुनिव्रत धारिवेको उद्यम किया तव श्रुतिरति पुरोहित पापकर्मीने कही—हे राजन्! तिहारे कुलविषै वेदोक्त धर्म चला आया है अर तापसहो तिहारे गुरु हैं तातैं तू राजा हरिपतिका पुत्र है तो वेदमार्गका ही आचरण कर, जिनमार्ग तम आचरे पुत्रको राज देय वेदोक्त विधिकर तू तापसका व्रत धर, मैं तेरे साथ तप धरूंगा, या भांति पापी पुरोहित मूढमतिने कुलङ्करका मन जिनशासनसे फेरा अर कुलङ्करकी स्त्री श्रीदामा सो पापिनी परपुरुषासक्त उसने विचारी कि मेरो कुक्रिया राजाने जानी इसलिए तप धारे है सो न जानिये तपधरै कै न धरै कदाचित् मोहि मारे तातैं मैं हो उसे मारूं तव उसने विष देयकर राजा अर पुरोहित दोनों मारे सो मरकर निकुन्जिया नामा वनमें पशुघातके पापसे दोनों सुआ भए वहुरि मीडक भए मूसा भए मोर भए सर्प भये कूकर भये कर्मरूप पवनके प्रेरे तिर्यंच योनिविषै भ्रमे वहुरि पुरोहित श्रुतिरतिका जीव हस्ती भया अर राजा कुलंकरका जीव मीडक भया सो हाथीके पगतले

दवकर मुवा, वहुरि मींडक भया सो सूके सरोवरविषै कागने भषा सो कूकड़ा भया हाथी मर मार्जार भया उसने कुक्कुट भषा कुलङ्करका जीव तीन जन्म कुकड़ा भया सो पुरोहितके जीव मार्जारने भषा वहुरि ये दोनों मूसा मार्जार मच्छ भए सो धीवरने जालविषै पकड़ कुहाड़ेनिसे काटे सो मुवे दोनों मरकर राजगृही नगरविषै वह्वासनामा ब्राह्मण उसकी उलका नामा स्त्रीके पुत्र भये पुरोहितके जीवका नाम विनोद राजा कुलङ्करके जीवका नाम रमण सो महा दरिद्री अर विद्यारहित तव रमणने विचारी देशान्तर जाय विद्या पढ़ूं तव घरसे निकसा पृथिवीविषै भ्रमता चारों वेद अर वेदोंके अंग पढ़े वहुरि राजगृही नगरी आय पहुंचा भाईके दर्शनकी अभिलाषा सो नगरके वाहिर सूर्य अस्त होय गया आकाशविषै मेघपटलके योगसे अति अन्धकार भया सो जीर्ण उद्यानके मध्य एक यक्षका मन्दिर तहां वैठा अर याके भाई विनोदकी समिधा नामा स्त्री सो महा कुशीला एक अशोकदत्त नामा पुरुषसे आसक्त सो तासे यक्षके मन्दिरका संकेत किया हुता सो अशोकदत्तको तो मार्गविषै कोटपालके किंकरने पकड़ा अर विनोद खड्ग हाथविषै लिए अशोकदत्तके मारवेको यक्षके मन्दिर आया सो जारके भूलेसे खड्गसे भाई रमणको मारा अन्धकारविषै दृष्टि न पड़ी सो रमण मुवा विनोद घर गया वहुरि विनोद भी मुवा सो दोनों अनेक भव धारते भए॥ वहुरि विनोदका जीव तो सालवन वनविषै आरण भैंसा भया अर रमणका जीव अंधा रीछ भया सो दोनों दावानलविषै जरे, मरकर गिरिवनविषै भील भए वहुरि मरकर हिरण भए सो भीलने जीवते पकड़े दोनों अति सुन्दर सो तीसरा नारायण स्वयंभूति श्रीविमलनाथजीके दर्शन जायकर पीछा आवे था उसने दोनों हिरण लिए अर जिनमंदिरके समीप राखे, सो राजद्वारसे इनको मनवांछित आहार मिले अर मुनिनिके दर्शन करें जिनवाणीका श्रवण करें तिनविषै रमणका जीव जो मृग हुता सो समाधि मरणकर स्वर्गलोक गया अर विनोदका जीव जो मृग हुता वह आर्तध्यानसे तिर्यंचगतिविषै भ्रमा वहुरि जम्बूद्वीपके भरतक्षेत्रविषै कंपिल्या नगर तहां धनदत्त नामा वणिक वाईस कोटि दीनारका स्वामी भया। चार टांक स्वर्णकी एक दीनार होय है ता वणिकके वाणी नामा स्त्री उसके गर्भ विषै दूजे भाई रमणका

जीव मृग पर्यायसे देव भया था सो भूषण नाम पुत्र भया निमित्तज्ञानीने इसके पितासे कहा कि यह स-र्वथा जिन दीक्षा धारेगा सुनकर पिता चितावान भया पिताका पुत्रसे अधिक प्रेम इसको घरहीविषै राखै बाहिर निकसने न देय सब सामग्री याके घरविषै विद्यमान यह भूषण सुन्दर स्त्रीनिकर सेव्यमान वस्त्र आहार सुगन्धादि विलेपन कर घरविषै सुखसे रहे याको सूर्यके उदय अस्तकी गम्य नानो प्रकारके नाहीं याके पिताने सैकड़ों मनोरथ कर यह पुत्र पाया अर एकही पुत्र सो पूर्व जन्मके स्नेहसे पिताके प्राणसे भी प्यारा, पिता तो विनोदका जीव अर पुत्र रमणका जीव आगे दोनों भाई हुते सो या जन्मविषै पिता पुत्र भए ॥ संसारकी विचित्रगति है ये प्राणी नटवत नृत्य करे हैं संसारका चरित्र स्वप्नके राज्य समान असार है एक समय यह धनदत्तका पुत्र भूषण प्रभात समय दुन्दुभी शब्द सुन आकाशविषै देवनिका आगमन देख प्रतिबुद्ध भया। यह स्वभाव हीसे कोमलचित्त धर्मके आचारविषै तत्पर महाहर्षका भरा दोनों हाथ जोड़ नमस्कार करता, श्रीधर केवलीकी वन्दनाको शीघ्र ही जाय था सो सिवाणसे उतरे सर्पने डसा, देह तज महेंद्र नाम जो चौथा स्वर्ग तहां देव भया तहांसे चयकर पहुकर द्वीपविषै चन्द्रादित्य नामा नगर तहां राजा प्रकाशयश ताके राणी माधवी उसके जगद्युति नामा पुत्र भया। यौवनके उदयविषै राज्यलक्ष्मी पाई परन्तु संसारसे अति उदास राजविषै चित्त नाही सो याके वृद्ध मन्त्रिनिने कही यह राज तिहारे कुलक्रमसे चला आवै है सो पालो तिहारे राज्यसे प्रजा सुखरूप होयगी सो मन्त्रिनिके हठसे यह राज्य करै राज्य-विषै तिष्ठता यह साधूनिको सेवा करै सो मुनि दानके प्रभावसे देवकुरु भोगभूमि गया तहांसे ईशान नाम दूजा स्वर्ग तहां देव भया चार सागर दोय पल्य देवलोकके सुख भोग देवांगनानिकर मण्डित नाना प्रकारके भोग भोग तहांसे चया सो जम्बूद्वीपके पश्चिम विदेह मध्य अचल नामा चक्रवर्तीके रत्न नाम राणीके अभिराम नामा पुत्र भया सो महागुणनिका समूह अति सुन्दर जाहि देख सर्व लोकको आनन्द होय सो बाल अवस्था हीसे अति विरक्त जिनदीक्षा धारा चाहे अर पिता चाहे यह घरविषै रहे तीन ह-जार राणी इसे परणाई सो वे नाना प्रकारके चरित्र करैं परन्तु यह विषय सुखको विष समान गिने केवल

मुनि होयवेकी इच्छा, अतिशांतचित्त परन्तु पिता घरसे निकसने न देय यह महाभाग्य महा शीलवान म-
हागुणवान महात्यागी स्त्रियोंका अनुराग नाहीं याको ते स्त्री भांति भांतिके वचनकर अनुराग उपजावें अति
यत्नकर सेवा करें परन्तु याको संसारकी माया गर्तरूप भासै जैसे गर्तमें पड़ा जो गज ताके पकड़नहारे म-
नुष्य नाना भांति ललचावें तथापि गजको गर्त न रुचै ऐसे याहि जगत्‌की माया न रुचै यह परम शांत-
चित्त पिताके निरोधसे अति उदास भया घरविषै रहै तिन स्त्रिनिके मध्य प्राप्त हुवा तीव्र असिधारा व्रत पालै
स्त्रीनिके मध्य रहना अर शील पालना तिनसे संसर्ग न करना ताका नाम असिधारा व्रत कहिए मोतिनिके
हार बाजूबन्द मुकुटादि अनेक आभूषण पहिरे तथापि आभूषणसे अनुराग नाहीं यह महा भाग्य सिंहा-
सनपर बैठा निरन्तर स्त्रीनिको जिनधर्मको प्रशंसाका उपदेश देय त्रैलोक्यविषै जिनधर्म समान और धर्म
नाहीं ये जीव अनादिकालसे संसार वनविषै भ्रमण करे हैं सो कोई पुण्य कर्मके योगसे जीवोंको मनुष्य
देहकी प्राप्ति होय है यह बात जानता संता कौन मनुष्य संसार कूप विषै पड़े अथवा कौन विवेकी वि-
षको पीवै अथवा गिरिके शिखरपर कौन बुद्धिमान निद्रा करै अथवा मणिकी वांछाकर कौन पंडित नाग-
का मस्तक हाथसे स्पर्शे, विनाशीक ये काम भोग तिनविषै ज्ञानीको कैसे अनुराग उपजे एक जिनधर्मका
अनुराग ही महा प्रशंसा योग्य मोक्षके सुखका कारण है यह जीवोंका जीतव्य अत्यन्त चञ्चल याविषै
स्थिरता कहां जो अवांछक निस्पृहचित्त हैं तिनके राज्य काज अर इन्द्रियोंके भोगोंसे कौन काम इत्या-
दिक परमार्थके उपदेशरूप याकी वाणी सुनकर स्त्री भी शांतचित्त भई नाना प्रकारके नियम धारती भईं।
यह शीलवान तिनको भी शीलविषै दृढ़चित्त करता भया यह राजकुमार अपने शरीरविषै भी रागरहित
एकांतर उपवास अथवा बेला तेला आदि अनेक उपवासोंकर कर्म कलंक खिपावता भया नाना प्रकारके
तपकर शरीरको शोखता भया जैसे ग्रीष्मका सूर्य जलको शोखे समाधानरूप है मन जाका, मन इन्द्रिय-
निके जीतवेको समर्थ यह सम्यक् दृष्टि निश्चल चित्त महाधीर वीर चौसठ हजार वर्ष लग दुर्धर तप क-
रता भया बहुरि समाधि मरणकर पंचनमोकार स्मरण करता देह त्यागकर छठा जो ब्रह्मोत्तर स्वर्ग तहां

महाऋद्धिका धारक देव भया अर जो भूषणके भवविषै याका पिता धनदत्त सेठ था विनोद ब्राह्मणका जीव सो मोहके योगतैं अनेक कुयोनिविषै भ्रमणकर जम्बूद्वीप भरतक्षेत्र तहां वाद्म नाम नगर ता विषै अग्निमुख नामा ब्राह्मण ताके शकुना नामा स्त्री मृदुमतिनामा पुत्र भया सो नाम तो मृदुमति परन्तु कठोर चित्त अतिदुष्ट महा जुवारी अविनयी अनेक अपराधोंका भरा दुराचारी सो लोकोंके उराहनेसे माता पिताने घरसे निकासा सो पृथिवीविषै परिभ्रमण करता पोदनापुर गया, किसीके घर तृषातुर पानी पीवनेको पैठा सो एक ब्राह्मणी आंसू डारती हुई इसे शीतल जल प्यावतो भई यह शीतल मिष्टजलसे तृप्त हो ब्राह्मणीको पूछता भया तू कौन कारण रुदन करे है तब ताने कही तेरे आकार एक मेरा पुत्र था सो मैं कठोर चित्त होय क्रोधकर घरसे निकासा सो तैंने भ्रमण करते कहूं देखा होय तो कह, नील कमल समान तो सारिखा ही है, तब यह आंसू डार कहता भया—हे मात। तू रुदन तज वह मैं ही हू तोहि देखे बहुत दिन भये तातैं मोहि नाहीं पहिचाने है तु विश्वास गह मैं तेरा पुत्र हूं तब वह पुत्र जान राखती भई, अर मोहके योगतैं ताके स्तनोंसे दुग्ध झरा, यह मृदुमति तेजस्वी रूपवान् स्त्रीनिके मनका हरणहारा धूर्तोंका शिरोमणि जुवाविषै सदा जीतै बहुत चतुर अनेक कला जानै काम भोगविषै आसक्त, एक वसन्तमाला नामा वेश्या सो ताके अति वल्लभ अर याके माता पिताने यह काढ़ा हुता सो इसके पीछे वे अति लक्ष्मीको प्राप्त भये पिता कुण्डलादिक अनेक भूषणकर मण्डित अर माता कांचीदामादिक अनेक आभरणोंकर शोभित सुखसे तिष्ठे अर एक दिन यह मृदुमति संसाक नगरविषै राजमन्दिरविषै चोरीको गया सो राजा नन्दीवर्धन शशांक मुख स्वामीके मुख धर्मोपदेश सुन विरक्तचित्त भया था सो अपनी राणीसे कहे था कि हे देवि। मैं मोक्ष सुखका देनहारा मुनिके मुख परमधर्म सुना। ये इन्द्रियनके विषय विषसमान दारुण हैं इनके फल नरक निगोद हैं सो मैं जैनेश्वरी दीक्षा धरूंगा तुम शोक मत करियो या भांति स्त्रीको शिक्षा देता हुता सो मृदुमति चोरने यह वचन सुन अपने मनविषै विचारी देखो यह राजऋद्धि तज मुनिव्रत धारे है अर मैं पापी चोरीकर पराया द्रव्य हरूं हूं, धिक्कार मोको ऐसे विचारकर नि-

र्मलचित्त होय सांसारिक विषय भोगोंसे उदासचित्त भया स्वामी चन्द्रमुखके समीप सर्व परिग्रहका त्या- गकर जिनदीक्षा आदरी शास्त्रोक्त महादुर्धर तप करता महाक्षमावान् महाप्रासुक आहार लेता भया ॥

अथानन्तर—दुर्गनाम गिरिके शिखर एक गुणनिधि नाम मुनि चार महीनेके उपवास धर तिष्ठे थे वे सुर असुर मनुष्यनिकर स्तुति करिवे योग्य महा ऋद्धिधारी चारण मुनि थे सो चौमासेका नियम पूर्ण कर आकाशके मार्ग होय किसी तरफ चले गये, अर यह मृदुमति मुनि आहारके निमित्त दुर्ग नामा गिरिके समीप अलोक नाम नगर वहां आहारको आया, जूड़ा प्रमाण भूमिको निरखता जाय था सो नगरके लोकोंने जानी यह वे ही मुनि हैं जो चार महीना गिरिके शिखर रहे यह जानकर अति- भक्ति कर पूजा करी अर इसे अति मनोहर आहार दिया नगरके लोकोंने बहुत स्तुति करी इसने जानी गिरिपर चार महीना रहे तिनके भरोसे मेरी अधिक प्रशंसा होय है सो मानका भरा मौन पकड़ रहा, लोकोंसे यह न कही कि मैं और ही हूं अर वे मुनि अर थे, और गुरुके निकट मायाशल्य दूर न करी, प्रायश्चित्त न लिया तातैं तिर्यंचगतिका कारण भया तप बहुत किये थे सो पर्याय पूरी कर छठे देव लोक जहां अभिरामका जीव देव भया था वहां ही यह गया, पूर्वजन्मके स्नेहकर उसके याके अति स्नेह भया दोनों ही समान ऋद्धिके धारक अनेक देवांगनावों कर मंडित सुखके सागरविषै मग्न दोनों ही सागरों पर्यन्त सुखसे रमें सो अभिरामका जीव तो भरत भया अर यह मृदुमतिका जीव स्वर्गसे चय मायाचारके दोषसे इस जम्बूद्वीपके भरत क्षेत्रविषै उतंग है शिखर जिसके ऐसा जो निकुञ्ज नामा गिरि उसविषै महा गहन शल्लकी नामा वन वहां मेघकी घटा समान श्याम अतिसुन्दर गजराज भया, समुद्रकी गाज समान है गर्जना जिसकी अर पवन समान है शीघ्र गमन जिसका महा भयंकर आकारको धरे, अति मदोन्मत्त चन्द्रमा समान उज्ज्वल हैं दांत जिसके, गजराजोंके गुणोंकर मंडित विजयादिक महा हस्ती तिनके वंशविषै उपजा महाकांतिका धारक ऐरावत समान अति स्वच्छन्द सिंह व्याघ्रादिकका हननहारा महा वृक्षोंका उपारनहारा पर्वतोंके शिखरका ढाहनहारा विद्याधरोंकर न ग्रहा जाय तो भूमिगोचरियोंकी क्या

वात जाकी वासरो सिंहादिक निवास तज भाग जावें ऐसा प्रबल गजराज गिरिके वनविषै नाना प्रकार पल्लवका आहार करता मानसरोवर विषै क्रीड़ा करता अनेक गजों सहित विचरे कभी कैलाशविषै विलास करे कभी गंगाके मनोहर द्रहोंविषै क्रीडा करै अर अनेक वन गिरि नदी सरोवरोंविषे सुन्दर क्रीड़ा करे अर हजारों हथिनीनि सहित रमै, अनेक हाथियोंके समूहका शिरोमणि यथेष्ट विचरता ऐसा सोहै जैसा पक्षि-योंके समूह कर गरुड़ सोहे मेघ समान गर्जता मदके नीझरने तिनके झरनेका पर्वत सो एक दिन लंकेश्व-रने देखा, सो विद्याके पराक्रम कर महाउग्र उसने यह नीठि नीठि वश किया इसका त्रैलोक्यमण्डन नाम धरा सुन्दर है लक्षण जिसके जैसे स्वर्गविषै चिरकाल अनेक अप्सराओं सहित क्रीड़ा करी तैसे हाथियोंकी पर्यायविषै हजारों हथिनियोंसे क्रीड़ा करता भया यह कथा देशभूषण केवली राम लक्ष्मणसे कहे हैं कि ये जीव सर्व योनिविषै रति मान लेय है निश्चय विचारिए तो सर्व ही गति दुःख रूप हैं अभिरामका जीव भरत अर मृदुमतिका जीव गज सूर्योदय चन्द्रोदयके जन्मसे लेकर अनेक भवके मिलापी हैं तातैं भरतको देख पूर्व भव चितार गज उपशांतचित्त भया अर भरत भोगोंसे परांगमुख दूर भया है मोह जिसका अब मुनिपद लिया चाहै है इस ही भवसे निर्वाण प्राप्त होवेंगे वहुरि भव न धरेंगे श्रीऋषभदेवके समय यह दोनों सूर्योदय चन्द्रोदय नामा भाई थे, मारीचके भरमाये मिथ्यात्वका सेवन कर वहुत काल संसारविषै भ्रमण किया, त्रस स्थावर योनिविषै भ्रमे चन्द्रोदयका जीव कैयक भव पीछे राजा कुलङ्कर वहुरि कैयक भव पीछे रमण ब्राह्मण वहुरि कैयक भव धर, समाधि मरण करणहारा मृग भया, वहुरि स्वर्गविषै देव-वहुरि भूषण नामा वैश्यका पुत्र वहुरि स्वर्ग वहुरि जगद्द्युत नाम राजा वहांसे भोगभूमि वहुरि दूजे स्वर्ग देव वहांसे चयकर महाविदेह क्षेत्रविषै चक्रवर्ती पुत्र अभिराम भए वहांसे छठे स्वर्ग देव देवसे भरत नरेन्द्र सो चरमशरीरी है वहुरि देह न धारेंगे, अर सूर्योदयका जीव वहुत काल भ्रमण कर राजा कुलङ्करका श्रुतिनामा पुरोहित भया वहुरि अनेक जन्म लेय विनोमनामा विप्र भया, वहुरि अनेक जन्म लेय आर्तध्यानसे मरणहारा मृग भया वहुरि अनेक जन्म भ्रमण कर भूषणका पिता धनदत्त नामा वणिक

बहुरि अनेक जन्म धर मृदुमति नामा मुनि उसने अपनी प्रशंसा सुन राग किया मायाचार शल्य दूर न करी तपके प्रभावसे छठे स्वर्ग देव भया वहांसे चयकर त्रैलोक्य मण्डन हाथी अब श्रावकके व्रत धर देव होयगा ये भी निकट भव्य है। या भांति जीवोंकी गति आगति जान अर इन्द्रियोंके सुख विनाशीक जान या विषम संसार वनको तजकर ज्ञानी जीव धर्मविषै रमो, जे प्राणी मनुष्य देह पाय जिनभाषित धर्म नाहीं करे हैं वे अनन्त काल संसार भ्रमण करेंगे आत्मकल्याणसे दूर हैं तातैं जिनवरके मुखसे निकसा दयामई धर्म मोक्ष प्राप्त करनेको समर्थ याके तुल्य अर नाहीं मोह तिमिरका दूरकरणहारा जीती हैं सूर्यकी कांति जाने सो मन वचन कायकर अंगीकार करो जातैं निर्मल पद पावो ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषा वचनिकाविषै भरतके अर हाथीके पूर्वभव वर्णन करनेवाला पच्चासीवा पर्व पूर्ण भया ॥ ८५ ॥

अथानन्तर—श्रीदेशभूषण केवलीके वचन महा पवित्र मोह अन्धकारके हरणहारे संसार सागरके तारणहारे नानाप्रकारके दुःखके नाशक उनविषै भरत अर हाथीके अनेक भवका वर्णन सुनकर राम लक्ष्मण आदि सकल भव्यजन आश्चर्यको प्राप्त भए, सकल सभा चेष्टारहित चित्राम कैसी होय गई अर भरत नरेंद्र देवेंद्र समान है प्रभा जाकी अविनाशी पदके अर्थ मुनि होयवेकी है इच्छा जिसके गुरुवोंके चरणविषै नम्रीभूत है सीस जिसका महा शांतचित्त परम वैराग्यको प्राप्त हुवा तत्काल उठकर हाथ जोड़ केवलीको प्रणामकर महा मनोहर वचन कहता भया—हे नाथ! मैं संसार वनविषै अनन्त काल भ्रमण करता नाना प्रकार कुयोनियोंविषै संकट सहता दुःखी भया अब मैं संसार भ्रमरसे थका मुझे मुक्तिका कारण तिहारी दिगम्बरी दीक्षा देवो यह आशारूप चतुर्गति नदी मरणरूप उग्र तरंगको धरे उसविषै मैं डूबूं हूं सो मुझे हस्तावलम्बन दे निकासो ऐसा कह केवलीकी आज्ञा प्रमाण तजा है समस्त परिग्रह जिसने अपने हाथोंसे सिरके केश लोच किये परम सम्यक्तो महाव्रतको अंगीकार जिन दीक्षाधर दिगंबर भया तब आकाशविषै देव धन्य धन्य शब्द कहते भये अर कल्पवृक्षोंके फूलोंकी वर्षा करते भये ॥ हजारसे अधिक राजा भरतके अनुरागसे राजऋद्धि तज जिनेन्द्री दीक्षा धरते भये अर कैयक अल्पशक्ति हुते ते अणुव्रतधर श्रावक भये,

अर माता केकई पुत्रके वैराग्य सुन आंसुनिकी वर्षा करती भई व्याकुलचित्त होय दौड़ी सो भूमिविषै पड़ी, महामोहको प्राप्त भई पुत्रको प्रीतिकर मृतक समान होय गया है शरीर जाका सो चन्दनादिकके जलसे छांटी तो भी सचेत न भई, घनीवेर विषे सचेत भई जैसे वत्स विना गाय पुकारे तैसे विलाप करती भई, हाय पुत्र ! महा विनयवान गुणनिकी खान मनको आल्हादका कारण हाय तू कहां गया, हे अंगज ! मेरा अंग शोकके सागर विषै डूबै है सो थांभ, तो सारिखे पुत्र विना मैं दुःखके सागर विषै मग्न शोककी भरी कैसे जीऊंगी । हाय ! हाय ! यह कहा भया ? या भांति विलाप करती माता श्रीराम लक्ष्मणने संबोधकर विश्रामको प्राप्त करी, अति सुन्दर वचननिकर धीर्य वन्धाया—हे मात ! भरत महा विवेकी ज्ञानवान है तुम शोक तजो, हम कहा तिहारे पुत्र नाहीं, आज्ञाकारी किंकर हैं अर कौशल्या सुमित्रा सुप्रभाने बहुत संबोधा तब शोकरहित होय प्रतिबोधको प्राप्त भई । शुद्ध है मन जाका अपने अज्ञानकी बहुत निन्दा करती भई, धिक्कार या स्त्री पर्यायकूं यह पर्याय महा दोषनिकी खान है, अत्यन्त अशुचि वीभत्स नगरकी मोरी समान अब ऐसा उपाय करूं जाकर स्त्री पर्याय न धरूं, संसार समुद्रको तिरूं यह महा ज्ञानवान सदाही जिनशासनकी भक्तिवन्त हुती अब महा वैराग्यको प्राप्त होय पृथिवीमती आर्यिकाके समीप आर्यिका भाई, एक श्वेत वस्त्र धारा अर सर्व परिग्रह तज निर्मल सम्यक्तकूं धरती सर्व आरम्भ टारती भई । याके साथ तीनसै आर्यिका भईं । यह विवेकिनी परिग्रह तजकर वैराग्य धार ऐसी सोहती भई जैसी कलंकरहित चन्द्रमाकी कला मेघपटलरहित सोहै । श्रीदेशभूषण केवलीका उपदेश सुन अनेक मुनि भये अनेक आर्यिका भईं तिन कर पृथ्वी ऐसी सोहती भई जैसे कमलनिकर सरोवरी सोहै अर अनेक नर नारी पवित्र हैं चित्त जिनके तिन्होंने नाना प्रकारके नियम धर्म रूप श्रावक श्राविकाके व्रत धारे, यह युक्त ही है जो सूर्यके प्रकाश कर नेत्रवान् वस्तुका अवलोकन करे ही करै ।

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषा वचनिकाविषै भरत अर कैकयीका वैराग्य वर्णन करनेवाला छियासीवां पर्व पूर्ण भया ॥ ८६ ॥

अथानन्तर—त्रैलोक्यमण्डन हाथी अतिप्रशांतचित्त केवलीके निकट श्रावकके व्रत धारता भया सम्यक्दर्शन संयुक्त महाज्ञानी शुभक्रियाविषै उद्यमी हाथी धर्मविषै तत्पर होता भया, पन्द्रह पन्द्रह दिनके उपवास तथा मासोपवास करता भया, सूके पत्रनिकर पारणा करता भया, हाथी संसारसे भयभीत उत्तम चेष्टाविषै परायण लोकनिकर पूज्य महाविशुद्धताको धरे पृथिवीविषै विहार करता भया कभी पक्षोपवास कभी मासोपवासके पारण ग्रामादिकविषै जाय तो श्रावक ताहि अतिभक्तिकर शुद्ध अन्न शुद्ध जलकर पारणा करावते भए क्षीण होय गया है शरीर जाका वैराग्यरूप खूंटेसे बन्धा महा उग्र तप करता भया। यमनियम रूप है अंकुश जाके बहुरि महाउग्र तपका करणहारा गज शनैः शनैः आहारका त्याग कर अन्त संलेषणा धर शरीर तज छठे स्वर्ग देव होता भया, अनेक देवांगनाकर युक्त हारकुण्डलादिक आभूषणनिकर मण्डित पुण्यके प्रभावतैं देवगतिके सुख भोगता भया। छठे स्वर्गहीतैं आया हुता अर छठे ही स्वर्ग गया परम्पराय मोक्ष पावेगा, अर भरत महामुनि महा तपके धारक पृथिवीके गुरु निर्ग्रन्थ जाके शरीरका भी ममत्व नाहीं वे महाधीर जहां पिछिला दिन रहै तहां ही बैठ रहै जिनको एक स्थान न रहना, पवन सारिखे असंगी पृथिवीसमान क्षमाको धरें, जलसमान निर्मल अग्नि समान कर्म काष्ठके भस्म करनहारे अर आकाश समान अलेप चार आराधनाविषै उद्यमी तेरा प्रकार चारित्र पालते भए निर्ममत्व स्नेहके बन्धनतैं रहित मृगेन्द्र सारिखे निर्भय समुद्र समान गम्भीर सुमेरु समान निश्चल यथाजातरूपके धारक सत्यका वस्त्र पहरे क्षमारूप खड्गको धरे बाईस परीषहके जीतनहारे महातपस्वी, समान हैं शत्रु मित्र जिनके अर समान है सुख दुःख जिनके अर समान है तृणरत्न जिनके महा उत्कृष्ट मुनि शास्त्रोक्त मार्ग चलते भये, तपके प्रभावकर अनेक ऋद्धि उपजीं। सूई समान तीक्ष्ण तृणकी सली पावोंमें चुभे हैं परन्तु ताकी कछु सुध नाहीं अर शत्रुनिके स्थानक विषै उपसर्ग सहिवे निमित्त विहार करते भए तपके संयमके प्रभावकर शुक्ल ध्यान उपजा शुक्लध्यानके बलकर मोहका नाशकर ज्ञानावरण दर्शनावरण अन्तराय कर्महर लोकालोकके प्रकाश करणहारा केवलज्ञान प्रकट भया बहुरि अघातिया कर्मको दूरकर सिद्धपदको प्राप्त भये जहांतैं

बहुरि संसारविषै भ्रमण नाहीं यह केकईके पुत्र भरतका चरित्र जो भक्ति कर पढ़ सुन सो सब क्लेशरहित होय यश कीर्ति बल विभूति आरोग्यताको पावै अर स्वर्ग मोक्ष पावै यह परम चरित्र महा उज्ज्वल श्रेष्ठ गुणनिकर युक्त भव्य जीव सुनो जातैं शीघ्र ही सूर्यसे अधिक तेजके धारक होहु।

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषा वचनिकाविषै भरतका निर्वाण गमन करनेवाला सतासीवां पर्व पूर्ण भया ॥८७॥

अथानन्तर—भरतके साथ जे राजा महाधीर वीर अपने शरीरविषै भी जिनका अनुराग नहीं घरसे
निकसे जैनेश्वरी दीक्षा धर दुर्लभ वस्तुको प्राप्त भए तिनविषै कैयकनिके नाम कहिए है—हे श्रेणिक! तू
सुन—सिद्धार्थ, रतिवर्धन, मेघरथ, जांबू, नन्द, शल्य, शशांक, निरसनन्दन, नन्द, आनन्द, सुमति, सदाश्रय,
महाबुद्धि, सूर्य, इन्द्रध्वज, जनवल्लभ, श्रुतिधर, सुचंद्र, पृथिवीधर, अलक, सुमति, अक्रोध, कुण्डर, सत्यवा-
हन, हरि, वासुमित्र, धर्ममित्र, पूर्णचन्द्र, प्रभाकर, नघोष, सुनंद, शांति, प्रियधर्मा इत्यादि एक हजारतैं
अधिक राजा वैराग्य धारते भए विशुद्धकुलविषै उपजे सदा आचारविषै तत्पर पृथिवीविषै प्रसिद्ध हैं शुभ
चेष्टा जिनकी ये महाभाग्य हाथी घोड़े रथ पयादे स्वर्ण रत्न रणवास सर्व तजकर पंच महाव्रत धारते भए,
राज्यको जिनने तृणवत् तजा महाशान्त नानाप्रकार योगीश्वर ऋद्धिके धारक भए सो आत्मध्यानके ध्याता
कैयक तो मोक्ष गए कैयक अहमिन्द्र भए कैयक उत्कृष्ट देव भए॥ भरत चक्रवर्ती सारिखे दशरथके पुत्र
भरत तिनको घरसे निकसे पीछे लक्ष्मण तिनके गुण चितार चितार अतिशोकवन्त भया अपना राज्य शून्य
गिनता भया शोककर व्याकुल है चित्त जाका अति विषाद रूप आंसू डारता भया, दीर्घ निश्वास नाखता
भया नील कमल समान है कांति जाकी सो कुमलाय गया, विराधितकी भुजानिपर हाथ धरै ताके सहारे
बैठा मंद मंद वचन कहै, वे भरत महाराज गुण ही हैं आभूषण जिनके सो कहां गये? जिन तरुण अव-
स्थाविषै शरीरसूं प्रीति छांड़ी, इन्द्र समान राजा अर हम सब उनके सेवक वे रघुवंशके तिलक समस्त वि-
भूति तजकर मोक्षके अर्थी महादुर्द्धर मुनिका धर्म धारते भए। शरीर तो अति कोमल कैसे परीषह सहेंगे?
धन्य वे अर श्रीराम महा ज्ञानवान कहते भए, भरतकी महिमा कही न जाय जिनका चित्त कभी संसार-

विषै न रचा जो शुद्धबुद्धि है तो उनकी ही है अर जन्म कृतार्थ है तो उनका ही है, जे विषके भरे अन्नकी न्याईं राज्यको तज कर जिनदीक्षा धरते भये वे पूज्य प्रशंसा योग्य परम योगी उनका वर्णन देवेंद्र भी न कर सके तो औरोंकी कहा शक्ति जो करे वे राजा दशरथके पुत्र केकईके नंदन तिनकी महिमा हमतैं न कही जाय। या भरतके गुण गावते एक मुहूर्त सभाविषै तिष्ठे, समस्त राजा भरत हीके गुण गाया करें। बहुरि श्रीराम लक्ष्मण दोऊ भाई भरतके अनुरागकर अति उद्वेग रूप उठे सब राजा अपने अपने स्थानकूं गये घर घर भरतकी चर्चा सब ही लोक आश्चर्यको प्राप्त भए। यह तो उनकी यौवन अवस्था अर यह राज्य ऐसे भाई सब सामग्री पूर्ण ऐसे ही पुरुष तजें सोई परम पदको प्राप्त होवें या भांति सबही प्रशंसा करते भए।

बहुरि दूजे दिन सब राजा मंत्रकर राम पै आए नमस्कारकर अति प्रीतिसे वचन कहते भये, हे नाथ! जो हम असमझ हैं तो आपके अर बुद्धिवन्त हैं तो आपके हम पर कृपाकर एक विनती सुनो—हे प्रभो! हम सब भूमिगोचरी अर विद्याधर आपका राज्याभिषेक करें जैसे स्वर्गविषै इन्द्रका होय, हमारे नेत्र अर हृदय सफल होवें तिहारे अभिषेकके सुखकर पृथिवी सुखरूप होय तब राम कहते भए तुम लक्ष्मणका राज्याभिषेक करो वह पृथिवीका स्तम्भ भूधर है समस्त राजानिका गुरु वासुदेव राजानिका राजा सब गुण ऐश्वर्यका स्वामी सदा मेरे चरणनिको नमै या उपरान्त मेरे राज्य कहां॥ तब वे समस्त श्रीरामकी अति-प्रशंसा कर जय जयकार शब्द कर लक्ष्मणपै गए अर सब वृत्तान्त कहा तब लक्ष्मण सबोंको साथ लेय रामपै आया अर हाथ जोड़ नमस्कार कर कहता भया हे वीर! या राज्यके स्वामी आप ही हो मैं तो आ-पका आज्ञाकारी अनुचर हूं तब रामने कहा, हे वत्स! तुम चक्रके धारी नारायण हो तातैं राज्याभिषेक तुम्हारा ही योग्य है, सो इत्यादि वार्तालापसे दोनोंका राज्याभिषेक ठहरा बहुरि जैसी मेघकी ध्वनि होय तैसी वादित्रनिकी ध्वनि होती भई दुन्दुभी वाजे नगारे ढोल मृदंग वीणा तमूरे झालर झांझ मजीरे वांसुरी शंख इत्यादि वादित्र वाजे अर नाना प्रकारके मंगल गीत नृत्य होते भए याचकोंको मनवांछित दान दिया

सबनिको अति हर्ष भया दोऊ भाई एक सिंहासन पर विराजे स्वर्ण रत्नके कलश जिनके मुख कमलसे ढके पवित्र जलसे भरे तिनकर विधिपूर्वक अभिषेक भया, दोऊ भाई मुकुट भुजबन्ध हार केयूर कुण्डलादिक कर मण्डित मनोग्य वस्तु पहिरे सुगन्धकर चर्चित तिष्ठे विद्याधर भूमिगोचरी तथा तीन खण्डके देव जय जय शब्द कहते भये। यह बलभद्र श्रीराम हलमूसलके धारक अर यह वासुदेव श्रीलक्ष्मण चक्रका धारक जयवंत होहु दोऊ राजेन्द्रनिका अभिषेक कर विद्याधर बड़े उत्साहसे सीता अर विशल्याका अभिषेक करावते भये, सीता रामकी राणी अर विशल्या लक्ष्मणकी तिनका अभिषेक विधिपूर्वक होता भया॥

अथानन्तर—विभीषणको लंका दई सुग्रीवको किहकंधापुर हनूमानको श्रीनगर अर हनूरुह द्वीप दिया विराधितको नागलोक समान अलङ्कापुर दिया, नल नीलको किकंधूपुर दिया, समुद्रकी लहरोंके समूहकर महाकौतुकरूप अर भामण्डलको वैताड्यको दक्षिण श्रेणीविषै रथनूपुर दिया समस्त विद्याधरनिका अधिपति किया अर रत्नजटीको देवोपुनीत नगर दिया अर भी यथा योग्य सबनिको स्थान दिये अपने पुण्यके उदय योग्य सबही रामलक्ष्मणके प्रतापतें राज्य पावते भये। रामकी आज्ञाकर यथा योग्य स्थानमें तिष्ठे। जे भव्यजीव पुण्यके प्रभावका जगतविषै प्रसिद्ध फल जान धर्मविषै रति करे हैं वे मनुष्य सूर्यसे अधिक ज्योतिको पावे हैं॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषा वचनिकाविषै राम लक्ष्मणका राज्याभिषेक वर्णन करनेवाला अठासीवां पर्व पूर्ण भया॥ ८८॥

अथानन्तर—राम लक्ष्मण महा प्रीतिकर भाई शत्रुघ्नसूं कहते भए, जो तुमको रुचे सो देश लेवो जो तुम आधी अयोध्या चाहो तो आधी अयोध्या लेवो अथवा राजगृह अथवा पोदनापुर अथवा पौंड्रसुन्दर इत्यादि सैकड़ा राजधानी हैं। तिनविषै जो नीकी सो तिहारी तब शत्रुघ्न कहता भया मोहि मथुराका राज्य देवो तब राम बोले—हे भ्रात! वहां राजा मधुका राज्य है अर वह रावणका जमाई है अनेक युद्धनिका जीतनहारा ताको चमरेन्द्रने त्रिशूल रत्न दिया है ज्येष्ठके सूर्य समान दुस्सह है अर देवनिसे दुर्निवार है ताकी चिन्ता हमारे भी निरन्तर रहे है वह राजा मधु हरिवंशियोंके कुलरूप आकाश विषै सूर्य

समान प्रतापी है जाने वंशविषै उद्योत किया है अर जाका लवणार्णव नामा पुत्र विद्याधरनि हूं कर असाध्य है पिता पुत्र दोऊ महाशूरवीर हैं तातैं मथुरा टार और राज्य चाहो सोही लेवो तब शत्रुघ्न कहता भया बहुत कहिवेकर कहा मोहि मथुरा ही देवो जो मैं मधुके छातेकी न्याईं मधुको रण संग्रामविषै न तोड़ लूं तो दशरथका पुत्र नाहीं जैसे सिंहनिके समूहको अष्टापद तोड़ डारे तैसे ताके कटकसहित ताहि न चूर डारूं, तो मैं तिहारा भाई नाहीं, जो मधुको मृत्यु प्राप्त न करूं तो मैं सुप्रभाकी कुक्षिविषै उपजा ही नहीं या भांति प्रचण्ड तेजका धरणहारा शत्रुघ्न कहता भया तब समस्त विद्याधरनिके अधिपति आश्चर्यको प्राप्त भये अर शत्रुघ्नकी बहुत प्रशंसा करते भए शत्रुघ्न मथुरा जायवेको उद्यमी भया तब श्रीराम कहते भये हे भाई! मैं एक याचना करूं हूं सो मोहि दक्षिणा देहु तब शत्रुघ्न कहता भया सबके दाता आप हो सब आपके याचक हैं आप याचो सो वस्तु कहा? मेरे प्राणहीके नाथ आप हो तो अर वस्तुकी कहा बात एक मधुसे युद्ध तो मैं न तजूं अर कहो सोही करूं तब श्रीरामने कही-हे वत्स! तू मधुसे युद्ध करै तो जा समय वाके हाथ त्रिशूलरत्न न होय ता समय करियो तब शत्रुघ्नने कही जो आप आज्ञा करोगे सोही होयगा ऐसा कह भगवानकी पूजाकर नमोकार मन्त्र जप सिद्धनिको नमस्कारकर भोजनशालाविषै जाय भोजनकर माताके निकट आय आज्ञा मांगी तब वे माता अतिस्नेहतैं याके मस्तकपर हाथधर कहती भईं-हे वत्स! तू तीक्ष्ण बाणनिकर शत्रुनिके समूहको जीत। वह योधाकी माता अपने योधापुत्रसे कहती भईं-हे पुत्र! अब तक संग्रामविषै शत्रुवनिने तेरी पीठ नाहीं देखी है अर अब हूं न देखेंगे तू रण जीत आवेगा। तब मैं स्वर्णके कमलनिकर श्रीजिनेन्द्रकी पूजा कराऊंगी वे भगवान त्रैलोक्य मंगलके कर्ता आप महामंगलरूप सुर असुरनिकर नमस्कार करवे योग्य रागादिकके जीतनहारे तोहि मंगल करें। वे परमेश्वर पुरुषोत्तम अरहन्त भगवन्त जिनने अत्यन्त दुर्जय मोहरिपु जीता वे तोहि कल्याणके दायक होहु सर्वज्ञ त्रिकालदर्शी स्वयंबुद्ध तिनके प्रसादतैं तेरी विजय होह। जे केवलज्ञानकर लोकालोकको हथलीविषैं आंवलाकी न्याईं देखे हैं ते तोहि मंगलहोहु। हे वत्स! वे सिद्धपरमेष्ठी अष्टकर्मकररहित अष्टगुण आदि अनन्त गुणनिकर विराजमान लोकके

शिखर तिष्ठे ते सिद्ध तोहि सिद्धिके कर्ता होवें अर आचार्य भव्यजीवनिके परम आधार तेरे विघ्न हरें जे
कमल समान अलिप्त सूर्यसमान तिमिर हर्ता अर चन्द्रमा समान आल्हादके कर्ता भूमिसमान क्षमावान
सुमेरु समान अचल समुद्र समान गम्भीर आकाश समान अखंड इत्यादि अनेक गुणनिकर मण्डित हैं
अर उपाध्याय जिनशासनके पारगामी तोहि कल्याणके कर्ता होहु अर कर्म शत्रुनिके जीतवेको महा शूर
वीर बारह प्रकार तपकर जे निर्वाणको साधै हैं ते साधु तोहि महावीर्यके दाता होवें या भांति विघ्नकी हर-
णहारी मंगलकी करणहारी माता आशीस देती सो शत्रुघ्न माथे चढाय माताको प्रणामकर बाहिर नि-
कसा। स्वर्णकी सांकलनिकर मण्डित जो गज तापर चढ़ा ऐसा सोहता भया जैसे मेघमाला ऊपर चन्द्रमा
सोहै अर नाना प्रकार बाहननिपर आरूढ़ अनेक राजा संग चले सो तिनकर ऐसा सोहता भया जैसा दे-
वनिकर मण्डित देवेंद्र सोहै राम लक्ष्मणकी भाईसूं अधिक प्रीति सो तीन मञ्जिल भाईके संग गये तब
भाई कहता भया—हे पूज्य पुरुषोत्तम! पीछे अयोध्या जावो मेरी चिन्ता न करो मैं आपके प्रसादतैं शत्रु-
निको निस्सन्देह जीतूंगा तब लक्ष्मणने समुद्रावर्त नामा धनुष दिया प्रज्वलित है मुख जिनके पवन सा-
रिखे वेगको धरे ऐसे बाण दिये अर कृतान्तवक्रको लार दिया अर लक्ष्मणसहित राम पीछे अयोध्या आये
परन्तु भाईकी चिन्ता विशेष।

अथानन्तर— शत्रुघ्न महाधीर वीर बड़ी सेना कर संयुक्त मथुराकी तरफ गया अनुक्रमसे यमुना न-
दीके तीर जाय डेरे दिये जहां मन्त्री महासूक्ष्मबुद्धि मंत्र करते भये। देखो, इस बालक शत्रुघ्नकी बुद्धि जो
मधुके जीतवेकी बांछा करी है। यह नयवर्जित केवल अभिमान कर प्रवर्ता है, जा मधुने पूर्व राजा मान्धाता
रणविषै जीता सो मधु देवनिकर विद्याधरनिकर न जीता जाय, ताहि यह कैसे जीतेगा, राजा मधु सागर
समान है उछलते पियादे तेई भये उतंग लहर अर शत्रुनिके समूह तेई भये ग्रह तिनकर पूर्ण ऐसे मधु-
समुद्रकूं शत्रुघ्न भुजानिकर तिरा चाहे है सो कैसे तिरेगा, तथा मधुभूपति भयानक वन समान है ताविषै
प्रवेशकर कौन जीवता निसरै। कैसा है राजा मधुरूप वन? पयादेके समूह तेई हैं वृक्ष जहां अर माते

हाथिनिकर महा भयंकर अर घोड़निके समूह तेई हैं मृग जहां, ये वचन मंत्रिनिके सुन कृतांतवक्र कहता भया। तुम साहस छोड़ ऐसे कायरताके वचन क्यों कहो हो? यद्यपि वह राजा मधु चमरेन्द्र कर दिया जो अमोघ त्रिशूल ताकर अति गर्वित है तथापि ता मधुको शत्रुघ्न सुन्दर जीतेगा जैसे हाथी महावलवान है अर सूण्डकर वृक्षनिकों उपाड़े है मद झरे है तथापि ताहि सिंह जीतै है यह शत्रुघ्न लक्ष्मी अर प्रताप कर मण्डित है महावलवान है शूरवीर है महा पंडित प्रवीण है अर याके सहाई श्रीलक्ष्मण हैं अर आप सवही भले भले मनुष्य याके संग हैं तातैं यह शत्रुघ्न अवश्य शत्रुको जीतेगा जब ऐसे वचन कृतान्तवक्रने कहे तब सवही प्रसन्न भए अर पहिलेही मंत्रीजननिने जो मथुरामें हलकारे पठाये हुते ते आयकर सर्व वृत्तांत शत्रुघ्नसूं कहते भए। हे देव! मथुरा नगरीकी पूर्व दिशाकी ओर अत्यन्त मनोग्य उपवन है तहां रणवास सहित राजा मधु रमै है। राजाके जयन्ती नाम पटराणी है ता सहित वनक्रीड़ा करै है जैसे स्पर्श इन्द्रियके वश भया गजराज वन्धन विषै पड़े है, तैसे राजा मोहित भया विषयनिके वन्धन विषै पड़ा है, महा कामी आज छठा दिन है कि सर्व राज्य काज तज प्रमादके वश भया वनविषै तिष्ठै है कामान्ध मूर्ख तिहारे आगमको नाहीं जाने है, अर तुम ताके जीतवेकी वांछा करी है ताकी ताहि सुध नाहीं अर मन्त्रिनिने बहुत समझाया सो काहूकी वात धारे नाहीं, जैसे मूढ़ रोगी वैद्यकी औषध न धारै इस समय मथुरा हाथ आवे तो आवे अर कदाचित् मधुपुरीमें धसा तो समुद्रसमान अथाह है यह वचन हलकारोंके मुखसे शत्रुघ्न सुनकर कार्यमें प्रवीण ताहि समय बलवान योधानिके सहित दौड़कर मथुरा गया, अर्धरात्रिके समय सब लोक प्रमादी हुते अर नगरी राजारहित हुती सो शत्रुघ्न नगर विषै जाय पैठा जैसे योगी कर्मनाश कर सिद्धपुरीविषै प्रवेश करै, तैसे शत्रुघ्न द्वारको चूरकर मथुरा विषै प्रवेश करता भया। मथुरा महामनोग्य है तब वन्दीजननिके शब्द होते भये जो राजा दशरथका पुत्र शत्रुघ्न जयवन्त होहु ये शब्द सुनके नगरीके लोक परचक्रका आगम जान अति व्याकुल भए, जैसे लंका अंगदके प्रवेशकर अतिव्याकुल हुती तैसे मथुराविषै व्याकुलता भई। कई एक कायर हृदयकी धरनहारी स्त्री हुतीं तिनके भयकर गर्भ-

पात होय गये, अर कैयक महाशूरवीर कलकलाट शब्द सुन तत्काल सिंहकी न्याइं उठे, शत्रुघ्न राजमंदिर गया आयुधशाला अपने हाथ कर लीनी अर स्त्री बालक आदि जे नगरीके लोक अतित्रासकूं प्राप्त भये तिनको महा मधुर वचनकर धीर्य बन्धाया जो यह श्रीरामका राज्य है यहां काहूको दुःख नाहीं तब नगरीके लोक त्रासरहित भये अर शत्रुघ्नको मथुराविषै आया सुन राजा मधु महाकोप कर उपवनतैं नगरको आया सो मथुराविषै शत्रुघ्नके सुभटोंकी रक्षाकर प्रवेश न कर सका जैसे मुनिके हृदयमें मोह प्रवेश न कर सकै, नाना प्रकारके उपाय कर प्रवेश न पाया अर त्रिशूलहूतैं रहित भया तथापि महा अभिमानी मधुने संधि न करी युद्धहोको उद्यमी भया तब शत्रुघ्नके योधा युद्धको निकसे दोनों सेना समुद्र समान तिन विषै परस्पर युद्ध भया, रथनिके तथा हाथिनिके तथा घोड़निके असवार परस्पर युद्ध करते भए अर परस्पर पयादे भिड़े नाना प्रकारके आयुधनिके धारक महासमर्थ नाना प्रकार आयुधनि कर युद्ध करते भये ता समय परसेनाके गर्वको न सहता सन्ता कृतांतवक्र सेनापति परसेनाविषै प्रवेश करता भया। नाहीं निवारी जाय है गति जाकी तहां रणक्रीड़ा करै है जैसे स्वयम्भू रमण उद्यानविषै इन्द्र क्रीड़ा करै, तब मधुका पुत्र लवणार्णवकुमार याहि देख युद्धके अर्थ आया अपने बाणनिरूप मेघकर कृतान्तवक्र रूप पर्वतको आच्छादित करता भया, अर कृतान्तवक्र भी आशीविष तुल्य बाणनिकर ताके बाण छेदता भया अर धरती आकाशको अपने बाणनिकर व्याप्त करता भया, दोऊ महा योधा सिंहसमान बलवान गजनिपर चढ़े क्रोधसहित युद्ध करते भए. वाने वाको रथरहित किया अर वाने वाको, बहुरि कृतान्तवक्रने लवणार्णवके वक्षस्थलविषै बाण लगाया अर ताका बखतर भेदा तब लवणार्णव कृतान्तवक्र ऊपर तोमर जातिका शस्त्र चलावता भया क्रोधकर लाल हैं नेत्र जाके दोनों घायल भए, रुधिर कर रक्त रहे हैं वस्त्र जिनके, महा सुभटताके स्वरूप दोनों क्रोध कर उद्धत फूले टेसूके वृक्ष समान सोहते भए, गदा खड्ग चक्र इत्यादि अनेक आयुधनिकर परस्पर दोऊ महा भयङ्कर युद्ध करते भये। बल उन्माद विषादके भरे बहुत बेर लग युद्ध भया, कृतान्तवक्रने लवणार्णवके वक्षस्थलविषै घाव किया, सो पृथिवीविषै पड़ा जैसे पुण्यके क्षयतैं स्वर्गवासी

देव मध्य लोकविषै आय पड़ें, लवणार्णव प्राणान्त भया, तब पुत्रको पड़ा देख मधु कृतान्तवक्रपर दौड़ा तब शत्रुघ्नने मधुको रोका, जैसे नदीके प्रवाहको पर्वत रोकै, मधु महा दुस्सह शोक अर कोपका भरा युद्ध करता भया सो आशीविषकी दृष्टि समान मधुकी दृष्टि शत्रुघ्नकी सेनाके लोक न सहार सकते भए जैसे उग्र पवनके योगतें पत्रनिके समूह चलायमान होंय तैसे लोक चलायमान भए बहुरि शत्रुघ्नको मधुके सन्मुख जाता देख धीर्यकूं प्राप्त भए। शत्रुके भयकर लोक तवलगही डरें जवलग अपने स्वामीको प्रबल न देखें अर स्वामीको प्रसन्नवदन देख धीर्यको प्राप्त होंय। शत्रुघ्न उत्तम रथपर आरूढ़ मनोग्य धनुष हाथविषै सुन्दर हारकर शोभे है वक्षस्थल जाका सिरपर मुकुट धरे मनोहर कुण्डल पहिरे शरदके सूर्य समान महातेजस्वी अखण्डित है गति जाकी शत्रुके सन्मुख जाता अति सोहता भया जैसे गजराजपर जाता मृगराज सोहै, अर अग्नि सूके पत्रनिको जलावै तैसे मधुके अनेक योधा क्षणमात्रविषै विध्वंस किए, शत्रुघ्नके सन्मुख मधुका कोई योधा न ठहर सका जैसे जिनशासनके पण्डित स्याद्वादी तिनके सन्मुख एकांतवादी न ठहर सके, जो मनुष्य शत्रुघ्नसे युद्ध किया चाहै सो तत्काल विनाशको पावै जैसे सिंहके आगे मृग। मधुकी समस्त सेनाके लोक अति व्याकुल हो मधुके शरण आये सो मधु महा सुभट शत्रुघ्नको सन्मुख आवता देख शत्रुघ्नकी ध्वजा छेदी अर शत्रुघ्नने वाणनिकर ताके रथके अश्व हते। तव मधु पर्वत समान जो वरुणेंद्र गज तापर चढ़ा क्रोधकर प्रज्वलित है शरीर जाका शत्रुघ्नको निरन्तर वाणनिकर आच्छादने लगा जैसे महामेघ सूर्यको आच्छादे सो शत्रुघ्न महा शूरवीरने ताके वाण छेद डारे अर मधुका वख्तर भेदा जैसे अपने घर कोई पाहुना आवै अर ताकी भले मनुष्य भलीभांति पाहुन गति करैं तैसे शत्रुघ्न मधुकी रणविषै शस्त्रनिकर पाहुणगति करता भया॥

अथानन्तर—मधु महा विवेकी शत्रुघ्नको दुर्जय जान आपको त्रिशूल आयुधसे रहित जान पुत्रकी मृत्यु देख अर अपनी आयुहू अल्प जान मुनिनिका वचन चितारता भया—अहो जगतका समस्त ही आरम्भ महा सिंहरूप दुःखका देनहारा सर्वथा त्याज्य है यह क्षण भंगुर संसारका चरित्र तामें मूढ़जन

राचै या संसार विषै धर्म ही प्रशंसायोग्य है अर अधर्मका कारण अशुभ कर्म प्रशंसा योग्य नाहीं महा निंद्य यह पाप कर्म नरक निगोदका कारण है, जो दुर्लभ मनुष्य देहको पाय धर्मविषै बुद्धि नाहीं धारे हैं सो प्राणी मोह कर्म कर ठगाया अनन्त भव भ्रमण करे है। मैं पापीने संसार असारको सार जाना, क्षणभंगुर शरीरको ध्रुव जाना, आत्महित न किया। प्रमादविषै प्रवरता, रोग समान थे इन्द्रियनिके भोग भले जान भोगे, जब मैं स्वाधीन हुता तब मोहि सुबुद्धि न आई, जब अन्तकाल आया अब कहा करूं, घरमें आग लागी ता समय तालाव खुदवाना कौन अर्थ? अर सर्पने डसा ता समय देशांतरसे मन्त्राधीश बुलवाना अर दूरदेशसे मणि औषधि मंगवाना कौन अर्थ? तातैं अब सर्व चिन्ता तज निराकुल होय अपना मन समाधानविषै ल्याऊं यह विचार वह धीरवीर घावकर पूर्ण हाथी चढ़ाही भावमुनि होता भया, अरहन्त सिद्ध आचार्य उपाध्याय साधुनिको मनकर वचनकर कायकर वारंवार नमस्कार कर अर अरहन्त सिद्ध साधु तथा केवली प्रणीत धर्म यही मंगल हैं यही उत्तम हैं इनहीका मेरे शरण है अढाई द्वीप विषै पन्द्रहकर्म भूमि तिनविषै भगवान् अरहन्त देव होय हैं वे त्रैलोक्यनाथ मेरे हृदयविषै तिष्ठो। मैं वारम्बार नमस्कार करूं हूं अब मैं यावज्जीवन सर्व पाप योग तजे चारों आहार तजे, जे पूर्व पाप उपार्जे हुते तिनकी निन्दा करूं हूं अर सकल वस्तुका प्रत्याख्यान करूं हूं अनादि कालतैं या संसार वनविषै जो कर्म उपार्जे हुते ते मेरे दुःकृत मिथ्या होहु॥ भावार्थ—मुझे फल मत देहु, अब मैं तत्वज्ञानविषै तिष्ठा तजवे योग्य जो रागादिक तिनको तजूं हूं अर लेयवे योग्य जो जिनभाव तिनको लेऊं हूं, ज्ञान दर्शन मेरे स्वभाव ही हैं सो मोसे अभेद्य हैं अर जे शरीरादिक समस्त पदार्थ कर्मके संयोग कर उपजे ते मोसे न्यारे हैं, देह त्यागके समय संसारी लोक भूमिका तथा तृणका सांथरा करे हैं सो सांथरा नाहीं। यह जीव ही पाप बुद्धिरहित होय तब अपना आप ही सांथरा है। ऐसे विचारकर राजा मधुने दोनों प्रकारके परिग्रह भावोंसे तजे अर हाथीकी पीठ पर वैठा ही सिरके केश लोंच करता भया, शरीर घावनिकर अतिव्याप्त है तथापि महा दुर्धर धीर्यको धर कर अध्यातम योगविषै आरूढ़ होय कायाका ममत्व तजता भया, विशुद्ध है बुद्धि जाकी। तब शत्रुघ्न

मधुकी परम शांत दशा देख नमस्कार करता भया अर कहता भया हे साधो ! मो अपराधीका अपराध क्षमा करो, देवनिकी अप्सरा, मधुका संग्राम देखनेको आई हुतीं आकाशसे कल्पवृक्षनिके पुष्पोंकी वर्षा करती भईं मधुका वीर रस अर शांत रस देख देव भी आश्चर्यको प्राप्त भए। बहुरि मधु महा धीर एक क्षणमात्रविषै समाधि मरण कर महासुखके सागरविषै तीजे सनत्कुमार स्वर्गविषै उत्कृष्ट देव भया अर शत्रुघ्न मधुकी स्तुति करता महा विवेकी मथुराविषै प्रवेश करता भया जैसे हस्तिनागपुरविषै जयकुमार प्रवेश करता सोहता भया तैसा शत्रुघ्न मधुपुरीविषै प्रवेश करता सोहता भया। गौतमस्वामी राजा श्रेणिकसे कहे हैं—हे नराधिपति श्रेणिक ! प्राणियोंके या संसारविषै कर्मोंके प्रसंग कर नाना अवस्था होय हैं तातैं उत्तमजन सदा अशुभ कर्म तजकर शुभकर्म करो जाके प्रभाव कर सूर्य समान कांतिको प्राप्त होहु ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषा वचनिकाविषै मधुका युद्ध अर वैराग्य होनेका वर्णन करनेवाला नवासीवां पर्व पूर्ण भया ॥ ८९ ॥

अथानन्तर—सुरकुमारोंके इन्द्र जो चमरेंद्र महाप्रचण्ड तिनका दिया जो त्रिशूलरत्न मधुके हुता ताके अधिष्ठाता देव त्रिशूलको लेकर चमरेंद्रके पास गए अतिखेद खिन्न महा लज्जावान होय मधुके मरणका वृत्तांत असुरेंद्रसे कहते भए तिनकी मधुसे अतिमित्रता सो पातालसे निकसकर महाक्रोधके भरे मथुरा आयवेका उद्यमी भए ता समय गरुडेंद्र असुरेंद्रके निकट आये अर पूछते भए हे दैत्येंद्र ! कौन तरफ गमनको उद्यमी भए हो ? तब चमरेन्द्रने कही—जाने मेरा मित्र मधु मारा है ताहि कष्ट देवेको उद्यमी भया हूं तब गरुडेंद्रने कही कहा विशिल्याका माहात्म्य तुमने न सुना है। तब चमरेंद्रने कही वह अद्भुत अवस्था विशिल्याकी कुमार अवस्थाविषै ही हुती अर अब तो निर्विष भुजंगी समान है जौलग विशिल्याने वासुदेवका आश्रय न किया हुता तौलग ब्रह्मचर्यके प्रसादतैं असाधारण शक्ति हुती, अब वह शक्ति विशिल्याविषै नाहीं, जे निरतिचार बालब्रह्मचर्य धारैं तिनके गुणनिकी महिमा कहिवेविषै न आवै शीलके प्रसादकर सुर असुर पिशाचादि सब डरें, जौलग शीलरूप खड्गको धारे तौलग सबकर जीता न जाय

महा दुर्जय है अब विशिल्या पतिव्रता है ब्रह्मचारिणी नाहीं तातें वह शक्ति नाहीं मद्य मांस मैथुन यह महा पाप हैं इनके सेवनसे शक्तिका नाश होय है जिनका व्रतशील नियमरूप कोट भाग्य न भया तिनको कोई विघ्न करवे समर्थ नाहीं, एक कालाग्नि नाम रुद्र महाभयङ्कर भया सो हे गरुड़ेन्द्र ! तुम सुना ही होयगा बहुरि वह स्त्रीसे आसक्त होय नाशको प्राप्त भया तातैं विषयका सेवन विषसे भी विषम है परम आश्चर्यका कारण एक अखण्ड ब्रह्मचर्य है। अब मैं मित्रके शत्रुपर जाऊंगा तुम तिहारे स्थानक जावहु। ऐसा गरुड़ेन्द्रसे कहकर चमरेंद्र मथुरा आए, मित्रके मरणकर कोपरूप मथुराविषै वही उत्सव देखा जो मधुके समय हुता तब असुरेन्द्रने विचारी—ये लोक महादुष्ट कृतघ्न हैं देशका धनी पुत्रसहित मर गया है अर अन्य आय बैठा है इनको शोक चाहिये कि हर्ष, जाके भुजाकी छाया पाय बहुत काल सुखसे वसे ता मधुकी मृत्युका दुःख इनको क्यों न भया ? ये महाकृतघ्न हैं सो कृतघ्नका मुख न देखिये लोकनिकर शूरवीर सेवायोग्य शूरवीरनिकर पण्डित सेवा योग्य हैं। सो पण्डित कौन जो पराया गुण जाने सो ये कृतघ्न महामूर्ख हैं ऐसा विचारकर मथुराके लोकनिपर चमरेन्द्र कोपा—इन लोकोंका नाश करूं। यह मथुरापुरी या देशसहित क्षय करूं। महाक्रोधके वश होय असुरेंद्र लोकनिको दुस्सह उपसर्ग करता भया, अनेक रोग लोगनिको लगाये, प्रलय कालकी अग्नि समान निर्दयी होय लोकरूप वनको भस्म करवेको उद्यमी भया, जो जहां ऊभा हुता सो वहां ही मर गया अर बैठा हुता सो बैठा ही रहा, सूता था सो सूता ही रहा, मरी, पड़ी, लोकको उपसर्ग देख मित्र देव देवताके भयसे शत्रुघ्न अयोध्या आया सो जीतकर महावीर भाई आया बलभद्र नारायण अति हर्षित भये अर शत्रुघ्नकी माता सुप्रभा भगवानकी अद्भुत पूजा करावती भई, अर दुखी जीवनिको करुणाकर अर धर्मात्मा जीवनिको अति विनयकर अनेक प्रकार दान देती भई, यद्यपि अयोध्या महा सुन्दर है स्वर्ण रत्ननिके मन्दिरनिकर मण्डित है कामधेनु समान सर्व कामना पूरणहारी देवपुरी समान पुरी है तथापि शत्रुघ्नका जीव मथुरासे अति आसक्त सो अयोध्याविषैं अनुरागी न होता भया जैसे कैयक दिन सीता विना राम उदास रहे तैसे शत्रुघ्न मथुरा विना अयोध्याविषै उदास

रहै जीवोंको सुन्दर वस्तुका संयोग स्वप्न समान क्षणभंगुर है परम दाहको उपजावै है ज्येष्ठके सूर्यसे हू अधिक आतापकारी है ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषा वचनिकाविषै मथुराके लोकोंनिकू असुरेन्द्रकृत उपसर्गका वर्णन करनेवाला नब्बेवां पर्व पूर्ण भया ॥ ९० ॥

अथानन्तर—राजा श्रेणिक गौतमस्वामीसे पूछता भया—हे भगवन्! कौन कारणकर शत्रुघ्न मथुरा हीको याचता भया। अयोध्याहूतैं ताहि मथुराका निवास अधिक क्यों रुचा, अनेक राजधानी स्वर्ग लोक समान सो न वांछी अर मथुराही वांछी ऐसी मथुरासे कहा प्रीति, तब गौतमस्वामी ज्ञानके समुद्र सकल सभारूप नक्षत्रनिके चन्द्रमा कहते भये, हे श्रेणिक! इस शत्रुघ्नके अनेक भव मथुरामें भये तातैं याका मधु-पुरीसे अधिक स्नेह भया। यह जीव कर्म्मनिके सम्बन्धतें अनादि कालका संसार सागरमें वसै है सो अनन्त भव धरै। यह शत्रुघ्नका जीव अनन्त भव भ्रमणकर मथुरा विषै एक यमनदेव नामा मनुष्य भया, महाक्रूर धर्मसे विमुख सो मर कर शुकर खर काग ये जन्म धर अज पुत्र भया सो अग्निमें जल मूवा, भैंसा जलके लादनेका भया सो छैवार भैंसा होय दुःखसे मूवा, नीचकुलविषै निर्धन मनुष्य भया, हे श्रेणिक! महापापी तो नरकको प्राप्त होय हैं, अर पुण्यवान् जीव स्वर्ग विषै देव होय हैं अर शुभाशुभ मिश्रित कर मनुष्य होय हैं बहुरि यह कुलन्धरनामा ब्राह्मण भया रूपवान अर शीलरहित सो एक समय नगरका स्वामी दिग्विजय निमित्त देशांतर गया ताकी ललिता नामा राणी महलके झरोखाविषै तिष्ठे थी सो पापिनी इस दुराचारी विप्रको देख काम बाण कर वेधी गई सो याहि महलमें बुलाया। एक आसनपर राणी अर यह बैठे रहे ताही समय राजा दूरका चला अचानक आया अर याहि महलमें देखा सो राणीने मायाचार कर कही—जो यह वन्दीजन है भिक्षुक है तथापि राजाने न मानी राजाके किंकर ताहि पकड़कर नृपकी आज्ञातैं आठों अंग दूर करवेके अर्थ नगरके वाहिर ले जाते हुते सो कल्याणनामा साधुने देख कही जो तू मुनि होय तो तोहि छुड़ावैं तब याने मुनि होना कबूल किया तब किंकरानिसे छुड़ाया सो

मुनि होय महातप कर स्वर्गमें ऋजु विमानका स्वामी देव भया। हे श्रेणिक! धर्मसे कहा न होय? मथुरा विषै चन्द्रभद्र राजा ताके राणी धारा ताके भाई सूर्य देव अग्निदेव यमुनादेव अर आठ पुत्र तिनके नाम श्रीमुख संमुख सुमुख इन्द्रमुख प्रमुख उग्रमुख अर्कमुख परमुख अर राजा चन्द्रभद्रके दूजी राणी कनकप्रभा ताके वह कुलन्धर नामा ब्राह्मणका जीव स्वर्ग विषै देव होय तहांतै चयकर अचल नाम पुत्र भया सो कलावान अर गुणनिकर पूर्ण सर्व लोकके मनका हरणहारा देव कुमार तुल्य क्रीड़ाविषै उद्यमी होतो भया। एक अंकनामा मनुष्य धर्मकी अनुमोदनाकर श्रावस्ती नगरीविषै एक कंपनाम पुरुष ताके अङ्गिका नामा स्त्री उसके अपनामा पुत्र भया सो अविनयी तब कंपने अपको घरसे निकास दिया सो महादुखी भूमिविषै भ्रमण करै अर अचलनामा कुमार पिताको अतिवल्लभ सो अचलकुमारको बड़ी माता धरा उसके तीन भाई अर आठ पुत्र तिन्होंने एकांतमें अचलके मारणेका मंत्र किया सो यह वार्ता अचलकुमारकी माताने जानी तब पुत्रको भगाय दिया सो तिलकवनविषै उसके पांवविषै कांटा लगा सो कम्पका पुत्र अप काष्ठका भार लेकर आवे सो अचल कुमारको कांटेके दुःखसे करुणावन्त देखा तब अपने काष्ठका भार मेल छुरीसे कुमारका कांटा काढ कुमारको दिखाया सो कुमार अति प्रसन्न भया अर अपको कहा—तू मेरा अचलकुमार नाम याद रखियो अर मोहि भूपति सुने वहां मेरे निकट आइयो। इस भांति कह अपको विदा किया सो अप गया अर राजपुत्र महादुखी कौशांबी नगरीके विषै आया महापराक्रमी सो बाण विद्याका गुरु जो विशिपाचार्य उसे जीतकर प्रतिष्ठा पाई सो राजाने अचलकुमारको नगरविषै ल्यायकर अपनी इन्द्रदत्ता नामा पुत्री परणाई अनुक्रमकर पुण्यके प्रभावसे राज पाया सो अङ्गदेश आदि अनेक देशनिको जीतकर महा प्रतापी मथुरा आया नगरके बाहिर डेरा दिया बडी सेना साथ सब सामन्तोंने सुना कि यह राजा चन्द्रभद्रका पुत्र अचल कुमार है सो सब आय मिले राजा चन्द्रभद्र अकेला रह गया। तब राणी धराके भाई सूर्यदेव अग्निदेव यमुनादेव इनको संधि करने ताईं भेजे सो ये जायकर कुमारको देख विलखे होय भागे अर धराके आठ पुत्र हू भाग गए। अचलकुमारकी माता आय पुत्रको ले गई पि-

चारणमुनि यहां आये हुते तुमने हूं वह वंदे हैं वे महा पुरुष महातपके धारक हैं चार महीनां मथुरा निवास
किया है अर चाहे जहां अहार ले जाय आज अयोध्या विषै आहार लिया चैत्यालय दर्शन कर गये हमसे
धर्मचर्चा करी, वे महा तपोधन गगनगामी शुभ चेष्टाके धरणहारे परम उदार ते मुनि वन्दिवे योग्य हैं। तब
वह श्रावकनिविषै अग्रणी आचार्यके मुखसे चारण मुनिनिकी महिमा सुनकर खेदखिन्न होय पश्चाताप करता
भया। धिक्कार मोहि, मैंने सम्यक्‌दर्शन रहित वस्तुका स्वरूप न पिछाना, मैं अत्याचारी मिथ्यादृष्टि मो स-
मान अर अधर्मी कौन, वे महा मुनि मेरे मन्दिर आहारको आये अर मैं नवधा भक्तिकर आहार न दिया।
जो साधुको देख सन्मान न करे अर भक्तिकर अन्न जल न देय सो मिथ्यादृष्टि है, मैं पापी पापात्मा पा-
पका भाजन महा निन्द्य मो समान और अज्ञानी कौन, मैं जिनवाणीसे विमुख, अब मैं जौं लग उनका
दर्शन न करूं तौलग मेरे मनका दाह न मिटै, चारण मुनिनिकी तो यही रीति है चौमासे निवास तो
एक स्थान करैं अर आहार अनेक नगरीविषै कर आवैं, चारण ऋद्धिके प्रभाव कर उनके अंगसे जीवोंको
बाधा न होय ॥

अथानन्तर—कार्तिककी पूनो नजदीक जान सेठ अर्हद्दत्त महासम्यक्‌दृष्टि नृपतुल्य विभूति जाके, अ-
योध्यातैं मथुराको सर्वकुटम्ब सहित सप्त ऋषिके पूजन निमित्त चला, जाना है मुनिनिका माहात्म्य जाने
अर अपनी वारम्वार निन्दा करै है रथ हाथी पियादे तुरङ्गनिके असवार इत्यादि बड़ी सेनासहित योगी-
श्वरनिकी पूजाको शीघ्र ही चला, बड़ी विभूति कर युक्त शुभ ध्यानविषै तत्पर कार्तिक सुदी सप्तमीके दिन
मुनिनिके चरणनिविषै जाय पहुंचा। वह उत्तम सम्यक्तका धारक विधिपूर्वक मुनिवन्दनाकर मथुराविषै
अतिशोभा करावता भया, मथुरा स्वर्ग समान सोहती भई, यह वृत्तान्त सुन शत्रुघ्न शीघ्रही महा तुरङ्ग
चढ़ा सप्त ऋषिनिके निकट आया अर शत्रुघ्नकी माता सुप्रभा भी मुनिनिकी भक्ति कर पुत्रके पीछे ही
आई अर शत्रुघ्न नमस्कार कर मुनिनिके मुख धर्म श्रवण करता भया, मुनि कहते भये हे नृप। यह
संसार असार है वीतरागका मार्ग सार है, जहां श्रावकके वारह व्रत कहे, मुनिके अठाईस मूल गुण कहे मु-

पिता श्रीनन्दन तो केवली भया अर ये सातों महामुनि चरण ऋद्धि आदि अनेक ऋद्धिके धारक श्रुतकेवली भये सो चातुर्मासिक विषै मथुराके वनविषै वटके वृक्ष तले आय विराजे। तिनके तपके प्रभावकर चमरेंद्रकी प्रेरी मरी दूर भई जैसे श्वसुरको देखकर व्यभिचारणी नारी दूर भागै मथुराका समस्त मण्डल सुखरूप भया विना वाहे धान्य सहजहीमें उगे, समस्त रोगनिसे रहित मथुरापुरी ऐसी शोभती भई जैसे नई वधू पतिको देखकर प्रसन्न होय, वह महामुनि रसपरत्यागादि तप अर वेला तेल पक्षोपवासादि अनेक तपके धारक जिनको चार महीना चौमासे रहना तो मथुराके वनविषै अर चारण ऋद्धिके प्रभावतैं चाहे जहां आहार कर आवें सो एक निमिष मात्र विषै आकाशके मार्ग होय पोदनापुर पारणाकर आवें बहुरि विजयपुर कर आवें उत्तम श्रावकके घर पात्र भोजनकर संयमनिमित्त शरीरको राखें, कर्मके खिपायवेको उद्यमी एक दिन वे धीर वीर महाशांतभावके धारक जूड़ा प्रमाण धरती देख विहारकर ईर्या समितिके पालनहारे आहारके समय अयोध्या आये, शुद्ध भिक्षाके लेनहारे प्रलंबित हैं महा भुजा जिनकी अर्हद्दत्त सेठके घर आय प्राप्त भए तब अर्हद्दत्तने विचारी वर्षा कालविषै मुनिका विहार नाहीं ये चौमासा पहिलि तो यहां आये नाहीं अर मैं यहां जे जे साधु विराजे हैं गुफामें नदीके तीर वृक्ष तल शून्य स्थानकविषै वनके चैत्यालयनिविषै जहां जहां चौमासा साधु तिष्ठे हैं वे मैं सर्व बंदे यह तो अबतक देखे नाहीं ये आचारांग सूत्रकी आज्ञासे परांगमुख इच्छा विहारी हैं वर्षाकाल विषै भी भ्रमते फिरे हैं जिन आज्ञा परांगमुख ज्ञानरहित निराचारी आचार्यकी आम्नायसे रहित हैं, जिन आज्ञा पालक होंय तो वर्षाविषै विहार क्यों करें, सो यह तो उठ गया अर याके पुत्रकी वधूने अति भक्तिकर प्रासुक आहार दिया सो मुनि आहार लेय भगवानके चैत्यालय आय जहां द्युतिभट्टारक विराजते हुते ये सप्तर्षि ऋद्धिके प्रभावकर चार अंगुल अलिप्त चले आये अर चैत्यालय विषै धरतीपर पग धरते आये आचार्य उठ खड़े भये अतिआदरसे इनको नमस्कार किया अर जे द्युति भट्टारकके शिष्य हुते तिन सबने नमस्कार किया बहुरि ये सप्त तो जिन बन्दनाकर आकाशके मार्ग मथुरा गये इनके गये पीछे अर्हद्दत्त सेठ चैत्यालयविषै आया तब द्युतिभट्टारकने कही- सप्तमहर्षि महायोगीश्वर

मुनि यहां आये हुते तुमने हूं वह बंदे हैं वे महा पुरुष महातपके धारक हैं चार महीना मथुरा निवास
चारणमुनि यहां आये हुते तुमने हूं वह बंदे हैं वे महा पुरुष महातपके धारक हैं चार महीना मथुरा निवास

किया है अर चाहे जहां अहार ले जाय आज अयोध्या विषै आहार लिया चैत्यालय दर्शन कर गये हमसे
धर्मचर्चा करी, वे महा तपोधन गगनगामी शुभ चेष्टाके धरणहारे परम उदार ते मुनि वन्दिवे योग्य हैं। तब
वह श्रावकनिविषै अग्रणी आचार्यके मुखसे चारण मुनिनिकी महिमा सुनकर खेदखिन्न होय पश्चाताप करता
भया। धिक्कार मोहि, मैंने सम्यक्दर्शन रहित वस्तुका स्वरूप न पिछाना, मैं अत्याचारी मिथ्यादृष्टि मो स-
मान अर अधर्मी कौन, वे महा मुनि मेरे मन्दिर आहारको आये अर मैं नवधा भक्तिकर आहार न दिया।
जो साधुको देख सन्मान न करे अर भक्तिकर अन्न जल न देय सो मिथ्यादृष्टि है, मैं पापी पापात्मा पा-
पका भाजन महा निन्द्य मो समान और अज्ञानी कौन, मैं जिनवाणीसे विमुख, अब मैं जौं लग उनका
दर्शन न करूं तौलग मेरे मनका दाह न मिटे, चारण मुनिनिकी तो यही रीति है चौमासे निवास तो
एक स्थान करें अर आहार अनेक नगरीविषै कर आवें, चारण ऋद्धिके प्रभाव कर उनके अंगसे जीवोंको
बाधा न होय ॥

अथानन्तर—कार्तिककी पूनो नजदीक जान सेठ अर्हद्दत्त महासम्यक्दृष्टि नृपतुल्य विभूति जाके, अ-
योध्यातैं मथुराको सर्वकुटुम्ब सहित सप्त ऋषिके पूजन निमित्त चला, जाना है मुनिनिका माहात्म्य जाने
अर अपनी वारम्वार निन्दा करै है रथ हाथी पियादे तुरङ्गनिके असवार इत्यादि बड़ी सेनासहित योगी-
श्वरनिकी पूजाको शीघ्र ही चला, बड़ी विभूति कर युक्त शुभ ध्यानविषै तत्पर कार्तिक सुदी सप्तमीके दिन
मुनिनिके चरणनिविषै जाय पहुंचा। वह उत्तम सम्यक्तका धारक विधिपूर्वक मुनिवन्दनाकर मथुराविषै
अतिशोभा करावता भया, मथुरा स्वर्ग समान सोहती भई, यह वृत्तान्त सुन शत्रुघ्न शीघ्रही महा तुरङ्ग
चढ़ा सप्त ऋषिनिके निकट आया अर शत्रुघ्नकी माता सुप्रभा भी मुनिनिकी भक्ति कर पुत्रके पीछे ही
आई अर शत्रुघ्न नमस्कार कर मुनिनिके मुख धर्म श्रवण करता भया, मुनि कहते भये हे नृप! यह
संसार असार है वीतरागका मार्ग सार है, जहां श्रावकके बारह व्रत कहे, मुनिके अठाईस मूल गुण कहे मु-

नीनिको निर्दोष आहार लेना अकृत अकारित राग रहित प्रासुक आहार विधिपूर्वक लिये योगीश्वरोंके तपकी वधवारी होय तब वह शत्रुघ्न कहता भया—हे देव ! आपके आये या नगरतैं मरी गई, रोग गए, दुर्भिक्ष गया, सब विघ्न गए, सुभिक्ष भया सब साता भई प्रजाके दुःख गए, सर्व समृद्धि भई जैसे सूर्यके उदयतैं कमलनी फूलै, कोई दिन आप यहां ही तिष्ठो। तब मुनि कहते भये—हे शत्रुघ्न ! जिन आज्ञा सिवाय अधिक रहना उचित नाहीं, यह चतुर्थकाल धर्मके उद्योतका कारण है याविषैं मुनीन्द्रका धर्म भव्य जीव धारै हैं जिन आज्ञा पालै हैं महामुनिनिके केवलज्ञान प्रगट होय है मुनिसुव्रतनाथ तो मुक्त भये अब नमि, नेमि, पार्श्व, महावीर चार तीर्थङ्कर और होवेंगे बहुरि पंचमकाल जाहि दुखमा काल कहिये सो धर्मकी न्यूनतारूप प्रवरतेगा, ता समय पाखण्डी जीवनिकर जिनशासन अति ऊंचा है तोहू आच्छादित होयगा जैसे रजकर सूर्यका विम्ब आच्छादित होय पाखण्डी निर्दई दया धर्मको लोपकर हिंसाका मार्ग प्रवर्तन करेंगे ता समय मसान समान ग्राम अर प्रेत समान लोक कुचेष्टाके करणहारे होवेंगे, महाकुधर्मविषैं प्रवीण क्रूर चोर पाखण्डी दुष्टजीव तिनकर पृथिवी पीड़ित होयगी, किसाण दुखी होवेंगे, प्रजा निर्धन होयगी, महा हिंसक जीव परजीवनिके घातक होवेंगे निरन्तर हिंसाकी बढवारी होयगी पुत्र माता पिताकी आज्ञासे विमुख होवेंगे अर माता पिता हू स्नेहरहित होवेंगे अर कलिकालविषै राजा लुटेरे होवेंगे कोई सुखी नजर न आवेगा कहिवेके सुखी वे पापचित्त दुर्गतिकी दायक कुकथा कर परस्पर पाप उपजावेंगे। हे शत्रुघ्न ! कलिकालविषै कषायकी बहुलता होवेगी अर अतिशय समस्त विलय जावेंगे चारण मुनि देव विद्याधरनिका आवना न होयगा। अज्ञानी लोक नग्नमुद्राके धारक मुनिनिको देख निन्दा करेंगे, मलिनचित्त मूढ़जन अयोग्यको योग्य जानेंगे जैसे पतंग दीपककी शिखाविषै पड़ै तैसे अज्ञानी पापपंथविषै पड़ दुर्गतिके दुःख भोगेंगे अर जे महा शांत स्वभाव तिनकी दुष्ट निन्दा करेंगे, विषयी जीवनिको भक्तिकर पूजेंगे, दीन अनाथ जीवनिको दया भावकर कोई न देवेगा अर मायाचारी दुराचारिनिको लोक देवेंगे सो वृथा जायगा जैसे शिलाविषै बीज बोय निरन्तर सींचे तोहू कछु कार्यकारी नाहीं, तैसे कुशील पुरुषनिको

विनय भक्तिकर दिया कल्याणकारी नाहीं, जो कोई मुनिनिकी अवज्ञा करै है अर मिथ्या मार्गियोंको भक्तिकर पूजै है सो मलयागिरिचन्दनको तजकर कटकवृक्षको अगीकार करै है ऐसा जानकर हे वत्स ! तू दान पूजा कर जन्म कृतार्थ कर, गृहस्थीको दान पूजा ही कल्याणकारी है अर समस्त मथुराके लोक धर्मविषै तत्पर होवो, दया पालो, साधर्मियोंसे वात्सल्य धारो, जिनशासनकी प्रभावना करो, घर घर जिनबिंब थापो पूजा अभिषेककी प्रवृत्ति करो जाकर सब शांति हो, जो जिनधर्मका आराधन न करेगा अर जाके घरमें जिन पूजा न होयगी, दान न होवेगा ताहि आपदा पड़ेगी जैसे मृगको व्याघ्री भखै तैसे धर्मरहितको मरी भखेगी अंगुष्ठ प्रमाण हू जिनेंद्रकी प्रतिमा जिसके विराजेगी उसके घरविषै मरी यूं भाजेगी जैसे गरुड़के भयसे नागिनि भागे। ये वचन मुनिके सुन शत्रुघ्नने कहा—हे प्रभो ! जो आप आज्ञा करी त्यों ही लोक धर्मविषै प्रवर्तेंगे ॥

अथानन्तर—मुनि आकाश मार्ग विहार कर अनेक निर्वाण भूमि वन्दकर सीताके घर आहारको आये। कैसे हैं मुनि ? तप ही है धन जिनके सीता महा हर्षको प्राप्त होय श्रद्धा आदि गुणोंकर मंडित परम अन्नकर विधिपूर्वक पारणा करावती भई, मुनि आहार लेय आकाशके मार्ग विहार कर गये शत्रुघ्नने नगरीके बाहर अर भीतर अनेक जिनमन्दिर कराये घर घर जिनप्रतिमा पधराईं नगरी सब उपद्रवरहित भई, वन उपवन फल पुष्पादिक कर शोभित भए, वापिका सरोवरी कमलों कर मंडित सोहती भई पक्षी शब्द करते भए कैलाशके तटसमान उज्ज्वल मंदिर नेत्रोंको आनन्दकारी विमान तुल्य सोहते भए अर सर्व किसाण लोक संपदाकर भरे सुखसूं निवास करते भए गिरिके शिखर समान ऊंचो अनाजोंके ढेर गावोंविषै सोहते भये स्वर्ण रत्नादिककी पृथिवीविषै विस्तीर्णता होती भई सकल लोक सुखी रामके राज्य विषै देवों समान अतुल विभूतिके धारक धर्म अर्थ कामविषै तत्पर होते भए शत्रुघ्न मथुराविषै राज्य करे रामके प्रतापसे अनेक राजाओंपर आज्ञा करता सोहै जैसे देवोंविषै वरुण सोहे या भांति मथुरापुरीका ऋद्धिके धारी मुनिनिका प्रतापकर उपद्रव दूर होता भया। जो यह अध्याय बांचे सुने सो पुरुष शुभनाम

शुभगोत्र शुभसातावेदनीका बन्ध करै जो साधुवोंकी भक्ति विषै अनुरागी होय. अर साधुवोंका समागम चाहे वह मनवांछित फलको प्राप्त होय या साधुवोंके संगको पायकर धर्मको आराध कर प्राणी सूर्यसे भी अधिक दीप्तिको प्राप्त होवे हैं ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषा वचनिकाविषै मथुराका उपसर्ग निवारण वर्णन करनेवाला बानवेवां पर्व पूर्ण भया ॥ ९२ ॥

अथानन्तर—विजियार्धकी दक्षिण श्रेणीविषै रत्नपुरनामा नगर वहां राजा रत्नरथ उसकी राणी पूर्णचन्द्रानना उसके पुत्री मनोरमा महारूपवती उसे यौवनवती देख राजा वर ढूंढवेकी बुद्धिकर व्याकुल भया मन्त्रियोंसे मंत्र किया कि यह कुमारी कौनको परणाऊं या भांति राजा चिन्तासंयुक्त कईएक दिन गए एक दिन राजाकी सभाविषै नारद आया राजाने बहुत सन्मान किया नारद सबही लौकिक रीतियोंविषै प्रवीण, उसे राजाने पुत्रोंके विवाहनेका वृत्तांत पूछा तब नारदने कहा रामका भाई लक्ष्मण महा सुन्दर है जगतविषै मुख्य है चक्रके प्रभावकर नवाए हैं समस्त नरेंद्र जिसने ऐसी कन्या उसके हृदयविषैं आनंददायिनी होवै जैसे कुमुदनीके वनको चांदनी आनंददायिनी होय। जब या भांति नारदने कही तब रत्नरथके पुत्र हरिवेग मनोवेग वायुवेगादि महामानी स्वजनोंके घातकर उपजा है वैर जिनके प्रलयकालकी अग्नि समान प्रज्ज्वलित होय कहते भए जो हमारा शत्रु, जिसे हम मारा चाहैं उसे कन्या कैसे देवें यह नारद दुराचारी है इसे यहांसे काढ़ो, ऐसे वचन राजपुत्रोंके सुन किंकर नारद पर दौड़े तब नारद आकाश मार्ग विहार कर शीघ्रही अयोध्या लक्ष्मणपै आया अनेक देशांतरकी वार्त्ता कह रत्नरथकी पुत्री मनोरमाका चित्राम दिखाया, सो वह कन्या तीन लोककी सुंदरियोंका रूप एकत्र कर मानों बनाई है। सो लक्ष्मण चित्रपट देख अति मोहित होय कामके वश भया यद्यपि महा धीर वीर है तथापि वशीभूत होय गया. मनविषै विचारता भया जो यह स्त्री रत्न मुझे न प्राप्त होय तो मेरा राज्य निष्फल अर जीतव्य वृथा। लक्ष्मण नारदसे कहता भया—हे भगवन्। आपने मेरे गुणकीर्तन किये अर उन दुष्टोंने आपसे विरोध किया, सो वे पापी प्रचण्डमानी महा क्षुद्र दुरात्मा कार्यके विचारसे रहित हैं उनका मान मैं दूर करूंगा आप समाधानविषै

चित्त लावो तिहारे चरण मेरे सिर पर हैं अर उन दुष्टोंको तिहारे पायन पाडूंगा ऐसा कहकर विराधित विद्याधरको बुलाया अर कही रत्नपुर ऊपर हमारी शीघ्र ही तयारी है तातैं पत्र लिख सर्व विद्याधरोंको बुलावो रणका सरंजाम करावो ॥

तब विराधितने सर्वोंको पत्र पठाये वे महासेना सहित शीघ्र ही आए लक्ष्मण राम सहित सर्व नृपोंको लेकर रत्नपुरकी तरफ चले जैसे लोकपालों सहित इन्द्र चले, जीत जिसके सन्मुख है नाना प्रकारके शस्त्रोंके, समूह कर आच्छादित करी हैं सूर्यकी किरण जाने, सो रत्नपुर जाय पहुंचे उज्ज्वल छत्रकर शोभित तब राजा रत्नरथ परचक्र आया जान अपनी समस्त सेना सहित युद्धको निकसा, महातेज कर। सो चक्र करोत कुठार बाण खड्ग बरछी पाश गदादि आयुधनिकर तिनके परस्पर महा युद्ध भया, अप्सरोंके समूह युद्ध देख योधावों पर पुष्पवृष्टि करते भए, लक्ष्मण परसेनारूप समुद्रके सोखिवेको बड़वानल समान आप युद्ध करनेको उद्यमी भया, परचक्रके योधा रूप जलचरोंके क्षयका कारण, सो लक्ष्मणके भयकर रथोंके तुरंगोंके हाथियोंके सवार सब दशोंदिशाओंको भागे अर इन्द्रसमान है शक्ति जिनकी, ऐसे श्रीराम अर सुग्रीव हनूमान इत्यादि सब ही युद्धको प्रवरते इन योधाओंकर विद्याधरोंकी सेना ऐसे भागी जैसे पवन कर मेघ पटल विलाय जावें तब रत्नरथ अर रत्नरथके पुत्रोंको भागते देख नारदने परम हर्षित होय ताली देय हंसकर कहा अरे रत्नरथके पुत्र हो। तुम महाचपल दुराचारी मन्दबुद्धि लक्ष्मणके गुणोंको उच्चता न सह सके सो अब अपमानको पाय क्यों भागो हो ? तब उन्होंने कुछ जवाब नहीं दिया उसी समय मनोरमा कन्या अनेक सखियों सहित रथपर चढ़कर महा प्रेमकी भरी लक्ष्मणके समीप आई जैसे इन्द्राणी इन्द्रके समीप आवै, उसे देखकर लक्ष्मण क्रोधरहित भए, भृकुटी चढ़ रही थी सो शीतल वदन भए कन्या आनन्दकी उपजावनहारी तब राजा रत्नरथ अपने पुत्रों सहित मान तज नाना प्रकारकी भेंट लेकर श्रीराम लक्ष्मणके समीप आया राजा देश कालकी विधिको जाने है अर देखा है अपना अर इनका पुरुषार्थ जिसने तब नारद सबके बीच रत्नरथको कहते भए हे रत्नरथ। अब तेरी क्या वार्ता तू रत्नरथ है कै

रजरथ है वृथा मान करे हुता सो नारायण बलदेवोंसे कहा मान अर ताली वजाय रत्नरथके पुत्रोंसे हंसकर कहता भया—हो रत्नरथके पुत्र हो ! यह वासुदेव जिनको तुम अपने घरमें उद्धत चेष्टा रूप होय मनविषै आया सो ही कही अव पायन क्यों पड़ो हो ? तब वे कहते भए—हे नारद ! तिहारा कोप भी गुण करै जो तुमने हमसे कोप किया तो बड़े पुरुषोंका सम्बन्ध भया, इनका सम्बन्ध दुर्लभ है या भांति चणमात्र वार्ता कर सब नगरविषै गए श्रीरामको श्रीदामा परणाई रति समान है रूप जाका उसे पायकर राम आनन्दसे रमते भये अर मनोरमा लक्ष्मणको परणाई सो साक्षात् मनोरमा ही है,या भांति पुण्यके प्रभाव कर अद्भुत वस्तुकी प्राप्ति होय है तातैं भव्य जीव सूर्यसे अधिक प्रकाश रूप जो वीतरागका मार्ग उसे जानकर धर्मकी आराधना करो ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषा वचनिकाविषै रामको रतिदामाका लाभ अर लक्ष्मणको मनोरमाका लाभ वर्णन करनेवाला तिराणवेवा पर्व पूर्ण भया ॥ ९३ ॥

अथानन्तर—और भी विजयार्धके दक्षिण श्रेणीविषैं विद्याधर हुते वे सब लक्ष्मणने युद्धकर जीते कैसा है युद्ध ? जहां नानाप्रकारके शस्त्रोंके प्रहारकर अर सेनाके संघट्टकर अंधकार होय रहा है। गौतम स्वामी कहै हैं—हे श्रेणिक ! वे विद्याधर अत्यंत दुस्सह महा विषधर समान हुते सो सब राम लक्ष्मणके प्रतापकर मानरूप विषसे रहित होय गए, इनके सेवक भए तिनकी राजधानी देवोंकी पुरी समान तिनके नाम कैयक तुझे कहूं हूं—रविप्रभ कांचनप्रभ मेघप्रभ शिवमंदिर गंधर्वगति अमृतपुर लक्ष्मीधरप्रभ किन्नर पुर मेघकूट मर्त्यगति चक्रपुर रथनूपुर वहुरव श्रीमलय श्रीगृह अरिंजय भास्करप्रभ ज्योतिपुर चंद्रपुर गंधार मलय सिंहपुर श्रीविजयपुर भद्रपुर यक्षपुर तिलक स्थानक इत्यादि बड़े बड़े नगर सो सब लक्ष्मणने वशमें किए सब पृथिवीको जीत, सप्त रत्न कर सहित लक्ष्मण नारायणके पदका भोक्ता होता भया, सप्तरत्नोंके नाम चक्र, शंख, धनुष, शक्ति, गदा, खड्ग, कौस्तुभ मणि, अर रामके चार हल, मूसल, रत्नमाला, गदा। या भांति दोनों भाई अभेद भाव पृथिवीका राज्य करें, तब श्रेणिक गौतमस्वामीको पूछता भया—हे भगवन् !

तिहारे प्रसादसे मैंने राम लक्ष्मणका माहात्म्य विधिपूर्वक सुना अब लवण अंकुशकी उत्पत्ति अर लक्ष्मणके पुत्रोंका वर्णन सुना चाहूं हूं सो आप कहो। तब गौतम गणधर कहते भए—हे राजन्! मैं कहूं हूं सुन-राम लक्ष्मण जगतविषै प्रधानपुरुष निःकंटक राज्य भोगते भए तिनके दिन पक्ष मास वर्ष महा सुखसे व्यतीत होंय जिनके बड़े कुलकी उपजी देवांगना समान स्त्री लक्ष्मणके सोलहहजार तिनमें आठ पटराणी कीर्ति समान लक्ष्मी समान रति समान गुणवती शीलवती अनेक कलामें निपुण महा सौम्य सुन्दराकार तिनके नाम प्रथम पटराणी राजा द्रोणमेघकी पुत्री विशिल्या दूजी रूपवती जिस समान और रूपवान नाहीं तीजी वनमाला चौथी कल्याणमाला पांचमी रतिमाला छठी जिनपद्मा जिसने अपने मुखकी शोभाकर कमल जीते सातमी भगवती आठमी मनोरमा अर रामके राणी आठ हजार देवांगना तिनविषै चार पटराणी जगत्विषै प्रसिद्ध कीर्ति जिनमें प्रथम जानकी दूजी प्रभावती तीजी रतिप्रभा चौथी श्रीदामा इन सबोंके मध्य सीता सुन्दर लक्षण ऐसी सोहै ज्यों तारानिमें चंद्रकला अर लक्ष्मणके पुत्र अढ़ाईसौ तिनमें कैयकोंके नाम कहूं हूं सो सुन—वृषभ धरण चन्द्र शरभ मकरध्वज हरिनाग श्रीधर मदन यह महाप्रसिद्ध सुन्दर चेष्टाके धारक जिनके गुणनि कर सब लोकनिके मन अनुरागी अर विशिल्याका पुत्र श्रीधर अयोध्यामें ऐसा सोहै जैसा आकाशविषै चन्द्रमा अर रूपवतीका पुत्र पृथिवीतिलक सो पृथिवीमें प्रसिद्ध अर कल्याणमाला का पुत्र महा कल्याणका भाजन मंगल अर पद्मावती पुत्र विमलप्रभ अर वनमालाका पुत्र अर्जुनप्रभ अर अतिवीर्यकी पुत्रीका पुत्र श्रीकेशी अर भगवतीका पुत्र सत्यकेसी अर मनोरमाका पुत्र सुपार्श्वकीर्ति ये सब ही महा बलवान पराक्रमके धारक शस्त्र शास्त्र विद्यामें प्रवीण इन सब भाईनिमें परस्पर अधिक प्रीति जैसे नख मांसमें दृढ़ कभी भी जुदे न होवें, तैसे भाई जुदे नाहीं, योग्य है चेष्टा जिनकी परस्पर प्रेमके भरे वह उसके हृदयमें तिष्ठे वह वाके हृदयमें तिष्ठ जैसे स्वर्गमें देव रमें तैसे ये कुमार अयोध्यापुरीमें रमते भये, जे प्राणी पुण्याधिकारी हैं पूर्व पुण्य उपार्जे हैं महाशुभ चित्त हैं तिनके जन्मसे लेकर सकल मनोहर वस्तु ही आय मिले हैं रघुवंशिनिके साढ़े चारकोटि कुमार महामनोज्ञ चेष्टाके धारक नगरके वन उपवनादिमें

महा मनोग्य चेष्टासहित देवनि समान रमते भये अर राम लक्ष्मणके सोलह हजार मुकुटबन्ध राजा सूर्यहूतैं अधिक तेजके धारक सेवक होते भये।

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषा वचनिकाविषै राम लक्ष्मणकी ऋद्धि वर्णन करनेवाला चौरानवेवा पर्व पूर्ण भया॥ ९४॥

अथानन्तर—राम लक्ष्मणके दिन अति आनन्दसे व्यतीत होय हैं धर्म अर्थ काम ये तीनों इनके अविरुद्ध होते भये, एक समय सीता सुखसे विमान समान जो महिल तामें शरदके मेघ समान उज्ज्वल सेजपर सोवती थी सो पिछले पहिर वह कमलनयनी दोय स्वप्न देखती भई बहुरि दिव्य वादित्रनिके नाद सुन प्रतिबोधको प्राप्त भई निर्मल प्रभात भए स्नानादि देह क्रियाकर सखिनि सहित स्वामीपै गई जायकर पूछती भई—हे नाथ! मैंने आज रात्रिविषै स्वप्ने देखे तिनका फल कहो, दोय उत्कृष्ट अष्टापद शरदके चन्द्रमासमान उज्ज्वल अर क्षोभको प्राप्त भया जो समुद्र ताके शब्द समान जिनके शब्द कैलाशके शिखरसमान सुन्दर सर्व आभरणनिकर मंडित महा मनोहर हैं केश जिनके अर उज्ज्वल हैं दाढ़ जिनकी सो मेरे मुखमें पैठे अर पुष्पक विमानके शिखरसे प्रबल पवनके झकोरकर मैं पृथ्वीविषै पड़ी तब श्रीरामचन्द्र कहते भये—हे सुन्दरि। दोय अष्टापद मुखमें पैठे देखे ताके फलकर तेरे दोय पुत्र होयंगे अर पुष्पक विमानसे पृथ्वीविषै पड़ना प्रशस्त नाहीं सो कछु चिन्ता न करो, दानके प्रभावसे क्रूर ग्रह शांत होवेंगे॥

अथानन्तर—वसन्तसमयरूपी राजा आया तिलक जातिके वृक्ष फूले सोई उसके बख्तर अर नीम जातिके वृक्ष फूले वेई गजराज तिनपर आरूढ अर आंब मौर आये सो मानो वसन्तका धनुष अर कमल फूले सो वसन्तके बाण अर केसरी फूले वेई रतिराजके तरकश अर भ्रमर गुंजार करै हैं सो मानो निर्मल श्लोकोंकर वसंत नृपका यश गावै हैं अर कदम्ब फूले तिनकी सुगन्ध पवन आवै है सोई मानों वसंत नृपके निश्वास भये अर मालतीके फूल फूले सो मानो वसंत शीतकालादिक अपने शत्रुनिको हंसै है अर कोयल मिष्ट वाणी बोले है सो मानों वसंतराजाके वचन है या भांति वसंत समय नृपतिकीसी लीला धरे

आया। वसंतकी लीला लोकनिको कामका उद्वेग उपजावनहारी है बहुरि यह वसंत मानों सिंह ही है आकोट जाति वृक्षादिके फूल वेई हैं नख जाके अर कुरवक जातिके वृक्षनिके फूल आये तेई भए दाढ़ जाके अर महारक्त अशोकके पुष्प वेई हैं नेत्र जाके अर चंचलपल्लव वेई हैं जिह्वा जिसकी ऐसा वसंत केसरी आय प्राप्त भया लोकोंके मनकी वृत्ति सोई भई गुफा तिनमें पैठा। महेन्द्रनामा उद्यान नंदनवन समान सदा ही सुन्दर है सो वसंत समय अति सुन्दर होता भया, नाना प्रकारके पुष्पनिकी पाखुडी अर नाना प्रकारकी कूपल दक्षिणदिशिकी पवनकर हालती भई सो मानों उन्मत्त भई घूमे हैं अर वापिका कमलादिक करि आच्छादित अर पक्षिनिके समूह नाद करे हैं अर लोक सिवाणोंपर तथा तीरपर बैठे हैं अर हंस सारस चकवा क्रौंच मनोहर शब्द करे हैं अर कारण्ड बोल रहे हैं इत्यादि मनोहर पक्षिनिके मनोहर शब्दकरि रागी पुरुषनिको राग उपजावे हैं, पक्षी जलविषै पड़े हैं अर उठे हैं तिनकर निर्मल जल कल्लोल रूप होय रहा है जल तो कमलादिक कर भरा है अर स्थल जो है सो स्थल पद्मादिक पुष्पनि कर भरे हैं अर आकाश पुष्पनिकी मकरन्दकर मंडित होय रहा है, फूलनिके गुच्छे अर लता वृक्ष अनेक प्रकारके फूल रहे हैं वनस्पतिकी परमशोभा होय रही है ता समय सीता कछु गर्भके भारकर दुर्बलशरीर भई तब राम पूछते भये—हे कांते! तेरे जो अभिलाषा होय सो पूर्ण करूं। तब सीता कहती भई—हे नाथ! अनेक चैत्यालयनिके दर्शन करवेकी मेरी वांछा है, भगवानके प्रतिबिंब पांचों वर्णके लोकविषै मंगलरूप तिनको नमस्कार करवेको मेरा मनोरथ है, स्वर्ण रत्नमई पुष्पनिकर जिनेंद्रको पूजूं यह मेरे महाश्रद्धा है अर कहा वांछूं? ये सीताके वचन सुनकर राम हर्षित भये, फूल गया है मुखकमल जिनका राजलोकविषै विराजते हुते सो द्वारपालीको बुलाय आज्ञा करी कि हे भद्रे। मंत्रिनिको आज्ञा पहुंचावो जो समस्त चैत्यालयनिविषै प्रभावना करें अर महेंद्रोदयनाम उद्यानविषै जे चैत्यालय हैं तिनकी शोभा करावें अर सर्व लोकको आज्ञा पहुंचावो कि जिन मंदिरविषै पूजा प्रभावना आदि अति उत्सव करें अर तोरण ध्वजा घण्टा झालरी चन्दोवा सायवान महामनोहर वस्त्रनिके बनावें तथा सुन्दर समस्त उपकरण देहुरा चढ़ावें,

लोक समस्त पृथिवी विषैं जिनपजा करैं अर कैलाश सम्मेदशिखर पावापुर चम्पापुर गिरिनार शत्रुञ्जय मांगीतुंगी आदि निर्वाण क्षेत्रनिविषै विशेष शोभा करावो कल्याण रूप दोहुला साताको उपजा है सो पृथिवीविषै जिनपूजाकी प्रवर्त्ति करा हम सीतासहित धर्मक्षेत्रनिमें विहार करेंगे। यह रामकी आज्ञा सुन वह द्वारपाली अपनी ठौर अन्यका राखकर जाय मंत्रिनको आज्ञा पहुंचावती भई अर वे स्वामीकी आज्ञा प्रमाण अपने किंकरनिका आज्ञा करते भए। सर्व चैत्यालयनिविषै शोभा कराई अर महा पर्वतोंकी गुफाओंके द्वार पूर्ण कलश थापे, मोतिनिके हारनिकर शोभित अर विशाल स्वर्णकी भांतिविषै मणिनिके चित्राम रचे महेन्द्रोदय नाम उद्यानकी शोभा नन्दनवनकी शोभा समानकर अत्यन्त निर्मल शुद्धमणिनिके दर्पण थंभविषै थापे अर झरोखनिके मुखविषै निर्मल मोतिनिके हार लटकाये सो जलनीझरना समान सोहैं अर पांच प्रकारके रत्ननिकी चूर्णकर भूमि मंडित करी अर सहस्रदल कमल तथा नाना प्रकारके कमल तिनकर शोभा करी अर पांच वर्णके मणिनिके दण्ड तिनविषै महा सुन्दर वस्त्रनिको ध्वजा लगाय मंदिरनिके शिखरपर चढ़ाई, अर नाना प्रकारके पुष्पनिको माला जिनपर भ्रमर गुञ्जार करें ठौर ठौर लुंबाई हैं अर विशाल वादित्रशाला नाट्यशाला अनेक रची हैं तिनकर वन अति शोभै है मानों नंदनवन ही है तब श्रीरामचन्द्र इन्द्रसमान सब नगरके लोकनिकर युक्त समस्त राजलोकनिसहित वनविषै पधारे। सीता अर आप गजपर आरूढ़ कैसे सोहैं? जैसे शची सहित इन्द्र ऐरावत गजपर चढ़े सोहैं अर लक्ष्मण भी परम ऋद्धिको धरे वनविषै जाते भए अर औरहू सब लोक आनंदसे वनविषै गये, अर सबनिके अन्न पान वनहीमें भया जहां महा मनोग्य लतानिके मंडप अर केलिके वृक्ष तहां राणी तिष्ठी अर औरहू लोक यथा-योग्य वनविषै तिष्ठे, राम हाथीतैं उतरकर निर्मल जलका भरा जो सरोवर नाना प्रकारके कमलनिकर संयुक्त उसविषै रमते भए जैसे इन्द्र क्षीर सागरविषै रमै तहां क्रीड़ाकर जलतैं बाहिर आए, दिव्य सामग्रीकर विधिपूर्वक सीतासहित जिनेन्द्रकी पूजा करते भए, राम महा सुंदर अर वनलक्ष्मी समान जे वल्लभा तिनकर मंडित ऐसे सोहते भये मानो मूर्तिवंत वसंत ही है। आठ हजार राणी देवांगना समान तिन सहित

राम ऐसे सोहैं मानों ये तारानिकर मंडित चंद्र ही हैं अमृतका आहार अर सुगंधका विलेपन मनोहर सेज मनोहर आसन नाना प्रकारके सुगंध माल्यादिक स्पर्श रस गंधरूप शब्द पांचों इंद्रियनिके विषय अति मनोहर रामको प्राप्त भए जिनमंदिरविषै भलीविधिसे नृत्य पूजा करी, पूजा प्रभावनाविषै रामके अति अनुराग होता भया, सूर्यहूतैं अधिक तेजके धारक राम देवांगनासमान सुन्दर जे दारा तिन सहित कैयक दिन सुखसे वनविषै तिष्ठे ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषा वचनिकाविषै जिनेंद्रपूजाकी सीताकू अभिलाषा गर्भका प्रादुर्भाव वर्णन करनेवाला पिचाणवेवां पर्व पूर्ण भया ॥ ९५ ॥

अथानन्तर—प्रजाके लोक रामके दर्शनकी अभिलाषा कर वनही विषै आये जैसे तिसाये पुरुष सरोवरपै आवैं, तब बाहिरले दरवानने लोकोंके आवनेका वृत्तांत द्वारपालियोंसे कहा। वे द्वारपाली भीतर राजलोकमें रामसे जायकर कहती भईं कि—हे प्रभो! प्रजाके लोक आपके दर्शनको आये हैं अर सीताके दाहिनी आंख फुरकी तब सीता विचारती भई यह आंख मुझे क्या कहे है। कछू दुःखका आगमन बतावै है। आगे अशुभके उदय कर समुद्रके मध्यमें दुःख पाये तौहू दुष्ट कर्म संतुष्ट न भया क्या और भी दुःख दिया चाहे है जो इस जीवने रागद्वेषके योग कर कर्म उपार्जे हैं तिनका फल ये प्राणी अवश्य पावे हैं काहू कर निवारा न जाय तब सीता चिंतावती होय और राणीनिसे कहती भई—मेरी दाहिनी आंख फरकनेका फल कहो। तब एक अनुमति नामा राणी महाप्रवीण कहती भई—हे देवि! या जीवने जे कर्म शुभ अथवा अशुभ उपार्जे हैं वे या जीवके भले बुरे फलके दाता हैं कर्महीको काल कहिये अर विधि कहिये अर दैव कहिये ईश्वर भी कहिये, सब संसारी जीव कर्मनिके आधीन हैं, सिद्ध परमेष्ठी कर्मनिसे रहित हैं। बहुरि गुणदोषकी ज्ञाता राणी गुणमाला सीताको रुदन करती देख धीर्य बंधाय कहती भई—हे देवि! तुम पतिके सबनिविषै श्रेष्ठ हो, तुमको काहू प्रकारका दुःख नाहीं अर और राणी कहती भई—बहुत विचारकर कहा? शांतिकर्म करो, जिनेन्द्रका अभिषेक अर पूजा करावो अर किमिच्छिक दान देवो जाकी जो

इच्छा होय सो ले जावो, दान पूजाकर अशुभका निवारण होय है तातैं शुभ कार्यकर अशुभको निवारो। उ० १५६ या भांति इन्होंने कही तब सीता प्रसन्न भई अर कही—योग्य है, दान पूजा अभिषेक अर तप ये अशुभके नाशक हैं दानधर्म विघ्नका नाशक वैरका नाशक है पुण्यका अर जशका मूल कारण है यह विचार कर भद्रकलश नामा भंडारीको बुलायकर कही—मेरे प्रसूति होय तौंलग किमिच्छा दान निरंतर देवो। तब भद्रकलशने कही जो आप आज्ञा करेंगे सोही होयगा, यह कहकर भंडारी गया अर जिनपूजादि शुभक्रियाविषै प्रवरता जितने भगवानके चैत्यालय हैं तिनविषैं नाना प्रकारके उपकरण चढ़ाये अर सब चैत्यालयनिमें अनेक प्रकारके वादित्र बजवाये मानों मेघ ही गाजै हैं अर भगवान्‌के चरित्र पुराण आदिके ग्रन्थ जिनमंदिरनिविषे पधराये अर त्रैलोक्यके पाठ समोसरणके पाठ द्वीपसमुद्रांतके पाठ प्रभुके मन्दिरोंमें पधराये अर दूध, दही, घृत, जल, मिष्टान्नके भरे कलश अभिषेकको पठाये अर सब खोजाओंमें प्रधान जो खोजा सो वस्त्राभूषण पहरे हाथी चढ़ा नगरविषे घोषणा फेरे जाको जो इच्छा होय सो ही लेवो। या भांति विधिपूर्वक दान पूजा उत्सव कराये, लोकपूजा दान तप आदिविषै प्रवर्ते पापबुद्धि रहित समाधानको प्राप्त भये। सीता शांतचित्त धर्ममार्गविषै अनुरक्त भई अर श्रीरामचंद्र मंडपविषे आय तिष्ठे। द्वारपालने जे नगरीके लोक आये हुते ते रामसे मिलाये। स्वर्ण रत्नकर निर्मापित अद्भुत सभाको देख प्रजाके लोक चकित होय गये, हृदयको आनन्दके उपजावनहारे राम तिनको देखकर नेत्र प्रसन्न भये प्रजाके लोक हाथजोड़ नमस्कार करते भये, कांपे है तन जिनका अर डरे है मन जिनका। तब राम कहते भए, हे लोको! तिहारे आगमका कारण कहो। तब विजयसुराजो मधुमानव सुलाधर काश्यप पिंगल कालोपम इत्यादि नगरके मुखिया मनुष्य निश्चल होय चरणनिकी तरफ चौंके। गल गया है गर्व जिनका राज तेजके प्रतापकर कछु कह न सके। यद्यपि चिरकाल में सांच साच कहा चाहें तथापि इनके मुखरूप मंदिरसे वाणीरूप वधू न निकसे तब रामने बहुत दिलासाकर कहा तुम कौन अर्थ आये हो सो कहो। या भांति कहा तोभी वे चित्राम कैसे होय रहे कछू न कहैं लज्जारूप फांसकर बंधा है कंठ जिनका अर चलायमान हैं नेत्र जिनके जैसे हिरणके बालक व्याकुलचित्त देखें तैसे देखें। तब

तिनविषै मुख्य विजय नाम पुरुष चलायमान है शब्द जिसका सो कहता भया—हे देव! अभयदानका प्रसाद होय। तब रामने कहा तुम काहू बातका भय मत करो तिहारे चित्तविषैं जो होय सो कहो तिहारा दुःख दूरकर तुमको साता उपजाऊंगा तिहारे औगुण न लूंगा गुण ही लूंगा जैसे मिले हुए दूध जल तिनमें जलको टार हंस दूध ही पीवे हैं। श्रीरामने अभय दान दिया तोभी अतिकष्टसे विचार २ धीरे स्वरकर विजय हाथ जोड़ सिर नवाय कहता भया कि हे नाथ नरोत्तम! एक विनती सुनो अब सकल प्रजा मर्यादा रहित प्रवर्तें है यह लोक स्वभावहीसे कुटिल हैं अर एक दृष्टांत प्रगट पावें तब इनको अकार्य करनेविषै कहा भय? जैसे बानर सहज ही चपल है अर महाचपल जो यंत्रपिंजरा उसपर चढ़ा तब कहा कहना। निर्बलोंकी यौवनवंत स्त्री पापी बलवंत छिद्र पाय बलात्कार हरे हैं अर काईयक शीलवंती विरहकर पराये घर अत्यंत दुखी होय हैं तिनको कोईयक सहाय पाय अपने घर ले आवे हैं सो धर्मकी मर्यादा जाय है यह न जाय सो यत्न करो प्रजाके हितकी वांछा करो जिस विधि प्रजाका दुःख टरे सो करो या मनुष्यलोकविषै तुम बड़े राजा हो तुम समान अर कौन तुम ही जो प्रजाकी रक्षा न करोगे तो कौन करेगा नदियोंके तट तथा वन उपवन कूप वापिका सरोवरके तीर ग्राम ग्रामविषै घर घरविषै सभाविषै एक यही अपवादकी कथा है और नाहीं कि श्रीराम राजा दशरथके पुत्र सब शास्त्रविषै प्रवीण सो रावण सीताको हर ले गया ताहि घरविषै ले आये तब औरोंको कहा दोष है जो बड़े पुरुष करें सो सब जगतको प्रमाण जिस रीति राजा प्रवर्ते उस ही रीति प्रजा प्रवर्ते "यथा राजा तथा प्रजा" यह वचन है या भांति दुष्टचित्त निरंकुश भए पृथिवीविषै अपवाद करे हैं तिनका निग्रह करो। हे देव! आप मर्यादाके प्रवर्तक पुरुषोत्तम हो एक यही अपवाद तिहारे राज्यविषै न होता तो तिहारा यह राज्य इन्द्रसे भी अधिक है। यह वचन विजयके सुनकर क्षणएक रामचन्द्र विषादरूप मुद्गरके मारे चलायमान चित्त होय गये चित्तविषै चिंतवते भये यह कौन कष्ट पड़ा मेरा यशरूप कमलोंका वन अपयशरूप अग्निकर जलने लगा है जिस सीताके निमित्त मैं विरहका कष्ट सहा सो मेरे कुलरूप चन्द्रमाको मलिन करे है अयोध्यामें मैं सुखके निमित्त आया अर सुग्रीव हनूमानादिकसे मेरे सुभट

सो मेरे गोत्ररूप कुमुदनीको यह सीता मलिन करे है जिसके निमित्त मैंने समुद्र तिर रणसंग्राम कर रिपुको जीता सो जानकी मेरे कुलरूप दर्पणको कलुषित करे है अर लोक कहे हैं सो सांच है दुष्ट पुरुषके घरविषै तिष्ठी सीता मैं क्यों लाया अर सीतासे मेरा अतिप्रेम जिसे क्षणमात्र न देखूं तो विरहकर आकुलता लहूं अर वह पतिव्रता मोसे अनुरक्त उसे कैसे तजूं जो सदा मेरे नेत्र अर उरविषै वसै महागुणवती निर्दोष सीता सती उसे कैसे तजूं अथवा स्त्रियोंके चित्तकी चेष्टा कौन जाने जिनविषै सब दोषोंका नायक मन्मथ वसे है धिक्कार स्त्रीके जन्मको सर्वदोषोंकी खान आतापका कारण निर्मल कुलविषै उपजे पुरुषोंको कर्दम समान मलिनताका कारण है, अर जैसे कीचविषै फंसा मनुष्य तथा पशु निकस न सके, तैसे स्त्रीके रागरूप पंकविषै फंसा प्राणी निकस न सके, यह स्त्री समस्त बलका नाश करणहारी है अर रागका आश्रय है अर बुद्धिको भ्रष्ट करै है अर आषटवेको खाई समान है निर्वाण सुखकी विघ्न करणहारी ज्ञानकी उत्पत्तिको निवारणहारी भवभ्रमणका कारण है भस्मसे दबी अग्नि समान दाहक है डाभकी सूई समान तीक्ष्ण है देखवे मात्र मनोग्य परन्तु अपवादका कारण ऐसी सीता उसे मैं दुःख दूर करवे निमित्त तजूं जैसे सर्प कांचिलीको तजे फिर चितवै है जिसकर मेरा हृदय तीव्र स्नेहके बन्धनकर वशीभूत सो कैसे तजी जाय, यद्यपि मैं स्थिर हूं तथापि यह जानकी निकटवर्तिनी अग्निकी ज्वाला समान मेरे मनको आताप उपजावे है अर यह दूर रही भी मेरे मनको मोह उपजावे जैसे चन्द्ररेखा दूरहीसे कुमुदनीको विकसित करे। एक ओर लोकापवादका भय अर एक ओर सीताके दुर्निवार स्नेहका भय अर राग कर विकल्पके सागरविषै पड़ा हूं अर सीता सर्व प्रकार देवांगनासे भी श्रेष्ठ महापतिव्रता सती शीलरूपिणी मोसे सदा एकचित्त उसे कैसे तजूं अर जो न तजूं तो अपकीर्ति प्रगट होय है इस पृथिवीविषै मोसमान और दीन नाहीं स्नेह अर अपवादका भय उसविषै लगा है मन जिसका दोनोंकी मित्रताका तीव्र विस्तार वेगकर वशीभूत जो राम सो अपवादरूप तीव्र कष्टको प्राप्त भए सिंहका है ध्वजा जिसके ऐसे राम तिनको दोनों

वार्ताकी अति आकुलतारूप चिंता असाताका कारण दुस्सह आताप उपजावती भई जैसे जेष्ठके मध्यान्हका सूर्य दुस्सह दाह उपजावे ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषा वचनिकाविषै रामकू लोकापवादकी चिन्ताका वर्णन करनेवाला छियानवेवा पर्व पूर्ण भया ॥९६॥

अथानन्तर-श्रीराम एकाग्र चित्तकर द्वारपालको लक्ष्मणके बुलावनेकी आज्ञा करते भये सो द्वारपाल लक्ष्मणपै गया आज्ञा प्रमाण तिनको कही, लक्ष्मण द्वारपालके वचन सुनकर तत्काल तेज तुरंगपर चढ़ रामके निकट आया हाथ जोड़ नमस्कारकर सिंहासनके नीचे पृथिवीपर बैठा रामके चरणोंको ओर है दृष्टि जाकी राम उठकर आधे सिंहासनपर ले बैठे, शत्रुघ्न आदि सब ही राजा अर विराधित आदि सब ही विद्याधर यथा योग्य बैठे पुरोहित श्रेष्ठी मन्त्री सेनापति सब ही सभामें तिष्ठे तब क्षण एक विश्रामकर रामचन्द्रने लक्ष्मणसे लोकापवादका वृत्तांत कहा, सुनकर लक्ष्मण क्रोधकर लालनेत्र भये अर योधावोंको आज्ञा करी अवार मैं उन दुर्जनोंके अन्त करवेको जाऊंगा पृथिवीको मृषावादरहित करूंगा जे मिथ्या वचन कहे हैं तिनकी जिह्वा छेद करूंगा उपमारहित जो शीलव्रतकी धारणहारी सीता वाकी जे निन्दा करे हैं तिनका क्षय करूंगा। या भांति लक्ष्मण महाक्रोधरूप भये नेत्र अरुण होय गये तब श्रीराम इन वचनोंसे शांत करते भये कि—हे सौम्य! यह पृथिवी सागर प ंत उसकी श्रीऋषभ देवने रक्षा करी बहुरि भरतने प्रतिपालना करी अर इक्ष्वाकुवंशके तिलक भये जिनकी पीठ रणमें रिपुओंने न देखी जिनकी कीर्तिरूप चांदनीसे यह जगत् शोभित है सो अपने वंशविषै अनेक यशके उपजावन हारे भये अब मैं क्षणभंगुर पापरूप रागके निमित्त यशको कैसे मलिन करूं, अल्प भी अकीर्ति जो न टारिये तो वृद्धिको प्राप्त होय अर उन नीतिवान् पुरुषोंकी कीर्ति इन्द्रादिक देवोंसे गाइये है ये भोग विनाशीक तिनसे क्या जिनसे अकीर्ति रूप अग्नि कीर्तिरूप वनको बाले यद्यपि सीता सती शीलवन्ती निर्मल चित्त है तथापि इसको घरविषै राखे मेरा अपवाद न मिटै यह अपवाद शास्त्रादिकसे हता न जाय यद्यपि सूर्यकमलोंके वनका प्रफुल्लित करणहारा है अर तिमिरका हरणहारा है तथापि रात्रिके होते सूर्य अस्त होय है तैसे अपवादरूप रज महा विस्तारको

प्राप्त भई तेजस्वी पुरुषांकी कांतिकी हानि करे है सो यह रज निवारनी चाहिए। हे भ्रातः! चन्द्रमा समान निर्मल गोत्र हमारा अकीर्तिरूप मेघमालासे आच्छादा जाय है सो न आच्छादा जाय येही मेरे यत्न है जैसे सूके ईंधनके समूहविषै लगी आग जलसे बुझाये विना वृद्धिको प्राप्त होय है तैसे अकीर्तिरूप अग्नि पृथिवीविषै विस्तरै है सो निवारे विना न मिटे यह तीर्थंकर देवोंका कुल महा उज्ज्वल प्रकाश रूप है याका कलंक न लगे सो उपाय करो यद्यपि सीता महा निर्दोष शीलवंती है तथापि मैं तजूंगा अपनी कीर्ति मलिन न करूंगा। तब लक्ष्मण कहता भया कैसा है लक्ष्मण? रामके स्नेहविषै तत्पर है बुद्धि जिसकी। हे देव! सीताको शोक उपजावना योग्य नाहीं लोक तो मुनियोंका भी अपवाद करे हैं जिनधर्मका अपवाद करे हैं तो क्या लोकापवादसे धर्म तजिये है तैसे लोकापवाद मात्रसे जानकी कैसे तजिये जो सब सतियोंके सीस विराजै है काहू प्रकार निंदाके योग्य नाहीं अर पापी जीव शीलवंत प्राणियोंकी निंदा करे हैं क्या तिनके वचनसे शीलवंतोंको दोष लागे है वे निर्दोष ही हैं ये लोक अविवेकी हैं। इनके वचनविषै परमार्थ नहीं विषकर दूषित हैं जिनके नेत्र वे चन्द्रमाको श्यामरूप देखे हैं परन्तु चंद्रमा श्वेत ही हैं श्याम नहीं तैसे लोकोंके कहे निकलंकियोंको कलङ्क नाहीं लगे है जे शीलसे पूर्ण हैं तिनको अपना आत्मा ही साक्षी है परजीवनिका प्रयोजन नाहीं नीच जीवनिके अपवादकरि पंडित विवेकी क्रोधको न प्राप्त होय जैसे स्वानके भौंकनेतें गजेंद्र नाहीं कोप करे हैं। ये लोक विचित्रगति हैं तरंग समान है चेष्टा जिनकी परदोष कथवेविषै आसक्त सो इन दुष्टोंका स्वयंमेव ही निग्रह होयगा जैसे कोई अज्ञानी शिलाको उपाड़कर चन्द्रमाकी ओर वगाय (फेंके) वहुरि मारा चाहे सो सहज ही आप निस्सन्देह नाशको प्राप्त होय है जो दुष्ट पराए गुणनिको न सह सकें अर सदा पराई निंदा करे हैं सो पापकर्मी निश्चयसेती दुर्गतिको प्राप्त होय हैं जब ऐसे वचन लक्ष्मणने कहे तब श्रीरामचन्द्र कहते भए—हे लक्ष्मण! तू कहे है सो सब सत्य है तेरी बुद्धि रागद्वेषरहित अति मध्यस्थ महाशोभायमान है परन्तु जे शुद्ध न्यायमार्गी मनुष्य हैं वे लोकविरुद्ध कार्जको तजे हैं जाकी दशोंदिशामें अकीर्तिरूप दावानलकी ज्वाला प्रज्वलित है ताको जगतमें कहा सुख अर कहा ताका जीतव्य? अन-

र्थका करणहारा जो अर्थ ताकर कहा अर विषकर संयुक्त जो औषधि ताकर कहा ? अर जो बलवान् होय जीवनिकी रक्षा न करे शरणागतपालक न होय ताके बलकर कहा अर जाकर आत्मकल्याण न होय तो आचरणकर कहा ? चारित्र सोई जो आत्महित करे अर जो अध्यात्मगोचर आत्माको न जानै ताके ज्ञानकर कहा ? अर जाकी कीर्तिरूपवधू अपवादरूप बलवान् हरै ताका जन्म प्रशस्त नाहीं ऐसे जीवनेतैं मरण भला, लोकापवादकी बात तो दूर हो रही, मोहि यह महा दोष है जो परपुरुषने हरी सीता मैं बहुरि घरमें लाया। राक्षसके भवनमें उद्यान तहां यह बहुत दिन रही अर ताने दूती पठाय मनवांछित प्रार्थना करी अर समीप आय दुष्ट दृष्टिकर देखी अर मनमें आये सो वचन कहे ऐसी सीता मैं घरमें ल्याया या समान अर लज्जा कहा ? सो मूढ़ोंसे कहा न होय ? या संसारकी मायाविषै मैंहू मूढ़ भया। या भांति कहकर आज्ञा करी जो शीघ्रही कृतांतवक्र सेनापतिको बुलावो, यद्यपि दो बालकनिके गर्भसहित सीता है तौहू याहि तत्काल मेरे घरतै निकासो यह आज्ञा करी। तब लक्ष्मण हाथ जोड़ नमस्कारकर कहता भया—हे देव! सीताको तजना योग्य नाहीं, यह राजा जनककी पुत्री महा शीलवती जिनधर्मिणी कोमल चरण कमल जाके महा सुकुमार भोरी सदा सुखिया अकेली कहां जायगी ? गर्भके भारकर संयुक्त परम खेदको धरै यह राजपुत्री तिहारे तजे कौनके शरण जायगी अर आपने देखवेको कही सो देखवेकर कहा दोष भया ? जैसे जिनराजके निकट चढ़ाया द्रव्य निर्माल्य होय है ताहि देखिए है परन्तु दोष नाहीं अर अयोग्य अभक्ष्य वस्तु आंखनिसे देखिए हैं परन्तु देखे दोष नाहीं, अंगीकार किये दोष है तातै हे नाथ! मोपर प्रसन्न होवो, मेरी विनती सुनो महा निर्दोष सीता सती तुमविषै एकाग्र है चित्त जाका ताहि न तजो तब राम अत्यन्त विरक्त होय क्रोधमें आगए अर अप्रसन्न होय कहा—लक्ष्मण अब कछू न कहना, मैं यह अवश्य निश्चय किया शुभ होवे अथवा अशुभ होवे, निमानुष वन जहां मनुष्यका नाम नाहीं सुनिये वहां द्वितीय सहाय रहित अकेली सीताको तजो अपने कर्मके योग कर जीवो अथवा मरो एक क्षणमात्रहू मेरे देशविषै अथवा नगरमें काहूके मन्दिरविषै मत रहो वह मेरी अपकीर्तिको करणहारी है, कृतांतवक्र-

को बुलाया सो चार घोड़ेका रथ चढ़ा बड़ी सेनासहित जाका वंदीजन विरद बखाने हैं लोक जय जयकार करे हैं सो राजमार्ग होय आया जोपर छत्र फिरता अर धनुष चढ़ाय बखतर पहिरे कुण्डल पहिरे ताहि या विधि आवता देख नगरके नर नारी अनेक विकल्पकी वार्ता करते भए। आज यह सेनापति शीघ्र दौड़ा जाय है सो कौनपर विदा होयगा आप कौनपर कोप भए हैं? आज काहूका कछू बिगाड़ है ज्येष्ठके सूय समान ज्योति जाकी काल समान भयङ्कर शत्रुनिके समूहके मध्य चला जाय है सो आज न जानिये कौन पर कोप है? या भांति नगरके नर नारी वार्ता करें हैं अर सेनापति रामदेवके समीप आया स्वामीको सीस नवाय नमस्कार कर कहता भया—हे देव! जो आज्ञा होय सो ही करूं॥ तब रामने कही शीघ्रही सीताको ले जावो अर मार्गविषै जिनमन्दिरनिका दर्शन कराय सम्मेद शिखर अर निर्वाण भूमि तथा मार्गके चैत्यालय तहां दर्शन कराय वाकी आशा पूर्णकर अर सिंहनाद नामा अटवी जहां मनुष्यका नाम नाहीं तहां अकेली मेल उठ आवो। तब ताने कही जो आज्ञा होयगी सोही होयगा कछू वितर्क न करो अर जानकीपै जाय कही—हे माता! उठो, रथविषै चढ़ो, चैत्यालयनिकी वांछा है सो करो। या भांति सेनापतिने मधुरस्वरकर हर्ष उपजाया तब सीता रथ चढ़ी, चढ़ते समय भगवानको नमस्कार किया अर यह शब्द कहा जो चतुर्विध संघ जयवंत होवें। श्री रामचन्द्र महाजिनधर्मी उत्तम आचरणविषै तत्पर सो जयवन्त होहु अर मेरे प्रमादसे असुन्दर चेष्टा भई होय सो जिनधर्मके अधिष्ठाता देव क्षमा करो अर सखी जन लार भईं तिनसे कही तुम सुखसे तिष्ठो, मैं शीघ्रही जिन चैत्यालयनिके दर्शनकर आऊं हूं। या भांति तिनसे कही अर सिद्धनिको नमस्कार कर सीता आनन्दसे रथ चढ़ी सो रत्न स्वर्णका रथ तापर चढ़ी ऐसी सोहती भई जैसी विमान चढ़ी देवांगना सोहै, वह रथ कृतांतवक्रने चलाया सो ऐसा शीघ्र चलाया जैसा भरत चक्रवर्तीका चलाया बाण चले सो चलते समय सीताको अपशकुन भये, सूके वृक्षपर काग बैठा विरस शब्द करता भया अर माथा धुनता भया अर सन्मुख स्त्री महाशोककी भरी सिरके बाल बखेरे रुदन करती भई इत्यादि अनेक अपशकुन भए तो पुणि सीता जिनभक्तिविषै अनुरागिणी निश्चलचित्त चली

गई, अपशकुन न गिने, पहाड़निके शिखर कंदरा अनेक वन उपवन उलंघ कर शीघ्रही रथ दूर गया गरुड़ समान वेग जाका ऐसे अश्वोंकर युक्त सफेद ध्वजाकर विराजित सूर्यके रथ समान रथ शीघ्र चला। मनोरथ समान वह रथ तापर चढ़ी रामकी राणी इन्द्राणीसमान सो अति सोहती भई कृतांतवक्र सारथीने मार्गविषै सीताको नाना प्रकारको भूमि दिखाई ग्राम नगर वन अर कमलसे फूल रहे हैं सरोवर नाना प्रकारके वृक्ष, कहूं सघन वृक्षनिकर वन अन्धकार रूप है। जैसे अन्धेरी रात्रि मेघमालाकर मंडित महा अन्धकार रूप भासै कछू नजर न आवै अर कहूं विरले वृक्ष हैं सघनता नाहीं तहां कैसा भासै है जैसा पंचमकालमें भरत ऐरावत क्षेत्रनिकी पृथिवी विरले सत्पुरुषनिकर सोहै अर कहूं वनी पतझर होय गई है सो पत्र रहित पुष्पफलादिरहित छायारहित कैसी दीखै जैसे बड़े कुलकी स्त्री विधवा। भावार्थ—विधवा हू पुत्र रूपी पुष्पफलादिरहित हैं अर आभरण तथा सुन्दर वस्त्रादिरहित अर कांतिरहित हैं शोभारहित हैं तैसी वनी दीखै है अर कहूं एक वनविषै सुन्दर माधुरी लता आम्रके वृक्षसे लगी ऐसी सोहै हैं जैसी चपल वेश्या, आम्रसूं लगि अशोककी वांछा करे हैं अर केयक दावानल कर वृक्ष जर गये हैं सो नाहीं सोहै हैं जैसे हृदय क्रोधरूप दावानल कर जरा न सोहै अर कहूं एक सुन्दर पल्लवनिके समूह मंद पवनकर हालते सोहै हैं मानों वसंतराजके आयवेकर वनपंक्ति रूप नारी आनंदसे नृत्यही करे हैं अर कहीं एक भीलनिके समूह तिनके कलकलाट शब्दकर मृग दूर भाग गए हैं अर पक्षी उड़ गये ह अर कहीं एक वनी अल्प है जल जिनमें ऐसी नदी तिनकर कैसी भासै है जैसी संतापकी भरी विरहिनी नायिका अंसुवन कर भरे नेत्र संयुक्त भासै अर कहूं एक वनी नाना पक्षिनिके नादकर मनोहर शब्द करे है अर कहूं एक निर्मल नीझरनावोंके नादकर शब्द करती तीव्रहास्य करे है अर कहूं इक मकरंदमें अति लुब्ध जे भ्रमर तिनके गुञ्जारकर मानों वनी वसन्त नृपकी स्तुति ही करे है अर कहूइक वनी फलनिकर नम्रीभूत भई शोभाको धरे है जैसे सफल पुरुष दातार नम्रीभूत भये सोहे हैं अर कहूं इक वायुकर हालते जे वृक्ष तिनकी शाखा हालै हैं अर पल्लव हाले हैं अर पुष्प पड़े हैं सो मानों पुष्पवृष्टि ही करे हैं। इत्यादि रीतिको

धरे वनी अनेक क्रूर जीवनिकर भरी ताहि देखती सीता चली जाय है राममें है चित्त जाका मधुर शब्द सुनकर विचारती भई मानों रामके दुन्दुभी वाजेही बाजे हैं। या भांति चिंतवती सीता आगे गंगाको देखती भई। कैसी है गंगा? अति सुन्दर हैं शब्द जाके अर जाके मध्य अनेक जलचर जीव मीन मकर ग्राहादिक विचरै हैं तिनके विचरवेकर उद्धत लहर उठे हैं तातै कम्पायमान भये हैं कमल जाविषै अर मूलसे उपाड़े हैं तीरके उतंग वृक्ष जाने अर उखाड़े हैं पर्वतनिके पाषाणोंके समूह जाने समुद्रकी ओर चली जाय है अति गम्भीर है उज्ज्वल फूलोंकर शोभे है झागोंके समूह उठै हैं अर भ्रमते जे भंवर तिनकर महा भयानक है अर दोनों ढाहावोंपर बैठे पक्षी शब्द करैं है सो परमतेजके धारक रथके तुरंग ता नदीको तिर पार भये, पवन समान है वेग जिनका जैसे साधु संसार-समुद्रके पार होय। नदीके पार जाय सेनापति यद्यपि मेरुसमान अचलचित्त हुआ तथापि दयाके योगकर अतिविषादको प्राप्त भया महा दुःखका भरा कछु कह न सकै आंखनिते आसू निकल आये रथको थांभ ऊंचे स्वरकर रुदन करने लगा ढीला होय गया है अंग जाका, जाती रही है कांति जाकी, तब सीता सती कहती भई—हे कृतान्तवक्र! तू काहेको महादुखीकी न्याईं रोवै है, आज जिनवन्दनाके उत्सवका दिन तू हर्षमें विषाद क्यों करै है? या निर्जन वनमें क्यों रोवे है तब वह अति रुदनकर यथावत् वृतांत कहता भया। जो वचन विषसमान अग्नि समान शस्त्र समान है। हे मातः! दुर्जननिके वचनतैं राम अकीर्तिके भयसे जो न तजा जाय तिहारा स्नेह ताहि तजकर चैत्यालयनिके दर्शनकी तिहारे अभिलाषा उपजी हुती सो तुमको चैत्यालयोंके अर निर्वाण क्षेत्रोंके दर्शन कराय भयानक वनविषै तजी है। हे देवि! जैसे यति रागपरणतिको तजे तैसे रामने तुमको तजी है, अर लक्ष्मणने जो कहिवेकी हद थी सो कही, कछू कमी न राखी तिहारे अर्थ अनेक न्यायके वचन कहे, परन्तु रामने हठ न छोड़ी। हे स्वामिनि! राम तुमसे नीराग भये अब तुमको धर्मही शरण है सो या संसारविषै न माता, न पिता, न भ्राता, न कुटुम्ब एक धर्म ही जीवका सहाई है। अब तुमको यह मृगोंका भरा वन ही आश्रय है। ये वचन सीता सुनकर वज्रपातकी मारी कैसी होय गई। हृदयविषै दुःखके भार-

कर मूर्छाको प्राप्त भई बहुरि सचेत होय गद् २ वाणीसे कहती भई—शीघ्रही मोहि प्राणनाथसे मिला। तब वाने कही—हे मातः! नगरी दूर रही अर रामका दर्शन दूर। तब अश्रुपातरूप जलकी धारासे मुख-कमल प्रचालती हुई कहती भई कि—हे सेनापति! तू मेरे वचन रामसूं कहियो कि मेरे त्यागका विषाद आप न करणा, परम धीर्यको अवलंबनकर सदा प्रजाकी रक्षा करियो, जैसे पिता पुत्रकी रक्षा करे, आप महा न्यायवन्त हो अर समस्त कलाके पारगामी हो, राजाको प्रजा ही आनन्दका कारण है राजा वही जाहि प्रजा शरदकी पूनोंके चन्द्रमाकी न्याईं चाहै। अर यह संसार असार है महाभयंकर दुःखरूप है जा सम्यक्दर्शन कर भव्यजीव संसारसे मुक्त होवे हैं सो तिहारे आराधिवे योग्य है, तुम राजा तैं सम्यक्दर्शनको विशेष भला जानियो। यह राज्य तो अविनाशी सुखका दाता है सो अभव्य जीव निन्दा करें तो उनकी निन्दाके भयसे हे पुरुषोत्तम! सम्यक् दर्शनको कदाचित् न तजना यह अत्यन्त दुर्लभ है जैसे हाथमें आया रत्न समुद्रविषै डालिये तौ बहुरि कौन उपायसे हाथ आवे। अर अमृत फल अंधकूपमें डारा बहुरि कैसे मिले जैसे अमृतफलको डाल बालक पश्चात्ताप करे तैसे सम्यक्दर्शनसे रहित हुवा जीव विषाद करे है यह जगत दुर्निवार है जगतका मुख बन्द करवेको कौन समर्थ जाके मुखमें जो आवे सो ही कहै तातैं जगतकी बात सुनकर जो योग्य होय सो करियो लोक गडलिका प्रवाह हैं सो अपने हृदयमें हे गुणभूषण! अलौकिक वार्ता न धरणी अर दानसे प्रीतिके योगकर जनोंको प्रसन्न राखना अर विमल स्वभावकर मित्रोंको वश करना अर साधु तथा आर्यिका आहारको आवें तिनको प्रासुक अन्नसे अतिभक्ति कर निरन्तर आहार देना अर चतुर्विध संघकी सेवा करनी, मन वचन कायकर मुनिको प्रणाम, पूजन अर्चनादिकर शुभ कर्म उपार्जन करना अर क्रोधको क्षमाकर मानको निगर्वताकर मायाको निष्कपटता कर लोभको सन्तोष कर जीतना आप सर्व शास्त्रविषै प्रवीण हो सो हम तुमको उपदेश देनेको समर्थ नाहीं क्योंकि हम स्त्रीजन हैं आपकी कृपाके योगसे कभी कोई परिहास्यकर अविनय भरा वचन कहा हो तो क्षमा करियो ऐसा कहकर रथसे उतरी अर तृण पाषाणकर भरी जो पृथ्वी उसमें अचेत होय मूर्च्छा खाय

पड़ी सो जानकी भूमिमें पड़ी ऐसी सोहती भई मानों रत्नोंकी राशिही पड़ी है कृतांतवक्र सीताको चेष्टा-रहित मूर्छित देख महादुखी भया अर चित्तमें चिंतवता भया हाय यह महा भयानक वन अनेक दुष्ट जीवोंकर भरा जहां जे महाधीर शूरवीर होंय तिनके भी जीवनेकी आशा नहीं तो यह कैसे जीवेगी ? इसके प्राण बचने कठिन हैं इस महासती माताको मैं अकेली वनमें तजकर जाऊं हूं सो मुझ समान निर्दई कौन, मुझे किसी प्रकार भी किसी ठौर शांति नहीं एक तरफ स्वामीकी आज्ञा अर एक तरफ ऐसी निर्दयता मैं पापी दुःखके भंवरविषै पड़ा हूं धिक्कार पराई सेवाको जगतविष निन्द्य पराधीनता तजो स्वामी कहे सो ही करना जैसे यंत्रको यंत्री बजावै त्योंही बाजै सो पराया सेवक यन्त्र तुल्य है अर चाकरसे कूकर भला जो स्वाधीन आजीविका पूर्ण करे है जैसे पिशाचके वश पुरुष ज्यों वह बकावे त्यों बकै तैसे नरेन्द्रके वश नर वह जो आज्ञा करै सो करै चाकर क्या न करै अर क्या न कहै अर जैसे चित्रामका धनुष निष्प्रयोजन गुण कहिये फिणचको धरे है सदा नम्रीभूत है तैसे परकिंकर निःप्रयोजन गुणको धरे है सदा नम्रीभूत है धिक्कार किंकरका जीवना, पराई सेवा करनी तेजरहित होना है जैसे निर्माल्य वस्तु निंद्य है तैसे परकिंकरता निंद्य है धिग् २ पराधीनके प्राण धारणको यह पराधीन पराया किंकर टोकली समान है जैसे टोकली परतंत्र होय कूपका जीव कहिए जल हरे है तैसे यह परतंत्र होय पराए प्राण हरे है कभी भी चाकरका जन्म मत होवे पराया चाकर काठकी पूतली समान है ज्यों स्वामी नचावे त्यों नाचै उच्चता उज्वलता लज्जा अर कांति तिनसे परकिंकर रहित है जैसे विमान पराये आधीन है चलाया चाले थमाया थमे ऊंचा चलावे तो ऊंचा चढ़े नीचा उतारे तो नीचा उतरे धिक्कार पराधीनके जीतव्यको जो निर्मल अपने मांसको वेचन हारा महालघु अपने अधीन नहीं सदा परतंत्र धिक्कार किंकरके प्राण धारणको मैं पराई चाकरी करी अर परवश भया तो ऐसे पापकर्मको करूं हूं, जो इस निर्दोष महासतीको अकेली भयानक वनमें तजकर जाऊं हूं । हे श्रेणिक ! जैसे कोई धर्मकी बुद्धिको तजे तैसे वह सीताको वनविषै तजकर अयोध्याको सन्मुख भया अतिलज्जावान् होयकर चला सीता याके गये पाछे केतीक वारमें मूर्छासे सचेत

गज तिनकर विकराल यह वन ता विषै यह चन्द्रकला समान महामनोग्य कौन रोवे है ? यह कोई देवांगना सोधर्मे स्वर्गसे पृथिवीविषै आई है। यह विचारकर सेनाके लोक आश्चर्यको प्राप्त होय खड़े रहे अर वह सेना समुद्र समान जिसमें तुरंग ही मगर अर पयादे मीन अर हाथी ग्राह हैं समुद्र भी गाजे अर सेना भी गाजे है अर समुद्रमें लहर उठे हैं सेनामें सूर्यकी किरणकर शस्त्रोंकी जोति उठै है समुद्र भी भयङ्कर है सेना भी भयंकर है सो सकल सेना निश्चल होय रही ॥

श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषा वचनिकाविषै सीताका वनविषै विलाप अर वज्रजंघका आगमन वर्णन करनेवालो सत्तानवेवां पर्व पूर्ण भया ॥ ९७ ॥

—जैसी महाविद्याकी थांभी गंगा थंभी रहे तैसे सेनाको थंभी देख राजा वज्रजंघ निकटपुरुषोंको पूछता भया कि सेनाके थंभनेका कारण क्या है तब वह निश्चयकर राजपुत्रीके समाचार कहते हिले राजाने भी रुदनके शब्द सुने, सुनकर कहता भया जिसका यह मनोहर रुदनका कहो कौन है तब कई एक अग्रसर होय जाकर पूंछते भये—हे देवि! तू कौन है अर क्यों रुदन करे है त समान कोऊ और नाहीं तू देवी है अक नागकुमारी है अक कोई कल्याण रूपिणी उत्तम शरीरकी धरणहारी तोहि यह शोक कहां हमको यह बड़ा स्त्रधारक पुरुषोंको देख प्राप्त भई कांपे है शरीर जाका सो भयकर उनको अपने देने लगी तब वे स्वामीके भयकर यह कहते भये—हे देवि! तू क्यों डरे है शोकको भूषण हमको काहेको देवे है तेरे ये आभूषण तेरे ही रहो ये तोहि योग्य हैं हे माता! है विश्वास गह यह राजा वज्रजंघ पृथिवीविषै प्रसिद्ध महा नरोत्तम राजनीतिकर युक्त दर्शनरूप रत्न भूषणकर शोभित है। कैसा है सम्यग्दर्शन जिस समान और रत्न नाहीं अविमोलिक है काहूसे हरा न जाय महा सुखका दायक शंकादिक मल रहित सुमेरु सारिखा नि-

विघ्न किया, अर परोपकारविषै अन्तराय किए, हिंसादिक पाप किये, गो-
निन्दा करी, अथवा पूजा दानमें विघ्न किया, अर परोपकारविषै अन्तराय किए, हिंसादिक पाप किये, गो-
निन्दा करी, अथवा पूजा दानमें विघ्न किया, अनछाना पानी पिया रात्रिको भोजन
मदाह, वनदाह स्त्री बालक पशुहत्यादि पाप किए तिनके यह फल हैं अनछाना पानी पिया रात्रिको भोजन
किया, बीधा अन्न भषा, अभक्ष्य वस्तुका भक्षण किया, न करिबे योग्य काम किए, तिनका यह फल है,
बलभद्रकी पटराणी स्वर्ग समान महलकी निवासिनी हजारां सहेली मेरी सेवाकी करनहारी सो अब पापके
उदयकर निर्जन वनविषै दुःखके सागरविषै डूबी कैसे तिष्ठूं ? रत्ननिके मंदिर विषै महा रमणीक वस्त्र तिन-
कर शोभित सुन्दर सेजपर शयन करणहारी मैं कहां पड़ी हूं सब सामग्रीकर पूर्ण महा रमणीक महलविषै
रहणहारी मैं अब कैसी अकेली वनका निवास करूंगी ? महा मनोहर बीण बांसुरी मृदंगादिके मधुर स्वर
तिनकर सुख निद्राकी लेनहारी मैं कैसे भयंकर शब्द कर भयानक वन विषै अकेली तिष्ठूंगी, रामदेवकी
पटराणी अपयशरूपी दावानल कर जरी महा दुःखिनी एकाकिनी पापिना कष्टका कारण जो यह वन जहां
अनेक जातिके कीट अर करकस डाभकी अणी अर कांकरनिसे भरी पृथिवी यामें कैसे शयन करूंगी ऐसी
अवस्था भी पायकर मेरे प्राण न जायं तो ये प्राण ही वज्रके हैं अहो ऐसी अवस्था पायकर मेरे हृदयके सौ
टूक न होय हैं सो यह वज्रका हृदय है कहा करूं कहां जाऊं कौनसे कहा कहूं कौनके आश्रय तिष्ठूं
हाय गुणसमुद्र राम ! मोहि क्यों तजी, हे महाभक्त लक्ष्मण मेरी क्यों न सहाय करी। हाय पिता जनक
हाय माता विदेही यह कहा भया ? अहो विद्याधरनिके स्वामी भामण्डल ! मैं दुःखके भंवरमें पड़ी कैसे तिष्ठूं
मैं ऐसी पापिनी जो मोसहित पतिने परम संपदाकर जिनेन्द्रका दर्शन अर्चन चिन्तया था सो मोहि इस
वनीमें डारी। हे श्रेणिक ! या भांति सीता सती विलाप करै है अर राजा वज्रजंघ पुण्डरीकपुरका स्वामी
हाथी पकड़वे निमित्त वनमें आया था सो हाथी पकड़ बड़ी विभूतिसे पीछे जाय था सो ताकी सेनाके प्यादे
शूर वीर कटारी आदि नानाप्रकारके शस्त्र धरे कमर बांधे जाय निकसे सो याके रुदनके मनोहर शब्द सुन-
कर संशयको अर भयको प्राप्त भये पैंड भी न जाय सके, अर तुरंगनिके सवार हू ताका रुदन सुन खड़े
होय रहे उनको यह आशंका उपजी जो या वनविषै अनेक दुष्ट जीव तहां यह सुन्दर स्त्रीके रुदनका नाद

राक्ष सांप रीछ ल्याली वघेरा आरणे भैंसे चीता गैंड़ा शार्दूल अष्टापद वन शूकर कराल यह वन ता विषै यह चन्द्रकला समान महामनोग्य कौन रोवै है ? यह कोई देवां-गना स्वर्गसे पृथिवीविषै आई है। यह विचारकर सेनाके लोक आश्चर्यको प्राप्त होय खड़े रहे अर सेना समुद्र समान जिसमें तुरंग ही मगर अर पयादे मीन अर हाथी ग्राह हैं समुद्र भी गाजे अर सेना भी गाजे है अर समुद्रमें लहर उठे हैं सेनामें सूर्यकी किरणकर शस्त्रोंकी जोति उठै है समुद्र भी भयङ्कर है सेना भी भयंकर है सो सकल सेना निश्चल होय रही ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषा वचनिकाविषै सीताका वनविषै विलाप अर वज्रजंघका आगमन वर्णन करनेवालो सत्तानवेवा पर्व पूर्ण भया ॥ ९७ ॥

अथानन्तर—जैसी महाविद्याकी थांभी गंगा थंभी रहे तैसे सेनाको थंभी देख राजा वज्रजंघ निकट-वर्ती पुरुषोंको पूछता भया कि सेनाके थंभनेका कारण क्या है तब वह निश्चयकर राजपुत्रीके समाचार कहते भये उससे पहिले राजाने भी रुदनके शब्द सुने, सुनकर कहता भया जिसका यह मनोहर रुदनका शब्द सुनिये है सो कहो कौन है तब कई एक अग्रसर होय जाकर पूंछते भये—हे देवि! तू कौन है अर इस निर्जन वनविषै क्यों रुदन करे है त। समान कोऊ और नाहीं तू देवी है अक नागकुमारी है अक कोई उत्तम नारी हे तू महा कल्याण रूपिणी उत्तम शरीरकी धरणहारी तोहि यह शोक कहां हमको यह वड़ा कौतुक है। तब यह शस्त्रधारक पुरुषोंको देख प्राप्त भई कांपे है शरीर जाका सो भयकर उनको अपने आभरण उतारकर देने लगी तब वे स्वामीके भयकर यह कहते भये—हे देवि! तू क्यों डरै है शोकको तज धीरता भज आभूषण हमको काहेको देवे है तेरे ये आभूषण तेरे ही रहो ये तोहि योग्य हैं हे माता! तू विह्वल क्यों होय है विश्वास गह यह राजा वज्रजंघ पृथिवीविषै प्रसिद्ध महा नरोत्तम राजनीतिकर युक्त है अर सम्यक्दर्शनरूप रत्न भूषणकर शोभित है। कैसा है सम्यग्दर्शन जिस समान और रत्न नाहीं अवि-नाशी है अमोलिक है काहूसे हरा न जाय महा सुखका दायक शंकादिक मल रहित सुमेरु सारिखा नि-

श्चल है हे माता ! जाके सम्यग्दर्शन होवे उसके गुण हम कहां लग वर्णन करें यह राजा जिनमार्गके रहस्यका ज्ञाता शरणागतप्रतिपालक है परोपकारमें प्रवीण महा दयावान महा निर्मल पवित्रात्मा निंद्यकर्मसे निवृत्त लोकोंका पिता समान रक्षक, महा दातार जीवोंकी रक्षाविषे सावधान दीन अनाथ दुर्बल देह धारियोंको माता समान पाले है सिद्ध कार्यका करणहारा शत्रुरूप पर्वतनिको वज्रसमान है शास्त्र विद्याका अभ्यासी परधनका त्यागी परस्त्रीको माता वहिन वेटी समान माने है अन्याय मार्गको अजगरसहित अन्धकूप समान जाने है, धर्मविषै तत्पर अनुरागी संसारके भ्रमणसे भयभीत सत्यवादी जितेंद्रिय है याके समस्त गुण जो मुखसे कहा चाहे सो भुजानिकर समुद्रको तिरा चाहे है। ये वात वज्रजंघके सेवक कहे हैं, इतनेविषै ही राजा आप आया, हाथीसे उतर वहुत विनयकर सहज ही है शुद्ध दृष्टि जाकी सो सीतातें कहता भया—हे वहिन। वह वज्रसमान कठोर महा असमझ है जो तोहि ऐसे वनमें तजे अर तोहि तजते जाका हृदय न फट जाय। हे पुण्यरूपिणी ! अपनी अवस्थाका कारण कह, विश्वासको भज, भय मत करै अर गर्भका खेद मत करै। तव यह शोककर पीड़ितचित्त वहुरि रुदन करती भई। राजाने वहुत धीर्य वंधाया तव यह हंसकी न्याई आंसू डार गद्गद वाणीतें कहती भई—हे राजन् ! मो मंदभागिनीकी कथा अत्यन्त दीर्घ है यदि तुम सुना चाहो हो तो चित्त लगाय सुनो, मैं राजा जनककी पुत्री भामण्डलकी वहिन राजा दशरथके पुत्रकी वधू सीता मेरा नाम रामकी राणी राजा दशरथने केकईको वरदान दिया हुता सो भरतको राज्य देकर राजा तो [वैरा]गी भये अर राम लक्ष्मण वनको गए सो मैं पतिके संग वनमें रही, रावण कपटसे मोहि हर ले गया, ग्यारवें दिन मैंने पतिकी वार्ता सुन भोजन किया पति सुग्रीवके घर रहे वहुरि अनेक विद्याधरनिको एकत्रकर आकाशके मार्ग होय समुद्रको उलंघ लंका गये, रावणको युद्धमें जीत मोहि ल्याये वहुरि राजरूप कीचको तज भरत तो वैरागी भये। कैसे हैं भरत ? जैसे ऋषभदेवके भरत चक्रवर्ती तिन समान है उपमा जिनकी, भरत तो कर्म कलंकरहित परमधामको प्राप्त भये अर केकई शोकरूप अग्निकर आतापको प्राप्त भई वहुरि रागका मार्ग सार जानकर आर्यिका होय महा तपसे स्त्रीलिंग छेद स्वर्गविषे देव भई मनुष्य होय मोक्ष

पावेगी । राम लक्ष्मण अयोध्याविषै इन्द्रसमान राज्य करें सो लोक दुष्टचित्त निशंक होय अपवाद करते भये कि रावण हरकर सीताको ले गया बहुरि राम ल्याय घरमें राखी सो राम महा विवेकी धर्मशास्त्रके वेत्ता न्यायवंत ऐसी रीति क्यों आचरें जिस रीति राजा प्रवर्ते उसी रीति प्रजा प्रवरते सो लोक मर्यादारहित होने लगे, कहें-रामहीके घर यह रीति तो हमको कहा दोष? अर में गर्भसहित दुवल शरीर यह चिंतवन करती हुती कि जिनेंद्रके चैत्यालयोंकी अर्चना करूंगी अर भरतार भी मुझसहित जिनेंद्रके निर्वाण स्थानक अर अतिशय स्थानक तिनको बन्दना करनेको भावसहित उद्यमी भये हुते अर मोहि ऐसे कहते थे कि प्रथम तो हम कैलाश जाय श्रीऋषभदेवका निर्वाण क्षेत्र वन्देंगे बहुरि और निर्वाण क्षेत्रनिको वन्दकर अयोध्याविषै ऋषभ आदि तीर्थंकर देवनिका जन्मकल्याणक है सो अयोध्याकी यात्रा करेंगे जेते भगवानके चैत्यालय हैं तिनका दर्शन करेंगे, कम्पिल्या नगरीविषै विमलनाथका दर्शन करेंगे अर रत्नपुरमें धर्मनाथका दर्शन करेंगे । कैसे हैं धर्मनाथ ? धर्मका स्वरूप जीवनिको यथार्थ उपदेशे हैं बहुरि श्रावस्ती नगरी सम्भवनाथका दर्शन करेंगे अर चम्पापुरमें वासुपूज्यका अर काकंदीमें पुष्पदन्तका, चंद्रपुराविषै चंद्रप्रभका, कौशाम्बीपुरीमें पद्मप्रभका भद्रलपुरमें शीतलनाथका अर मिथिलापुरीमें मल्लिनाथस्वामीका दर्शन करेंगे अर वाणारसीमें सुपार्श्वनाथ स्वामीका दर्शन करेंगे अर सिंहपुरमें श्रेयांसनाथका अर हस्तनागपुरमें शांति कुंथु अरहनाथका पूजन करेंगे अर हे देवि ! कुशाग्रनगरमें श्रीमुनिसुव्रतनाथका दर्शन करेंगे जिनका धर्मचक्र अब प्रवर्ते है अर औरहू जे भगवानके अतिशय स्थानक महापवित्र हैं पृथिवीमें प्रसिद्ध हैं तहां पूजा करेंगे, भगवानके चैत्य अर चैत्यालय सुर असुर अर गंधर्वनिकर स्तुति करवे योग्य हैं नमस्कार योग्य हैं तिन सबनिकी वंदना हम करेंगे, अर पुष्पक विमानविषै चढ़ सुमेरुके शिखरपर जे चैत्यालय हैं तिनका दर्शनकर भद्रशाल वन नंदन वन सौमनस वन तहां जिनेंद्रकी अर्चाकर अर कृत्रिम अकृत्रिम अढ़ाई द्वीपविषै जेते चैत्यालय हैं तिनकी वंदनाकर हम अयोध्या आवेंगे ।

हे प्रिये ! भावसहित एकवारहू नमस्कार श्री अरहंतदेवको करें तो अनेक जन्मनिके पापनिसे छूटे

हैं, हे कांते। धन्य तेरा भाग्य, जो गर्भके प्रादुर्भावविषैं तेरे जिन वन्दनाकी वांछा उपजी, मेरेहू मनमें यही है तो सहित महापवित्र जिनमंदिरनिका दर्शन करूं। हे प्रिये! पहिले भोगभूमिविषै धर्मकी प्रवृत्ति न हुती लोक असमझ थे सो भगवान ऋषभदेवने भव्योंको मोक्ष मार्गका उपदेश दिया जिनको संसारभ्रमणका भय होय तिनको भव्य कहिये, कैसे हैं भगवान् ऋषभ? प्रजाके पति जगतविषे श्रेष्ठ त्रैलोक्य कर वन्दवे योग्य नानाप्रकार अतिशय कर संयुक्त सुर नर असुरनिके आश्चर्यकारी ते भगवान भव्योंको जीवादिक तत्त्वोंका उपदेश देय अनेकोंको तारि निर्वाण पधारे सम्यक्तादि अष्ट गुणमंडित सिद्ध भए जिनका चैत्यालय सर्व रत्नमई भरत चक्रवर्तीने कैलाशपर कराया अर पांचसै धनुषकी रत्नमई प्रतिमा सूर्य्यहूतें अधिक तेजको धरे मंदिरविषै पधराई सो विराजै है जाकी अवहू देव विद्याधर गन्धर्व किन्नर नाग दैत्य पूजा करे हैं जहां अप्सरा नृत्य करै हैं जो प्रभु स्वयंभू सर्वगति निर्मल त्रैलोक्यपूज्य जाका अन्त नाहीं अनन्तरूप अनंत ज्ञान विराजमान परमात्मा सिद्ध शिव आदिनाथ ऋषभ तिनकी कैलाश पर्वतपर हम चलकर पूजाकर स्तुति करेंगे? वह दिन कब होयगा, या भांति मोसे कृपाकर वार्ता करते थे अर ताही समय नगरके लोक भेले होय आय लोकापवादकी दावानलसे दुस्सह वार्ता रामसे कही सो राम वड़े विचारके कर्ता चित्तमें यह चिताई यह लोक स्वभाव ही कर वक्र हैं सो और भांति अपवाद न मिटे या लोकापवादसे प्रियजनको तजना भला अथवा मरणा भला, लोकापवादतैं यशका नाश होय कल्पान्त काल पर्यन्त अपयश जगतमें रहै सो भला नाहीं ऐसा विचार महाप्रवीण मेरा पति ताने लोकापवादके भयतैं मोहि महा अरण्यवनमें तजा मैं दोष-रहित सो पति नीके जाने अर लक्ष्मणने वहुत कहा सो न माना, मेरे ऐसा ही कर्मका उदय जे विशुद्ध कुलमें उपजे क्षत्री शुभचित्त सर्व शास्त्रनिके ज्ञाता तिनको यही रीति है अर काहूसे न डरें एक लोकापवादसे डरें। यह अपने निकासनेका वृत्तांत कह वहुरि रुदन करने लगी शोकरूप अग्निकर तप्तायमान है चित्त जाका। सो याको रुदन करती अर रजकर धूसरा है अगजाका महा दीन दुखी देख राजा वज्रजंघ उत्तम धर्मका धरणहारा अति उद्वेगको प्राप्त भया अर याको जनककी पुत्री जान समीप आय वहुत

आदरसे धीर्य बंधाया, अर कहता भया हे शुभमते ! तू जिनशासनमें प्रवीण है शोक कर रुदन मत करै, यह आर्तध्यान दुःखका वढ़ावनहारा है, हे जानकी ! या लोककी स्थिति तू जाने है तू महा सुज्ञान अनित्य अशरण एकत्व अन्यत्व इत्यादि द्वादश अनुप्रेक्षा की चिंतवन करणहारी तेरा पति सम्यक् दृष्टि अर तू सम्यक्त्वसहित विवेकवन्ती है मिथ्या दृष्टि जीवनिकी न्याईं कहा वारम्बार शोक करै, तू जिनवाणीकी श्रोता अनेक वार महा मुनिनके मुख श्रुतिके अर्थ सुने निरन्तर ज्ञान भावनाको धरणहारी तोहि शोक उचित नाहीं, अहो या संसारमें भ्रमता यह मूढ़ प्राणी वाने मोक्षमार्गको न जाना, यातैं कहा कहा दुःख न पाये याको अनिष्टसंयोग इष्टवियोग अनेक वार भये यह अनादिकालसे भवसागरके मध्य क्लेश रूप भवरमें पड़ा है, या जीवने तिर्यंच योनिविषै जलचर नभचरके शरीर धर वर्षा शीत आताप आदि अनेक दुःख पाये अर मनुष्य देह विषै अपवाद विरह रुदन क्लेशादि अनेक दुःख भोगे अर नरकविषै शीत उष्ण छेदन भेदन शूलारोहण परस्पर घात महा दुर्गन्ध क्षीरकुण्डविषैं निपात अनेक रोग अनेक दुःख लहे अर कवहूं अज्ञान तपकर अल्प ऋद्धिका धारक देवहू भया तहांहू उत्कृष्ट ऋद्धिके धारक देवनिको देख दुखी भया, अर मरणसमान महा दुखी होय विलापकर मूवा अर कवहूं महा तपकर इन्द्रतुल्य उत्कृष्ट देव भया तोहू विषयानुरागकर दुखी ही भया। या भांति चतुर्गतिविषै भ्रमण करते या जीवने भववनविषै आधि व्याधि संयोग वियोग रोग शोक जन्ममृत्यु दुःख दाह दरिद्रहीनता नाना प्रकारकी वांछा विकल्पता कर शोच संताप रूप होय अनंत दुःख पाये, अधोलोक मध्य लोक ऊर्ध्व लोक विषै ऐसा स्थानक नाहीं जहां या जीवने जन्म मरण न किये, अपने कर्म रूप पवनके प्रसंगकर भवसागर विषै भ्रमण करता जो यह जीव ताने मनुष्य देहविषै स्त्रीका शरीर पाया तहां अनेक दुःख भोगे, तेरे शुभ कर्मके उदयकर राम सारिखे सुन्दर पति भये, जिनके सदा शुभका उपार्जन सो पुण्यके उदय कर पति सहित महा सुख भोगे अर अशुभके उदयतैं दुस्सह दुःखको प्राप्त भई, लंकाद्वीपविषै रावण हर कर ले गया तहां पतिकी वार्ता न सुन ग्यारह दिनतक भोजन विना रही अर जवतक पतिका दर्शन न भया तबतक आभूषण सुगन्ध लेपनादि-

अथानन्तर—वज्रजङ्घने सीताके चढ़वेको क्षणमात्रविषै अद्भुत पालकी मंगाई सो सीता तापर आरूढ़ भई पालकी विमानसमान महा मनोज्ञ समीचीन प्रमाणकर युक्त सुन्दर हैं थंभ जाके श्रेष्ठ दर्पण थंभोंविषै जड़े हैं अर मोतिनिकी झालरी कर पालकी मण्डित है अर चन्द्रमा समान उज्ज्वल चमर तिनकर शोभित है मोतिनके हार जलके बुदबुदे समान शोभे हैं विचित्र जे वस्त्र तिनकर मण्डित है चित्राम कर शोभित है सुन्दर हैं झरोखा जामें ऐसी सुखपालपर चढ़ परम ऋद्धिकर युक्त बड़ी सेना मध्य सीता चली जाय है, आश्चर्यको प्राप्त भई कर्मोंकी विचित्रताको चिन्तवे है तीन दिन विषै भयंकर वनको उलङ्घ पुण्डरीकपुरके देशमें आई, उत्तम है चेष्टा जाकी, सब देशके लोक माताको आय मिले ग्राम ग्राममें भेंट करें। कैसा है वज्रजंघका देश ? समस्त जातिके अन्नकर जहां समस्त पृथिवी आच्छादित होय रही है अर कूकडाउडान नजदीक हैं ग्राम जहां, रत्ननिकी खान स्वर्ण रूपादिककी खान सुरपुर जैसे पुर सो देखती थकी सीता हर्षको प्राप्त भई वन उपवनकी शोभा देखती चली जाय है, ग्रामके महंत भेंटकर नाना प्रकार स्तुति करे हैं। हे भगवति ! हे माता ! आपके दर्शन कर हम पापरहित भए कृतार्थ भए अर बारम्बार वन्दना करते भये अर्घपाद्य किये अर अनेक राजा देवनि समान आय मिले सो नाना प्रकार भेंट करते भए अर बारम्बार वन्दना करते भए। या भांति सीता सती पैंड़ पैंड़पर राजा प्रजानिकर पूजी सन्ती चली जाय है वज्रजंघका देश अति सुखी ठौर ठौर वन उपवनादिकर शोभित ठौर ठौर चैत्यालय देख अतिहर्षित भई मनविषैं विचारे है जहां राजा धर्मात्मा होय वहां प्रजा सुखी होय ही। अनुक्रम कर पुण्डरीकपुरके समीप आए सो राजाकी आज्ञातैं सीताका आगमन सुन नगरके सब लोक सन्मुख आए अर भेंट करते भए, नगरकी अति शोभा करी, सुगन्ध कर पृथिवी छांटी, गली बाजार सब सिङ्गारे अर इन्द्रधनुष समान तोरण चढ़ाए अर द्वारनिविषै पूर्ण कलश थापे, जिनके मुख सुन्दरपल्लवयुक्त हैं अर मन्दिरनिपर ध्वजा चढ़ी अर घर घर मंगल गावे हैं मानों वह नगर आनन्द कर नृत्य ही करे है नगरके दरवाजे पर तथा कोटके कंगूरनिपर लोक खड़े देखे हैं हर्षकी वृद्धि होय रही है नगरके बाहिर अर भीतर राजद्वारतक सीताके दर्शनको

लोक खड़े हैं, चलायमान जे लोकनिके समूह तिनकर नगर यद्यपि स्थावर है तथापि जानिए जंगम होय रहा है। नाना प्रकारके वादित्र वाजे हैं तिनके नादकर दशोंदिशा शब्दायमान होय रही हैं शंख वाजे हैं वन्दीजन विरद वखाने हैं समस्त नगरके लोक आश्चर्यको प्राप्त भए देखे हैं अर सीताने नगरविषै प्रवेश किया जैसे लक्ष्मी देवलोकविषै प्रवेश करै वज्रजङ्घके मन्दिरविषै अति सुन्दर जिनमन्दिर हैं, सर्व राजलोककी स्त्रीजन सीताके सन्मुख आई, सीता पालकोसे उतर जिनमन्दिरमें गई। कैसा है जिनमन्दिर ? महा सुन्दर उपवन कर वेष्टित है अर वापिका सरोवरी तिनकर शोभित है, सुमेरु शिखर समान सुन्दर स्वर्णमई है जैसे भाई भामण्डल सीताका सन्मान करै तैसे वज्रजङ्घ आदर करता भया, वज्रजङ्घके समस्त परिवारके लोक अर राजलोककी समस्त राणी सीताकी सेवा करैं अर ऐसे मनोहर शब्द निरन्तर कहे हैं हे देवते ! हे पूज्ये ! हे स्वामिनी ! हे ईशानने ! सदा जयवन्त हो वहुत दिन जीवो आनन्दको प्राप्त होवो, वृद्धिको प्राप्त होवो आज्ञा करो। या भांति स्तुति करें अर जो आज्ञा करे सो सीस चढ़ावें अति हर्षसे दौरकर सेवा करें अर हाथ जोड़ सीस नवाय नमस्कार करैं वहां सीता अति आनन्दतें जिनधर्मकी कथा करती तिष्ठे अर जो सामंतनिकी भेंट आवे अर राजा भेंट करे सो जानकी धर्म कार्यमें लगावे यह तो यहां धर्मकी अराधना करे है।

अर वह कृतांतवक्र सेनापति तप्तायमान है चित्त जाका रथके तुरङ्ग खेदको प्राप्त भए हुते तिनको खेदरहित करता हुवा श्रीरामचन्द्रके समीप आया याको आवता सुन अनेक राजा सन्मुख आए सो कृतांतवक्र आयकर श्रीरामचन्द्रके चरणनिको नमस्कार कर कहता भया—हे प्रभो ! मैं आज्ञा प्रमाण सीताको भयानक वनविषै मेलकर आया हूं वाके गर्भमात्रही सहाई है। हे देव ! वह वन नाना प्रकारके भयङ्कर जीवनिके अति घोर शब्दकर महा भयकारी है अर जैसा वैताल कहिए प्रेतनिका वन ताका आकार देखा न जाय तैसे सघन वृक्षनिके समूह कर अंधकार रूप है, जहां स्वतः स्वभाव आरणे भैंसे अर सिंह द्वेषकर सदा युद्ध करै हैं अर जहां घूघू वसै हैं सो विरूप शब्द करैं हैं अर गुफानिमें सिंह गुञ्जार करे हैं सो गुफा ग-

ञ्जारे रहा हैं अर महाभयंकर अजगर शब्द करे हैं अर चितानिकर हते गये हैं मृग जहां कालकी न्यां विकराल ऐसा वह वन ता विषै हे प्रभो ! सीता अश्रुपात करती महादीनवदन आपको जो शब्द कहती भई सो सुनो, आप आत्मकल्याण चाहो हो तो जैसे मोहि तजी तैसे जिनेंद्रकी भक्ति न तजनी जैसे लोकनिके अपवादकर मोसे अति अनुराग हुता तोहू तजी तैसे काहूके कहवेतैं जिनशासनकी श्रद्धा न तजनी। लोक विना विचारे निर्दोषनिको दोष लगावे हैं जैसे मोहि लगाया सो आप न्याय करो सो अपनी बुद्धिसे विचार यथार्थ करना काहूके कहेतैं काहूको झूठा दोष न लगावना अर सम्यक्दर्शनतैं विमुख मिथ्यादृष्टि जिनधर्मरूप रत्नका अपवाद करे हैं सो उनके अपवादके भयतैं सम्यक्दर्शनकी शुद्धता न तजनी वीतरागका मार्ग उरविषै दृढ धारणा, मेरे तजनेका या भवविषै किंचित् मात्र दुःख है अर सम्यक्दर्शनकी हानितैं जन्म २ विषै दुःख है या जीवको लोकविषै निधि रत्न स्त्री वाहन राज्य सबही सुलभ हैं एक सम्यक्दर्शन रत्नही महादुर्लभ है। राजविषै पापकर नरकविषै पड़ना है, एक ऊर्ध्वगमन सम्यक्दर्शनके प्रतापहीसे होय। जाने अपनी आत्मा सम्यक्दर्शनरूप आभूषणकर मंडित किया सो कृतार्थ भया। ये शब्द जानकीने कहे हैं जिनको सुनकर कौनके धर्मबुद्धि न उपजै—हे देव ! एक तो वह सीता स्वभावहीकर कायर अर महा भयंकर वनके दुष्ट जीवनितैं कैसे जीवेगी ? जहां महा भयानक सर्पनिके समूह अर अल्पजल ऐसे सरोवर तिनविषै माते हाथो कर्दम करै हैं अर जहां मृगनिके समूह मृगतृष्णाविषै जल जान वथा दौड़ व्याकुल होय हैं, जैसे संसारकी मायाविषै रागकर रागी जीव दुखी होय अर जहां कौंछिकी रजके संगकर मर्कट अति चंचल होय रहे हैं अर जहां तृष्णासे सिंह व्याघ्र ल्यालियोंके समूह तिनकी रसनारूप पल्लव लहलहाट करै हैं अर चिरम समान लालनेत्र जिनके ऐसे क्रोधायमान भुजङ्ग फुङ्कार करै हैं अर जहां तीव्र पवनके संचारकर क्षणमात्रविषै वृक्षनिके पत्रोंके ढेर होय हैं अर महा अजगर तिनकी विषरूप अग्निकर अनेक वृक्ष भस्म होय गये हैं अर माते हाथिनिकी महा भयंकर गर्जना ताकर वह वन अति विकराल है अर वनके शूकरनिकी सेनाकर सरोवर मलिन जल होय रहे हैं, अर जहां ठौर ठौर भूमिविषै कांटे अर

सांठे अर सांपोंकी वमी अर कंकर पत्थर तिनकर भूमि महा संकटरूप है अर डाभकी अणी सूई तैंहू अति पैनी हैं अर सूके पान फूल पवनकर उडे उडे फिरे हैं ऐसे महाअरण्यविषै, हे देव ! जानकी कैसे जीवेगी, मैं ऐसा जानूं हूं क्षणमात्रहू वह प्राण राखिवेको समर्थ नाहीं ।

हे श्रेणिक । सेनापतिके यह वचन सुन श्रीराम अतिविषादको प्राप्त भए, कैसे हैं वचन ? जिनकर निर्दईका भी मन द्रवीभूत होय, श्रीरामचन्द्र चिंतवते भए, देखो मो मूढचित्तने दुष्टनिके वचनकर अत्य-न्त निंद्य कार्य किया कहां वह राजपुत्री अर कहां वह भयङ्कर वन ? यह विचारकर मूर्छाको प्राप्त भये बहुरि शीतोपचारकर सचेत होय विलाप करते भए सीताविषै है चित्त जिनका, हाय श्वेत श्याम रक्त तीन वर्णके कमल समान नेत्रनिकी धरणहारी, हाय निर्मल गुणनिकी खान मुखकर जीता है चन्द्रमा जाने, कमलकी किरण समान कोमल, हाय जानकी मोसे वचनालाप कर, तू जाने ही है कि मेरा चित्त तो विना अतिकायर है । हे उपमारहित, शीलव्रतकी धारणहारी, मेरे मनकी हरणहारी, हितकारी हैं आलाप जिसके, हे पापवर्जिते, निरपराध, मेरे मनकी निवासनी ! तू कौन अवस्थाको प्राप्त भई होगी, हे देवि ! वह महा भयङ्कर वन क्रूर जीवों कर भरा उसमें सर्वसामग्री रहित कैसे तिष्ठेगी ? हे मोमें आसक्त चकोरनेत्र लावण्य रूप जलकी सरोवरी महा लज्जावती विनयवती तू कहां गई, तेरे श्वासकी सुगन्धकर मुखपर गुञ्जार करते जे भ्रमर तिनको हस्तकमलकर निवारतो अति खेदको प्राप्त होयगी, तू यूथसे बिछुरी मृगीकी न्याईं अकेली भयंकर वनविषै कहां जायगी जो वन चिंतवन करते भी दुस्सह उसविषै तू अकेली कैसे तिष्ठेगी कमलके गर्भ समान कोमल तेरे चरण महासुन्दर लक्षणके धारणहारे कर्कश भूमिका स्पर्श कैसे सहेंगे अर वनके भील महा म्लेच्छ कृत्य अकृत्यके भेदसे रहित है मन जिनका सो तुझे पाकर भयङ्कर पल्लीमें ले गये होवेंगे सो पहिले दुःखसे भी यह अत्यन्त दुःख है तू भयानक वनविषै मोबिना महादुःखको प्राप्त भई होयगी अथवा तू खेदखिन्न महा अन्धेरी रात्रिविषै वनकी रजकर मण्डित कहीं पड़ी होयगी सो कदाचित् तुझे हाथियोंने दाबी होय तो इस समान अर अनर्थ कहा अर गृध्र रीछ

सिंह व्याघ्र अष्टापद इत्यादि दुष्ट जीवोंकर भरा जो वन उसविषे कसे निवास करेगी ? जहां माग नाहीं विकराल दाढ़के धरणहारे व्याघ्र महा क्षुधातुर तिन ऐसी अवस्थाको प्राप्त करी होयगी जो कहिवेविषै न आवे अथवा अग्निकी ज्वालाके समूहकर जलता जो वन उसविषै अशुभ स्थानकको प्राप्त भई होयगी, अथवा सूर्य्यकी अत्यंत दुस्सह किरण तिनके आतापकर लाखकी न्यांई पिघल गई होयगी, छायाविष जायवेकी नाहीं है शक्ति जिसकी अथवा शोभायमान शीलकी धरणहारी मो निर्दईविषै मनकर हृदय फटकर मृत्युको प्राप्त भई होयगी। पहिले जैसे रत्नजटीने मोहि सीताके कुशलकी वार्ता आय कही थी तैसे कोई अब भी कहे, हाय प्रिये पतिव्रते विवेकवती सुखरूपिणी तू कहां गई कहां तिष्ठेगी क्या करेगी अहो कृतांतवक्र कह क्या तैंने सचमुच वनहीविषै डारी, जो कहुं शुभ ठौर मेली होय तो तेरे मुखरूप चन्द्रसे अमृतरूप वचन खिरें। जब ऐसा कहा तब सेनापतिने लज्जाके भारकर नीचा मुख किया प्रभारहित हो गया कछू कह न सके अति व्याकुल भया मौन गह रहा। तब रामने जानी सत्यही यह सीताको भयंकर वनविषै डार आया तब मूर्च्छाको प्राप्त होय राम गिरे बहुत वेरमें नीठि नीठि सचेत भए तब लक्ष्मण आए अंतःकरणविषै सोचको धरे कहते भए—हे देव ! क्यों व्याकुल भये हो धीर्यको अंगीकार करो जो पूर्वकर्म उपार्जा उसका फल आय प्राप्त भया अर सकल लोकको अशुभके उदयकर दुःख प्राप्त भया केवल सीताहीको दुःख न भया। सुख अथवा दुःख जो प्राप्त होना होय सो स्वयमेव ही किसी निमित्तसे आय प्राप्त होय है। प्रभो ! जो कोई किसीको आकाशमें ले जाय अथवा क्रूर जीवोंके भरे वनविषै डारे अथवा गिरिके शिखर धरे तौभी पूर्व पुण्य कर प्राणीकी रक्षा होय है सब ही प्रजा दुःख कर तप्तायमान है आंसुवोंके प्रवाहकर मानों हृदय गल गया है सोई झरे है यह वचन कह लक्ष्मण भी अत्यन्त व्याकुल होय रुदन करने लगा जैसा दाहका मारा कमल होय तैसा होय गया है मुखकमल जिसका हाय माता। तू कहां गई दुष्टजनोंके वचन रूप अग्निकर प्रज्वलित है शरीर जिसका हे गुणरूप धान्यके उपजनेकी भूमि बारह अनुप्रेक्षाके चिंतवनकी करणहारी हे शीलरूप पर्वतकी पृथिवी हे सीते सौम्य स्वभावकी धारक हे विवेकिनी दुष्टोंके व-

चन सोई भये तुषार तिनकर दाहा गया है हृदय कमल जिसका राजहंस श्रीराम तिनके प्रसन्न करनेको मानसरोवर समान सुभद्रा सारिखी कल्याणरूप सर्व आचारविषे प्रवीण लोकोंको मूर्तिवन्त सुखकी आशिषा हे श्रेष्ठ ! तू कहां गई जैसे सूर्य विना आकाशकी शोभा कहां अर चन्द्रमा विना निशाकी शोभा कहां तैसे हे माता ! तो विना अयोध्याकी शोभा कहां। इस भांति लक्ष्मण विलाप कर रामसे कहे हैं हे देव ! समस्त नगर वीणा बांसुरी मृदंगादिकी ध्वनि कर रहित भया है अर अहर्निश रुदनकी ध्वनि कर पूर्ण है गली गलीमें वन उपवनविषे नदियोंके तटविषे चौहटेमें हाट हाटविषे घर घरमें समस्त लोक रुदन करे हैं तिनके अश्रुपातकी धारा कर कीच होय रही है, मानों अयोध्याविषे वर्षा कालही फिर आया है समस्त लोक आंसू डारते गदगद वाणी कर कण्ठसे वचन उचारते जानकी प्रत्यक्ष नहीं है परोक्ष ही है, तोभी एकाग्रचित्त भए गुण कीर्तिरूप पुष्पोंके समूह कर पूजे हैं। वह सीता पतिव्रता समस्त सतियोंके सिर पर विराजे है गुणोंकर महा उज्ज्वल उसके यहां आवनेकी अभिलाषा सबोंके है यह सब लोक माताने ऐसे पाले हैं जैसे जननी पुत्रको पाले सो सबही महा शोककर गुण चितार २ रुदन करे हैं ऐसा कौन है जिसके जानकीका शोक न होय तातें हे प्रभो। तुम सब बातोंमें प्रवीण हो अब पश्चात्ताप तजो पश्चात्तापसे कछु कार्यकी सिद्धि नाहीं जो आपका चित्त प्रसन्न है तो सीताको हेरकर बुलाय लेंगे अर उनको पुण्यके प्रभाव कर कोई विघ्न नहीं आप धीर्य अवलम्बन करवे योग्य हो या भांति लक्ष्मणके वचनकर रामचन्द्र प्रसन्न भए कछु एक शोक तज कर्तव्यविषे मन धरा। भद्रकलश भण्डारीको बुलायकर कही तुम सीताकी आज्ञासे जिस विधि किम इच्छा दान करते थे तैसेही दिया करो सीताके नामसे दान वटै तब भण्डारीने कही जो आप आज्ञा करोगे सोही होयगा नव महीने अर्थियोंको किम इच्छा दान वटिबो किया, रामके आठहजार स्त्री तिनकर सेवमान तोभी एक क्षणमात्र भी मन कर सीताको न विसारता भया। सीता सीता यह अलाप सदा होता भया, सीताके गुणोंकर मोहा है मन जिसका सर्वदिशा सीतामई देखता भया स्वप्नविषे सीताको या भांति देखे पर्वतकी गुफामें पड़ी है पृथिवीकी रज कर मंडित है अर नेत्रोंके अश्रुपात कर चौ-

मासा कर राखा है महा शोक कर व्याप्त है या भांति स्वप्नमें अवलोकन करता भया। सीताकर शब्द करता राम ऐसा चिंतवन करे है—देखो सीता सुन्दर चेष्टाकी धरणहारी दूर देशान्तरविषै तिष्ठे है तौभी मेरे चित्तसे दूर न होय है वह साध्वी शीलवंती मेरे हितविषै सदा उद्यमी। या भांति सदा चितारवो करे अर लक्ष्मणके उपदेशकर अर सूत्रसिद्धान्तके श्रवण कर कछू इक रामका शोक क्षीण भया धीर्यको धारि धर्म ध्यानविषै तत्पर भया। यह कथा गौतम स्वामी राजा श्रेणिकसे कहे हैं वे दोनों भाई महा न्यायवन्त अखण्ड प्रीतिके धारक प्रशंसायोग्य गुणोंके समुद्र रामके हल मूसलका आयुध लक्ष्मणके चक्रायुध समुद्र पर्यंत पृथिवीको भली भांति पालते संते सौधर्म ईशान इंद्र सारिखे शोभते भए वे दोनों धीर स्वर्ग समान जो अयोध्या उसमें देवों समान ऋद्धि भोगते महा कांतिके धारक पुरुषोत्तम पुरुषोंके इंद्र देवेंद्र समान राज्य करते भए सुकृतके उदयसे सकल प्राणियोंको आनंद देयवेमें चतुर सुन्दर चरित्र जिनके, सुखसागरमें मग्न सूर्यसमान तेजस्वी पृथिवीमें प्रकाश करते भए।

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषा वचनिकाविषै रामको सीताका शोक वर्णन करनेवाला निन्नानवेवा पर्व पूर्ण भया ॥९९॥

अथानन्तर—गौतमस्वामी कहे हैं—हे नराधिप! रामलक्ष्मण तो अयोध्याविषै तिष्ठे हैं अर अब लवणांकुशका वृत्तांत कहे हैं सो सुन—अयोध्याके सबही लोक सीताके शोकसे पांडुताको प्राप्त भये अर दुर्बल होय गये अर पुण्डरीकपुरमें सीता गर्भके भारकर कछू एक पांडुताको प्राप्त भई अर दुर्बल भई। मानों सकल प्रजा महापवित्र उज्ज्वल इसके गुण वर्णन करे हैं सो गुणोंकी उज्ज्वलता कर श्वेत होय गई है अर कुचोंकी बीटली श्यामताको प्राप्त भई सो मानों माताके कुच पुत्रोंके पान करिवेके पयके घट हैं सो मुद्रित कर राखे हैं अर दृष्टि क्षीरसागर समान उज्ज्वल अत्यन्त मधुरताको प्राप्त भई अर सर्वमंगलके समूहका आधार जिसका शरीर सर्वमंगलका स्थानक जो निर्मल रत्नमई आंगण उसविषै मन्द मन्द विचरे सो चरणोंके प्रतिविम्ब ऐसे भासैं मानों पृथ्वी कमलोंसे सीताकी सेवा ही करे है अर रात्रिमें चन्द्रमा याके मंदिर ऊपर आय निकसै सो ऐसा भासे मानों सुफेद छत्र ही है अर सुगन्धके महलमें सुन्दर सेज

ऊपर सोती ऐसा स्वप्न देखती भई कि महागजेन्द्र कमलोंके पुट विषै जल भरकर अभिषेक करावे हैं अर बारम्बार सखीजनोंके मुख जय जयकार शब्द सुनकर जाग्रत होय है परिवारके लोक समस्त आज्ञारूप प्रवर्ते हैं क्रीड़ाविषै भी यह आज्ञाभङ्ग न सह सकै सब आज्ञाकारी भये शीघ्र हो आज्ञा प्रमाण करे हैं तौभी सर्वोपर तेज करे है काहेसे कि तेजस्वी पुत्र गर्भविषै तिष्ठे हैं अर मणियोंके दर्पण निकट हैं तौभी खड्ग काढ खड्गमें मुख देखे है अर वीणावांसुरी मृदंगादि अनेक वादित्रोंके नाद होय हैं सो न रुचें अर धनुषके चढ़ायवेकी ध्वनि रुचे है अर सिंहोंके पिंजरे देख जिसके नेत्र प्रसन्न होंय अर जिसका मस्तक जिनेन्द्र टार औरको न नमै ॥ अथानन्तर—नव महीना पूर्ण भये श्रावण सुदी पूर्णमासीके दिन श्रवण नक्षत्रके विषै वह मंगल रूपिणी सर्व लक्षण पूर्ण शरदकी पूनोंके चन्द्रमा समान है वदन जिसका सुखसे पुत्र युगल जनती भई सो पुत्रोंके जन्ममें पुण्डरीकपुरकी सकल प्रजा अतिहर्षित भई मानों नगरी नाच उठी ढोल नगारे आदि अनेक प्रकारके वादित्र बाजने लगे शंखोंके शब्द भये ! राजा वज्रजंघने अतिउत्साह किया बहुत सम्पदा याचकोंको दई अर एकका नाम अनंगलवण दूजेका नाम मदनांकुश ये यथार्थ नाम धरे फिर ये बालक वृद्धिको प्राप्त भए माताके हृदयको अति आनंदके उपजावन हारे महाधीर शूरवीरताके अंकुर उपजे,सरसोंके दाणे इनको रक्षाके निमित्त इनके मस्तक डारे सो ऐसे सोहते भए मानों प्रतापरूप अग्निके कण ही हैं जिनका शरीर ताये सुवर्ण समान अति देदीप्यमान सहजस्वभाव तेजकर अति सोहता भया अर जिनके नख दर्पणसमान भासते भए। प्रथम बालअवस्थामें अव्यक्त शब्द बोलें सो सर्वलोकके मनको हरें इनकी मंद मुलकनि महामनोग्य पुष्पोंके विकसने समान लोकनके हृदयको मोहती भई अर जैसे पुष्पोंकी सुगंधता भ्रमरोंके समूहको अनुरागी करे तैसे इनकी वासना सबके मनको अनुरागरूप करती भई यह दोनो माताका दूध पानकर पुष्ट भए अर जिनका मुख महासुंदर सुफेद दांतों कर अति सोहता भया मानों यह दांत दुग्ध समान उज्ज्वल हास्यरस समान शोभायमान दीखे हैं, धायकी आंगरी पकड़े आंगनमें पांव धरते कौनका मन न हरते भए जानकी ऐसे सुंदर क्रीड़ाके करनहारे

कुमारोंको देखकर समस्त दुःख भूल गई। बालक बड़े भए अति मनोहर सहज ही सुंदर हैं नेत्र जिनके विद्या पढ़ने योग्य भए तब इनके पुण्यके योगकर एक सिद्धार्थनामा क्षुल्लक शुद्धात्मा पृथिवीमें प्रसिद्ध वज्रजंघके मंदिर आया सो महाविद्याके प्रभाव कर त्रिकाल संध्यामें सुमेरुगिरिके चैत्यालय वंदि आवे प्रशांत वदन साधु समान है भावना जिसकी अर खंडितवस्त्र मात्र है परिग्रह जिसके उत्तम अणुव्रतका धारक नाना प्रकारके गुणों कर शोभायमान, जिनशासनके रहस्यका वेत्ता समस्त कलारूप समुद्रका पारगामी तपकर मंडित अति सोहै सो आहारके निमित्त भ्रमता संता जहां जानकी तिष्ठे थी वहां आया सीता महासती मानों जिनशासनकी देवी पद्मावती ही है सो क्षुल्लकको देख अति आदरसे उठकर सन्मुख जाय इच्छाकार करती भई अर उत्तम अन्नपानसे तृप्त किया सीता जिनधर्मियोंको अपने भाईसमान जाने है सो क्षुल्लक अष्टांग निमित्त ज्ञानका वेत्ता दोनों कुमारोंको देखकर अति संतुष्ट होयकर सीतासे कहता भया—हे देवि! तुम सोच न करो जिसके ऐसे देवकुमार समान प्रशस्त पुत्र उसे कहा चिन्ता। यद्यपि क्षुल्लक महाविरक्त चित्त है तथापि दोनों कुमारोंके अनुरागसे कैयकदिन तिनके निकट रहा थोड़े दिनोंमें कुमारोंको शस्त्रविद्यामें निपुण किया सो कुमार ज्ञान विज्ञानविषै पूर्ण सर्व कलाके धारक गुणोंके समूह दिव्यास्त्रके चलायवे अर शत्रुओंके दिव्यास्त्र आवें तिनके निराकरण करवेकी विद्याविषै प्रवीण होते भए, महापुण्यके प्रभावसे परमशोभाको धारें महालक्ष्मीवान् दूर भए हैं मति श्रुति आवरण जिनके मानो उघडे निधिके कलश ही हैं। शिष्य बुद्धिमान् होय तब गुरुको पढ़ायवेका कछू खेद नाहीं जैसे मंत्री बुद्धिमान् होय तब राजाको राज्यकार्यका कछु खेद नाहीं अर जैसे नेत्रवान् पुरुषोंको सूर्यके प्रभावकर घट पटादिक पदार्थ सुखसूं भासै तैसे गुरुके प्रभावकर बुद्धिवन्तको शब्द अर्थ सुखसे भासै जैसे हंसोंको मानसरोवरविषै आवते कछु खेद नाहीं तैसे विवेकवान् विनयवान् बुद्धिमान्को गुरुभक्तिके प्रभावसे ज्ञान आवते परिश्रम नाहीं सुखसे अति गुणोंकी वृद्धि होय है अर बुद्धिमान् शिष्यको उपदेश देय गुरु कृतार्थ होय है अर कुबुद्धिको उपदेश देना वृथा है जैसे सूर्यका उद्योत घूघूओंको वृथा है यह दोनों भाई देदीप्यमान है यश जिनका अति सुन्दर

महाप्रतापी सूर्यकी न्याईं जिनकी ओर कोऊ विलोक न सके, दोऊ भाई चन्द्र सूय समान दोनोंमें अग्नि अर पवन समान प्रीति मानो वह दोनों ही हिमाचल विंध्याचलसमान हैं वज्रवृषभनाराचसंहनन जिनके सर्व तेजस्वीनिके जीतवेको समर्थ सब राजावोंका उदय अर अस्त जिनके आधीन होयगा महाधर्मात्मा धर्मके धोरी अत्यंत रमणीक जगत्‌को सुखके कारण सब जिनको आज्ञाविषै, राजा ही आज्ञाकारी तो औरों-की क्या वात काहूको आज्ञारहित न देख सकें अपने पांवनिके नखोंमें अपनाही प्रतिविम्व देख न सकें तो और कौनसे नम्रीभूत होंय अर जिनको अपने नख अर केशोंका भंग न रुचे तो अपनी आज्ञाका भंग कैसे रुचे, अर अपने सिरपर चूड़ामणि धरिये अर सिरपर छत्र फिरे अर सूर्य ऊपर होय आय निकसे सोभी न सहार सकें तो औरोंकी ऊंचता कैसे सहारें, मेघका धनुष चढ़ा देख कोप करें तो शत्रुके धनुषकी प्रबलता कैसे देख सकें चित्रामके नृप न नमैं तो भी सहार न सकें तो साक्षात् नृपोंका गर्व कव देख सकें, अर सूय नित्य उदय अस्त होय उसे अल्प तेजस्वी गिनें अर पवन महावलवान है परन्तु चंचल सो उसे वलवान न गिनें जो चलायमान सो वलवान काहेका ? जो स्थिर भूत अचल सो वलवान् अर हिमवान पर्वत उच्च है स्थिरीभूत है परन्तु जड़ अर कठोर कंटक सहित है तातैं प्रशंसा योग्य न गिनें अर समुद्र गंभीर है रत्नोंकी खान है परन्तु क्षार अर जलचर जीवोंको धरै अर शंखोंकर युक्त तातैं समुद्रको तुच्छ गिनें ये महागुणनिके निवास अति अनूपम जेते प्रबल राजा हुते तेजरहित होय इनकी सेवा करते भए ये महाराजावोंके राजा सदा प्रसन्न वदन मुखसे अमृत वचन वोलें सवनिकर सेवने योग्य जे दूरवर्ती दुष्ट भूपाल हुते ते अपने तेजकर मलिनवदन किये सब मुरझाय गये इनका तेज ये जब जन्मे तवसे इनके साथही उपजा है शस्त्रोंके धारणकर जिनके कर अर उदर श्यामताको धरे हैं अर मानों अनेक राजावोंके प्रतापरूप अग्निके वुझावनेसे श्याम हैं समस्त दिशारूप स्त्री वशीभूत कर देने वाली भई महाधीर धनुषके धारक तिनके सब आज्ञाकारी भए जैसा लक्षण तैसा ही अंकुश दोनों भाइनिविषै कोई कमी नाहीं ऐसा शब्द पृथिवीविषै सबके मुख, ये दोनों नवयौवन महासुन्दर अद्भुत चेष्टाके धरणहारे पृथिवीमें प्रसिद्ध

समस्त लोकोंकर स्तुति करवे योग्य जिनके देखबेकी सबके अभिलाषा पुण्य परमाणुनिकर रचा है पिंड जिनका, सुखका कारण है दर्शन जिनका स्त्रियोंके मुखरूप कुमुद तिनके प्रफुल्लित करनेको शरदकी पूर्णमासीके चन्द्रमा समान सोहते भए माताके हृदयको आनन्दके जंगम मंदिर ये कुमार सूर्यसमान कमल नेत्र देवकुमार सारिखे श्रीवत्सलक्षणकर मंडित है वक्षस्थल जिनका अनंतपराक्रमके धारक संसार समुद्रके तट आये चरम शरीर परस्पर महाप्रेमके पात्र सदा धर्मके मार्गमें तिष्ठे हैं देवोंका अर मनुष्योंका मन हरे हैं।

भावार्थ—जो धर्मात्मा होय सो काहूका कुछ न हरे ये धर्मात्मा परधन परस्त्री तो न हरें परन्तु पराया मन हरें। इनको देख सबनिका मन प्रसन्न होय ये गुणोंकी हदको प्राप्त भए हैं। गुण नाम डोरेका भी है सो हदपर गांठको प्राप्त होय है अर इनके उरविषै गांठ नाहीं महा निःकपट हैं अपने तेजकर सूर्यको जीते हैं अर कांतिकर चंद्रमाको जीते हैं अर पराक्रमकर इंद्रको अर गम्भीरताकर समुद्रको स्थिरताकर सुमेरुको अर क्षमाकर पृथिवीको अर शूरवीरताकर सिंहको चालकर हंसको जीते हैं अर महाजलविषै मकर ग्राह नक्रादिक जलचरोंसे क्रीडा करे हैं अर माते हाथियोंसे तथा सिंह अष्टापदोंसे क्रीडा करते खेद न गिनें अर महा सम्यक्दृष्टि उत्तम स्वभाव अति उदार उज्ज्वल भाव जिनसे कोई युद्ध कर न सके महायुद्धविषै उद्यमी जे कुमार सारिखे मधु कैटभ सारिखे इन्द्रजीत मेघनाद सारिखे योधा जिनमार्गी गुरुसेवाविषै तत्पर जिनेश्वरकी कथाविषै रत जिनका नाम सुन शत्रुओंको त्रास उपजे, यह कथा गौतम स्वामी राजा श्रेणिकसे कहते भए—हे राजन्! ते दोनों वीर महाधीर गुणरूप रत्नके पर्वत महा ज्ञानवान लक्ष्मीवान् शोभा कांति कीर्तिके निवास चित्तरूप माते हाथीके वश करवेको अंकुश महाराजरूप मंदिरके दृढ़ स्तंभ पृथ्वीके सूर्य उत्तम आचरणके धारक लवण अंकुश नरपति विचित्र कार्यके करणहारे पुण्डरीक नगरविषै यथेष्ट देवोंकी न्याईं रमें महा उत्तम पुरुष जिनके विकट जिनका तेज लख सूर्य भी लज्जावान् होय जैसे बलभद्र नारायण अयोध्याविषै रमें तैसे यहां पुण्डरीकपुरविषै रमे हैं॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषा वचनिकाविषै लवणांकुशका पराक्रम वर्णन करनेवाला एकसौवां पर्व पूर्ण भया ॥१००॥

अथानन्तर—अति उदार क्रियाविषै योग्य अति सुन्दर तिनको देख वज्रजंघ इनके परणायवेविषै उद्यमी भया, तब अपनी शशिचूला नामा पुत्री लक्ष्मी राणीके उदरविषै उपजी सो बत्तीस कन्या सहित लवणकुमारको देनी विचारी अर अंकुश कुमारका भी विवाह साथही करना सो अंकुश योग्य कन्या ढूंढिवेको चितावान भया फिर मनविषै विचारी पृथिवीपुर नगरका राजा पृथु ताके राणी अमृतवती ताकी पुत्री कनकमाला चन्द्रमाकी किरण समान निर्मल अपने रूपकर लक्ष्मीको जीते है वह मेरी पुत्री शशिचूला समान है यह विचार तापै दूत भेजा सो दूत विचक्षण पृथ्वीपुर जाय पृथुसे कही। जौलग दूतने कन्यायाचनके शब्द न कहे तौलग इसका अति सनमान किया अर जब याने याचनेका वृत्तांत कहा तब वह क्रोधायमान भया अर कहता भया तू पराधीन है अर पराई कहाई कहै है तुम दूत लोग जलके धारा समान हो, जा दिशा चलावे ताही दिशि चलो तुममें तेज नाहीं बुद्धि नाहीं जो ऐसे पापके वचन कहै ताका निग्रह करूं पर तू पराया प्रेरा यन्त्र समान है यन्त्री यन्त्र बजावे है त्यों बाजै तातैं तू हनिवे योग्य नाहीं। हे दूत! १ कुल २ शील ३ धन ४ रूप ५ समानता ६ बल ७ वय ८ देश ९ विद्या ये नव गुण वरके कहे हैं तिनविषै कुल मुख्य है सो जिनका कुल ही न जानिए तिनको कन्या कैसे दीजिए तातैं ऐसो निर्लज्ज बात कहै सो राजा नीतिसे प्रतिकूल है सो कुमारी तो मैं न दूं अर कु कहिए खोटी मारी कहिए मृत्यु सो दूं या भांति दूतको विदा किया सो दूतने आयकर वज्रजघको व्योरा कहा सो वज्रजघ आपही चढ़ कर आधी दूर आय डेरा किये अर बड़े पुरुषनिको भेज वहुरि पृथुसे कन्या याची ताने न दई तब राजा वज्रजंघ पृथुका देश उजाड़ने लगा अर देशका रक्षक राजा व्याघ्ररथ ताहि युद्धविषै जीति बांध लिया तब राजा पृथुने सुनी कि व्याघ्ररथको राजा वज्रजंघने बांधा अर मेरा देश उजाड़े है तब पृथुने अपना परम मित्र पोदनापुरका पति परम सेनासे बुलाया तब वज्रजंघने पुण्डरीकपुरसे अपने पुत्र बुलाए तब पिताकी आज्ञा पाय पुत्र शीघ्र ही चलिवेको उद्यमी भए, नगरविषे राजपुत्रनिके कूचका नगारा बजा सब सामंत बख्तर पहिरे आयुध सजकर युद्धके चलनेको उद्यमी भए नगरविषै अति कोलाहल भया पुण्डरीकपुरमें जैसा

समुद्र गाजे ऐसा शब्द भया तब सामन्तनिके शब्द सुन लवण अर अंकुश निकटवर्तीको पूछने भए यह कोलाहल शब्द काहेका है ? तब काहूने कही अंकुशकुमारके परणायवे निमित्त वज्रजंघ राजाने पृथुकी पुत्री याची हुती सो ताने न दई तब राजा युद्धको चढ़े अर अब राजा अपनी सहायताके अर्थ अपने पुत्रनिको वुलाया है अर सेना वुलाई है सो यह सेनाका शब्द है। यह समाचार सुन कर दोऊ भाई आप युद्धके अर्थ अति शीघ्रही जायवेको उद्यमी भए। कैसे हैं कुमार आज्ञा भंगको नाहीं सह सके हैं तब वज्रजंघके पुत्र इनको मने करते भए अर सर्व राजलोक मने करते भए तौ हू इन न मानी तब सीता पुत्रनिके स्नेहकर द्रवीभूत हुवा है मन जाका सो पुत्रनिको कहती भई तुम बालक हो, तिहारा युद्धका समय नाहीं। तब कुमार कहते भए-हे माता ! तू यह कहा कही वडा भया अर कायर भया तो कहा ? यह पृथिवी योधानिकर भोगवे योग्य है अर अग्निका कण छोटा ही होय है अर महावनको भस्म करे है या भांति कुमारने कही तब माता इनको सुभट जान आंखोंसे हर्ष अर शोकके किंचितमात्र अश्रुपात करती भई ये दोऊ वीर महा धीर स्नान भोजन कर आभूषण पहिरे मन वचन कायकर सिद्धनिका नमस्कारकर बहुरि माताको प्रणामकर समस्त विधिविषै प्रवीण घरते बाहिर आए तब भले भले शकुन भए दोऊ रथ चढ़ सम्पूर्ण शस्त्रनिकर युक्त शीघ्रगामी तुरंग जोड़ पृथुपर चले महा सेनाकर मंडित धनुषबाणही है सहाय जिनके महा पराक्रमी परम उदारचित्त संग्रामके अग्रेसर पांच दिवसमें वज्रजंघपै जाय पहुंचे तब राजा पृथु शत्रूनिकी बड़ी सेना आई सुन आप भी बड़ी सेनासहित नगरसे निकसा जाके भाई मित्र पुत्र मामाके पुत्र सबही परम प्रीति पात्र अर अंगदेश बंगदेश मगधदेश आदि अनेक देशनिके बड़े बड़े राजा तिन सहित रथ तुरंग हाथी पयादे बड़े कटकसहित वज्रजंघपर आया तब वज्रजंघके सामन्त परसेनाके शब्द सुन युद्धको उद्यमी भए दोऊ सेना समीप भई तब दोऊ भाई लवणांकुश महा उत्साहरूप परसेनाविषै प्रवेश करते भए वे दोऊ योधा महा कोपको प्राप्त भए अति शीघ्र है परावर्त जिनका परसेनारूप समुद्रमें क्रीड़ा करते सब ओर परसेनाका निपात करते भए जैसे बिजलीका चमत्कार जिस ओर चमके उस ओर चमक उठे तैसे सब ओर मार मार करते

भए शत्रुनितैं न सहा जाय पराक्रम जिनका धनुष पकड़ते वाण चलाते दृष्टि न पड़ैं अर वाणनिकर हते अनेक दृष्टि पड़ैं नाना प्रकारके क्रूर वाण तिनकर वाहन सहित परसेनाके अनेक योधा पीड़े पृथिवी दुर्गम्य होय गई एक निमिषमें पृथुकी सेना भागी जैसे सिंहके त्राससे मदोन्मत्त गजनिके समूह भागें एक क्षण-मात्रमें पृथुकी सेनारूप नदी लवणांकुशरूप सूर्य तिनके वाणरूप किरणनिकर शोकको प्राप्त भई कैयक मारे पड़े कैयक भयतैं पीड़ित होय भागे, जैसे आकके फूल उड़े उड़े फिरैं। राजा पृथु सहायरहित खिन्न होय भागनेको उद्यमी भया तब दोऊ भाई कहते भए—हे पृथु! हम अज्ञात कुल शील हमारा कुल कोऊ जाने नाहीं तिनपै भागता तू लज्जावान् न होय है तू खड़ा रह, हमारा कुल शील तोहि वाणनिकरि बतावें, तब पृथु भागता हुता सो पीछा फिर हाथ जोड़ नमस्कारकर स्तुति करता भया तुम महा धीरवीर हो मेरा अज्ञानताजनित दोष क्षमा करहु मैं मूर्ख तिहारा माहात्म्य अबतक न जाना हुता महा धीरवीरनिका कुल, या सामंतताहीतै जाना जाय है कछु वाणीके कहेसे न जाना जाय है सो अब मैं निःसन्देह भया। वनके दाहकूं समर्थ जो अग्नि सो तेजहीतैं जानी जाय है सो आप परम धीर महाकुलविषै उपजे हमारे स्वामी हो महाभाग्यके योग्य तिहारा दर्शन भया तुम सबको मन वांछित सुखके दाता हो या भांति पृथुने प्रशंसा करी॥ तब दोऊ भाई नीचे होय गये अर क्रोध मिट गया शांतमन अर शांतमुख होय गये वज्रजंघ कुमारनिके समीप आया अर सब राजा आये कुमारनिके अर पृथुके प्रीति भई जे उत्तम पुरुष हैं वे प्रणाममात्र ही करि प्रसन्नताको प्राप्त होय हैं जैसे नदीका प्रवाह नम्रीभूत जे बेल तिनको न उपाड़े अर जे महावृक्ष नम्रीभूत नाहीं तिनको उपाड़े फिर राजा वज्रजंघको अर दोऊ कुमारनिको पृथु नगर में ले गया, दोऊ कुमार आनन्दके कारण। मदनांकुशको अपनी कन्या कनकमाला महाविभूतिसहित पृथुने परणाई एक रात्रि यहां रहे फिर यहां दोऊ भाई विचक्षण दिग्विजय करवेको निकसे सुह्यदेश मगध देश अंगदेश वंगदेश जीत पोदनापुरके राजाको आदि दे अनेक राजा संग लेय लोकाक्ष नगर गए, वा तरफके बहुत देश जीते कुवेरकांत नामा राजा अतिमानी ताहि ऐसा वश किया जैसे गरुड़ नागकूं जीतै

सत्यार्थपनेतैं दिन दिन इनके सेना वढ़ी हजारां राजा वश भए अर सेवा करने लगे फिर लंपाक देश गए वहां करण नामा राजा अतिप्रबल ताहि जीतकर विजयस्थलको गए वहांके राजा सौ भाई तिनको अवलोकन मात्रतैं ही जीत, गंगा उतर कैलाशकी उत्तर दिशि गए,वहांके राजा नाना प्रकारकी भेंट ले आय मिले झष कुन्तला नामा देश तथा सालायं, नंदी नंदन स्यघल शलभ अनल चल भीम, भूतरव, इत्यादि अनेक देशाधिपतिनिको वशकर सिंधु नदाके पार गये समुद्रके तटके राजा अनेकनिको नमाये अनेक नगर अनेक खेट अनेक अटंव अनेक देश वश किये भीरु देश यवन कच्छ चारव त्रजट नट सक केरल नेपाल मालव अरल सर्वरत्रिशिर पार शैल गोशाल कुसीनर सूरपारक सनत विधि शूरसेन बाह्लीक उलूक कोशल गांधार सौवीर अन्ध्र काल कलिंग इत्यादि अनेक देश वश किये कैसे हैं देश जिनविषै नाना प्रकारकी भाषा अर वस्त्रनिका भिन्न भिन्न पहराव अर जुदे २ गुण नाना प्रकारके रत्न अनेक जातिके वृच्त जिनविषै अर नाना प्रकार स्वर्ण आदि धनके भरे।

कैयक देशनिके राजा प्रतापहीतैं आय मिले कैयक युद्धविषै जीति वश किये, कैयक भाग गए वड़े बड़े राजा देशपति अति अनुरागी होय लवणांकुशके आज्ञाकारी होते भए इनकी आज्ञा प्रमाण पृथिवीविषै विचरें। वे दोनों भाई पुरुषोत्तम पृथिवीको जीत हजारा राजानिके शिरोमणि होते भए सबनिको वशकर लार लिए नाना प्रकारकी सुन्दर कथा करते सबका मन हरते पुण्डरीकपुरको उद्यमी भये। वज्रजंघ लार ही है अति हर्षके भरे अनेक राजानिकी अनेक प्रकार भेंट आई सो महाविभूतिको लिये अतिसेना कर मंडित पुण्डरीकपुरके समीप आए सीता सतखणेके महल चढ़ी देखे है राजलोककी अनेक राणी समीप हैं अर उत्तम सिहासन पर तिष्ठे हैं दूरसे अति सेनाकी रजके पटल उठे देख सखीजनको पूछती भई— यह दिशाविषै रजका उड़ाव कैसा है तब तिनने कहा–हे देवि! सेनाकी रज है जैसे जलविषै मकर किलोल करें तैंसे सेनाविषै अश्व उछलते आवे हैं हे स्वामिनि! ये दोनों कुमार पृथिवी वशकर आये या भांति सखीजन कहे हैं अर बधाई देनहारे आए नगरकी अति शोभा भई लोकनिके अति आनंद भया निर्मल

ध्वजा चढ़ाई समस्त नगर सुगंधकर छांटा अर वस्त्र आभूषणनिकर शोभित किया दरवाजेपर कलश थापे सो कलश पल्लवनिकरि ढके अर ठौर २ वंदनमाला शोभायमान दिखती भईं अर हाट बाजार पाटंवरादि वस्त्रकर शोभित भए जैसी श्रीराम लक्ष्मणके आये अयोध्याकी शोभा भई हुती तैसेही पुण्डरीकपुरकी शोभा कुमारनिके आयेसे भई। जा दिन महाविभूतिसूं प्रवेश किया ता दिन नगरके लोगनिको जो हर्ष भया सो कहिवेमें न आवै दोऊ पुत्र कृतकृत्य तिनको देखकर सीता आनन्दके सागरविषै मग्न भई दोऊ वीर महा धीर आयकर हाथ जोड़ माताको नमस्कार करते भये सेनाकी रजकर धूसरा है अंग जिसका, सीताने पुत्रनिको उरसे लगाय माथे हाथ धरा माताको अति आनन्द उपजाय दोऊ कुमार चांद सूर्यकी न्याईं लोकविषै प्रकाश करते भये॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषा वचनिकाविषै लवणांकुशकी दिग्विजय वर्णन करनेवाला एकसौएकवा पर्व पूर्ण भया ॥१०१॥

अथानन्तर—ये उत्तम मानव परम ऐश्वर्यके धारक प्रबल राजानि पर आज्ञा करते सुखसूं तिष्ठें एक दिन नारदने कृतान्तवक्त्रको पूछी कि तू सीताको कहां मेल आया, तब ताने कही कि सिंहनाद अटवी विषै मेली सो यह सुनकर अति व्याकुल होय ढूंढ़ता फिरे हुता सो दोऊ कुमार वनक्रीड़ा करते देखे तब नारद इनके समीप आया कुमार उठकर सन्मान करते भये नारद इनको विनयवान देख बहुत हर्षित भया अर असीस दई जैसे राम लक्ष्मण नरनाथकै लक्ष्मी है तैसी तुम्हारे होओ। तब ये पूछते भये कि हे देव! राम लक्ष्मण कोन हैं, अर कौन कुलविषै उपजे हैं अर कहा उनविषै गुण हैं अर कैसा तिनका आचरण है तब नारद क्षण एक मौन पकड़ कहते भये—हे दोऊ कुमारो! कोई मनुष्य भुजानिकर पर्वतको उखाड़ै अथवा समुद्रको तिरै तौहू राम लक्ष्मणके गुण कह न सकै अनेक वदननिकर दीर्घ काल तक तिनके गुण वर्णन करें तौभी राम लक्ष्मणके गुण कह न सकें तथापि मैं तिहारे वचनसे किंचित्मात्र वर्णन करूं हूं तिनके गुण पुण्यके बढ़ावनहारे हैं। अयोध्यापुरीविषै राजा दशरथ होते भये दुराचाररूप ईंधनके भस्म करवेको अग्नि समान, अर इक्ष्वाकुवंश रूप आकाशविषै चन्द्रमा महा तेजोमय सूर्य समान सकल पृथिवी-

विषै प्रकाश करते अयोध्याविषै तिष्ठें वे पुरुषरूप पर्वत तिनकरि कीर्तिरूप नदी निकसी, सो सकल जगतको आनन्द उपजावती समुद्र पर्यन्त विस्तारको धरती भई ता दशरथ भूपतिके राज्य भारके धुरंधरही चार पुत्र महा गुणवान भए एक राम दूजा लक्ष्मण तीजा भरत चौथा शत्रुघ्न तिनविषै राम अति मनोहर सर्वशास्त्रके ज्ञाता पृथिवीविषै प्रसिद्ध सो छोटे भाई लक्ष्मणसहित अर जनककी पुत्री जो सीता ता सहित पिताकी आज्ञा पालवे निमित्त अयोध्याको तज पृथिवीविषै विहार करते दण्डक वनविषै प्रवेश करते भये। सो स्थानक महाविषम जहां विद्याधरनिके गम्यता नाहीं खरदूषणते संग्राम भया रावणने सिंहनाद किया ताहि सुनकर लक्ष्मणकी सहाय करनेको राम गया पीछेसूं सीताको रावण हर ले गया तब रामसे सुग्रीव हनूमान विराधित आदि अनेक विद्याधर भेले भये रामके गुणनिके अनुरागकरि वशीभूत है हृदय जिनका सो विद्याधरनिको लेयकर राम लङ्काको गये रावणको जीत सीताको लेय अयोध्या आये स्वर्गपुरी समान अयोध्या विद्याधरनिने बनाई तहां राम लक्ष्मण पुरुषोत्तम नागेन्द्र समान सुखसे राज्य करें रामको तुम अब तक कैसे न जाना जाके लक्ष्मणसा भाई ताके हाथ सुदर्शन चक्र सो आयुध जाके एक एक रत्नकी हजार हजार देव सेवा करें सात रत्न लक्ष्मणके अर चार रत्न रामके जाने प्रजाके हित निमित्त जानकी तजी ता रामको सकल लोक जानें ऐसा कोई पृथिवीविषै नाहीं जो रामको न जाने। या पृथिवीकी कहा वात ? स्वर्गविषै देवनिके समूह रामके गुण वर्णन करे हैं।

तब अंकुशने कही—हे प्रभो। रामने जानकी काहे तजी सो वृत्तांत मैं सुना चाहूं हूं तब सीताके गुणनिकर धर्मानुरागमें है चित्त जाका ऐसा नारद सो आंसू डार कहता भया—हे कुमार हो! वह सीता सती महा निर्मल कुलविषै उपजी शीलवंती गुणवंती पतिव्रता श्रावकके आचारविषै प्रवीण रामकी आठ हजार राणी तिनकी शिरोमणि लक्ष्मी कीर्ति धृति लज्जा तिनको अपनी पवित्रतातैं जीतकर साक्षात् जिनवाणी तुल्य, सो कोई पूर्वोपार्जित पापके प्रभावकर मूढ़लोक अपवाद करते भये तातैं, रामने दुखित होय निर्जन वनविषै तजी खोटे लोक तिनकी वाणी सोई भई जेठके सूर्यकी किरण ताकर तप्तायमान वह सती कष्टको

प्राप्त भई महा सुकुमार जाविषै अल्प भी खेद न सहारा पड़े मालतीकी माला दीपके आतापकर मुरझाय सो दावानलका दाह कैसे सहार सके, महा भीम वन जाविषै अनेक दुष्ट जीव तहां सीता कैसे प्राणनिको धरे, दुष्ट जीवनिको जिह्वा भुजङ्ग समान निरपराध प्राणीनिको क्यूं डसे ? शुभ जीवनिकी निन्दा करते दुष्टनिके जीभके सौ टूक क्यूं न होवें वह महा सती पतिव्रतानिकी शिरोमणि पटुता आदि अनेक गुणनिकर प्रशंसायोग्य अत्यन्त निर्मल महा सती ताकी जो लोक निंदा कर सो या भव अर परभवविषै दुःखको प्राप्त होंय ऐसा कहकर शोकके भारकर मौन गह रहा विशेष कछू कह न सका सुनकर अंकुश बोले- हे स्वामिन् ! भयंकर वनविषै रामने सीताको तजते भला न किया । यह कुलवंतोंकी रीति नाहीं है लोकापवाद निवेरवेके और अनेक उपाय हैं ऐसा अविवेकका कार्य ज्ञानवंत क्यों करें । अंकुशने तो यही कही अर अनंगलवण बोला यहांसू अयोध्या केतीक दूर है ? तब नारदने कहा यहांसे एकसौ साठ योजन है जहां राम विराजै हैं । तब दोऊ कुमार बोले हम राम लक्ष्मणपर जावेंगे या पृथिवीविषै ऐसा कौन जाकी हम आगे प्रबलता, नादरसों यह कही अर वज्रजंघसे कही—हे मामा ! सूक्ष्म देश सिंधु देश कलिंग देश इत्यादि देशनिके राजाओंको आज्ञापत्र पठावहु जो संग्रामका सब सरञ्जाम लेकर शीघ्रही आवें हमारा अयोध्याकी तरफ कूच है अर हाथी समारो मदोन्मत्त केते अर निर्मद केते अर घोड़े वायु समान है वेग जिनका सो संग लेकर अर जे योधा रणसंग्रामविषै विख्यात कभी पीठ न दिखावें तिनको लार लेवो, सब शस्त्र सम्हारो बख्तरनिकी मरम्मत करावहु अर युद्धके नगारे दिवावहु ढोल बजावहु शंखनिके शब्द करावहु सब सामंतोंको युद्धका विचार प्रगट करहु । यह आज्ञाकर दोऊ वीर मनविषै युद्धका निश्चयकर तिष्ठे मानों दोऊ भाई इन्द्र ही हैं देवनि समान जे देशपति राजा तिनको एकत्र करिवेको उद्यमी भये तब राम लक्ष्मणपर कुमारनिकी असवारी सुन सीता रुदन करती भई अर सीताके समीप नारदको सिद्धार्थ कहता भया यह अशोभन कार्य तुम कहा आरम्भा रणविषै उद्यम करिवेका है उत्साह जिनके ऐसे तुम सो पिता अर पुत्रनिविषै क्यों विरोधका उद्यम किया अब काहू भांति यह विरोध निवारो, कुटुम्ब भेद करना उ-

चित नाहीं तब नारदने कहा मैं तो ऐसा कछू जान्या नाहीं इनने विनय किया मैंने आशीस दिया कि तुम राम लक्ष्मणसे होवो इनने सुनकर पूछी राम लक्ष्मण कौन ? मैंने सब वृत्तांत कहा अब भी तुम भय न करो सब नीके होयगा अपना मन निश्चल करहु कुमारनि सुनी कि माता रुदन करे है तब दोऊ पुत्र माताके पास आय कहते भये हे मात ! तुम रुदन क्यों करो हो सो कारण कहो तिहारी आज्ञाको कौन लोपे असुन्दर वचन कौन कहे ता दुष्टके प्राण हरें ऐसा कौन है जो सर्पकी जीभतें क्रीड़ा करे ऐसा कौन मनुष्य अर कौन देव जो तुमको असाता उपजावे हे मातः ! तुमने कौनपर कोप किया है जापर तुम कोप करो ताका जानिये आयुका अन्त आया है हमपर कृपाकर कोपका कारण कहहु या भांति पुत्रनि विनती करी तब माता आंसू डार कहती भई हे पुत्र ! मैं काहू पर कोप न किया न मुझे काहूने असाता दई तिहारा पितासे युद्धका आरम्भ सुन मैं दुखित भई रुदन करूं हूं। गौतम स्वामी कहे हैं हे श्रेणिक ! तब पुत्र मातासे पूछते भये हे माता ! हमारा पिता कौन ? तब सीताने आदिसे लेय सब वृत्तांत कहा—रामका वंश अर अपना वंश विवाहका वृत्तांत अर वनका गमन अपना रावणकर हरण अर आगमन जो नारदने वृत्तांत कहा हुता सो सब विस्तारसूं कहा कछु छिपाय न राखा अर कही तुम गर्भविषै आए तब ही तिहारे पिताने लोकापवादका भयकर मुझे सिंहनाद अटवीमें तजी तहां में रुदन करती हुती सो राजा वज्रजंघ हाथी पकड़ने गया हुता सो हाथी पकड़ वाहुड़े था मोहि रुदन करती देखी सो यह महा धर्मात्मा शीलवन्त श्रावक मोहि महा आदरसूं ल्याया बड़ी बहिनका आदर जनाया अर सत् सन्मानतें यहां राखी। मैं भाई भामंडल समान याका घर जाना तिहारा यहां सन्मान भया तुम श्रीरामके पुत्र हो राम महाराजाधिराज हिमाचल पर्वतसूं लेय समुद्रांत पृथिवीका राज्य करे हैं जिनके लक्ष्मणसा भाई महाबलवान् संग्रामविषै निपुण है न जानिये नाथकी अशुभ वार्ता सुनूं अक तिहारी अथवा देवरकी तातैं आर्तचित्त भई मैं रुदन करूं हूं अर कोऊ कारण नाहीं तब सुनकर पुत्र प्रसन्नवदन भए अर मातासे कहते भए हे माता ! हमारा पिता महा धनुषधारी लोकविषै श्रेष्ठ लक्ष्मीवान् विशाल कीर्तिका धारक है अर अनेक अद्भुत

काय किए हैं परन्तु तुमको वनविषै तजी सो भला न किया तातैं हम शीघ्रही राम लक्ष्मणका मानभंग क-
रेंगे तुम विषाद मत करहु तब सीता कहती भई हे पुत्र हो। वे तिहारे गुरुजन हैं उनसूं विरोध योग्य नाहीं।
तुम चित्त सौम्य करहु। महा विनयवन्त होय जायकर पिताको प्रणाम करहु यह हो नीतिका मार्ग है॥
तब पुत्र कहते भए हे माता! हमारा पिता शत्रुभावको प्राप्त भया हम कैसे जाय प्रणाम करें अर दीनताके
वचन कैसे कहें हम तो माता तिहारे पुत्र हैं तातैं रण संग्रामविषै हमारा मरण होय तो होवो परन्तु योधानिसे
निन्द्य कायर वचन तो हम न कहें, यह वचन पुत्रनिके सुन सीता मौन पकड़ रहीं परन्तु चित्तमें अति चिन्ता
है दोऊ कुमार स्नानकर भगवानकी पूजा कर मंगल पाठ पढ़ सिद्धनिको नमस्कारकर माताको धीर्य बन्धाय
प्रणाम कर दोऊ महा मंगलरूप हाथीपर चढ़ मानों चांद सूर्य गिरिके शिखर तिष्ठे हैं अयोध्या ऊपर युद्धको
उद्यमी भए जैसे राम लक्ष्मण लका ऊपर उद्यमी भए हुते इनका कूच सुन हजारां योधा पुण्डरीकपुरसे निकसे
सब ही योधा अपना अपना हल्ला देते भए वह जाने मेरी सेना अच्छी दीखे वह जाने मेरी, महाकटक संयुक्त
नित्य एक योजनका कूच करें सो पृथिवीकी रक्षा करते चले जायं हैं किसीका कछु उजाड़ें नाहीं। पृथिवी नाना
प्रकारके धान्यकरि शोभायमान है कुमारनिका प्रताप आगे आगे बढ़ता जाय है मागके राजा भेंट दे मिले हैं,
दस हजार वेलदार कुदाल लिए आगे आगे चले जाय हैं अर धरती ऊंची नीचीको सम करे हैं अर कुल्हाड़े
हैं हाथविषै जिनके वे भी आगे आगे चले जाय हैं अर हाथी ऊंट भैंसा बलद खच्चर खजानेके लदे जाय हैं, मत्री
आगे आगे चले जाय हैं अर प्यादे हिरणकी न्याईं उछलते जाय हैं अर तुरंगनिके असवार अति तेजीसे चले
जाय हैं तुरङ्गनिकी हींस होय रही है अर गजराज चले जाय हैं जिनके स्वर्णकी सांकल अर महा घंटानिका शब्द
होय है अर जिनके कानोंपर चमर शोभे हैं अर शंखनिकी ध्वनि होय रही है अर मोतिनिकी झालरी पा-
नीके बुदबुदा समान अत्यन्त सोहे हैं अर सुन्दर हैं आभूषण जिनके महा उद्धत जिनके उज्वल दांत-
निके स्वर्ण आदिके बन्ध बन्धे हैं अर रत्न स्वर्ण आदिककी माला तिनसे शोभायमान चलते पर्वत समान
नाना प्रकारके रंगसूं रंगे अर जिनके मद झरे हैं अर कारी घटा समान श्याम प्रचण्ड वेगको धरें जिन पर

पाखर परी हैं नानाप्रकारके शस्त्रनिकरि शोभित हैं अर गर्जना करे हैं अर जिन पर महादीप्तिके धारक सामन्त लोक चढ़े हैं अर महावतनिने अति सिखाये हैं अपनी सेनाका अर परसेनाका शब्द पिछाने हैं सुन्दर है चेष्टा जिनकी, अर घोड़ानिके असवार वख्तर पहिरे खेट नामा आयुधको धरे बरछी है जिनके हाथमें घोड़ानिके समूह तिनके खुरनिके घातकरि उठी जो रज ताकरि आकाश व्याप्त होय रहा है ऐसा सोहे है मानों सुफेद बादलनिसे मंडित है अर पियादे शस्त्रनिके समूहकरि शोभित अनेक चेष्टा करते गवसे चले जाय हैं वह जाने में आगे चलूं वह जाने में, अर-शयन आसन तांबूल सुगंध माला महामनोहर वस्त्र आहार विलेपन नानाप्रकारकी सामग्री बंटती जाय है ताकरि सबही सेनाके लोक सुखरूप हैं काहूको काहु प्रकारका खेद नाहीं अर मञ्जिल मञ्जिलपै कुमारनिकी आज्ञाकरि भले भले मनुष्यनिको लोक नानाप्रकारकी वस्तु देवे हैं उनको यही कार्य सौंपा है सो बहुत सावधान हैं नाना प्रकारके अन्न जल मिष्टान्न लवण घृत दुग्ध दही अनेक रस भांति भांति खानेको वस्तु आदरसो देवे हैं, समस्त सेनामें कोई दीन विभुक्षित तृषातुर कुवस्त्र मलिन चिन्तावान दृष्टि नाहीं पड़े है। सेनारूप समुद्रमें नर नारी नाना प्रकारके आभरण पहिरे सुन्दर वस्त्रनिकर शोभायमान महा रूपवान अति हर्षित दीखें। या भांति महा विभूति कर मण्डित सीता के पुत्र चले चले अयोध्याके देशविषै आये, मानों स्वर्गलोकमें इन्द्र आए जो देशमें यव गेहूं चावल आदि अनेक धान्य फल रहे हैं अर पौंडे सांठेनिके वाडे ठौर ठौर शोभे हैं। पृथिवी अन्न जल तृणकर पूर्ण है अर जहां नदीनिके तीर हूमुनिके समूह क्रीड़ा करे हैं अर सरोवर कमलनिके शोभायमान हैं अर पर्वत नाना प्रकारके पुष्पनिकर सुगंधित होय रहे हैं अर गीतनिकी ध्वनि ठौर ठौर होय रही है अर गाय भैंस बलध-निके समूह विचर रह हैं अर ग्वालणी विलोवणा बिलोवे हैं,जहां नगरनि सारिखे नजदीक नजदीक ग्राम हैं अर नगर ऐसे शोभे हैं मानों सुरपुर ही है। महा तेजकर युक्त लवणांकुश देशकी शोभा देखते अति नीतिसे आये काहूको काहू ही प्रकारका खेद न भया हाथिनिके मद झारवे कर पंथमें रज दब गई,कीच होय गयी अर चंचल घोड़निके खुरनिके घातकर पृथ्वी जर्जरी होय गई। चले चले अयोध्याके समीप आए

दूरसे सन्ध्याके बादलनिके रंग समान अति सुन्दर अयोध्या देख वज्रजंघको पूछी—हे माम ! यह महा ज्योतिरूप कौनसी नगरी है तब वज्रजंघने निश्चयकर कही—हे देव ! यह अयोध्या नगरी है जाके स्वर्ण मई कोट तिनकी यह ज्योति भासै है या नगरीमें तिहारा पिता बलदेवस्वामी विराजे है जाके लक्ष्मण अर शत्रुघ्न भाई या भांति वज्रजंघसे कही अर दोऊ कुमार शूरवीरताकी कथा करते सुखसे आय पहुंचे कटकके अर अयोध्याके बीच सरयू नदी रही दोऊ भाईनिकी यह इच्छा कि शीघ्र ही नदी उतर नगरी लेवें जैसे कोई मुनि शीघ्रही मुक्त हुआ चाहै ताहि मोक्षकी आशारूप नदी यथाख्यात चारित्र होने न देय आशारूप नदीको तिरै तब मुनि मुक्त होय तैसे सरयू नदीके योगसे शीघ्र ही नदीतें पार उतर नगरीमें न पहुंच सके तब जैसे नन्दन वनमेंदेवनिकी सेना उतरे तैसे नदीके उपवनादिमें ही कटकके डेरा कराए ॥

अथानन्तर—परसेना निकट आई सुन रामलक्ष्मण आश्चर्यको प्राप्त भये अर दोनों भाई परस्पर बतलावें ये कोई युद्धके अर्थ हमारे निकट आए हैं सो मुवा चाहे हैं वासुदेवने विराधितको आज्ञा करी—युद्धके निमित्त शीघ्र ही सेना भेली करो ढील न होय जिन विद्याधरोंके कपियोंकी ध्वजा अर बैलोंकी ध्वजा अर हाथियोंकी ध्वजा सिंहोंकी ध्वजा इत्यादि अनेक भांतिकी ध्वजा तिनको वेग बुलावो सो विराधितने कही जो आज्ञा होयगी सोई होयगा उस ही समय सुग्रीवादिक अनेक राजावोंपर दूत पठाये सो दूतके देखवे मात्रही सब विद्याधर बड़ी सेनासे अयोध्या आये। भामंडल भी आया सो भामण्डलको अत्यन्त आकुलता देख शीघ्रही सिद्धार्थ अर नारद जाय कर कहते भये—यह सीताके पुत्र हैं सीता पुण्डरीकपुरमें है तब यह बात सुनकर बहुत दुखित भया अर कुमारोंके अयोध्या आयवे पर आश्चर्यको प्राप्त भया अर इनका प्रताप सुन हर्षित भया मनके वेग समान जो विमान उसपर चढ़कर परिवार सहित पुण्डरीकपुर गया। बहिनसे मिला सीता भामण्डलको देख अति मोहित भई आंसू नाखती संती विलाप करती भई अर अपने ताईं घरसे काढ़नेका अर पुण्डरीकपुर आयवेका सर्व वृत्तान्त कहा तब भामण्डल बहिनको धीर्य बंधाय कहता भया—हे बहिन ! तेरे पुण्यके प्रभावसे सब भला होयगा अर कुमार अयोध्या गये सो भला न किया,

जायकर बलभद्र नारायणको क्रोध उपजाया राम लक्ष्मण दोनो भाई पुरुषोत्तम देवोंसे भी न जीते जायं महा योधा हैं कुमारोंके अर उनके युद्ध न होय सो ऐसा उपाय करें इसलिये तुमहू चलो। तब सीता पुत्रोंकी बधू संयुक्त भामंडलके विमान विषै बैठ चली। राम लक्ष्मण महा क्रोधकर रथ घोटक गज पियादे देव विद्याधर तिनकर मण्डित समुद्र समान सेना लेय वाहिर निकसे अर घोड़निके रथ चढ़ा शत्रुघ्न महा प्रतापी मोतिनिके हारकर शोभायमान है वक्षस्थल जिसका सो रामके संग भया अर कृतांतवक्र सब सेनाका अग्रेसर भया जैसे इन्द्रकी सेनाका अग्रगामा हृदयकेशी नामा देव होय उसका रथ अत्यन्त सोहता भया देवनिके समान जिसका रथ सो सेनापति चतुरंग सेना लिये अतुलबली अतिप्रतापी महा-ज्योतिको धरे धनुष चढ़ाय वाण लिये चला जाय , जिसकी श्याम ध्वजा शत्रुओंसे देखी न जाय उसके पीछे त्रिमूर्ध वह्निशिख सिंहविक्रम दीर्घभुज सिंहोदर सुमेरु बालखिल्य रौद्रभूत जिसके अष्टापदोंके रथ वज्रकर्ण पृथु मारदमन मृगेंद्रहव इत्यादि पांच हजार नृपति कृतांतवक्रके संग अग्रगामी भए वन्दीजन बखाने हैं विरद जिनके अर अनेक रघुवंशी कुमार देखे हैं अनेक रण जिन्होंने शस्त्रोंपर है दृष्टि जिनकी युद्धका है उत्साह जिनके, स्वामी भक्तिविषै तत्पर महाबलवन्त धरतीको कंपाते शीघ्रही निकसे कईएक नाना प्रकारके रथोंपर चढ़े कईएक पर्वत समान ऊंचे कारी घटा समान हाथिनिपर चढ़े, कईएक समुद्रकी तरंग समान चंचल तुरंग तिनपर चढ़े। इत्यादि अनेक वाहनों पर चढ़े युद्धको निकसे वादित्रोंके शब्दकर करी है व्याप्त दशोंदिशा जिन्होंने बख्तर पहिरे टोप धरे क्रोधकर संयुक्त है चित्त जिनका, तब लव अंकुश परसेनाका शब्द सुन युद्धको उद्यमी भए वज्रजंघको आज्ञा करी, कुमारकी सेनाके लोक युद्धके उद्यमी हुते ही। प्रलयकालकी अग्नि समान महाप्रचंड अंगदेश वंगदेश नेपाल वर्वर पौंड्र मागध पारसैल स्यंघल कलिंग इत्यादि अनेक देशनिके राजा रत्नांकको आदि दे महा बलवंत ग्यारह हजार राजा उत्तम तेजके धारक युद्धके उद्यमी भए दोनों सेनानिका संघट्ट भया दोनों सेनानिके संगमविषै देवनिको असुरनिको आश्चर्य उपजै ऐसा महा भयंकर शब्द भया जैसा प्रलयकालका समुद्र गाजै परस्पर यह शब्द होते भए

क्या देख रहा है प्रथम प्रहार क्यों न करै मेरा मन तोपर प्रथम प्रहार करिवेपर नाहीं तातें तू ही प्रथम प्रहार कर अर कोई कहे है एक डिग आगे होवो जो शस्त्र चलाऊं कोई अत्यंत समीप होय गये तव कहे है खञ्जर तथा कटारी हाथ लेवो निपट नजदीक भए वाणका अवसर नाहीं। कोई कायरको देख कहे हैं तू क्यों कांपे है मैं कायरको न मारूं तू परे हो आगे महा योधा खड़ा है उससे युद्ध करने दे कोई वृथा गाजे है उसे सामंत कहे है हे क्षुद्र। कहा वृथा गाजे है गाजनेमें सामन्तपना नाहीं जो तोविषै सामर्थ्य है तो आगे आव, तेरी रणकी भूख भगाऊं इस भांति योधानिमें परस्पर वचनालाप होय रहे हैं तरवार वहे हैं भूमिगोचरी विद्याधर सबही आए हैं भामण्डल पवनवेग वीर मृगांक विद्युद्ध्वज इत्यादि बड़े २ राजा विद्याधर बड़ी सेनाकर युक्त महारण विषै प्रवीण सो लवण अंकुशके समाचार सुन युद्धसे पराङ्मुख शिथिल होय गये अर सब वातोंविषै प्रवीण हनूमान सो भी सीताके पुत्र जान युद्धसे शिथिल होय रहा अर विमानके शिखरविषै आरूढ़ जानकीको देख सबही विद्याधर हाथ जोड़ सीस नवाय प्रणामकर मध्यस्थ होय रहे सीता दोनों सेना देख रोमांच होय आई, कांपे है अग जाका। लवण अंकुश लहलहाट करे हैं ध्वजा जिनकी राम लक्ष्मणसे युद्धके उद्यमी भए। रामके सिंहकी ध्वजा लक्ष्मणके गरुड़की सो दोनों कुमार महायोधा राम लक्ष्मणसे युद्ध करते भये। लवण तो रामसे लड़े अर अंकुश लक्ष्मणसे लड़े सो लवने आवते ही श्रीरामकी ध्वजा छदी अर धनुष तोड़ा तब राम हंसकर और धनुष लेयवेको उद्यमी भया। इतनेविषै लवने रामका रथ तोड़ा तब राम और रथ चढ़ प्रचंड है पराक्रम जिसका क्रोधकर भृकुटी चढ़ाय ग्रीषमके सूर्य समान तेजस्वी जैसे चमरेंद्रपर इन्द्र जाय तैसे गया तब जानकीका नंदन लवण युद्धकी पाहुनगति करनेको रामके सन्मुख आया रामके अर लवके परस्पर महायुद्ध भया। वाने वाके शस्त्र छेदे वाने वाके जैसा युद्ध राम अर लवका भया तैसा ही अंकुश अर लक्ष्मणका भया। या भांति परस्पर दोनों युगल लड़े तब योधा भी परस्पर लड़े घोड़ोंके समूह रणरूप समुद्रकी तरङ्ग समान उछलते भये कोई एक योधा प्रतिपक्षीको टूटे बक्तर देख दयाकर मौन गह रहा अर कईएक योधा मने करते परसेनाविषै पैठे सो स्वामीका नाम उंचा-

रते परचक्रसे लड़ते भये कईएक महाभट माते हाथियोंसे भिड़ते भये कईएक हाथियोंके दांत रूप सेजपर रणनिद्रा सुखसे लेते भये काहू एक महाभटका तुरङ्ग काम आया सो पियादा ही लड़ने लगा काहूके शस्त्र टूट गये तो भी पीछे न होता भया हाथोंसे मुष्टि प्रहार करता भया अर कोईएक सामन्त वाण वाहने चुक गया उसे प्रतिपक्षी कहना भया बहुरि चलाय सो लज्जा कर न चलावता भया अर कोईएक निर्भयिचित्त प्रतिपक्षीको शस्त्ररहित देख आप भी शस्त्र तज भुजावोंसे युद्ध करता भया ते योधा बड़े दाता रण संग्रामविषै प्राण देते भये परन्तु पीठ न देते भये जहां रुधिरकी कीच होय रही है सो रथोंके पहिये डूब गये हैं सारथी शीघ्र ही नहीं चला सके हैं। परस्पर शस्त्रोंके संपातकर अग्नि पड़ रही है अर हाथियोंकी सूंड़के छांटे उछले हैं। अर सामन्तोंने हाथियोंके कुम्भस्थल विदारे हैं सामन्तोंके उरस्थल विदारे हैं हाथो काम आय गये हैं तिनकर मार्ग रुक रहा है अर हाथियोंके मोती विखर रहे हैं वह युद्ध महा भयंकर होता भया जहां समन्त अपना सिर देयकर यशरूप रत्न खरीदते भये जहां मूर्छितपर कोई घात नहीं करै अर निर्वल पर घात न करै सामन्तोंका है युद्ध जहां महा-युद्धके करणहारे योधा जिनके जीवनेकी आशा नहीं क्षोभको प्राप्त भया समुद्र गाजै तैसा होय रहा है शब्द जहां सो वह संग्राम समरस कहिये समान रस होता भया॥

भावार्थ—न वह सेना हटी न वह सेना हटी योधानिमें न्यूनाधिकता परस्पर दृष्टि न पड़ी। कैसे हैं योधा ? स्वामीविषै हैं परम भक्ति जिनकी अर स्वामीने आजीविका दई थी उसके बदले यह जीव दिया चाहे हैं प्रचण्ड रणकी है खाज जिनके सूर्य समान तेजको धरे संग्रामके धुरन्धर होते भए॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषा वचनिकाविषै लवणाकुशका लक्ष्मणसेयुद्ध वर्णन करनेवाला एकसोदोवा पर्व पूर्ण भया ॥१०२॥

अथानन्तर—गौतम स्वामी कहे हैं—हे श्रेणिक ! अब जो वृत्तांत भया सो सुनो अनंगलवणके तो सारथी राजा वज्रजंघ अर मदनांकुशके राजा पृथु अर लक्ष्मणके विराधित अर रामके कृतांतवक्र तब श्रीराम वज्रावर्त धनुषको चढ़ायकर कृतांतवक्रसे कहते भए अब तुम शीघ्र ही शत्रुवों पर रथ चलावो ढील न करो,

तब वह कहता भया हे देव ! देखो यह घोड़े नरवीरके बाणनिकर जरजरे होय रहे हैं इनमें तेज नाहीं मानों निद्राको प्राप्त भए हैं यह तुरंग लोहूकी धाराकर धरतीको रगे हैं मानों अपना अनुराग प्रभुको दिखावे हैं अर मेरी भुजा इसके बाणनिकर भेदी गई है बख्तर टूट गया है तब श्रीराम कहते भए मेरा भी धनुष युद्ध कर्मरहित ऐसा होय गया है मानों चित्रामका धनुष है अर यह मूसल भी कार्यरहित होय गया है अर दुर्निवार जे शत्रु रूप गजराज तिनको अंकुश समान यह हल सो भी शिथिलताको भजे है शत्रुके पक्षको भयंकर मेरे अमोघशस्त्र जिनकी सहस्र सहस्र यक्ष रक्षा करें वे शिथिल होय गये हैं शस्त्रोंकी सामर्थ्य नाहीं जो शत्रु पर चलें। गौतमस्वामी कहे हैं—हे श्रेणिक ! जैसे अनंगलवण आगे रामके शस्त्र निरथक होय गये तैसे ही मदनांकुशके आगे लक्ष्मणके शस्त्र कार्यरहित होय गए। वे दोनों भाई तो जानें कि ये राम लक्ष्मण तो हमारे पिता अर पितृव्य (चचा) हैं सो वे तो इनका अंग बचाय शर चलावें अर ये उनको जानें नहीं सो शत्रु जान कर शर चलावें लक्ष्मण दिव्यास्त्रकी सामर्थ्य उनपर चलवेकी न जान शर शेल सामान्यचक्र खड्ग अंकुश चलावता भया सो अंकुशने वज्रदण्डकर लक्ष्मणके आयुध निराकरण किए अर रामके चलाए आयुध लवणने नराकरण किए फिर लवणने रामकी ओर शेल चलाया अर अंकुशने लक्ष्मण पर चलाया सो ऐसी निपुणतासे दोनोंके मर्मकी ठौर न लागे समान्य चोट लगी सो लक्ष्मणके नेत्र घूमने लगे विराधितने अयोध्याकी ओर रथ फेरा तब लक्ष्मण सचेत होय कोप कर विराधितसे कहता भया—हे विराधित ! तैंने क्या किया मेरा रथ फेरा अब पीछा बहुरि शत्रुका सन्मुख लेवो रणमें पीठ न दीजिए जे शूरवीर हैं तिनको शत्रुके सन्मुख मरण भला परन्तु यह पीठ देना महा निंद्यकर्म शूरवीरोंको योग्य नाहीं। कैसे हैं शूरवीर ? युद्धमें बाणनिकर पूरित है अंग जिनका जे देव मनुष्यनिकर प्रशंसा योग्य वे कायरता कैसे भजें। मैं दशरथका पुत्र रामका भाई वासुदेव पृथिवीविषै प्रसिद्ध सो संग्राममें पीठ कैसे देऊं यह वचन लक्ष्मणने कहे तब विराधितने रथको युद्धके सन्मुख किया सो लक्ष्मणके अर मदनांकुशके महायुद्ध भया लक्ष्मणने क्रोधकर महाभयंकर चक्र हाथमें लिया चक्र महाज्वाला रूप देखा न जाय

ग्रीष्मके सूर्य समान सो अंकुश पर चलाया सो अंकुशके समीप जाय प्रभारहित होय गया अर उलटा लक्ष्मणके हाथमें आया बहुरि लक्ष्मणने चक्र चलाया सो पीछे आया या भांति बारबार पीछा आया बहुरि अंकुशने धनुष हाथविषै गहा तब अंकुशको महा तेजरूप देख लक्ष्मणके पक्षके सब सामन्त आश्चर्यको प्राप्त भए तिनको यह बुद्धि उपजी यह महापराक्रमी अर्धचक्री उपजा लक्ष्मणने कोटि शिला उठाई अर मुनिके वचन जिनशासनका कथन और भांति कैसे होय अर लक्ष्मण भी मनविषै जानता भया कि ये बलभद्र नारायण उपजें आप अति लज्जावान होय युद्धकी क्रियासे शिथिल भया ॥

अथानन्तर—लक्ष्मणको शिथिल देख सिद्धार्थ नारदके कहेसे लक्ष्मणके समीप आय कहता भया वासुदेव तुमही हो जिनशासनके वचन सुमेरुसे अति निश्चल हैं यह कुमार जानकीके पुत्र हैं गर्भविषै थे तब जानकीको वनमें तजी यह तिहारे अंग हैं तातैं इनपर चक्रादिक शस्त्र न चलें तब लक्ष्मणने दोनों कुमारोंका वृत्तांत सुन हर्षित होय हाथसे हथियार डार दिए बख्तर दूर किया सीताके दुःखकर अश्रुपात डारने लगा अर नेत्र घूमने लगे राम शस्त्र डार बख्तर उतार मोहकर मूर्छित भए, चन्दनसे छांट सचेत किए तब स्नेहके भरे पुत्रनिके समीप चले पुत्र रथसे उतर हाथ जोड़ सीस नवाय पिताके पायन पड़े श्रीराम स्नेहकर द्रवीभूत भया है मन जिनका पुत्रोंको उरसे लगाय विलाप करते भये आंसुनि कर मेघकासा दिन किया। राम कहे हैं हाय पुत्र हो! मैं मंदबुद्धि गर्भविषै तिष्ठते तुमको सीता सहित भयंकर वनविषै तजे तिहारी माता निर्दोष, हाय पुत्र हो! मैं कोई विस्तीर्ण पुण्य कर तुम सारिखे पुत्र पाये सो उदर विषै तिष्ठते तुम भयङ्कर वनविषै कष्टको प्राप्त भये हाय वत्स हो! जो यह वज्रजंघ वनमें न आवता तो तिहारा मुखरूप चन्द्रमा मैं कैसे देखता, हाय बालक हो। इन अमोघ दिव्यास्त्रोंकर तुम न हते गये सो मेरे पुण्यके उदयकर देवोंने सहाय करी हाय मेरे अङ्गज हो मेरे बाणनिकर बींधे तुम रणक्षेत्रविषै पड़ते तो न जानूं जानकी क्या करती सब दुःखोंमें घरसे काढनेका बड़ा दुःख है सो तिहारी माता महा गुणवन्ती व्रतवंती पतिव्रता मैं वनमें तजी अर तुमसे पुत्र गर्भविषै सो मैं यह काम बहुत बिन समझे किया अर जो कदाचित् तिहारा

तव वह कहता भया हे देव ! देखो यह घोड़े नरवीरके वाणनिकर जरजरे होय रहे हैं इनमें तेज नाहीं मानों निद्राको प्राप्त भए हैं यह तुरंग लोहूकी धाराकर धरतीको रंगे हैं मानों अपना अनुराग प्रभुको दिखावे हैं अर मेरी भुजा इसके वाणनिकर भेदी गई है वख्तर टूट गया है तव श्रीराम कहते भए मेरा भी धनुष युद्ध कर्मरहित ऐसा होय गया है मानों चित्रामका धनुष है अर यह मूसल भी कार्यरहित होय गया है अर दुर्निवार जे शत्रु रूप गजराज तिनको अंकुश समान यह हल सो भी शिथिलताको भजे है शत्रुके पक्षको भयंकर मेरे अमोघशस्त्र जिनकी सहस्र सहस्र यक्ष रक्षा करें वे शिथिल होय गये हैं शस्त्रोंकी सामर्थ्य नाहीं जो शत्रु पर चलें। गौतमस्वामी कहे हैं—हे श्रेणिक ! जैसे अनंगलवण आगे रामके शस्त्र निरर्थक होय गये तैसे ही मदनांकुशके आगे लक्ष्मणके शस्त्र कार्यरहित होय गए। वे दोनों भाई तो जानें कि ये राम लक्ष्मण तो हमारे पिता अर पितृव्य (चचा) हैं सो वे तो इनका अंग बचाय शर चलावें अर ये उनको जानें नहीं सो शत्रु जान कर शर चलावें लक्ष्मण दिव्यास्त्रकी सामर्थ्य उनपर चलवेकी न जान शर शेल सामान्यचक्र खड्ग अंकुश चलावता भया सो अंकुशने वज्रदण्डकर लक्ष्मणके आयुध निराकरण किए अर रामके चलाए आयुध लवणने नराकरण किए फिर लवणने रामकी ओर शेल चलाया अर अंकुशने लक्ष्मण पर चलाया सो ऐसी निपुणतासे दोनोंके मर्मकी ठौर न लागे समान्य चोट लगी सो लक्ष्मणके नेत्र घूमने लगे विराधितने अयोध्याकी ओर रथ फेरा तव लक्ष्मण सचेत होय कोप कर विराधितसे कहता भया—हे विराधित। तैंने क्या किया मेरा रथ फेरा अब पीछा बहुरि शत्रुका सन्मुख लेवो रणमें पीठ न दीजिए जे शूरवीर हैं तिनको शत्रुके सन्मुख मरण भला परन्तु यह पीठ देना महा निंद्यकर्म शरवीरोंको योग्य नाहीं। कैसे हैं शूरवीर ? युद्धमें वाणनिकर पूरित है अंग जिनका जे देव मनुष्यनिकर प्रशंसा योग्य वे कायरता कैसे भजें। मैं दशरथका पुत्र रामका भाई वासुदेव पृथिवीविषै प्रसिद्ध सो संग्राममें पीठ कैसे देऊं यह वचन लक्ष्मणने कहे तव विराधितने रथको युद्धके सन्मुख किया सो लक्ष्मणके अर मदनांकुशके महायुद्ध भया लक्ष्मणने क्रोधकर महाभयंकर चक्र हाथमें लिया चक्र महाज्वाला रूप देखा न जाय

ग्रीष्मके सूर्य समान सो अंकुश पर चलाया सो अंकुशके समीप जाय प्रभारहित होय गया अर उलटा लक्ष्मणके हाथमें आया बहुरि लक्ष्मणने चक्र चलाया सो पीछे आया या भांति बारबार पीछा आया बहुरि अंकुशने धनुष हाथविषै गहा तब अंकुशको महा तेजरूप देख लक्ष्मणके पक्षके सब सामन्त आश्चर्यको प्राप्त भए तिनको यह बुद्धि उपजी यह महापराक्रमी अर्धचक्री उपजा लक्ष्मणने कोटि शिला उठाई अर मुनिके वचन जिनशासनका कथन और भांति कैसे होय अर लक्ष्मण भी मनविषै जानता भया कि ये बलभद्र नारायण उपजें आप अति लज्जावान होय युद्धकी क्रियासे शिथिल भया ॥

अथानन्तर—लक्ष्मणको शिथिल देख सिद्धार्थ नारदके कहेसे लक्ष्मणके समीप आय कहता भया वासुदेव तुमही हो जिनशासनके वचन सुमेरुसे अति निश्चल हैं यह कुमार जानकीके पुत्र हैं गर्भविषै थे तब जानकीको वनमें तजी यह तिहारे अंग हैं तातैं इनपर चक्रादिक शस्त्र न चलें तब लक्ष्मणने दोनों कुमारोंका वृत्तांत सुन हर्षित होय हाथसे हथियार डार दिए बख्तर दूर किया सीताके दुःखकर अश्रुपात डारने लगा अर नेत्र घूमने लगे राम शस्त्र डार बख्तर उतार मोहकर मूर्च्छित भए, चन्दनसे छांट सचेत किए तब स्नेहके भरे पुत्रनिके समीप चले पुत्र रथसे उतर हाथ जोड़ सीस नवाय पिताके पायन पड़े श्रीराम स्नेहकर द्रवीभूत भया है मन जिनका पुत्रोंको उरसे लगाय विलाप करते भये आंसुनि कर मेघकासा दिन किया। राम कहे हैं हाय पुत्र हो ! मैं मंदबुद्धि गर्भविषै तिष्ठते तुमको सीता सहित भयंकर वनविषै तजे तिहारी माता निर्दोष, हाय पुत्र हो ! मैं कोई विस्तीर्ण पुण्य कर तुम सारिखे पुत्र पाये सो उदर विषै तिष्ठते तुम भयङ्कर वनविषै कष्टको प्राप्त भये हाय वत्स हो । जो यह वज्रजंघ वनमें न आवता तो तिहारा मुखरूप चन्द्रमा मैं कैसे देखता, हाय बालक हो ! इन अमोघ दिव्यास्त्रोंकर तुम न हते गये सो मेरे पुण्यके उदयकर देवोंने सहाय करी हाय मेरे अङ्गज हो मेरे बाणनिकर बींधे तुम रणक्षेत्रविषै पड़ते तो न जानूं जानकी क्या करती सब दुःखोंमें घरसे काढनेका बड़ा दुःख है सो तिहारी माता महा गुणवन्ती व्रतवंती पतिव्रता मैं वनमें तजी अर तुमसे पुत्र गर्भविषै सो मैं यह काम बहुत बिन समझे किया अर जो कदाचित् तिहारा

युद्धमें अन्यथा भाव भया होता तो मैं निश्चयसे जानूं हूं शोकसे विह्वल जानकी न जीवती। या भांति रामने विलाप किया, बहुरि कुमार विनयकर लक्ष्मणको प्रणाम करते भये लक्ष्मण सीताके शोकसे विह्वल आंसू डारता स्नेहका भरा दोनों कुमारनिको उरसे लगावता भया। शत्रुघ्न आदि यह वृत्तांत सुन तहां आए कुमार यथायोग्य विनय करते भये ये उरसों लगाय मिले। परस्पर अति प्रीति उपजी दोनों सेनाके लोक अतिहित कर परस्पर मिले क्योंकि जब स्वामीकूं स्नेह होय तब सेवकोंके भी होय सीता पुत्रोंका माहात्म्य देख अति हर्षित होय विमानके मार्ग होय पीछे पुण्डरीकपुरविषै गई अर भामण्डल विमानसे उतर स्नेहका भरा आंसू डारता भानजोंसे मिला, अतिहर्षित भया अर प्रीतिका भरा हनूमान उरसे लगाय मिला अर वारम्वार कहता भया भली भई, भली भई, अर विभीषण सुग्रीव विराधित सबही कुमारनिसे मिले, परस्पर हित संभाषण भया भूमिगोचरी विद्याधर सबही मिले अर देवनिका आगम भया सबोंको आनन्द उपजा राम पुत्रनिको पाय कर अति आनन्दको प्राप्त भए, सकल पृथिवीके राज्यसे पुत्रोंका लाभ अधिक मानते भए, जो रामके हर्ष भया सो कहिवेमें न आवै अर विद्याधरी आकाशविषे आनन्दसे नृत्य करती भईं अर भूमिगोचरिनिकी स्त्री पृथिवीविषैं नृत्य करती भईं अर लक्ष्मण आपको कृतार्थ मानता भया मानों सब लोक जीता हर्षसे फूल गए हैं लोचन जिनके, अर राम मनविषै जानता भया मैं सगर च-क्रवर्ती समान हूं अर कुमार दोनों भीम अर भगीरथ समान हैं राम वज्रजंघसे अति प्रीति करता भया जो तुम मेरे भामंडल समान हो अयोध्यापुरी तो पहिले ही स्वर्गपुरी समान थी तो बहुरि कुमारनिके आयवेकर अति शोभायमान भई जैसे सुन्दर स्त्री सहजही शोभायमान होय अर शृङ्गार कर अति शोभाको पावै, श्रीराम लक्ष्मणसहित अर दोऊ पुत्रों सहित सूर्यकी ज्योतिसमान जो पुष्पक विमान उसविषै विराजे सूर्य समान है ज्योति जिनकी रामलक्ष्मण अर दोऊ कुमार अद्भुत आभूषण पहिरे सो कैसी शोभा बनी है मानों सुमेरुके शिखरपर महामेघ विजुरीके चमत्कार सहित तिष्ठा है ॥

भावार्थ—विमान तो सुमेरुका शिखर भया अर लक्ष्मण महामेघका स्वरूप भया अर राम तथा

रामके पुत्र विद्युत् समान भये सो ये चढ़कर नगरके बाह्य उद्यान विषै जिनमंदिर हैं तिनके दर्शनको चले सो नगरके कोटपर ठौर ठौर ध्वजा चढ़ी हैं तिनको देखते धीरे धीरे जाय हैं लार अनेक राजा केई हाथियों पर चढ़े, केई घोड़ों पर केई रथों पर चढ़े जाय हैं अर पियादोंके समूह जाय हैं, धनुष वाण इत्यादि अनेक आयुध अर ध्वजा छत्रनिकर सूर्यकी किरण नजर नहीं पड़े हैं अर स्त्रीनिके समूह झरोखनि विषै बैठी देखे हैं। लव अंकुशके देखवेका सबनिकूं बहुत कौतूहल है नेत्ररूप अञ्जुलिनिकर लवणांकुशके सुन्दरतारूप अमृतका पान करे हैं सो तृप्त नाहीं होय हैं एकाग्रचित्त भई इनको देखे हैं अर नगरमें नर नारिनिकी ऐसी भीड भई काहूके हार कुण्डलकी गम्य नाहीं अर नारी जन परस्पर वार्ता करे हैं कोई कहे है—हे माता। टुक मुख इधर कर मोहि कुमारनिके देखिवेका कौतुक है। हे अखण्डकौतुके। तूने तो घनी बार लग देखे अब हमें देखने देवो अपना सिर नीचा कर ज्यों हमको दीखै कहा ऊंचा सिर कर रही है, कोई कहे है—हे सखि! तेरे सिरके केश विखर रहे हैं, सो नीके समार अर कोई कहे है—हे चित्तमानसे कहिये एक ठौर नाहीं है चित्त जाका सो तू कहा हमारे प्राणोंको पीड़े है ने तू देखै यह गर्भवती स्त्री खड़ी है पीडित है कोऊ कहे टुक परे होहु कहा अचेतन होय रही है कुमारोंको न देखने देहै यह दोनों रामदेवके कुमार रामदेवके समीप बैठे अष्टमीके चन्द्रमासमान है ललाट जिनका कोई पूछे है इनमें लवण कौन अर अंकुश कौन यह तो दोनो तुल्यरूप भासे हैं तब कोई कहे है यह लाल वस्त्र पहिरे लवण है अर यह हरे वस्त्र पहिरे अंकुश है। अहो धन्य सीता महापुण्यवती जिनने ऐसे पुत्र जने अर कोई कहे है धन्य है वह स्त्री जिसने ऐसे वर पाए हैं एकाग्रचित्त भई स्त्री इत्यादि वार्ता करती भईं इनके देखवेमें है चित्त जिनका, अति भीड़ भई सो भीड़में कर्णाभरणरूप सर्पकी डाढकर डसे गये हैं कपोल जिनके सो न जानती भई तद्गत है चित्त जिनका काहूकी कांचीदाम जाती रही सो वाहि खबर नहीं काहूके मोतिनिके हार टूटे सो मोती विखर रहे हैं। मानों कुमार आये सो ये पुष्पांजलि बरसे हैं अर केई एकोंको नेत्रोंकी पलक नहीं लगे हैं असवारी दूर गई है तोभी उसी ओर देखे हैं नगरकी उत्तम

स्त्री वेई भई वेल सो पुष्पवृष्टि करती भई सो पुष्पोंकी मकरंदकर मार्ग सुगन्ध होय रहा है श्रीराम अति शोभाकूं प्राप्त भए पुत्रोंसहित वनके चैत्यालयोंका दर्शनकर अपने मन्दिर आये। कैसा है मन्दिर? महा मंगलकर पूर्ण है ऐसे अपने प्यारे जनोंके आगमका उत्साह सुखरूप ताका वरणन कहां लग करिये पुण्य रूपी सूर्यका प्रकाशकर फूला है मन कमल जिनका ऐसे मनुष्य वेई अद्भुत सुखकूं पावे हैं॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषा वचनिकाविषै राम लक्ष्मणसूं लवणांकुशका मिलाप वर्णन करनेवाला एकसौतीनवा पर्व पूर्ण भया॥१०३॥

अथानन्तर—विभीषण सुग्रीव हनूमान् मिलकर रामसे विनती करते भये हे नाथ! हमपर कृपा करो हमारी विनती मानो जानकी दुःखसे तिष्ठे हैं इसलिये यहां लायवेकी आज्ञा करो, तब राम दीर्घ उष्ण निश्वास नाख क्षण एक विचारकर बोले, मैं सीताको शील दोषरहित जानूं हूं, वह उत्तम चित्त है परन्तु लोकापवादकर घरसे काढा है अब कैसे बुलाऊं, इसलिये लोकनिको प्रतीति उपजायकर जानकी आवै तब हमारा उनका सहवास होय, अन्यथा कैसे होय इसलिये सब देशनिके राजानिको बुलावो समस्त विद्याधर अर भूमिगोचरी आवें सबनिके देखते सीता दिव्य लेकर शुद्ध होय मेरे घरविषै प्रवेश करे जैसे शची इंद्रके घरविषै प्रवेश करे तब सबने कही जो आप आज्ञा करोगे सोही होयगा तब सब देशनिके राजा बुलाये सो बाल वृद्ध स्त्री परिवार सहित अयोध्या नगरी आये जे सूर्यको भी न देखें घरहीविषै रहें वे नारी भी आई अर लोकनिकी कहा बात? जे वृद्ध बहुत वृतान्तके जाननेहारे देशविषै मुखिया सब दिशानिसे आए कैयक तुरंगों पर चढ़ कैयक रथनिपर चढ़े तथा पालकी हाथी अर अनेक प्रकार असवारिनिपर चढ़े बड़ी विभूतिसे आये विद्याधर आकाशके मार्ग होय विमान बैठे आए अर भूमिगोचरी भूमिके मार्ग आये मानों जगत् जंगम होय गया, रामकी आज्ञासे जे अधिकारी हुते तिन्होंने नगरके बाहिर लोकनिके रहनेके लिये डेरे खड़े कराए अर महा विस्तीर्ण अनेक महिल बनाये तिनके दृढ़स्तंभके ऊंचे मंडप उदार झरोखे सुन्दर जाली तिनविषै स्त्रियें भेली अर पुरुष भेले भये, पुरुष यथायोग्य बैठे दिव्यको दिखवेकी है अभिलाषा जिनके जेते मनुष्य आए तिनकी सर्व भांति पाहुनगति राजद्वारके अधिकारियोंने करी, सबनिको

शय्या आसन भोजन तांबूल वस्त्र सुगंध मालादिक समस्त सामग्री राजद्वारसे पहुंची सबनिकी स्थिरता करी अर रामकी आज्ञासे भामण्डल विभीषण हनूमान सुग्रीव विराधित रत्नजटी यह बड़े बड़े राजा आकाशके मार्ग क्षणमात्रविषै पुण्डरीकपुर गए सो सब सेना नगरके बाहिर राख अपने समीप लोगनि सहित जहां जानकी थी वहां आए जय जय शब्दकर पुष्पांजलि चढ़ाय पांयनको प्रणामकर अति विनयसंयुक्त आंगणविषै बैठे, तब सीता आंसू डारती अपनी निंदा करती भई—दुर्जनोंके वचनरूप दावानलकरि दग्ध भये हैं अंग मेरे सो क्षीरसागरके जलकर भी सींचे शीतल न होंय। तब वे कहते भये हे देवि! भगवति! सौम्य उत्तमे! अब शोक तजो अर अपना मन समाधानविषै लावो या पृथिवीविषै ऐसा कौन प्राणी है जो तुम्हारा अपवाद करे ऐसा कौन जो पृथ्वीको चलायमान करे अर अग्निकी शिखाको पीवे अर सुमेरुके उठायवेका उद्यम करै अर जीभकर चांद सूर्यको चाटै ऐसा कोई नाहीं। तुम्हारा गुणरूप रत्ननिका पर्वत कोई चलाय न सके, अर जो तुम सारिखी महा सतियोंका अपवाद करे तिनकी जीभके हजार टूक क्यों न होवें हम सेवकोंके समूहको भेजकर जो कोई भरतक्षेत्रविषै अपवाद करेंगे उन दुष्टोंका निपात करेंगे अर जो विनयवान तुम्हारे गुणगायवे विषै अनुरागी हैं उनके गृहविषै रत्नवृष्टि करेंगे यह पुष्पक विमान श्रीरामचन्द्रने भेजा है उसमें आनंदरूप होय अयोध्याकी तरफ गमन करो सब देश अर नगर अर श्रीरामका घर तुम बिना न सोहे जैसे चन्द्रकला बिना आकाश न सोहे अर दीपक विना मंदिर न सोहे अर शाखा बिना वृक्ष न सोहे हे राजा जनककी पुत्री! आज रामका मुखचन्द्र देखो, हे पण्डिते! पतिव्रते! तुमको अवश्य पतिका वचन मानना जब ऐसा कहा तब सीता मुख्य सहेलियोंको लेकर पुष्पक विमानविषै आरूढ़ होय शीघ्रही संध्याके समय अयोध्या आई सूर्य अस्त होय गया सो महेंद्रोदय नामा उद्यानविषै रात्रि पूर्ण करी आगे राम सहित यहां आवती हुती सो अति मनोहर देखती हुती सो अब राम बिना रमणीक न भाषा॥

अथानन्तर—सूर्य उदय भया कमल प्रफुल्लित भये जैसे राजाके किंकर पृथ्वीविषै विचरें तैसे सूर्यकी

किरण पृथ्वीमें विस्तरी जैसे दिव्यकर अपवाद नस जाय तैसे सूर्यके प्रताप कर अंधकार दूर भया तब सीता उत्तम नारियों कर युक्त रामके समीप चली हथिनी पर चढ़ी मनकी उदासीनता कर हती गई है प्रभा जिसकी तौभी भद्र परिणामकी धरणहारी अत्यंत सोहती भई जैसे चन्द्रमाकी कला ताराओंकर मंडित सोहे वैसे सीता सखियोंकर मंडित सोहे। सब सभा विनयसंयुक्त सीताको देख वंदना करती भई यह पापरहित धीरताकी धरणहारी रामकी रमा सभाविषै आई राम समुद्र समान क्षोभको प्राप्त भये लोक सीताके जायवेकर विषादके भरे थे अर कुमारोंका प्रताप देख आश्चर्यके भरे भये अब सीताके आयवे कर हर्षके भरे ऐसे शब्द करते भए हे माता! सदा जयवंत होवो नंदो वरधो फूलो फलो धन्य यह रूप धन्य यह धीर्य धन्य यह सत्य धन्य यह ज्योति धन्य यह महानुभावता धन्य यह गंभीरता धन्य निर्मलता ऐसे वचन समस्तही नर नारीनिके मुखसे निकसे आकाशविषै विद्याधर भूमिगोचरी महा कौतुक भरे पलक रहित सीताके दर्शन करते भए। अर परस्पर कहते भए पृथ्वीके पुण्यके उदयसे जनकसुता पीछे आई, कैयक तो वहां श्रीरामकी ओर निरखे हैं जैसे इन्द्रकी ओर देव निरखें कैएक रामके समीप बैठे लव अर अंकुश तिनको देख परस्पर कहे हैं ये कुमार रामके सदृशही हैं अर कईएक लक्ष्मणकी ओर देखे हैं कैसे हैं लक्ष्मण शत्रुवोंके पक्षके क्षय करिबेको समर्थ अर कई शत्रुघ्नकी ओर कईएक भामण्डलकी ओर कईएक हनूमानकी ओर कईएक विभीषणकी ओर कईएक विराधितकी ओर अर कईएक सुग्रीवकी ओर निरखे हैं अर कईएक आश्चर्यको प्राप्त भए सीताकी ओर देखे हैं॥

अथानन्तर—जानकी जायकर रामको देख आपको वियोग सागरके अन्तको प्राप्त भई मानती भई, जब सीता सभामें आई तब लक्ष्मण अर्घ देय नमस्कार करता भया, अर सब राजा प्रणाम करते भए सीता शीघ्रता कर निकट आवने लगी तब राघव यद्यपि अक्षोभित हैं तथापि सकोप होय मनमें विचारते भए इसे विषम वनमें मेली थी सो मेरे मनकी हरणहारी फिर आई। देखो यह महा ढीठ है मैं तजी तौभी मोसे अनुराग नहीं छाड़े है यह रामकी चेष्टा जान महा सती उदासचित्त होय विचा-

रती भई मेरे वियोगका अन्त नही आया। मेरा मनरूप जहाज विरहरूप समुद्रके तीर आय फटा चाहे है। ऐसी चितासे व्याकुल चित्त भई पगके अंगूठेसे पृथ्वी कुचरती भई वलदेवके समीप भामण्डलकी वहिन कैसी सोहे है जेसी इन्द्रके आगे सम्पदा सोहै तव राम बोले—हे सीते। मेरे आगे कहां तिष्ठे है तू परे जा, मैं तेरे देखवेका अनुरागी नाहीं मेरी आंख मध्याह्नके सूर्य अर आशीविष सर्प तिनको देख सके परंतु तेरे तनुको न देख सके है तू वहुत मास दशमुखके मन्दिरमें रही अब तोहि घरमें राखना मोहि कहा उचित तव जानकी बोली तुम महा निर्दई चित्त हो तुमने महा पण्डित होयकर भी मूढ़ लोकनकी न्याई मेरा तिरस्कार किया सो कहा उचित मुझ गर्भवतीको जिनदर्शनका अभिलाष उपजा हुता सो तुम कुटिलतासे यात्राका नाम लेय विषम वनमें डारी यह कहां उचित मेरा कुमरण होता अर कुगति जाती याविषे तुमको कहा सिद्ध होता, जो तिहारे मनविषै तजवेकी हुती तो आर्यिकावोंके समीप मेली होती। जे अनाथ दीन दरिद्री कुटुम्ब रहित महा दुखी तिनको दुख हरिवेका उपाय जिनशासनका शरण है या समान अर उत्कृष्ट नाहीं। हे पद्मनाभ ! तुम करवेमें तो कछू कमी न करी अब प्रसन्न होत्रो आज्ञा करो सो करूं यह कहकर दुःखकी भरी रुदन करती भई। तब राम बोले हे देवि ! मैं जानूं हूं तिहारा निर्दोषशील है अर तुम निष्पाप अणुव्रतकी धरणहारी मेरी आज्ञाकारिणी हो तिहारे भावनकी शुद्धता मैं भली भांति जानू हूं परन्तु ये जगतके लोक कुटिल स्वभाव हैं। इन्होंने वृथा तिहारा अपवाद उठाया सो इनको संदेह मिटे अर इनको यथावत् प्रतीति आवे सो करहु। तव सीताने कही आप आज्ञा करो सो ही प्रमाण जगतविषै जेते प्रकारके दिव्य हैं सो सब करके पृथिवीका संदेह हरूं हे नाथ ! विषोंविषै महाविष कालकूट है जिसे सूंघकर आशीविष सर्प भी भस्म होय जाय सो मैं पीऊं अर अग्निकी विषम ज्वालाविषै प्रवेश करूं अर जो आप आज्ञा करो सो करूं तव क्षण एक विचारकर राम बोले अग्नि कुण्डविषै प्रवेश करो, सीता महाहर्षकी भरी कहती भई यही प्रमाण। तब नारद मनविषै विचारते भए यह तो महा सती है परन्तु अग्निका कहा विश्वास याने मृत्यु आदरी अर भामण्डल, हनूमानादिक महाकोपसे पीड़ित

भये अर लव अंकुश माताका अग्निविषै प्रवेश करवेका निश्चय जान अति व्याकुल भये अर सिद्धार्थ दोनों भुजा ऊंचीकर कहता भया हे राम। देवोंसे भी सीताके शीलकी महिमा न कही जाय तो मनुष्य कहा कहैं। कदाचित सुमेरु पातालविषै प्रवेश करै अर समस्त समुद्र सूक जाय तौभी सीताका शीलव्रत चलायमान न होय, जो कदाचित् चन्द्रकिरण उष्ण होय, अर सूर्यकिरण शीतल होय तौभी सीताको दूषण न लगे मैं विद्याके बलसे पंच सुमेरुविषै तथा जे अर अकृत्रिम चैत्यालय शास्वते वहां जिनवन्दना करी—हे पद्मनाभ! सीताके व्रतकी महिमा मैं ठौर २ मुनियोंके मुखसे सुनी है तातैं तुम महा विचक्षण हो महासतीको अग्नि प्रवेशकी आज्ञा न करो अर आकाशविषै विद्याधर और पृथिवीविषै भूमिगोचरी सब यही कहते भये-हे देव! प्रसन्न होय सौम्यता भजो हे नाथ! अग्नि समान कठोरचित्त न करो सीता सती है सीता अन्यथा नहीं अन्यथा जे महा पुरुषोंकी राणी होवैं कदे ही विकाररूप न होवैं सब प्रजाके लोक यही वचन कहते भये अर व्याकुल भये मोटी मोटी आंसुओंकी वृन्द डारते भये॥

तब रामने कही तुम ऐसे दयावान् हौ तो पहिले अपवाद क्यों उठाया? रामने किंकरोंको अज्ञा करी एक तीनसै हाथ चौखटिया वापी खोदहु अर सूके ईंधन चन्दन अर कृष्णागुरु तिनकर भरहु अर अग्नि कर जाज्वल्यमान करहु साक्षात् मृत्युका स्वरूप करहु तब किंकरनिने आज्ञा प्रमाण कुदालनिसे खोद अग्निवापिका बनाई अर ताहि रात्रिकूं महेन्द्रोदय नामा उद्यानविषै सकलभूषण मुनिकूं पूर्व वैरके योग कर महा रौद्र विद्युद्वक्रनामा राक्षसीने अत्यन्त उपसर्ग किया सो मुनि अत्यन्त उपसर्गको जीत केवलज्ञानको प्राप्त भये। यह कथा सुन गौतमस्वामीसे श्रेणिकने पूछी हे प्रभो! राक्षसीके अर मुनिके पूर्व वैर कहा? तब गौतमस्वामी कहते भये हे श्रेणिक! सुन—विजियार्द्ध गिरिके उतर श्रेणीविषै महा शोभायमान गुञ्जनामा नगर तहां राजा सिंहविक्रम राणी श्री ताके पुत्र सकलभूषण ताके स्त्री आठसै तिनमें मुख्य किरणमण्डला सो एक दिन उसने अपनी सौतिनके कहेसूं अपने मामाके पुत्र हेमशिखका रूप चित्रपटमें लिखा सो सकलभूषणने देख कोप किया तब सब स्त्रीनिने कही यह हमने सिखाया है इसका कोई दोष नहीं

तब सकलभूषण कोप तज प्रसन्न भया । एक दिन यह किरणमण्डला पतिव्रता पतिसहित सोती थी सो प्रमाद थकी बरडकर हेमशिख ऐसा नाम कहा सो यह तो निर्दोष इसके हेमशिखमें भाईकी बुद्धि अर सकलभूषणने कछु और भाव विचारा राणीसे कोपकर वैराग्यको प्राप्त भए अर राणी किरणमंडला भी आर्यिका भई परन्तु धनीसे द्वेष भाव जो इसने झूठा दोष लगाया सो मर कर विद्युद्वक्र नामा राक्षसी भई सो पूर्व वैर थकी सकलभूषण स्वामी आहारको जायं तब यह अन्तराय करे कभी माते हाथियोके बन्धन तुड़ाय देय हाथी ग्राममें उपद्रव करें इनको अन्तराय होय कभी यह आहारको जायं तब अग्नि लगाय देय कभी यह रजवृष्टि करे इत्यादि नाना प्रकारके अन्तराय करे कभी अश्वका कभी वृषभका रूपकर इनके सन्मुख आवे कभी मार्गमें कांटे बखेरे इस भांति यह पापिनी कुचेष्टा करे एक दिन स्वामी कायोत्सर्ग धर तिष्ठे थे अर इसने शोर किया यह चोर है सो इसका शोर सुनकर दुष्टोंने पकड़े अपमान किया फिर उत्तमपुरुषोंने छुड़ाय दिए एक दिन यह आहार लेकर जाते थे सो पापिनी राक्षसीने काहू स्त्रीका हार लेकर इनके गलेमें डार दिया अर शोर किया कि यह चोर है हार लिये जाय है तब लोग आय पहुंचे इनको पीड़ा करी हार लिया भले पुरुषोंने छुड़ाय दिये इस भांति यह क्रूरचित्त दयारहित पूर्व वैर विरोधसे मुनिको उपद्रव करे, गई रात्रिको प्रतिमा योग धर महेंद्रोदय नामा उद्यानविषै विराजे थे सो राक्षसीने रौद्र उपसर्ग किया वितर दिखाये अर हस्ती सिंह व्याघ्र सर्प दिखाए अर रूप गुण मंडित नाना प्रकारकी नारी दिखाईं भांति भांतिके उपद्रव किए परन्तु मुनिका मन न डिगा तब केवलज्ञान उपजा सो केवलकी महिमा कर दर्शनको इन्द्रादिक देव कल्पवासी भवनवासी व्यंतर जोतिषी कैयक हाथियोंपर चढ़े कैयक सिंहोंपर चढ़े कैयक ऊंट खच्चर मीढा बघेरा अष्टापद इनपर चढ़े कैयक पक्षियोंपर चढ़े कैयक विमान बैठे कैयक रथोंपर चढ़े कैयक पालकी चढ़े इत्यादि मनोहर वाहनोंपर चढ़े आए देवोंकी असवारीके तिर्यंच नाहीं देवोंहीकी माया है देव ही विक्रियाकर तिर्यंचका रूप धरे हैं आकाशके मार्ग होय महाविभूति सहित सर्व दिशाविषै उद्योत करते आए मुकुट धरे हार कुण्डल पहिरे अनेक आभूषणोंकर शोभित सकलभूषण केवलीके दर्शन

को आये पवनसे चंचल है ध्वजा जिनकी अप्सरावोंके समूह सहित अयोध्याकी ओर आए महेंद्रोदय उद्यानविषे केवली विराजे हैं तिनके चरणारविंदविषै है मन जिनका पृथिवीकी शोभा देखते आकाशसे नीचे उतरे अर सीताके दिव्यको अग्निकुण्ड तयार होय रहा था सो देखकर एक मेघकेतु नामा देव कहता भया—हे देवेंद्र ! हे नाथ । सीता महासतीको उपसर्ग आय प्राप्त भया है यह महाश्राविका पतिव्रता शीलवंती अति निर्मल चित्त है इसे ऐसा उपद्रव क्यों होय ? तब इन्द्रने आज्ञा करी हे मेघकेतु ! मैं सकलभूषण केवलीके दर्शनको जाऊं हूं अर तू महासतीका उपसर्ग दूर करियो । या भांति आज्ञाकर इन्द्र तो महेंद्रोदय नामा उद्यानविषै केवलीके दर्शनको गया अर मेघकेतु सीताके अग्निकुण्डके ऊपर आय आकाशविषै विमान विषै तिष्ठा। कैसा है विमान ? सुमेरुके शिखर समान है शोभा जिसकी, वह देव आकाशविषै सूर्य सारिखा देदीप्यमान श्रीरामकी ओर देखे राम महासुन्दर सब जीवोंके मनको हरे हैं ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषा वचनिकाविषै सकलभूषणकेवलीके दर्शनकू देवनिका आगमन वर्णन करनेवाला एकसौचारवा पर्व पूर्ण भया ॥ १०४ ॥

अथानन्तर—श्रीराम उस अग्निवापिकाको निरख कर व्याकुल मन भया विचारे है अब इस कांता को कहां देखूंगा यह गुणनिकी खान महा लावण्यता कर युक्त कांतिकी धरणहारी शील रूप वस्त्रकर मण्डित मालतीकी माला समान सुगन्ध सुकुमार शरीर अग्निके स्पर्शहीसे भस्म होय जायगी जो यह राजा जनकके घर न उपजती तो भला था यह लोकापवाद अग्निविषै मरण तो न होता. इस बिना मुझे क्षणमात्र भी सुख नाहीं इस सहित वनविषै वास भला अर या बिना स्वर्गका वास भी भला नाहीं यह महा शीलवंती परम श्राविका है इसे मरणका भय नाहीं इहलोक परलोक मरण वेदना. अकस्मात असहायता चोर यह सप्त भय तिनकर रहित सम्यग्दर्शन इसके दृढ़ है यह अग्निविषै प्रवेश करेगी अर मैं रोकूं तो लोगोंविषै लज्जा उपजे अर यह लोक सब मुझे कह रहे यह महासती है याहि अग्निकुण्डविषै प्रवेश न करावो सो मैं न मानी अर सिद्धार्थ हाथ ऊंचे कर कर पुकारा मैं न मानी सो वह भी चुप होय

रहा अब कौन मिसकर इसे अग्निकुण्डविषै प्रवेश न कराऊं अथवा जिसके जिस भांति मरण उदय होय है उसी भांति होय है टारा टरे नाहीं तथापि इसका वियोग मुझसे सहा न जाय या भांति राम चिंता करे हैं अर वापीविषै अग्नि प्रज्वलित भई समस्त नर नारियोंके आंसुवोंके प्रवाह चले धूमकर अन्धकार होय गया मानों मेघमाला आकाशविषै फैल गई आकाश भ्रमर समान श्याम होय गया अथवा कोकिल स्वरूप होय गया अग्निके धूमकर सूर्य आच्छादित हुवा मानों सीताका उपसर्ग देख न सका सो दया कर छिप-गया ऐसी अग्नि प्रज्वली जिसकी दूरतक ज्वाला विस्तरी मानों अनेक सूर्य ऊगे अथवा आकाशविषै प्रलय-कालकी सांझ फूली, जानिए दशो दिशा स्वर्णमई होय गई हैं मानों जगत् विजुरीमय होय गया अथवा सुमेरुके जीतवेको दूजा जंगम सुमेरु और प्रकटा तब सीता उठी अत्यन्त निश्चलचित्त कायोत्सर्ग कर अप-ने हृदयविषै श्रीऋषभादि तीर्थंकरदेव विराजे हैं तिनकी स्तुतिकर सिद्धोंको साधुवोंको नमस्कार कर श्री-मुनिसुव्रत नाथ हरिवंशके तिलक वीसवां तीर्थंकर जिनके तीर्थविषै ये उपजे हैं तिनका ध्यान कर सर्व प्रा-णियोंके हितु आचार्य तिनको प्रणाम कर सर्व जीवोंसे क्षमा भाव कर जानकी कहती भई मन कर वचन-कर कायकर स्वप्नविषै भी राम बिना और पुरुष मैंने न जाना जो मैं झूठ कहती हूं तो यह अग्निकी ज्वाला क्षणमात्रविषै मुझे भस्म करियो जो मेरे पतिव्रता भावविषै अशुद्धता होय राम सिवाय और नर मनसे भी अभिलाषा होय तो हे वैश्वानर ! मुझे भस्म करियो जो मैं मिथ्यादर्शिनी पापिनी व्यभिचारिणी हूं तो इस अग्निसे मेरा देह दाहको प्राप्त होवे अर जो मैं महा सती पतिव्रता अणुव्रतधारिणी श्राविका हूं तो मुझे भस्म न करियो, ऐसा कहकर नमोकार मन्त्र जप सीता सती अग्निवापिकामें प्रवेश करती भई सो याके शीलके प्रभावसे अग्नि था सो स्फटिक मणि सारिखा निर्मल शीतल जल हो गया मानों धरतीको भेदकर यह वापिका पातालसे निकसी जलविषै कमल फूल रहे हैं भ्रमर गुञ्जार करे हैं अग्निकी सामग्री सब वि-लाय गई न ईन्धन न अंगार जलके झाग उठने लगे अर अति गोल गंभीर महा भयङ्कर भ्रमर उठने लगे जैसी मृदङ्गकी ध्वनि होय तैसे शब्द जलविषै होते भए जैसा क्षोभको प्राप्त भया समुद्र गाजे तैसा शब्द

वापीविषै होता भया अर जल उछला पहले गोड़ोंतक आया बहुरि कमर तक आया फिर निमिषमात्र-विषै छाती तक आया तब भूमिगोचरी डरे अर आकाशविषै जे विद्याधर हुते तिनको भी विकल्प उपजा न जानिए क्या होय बहुरि वह जल लोगोंके कण्ठतक आया तब अति भय उपजा सिर ऊपर पानी चला तब लोग अति भयको प्राप्त भए ऊंची भुजाकर वस्त्र अर बालकोंको उठाय पुकार करते भए—हे देवि ! हे लक्ष्मी ! हे सरस्वति ! हे कल्याणरूपिणी ! हे धर्मधुरन्धरे ! हे मान्ये ! हे प्राणीदयारूपिणी ! हमारी रक्षा करो हे महासाध्वि ! मुनिसमान निर्मल मनकी धरणहारी ! दया करो ! हे माता ! बचावो बचाओ प्रसन्न होवो जब ऐसे वचन विह्वल जो लोक तिनके मुखसे निकसे तब माताकी दयासे जल थंभा लोक बचे जलविषै नाना जातिके ठौर ठौर कमल फूले जल, साम्यताको प्राप्त भया जे भंवर उठे थे सो मिटे अर भयङ्कर शब्द मिटे। वह जल जो उछला था सो मानों वापिरूप वधू अपने तरंगरूप हस्तोंकर माताके चरण युगल स्पर्शती थी। कैसे हैं चरण युगल ? कमलके गर्भसे हू अति कोमल हैं अर नखोंकी ज्योतिकर देदीप्यमान हैं जलविषै कमल फूले तिनकी सुगधता कर भ्रमर गुञ्जार करे हैं सो मानों संगीत करे हैं अर क्रौंच चकवा हंस तिनके समूह शब्द करे हैं अति शोभा होय रही है अर मणि स्वर्णके सिवाण बन गए तिनको जलके तरंगोंके समूह स्पर्शे हैं अर जिसके तट मरकत मणि कर निर्मापे अति सोहे हैं ऐसे सरोवरके मध्य एक सहस्रदलका कमल कोमल विमल विस्तीर्ण प्रफुल्लित महाशुभ उसके मध्य देवनिने सिंहासन रचा रत्ननिकी किरणनिकर मण्डित चंद्रमण्डल तुल्य निर्मल उसमें देवांगनाओंने सीताको पधराई अर सेवा करती भई सो सीता सिंहासनविषै तिष्ठी अति अद्भुत है उदय जिसका शची तुल्य सोहती भई अनेक देव चरणनिके तले पुष्पांजलि चढ़ाय धन्य धन्य शब्द कहते भए आकाशविषै कल्पवृक्षनिके पुष्पनिकी वृष्टि करते भए, अर नाना प्रकारके दुन्दुभी बाजे तिनके शब्दकर सब दिशा शब्दरूप होती भई गुञ्ज जातिके वादित्र महामधुर गुञ्जार करते भये अर मृदङ्ग बाजते भए ढोल दमामा बाजे नांदी जातके वादित्र बाजे अर कोलाहल जातिके वादित्र बाजे अर तुरही करनाल अनेक वादित्र बाजे शंखके समूह शब्द करते भए अर वीण बांसुरी बाजा ताल झांझ मंजीर झालरी इत्यादि अनेक

वादित्र वाजे विद्याधरनिके समूह नाचते भए अर देवनिके यह शब्द भए श्रीमत् जनक राजाकी पुत्री परम उदयकी धरणहारी श्रीमत् रामकी राणी अत्यन्त जयवंत होवे अहो निर्मल शील जिसका आश्चर्यकारी ऐसे शब्द सब दिशाविषै देवनिके होते भये तब दोनों पुत्र लवण अंकुश अकृत्रिम है मातासे हित जिनका सो जल तिरकर अतिहर्षके भरे माताके समीप गए दोनों पुत्र दोनों तरफ जाय ठाढे भए, माताको नमस्कार किया सो माताने दोनोंके शिर हाथ धरा रामचन्द्र मिथिलापुरीके राजाकी पुत्री मैथिली कहिए सीता उसे कमलवासिनी लक्ष्मी समान देख महा अनुरागके भरे समीप गए कैसी है सीता मानों स्वर्णकी मूर्ति अग्निविषै शुद्ध भई है अति उत्तम ज्योतिके समूहकर मंडित है शरीर जिसका राम कहे हैं हे देवि। कल्याणरूपिणी उत्तम जीवनिकर पूज्य महा अद्भुत चेष्टाकी धरणहारी शरदकी पूर्णमासीके चन्द्रमा समान है मुख जिसका ऐसी तुम सो हमपर प्रसन्न होवो अब मैं कभी ऐसा दोष न करूंगा जिसमें तुमको दुःख होय। हे शीलरूपिणी! मेरा अपराध क्षमा करो मेरे आठ हजार स्त्री हैं तिनका सिरताज तुम हो, मोको आज्ञा करो सो करूं। हे महासती! मैं लोकापवादके भयसे अज्ञानी होकर तुमको कष्ट उपजाया सो क्षमा करो अर हे प्रिये! पृथ्वीविषै मो सहित यथेष्ट विहार करो यह पृथ्वी अनेक वन उपवन गिरियों कर मंडित है देव विद्याधरनिकर संयुक्त है समस्त जगतकर आदरसों पूजी थकी मोसहित लोक विष स्वर्ग समान भोग भोगो उगते सूर्यसमान यह पुष्पकविमान उसविषै मेरे सहित आरूढ भई सुमेरु पर्वतके वनविषै जिनमंदिर हैं तिनका दर्शन कर अर जिन२ स्थाननिविषै तेरी इच्छा होय वहां क्रीड़ा करो। हे कांते। तू जो कहे सोही मैं करूं तेरा वचन कदाचित् न उलंघूं देवांगना समान वह विद्याधरी तिनकर मंडित हे बुद्धिवंती। तू ऐश्वर्यको भज, जो तेरी अभिलाषा होयगी सो तत्काल सिद्ध होयगी। मैं विवेक रहित दोषके सागरविषै मग्न तेरे समीप आया हूं सो साध्वि! अब प्रसन्न होवो॥ अथानन्तर—जानकी बोली—हे राम! तुम्हारा कुछ दोष नाहीं अर लोकोंका दोष नहीं मेरे पूर्वोपार्जित अशुभ कर्मके उदयसे यह दुःख भया मेरा काहू पर कोप नहीं तुम क्यों विषादको प्राप्त भए? हे बलदेव! तिहारे प्रसादसे स्वर्ग

समान भोग भोगे अब यह इच्छा है ऐसा उपाय करूं जिसकर स्त्रीलिंगका अभाव होय यह महाक्षुद्र विनश्वर भयंकर इन्द्रियनिके भोग मूढ जनोंकर सेव्य तिनकर कहा प्रयोजन ? मैं अनन्त जन्म चौरासी लक्ष योनिविषै खेद पाया अब समस्त दुःखके निवृत्तिके अर्थ जिनेश्वरी दीक्षा धरूंगी ऐसा कहकर नवीन अशोक वृक्षके पल्लव समान अपने जे कर तिनकर सिरके केश उपाड़ रामके समीप डारे सो इंद्र नील मणि-समान श्याम सचिक्कण पातरे सुगन्ध वक्र लम्बायमान महामृदु महामनोहर ऐसे केशोंको देखकर राम मोहित होय मूर्च्छा खाय पृथ्वीविषै पडे सो जौंलग इनको सचेत करें तौंलग सीता पृथ्वीमती आर्यिकापै जायकर दीक्षा धरती भई एक वस्त्र मात्र है परिग्रह जिसके अर सब परिग्रह तजकर आर्यिकाके व्रत धर महा पवित्र परम वैराग्यकर युक्त व्रतकर शोभायमान जगतके वंदिवे योग्य होती भई अर राम अचेत भए थे सो मुक्ताफल अर मलयागिरि चन्दनके छांटिवे कर तथा ताड़के वीजनोकी पवन कर सचेत भए तब दशों दिशाकी ओर देखें तो सीताको न देख कर चित्त शून्य हो गया, शोक अर कषायकर युक्त महा गज-राज पर चढ़े सीताकी ओर चले सिर पर छत्र फिरे हैं चमर ढुरे हैं जैसे देवनिकर मंडित इंद्र चले तैसे नरेन्द्रों कर युक्त राम चले कमल सारिखे हैं नेत्र जिनके कषाय वचन कहते भए अपने प्यारे जनका मरण भला परंतु विरह भला नहीं देवनिने सीताका प्रतिहार्य किया सो भला किया पर उसने हमको तजनो विचारा सो भला न किया अब मेरी राणी जो यह देव न दे तो मेरे अर देवनिके युद्ध होयगा यह देव न्यायवान् होयकर मेरी स्त्री क्यों हरें ऐसे अविचारके वचन कहे। लक्ष्मण समझावे सो समाधान न भया अर क्रोधसंयुक्त श्रीरामचन्द्र सकलभूषण केवलीको गंधकुटीको चले सो दूरसे सकलभूषण केवलीकी गंध कुटी देखी। केवली महाधीर सिंहासन पर विराजमान अनेक सूर्यकी दीप्ति धरें केवली ऋद्धिकर युक्त पापोंके भस्म करिवेको साक्षात् अग्निरूप जैसे मेघपटल रहित सूर्यका विंब सोहे तैसे कर्मपटलरहित केवल ज्ञानके तेजकर परम ज्योतिरूप भासे हैं इंद्रादिक समस्त देव सेवा करे हैं दिव्य ध्वनि खिरे है धर्मका उपदेश होय है सो श्रीराम गंधकुटीको देख कर शांतचित्त होय हाथीसे उतर प्रभुके समीप गए तीन

प्रदक्षिणा देय हाथ जोड़ नमस्कार किया भगवान् केवली मुनियोंके नाथ तिनका दर्शन कर अति हर्षित भए वारम्वार नमस्कार किया केवलीके शरीरकी ज्योतिकी छटा राम पर आय पड़ी सो अति प्रकाशरूप होय गए भावसहित नमस्कार कर मनुष्यनिकी सभाविषे बैठे अर चतुरनिकायके देवोंकी सभा नाना प्रकारके आभूषण पहिरे ऐसी भासै मानों केवलीरूप जे रवि तिनकी किरण ही हैं अर राजावोंके राजा श्रीरामचंद्र केवलीके निकट ऐसे सोहे हैं मानों सुमेरुके शिखरके निकट कल्पवृक्ष ही हैं अर लक्ष्मण नरेंद्र मुकुट कुण्डल हारादि कर शोभित कैसे सोहैं मानों विजुरीसहित श्याम घटा ही है अर शत्रुघ्न शत्रुवोंके जीतनहारे ऐसे सोहैं मानों दूसरे कुबेर ही हैं अर लव अंकुश दोनों वीर महा धीर महा सुन्दरगुण सौभाग्यके स्थानक चांद सूर्यसे सोहैं अर सीता आर्यिका आभूषणादि रहित एक वस्त्र मात्र परिग्रह ऐसी सोहै मानों सूर्यकी मूर्ति शांतताको प्राप्त भई है। मनुष्य अर देव सब ही विनयसंयुक्त भूमिविषै बैठे धर्म्म श्रवणकी है अभिलाषा जिनकी। तहां एक अभयघोष नामा मुनि सब मुनिनिविषैं श्रेष्ट संदेहरूप आतापकी शांतिके अर्थ केवलीसे पूछते भए-हे सर्वोत्कृष्ट सर्वज्ञदेव। ज्ञानरूप शुद्ध आत्मतत्त्वका स्वरूप नीके जाननेसे मुनिनिको केवल बोध होय उसका निर्णय करो, तब सकलभूषण केवली योगीश्वरोंके ईश्वर कर्म्मोंके क्षयका कारण तत्त्वका उपदेश दिव्यध्वनिकर कहते भए—हे श्रेणिक। केवलीने जो उपदेश दिया उसका रहस्य मैं तुमको कहूं हूं जैसे समुद्रमेंसे एक बूंद कोई लेय तैसे केवलीकी वाणी अति अथाह उसके अनुसार संक्षेप व्याख्यान करूं हूं, सो सुनो॥

हो भव्य जीव हो। आत्मतत्त्व जो अपना स्वरूप सो सम्यक्दर्शन ज्ञान आनंद रूप अर अमूर्तीक चिद्रूप लोकप्रमाण असंख्य प्रदेशी अतेंद्री अखंड अव्याबाध निराकार निर्मल निरंजन परवस्तुसे रहित निज गुण पर्याय स्वद्रव्य स्वक्षेत्र स्वकाल स्वभाव कर अस्तित्व रूप है जिसका ज्ञान निकट भव्योंको होय शरीरादिक पर वस्तु असार हैं आत्मतत्त्व सार है सो अध्यात्म विद्या कर पाइये है वह सबका देखनहारा जाननहारा अनुभवदृष्टि कर देखिये आत्मज्ञान कर जानिये अर जड़ पदार्थ पुद्गल धर्म अधर्म

काल आकाश ज्ञेयरूप हैं ज्ञाता नाहीं अर यह लोक अनन्ते अलोकाकाशके मध्य अनन्तवें भागविषै तिष्ठे है अधोलोक मध्य लोक ऊर्ध्वलोक ये तीनलोक तिनविषै सुमेरु पर्वतकी जड़ हजार योजन उसके तले पाताल लोक है उसविषै सूक्ष्म स्थावर तो सर्वत्र हैं अर बादर स्थावर आधारविषै हैं विकलत्रय अर पंचेन्द्रिय तिर्यंच नाहीं मनुष्य नाहीं खरभाग पंचभागविषै भवनवासी देव तथा व्यंतरदेवनिके निवास हैं तिनके तले सात नरक हैं तिनके नाम रत्नप्रभा १ शर्करा २ बालुका ३ पंकप्रभा ४ धूमप्रभा ५ तमःप्रभा ६ महातमःप्रभा ७ सो सातों ही नरककी धारा महा दुःखकी देनहारी सदा अंधकाररूप हैं चार नरकविषै तो उष्णकी बाधा है अर पांचवें नरक ऊपरले तीन भाग उष्ण अर नीचला चौथा भाग शीत अर छठे नरक शीत ही हैं अर सातवें महा शीत ऊपरले नरकनिविषै उष्णता है सो महा विषम अर नीचले नरकनिविषै शीत है सो अति विषम नरकको भूमि महा दुस्सह परम दुर्गम हैं जहां राधि रुधिरका कीच है महादुर्गंध है श्वान सर्प मार्जार मनुष्य खर तुरङ्ग ऊंट इनका मृतक शरीर सड़ जाय उसकी दुर्गंधसे असंख्यातगुणी दुर्गंध है नाना प्रकार दुःखनिके सब कारण हैं अर पवन महा प्रचण्ड विकराल चले है जाकर भयंकर शब्द होय रहा है जे जीव विषय कषाय संयुत हैं कामी हैं क्रोधी हैं पंचइन्द्रियोंके लोलुपी हैं जैसे लोहेका गोला जलविषै डूबे तैसे नरकमें डूबे हैं जे जीवनिकी हिंसा करें मृषावाणी बोलें परधन हरें परस्त्री सेवें महा आरम्भी परिग्रही ते पापके भारकर नरकविषै पड़े हैं मनुष्य देह पाय जे निरन्तर भोगासक्त भये हैं जिनके जीभ वश नाहीं मन चंचल ते पापी प्रचण्ड कर्मके करणहारे नरक जाय हैं जे पाप करें करावें पापकी अनुमोदना करें ते आर्त रौद्र ध्यानी नरकके पात्र हैं वह वज्राग्निके कुण्डमें डारिये हैं वज्राग्निके दाहकर जलते थके पुकारे हैं अग्निकुण्डसे छूटे हैं तब वैतरणी नदीकी ओर शीतल जलकी वांछा कर जाय हैं वहां जल महा खार दुर्गंध उसके स्पर्शहीसे शरीर गल जाय है। दुःखका भाजन वैक्रियिक शरीर ताकर आयु पर्यंत नाना प्रकार दुःख भोगवे हैं पहिले नरक आयु उत्कृष्ट सागर १ दूजे ३ तीजे ७ चौथे १३ पांचवें १७ छठे २२ सो पूर्णकर मरे हैं मारसे मरे नाही वैतरणीके दुःखसे डर छायाके अर्थ असिपत्र वनमें जा

य हैं तहां खड्ग वाण वरछी कटारी समीपत्र असराल पवनकर पड़े हैं तिनकर तिनका शरीर विदारा जाय है पछाड़ खाय भूमिमें पड़े है अर तिनको कभी कुंभी पाकमें पकावे हैं कभी नीचा माथा ऊंचा पगकर लटकावे हैं मुद्गरोंसे मारिये हैं कुहाड़ोंसे काटिये हैं करोतनसे विदारिये हैं घानीमें पेलिये हैं नाना प्रकारके छेदन भेदन हैं। यह नारकी जीव महा दीन महा तृषा कर तृषित पीनेका पानी मांगे हैं तब तांबादिक गला प्यावे हैं ते कहे हैं हम-का यहां तृषा नाही हमारा पोछा छोड़ दो तब बलात्कार तिनको पछाड़ संडासियोंसे मुख फार मार मार प्यावे है कण्ठ हृदय विदीर्ण होय जाय है उदर फट जाय है तीजे नरकतक तो परस्पर भी दुःख हैं अर असुर कुमारनिकी प्रेरणासे भी दुःख हैं अर चौथेसे लेय सातवें तक असुरकुमारनिका गमन नाहीं परस्पर ही पीड़ा उपजावे हैं नरकविषै निचलेसे निचले बढ़ता दुःख है सातवां नरक सबनिमें महादुःखरूप है नारकियोंको पहिला भव याद आवे है अर दूसरे नारकी तथा तीजे लग असुरकुमार पूर्वले कर्म याद करावे हैं तुम भले गुरुवोंके वचन उलंघ कुगुरु कुशास्त्रके बलकर मांसको निर्दोष कहते हुते नाना प्रकारके मांसकर अर मधुकर अर मदिरा कर कुदेवोंका आराधन करते हुते सो मांसके दोषसे नरकविषै पड़े हो ऐसा कहके इनहीका शरीर काट काट इनके मुखविषै देय हैं अर लोहेकी तथा तांबेके गोला चलते पछाड़ पछाड़ संडासियोंसे मुख फाड़ फाड़ छातीपर पांव देय देय तिनके मुखविषै घाले हैं अर मुद्गरोंसे मारे हैं अर मद्यपायियोंको मार मार ताता तांबा शीशा प्यावे हैं अर परदारारत पापियोंको वज्राग्निकर तप्तायमान लोहेकी जे पुतली तिनसे लिपटावे हैं अर जे परदारारत फूलनिके सेज सोते हैं तिनको सूलनिके सेजऊपर सुलावे हैं अर स्वप्नकी माया समान असार जो राज्य उसे पायकर जे गर्वे हैं अनीति करे हैं तिनको लोहेके कीलों पर बैठाय मुद्गरोंसे मारे हैं सो महा विलाप करे हैं इत्यादि पापी जीवोंको नरकके दुःख होय हैं सो कहांलग कहें एक निमिषमात्र भी नरकमें विश्राम नाहीं आयु पर्यंत तिलमात्र आहार नाहीं अर बून्दमात्र जलपान नाहीं केवल मारहीका आहार है। तातैं यह दुस्सह दुःख अधर्मके फल जान अधर्मको तजो ते अधर्म मधु मांसादिक अभक्ष्य भक्षण अन्याय वचन दुराचार रात्रिआहार वेश्यासेवन परदारा

गमन स्वामिद्रोह मित्रद्रोह विश्वासघात कृतघ्नता लम्पटता ग्रामदाह वनदाह परधनहरण अमागसेवन परनिंदा परद्रोह प्राणघात बहु आरम्भ बहुपरिग्रह निर्दयता खोटी लेश्या रौद्रध्यान मृषावाद कृपणता कठोरता दुर्जनता मायाचार निर्माल्यका अंगीकार माता पिता गुरुओंकी अवज्ञा बाल वृद्ध स्त्री दीन अनाथोंका पीड़न इत्यादि दुष्टकर्म नरकके कारण हैं वे तज शांतभावधर जिनशासनको सेवो जाकर कल्याण होय। जीव छै कायके हैं पृथ्वी काय अप (जल) काय, तेजः (अग्नि) काय, वायुकाय, वनस्पतिकाय, त्रसकाय। तिनकी दया पालो अर जीव पुद्गल धर्म अधर्म आकाश काल यह छै द्रव्य हैं अर सात तत्व नव पदार्थ पंचास्ति-काय तिनकी श्रद्धा करो अर चतुर्दश गुणस्थान चतुर्दश मार्गणा स्वरूप अर सप्तभंगी वाणीका स्वरूप भलीभांति केवलीकी आज्ञा प्रमाण उरविषै धारो, स्यात्अस्ति, स्यात्नास्ति, स्यात् अस्ति नास्ति, स्यादव-क्तव्य, स्यात्अस्ति अवक्तव्य, स्यानास्ति अवक्तव्य, स्यात्अस्तिनास्ति अवक्तव्य ये सप्तभंग कहे अर प्रमाण कहिये वस्तुका सर्वांग कथन अर नय कहिये वस्तुका एक अंग कथन अर निक्षेप कहिये नाम स्थापना द्रव्य भाव ये चार अर जीवोंविषै एकेंद्रीके दोय भेद सूक्ष्म बादर अर पंचेंद्रीके दो भेद सैनी अ-सैनी अर वेइन्द्री तेइन्द्री चौइन्द्री ये सात भेद जीवोंके हैं सो पर्याप्त अपर्याप्तकर चौदह भेद जीवसमास होय हैं अर जीवके दो भेद एक संसारी एक सिद्ध। जिसमें संसारीके दो भेद—एक भव्य दूसरा अभव्य जो मुक्ति होने योग्य सो भव्य अर मुक्ति न होने योग्य सो अभव्य अर जीवका निज लक्षण उपयोग है उसके दोय भेद एक ज्ञान एक दर्शन। ज्ञान समस्त पदार्थोंको जाने दर्शन समस्त पदार्थोंको देखे। सो ज्ञानके आठ भेद मति श्रुति अवधि मनःपर्यय केवल कुमति कुश्रुत कुअवधि अर दर्शनके भेद चार—चक्षु अचक्षु अवधि केवल अर जिनके एक स्पर्शन इन्द्री होय सो स्थावर कहिये तिनके भेद पांच पृथिवी अप तेज वायु वनस्पति अर त्रसके भेद चार वेइन्द्री तेइन्द्री चौइन्द्री पंचेंद्री—जिनके स्पर्श अर रसना वे द्वे इन्द्री, जिनके स्पर्श रसना नासिका सो तेइन्द्री, जिनके स्पर्श रसना नासिका चक्षु वे चौइन्द्री, जिनके स्पर्श रसना नासिका चक्षु श्रोत्र वे पंचेंद्री। चौइन्द्री तक तो सब संमूर्च्छन अर असैनी हैं अर पंचेन्द्रीविषे

केई सम्मूर्छन केई गर्भज तिनविषै केई सैनी केई असैनी जिनके मन वे सैनो अर जिनके मन नहीं वे असैनी अर जे गर्भसे उपज वे गर्भज अर जे गर्भविना उपजें स्वतः स्वभाव उपजें वे सम्मूर्छन। गर्भजके भेद तीन जरायुज अंडज पोतज। जे जराकर मण्डित गर्भसे निकसे मनुष्य घोटकादिक वे जरायुज अर जे विना जेरके सिंहादिक सो पोतज अर जे अण्डावोंसे उपजे पक्षी आदिक वे अण्डज अर देव नारकियोंका उपपाद जन्म है माता पिताके संग विनाही पुण्य पापके उदयसे उपजे हैं। देव तो उत्पादकशय्याविषै उपजे हैं अर नारकी बिलोंमें उपजे हैं देवयोनि पुण्यके उदयसे है अर नारक योनि पापके उदयसे है अर मनुष्य जन्म पुण्य पापकी मिश्रतासे है अर तिर्यंच गति मायाचारके योगसे है देव नारकी मनुष्य इन विना सर्व तिर्यंच जानने, जीवोंकी चौरासी लाख योनिये हैं उनके भेद सुनो—पृथिवीकाय जलकाय अग्निकाय वायुकाय नित्य निगोद इतरनिगोद ये तो सात २ लाख योनि हैं सो बयालीस लाख योनि भईं अर प्रत्येक वनस्पति दस लाख ये बावन लाख भेद स्थावरके भये, अर वेइन्द्री तेइन्द्री चौइन्द्री ये दोय दोय लाख योनि उसके छै लाख योनि भेद विकलत्रयके भए अर पंचेंद्री तिर्यंचके भेद चार लाख योनियें सब तिर्यंच योनिके बासठ लाख भेद भए अर देवयोनिके भेद चार लाख नरकयोनिके भेद चार लाख अर मनुष्य योनिके चौदह लाख ये सब चौरासी लाख योनि महा दुःखरूप हैं इनसे रहित सिद्धपद ही अविनाशी सुखरूप है, संसारी जीव सब ही देहधारी हैं अर सिद्ध परमेष्ठी देहरहित निराकार हैं, शरीरके भेद पांच औदारिक, वैक्रियक, आहारक, तैजस, कार्म्मण, तिनविषै तैजस कार्म्मण तो अनादिकालसे सब जीवनको लग रहे हैं तिनका अन्तकर महा मुनि सिद्ध पद पावे हैं औदारिकसे असंख्यातगुणी अधिक वर्गणा वैक्रियिकके हैं अर वैक्रियकतैं असंख्यातगुणी आहारकके हैं अर आहारकतैं अनन्तगुणी तैजसकी हैं अर तैजसतैं अनन्तगुणी कार्म्मणकी हैं जा समय संसारी जीव देहकूं तजकर दूसरी गतिकूं जाय है ता समय अनाहार कहिए जितनी देरी एक गतिसे दूसरी गतिविषै जाते हुए जीवको लगे है उस अवस्थामें जीवको अनाहारी कहिये। अर जितना वक्त एक गतिसे दूसरी गतिमें जानेमें लगे सो वह एक समय तथा दो समय

अधिकतैं अधिक तीन समय लगै है सो ता समय जीवके तैजस अर कार्म्मण ये दो ही शरीर पाइये है बगैर शरीरके यह जीव सिवा सिद्ध अवस्थाके अर काहू अवस्थामें काहू समय नाहीं होता। या जीवके हर वक्त अर हर गतिमें जन्मते मरते साथ ही रहते हैं जा समय यह जीव घातिया अघातिया दोऊ प्रकारके कर्म क्षय करके सिद्ध अवस्थाको जाता है ता समय तैजस अर कार्म्मणका क्षय होता है अर जीवनिके शरीरोंके परमाणुओंकी सूक्ष्मता या प्रकार है—औदारिकतैं वैक्रियक सूक्ष्म अर वैक्रियकसे आहारक सूक्ष्म आहारकतैं तैजस सूक्ष्म अर तैजसतैं कार्म्मण सूक्ष्म है सो मनुष्य अर तिर्यंचनिके तो औदारिक शरीर है, अर देवनारकिनिके वैक्रियक है अर आहारक ऋद्धिधारी मुनिनिके संदेह निवारिवेके अर्थ दसने द्वारसे निकसे है सो केवलीके निकट जाय संदेह निवार पीछा आय दशमें द्वारमें प्रवेश करे हैं, ये पांच प्रकारके शरीर कहे तिनमें एक काल एक जीवके कबहू चार शरीर हू पाइए ताका भेद सुनहु तीन तो सब ही जीवनिके पाइए, नर अर तिर्यंचके औदारिक अर देव नारकनिके वैक्रियक अर तैजस कार्म्मण सबोंके हैं तिनमें कार्म्मण तो दृष्टिगोचर नाहीं अर तैजस काहू मुनिके प्रकट होय है ताके भेद दोय हैं एक शुभ तैजस एक अशुभ तैजस। सो शुभ तैजस तो लोकनिको दुखी देख दाहिनी भुजातैं निकस लोकनिका दुःख निवारे है अर अशुभ तैजस क्रोधके योगकर वाम भुजातै निकसि प्रजाको भस्म करे है अर मुनिकूं हू भस्म करे है अर काहू मुनिके वैक्रिया ऋद्धि प्रकट होय है तब शरीरको सूक्ष्म तथा स्थूल करे हैं सो मुनिके चार शरीर हू काहू समय पाइए एक काल पांचों शरीर काहू जीवके न होंय ॥

अथानन्तर— मध्यलोकमें जम्बूद्वीप आदि असंख्यात द्वीप अर लवण समुद्र आदि असंख्यात समुद्र हैं शुभ हैं नाम जिनके सो द्विगुण द्विगुण विस्तारको लिए वलयाकार तिष्ठे हैं, सबके मध्य जम्बूद्वीप है ताके मध्य सुमेरु पर्वत तिष्ठे है सो लाख योजन ऊंचा है अर जे द्वीप समुद्र कहे तिनमें जम्बूद्वीप लाख योजनके विस्तार है अर प्रदक्षिणा तिगुणी कछु इक अधिक है अर जम्बूद्वीप विषे देवारण्य अर भूतारण्य दो वन हैं तिनविषै देवनिके निवास हैं अर षट् कुलाचल हैं। पूर्व समुद्रसूं पश्चिमके समुद्र तक लावे

पड़े हैं तिनके नाम हिमवान् महाहिमवान् निषध नील रुक्मी शिखरी। समुद्रके जलका है स्पर्श जिनके तिनमें ह्रद अर ह्रदनिमें कमल तिनमें षट्कुमारिका देवी है श्री ह्री धृति कीर्ति बुद्धि लक्ष्मी अर जम्बूद्वीपमें सात क्षेत्र हैं—भरत हैमवत हरि विदेह रम्यक हैरण्यवत ऐरावत अर षट् कुलाचलनिसूं गंगादिक चौदह नदी निकसी हैं आदिकेसे तीन अर अंतकेसे तीन अर मध्यके चारोंसे दोय २ यह चौदह हैं अर दूजाद्वीप धातुकी खण्ड सो लवण समुद्रतें दूना है ताविषै दोय सुमेरुपर्वत हैं अर बारह कुलाचल अर चौदह क्षेत्र। यहां एक भरत वहां दोय यहां एक हिमवान वहां दोय। याही भांति सर्व दुगुणे जानने अर तीजा द्वीप पुष्कर ताके अर्ध भागविषै मानुषोत्तर पर्वत है सो अढ़ाई द्वीपही विषै मनुष्य पाये हैं आगे नाहीं, आधे पुष्करविषै दोय मेरु बारा कुलाचल चौदह क्षेत्र धातुकीखण्डद्वीप समान तहां जानने। अढ़ाई द्वीपविषै पांच सुमेरु तीस कुलाचल पांच भरत पांच ऐरावत पांच महाविदेह तिनमें एक सौ साठ विजय समस्त कर्मभूमिके क्षेत्र एक सौ सत्तर एक एक क्षेत्रमें छह छह खण्ड तिनमें पांच पांच म्लेच्छखण्ड एक-एक आर्यखण्ड आर्यखण्डमें धर्मकी प्रवृत्ति विदेहक्षेत्र अर भरत ऐरावत इनविषै कर्मभूमि तिनमें विदेह तो शाश्वती कर्मभूमि अर भरत ऐरावतमें अठारा कोड़ाकोड़ी सागर भोगभूमि दोय कोड़ाकोड़ी सागर कर्मभूमि अर देवकुरु उत्तरकुरु यह शाश्वती उत्कृष्ट भोगभूमि तिनमें तीन २ पल्यकी आयु अर तीन तीन कोसकी काय अर तीन तीन दिन पीछे अल्प आहार सो पांच मेरु संबंधी पांच देवकुरु पांच उत्तरकुरु अर हरि अर रम्यक यह मध्य भोगभूमि तिनविषै दोय पल्यकी आयु अर दोय कोसकी काय दोय दिन गए आहार। या भांति पांच मेरु सम्बन्धी पांच हरि पांच रम्यक यह दश मध्य भोगभूमि अर हैमवत हैरण्यवत यह जघन्य भोगभूमि तिनमें एक पल्यकी आयु अर एक कोसकी काय एक दिनके अन्तरे आहार, सो पांच मेरु संबन्धी पांच हैमवत पांच हैरण्यवत जघन्य भोगभूमि दश या भांति तीस भोगभूमि अढ़ाई द्वीपमें जाननी, अर पंच महा विदेह पंच भरत पंच ऐरावत यह पंद्रह कर्मभूमि हैं तिनमें मोक्षमार्ग प्रवरते है॥

अढाई द्वीपके आगे मानुषोत्तरके परे मनुष्य नाहीं देव अर तिर्यंच ही हैं तिनविषै जलचर तो तीन

ही समुद्रविषै हैं लवणोदधि कालोदधि तथा अन्तका स्वयंभूरमण इन तीन विना और समुद्रनिविषै जलचर नाहीं अर विकलत्रय जीव अढाईद्वीपविष हैं अर अन्तका स्वयंभूरमण द्वीप ताके अर्ध भागविषै नागेन्द्र पर्वत है. ताके परे आधे स्वयंभूरमण द्वीपविषै अर सारे स्वयंभूरमण समुद्रविषै विकलत्रय हैं। मानुषोत्तरसे लेय नागेन्द्र पर्वत पर्यंत जघन्य भोगभूमिकी रीति है, वहां तिर्यंचनिका एक पल्यका आयु है अर सूक्ष्म स्थावर तो सर्वत्र तीन लोकमें हैं अर वादर स्थावर आधारविषै सर्वत्र नाही एकराजूविषै समस्त मध्य लोक है। मध्य लोकमें अष्ट प्रकार व्यंतर अर दश प्रकार भवनपतियोंके निवास हैं अर ऊपर ज्योतिषी देवनिके विमान हे तिनके पांच भेद चन्द्रमा सूर्य ग्रह तारा नक्षत्र सो अढ़ाई द्वीपमें ज्योतिषी चर हू हैं अर स्थिर हू हैं आगे असंख्यात द्वीपनिमें ज्योतिषी देवनिके विमान स्थिर ही हैं वहुरि सुमेरुके ऊपर स्वर्गलोक है तहां सोलह स्वर्ग तिनके नाम—सौधर्म ईशान सनत्कुमार महेन्द्र ब्रह्म ब्रह्मोत्तर लांतव कापिष्ठ शुक्र महाशुक्र शतार सहस्रार आनत प्राणत आरण अच्युत यह सोलह स्वर्ग तिनमें कल्पवासी देव देवी हैं अर सोलह स्वर्गनिके ऊपर नवग्रीव तिनके ऊपर नव अनुत्तर तिनके ऊपर पंचोत्तर विजय वैजयन्त जयंत अपराजित सर्वार्थसिद्धि। यह अहमिन्द्रनिके स्थानक हैं जहां देवांगना नाहीं अर स्वामी सेवक नाहीं और ठौर गमन नाहीं, अर पांचवां स्वर्ग ब्रह्म ताके अन्तमे लौकान्तिक देव हे तिनके देवांगना नाहीं वे देवर्षि हैं। भगवानके तप कल्याणमें ही आवें, ऊर्ध्वलोकमें देव ही हैं अथवा पंच स्थावर ही हैं। हे श्रेणिक। यह तीन लोकका व्याख्यान जो केवलीने कहा ताका संक्षेपरूप जानना विस्तारसूं त्रिलोकसारसूं जानना तीनलोकके शिखर सिद्धलोक है ता समान देदीप्यमान और क्षेत्र नाहीं जहां कर्म वंधनसे रहित अनंत सिद्ध विराजे हैं मानों वह मोक्ष स्थानक तीन भवनका उज्जल छत्र ही है वह मोक्ष स्थानक अष्टमी धरा है ये अष्ट पृथिवीके नाम नारक १ भवनवासी२ मानुष३ ज्योतिषी ४ स्वर्गवासी५ ग्रीव६ अर अनुत्तर विमान ७ मोक्ष ८ ये आठ पृथिवी हैं सो शुद्धोपयोगके प्रसादकर जे सिद्ध भये हैं तिनकी महिमा कही न जाय तिनका मरण नाहीं वहुरि जन्म नाहीं, महा सुखरूप हे, अनन्त शक्तिके धारक समस्त दुःखरहित महानिश्चल

सर्वके ज्ञाता दृष्टा हैं ॥ यह कथन सुन श्रीरामचन्द्र सकलभूषण केवलीसूं पूछते भये-हे प्रभो ! अष्टकर्म रहित अष्टगुण आदि अनन्त गुण सहित सिद्ध परमेष्ठी संसारके भावनेसे रहित हैं सो दुःख तो उनको काहू प्रकारका नाहीं अर सुख कैसा है? तब केवली दिव्य ध्वनिकर कहते भये-इस तीन लोकविषै सुख नाहीं दुःखही है अज्ञानसे वृथा सुख मान रहे हैं। संसारका इन्द्रियजनित सुख बाधासंयुक्त क्षणभंगुर है अष्टकर्म कर बंधे सदा पराधीन ये जगत्के जीव तिनके तुच्छ मात्रहू सुख नाही जैसे स्वर्णका पिंड लोहकर संयुक्त होय तब स्वर्णकी कांति दब जाय है तैसे जीवकी शक्ति कर्मनिकर दब रही है सो सुखरूप नाहीं दुःखही भोगवे हैं यह प्राणी जन्म जरा मरण रोग शोक जे अनन्त उपाधि तिनकर महापीड़ित हैं तनुका अर मनका दुःख मनुष्य तिर्यंच नारकीनिको है अर देवनिको दुःख मनहीका है सो मनका महा दुःख है ताकर पीड़ित हैं। या संसारविषैं सुख काहेका ? ये इन्द्रियजनित विषयके सुख इन्द्र धरणींद्र चक्रवर्तीनिकूं शहतकी लपेटी खड्गकी धारा समान हैं अर विषमिश्रित अन्न समान हैं अर सिद्धनिके मन इंद्रिय नाहीं शरीर नाहीं केवल स्वाभाविक अविनाशी उत्कृष्ट निराबाध निरुपम सुख है ताकी उपमा नाहीं जैसे निद्रारहित पुरुषकूं सोयवे कर कहा अर निरोगनिको औषधिकर कहा ? तैसे सर्वज्ञ वीतराग कृतार्थ सिद्ध भगवान तिनको इन्द्रीनिके विषयनिकर कहा ? दीपको सूर्य चन्द्रादिककर कहा ? जे निर्भय जिनके शत्रु नाहीं तिनके आयुधनिकर कहा ? जे सबके अंतर्यामी सबको देखे जानें जिनके सकल अर्थ सिद्ध भये कछु करना नाहीं वांछा काहू वस्तुकी नाही ते सुखके सागर हैं। इच्छा मनसे होय है सो मन नाहीं आत्मसुखविषै तृप्त परम आनंद स्वरूप क्षुधा तृषादि बाधारहित हैं तीर्थंकर देव जा सुखकी इच्छा करें ताकी महिमा कहांलग कहिए अह-मिंद्र इन्द्र नागेन्द्र नरेंद्र चक्रवर्त्यादिक निरंतर ताही पदका ध्यान करे हैं अर लौकांतिक देव ताही सुखके अभिलाषी हैं ताकी उपमा कहांलग करें। यद्यपि सिद्ध पदका सुख उपमारहित केवलीगम्य है तथापि प्रतिबोधके अर्थ तुमको सिद्धनिके सुखका कछु इक वर्णन करे हैं। अतीत अनागत वर्तमान तीन कालके तीर्थङ्कर चक्रवर्त्यादिक सर्व उत्कृष्ट भूमिके मनुष्यनिका सुख अर तीन कालका भोगभूमिका सुख अर

इंद्र अहमिंद्र आदि समस्त देवनिका सुख भूत भविष्यत् वर्तमान कालका सकल एकत्र करिए अर ताहि अनंत गुणा फलाइए सो सिद्धनिके एक समयके सुख तुल्य नाहीं, काहेसे ? जो सिद्धनिका सुख निराकुल निर्मल अव्याबाध अखण्ड अतीन्द्रिय अविनाशी है अर देव मनुष्यनिका सुख उपाधिसंयुक्त बाधासहित विकल्परूप व्याकुलताकर भरा विनाशीक है अर एक दृष्टांत और सुनहु-मनुष्यनितें राजा सुखी राजानितें चक्रवर्ती सुखी अर चक्रवर्तीनितें विंतरदेव सुखी अर वितरनिसे ज्योतिषी देव सुखी तिनतें भवनवासी अधिक सुखी अर भवनवासिनितें कल्पवासी सुखी अर कल्पवासीनितें नवग्रीवके सुखी नवग्रीवतें नवअनुत्तर के सुखी अर तिनते पंच पंचोत्तरके सुखी पंचोत्तर सर्वार्थसिद्धि समान और सुखी नाहीं सो सर्वार्थसिद्धिके अहमिंद्रनिते अनंतानंत गुणा सुख सिद्धपदमें है, सुखकी हद्द सिद्धपदका सुख है अनंतदर्शन अनंतज्ञान अनंत सुख अनंत वीर्य्य यह आत्माका निज स्वरूप सिद्धनिमें प्रवर्ते है अर संसारी जीवनिके दर्शन ज्ञान सुख वीर्य कर्मनिके क्षयोपशमसे बाह्य वस्तुके निमित्त थकी विचित्रता लिए अल्परूप प्रवरते है, यह रूपादिक विषय सुख व्याधिरूप विकल्परूप मोहके कारण इनमें सुख नाहीं जेसे फोड़ा राध रुधिरकर भरा फूलै ताहि सुख कहां ? तेसे विकल्परूप फोड़ा महाव्याकुलतारूप राधका भरा जिनके है तिनके सुख कहां ? सिद्ध भगवान गतागतरहित समस्त लोकके शिखर विराजे हैं तिनके सुख समान दूजा सुख नाहीं जिनके दर्शन ज्ञान लोकालोकको देखें जानें तिन समान सूर्य कहां ? सूर्य तो उदय अस्तकूं धरे है सकल प्रकाशक नाहीं, वह भगवान सिद्ध परमेष्ठी हथेलीमें आंवलेकी नाई सकल वस्तुको देखे जाने हैं, छद्मस्थ पुरुषका ज्ञान उन समान नाहीं, यद्यपि अवधिज्ञानी मनःपर्ययज्ञानी मुनि अविभागी परमाणु पर्यंत देखे हैं अर जीवनिके असंख्यात जन्म जाने हैं तथापि अरूपी पदार्थनिको न जाने हैं अर अनंतकालकी न जाने, केवली ही जाने, केवलज्ञान केवलदर्शनकर युक्त तिन समान और नाहीं सिद्धनिके ज्ञान अनंत दर्शन अनंत अर संसारी जीवनिके अल्पज्ञान अल्पदर्शन, सिद्धनिके अनंत सुख अनंत वीर्य अर संसारनिके अल्प-सुख अल्पवीर्य यह निश्चय जानो सिद्धनिके सुखकी महिमा केवलज्ञानीही जाने अर चार ज्ञानके धार-

कहू पूर्ण न जानें यह सिद्धपद अभव्योंको अप्राप्य है इस पदको निकट भव्य ही पावें, अभव्य अनन्त कालहू काय क्लेश करें अनेक यत्न करें तौहू न पावें, अनादि कालकी लगी जो अविद्यारूप स्त्री ताका विरह अभव्यनिके न होय, सदा अविद्याको लिए भव वनविषै शयन करें अर मुक्तिरूप स्त्रीके मिलापकी वांछाविषै तत्पर जे भव्य जीव ते कैयक दिन संसारमे रहै हैं सो संसारमें राजी नाहीं तप विषै तिष्ठते मोक्ष हीके अभिलाषी हैं जिनमें सिद्ध होनेकी शक्ति नाहीं उन्हें अभव्य कहिए अर जे सिद्ध हानहार हैं उन्हें भव्य कहिए। केवली कहै हैं—हे रघुनन्दन। जिनशासन विना और कोई मोक्षका उपाय नाहीं। विना सम्यक्त कर्मनिका क्षय न होय, अज्ञानी जीव कोटि भवमें जे कर्म न खिपाय सके सो ज्ञानी तीन गुप्तिको धरे एक मुहूर्तमें खिपावे, सिद्ध भगवान परमात्मा प्रसिद्ध हैं सर्व जगतके लोग उनको जाने हैं कि वे भगवान हैं केवली विना उनको कोई प्रत्यक्ष देख जान न सकै, केवलज्ञानी ही सिद्धनिको देखे जाने हैं। मिथ्यात्वका मार्ग संसारका कारण या जीवने अनंत भवमें धारा। तुम निकट भव्य हो परमार्थकी प्राप्तिके अर्थ जिनशासनकी अखण्ड श्रद्धा धारो। हे श्रेणिक। यह वचन सकलभूषण केवलीके सुन. श्रीरामचंद्र प्रणामकर कहते भए—हे नाथ। या संसार समुद्रतै मोहि तारो हे भगवन्! यह प्राणी कौन उपायकर संसारके वासतैं छूटे है। तब केवली भगवान् कहते भए—हे राम। सम्यक्दर्शन ज्ञान चारित्र मोक्षका मार्ग है जिनशासनविषै यह कहा है तत्त्वका जो श्रद्धान ताहि सम्यग्दर्शन कहिए तत्त्व अनन्तगुणपर्यायरूप है ताके दोय भेद हैं एक चेतन दूसरा अचेतन है। सो जीव चेतन है अर सवे अचेतन हैं अर दर्शन दोय प्रकार तै उपजे है एक निसर्ग एक अधिगम। जो स्वतः स्वभाव उपजे सो निसर्ग अर गुरुके उपदेशतैं उपजे सो अधिगम। सम्यक्दृष्टि जीव जिनधर्मविषै रत है। सम्यक्तके अतीचार पांच हैं—शंका कहिये जिनधर्मविषै संदेह अर कांक्षा कहिये भोगनिकी अभिलाषा अर विचिकित्सा कहिये महामुनिको देख ग्लानि करनी अर अन्यदृष्टि प्रशंसा कहिये मिथ्यादृष्टिको मनमें भला जानना अर संस्तव कहिये वचनकर मिथ्यादृष्टिकी स्तुति करना इनकर सम्यक्तमें दूषण उपजे हैं अर मैत्री प्रमोद करुणा मध्यस्थ ये चार

भावना अथवा अनित्यादि वारह भावना अथवा प्रशम सवेग अनुकंपा आस्तिक्य अर शंकादि दोष रहितपना जिनप्रतिमा जिनमन्दिर जिनशास्त्र मुनिराजनिकी भक्ति इनकर सम्यक्दर्शन निर्मल होय है अर सर्वज्ञके वचन प्रमाण वस्तुका जानना सो ज्ञानकी निर्मलताका कारण है अर जो काहूतें न सधै ऐसी दुर्धरक्रिया आचरणी ताहि चारित्र कहिये पांचों इन्द्रियनिका निरोध मनका निरोध वचनका निरोध सर्व पापक्रियनिको त्याग सो चारित्र कहिये त्रस स्थावर सर्व जीवकी दया सवको आप समान जानै सो चारित्र कहिये, अर सुननेवालेके मन अर काननिको आनंदकारी स्निग्ध मधुर अर्थसंयुक्त कल्याणकारी वचन बोलना सो चारित्र कहिये, अर मन वचन कायकर परधनका त्याग करना किसीका विना दिया कछु न लेना अर दिया हुआ आहारमात्र लेना सो चारित्र कहिये अर जो देवनिकर पूज्य महादुर्धर ब्रह्मचर्यव्रतका धारण सो चारित्र कहिये अर शिवमार्ग कहिये निर्वाणका मार्ग ताहि विघ्नकरणहारी मूर्छा कहिये मनको अभिलाषा ताका त्याग सोई परिग्रहका त्याग सोहू चारित्र कहिये है। ये मुनिनिके धर्म कहे अर जो अणुव्रती श्रावक मुनिनिको श्रद्धा आदि गुणनिकर युक्त नवधा भक्तिकर आहार देना सो एकदेशचारित्र कहिये अर परदारा परधनका परिहार परपीड़ाका निवारण दयाधर्मका अंगीकार दान शील पूजा प्रभावना पर्वोपवासादिक सो ए देशचारित्र कहिये अर यम कहिये यावज्जीव पापका परिहार, नियम कहिये मर्यादारूप व्रत तपका अंगीकार वैराग्य विनय विवेक ज्ञान मन इन्द्रियोंका निरोध ध्यान इत्यादि धर्मका आचरण सो एकदेश चारित्र कहिये यह अनेक गुणकर युक्त जिनभासित चारित्र परम धामका कारण कल्याणकी प्राप्तिके अर्थ सेवने योग्य है जो सम्यक्दृष्टि जीव जिनशासनका श्रद्धानी परनिंदाका त्यागी अपनी अशुभ क्रियाका निंदक जगतके जीवोंसे न सधै ऐसे दुर्द्धर तपका धारक संयमका साधनहारा सो ही दुर्लभ चारित्र धारिवेको समर्थ होय अर जहां दया आदि समीचीन गुण नाहीं तहां चारित्र नाहीं अर चारित्र विना संसारसे निवृत्ति नाही जहां दया क्षमा ज्ञान वैराग्य तप संयम नही तहां धर्म नही विषय कषायका त्याग सोई धर्म है शम कहिए समता भाव परम शांत दम कहिये मन इन्द्रियोंका विरोध संवर कहिये नवीन कर्मनिका विरोध जहां

ये नहीं तहां चारित्र नहीं जे पापी जीव हिंसा करे हैं झूठ बोले हैं चोरी करे हैं परस्त्री सेवन करे हैं महा आरम्भी हैं परिग्रही हैं तिनके धर्म नहीं, जे धर्मके निमित्त हिंसा करे हैं ते अधर्मी अधमगतिके पात्र हैं जो मूढ़ जिनदीक्षा लेकर आरम्भ करे हैं सो यति नहीं। यतिका धर्म आरंभ परिग्रहसे रहित है परिग्रह धारियोंको मुक्ति नहीं जे हिंसामें धर्म जान षट्कायिक जीवोंकी हिंसा करे हैं ते पापी हैं हिंसामें धर्म नाहीं हिंसकोंको या भव परभवके सुख नहीं शिव कहिये मोक्ष नहीं। जे सुखके अर्थ धर्मके अर्थ जीवघात करे हैं सो वृथा है जे ग्राम क्षेत्रादिकमें आसक्त हैं गाय भैंस राखे हैं मारे हैं बांधे हैं तोड़े हैं दाहे हैं उनके वैराग्य कहां ? जे क्रय विक्रय करें हैं रसोई परहेंडा आदि आरम्भ राखे हैं सुवर्णादिक राखे हैं तिनको मुक्ति नाहीं जिनदीक्षा निरारम्भ है अतिदुर्लभ है जे जिनदीक्षा धारि जगतको धंधा करे हैं वे दीर्घ संसारी हैं जे साधु होय तेलादिकका मर्दन करे हैं स्नान करे हैं शरीरका संस्कार करे हैं पुष्पादिकको सूंघे हैं सुगन्ध लगावे हैं दीपकका उद्योत करे हैं धूप खेवे है सो साधु नहीं, मोक्षमार्गसे पराङ्मुख हैं अपनी बुद्धिकर जे कहे हैं हिंसाविषै दोष नाहीं वे मूर्ख हैं तिनको शास्त्रका ज्ञान नाहीं चारित्र नाहीं।

जे मिथ्या दृष्टि तप करे हैं ग्रामविषै एक रात्रि वसे हैं नगर विषै पांच रात्रि अर सदा ऊर्ध्वबाहु राखे हैं मास मासोपवास करे है अर वनविषै विचरे हैं मौनी हैं निपरिग्रही हैं तथापि दयावान नहीं दुष्ट है हृदय जिनका सम्यक्त बीज विना धर्मरूप वृक्षको न उगाय सकें अनेक कष्ट करें तौभी शिवालय कहिए मुक्ति उसे न लहे जे धर्मकी बुद्धिकर पर्वतसे पड़े अग्निविषै जरें जलमें डूवें धरतीमें गड़ें वे कुमरण कर कुगतिको जावै है जे पापकर्मी कामनापरायण आर्त रौद्र ध्यानी विपरीत उपाय करें वे नरक निगोद लहे। मिथ्यादृष्टि जो कदाचित् दान दे तप करैं सो पुण्यके उदय कर मनुष्य अर देव गतिके सुख भोगे हैं परन्तु श्रेष्ठ देव श्रेष्ठ मनुष्य न होंय सम्यग्दृष्टियोंके फलके असंख्यातवें भाग भी फल नहीं। सम्यग्दृष्टि चौथे गुणठाणे अव्रती हैं तौ हू नियम विषै है प्रेम जिनका सो सम्यक्‌दर्शनके प्रसादसे देवलोकविषै उत्तम देव होवें अर मिथ्यादृष्टि कुलिंगी महातप भी करें तो देवनिके किंकर हीनदेव होंय, बहुरि संसार

भ्रमण करें अर सम्यकदृष्टि भव धरै तो उत्तम मनुष्य होय तिनमें देवनके भव सात मनुष्यनिके भव आठ या भांति पंद्रह भवविषै पंचमगति पावें वीतराग सर्वज्ञ देवने मोक्षका मार्ग प्रगट दिखाया है परन्तु यह विषयी जीव अङ्गीकार न करे हैं अशारूपी फांसीसे बंधे मोहके वश पड़े तृष्णाके भरे पापरूप जंजीरसे ज- कड़े कुगतिरूप वन्दीगृहविषै पड़े हैं स्पर्श अर रसना आदि इन्द्रियोंके लोलुपी दुःख हीको सुख माने हैं यह जगतके जीव एक जिनधर्मके शरण विना क्लेश भोगे हैं इंद्रियोंके सुख चाहे हैं सो मिले नाहीं अर मृत्युसे डरें सो मृत्यु छोड़े नाहीं विफल कामना अर विफल भयके वश भए जीव केवल तापहीको प्राप्त होय हैं तापके हरिवेका उपाय और नाहीं आशा अर शंका तजना यही सुखका उपाय है यह जीव आशा- कर भरा भोगोंका भोग किया चाहे है अर धर्मविषै धीय नाहीं धरे है क्लेश रूप अग्निकर उष्ण महा आरम्भ विषै उद्यमी कछु भी अर्थ नहीं पावे है उलटा गांठका खोवे है यह प्राणी पापके उदयसे मनवां- छित अर्थको नहीं पावे हैं उलटा अनर्थ होय है सो अनर्थ अतिदुर्जय है यह में किया यह में करूं हूं यह में करूंगा ऐसा विचार करते ही मरकर कुगति जाय है ये चारोंही गति कुगति हैं एक पंचम गति नि- र्वाण सोई सुगति है जहांसे बहुरि आवना नहीं अर जगतविषै मृत्यु ऐसा नहीं देखे है जो याने यह किया यह न किया वाल अवस्था आदिसे सर्व अवस्थाविषै आय दावे है जैसे सिंह मृगको सव अवस्थामें आय दावे अहो यह अज्ञानी जीव अहितविषै हितकी वांछा धरे है अर दुःखविषै सुखकी आशा करे है अ- नित्यको नित्य जाने है भय विषै शरण माने है इनके विपरीत बुद्धि है यह सब मिथ्यात्वका दोष है यह मनुष्यरूप माता हाथी भार्या रूप गर्तविष पड़ा अनेक दुःखरूप वन्धनकर वंधे है विषयरूप मांसका लोभी मत्स्यकी नाईं विकल्परूपी जालमें पडे है यह प्राणी दुर्बल वलदकी न्याईं कुटुम्वरूप कीचमें फंसा खेद खिन्न होय है जैसे वैरियोंसे वंधा अर अन्धकूपमें पड़ा उसका निकसना अति कठिन है तैसे स्नेहरूप फांसीकर वंधा संसाररूप अन्धकूपविषै पड़ा अज्ञानी जीव उसका निकसना अति कठिन है कोई निकट भव्य जिनवाणीरूप रस्सेको गहे अर श्रीगुरु निकासनेवाले होंय तो निकसे अर अभव्य जीव जैनेंद्री आ-

ज्ञारूप अति दुर्लभ आनन्दका कारण जो आत्मज्ञान उसे पायवे समर्थ नहीं जिनराजका निश्चय मार्ग निकटभव्य ही पावे अर अभव्य सदा कर्मोंकर कलंकी भए अतिक्लेशरूप संसारचक्रविषै भ्रमे हैं। हे श्रेणिक ! यह वचन श्रीभगवान सकलभूषण केवलीने कहे तव श्रीरामचन्द्र हाथ जोड़ सीस नवाय कहते भए— हे भगवन् ! मैं कौन उपायकर भव भ्रमणसे छूटूं मैं सकल राणी अर पृथ्वीका राज्य तजवे समर्थ हूं परन्तु भाई लक्ष्मणका स्नेह तजवे समर्थ नहीं, स्नेह समुद्रकी तरङ्गोंविषै डूबूं हूं आप धर्मोपदेश रूप हस्तावलम्बन कर काढ़ो। हे करुणानिधान ! मेरी रक्षा करो। तव भगवान कहते भये हे राम ! शोक न कर तू बलदेव है कैयक दिन वासुदेव सहित इन्द्रकी न्याईं इस पृथिवीका राज्यकर जिनेश्वरका व्रत धर केवल ज्ञान पावेगा, ए केवलीके वचन सुन श्रीरामचन्द्र हर्षकर रोमांचित भए नयनकमल फूल गये वदन कमल विकसित भया परम धीर्ययुक्त होते भये अर रामको केवलीके मुखसे चरम शरीरी जान सुर नर असुर सब ही प्रशंसाकर अति प्रीति करते भए ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषा वचनिकाविषैं रामका केवलीके मुखधर्म श्रवण वर्णन करनेवाला एकसौ पाचवां पर्व पूर्ण भया ॥ १०५ ॥

अथानन्तर—विद्याधरनिविषै श्रेष्ठ राजा विभीषण रावणका भाई सुन्दर शरीरका धारक रामकी भक्ति ही है आभूषण जिसके सो दोनों कर जोड़ प्रणाम कर केवलीको पूछता भया, हे देवाधिदेव ! श्रीरामचन्द्रने पूर्व भवविषै क्या सुकृत किया जिसकर ऐसी महिमा पाई अर इनकी स्त्री-सीता दण्डक वनसे कौन प्रसंगकर रावण हर ले गया धर्म अर्थ काम मोक्ष चारों पुरुषार्थका वेत्ता अनेक शास्त्रका पाठी कृत्य अकृत्यको जान धर्म अधर्मको पिछाने प्रधान गुण सपन्न सो काहेसे मोहके वश होय परस्त्रीकी अभिलाषा रूप अग्निविषैं पतंगके भावको प्राप्त भया अर लक्ष्मणने उसे संग्रामविषै हता रावण ऐसा बलवान विद्याधरनिका महेश्वर अनेक अद्भुत कार्योंका करणहारा सो कैसे ऐसे मरणको प्राप्त भया ? तव केवली अनेक जन्मकी कथा विभीषणको कहते भये—हे लंकेश्वर ! राम लक्ष्मण दोनों अनेक भवके भाई हैं अर रावणके जीवसे

लक्ष्मणके जीवका बहुत भवसे बैर है सो सुन। जम्बूद्वीपके भरतक्षेत्रविषै एक नगर वहां नयदत्त नामा वणिक अल्प धनका धनी उसकी सुनंदा स्त्री उसके धनदत्त नामा पुत्र सो रामका जीव अर दूजा पुत्र वसुदत्त सो लक्ष्मणका जीव अर एक यज्ञवलि नामा विप्र वसुदत्तका मित्र सो तेरा जीव अर उसही नगरविषै एक और वणिक सागरदत्त जिसके स्त्री रत्नप्रभा पुत्री गुणवती सो सीताका जीव अर गुणवतीका छोटा भाई जिसका नाम गुणवान सो भामण्डलका जीव अर गुणवती रूप यौवन कला कांति लावण्यताकर मण्डित सो पिताका अभिप्राय जान धनदत्तसे बहिनकी सगाई गुणवानने करी अर उसही नगरमें एक महा धनवान वणिक श्रीकांत सो रावणका जीव जो निरन्तर गुणवतीके परिणवेकी अभिलाषा राखे अर गुणवतीके रूपकर हरा गया है चित्त जिसका सो गुणवतीका भाई लोभी धनदत्तको अल्प धनवन्त जान श्रीकांतको महाधनवन्त देख परणायवेको उद्यमी भया ॥

सो यह वृत्तान्त यज्ञवलि ब्राह्मणने वसुदत्तको कहा तेरे बड़े भाईकी मांग कन्याका बड़ा भाई, श्रीकांतको धनवान जान परणाया चाहे है तब वसुदत्त यह समाचार सुन श्रीकान्तके मारिवेको उद्यमी भया खड्ग पैनाय अन्धेरी रात्रीविषै श्याम वस्त्र पहिर शब्दरहित धीरा धीरा पग धरता जाय श्रीकान्तके घरविषै गया सो वह असावधान बैठा हुता सो खड्गसे मारा तब पड़ते पड़ते श्रीकान्तने भी वसुदत्तको खड्गसे मारा सो दोनों मरे सो विंध्याचलके वनमें हिरण भये अर नगरके दुर्जन लोक हुते तिन्होंने गुणवती धनदत्तको न परणायवे दीनी कि इसके भाईने अपराध किया, दुर्जन लोक बिना अपराध कोप करें सो यह तो एक बहाना पाया तब धनदत्त अपने भाईका मरण अर अपना अपमान तथा मांगका अलाभ जान महादुखी होय घरसे निकस विदेश गमन करता भया अर वह कन्या धनदत्तकी अप्राप्तिकर अतिदुखी भई और भी किसीको न परणती भई, अर कन्या मुनिनिकी निंदा अर जिनमार्गकी मिथ्यात्वके अनुरागकर पाप उपार्जै काल पाय आर्त ध्यानकर मूई सो जिस वनविषै दोनों मृग तिस वनविषै यह मृगी भई सो पूर्वले विरोधकर इसीके अर्थते दोनों मृग परस्पर लड़कर मूए,

विषै देव भया देवांगनानिके नेत्ररूप कमल तिनके प्रफुल्लित करनेको सूर्य समान होता भया तहां मनवांछित क्रीड़ा करता भया अर पद्मरुचि सेठ भी समाधिमरणकर दूजे ही स्वर्ग देव भया दोनों वहां परम मित्र भए वहांसे चयकर पद्मरुचिका जीव पश्चिम विदेहविषै विजयार्धगिरि जहां नंद्यावर्त नगर वहां राजा नन्दीश्वर उसकी राणी कनकप्रभा उसके नयनानन्द नामा पुत्र भया सो विद्याधरनिके चक्रपदकी संपदा भोगी बहुरि महा मुनिकी अवस्था धर विषम तप किया समाधिमरण कर चौथे स्वर्ग देव भया वहां पुण्यरूप बेलके सुखरूप फल महा मनोग्य भोगे बहुरि वहांसे चयकर सुमेरु पर्वतके पूर्व दिशाकी ओर विदेह वहां क्षेमपुरी नगरी राजा विपुलबाहन राणी पद्मावती तिनके श्रीचन्द्र नामा पुत्र भया वहां स्वर्ग समान सुख भोगे तिनके पुण्यके प्रभावसे दिन दिन राजकी वृद्धि भई अटूट भंडार भया समुद्रांत पृथ्वी एक ग्रामकी न्याईं वश करी अर जिसके स्त्री इन्द्राणी समान सो इन्द्रकेसे सुख भोगे हजारों वर्ष सुखसे राज्य किया एक दिन महा संघ सहित तीन गुप्तिके धारक समाधिगुप्ति योगीश्वर नगरके बाहिर आय विराजे तिनको उद्यानविषै आया जान नगरके लोक वन्दनाको चले सो महा स्तुति करते वादित्र बजावते हर्षसे जाय हैं, श्रीचन्द्र समीपके लोकोंसे पूछता भया—यह हर्षका नाद जैसा समुद्र गाजे तैसा होय है सो कौन कारण है ? तब मंत्रियनिने किंकर दौड़ाए निश्चय किया जो मुनि आए हैं तिनके दर्शनको लोक जाय हैं। यह समाचार राजा सुनकर फूले कमल समान भए हैं नेत्र जिसके अर शरीरविषै हर्षसे रोमांच होय आये राजा समस्त लोक अर परिवार सहित मुनिके दर्शनको गया। प्रसन्न है मुख जिनका ऐसे मुनिराज तिनको राजा देख प्रणामकर महा विनयसंयुक्त पृथ्वीविषै बैठा। भव्य जीवरूप कमल तिनके प्रफुल्लित करवेको सूर्य समान ऋषिनाथ तिनके दर्शनसे राजाको अति धर्म स्नेह उपजा, वे महा तपोधन धर्मशास्त्रके वेत्ता परम गंभीर लोकोंको तत्त्वज्ञानका उपदेश देते भए यतिका धर्म अर श्रावकका धर्म संसार समुद्रका तारणहारा अनेक भेद संयुक्त कहा अर प्रथमानुयोग करणानुयोग द्रव्यानुयोगका स्वरूप कहा। प्रथमानुयोग कहिए उत्तम पुरुषोंका कथन अर करणानुयोग कहिए तीन लोकका कथन चरणानुयोग कहिए मुनि

के स्थानक गया अपना पूर्व चरित्र चितार यह वृषभध्वज कुमार हाथीसे उतर पूर्वजन्मकी मरणभूमि देख दुःखित भया अपने मरणका सुधारणहारा नमोकार मंत्रका देनहारा उसके जानिवेके अर्थ एक कैलाशके शिखर समान ऊंचा चैत्यालय बनाया अर चैत्यालयके द्वारविषै एक वड़े वैलकी मूर्ति जिसके निकट बैठा एक पुरुष नमोकार मंत्र सुनावे है ऐसा एक चित्रपट लिखाय मेला अर उसके समीप समझने मनुष्य मेले। दर्शन करवेको मेरु श्रेष्ठीका पद्मरुचि आया सो देख अति हर्षित भया अर भगवानका दर्शन कर पीछे आय वैलके चित्रपटको ओर निरखकर मनविषै विचारे है वैलको नमोकार मंत्र मैंने सुनाया था सो खड़ा खड़ा देखे ते पुरुष रखवारे थे तिन जाय राजकुमारको कही सो सुनते ही बड़ी ऋद्धिसे युक्त हाथी चढ़ा शीघ्रही अपने परम मित्रसे मिलने आया हाथीसे उतर जिनमंदिरविषै गया बहुरि बाहिर आया पद्मरुचिको वैलकी ओर निहारता देखा राजकुमारने श्रेष्ठीके पुत्रको पूछी तुम वैलके पटकी ओर कहा निरखो हो? तब पद्मरुचिने कही एक मरते वैलको मैंने नमोकार मंत्र दिया था सो कहां उपजा है यह जानिवेकी इच्छा है तब वृषभध्वज बोले वह मैं हूं, ऐसा कह पायन पड़ा अर पद्मरुचिकी स्तुति करी जैसे गुरुकी शिष्य करै अर कहता भया मैं पशु महा अविवेकी मृत्युके कष्टकर दुखी था सो तुम मेरे महा मित्र नमोकार मंत्रके दाता समाधिमरणके कारण होते भए तुम दयालु परभवके सुधारणहारेने महा मंत्र मुझे दिया उससे मैं राजकुमार भया जैसा उपकार राजा देव माता सहोदर मित्र कुटुम्ब कोई न करै तैसा तुमने किया जो तुमने नमोकार मंत्र दिया उस समान पदार्थ त्रैलोक्यमें नहीं उसका बदला मैं क्या दूं तुमसे उऋण नहीं तथापि तुमविषै मेरी भक्ति अधिक उपजी है जो आज्ञा देवो सो करूं। हे पुरुषोत्तम! तुम आज्ञा दानकर मुझको भक्त करो यह सकल राज्य लेवो मैं तुम्हारा दास यह मेरा शरीर उसकर इच्छा होय सो सेवा करावो। या भांति वृषभध्वजने कहो तब पद्मरुचिके अर याके अति प्रीति वढ़ी दोनों सम्यक्दृष्टि राजमें श्रावकके व्रत पालते भए ठौर ठौर भगवानके बड़े २ चैत्यालय कराए तिनमें जिनबिंब पधराए यह पृथिवी तिनकर शोभायमान होती भई बहुरि समाधिमरण कर वृषभध्वज पुण्यकर्मके प्रसादकर दूजे स्वर्ग

होता भया तहां मन-
विषै देव भया देवांगनानिके नेत्ररूप कमल तिनके प्रफुल्लित करनेको सूय समान
वांछित क्रीड़ा करता भया अर पद्मरुचि सेठ भी समाधिमरणकर दूजे ही स्वर्ग देव भया दोनों वहां
परम मित्र भए वहांसे चयकर पद्मरुचिका जीव पश्चिम विदेहविषै विजयार्धगिरि जहां नंद्यावर्त नगर
वहां राजा नन्दीश्वर उसकी राणी कनकप्रभा उसके नयनानन्द नामा पुत्र भया सो विद्याधरनिके चक्रपदकी
संपदा भोगी बहुरि महा मुनिकी अवस्था धर विषम तप किया समाधिमरण कर चौथे स्वर्ग देव भया
वहां पुण्यरूप वेलके सुखरूप फल महा मनोग्य भोगे बहुरि वहांसे चयकर सुमेरु पर्वतके पूर्व दिशाकी ओर
विदेह वहां क्षेमपुरी नगरी राजा विपुलवाहन राणी पद्मावती तिनके श्रीचन्द्र नामा पुत्र भया वहां स्वर्ग
समान सुख भोगे तिनके पुण्यके प्रभावसे दिन दिन राजकी वृद्धि भई अटूट भंडार भया समुद्रांत पृथ्वी
एक ग्रामकी न्याईं वश करी अर जिसके स्त्री इन्द्राणी समान सो इन्द्रकेसे सुख भोगे हजारों वर्ष सुखसे
राज्य किया एक दिन महा संघ सहित तीन गुप्तिके धारक समाधिगुप्ति योगीश्वर नगरके बाहिर आय
विराजे तिनको उद्यानविषै आया जान नगरके लोक वन्दनाको चले सो महा स्तुति करते वादित्र बजावते
हर्षसे जाय हैं, श्रीचन्द्र समीपके लोकोंसे पूछता भया—यह हर्षका नाद जैसा समुद्र गाजे तैसा होय है
सो कौन कारण है ? तब मंत्रियनिने किंकर दौड़ाए निश्चय किया जो मुनि आए हैं तिनके दर्शनको लोक
जाय हैं। यह समाचार राजा सुनकर फूले कमल समान भए हैं नेत्र जिसके अर शरीरविषै हर्षसे रोमांच
होय आये राजा समस्त लोक अर परिवार सहित मुनिके दर्शनको गया। प्रसन्न है मुख जिनका ऐसे मुनि-
राज तिनको राजा देख प्रणामकर महा विनयसंयुक्त पृथ्वीविषै बैठा। भव्य जीवरूप कमल तिनके प्रफुल्लित
करवेको सूर्य समान ऋषिनाथ तिनके दर्शनसे राजाको अति धर्म स्नेह उपजा, वे महा तपोधन धर्मशास्त्रके
वेत्ता परम गंभीर लोकोंको तत्त्वज्ञानका उपदेश देते भए यतिका धर्म अर श्रावकका धर्म संसार समुद्रका
तारणहारा अनेक भेद संयुक्त कहा अर प्रथमानुयोग करणानुयोग द्रव्यानुयोगका स्वरूप कहा। प्रथमानु-
योग कहिए उत्तम पुरुषोंका कथन अर करणानुयोग कहिए तीन लोकका कथन चरणानुयोग कहिए मुनि

श्रावकका धर्म अर दृव्यानुयोग कहिए षट्द्रव्य सप्त तत्व नव पदार्थ पंचास्तिकायका निर्णय। कैसे हैं मुनिराज वक्तानिविषै श्रेष्ठ हैं अर आक्षेपणी कहिए जिन मार्ग उद्योतनी अर क्षेपणी कहिए मिथ्यात्वखंडनी अर संवेगिनी कहिए धर्मानुरागिणी अर निर्वेदिनी कहिए वैराग्यकारिणी यह चार प्रकार कथा कहते भए, इस संसार असारविषै कर्मके योगसे भ्रमता जो यह प्राणी सो महा कष्टसे मोक्ष मार्गको प्राप्त होय है संसारका ठाठ बिनाशीक है जैसा संध्याका वर्ण अर जलका बुदबुदा तथा जलके झाग अर लहर अर विजुरीका चमत्कार इन्द्रधनुष क्षणभंगुर हैं असार हैं ऐसा जगतका चरित्र क्षणभंगुर जानना यामें सार नहीं नरक तिर्यंचगति तो दुःख रूप ही हैं अर देव मनुष्य गतिविषै यह प्राणी सुख जाने है सो सुख नहीं दुःख ही है जिससे तृप्ति नाहीं सोही दुःख जो महेन्द्र स्वर्गके भोगोंसे तृप्त नहीं भया सो मनुष्य भवके तुच्छ भोगसे कैसे तृप्त होय ? यह मनुष्य भव भोग योग्य नहीं वैराग्य योग्य है काहू एक प्रकारसे दुर्लभ मनुष्य देह पाया जैसे दरिद्री निधान पावै सो विषय रसका लोभी होय वृथा खोया मोहको प्राप्त भया जैसे सूके ईंधनसे अग्निको कहां तृप्ति अर नादयानक जलसे समुद्रको कहां तृप्ति ? तैसे विषय सुखसे जीवनको तृप्ति न होय, चतुर भी विषय रूप मद कर मोहित भया मन्दताको प्राप्त होय है, अज्ञान रूप तिमिरसे मंद भया है मन जिसका सो जलविषै डूबता खेदखिन्न होय त्यों खेदखिन्न है परन्तु अविवेकी तो विषय हीको भला जाने है सूर्य तो दिनको ताप उपजावै अर काम रात्रि दिन आताप उपजावै सूर्यके आताप निवारिवेके अनेक उपाय हैं अर कामके निवारवेका उपाय एक विवेकही है जन्म जरा मरणका दुःख संसारविषै भयंकर है जिसका चिंतवन किए कष्ट उपजे यह कर्मजनित जगतका ठाठ अरहटके यंत्रकी घड़ी समान है रीता भर जाय है भरा रीता होय है निचला ऊपर ऊपरला नीचे, अर यह शरीर दुर्गंध मय है यंत्र समान चलाया चले है विनाशीक है मोह कर्मके योगसे जीवका कायासे स्नेह है जलके बुद्बुदा समान मनुष्य भवके उपजे सुख असार जान बड़े कुलके उपजे पुरुष विरक्त होय जिनराजका भाषा मार्ग अंगीकार करे हैं उत्साहरूप बख्तर पहिरे निश्चय रूप तुरंगके असवार ध्यानरूप खड्गके धारक धीर कर्मरूप शत्रुको विनाश निर्वाणरूप

नगर लेय हैं, यह शरीर भिन्न अर में भिन्न ऐसा चिंतवन कर शरीरका स्नेह तज हे मनुष्यो। धर्मको करो धर्म समान अर नहीं और धर्मोंसे मुनिका धर्म श्रेष्ठ है जिन महामुनियोंके सुखदुःख दोनों तुल्य अपना अर पराया तुल्य जे राग-द्वेष रहित महा पुरुष हैं वे परम उत्कृष्ट शुक्ल ध्यानरूप अग्निसे कर्मरूप वनी दुःख रूप दुष्टोंसे भरी भस्म करे हैं॥ ये मुनिके वचन राजा श्रीचन्द्र सुन बोधको प्राप्त भया, विषयानुभव सुखसे वैराग्य होय अपने ध्वजकांति नामा पुत्रको राज्य देय समाधिगुप्त नामा मुनिके समीप मुनि भया। महा विरक्त है मन जिसका, सम्यक्की भावनासे तीनों योग जे मन वचन काय तिनकी शुद्धता धरता संता पांच समिति तीन गुप्तिसे मंडित राग-द्वेषसे परांगमुख रत्नत्रयरूप आभूषणोंका धारक उत्तम क्षमा आदि दश-लक्षण धर्मकर मंडित जिनशासनका अनुरागी समस्त अङ्ग पूर्वाङ्गका पाठक समाधानरूप पंच महाव्रतका धारक जीवोंका दयालु सप्त भयरहित परमधीर्यका धारक बाईस परीषहका सहनहारा, बेला तेला पक्ष मासादिक अनेक उपवासका करणहारा शुद्ध आहारका लेनहारा ध्यानाध्ययनमें तत्पर निर्ममत्व अतींद्रिय भोगोंकी वांछाका त्यागी निदान बंधनरहित महाशांत जिनशासनमें है वात्सल्य जिसका, यतिके आचारमें संघके अनुग्रहविषै तत्पर बालके अग्रभागके कोटिवें भागहू नाहीं है परिग्रह जाके, स्नानका त्यागी, दिगंबर, संसारके प्रबंधतैं रहित, ग्रामके वनविषै एक रात्रि अर नगरके वनविषै पांच रात्रि रहनहारा, गिरि गुफा गिरिशिखर नदीके पुलिन उद्यान इत्यादि प्रशस्त स्थानविषै निवास करणहारा कायोत्सर्गका धारक देहतैं हू निर्ममत्व निश्चल मौनी पंडित महातपस्वी इत्यादि गुणनिकर पूर्ण कर्म पिंजरको जर्जराकर काल पाय श्रीचंद्रमुनि रामचंद्रका जीव पांचवें स्वर्ग इन्द्र भया, तहां लक्ष्मी कीर्ति कांति प्रतापका धारक देवनिका चूड़ामणि तीन लोकविषै प्रसिद्ध परम ऋद्धिकर युक्त महासुख भोगता भया। नंदनादिक वनविषै सौधर्मादिक इन्द्र याकी संपदाको देख रहैं, याके अवलोकनकी सबके वांछा रहै महा सुन्दर विमान मणि हेममई मोतिनिकी झाल-रिनिकर मंडित, वामें बैठा विहार करै दिव्य स्त्रीनिके नेत्रोंको उत्सवरूप महासुखतैं काल व्यतीत करता भया, श्रीचन्द्रका जीव ब्रह्मेंद्र ताकी महिमा, हे विभीषण! वचन कर न कही जाय, केवलज्ञानगम्य है। यह

जिनशासन अमौलिक परमरत्न उपमारहित त्रैलोक्यविषै प्रकट है तथापि मूढ़ न जानै। श्रीजिनेंद्र मुनींद्र अर जिनधर्म इनकी महिमा जानकरहू मूर्ख मिथ्या अभिमानकर गर्वित भए धर्मसे परांगमुख रहैं। जो अज्ञानी या लोकके सुखविषै अनुरागी भया है सो बालक समान अविवेकी हैं जैसे बालक विना समझे अभक्ष्यका भक्षण करै है विषपान करै है तैसे मूढ़ अयोग्यका आचरण करे है जे विषयके अनुरागी हैं सो अपना बुरा करे हैं, जीवोंके कर्म बंधकी विचित्रता है इसलिए सबही ज्ञानके अधिकारी नहीं, कैयक महा भाग्य ज्ञानको पावे हैं अर कैयक ज्ञानको पाय और वस्तुकी वांछाकर अज्ञान दशाको प्राप्त होय हैं अर कैयक महानिंद्य जो यह संसारी जीवनिके मार्ग तिनमें रुचि करे हैं, वे मार्ग महादोषके भरे हैं जिनमें विषय कषायकी बहुलता है जिनशासनसे और कोई दुःखके छुड़ायवेका मार्ग नहीं इसलिए हे विभीषण! तुम आनंद चित्त होयकर जिनेश्वर देवका अर्चन करो, इस भांति धनदत्तका जीव मनुष्यसे देव, देवसे मनुष्य होयकर नवमे भव रामचंद्र भए, उसकी विगत पहिले भव धनदत्त १ दूजे भव पहले स्वर्ग देव २ तीजे भव पद्मरुचि सेठ ३ चौथे भव दूजे स्वर्ग देव ४ पांचवें भव नयनानंद राजा ५ छठे भव चौथे स्वर्ग देव ६ सातमें भव श्रीचंद्र राजा ७ आठवें भव पांचवें स्वर्ग इन्द्र-नवमें भव रामचंद्र ९ आगे मोक्ष यह तो रामके भव कहे अब हे लंकेश्वर! वसुदत्तादिकका वृत्तांत सुन--कर्मोंकी विचित्रगतिके योगकर मृणालकुण्ड नामा नगर तहां राजा विजयसेन राणी रत्नचूला उसके वज्रकंबु नामा पुत्र उसके हेमवती राणी उसके शंभु नामा पुत्र पृथ्वी में प्रसिद्ध सो यह श्रीकांतका जीव रावण होनहार सो पृथ्वीमें प्रसिद्ध अर वसुदत्तका जीव राजाका पुरोहित उसका नाम श्रीभूति सो लक्ष्मण होनहार, महा जिनधर्मी सम्यग्दृष्टि उसके स्त्री सरस्वती उसके वेदवती नामा पुत्री भई, सो गुणवतीका जीव सीता होनहार गुणवतीके भवसे पूर्व सम्यक्त विना अनेक तिर्यंच योनिविषै भ्रमणकर साधुवोंकी निंदाके दोषकर गंगाके तट मरकर हथिनी भई। एक दिन कीचमें फंसी पराधीन होय गया है शरीर जिसका नेत्र तिरमिराट अर मंद २ सांस लेय सो एक तरंगवेग नामा विद्याधर महादयावान उसने हथिनीके कानमें नमोकार मंत्र दिया सो नमोकार मंत्रके प्रभावकर मंद

कषाय भई अर विद्याधरने व्रत भी दिए सो जिनधर्मके प्रसादसे श्रीभूति पुरोहितके वेदवती पुत्री भई एक दिन मुनि आहारको आए सो यह हंसने लगी तब पिताने निवारी सो यह शांतचित्त होय श्राविका भई अर यह कन्या परमरूपवती सो अनेक राजावोंके पुत्र इसके परिणायवेको अभिलाषी भए अर यह राजा विजयसेनका पोता शंभू जो रावण होनहार है सो विशेष अनुरागी भया अर पुरोहित श्रीभूति महा जिनधर्मी सो उसने जो मिथ्यादृष्टि कुवेर समान धनवान होय तौहू मैं पुत्री न दूं यह मेरी प्रतिज्ञा है तब शंभुकुमारने रात्रिविषै पुरोहितको मारा सो पुरोहित जिनधर्मके प्रसादसे स्वर्ग लोकविषै देव भया अर शंभुकुमार पापी वेदवती साक्षात् देवी समान उसे न इच्छतीको बलात्कार परणवेको उद्यमी भया वेदवतीके सर्वथा अभिलाषा नहीं तब कामकर प्रज्वलित इस पापीने जोरावरी कन्याको आलिंगनकर मुख चुंब मैथुन किया तब कन्या विरक्त हृदय कांपे है शरीर जिसका अग्निकी शिखा समान प्रज्वलित अपने शील घातकर अर पिताके घातकर परम दुःखको धरती लाल नेत्र होय महा कोपकर कहती भई—अरे पापी। तैंने मेरे पिताको मार मो कुमारीसे बलात्कार विषयसेवन किया सो नीच। मैं तेरे नाशका कारण होऊंगी मेरा पिता तैंने मारा सो बड़ा अनर्थ किया मैं पिताका मनोरथ कभी भी न उलंघूं मिथ्यादृष्टि सेवनसे मरण भला ऐसा कह वेदवती श्रीभूति पुरोहितकी कन्या हरिकांता आर्याके समीप जाय आर्यिकाके व्रत लेय परम दुर्धर तप करती भई, केश लुंच किए महा तप कर रुधिर मांस सुकाय दिए प्रकट दीखै हैं अस्थि अर नसा जिसके, तपकर सुकाय दी है देह जिसने समाधि मरणकर पांचवें स्वर्ग गई पुण्यके उदयकर स्वर्गके सुख भोगे अर शंभु संसारविषै अनीतिके योगकर अति निन्दनीक भया कुटुम्ब सेवक अर धनसे रहित भया उन्मत्त होय गया जिनधर्म परांगमुख भया साधुवोंको देख हंसै निन्दा करै मद्य मांस शहतका आहारी पाप क्रियाविषै उद्यमी अशुभके उदयकर नरक तिर्यंचविषै महा दुःख भोगता भया।

अथानन्तर—कछु इक पापकर्मके उपशमसे कुशध्वज नामा ब्राह्मण ताके सावित्री नामा स्त्रीके प्रभासकुन्द नामा पुत्र भया सो दुर्लभ जिनधर्मका उपदेश पाय विचित्रमुनिके निकट मुनि भया काम क्रोध मद

कान्तिशोक ताकी स्त्री रत्नांगिनी ताके स्वप्रभ नामा पुत्र भया महासुन्दर जाको शुभ आचार भावै सो जिनधर्मविषै निपुण संयत नामा मुनि होय हजारों वर्ष विधिपूर्वक बहुत भांतिके महातप किए, निर्मल है मन जाका सो तपके प्रभावकर अनेक ऋद्धि उपजी तथापि अति निगर्व संयोग सम्बन्धविषै ममताको तज उपशम श्रेणी धार शुक्ल ध्यानके पहिले पाएके प्रभावतैं सर्वार्थसिद्धि गया सो तैंतीस सागर अहमिंद्र पदके सुख भोग राजा सूयरज ताके बालि नामा पुत्र भया, विद्याधरनिका अधिपति किहकन्धपुरका धनी जिसका भाई सुग्रीव महा गुणवान सो जब रावण चढ़ आया तब जीव दयाके अर्थ बालीने युद्ध न किया सुग्रीवको राज्य देय दिगम्बर भया सो जब कैलाशविषै तिष्ठे था अर रावण आय निकसा क्रोधकर कैलाशके उठायबेको उद्यमी भया सो बाली मुनि चैत्यालयोंकी भक्तिसे ढीलासों अंगुष्ठ दबाया सो रावण दबने लगा तब राणीने साधुकी स्तुति कर अभयदान दिवाया। रावण अपने स्थानक गया अर बाली महामुनि गुरुके निकट प्रायश्चित्तनामा तप लेय दोष निराकरण कर क्षपक श्रेणी चढ़ कर्म दग्ध किए लोकके शिखर सिद्धिक्षेत्र है वहां गए जीवका निज स्वभाव प्राप्त भया अर वसुदत्तके अर श्रीकान्तके गुणवतीके कारण महा बैर उपजा था सो अनेक जन्मोंमें दोनों परस्पर लड़ लड़ मरे अर गुणवतीसे तथा वेदवतीसे रावणके जीवके अभिलाषा उपजी थी उस कारण कर रावणने सीता हरी अर वेदवतीका पिता श्रीभूति सम्यक्दृष्टि उत्तम ब्राह्मण सो वेदवतीके अर्थ शत्रुने हता सो स्वर्ग जाय वहांसे चयकर प्रतिष्ठित नामा नगरविषै पुनर्वसु नाम विद्याधर भया सो निदानसहित तपकर तीजे स्वर्ग जाय रामका लघु भ्राता महा स्नेहवन्त लक्ष्मण भया अर पूर्वले वैरके योगसे रावणको मारा अर वेदवतीसे शंभुने विपर्यय करी तातैं सीता रावणके नाशका कारण भई जो जिसको हते सो उसकर हता जाय। तीन खण्डकी लक्ष्मी सोई भई रात्रि उसका चन्द्रमा रावण उसे हतकर लक्ष्मण सागरान्त पृथिवीका अधिपति भया रावणसा शूर वीर पराक्रमी या भांति मारा जाय यह कर्मोंका दोष है दुर्बलसे सबल होय सबलसे दुर्बल होय घातक है सो हता जाय अरहता होय सो घातक होय जाय। संसारके जीवोंकी यही गति है कर्मकी चेष्टा-

कर कभी स्वर्गके सुख पावें कभी नरकके दुःख पावें अर जैसे कोई महास्वादरूप परम अन्न उस विषै विष मिलाय दूषित करै तैसे मूढ़ जीव उग्र तपको भोगाभिलाषकर दूषित करे है जैसे कोई कल्पवृक्षको काटि कोईकी बाड़ि करै अर विषके वृक्षको अमृतरस कर सींचे अर भस्मके निमित्त रत्नोंकी राशिको जलावे अर कोयलोंके निमित्त मलयागिरि चन्दनको दग्ध करै तैसे निदान बन्धकर तपको यह अज्ञानी दूषित करें या संसारविषै सर्व दोषकी खान स्त्री है तिसके अर्थ क्या कुकर्म अज्ञानी न करें। जो या जीवने कर्म उपार्जे हैं सो अवश्य फल देय हैं कोऊ अन्यथा करबे समर्थ नहीं. जे धर्मविषै प्रीति करैं बहुरि अधर्म उपार्जे वे कुगतिको प्राप्त होय हैं तिनकी मूल कहा कहिए? जे साधु होयकर मदमत्सर धरे हैं तिनको उग्रतप कर मुक्ति नहीं अर जिसके शांति भाव नहीं संयम नहीं तप नहीं उस दुर्जन मिथ्यादृष्टिके संसार सागरके तिरबेका उपाए कहां अर जैसे असराल पवनकर मदोन्मत्त गजेन्द्र उड़े तो सुसाके उड़बेका कहा आश्चर्य तैसे संसारकी झूठो मायाविषै चक्रवर्त्यादिक बड़े पुरुष भूले तो छोटे मनुष्यनिकी क्या बात इस जगतविषै परम दुःखका कारण वैर भाव है सो विवेकी न करैं आत्मकल्याणकी है भावना जिनके पापकी करणहारी वाणी कदापि न बोलें। गुणवतीके भवविषै मुनिका अपवाद किया था अर वेदवतीके भवमें एक मंडलका नामा ग्राम वहां सुदर्शननामा मुनि वनमें आए लोक वन्दना कर पीछे गये अर मुनिकी बहिन सुदर्शना नामा आर्यिका सो मुनिके निकट बैठी धर्म श्रवण करे थी सो वेदवतीने देखकर ग्रामके लोकोंके निकट मुनिकी निंदा करी कि मैं मुनिको अकेला स्त्रीके समीप बैठा देखा तब कैयकोंने बात मानी अर कैयक बुद्धिवन्तोंने न मानी परन्तु ग्राममें मुनिका अपवाद भया, तब मुनिने नियम किया कि यह झूठा अपवाद दूर होय तो आहारको उतरना तब नगरके देवताने वेदवतीके मुखकर समस्त ग्रामके लोकोंको कहाई कि मैंने झूठा अपवाद किया। यह बहिन भाई हैं अर मुनिके निकट जाय वेदवतीने क्षमा कराई कि हे प्रभो। मैं पापिनीने मिथ्या वचन कहे सो क्षमा करो या भांति मुनिकी निंदाकर सीताका झूठा अपवाद भया, अर मुनिसे क्षमा कराई उसकर अपवाद दूर भया तातैं जे जिनमार्गी हैं वे कभी भी परनिंदा न करें

किसीमें सांचा भी दोष है तौहू ज्ञानी न कहें अर कोऊ कहता होय उसे मने करें सर्वथा प्रकार पराया दोष ढांकें जे कोई परनिंदा करे हैं सो अनन्त काल संसार वनविषै दुःख भोगवे हैं सम्यक्दर्शनरूप जो रत्न उसका बड़ा गुण यही है जो पराया अवगुण सर्वथा ढांके जो सांचा भी दोष पराया कहे सो अपराधी है अर जो अज्ञानसे मत्सर भावसे पराया झूठा दोष प्रकाशे उस समान और पापी नहीं अपने दोष गुरुके निकट प्रकाशने अर पराए दोष सर्वथा ढांकने जो पराई निंदा करे सो जिन मार्गसे पराङ्मुख है। यह केवलीके परम अद्भुत वचन सुनकर सुर असुर नर सबही आनन्दको प्राप्त भए वैरभावके दोष सुन सब सभाके लोग महादुःखके भयकर कम्पायमान भए मुनि तो सर्व जीवनिसे निर्वैर हैं अधिक शुद्ध भाव धारते भए अर चतुर्निकायके सबही देव क्षमाकूं प्राप्त होय वैरभाव तजते भए अर अनेक राजा प्रतिबुद्ध होय शांति भाव धार गर्वका भार तज मुनि अर श्रावक भए अर जे मिथ्यावादी थे वह हू सम्यक्तकूं प्राप्त भए सबही कर्मनिकी विचित्रता जान निश्वास नाषते भए। धिक्कार या जगत्की मायाको या भांति सब ही कहते भए अर हाथ जोड़ सीस नवाय केवलीको प्रणामकर सुर असुर मनुष्य विभीषणकी प्रशंसा करते भए जो तिहारे आश्रयसे हमने केवलीके मुख उत्तम पुरुषनिके चारित्र सुने तुम धन्य हो बहुरि देवेंद्र नरेंद्र नागेंद्र सबही आनन्दके भरे अपने परिवार वर्ग सहित सर्वज्ञ देवकी स्तुति करते भए। हे भगवान पुरुषोत्तम! यह त्रैलोक्य सकल तुमकर शोभे हैं तातैं तिहारा सकलभूषण नाम सत्यार्थ है तिहारी केवल दर्शन केवल ज्ञानमई निजविभूति सर्व जगतकी विभूतिको जीतकर शोभे हैं यह अनन्त चतुष्टय लक्ष्मी सर्व लोकका तिलक है, यह जगत्के जीव अनादि कालके कर्म वश होय रहे हैं महादुःखके सागरमें पड़े हैं तुम दीननिके नाथ दीनबन्धु करुणानिधान! जीवनिको जिनराज पद देहु। हे केवलिन्! हम भव वनके मृग जन्म जरा मरण रोग शोक वियोग व्याधि अनेक प्रकारके दुःख भोक्ता अशुभ कर्मरूप जालविषै पड़े हैं तातैं छूटना कठिन है सो तुमही छुड़ाइवे समर्थ हो हमको निज बोध देवो जाकर कर्मका क्षय होय। हे नाथ! यह विषय वासनारूप गहन वन तामें हम निजपुरीका मार्ग भूल रहे हैं सो तुम जगत्के दीपक हमको शिव-

पुरीका पंथ दरसावो अर जे आतमबोधरूप शांत रसके तिसाये तिनको तुम तृषाके हरणहारे महासरोवर हो अर कर्म भर्मरूप वनके भस्म करिवेको साक्षात् दावानलरूप हो अर जे विकल्प जाल नाना प्रकारके तेई भए वरफ ताकर कंपायमान जगत्के जीव तिनकी शीत व्यथा हरिवेको तुम साक्षात् सूर्य हो। हे सर्वेश्वर! सर्व भूतेश्वर जिनेश्वर! तिहारी स्तुति करिवेको चारज्ञानके धारक गणधरदेवहू समर्थ नाहीं तो अर कौन है प्रभो! तुमको हम वारम्वार नमस्कार करे हैं॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषा वचनिकाविषै लक्ष्मण विभीषण सुग्रीव सीता भामण्डलके भव वर्णन करनेवाला एकसौ छवा पर्व पूर्ण भया॥ १०६॥

अथानन्तर—केवलीके वचन सुन संसार भ्रमणका जो महादुःख ताकर खेदखिन्न होय जिनदीक्षाकी है अभिलाषा जाके ऐसा रामका सेनापति कृतान्तवक्र रामसूं कहता भया—हे देव! मैं या संसार असार-विषै अनादि कालका मिथ्या मार्गकर भ्रमता हुआ दुःखित भया अब मेरे मुनिव्रत धरिवेको इच्छा है, तब श्रीराम कहते भए जिनदीक्षा अति दुर्धर है तू जगतका स्नेह तज कैसे धारैगो महातीव्र शीत उष्ण आदि वाईस परिषह कैसे सहेगा अर दुर्जन जनोंके दुष्टवचन कंटक तुल्य कैसे सहेगा अर अवतक तैंने कभी भी दुःख सहे नहीं कमलकी कर्णिका समान शरीर तेरा सो कैसे विषमभूमिके दुःख सहेगा, गहन वनविषै कैसे रात्रि पूरी करेगा अर प्रकट दृष्टि पड़े हैं शरीरके हाड़ अर नसा जाल जहां ऐसे उग्र तप कैसे करेगा अर पक्ष मास उपवासकर दोष टाल पर घर नीरस भोजन कैसे करेगा? तू महा तेजस्वी शत्रुओंकी सेनाके शब्द न सहि सकै सो कैसे नीच लोकोंके किये उपसर्ग सहेगा? तब कृतांतवक्र बोला हे देव। जब मैं तिहारे स्नेहरूप अमृतको ही तजवेकों समर्थ भया तो मुझे कहा विषम है जब तक मृत्यु रूप वज्रकर यह देहरूप स्तम्भ न चिगे ता पहिले मैं महादुःखरूप यह भव वन अन्धकारमई वासे निकसा चाहूहूं जो वलतें घरमेंसे निकसे उसे दयावान न रोकै यह संसार असार महानिंद्य है इसे तजकर आतमहित करूं। अवश्य इष्टका वियोग होयगा या शरीरके योगकर सर्व दुःख हैं सो हमारे शरीर वहुरि उदय न आवें या

उपायविषैं बुद्धि उद्यमी भई है। ये वचन कृतान्तवक्रके सुन श्रीरामके आंसू आए अर नीठे नीठे मोहको दाव कहते भए—मेरीसी विभूतिको तज तू तपको सन्मुख भया है सो धन्य है जो कदाचित् या जन्म-विषै मोक्ष न होय अर देव होय तो संकटविषै आय मोहि संबोधियो। हे मित्र! जो तू मेरा उपकार जाने है तो देवगतिमें विस्मरण मत करियो। तब कृतान्तवक्रने नमस्कारकर कही हे देव! जो आप आज्ञा करोगे सोही होयगा ऐसा कह सर्व आभूषण उतारे अर सकलभूषण केवलीको प्रणामकर अन्तर वाहिरके परिग्रह तजे कृतान्तवक्र था सो सौम्यवक्र होय गया। सुन्दर है चेष्टा जिसकी, इसको आदि दे अनेक महाराजा वैरागी भए उपजी है जिनधर्मकी रुचि जिनके निर्ग्रंथव्रत धारते भए अर केयक श्रावक व्रतको प्राप्त भए अर केयक सम्यक्तको धारते भए वह सभा हर्षित होय रत्नत्रय आभूषणकर शोभित भई। समस्त सुर असुर नर सकलभूषण स्वामीको नमस्कारकर अपने अपने स्थानक गए अर कमल समान हैं नेत्र जिनके, ऐसे श्रीराम सकलभूषण स्वामीको अर समस्त साधुवोंको प्रणामकर महा विनयरूपी सीताके समीप आए। कैसी है सीता? महा निर्मल तपकर तेज धरे जैसी घृतकी आहुतिकर अग्निकी शिखा प्रज्वलित होय तैसी पापोंके भस्म करिवेको साक्षात् अग्निरूप तिष्ठी है आर्यिकावोंके मध्य तिष्ठती देखी देदीप्यमान है किरणोंका समूह जिसके, मानों अपूर्व चन्द्रकांति तारावोंके मध्य तिष्ठती है, आर्यिकावोंके व्रत धरे अत्यंत निश्चल है। तजे हैं आभूषण जिसने तथापि श्री ह्री धृति कीर्ति बुद्धि लक्ष्मी लज्जा इनकी शिरोमणि सोहै है श्वेत वस्त्रको धरे कैसी सोहै है मानों मन्द पवनकर चलायमान हैं फेन कहिए झाग जिसके ऐसी पवित्र नदी ही है अर मानों निर्मल शरद पूनोंकी चांदनी समान शोभाको धरे समस्त आर्यिकारूप कुमुदनियोंको प्रफुल्लित करणहारी भासे है महा वैराग्यको धरे मूर्तिवंती जिनशासनकी देवता ही है सो ऐसी सीताको देख आश्चर्यको प्राप्त भया है मन जिनका ऐसे श्रीराम कल्पवृक्ष समान क्षण एक निश्चल होय रहे स्थिर हैं नेत्र भ्रकुटी जिनकी जैसे शरदकी मेघमालाके समीप कंचनगिरि सोहै तैसे श्रीराम आर्यिकावोंके समीप भासते भए, श्रीराम चित्तविषै चिंतवते हैं यह साक्षात् चन्द्रकिरण भव्य जन कुमुदनीको

प्रफुल्लित करणहारी सोहै है बड़ा आश्चर्य है यह कायर स्वभाव मेघके शब्दसे डरती सो अब महा तपस्विनी भयङ्कर वनविषै कैसे भयको न प्राप्त होयगी ? नितंबहीके भारसे आलस्यरूप गमन करणहारी महा कोमलशरीर तपसे विलाय जायगी। कहां यह कोमल शरीर अर कहां यह दुधर जिनराजका तप ? सो अति कठिन है जो दाह बड़े २ वृक्षोंको दाहे उसकर कमलिनीकी कहा बात ? यह सदा मनवांछित मनोहर आहारकी करणहारी अब कैसे यथालाभ भिक्षा कर कालक्षेप करेगी ? यह पुण्याधिकरिणी रात्रिविषै स्वर्गके विमान समान सुन्दर महलमें मनोहर सेजपर पौढ़ती अर वीण बांसुरी मृदंगादि शब्दकर निद्रा लेती सो अब भयकर वनविषै कैसे रात्रि पूर्ण करेगी वन तो डाभकी तीक्ष्ण अणियोंकर विषम अर सिंह व्याघ्रादिके शब्दकर डरावना, देखो मेरी भूल जो मूढ़ लोकोंके अपवादसे मैं महासती पतिव्रता शीलवंती सुन्दरी मधुरभाषिणी घरसे निकासी। इस भांति चिंताके भारकर पीड़ित श्रीराम पवनकर कंपायमान कमल समान कंपायमान होते भए फिर केवलीके वचन चितार धीर्य धर आंसू पोंछ शोकरहित होय महा विनय कर सीताको नमस्कार किया, लक्ष्मण भी सौम्य है चित्त जिसका हाथ जोड़ नमस्कारकर राम सहित स्तुति करता भया—हे भगवति। धन्य तू सती बंदनीक है सुन्दर है चेष्टा जिसकी जैसे धरा सुमेरुको धारे तैसे तू जिनराजका धर्म धारे है तैंने जिनवचनरूप अमृत पीया उसकर भव रोग निवारेगी सम्यक्त ज्ञानरूप जहाजकर संसार समुद्रको तिरेगी। जे पतिव्रता निर्मल चित्तकी धरणहारी हैं तिनकी यही गति है अपना आत्मा सुधारें अर दोनों लोक अर दोनों कुल सुधारें पवित्र चित्तकर ऐसी क्रिया आदरी। हे उत्तम नियमकी धरणहारी हम जो कोई अपराध किया होय सो क्षमा करियो संसारी जीवोंके भाव अविवेकरूप होय हैं सो तू जिनमार्गविषै प्रवरती संसारकी माया अनित्य जानी अर परम आनंद रूप यह दशा जीवोंको दुर्लभ है इस भांति दोनों भाई जानकीकी स्तुतिकर लव अंकुशको आगे धरे अनेक विद्याधर महीपाल तिन सहित अयोध्यामें प्रवेश करते भए जैसे देवों सहित इन्द्र अमरावतीमें प्रवेश करे अर समस्त राणी नाना प्रकारके वाहनोंपर चढ़ी परिवारसहित नगरमें प्रवेश करती भई सो रामको नगरमें प्रवेश करता देख

मांदर ऊपर बैठी स्त्री परस्पर वार्ता करै हैं यह श्रीरामचन्द्र महा शूरवीर शुद्ध है अन्तःकरण जिनका महा विवेकी मूढ़ लोकोंके अपवादसे ऐसी पतिव्रता नारी खोई तब कैयक कहती भईं जे निर्मल कुलके जन्मे शूरवीर क्षत्री हैं तिनकी यही रीति है किसी प्रकार कुलको कलंक न लगावें लोकोंके संदेह दूर करिवे निमित्त रामने उसको दिव्य दई वह निर्मल आत्मा दिव्यमें सांची होय लोकोंके संदेह मेट जिन दीक्षा धारती भई अर कोई कहै—हे सखि ! जानकी विना राम कैसे दीखै हैं जैसे विना चांदनी चांद अर दीप्ति विना सूर्य तब कोई कहती भई यह आप ही महाकांतिधारी हैं इनकी कांति पराधीन नहीं अर कोई कहती भई सीताका वज्रचित्त है जो ऐसे पुरुषोत्तम पतिको छोड़ जिन दीक्षा धारी तब कोई कहती भई धन्य है सीता जो अनर्थरूप गृहवासको तज आत्मकल्याण किया अर कोई कहती भई ऐसे सुकुमार दोनों कुमार महा धीर लव अंकुश कैसे तजे गए स्त्रीका प्रेम पतिसे छूटे परन्तु अपने जाए पुत्रोंसे न छूटे तब कोई कहती भई ये दोनों पुत्र परम प्रतापी हैं इनका माता क्या करेगी इनका सहाई पुण्य ही है अर सबही जीव अपने अपने कर्मके आधीन हैं इस भांति नगरकी नारी वचनालाप करै हैं जानकीकी कथा कौनको आनंद-कारिणी न होय अर यह सबही रामके दर्शनकी अभिलाषिनी रामको देखती देखती तृप्त न भईं जैसे भ्रमर कमलके मकरन्दसे तृप्त न होय अर कैयक लक्ष्मणकी ओर देख कहती भईं ये नरोत्तम नारायण लक्ष्मी-वान अपने प्रतापकर वश करी है पृथ्वी जिन्होंने चक्रके धारक उत्तम राज्य लक्ष्मीके स्वामी वैरियोंकी स्त्रियोंको विधवा करणहारे रामके आज्ञाकारी हैं इस भांति दोनों भाई लोककर प्रशंसा योग्य अपने मंदिरमें प्रवेश करते भए जैसे देवेंद्र देवलोकमें प्रवेश करें। यह श्रीरामका चरित्र जो निरन्तर धारण करे सो अवि-नाशी लक्ष्मीको पावै ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषावचनिकाविषे कृतान्तवक्रके वैराग्य वर्णन करनेवाला एकसौ सातवां पर्व पूर्ण भया ॥१०७॥

अथानन्तर—राजा श्रेणिक गौतम स्वामीके मुख श्रीरामका चरित्र सुन मनविषै विचारता भया कि सीताने लव अंकुश पुत्रोंसे मोह तजा सो वह सुकुमार मृगनेत्र निरन्तर सुखके भोक्ता कैसे माताका वि-

योग सह सके ? ऐसे पराक्रमके धारक उदारचित्त तिनको भी इष्ट वियोग अनिष्ट संयोग होय है तो औरोंकी कहा बात ? यह विचार कर गणधर देवसे पूछा, हे प्रभो ! मैं तिहारे प्रसादकर राम लक्ष्मणका चरित्र सुना अब बाकी लव अंकुशका सुना चाहूं हूं तब इन्द्रभूति कहिए गौतम स्वामी कहते भये—हे राजन् ! काकन्दी नाम नगरी उसमें राजा रतिवर्द्धन राणी सुदर्शना ताके पुत्र दोय एक प्रियंकर दूजा हितंकर अर मन्त्री सर्वगुप्त राज्यलक्ष्मीका धुरंधर सो स्वामीद्रोही राजाके मारवेका उपाय चिंतवे अर सर्वगुप्तकी स्त्री विजयावती सो पापिनी राजासे भोग किया चाहे अर राजा शीलवान परदारापराङ्मुख याकी मायाविषै न आया, तब याने राजासे कही—मन्त्री तुमको मारा चाहे है सो राजाने याकी बात न मानी तब यह पतिको भरमावती भई जो राजा तोहि मार मोहि लिया चाहे है तब मन्त्री दुष्टने सब सामन्त राजासे फोरे अर राजाका जो सोवनेका महल तहां रात्रिको अग्नि लगाई सो राजा सदा सावधान हुता अर महलविषै गोप सुरङ्ग रखाई थी सो सुरंगके मार्ग होय दोनों पुत्र अर स्त्रीको लेय राजा निकसा सो काशीका धनी राजा कश्यप महान्यायवान उग्रवंशी राजा रतिवर्धनका सेवक था उसके नगरको राजा गोप्य चला अर सर्वगुप्त रतिवर्धनके सिंहासनपर बैठा सबको आज्ञाकारी किए अर राजा कश्यपको भी पत्र लिख दूत पठाया कि तुम भी आय मोहि प्रणामकर सेवा करो, तब कश्यपने कही हे दूत ! सर्वगुप्त स्वामीद्रोही है सो दुर्गतिके दुःख भोगेगा, स्वामीद्रोहीका नाम न लीजे मुख न देखिये सो सेवा कैसे कीजे ? उसने राजाको दोनों पुत्र अर स्त्री सहित जलाया सो स्वामीघात स्त्रीघात अर बालघात यह महादोष उसने उपार्जे तातैं ऐसे पापीका सेवन कैसे करिये ? जाका मुख न देखना सो सर्व लोकोंके देखते उसका सिरकाट धनीका वैर लूंगा, तब यह वचन कह दूत फेर दिया दूतने जाय सर्वगुप्तको सर्व वृतांत कहा, सो अनेक राजावोंकर युक्त महासेनासहित कश्यप ऊपर आया सो आयकर कश्यपका देश घेरा काशीके चौगिर्द सेना पड़ी तथापि कश्यपके सुलहकी इच्छा नहीं, युद्धहीका निश्चय, अर राजा रतिवर्धन रात्रिके विषै काशीके वनविषै आया अर एक द्वारपाल तरुण कश्यपपर भेजा सो जाय कश्यपसे राजाके आवनेका वृत्तांत

कहता भया सो कश्यप अतिप्रसन्न भया अर कहां महाराज कहां महाराज ऐसे वचन वारम्वार कहता भया तब द्वारपालने कहा, महाराज वनविषै तिष्ठे हैं तब यह धर्मी स्वामिभक्त अतिहर्षित होय परिवार सहित राजापै गया अर उसकी आरती करी अर पांव पड़कर जय जयकार करता नगरमें लाया नगर उछाला अर यह ध्वनि नगरविषै विस्तरी कि जो काहूसे न जीता जाय ऐसा रतिवर्धन राजेंद्र जयवन्त होवो। राजा कश्यपने धनीके आवनेका अति उत्सव किया अर सब सेनाके सामन्तनिको कहाय भेजा जो स्वामी तो विद्यमान तिष्ठे हैं अर तुम स्वामीद्रोहीके साथ होय स्वामीसे लड़ोगे, कहा यह तुमको उचित है ? तब वह सकल सामन्त सर्वगुप्तको छोड़ स्वामीपै आए अर युद्धविषै सर्वगुप्तको जीवता पकड़ काकंदी नगरीका राज्य रतिवर्धनके हाथविषै आया राजा जीवता बचा सो बहुरि जन्मोत्सव किया। महा दान किए सामन्तोंके सन्मान किए भगवान्की विशेष पूजा करी कश्यपका बहुत सन्मान किया अति बधाया अर घरको विदा किया सो कश्यप काशीके विषै लोकपालनिकी नाईं रमें अर सर्वगुप्त सर्वलोकनिद्य मृतकके तुल्य भया कोई भीटे नाहीं मुख देखे नाहीं, तब सर्वगुप्तने अपनी स्त्री विजयावतीका दोष सर्वत्र प्रकाशा जो याने राजा बीच अर मो बीच अन्तर डाला यह वृतान्त सुन विजयावती अति द्वेषको प्राप्त भई जो मैं न राजाकी भई न धनीकी भई सो मिथ्या तपकर राक्षसी भई, अर राजा रतिवर्धनने भोगनितैं उदास होय सुभानुस्वामीके निकट मुनिव्रत धरे सो राक्षसीने रतिवर्धन मुनिको अति उपसर्ग किए। मुनि शुद्धोपयोगके प्रसादतैं केवली भए अर प्रियंकर हितंकर दोनों कुमार पहिले याही नगरविषै दामदेव नामा विप्रके श्यामली स्त्रीके सुदेव वसुदेव नामा पुत्र हुते। सो वसुदेवकी स्त्री विश्वा अर सुदेवकी स्त्री प्रियंगु इनका गृहस्थ पद प्रशंसा योग्य हुता इन श्रीतिलक नाम मुनिको आहारदान दिया सो दानके प्रभावकर दोनों भाई स्त्रीसहित उत्तरकुरु भोगभूमिविषै उपजे तीन पल्यका आयु भया, साधुका जो दान सोई भया वृक्ष उसके महाफल भोगभूमिविषै भोग दूजे स्वर्ग देव भये वहां सुख भोग चये सो सम्यग्ज्ञानरूप लक्ष्मी-कर मंडित पाप कर्मके क्षय करणहारे प्रियंकर हितंकर भये, मुनि होय ग्रैवेयक गये तहांसे चयकर लवणां-

कुश भये महा भव्य तद्भव मोक्षगामी अर राजा रतिवर्धनकी राणी सुदर्शना प्रियंकर हितंकरकी माता पुत्रनिमें जाका अत्यन्त अनुराग था सो भरतार अर पुत्रनिके वियोगसे अत्यन्त आर्तिरूप होय नाना योनिनिमें भ्रमणकर किसी एक जन्मविषै पुण्य उपार्ज यह सिद्धार्थ भया धर्मविषै अनुरागी सर्व विद्याविषै निपुण सो पूर्व भवके स्नेहसे लवणअंकुशको पढ़ाये ऐसे निपुण किये जो देवनि कर भी न जीते जायं यह कथा गौतमस्वामीने राजा श्रेणिकसे कही अर आज्ञाकारी हे नृप! यह संसार असार है अर इस जीवके कौन कौन माता पिता न भये जगत्के सबही संबंध झूठे हैं एक धर्महीका सम्बन्ध सत्य है इसलिये विवेकियोंको धर्महीका यत्न करना जिसकर संसारके दुःखोंसे छूटे समस्त कर्म महानिंद्य दुःखको वृद्धिके कारण तिनको तजकर जैनका भाषा तपकर अनेक सूर्यकी कांतिको जीत साधु शिवपुर कहिये मुक्ति तहां जाय हैं ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषावचनिकाविषै लवणांकुशके पूर्वभवका वर्णन करनेवाला एकसौ आठवां पर्व पूर्ण भया ॥१०८॥

अथानन्तर—सीता पति अर पुत्रोंको तजकर कहां कहां तप करती भई सो सुनो—कैसी है सीता? लोकविषै प्रसिद्ध है यश जिसका। जिस समय सीता भई वह श्रीमुनि सुव्रतनाथजीका समय था। ते बीसवें भगवान् महाशोभायमान भवभ्रमके निवारणहारे जैसा अरहनाथ अर मल्लिनाथका समय तैसा मुनिसुव्रतनाथका समय उसमें श्रीसकलभूषण केवली केवल ज्ञानकर लोकालोकके ज्ञाता विहार करे हैं अनेक जीव महाव्रती अणुव्रती किए सकल अयोध्याके लोक जिनधर्मविषै निपुण विधिपूर्वक गृहस्थका धर्म आराधे सकल प्रजा भगवान् सकलभूषणके वचनविषै श्रद्धावान जैसे चक्रवर्तीकी आज्ञाको पालें तैसे भगवान् धर्मचक्री तिनकी आज्ञा भव्य जीव पाले, रामका राज्य महाधर्मका उद्योतरूप जिस समय घने लोक विवेकी साधुसेवाविषै तत्पर। देखो जो सीता अपनी मनोग्यता कर देवांगनानिकी शोभाको जीतती हुती सो तपकर ऐसी होय गई मानों दग्ध भई माधुरीलता ही है महावैराग्य कर मण्डित अशुभ भावकर रहित स्त्री पर्यायको अतिनिंदती महातप करती भई धूरकर धूसर होय रहे हैं केश जिसके अर स्नानरहित शरीरके संस्काररहित पसेव कर युक्त गात्र जिसमें रज आय पड़े सो शरीर मलिन होय रहा है बेला तेला पक्ष

उपवास अनेक उपवास कर तनु क्षीण किया दोष टारि शास्त्रोक्त पारणा करे शील व्रत गुणनिविषै अनुरागिणी आध्यात्मके विचार कर अत्यन्त शान्त होय गया है चित्त जाका वश किये हैं इन्द्रिय जाने और-नितैं न वने ऐसा उग्र तप करती भई मांस अर रुधिर कर वर्जित भया है सर्व अंग जाका प्रकट नजर आवे है अस्थि अर नसा जाल जाके मानों काठकी पुतली हो है सूको नदी समान भासती भई बैठ गये हैं कपोल जाके जूड़ा प्रमाण धरती देखती चले महा दयावंती सौम्य है दृष्टि जाकी तपका कारण देह उसके समाधानके अर्थ विधिपूर्वक भिक्षा वृत्ति कर आहार करै। ऐसा तप किया कि शरीर और ही होय गया अपना पराया कोई न जाने जो यह सीता है इसे ऐसा तप करती देख सकल आर्या इसहीकी कथा करैं इसहीकी रीति देख और हू आदरैं सवनिविषै मुख्य भई इस भांति वासठ वर्ष महा तप किये अर तैंतीस दिन आयुके बाकी रहे तब अनशन व्रत धार परम आसाधना आराध जैसे पुष्पादिक उच्छिष्ट साथ-रेको तजिये तैसे शरीरको तजकर अच्युतस्वर्गविषै प्रतीन्द्र भई।

गौतम स्वामी कहे हैं, हे श्रेणिक। जिनधर्मका माहात्म्य देखो जो यह प्राणी स्त्री पर्यायविषै उपजी हुती सो तपके प्रभावकर देवोंका प्रभु होय। सीता अच्युत स्वर्गविषै प्रतींद्र भई वहां मणिनिकी कांतिकर उद्योत किया है आकाशविषै जाने ऐसे विमानविषै उपजी विमान मणि कांचनादि महाद्रव्यनिकर मंडित विचित्रता धरे परम अद्भुत सुमेरुके शिखर समान ऊंचा है वहां परम ईश्वरताकर सम्पन्न प्रतेंद्र भया। हजारों देवांगना तिनके नेत्रोंका आश्रय जैसा तारावोंकर मंडित चन्द्रमा सोहै तैसा सोहता भया अर भगवानकी पूजा करता भया, मध्यलोकमें आय तीर्थोंकी यात्रा साधुवोंकी सेवा करता भया अर तीर्थंकरोंके समोसरणमें गणधरोंके मुखसे धर्म श्रवण करता भया, यह कथा सुन गौतमस्वामीसे राजा श्रेणिकने पूछा—हे प्रभो। सीताका जीव सोलवें स्वर्ग प्रतंद्र भया उस समय वहां इन्द्र कौन था? तब गौतमस्वामीने कहा उस समय वहां राजा मधुका जीव इन्द्र था। उसके निकट यह प्रतेंद्र भया सो वह मधुका जीव नेमिनाथ स्वामीके समय अच्युतेन्द्रपदसे चयकर वासुदेवकी रुक्मणी राणी ताके प्रद्युम्न पुत्र भया अर

उसका भाई कैटभ जाम्बुवतीके शंभु नाम पुत्र भया, तब श्रेणिकने गौतम स्वामीसे विनती करी हे प्रभो ! मैं तुम्हारे वचनरूप अमृत पीवता पीवता तृप्त नाहीं जैसे लोभी जीव धनसे तृप्त नाहीं इसलिये मुझे मधुका अर उसके भाई कैटभका चरित्र कहो। तब गणधर कहते भये—एक मगध नामा देश सर्व धान्यकर पूर्ण जहां चारों वर्ण हर्षसे वसैं धर्म अर्थ काम मोक्षके साधक अनेक पुरुष पाइये अर भगवानके सुन्दर चैत्यालय अर अनेक नगर ग्राम तिनकर वह देश शोभित जहां नदियोंके तट गिरियोंके शिखर वनमें ठौर ठौर साधुवोंके संघ विराजे हैं राजा नित्योदित राज्य करै उस देशमें एक शालि नाम ग्राम नगर सारिखा शोभित वहां एक ब्राह्मण सोमदेव उसके स्त्री अग्निला पुत्र अग्निभूत वायुभूत सो वे दोनों भाई लौकिक शास्त्रमें प्रवीण अर पठन पाठन दान प्रतिग्रहमें निपुण अर कुलके तथा विद्याके गर्वकर गर्वित मनविषै ऐसा जानें, हमसे अधिक कोई नहीं जिनधर्मतैं परांमुख रोग समान इन्द्रीनिके भोग तिनहीको भले जानैं। एक दिन स्वामी नन्दोवर्धन अनेक मुनिनिसहित वनविषै आय विराजे, वड़े आचार्य अवधिज्ञान कर समस्त मूर्तिक पदार्थनिको जानैं सो मुनिनिका आगमन सुन ग्रामके लोक सब दर्शनको आए हुते अर अग्निभूत वायुभूतने काहूसे पूछा जो यह लोक कहां जाय हैं ? तब वाने कहा नन्दीवर्धन मुनि आये हैं तिनके दर्शनकूं जाय हैं। तब सुनकर दोऊ भाई क्रोधायमान भये जो हम वादकर साधुनिको जीतेंगे तब इनकूं माता पिताने मने किया जो तुम साधुनितैं वाद न करो तथापि इन्होंने न मानी वादको गए तब इनको आचार्यके निकट जाते देख एक सात्विक नामा मुनि अवधिज्ञानी इनको पूछते भए—तुम कहां जावो हो ? तब इन्होंने कही तुमविषै श्रेष्ठ तुम्हारा गुरु है, उसको वादकर जीतवे जाय हैं, तब सात्विक मुनिने कही हमसे चर्चा करो। तब यह क्रोधकर मुनिके समीप बैठे अर कही तू कहांते आया है तब मुनिने कहा तुम कहांतैं आए ? तब वह क्रोधकर कहते भए यह तैंने कहा पूछा ? हम ग्रामतैं आए हैं। कोई शास्त्रकी चर्चा करहु। तब मुनिने कही यह तो हम जाने हैं तुम शालिग्रामसे आए हो अर तिहारे बापका नाम सोमदेव माताका नाम अग्निला अर तिहारे नाम अग्निभूत वायुभूत तुम विप्रकुल हो सो यह तो प्रकट

है परंतु हम तुमसे यह पूछे हैं अनादिकालके भव वनविषै भ्रमण करो हो सो या जन्मविषै कौन जन्मसे आए हो ? तव इनने कही यह जन्मांतरकी वात हम कों पूछो सो और कोई जाने है ? तव मुनिने कही हम जाने हैं तुम सुनो--पूर्वभवविषै तुम दोऊ भाई या ग्रामके वनविषै परस्पर स्नेहके धारक स्याल हुते विरूपमुख अर याही ग्रामविषै एक वहुत दिनका वासी पामर नामा पितहड व्राह्मण सो वह खेतविषै सूर्य अस्त समय क्षुधाकर पीड़ित नाड़ी आदि उपकरण तजकर आया अर अंजनगिरि तुल्यमेघ माला उठी, सात अहोरात्रका झड़ भया,सो पामर तो घरसे आय न सका अर वे दोऊ स्याल अति क्षुधातुर अंधेरी रात्रिविषै आहारको निकसे सो पामरके खेतविषै भीजी नाड़ी कर्दमकर लिप्त पड़ी हुती सो उन भक्षण करी उसकर विकराल उदर वेदना उपजी स्याल मूवे,अकाम निर्जराकर तुम सोमदेवके पुत्र भए अर वह पामर सात दिन पीछे खेतमें आया सो दोऊ स्याल मूए देख अर नाडी कटी देख स्यालनिका चर्म ले भाथड़ी करी सो अव तक पामरके घरविषै टंगी है अर पामर मरकर पुत्रके घर पुत्र भया सो जातिस्मरण होय मौन पकड़ा जो मैं कहा कहों, पिता तो मेरा पूर्व भवका पुत्र अर माता पूर्व भवके पुत्रकी वधू तातें न वोलना ही भला सो यह पामरका जीव मौनी यहांही वैठा है ऐसा कह मुनि पामरके जीवसूं वोले-अहो तू पुत्रके पुत्र भया सो यह आश्चर्य नहीं, संसारका ऐसा ही चरित्र है जैसे नृत्यके अखाड़ेमें वहुरूपिया अनेक रूप वनाय नाचै तैसे यह जीव नाना पर्यायरूप भेष धर नाचै है, राजातैं रंक होय रंकसे राजा होय, स्वामीसे सेवक, सेवकसे स्वामी, पितासे पुत्र, पुत्रसे पिता, मातासे भार्या, भार्यासे माता, यह संसार अरहटकी घड़ी है। ऊपरली नीची निचली ऊपर, ऐसा संसारका स्वरूप जान, हे वत्स ! अव तू गूंगापना तज, वचनालाप कर। या जन्मका पिता है तासे पिता कह, मातासे माता कह,पूर्व भवका कहा व्यवहार रहा ? यह वचन सुन वह विप्र हर्षकर रोमांच होय फूल गए हैं नेत्र जाके मुनिको तीन प्रदक्षिणा देय नमस्कारकर जैसे वृक्षकी जड़ उखड़ जाय अर गिर पडे तैसे पायन पड़ा अर मुनिको कहता भया—हे प्रभो ! तुम सर्वज्ञ हो सकल लोककी व्यवस्था जानो हो, या भयानक संसार सागरविषै मैं डूबूं था सो तुमने दयाकर निकासा, आत्मवोध दिया। मेरे मनकी सव जानी अव मोहि दीक्षा देवहु ऐसा कहकर समस्त कुटुम्वका त्यागकर मुनि भया।

यह पामरका चरित्र सुन अनेक लोक मुनि भए अनेक श्रावक भए अर इन दोनों भाईनिको पूर्व भवकी खाल लोक ले आए सो इनिने देखी, लोकोंने हास्य करी जो यह मांसके भक्षक स्याल थे सो यह दोऊ भाई द्विज बड़े मूर्ख जो मुनिनिसे वाद करने आए। ये महामुनि तपोधन शुद्धभाव सबके गुरु अहिंसा महाव्रतके धारक इन समान और नाहीं यह महामुनि महाव्रतरूप शिखाके धारक क्षमारूप यज्ञोपवीत धरें ध्यानरूप अग्निहोत्रके कर्त्ता महाशांत मुक्तिके साधनविषै तत्पर अर जे सर्व आरम्भविषैं प्रवरतैं ब्रह्मचर्य रहित वे मुखसे कहे हैं कि हम द्विज हैं परन्तु क्रिया करे नहीं जैसे कोई मनुष्य या लोकमें सिंह कहावे देव कहावे परन्तु वह सिंह नाहीं, तैसे यह नाममात्र ब्राह्मण कहावें परन्तु इनमें ब्रह्मत्व नाहीं अर मुनिराज धन्य हैं परम संयमी महा क्षमावान् तपस्वी जितेंद्री निश्चय थकी ये ही ब्राह्मण हैं ये साधु महाभद्रपरणामी भगवतके भक्त महा तपस्वी यति धीर वीर मूल गुण उत्तरगुणके पालक इन समान अर कोऊ नाहीं यह अलौकिक गुण लिये हैं। अर इनहीकूं परिव्राजक कहिये काहेतैं जो वह संसारकूं तज मुक्तिको प्राप्त होयं ये निर्ग्रंथ अज्ञान तिमिरके हर्त्ता तपकर कर्मकी निर्जरा करै हैं. क्षीण किये हैं रागादिक जिन्होने महाक्षमावान पापनिके नाशक तातैं इनको क्षपणक हू कहिये यह संयमी कषायरहित शरीरतैं निर्मोह दिगम्बर योगीश्वर ध्यानी ज्ञानी पंडित निःस्पृह सो ही सदा वंदिवे योग्य हैं ये निर्वाणको साधैं ताते ये साधु कहिये अर पंच आचारको आप आचरें औरनिको आचरावें तातैं आचार्य कहिये अर आगार कहिये घर ताके त्यागी तातैं अनागार कहिये शुद्ध भिक्षाके ग्राहक तातैं भिक्षुक कहिये, अति कायक्लेश करें अशुभकर्मके त्यागी उज्ज्वल क्रियाके कर्ता तप करते खेद न मानैं तातैं श्रमण कहिये आत्मस्वरूपकूं प्रत्यक्ष अनुभवैं तातैं मुनि कहिये रागादिक रोगोंके हरिवेका यत्न करें तातैं यति कहिये या भांति लोकनिने साधुकी स्तुति करी अर इन दोनों भाईनिकी निन्दा करी तब यह मानरहित प्रभारहित विलखे होय घर गये रात्रिके विषै पापी मुनिके मारिवेको आए अर वे सात्त्विक मुनि अपरिग्रही संघको तज अकेले मसान भूमिविषै अस्थ्यादिकसे दूर एकांत पवित्र भूमिमें विराजे थे कैसी है वह भूमि जहां रीछ व्याघ्र आदि दुष्ट

जीवोंका नाद होय रहा है अर राक्षस भूत पिशाचोंकर भरा है नागोंका निवास है अर अंधकाररूप भयंकर तहां शुद्ध शिला जीव जंतुरहित उसपर कायोत्सर्ग धर खड़े थे सो उन पापियोंने देखे दोनों भाई खड्ग काढ़ क्रोधायमान होय कहते भए जब तो तोहि लोकोंने बचाया अब कौन बचावेगा हम पंडित पृथ्वीविषै श्रेष्ठ प्रत्यक्ष देवता तू निलज्ज हमको स्याल कहे यह शब्द कह दोनों अत्यंत प्रचण्ड होठ डसते लाल नेत्र दयारहित मुनिके मारिवेको उद्यमी भए तब वनका रक्षक यक्ष उसने देखे मनविषै चिंतवता भया—देखो ऐसे निर्दोष साधु ध्यानी कायासे निर्ममत्व तिनके मारिवेको उद्यमी भए तब यक्षने यह दोनों भाई कीले सो हलचल सके नाहीं, दोनों पसवारे खड़े प्रभात भया सकल लोक आए देखें तो यह दोनों मुनिके पसवारे कीले खड़े हैं अर इनके हाथविषै नांगी तलवार है तब इनको सब लोक धिक्कार धिक्कार कहते भये यह दुराचारी पापी अन्यायी ऐसा कर्म करनेको उद्यमी भए इन समान अर पापी नाहीं और यह दोनों चित्तविषै चितवते भए जो यह धर्मका प्रभाव है हम पापी थे सो बलात्कार कीले स्यावर समकर डारे अब या अवस्थामें जीवते बचें तो श्रावकके व्रत आदरें अर उस ही समय इनके माता पिता आए बारम्बार मुनिको प्रणामकर विनती करते भए—हे देव ! यह कुपूत पुत्र हैं इन्होंने बहुत बुरी करी आप दयालु हो जीवदान देवो साधु बोले हमारे काहूसे कोप नहीं हमारे सब मित्र बांधव हैं तब यक्ष लाल नेत्रकर अति गुंजारसे बोला अर सबोंके समीप सर्व वृत्तांत कहा कि जो प्राणी साधुवोंकी निन्दा करें सो अनर्थको प्राप्त होवें जैसे निर्मल कांचविषै बांका मुखकर निरखे तो बांका ही दीखे तैसे जो साधुवोंको जैसा भावकर देखे तैसा ही फल पावें जो मुनियोंकी हास्य करे सो बहुत दिन रुदन करे अर कठोर वचन कहे सो क्लेश भोगवे अर मुनिका वध करे तो अनेक कुमरण पावे द्वेष करे सो पाप उपार्जे भव २ दुःख भोगवे अर जैसा करे तैसा फल पावे यक्ष कहे है हे विप्र ! तेरे पुत्रोंके दोषकर मैं कीले हैं विद्याके मानकर गर्वित मायाचारी दुराचारी संयमियोंके घातक हैं ऐसे वचन यक्षने कहे तब सोमदेव विप्र हाथ जोड़ साधुकी स्तुति करता भया अर रुदन करता भया आपको निन्दता छाती कूटता ऊर्ध्व भुजाकर स्त्रीसहित विलाप करता भया तब मुनि

परम दयालु यक्षको कहते भए—हे सुन्दर! हे कमलनेत्र! यह बालबुद्धि हैं इनका अपराध तुम क्षमा करो तुम जिनशासनके सेवक हो सदा जिनशासनकी प्रभावना करो हो तातैं मेरे कहेसे इनसे क्षमा करो तब यक्षने कही आप कहा सो ही प्रमाण वे दोनों भाई छोड़े तब यह दोनों भाई मुनिको प्रदक्षिणा देय नमस्कारकर साधुका व्रत धरिवेको असमर्थ तातैं सम्यक् सहित श्रावकके व्रत आदरते भए जिनधर्मकी श्रद्धाके धारक भए अर इनके माता पिता व्रत ले छोड़ते भए सो वे तो अव्रतके योगसे पहिले नरक गये अर यह दोनों विप्रपुत्र निस्संदेह जिनशासन रूप अमृतका पानकर हिंसाका मार्ग विषवत् तजते भए समाधिमरण कर पहिले स्वर्ग उत्कृष्ट देव भए वहांसे चयकर अयोध्याविषै समुद्र सेठ उसके धारणी स्त्री उसकी कुक्षिविषै उपजे नेत्रोंको आनंदकारी एकका नाम पूर्णभद्र दूजेका नाम कांचनभद्र सो श्रावकके व्रत धार पहिले स्वर्ग गए अर ब्राह्मणके भवके इनके माता पिता पापके योगसे नरक गए हुते वे नरकसे निकस चाण्डाल अर कूकरी भए वे पूर्णभद्र अर कांचनभद्रके उपदेशसे जिनधर्मका आराधन करते भए समाधिमरणकर सोमदेव द्विजका जीव चाण्डालसे नंदीश्वर द्वीपका अधिपति देव भया अर अग्निला ब्राह्मणीका जीव कूकरीसे अयोध्याके राजाकी पुत्री होय उस देवके उपदेशसे विवाहका त्यागकर आर्यिका होय उत्तम गति गई वे दोनो परम्पराय मोक्ष पावेंगे। अर पूर्णभद्र कांचनभद्रका जोव प्रथम स्वर्गसे चयकर अयोध्याका राजा हेम राणी अमरावती उसके मधुकैटभ नामा पुत्र जगत्प्रसिद्ध भए जिनको कोई जीत न सके महाप्रबल महारूपवान् जिन्होंने यह समस्त पृथिवी वश करी सब राजा तिनके आधीन भए। भीम नाम राजा गढ़के बलकर इनकी आज्ञा न माने जैसे चमरेन्द्र असुर कुमारनिका इन्द्र नन्दनवनको पाय प्रफुल्लित होय है, तैसे वह अपने स्थानकके बलसे प्रफुल्लित रहे अर एक वीरसेन नाम राजा वटपुरका धनी मधुकैटभका सेवक उसने मधुकैटभको विनतीपत्र लिखा—हे प्रभो! भीमरूप अग्निने मेरा देश रूप वन भस्म किया। तब मधु क्रोधकर बड़ी सेनासे भीम ऊपर चढ़ा सो मार्गविषै वटपुर जाय डेरा किए वीरसेनने सन्मुख जाय अतिभक्ति कर मिहमानी करी उसके स्त्री चंद्राभा चंद्रमा समान है बदन जिसका सो वीरसेन

मूर्खनेउसके हाथ मधुका आरता कराया अर उसहीके हाथ जिमाया चंद्राभाने पतिसे घनी ही कही जो अपने घरविषे सुन्दर वस्तु होय सो राजाको न दिखाइये पतिने न मानी । राजा मधु चंद्राभाको देख मोहित भया मनविषे विचारी इस सहित विन्ध्याचलके वनका वास भला अर या विना सव भूमिका राज्य भी भला नाहीं सो राजा अन्याय ऊपर आया तव मंत्रीने समझाया अवार यह वात करोगे तो कार्य सिद्ध न होयगा अर राज्यभ्रष्ट होयगा तव राजा मंत्रियोंके कहेसे राजा वीरसेनको लार लेय भीम पर गया उसे युद्धविषे जीत वशीभूत किया अर और सव राजा वश किए वहुरि अयोध्या आय चन्द्राभाके लेयवेका उपाय चिंतया सव राजा वसंतकी क्रीड़ाके अर्थ स्त्रीसहित वुलाए अर वीरसेनको चन्द्राभा सहित वुलाया, तव हूं चंद्राभाने कही कि मुझे मत ले चलो सो न मानी लेही आया, राजाने मास पर्यन्त वनविषे क्रीड़ा करी अर राजा आए थे तिनको दान सन्मान कर स्त्रियों सहित विदा किए अर वीरसेनको कैयक दिन राखा अर वीरसेनको भी अति दान सनमान कर विदा किया अर चन्द्राभाके निमित्त कही इनके निमित्त अद्भुत आभूपण वनवाये हैं सो अभी वन नहीं चुके हैं तातें इनको तिहारे पीछे विदा करेंगे सो वह भोला कछू समझे नहीं घर गया वाके गए पीछे मधुने चन्द्राभाको महलविषे वुलाया अभिषेककर पटराणी पद दिया सव राणियोंके ऊपर करी । भोगकर अन्ध भया है मन जिसका इसे राख आपको इन्द्रसमान मानता भया अर वीरसेनने सुनी कि चन्द्राभा मधुने राखी तव पागल होय कैयक दिनविषे मंडव नामा तापसका शिष्य होय पंचाग्नि तप करता भया अर एकदिन राजा मधु न्यायके आसन वैठा सो एक परदाररतका न्याय आया सो राजा न्यायविषे वहुत वेर लग वैठे रहे वहुरि मन्दिरविषे गए तव चन्द्राभाने कही महाराज आज घनी वेर क्यों लगी ? हम क्षुधाकर खेदखिन्न भई आप भोजन करो तो पीछे भोजन करूं, तव राजा मधुने कही आज एक परनारीरतका न्याय आय पड़ा तातें देर लगी तव चन्द्राभाने हंसकर कही जो परस्त्रीरत होय उसकी वहुत मानता करनी तव राजाने क्रोधकर कही तुम यह क्या कही जे दुष्ट व्यभिचारी हैं तिनका निग्रह करना जे परस्त्रीका स्पर्श करें संभाषण करें वे पापी हैं सेवन करें तिनकी कहा वात ? जे ऐसे कर्म

करें तिनको महादण्ड दें नगरसे काढ़ें जे अन्यायमार्गी हैं वे महा पापी नरकविषै पड़े हैं अर राजाओंके दण्ड योग्य हैं तिनका मान कहा ? तब राणी चन्द्राभा राजाको कहती भई—हे नृप ! यह परदारा सेवन महा दोष है तो तुम आपको दण्ड क्यों न देवो तुमही परदारारत हो तो औरोंका कहा दोष ? जैसा राजा तैसी प्रजा जहां राजा हिंसक होय अर व्यभिचारी होय तहां न्याय कैसा ? तातैं नृप होय सो जिस जलकर बीज उगे अर जगत् जीवै सो जलही जो जलाय मारे तो और शीतल करणहारा कौन ? ऐसे उलाहनाके वचन चन्द्राभाके सुन राजा कहता भया—हे देवि ! तुम कहो हो सो ही सत्य है बारम्बार इनकी प्रशंसा करी अर कहा मैं पापी लक्ष्मीरूप पाश कर बंधा विषयरूप कीचविषै फंसा अब इस कीचसे कैसे छूटूं राजा ऐसा विचार करे है अर अयोध्याके सहस्राम्रनामा वनविषै महासंघ सहित सिंहपाद नामा मुनि आए राजा सुनकर रणवाससहित अर लोकों सहित मुनिके दर्शनको गया, विधिपूर्वक तीन प्रदक्षिणा देय प्रणाम कर भूमिविषै बैठा जिनेन्द्रका धर्म श्रवणकर भोगोंसे विरक्त होय मुनि भया अर राणी चन्द्राभा बड़े राजाकी बेटी रूपकर अनुपम सो राज विभूति तज आर्यिका भई दुर्गतिकी वेदनाका है अधिक तप जिनको अर मधुका भाई कैटभ राज्यको विनाशीक जान महा व्रतधर मुनि भया। दोऊ भाई महा तपस्वी पृथिवीविषै विहार करते भए अर सकल स्वजन परजनके नेत्रनिको आनन्दका कारण मधुका पुत्र कुलवर्धन अयोध्याका राज्य करता भया अर मधु सैकड़ों वर्ष तप कर दर्शन ज्ञान चारित्र तप यही चार आराधना आराध समाधि मरण कर सोलहवां अच्युत नामा स्वर्ग वहां अच्युतेंद्र भया अर कैटभ पंद्रहमा आरण नामा स्वर्ग वहां आरणेंद्र भया गौतम स्वामी कहे हैं—हे श्रेणिक ! यह जिनशासनका प्रभाव जानो जो ऐसे अनाचारी सो अनाचारका त्यागकर अच्युतेंद्र पद पावैं अथवा इन्द्र पदका कहा आश्चर्य ? जिनधर्मके प्रसादसे मोक्षपावें मधुका जीव अच्युतेंद्र था उसके समीप सीताका जीव प्रतीन्द्र भया अर मधुका जीव स्वर्गसे चयकर श्रीकृष्णकी रुक्मिणी राणीके प्रद्युम्न नामा पुत्र कामदेव होय मोक्ष गया अर कैटभका जीव कृष्णकी जाम्बवती राणीके शंबुकुमार नामा पुत्र होय परम धामको प्राप्त भया। यह मधुका व्याख्यान

तुझे कहा अब हे श्रेणिक। बुद्धिवंतोंके मनको प्रिय ऐसे लक्ष्मणके अष्ट पुत्र महा धीर वीर तिनका चरित्र पापोंका नाश करणहारा चित्त लगाय सुनो॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषावचनिकाविषैं राजा मधुका वर्णन करनेवाला एकसौ नवा पर्व पूर्ण भया ॥१०९॥

अथानन्तर—कांचनस्थान नामा नगर वहां राजा कांचनरथ उसकी राणी शतह्रदा उसके पुत्री दोय अति रूपवन्ती रूपके गर्व कर महा गर्वित तिनके स्वयंवरके अर्थ अनेक राजा भूचर खेचर तिनके पुत्र कन्याके पिताने पत्र लिख दूत भेज शीघ्र बुलाए। सो दूत प्रथम ही अयोध्या पठाया अर पत्रविषै लिखा मेरी पुत्रियोंका स्वयंवर है सो आप कृपाकर कुमारोंको शीघ्र पठावो। तब राम लक्ष्मणने प्रसन्न होय परम ऋद्धियुक्त सर्व सुत पठाये दोनों भाइयोंके सकल कुमार लव अंकुशको अग्रेसर कर परस्पर महा प्रेमके भरे कांचनस्थानपुरको चले सैकड़ों विमानविषै बैठे अनेक विद्याधर लार, रूपकर लक्ष्मीकर देवनि सारिखे आकाशके मार्ग गमन करते भये सो बड़ी सेना सहित आकाशसे पृथिवीको देखते जावें कांचनस्थानपुर पहुंचे वहां दोनों श्रेणियोंके विद्याधर राजकुमार आये थे सो यथा योग्य तिष्ठे जैसे इन्द्रकी सभाविषै नाना प्रकारके आभूषण पहिरे देव तिष्ठें अर नन्दनवनविषै देव नाना प्रकारको चेष्टा करें तैसे चेष्टा करते थे अर वे दोनों कन्या मन्दाकिनी अर चन्द्रवक्रा मंगल स्नानकर सर्व आभूषण पहिरे निज वाससे रथ चढ़ी निकसी मानों साक्षात् लक्ष्मी अर लज्जा ही हैं महा गुणोंकर पूर्ण तिनके खोजा लार था सो राजकुमारोंके देश कुल संपत्ति गुण नाम चेष्टा सब कहता भया। अर कही ये आए हैं तिन विषै कई वानरध्वज कई सिंहध्वज कई वृषभध्वज कई गजध्वज इत्यादि अनेक भांतिकी ध्वजाको धरे महा पराक्रमी हैं इनविषै इच्छा होय सो वरो तब वह सबनिको देखती भईं अर यह सब राजकुमार उनको देख संदेहकी तुलामें आरूढ़ भये कि यह रूप गर्वित हैं न जानिये कौनको वरें ऐसी रूपवन्ती हम देखी नहीं मानों ये दोनों समस्त देवियोंका रूप एकत्र कर बनाई हैं यह कामकी पताका लोकोंको उन्मादका कारण इस भांति सब राजकुमार अपने मनमें अभिलाषा रूप भए दोनों उन्मत्त कन्या लव अंकुशको देख कामबाण कर वेधी

गई उनमें मन्दाकिनो नामा जो कन्या उसने लवके कंठमें बरमाला डारी, अर दूजी कन्या चंद्रवकाने अंकुशके कंठमें बरमाला डारी तब समस्त राजकुमारोंके मनरूप पक्षी तनुरूप पींजरसे उड़ गये अर जे उत्तम जन थे तिन्होंने प्रशंसा करी कि इन दोनों कन्यावोंने रामके दोनों पुत्र वरे सो नीके करी ये कन्या इनही योग्य है इस भांति सज्जनोंके मुखसे वाणी निकसी जे भले पुरुष हैं तिनका चित्त योग्य सम्बन्धसे आनन्दको प्राप्त होय ॥

अथानन्तर—लक्ष्मणकी विशल्यादि आठ पटराणी तिनके पुत्र आठ महा सुन्दर उदार चित्त शूरवीर पृथिवीविषै प्रसिद्ध इन्द्रसमान सो अपने अढ़ाईसे भाइयों सहित महा प्रीति युक्त तिष्ठते थे जैसे तारावोंमें ग्रह तिष्टे सो आठ कुमारनि विना और सब ही भाई रामके पुत्रनिपर क्रोधित भये। जो हम नारायणके पुत्र कांतिधारी कलाधारी नवयौवन लक्ष्मीवान बलवान् सेनावान् कौन गुणकर हीन जो इन कन्यानिने हमको न वरे अर सीताके पुत्र वरे ऐसा विचारकर कोपित भये तब बड़े भाई आठने इनको शांतचित किये जैसे मंत्रकर सर्पको वश करिये तिनके समझावेतैं सबही भाई लव अंकुशसे शांतचित्त भये अर मनमें विचारते भए जो इन कन्यानिने हमारे बाबाके बेटे बड़े भाई वरे तब ये हमारे भावज सो माता समान हैं अर स्त्री पर्याय महा निन्द्य है स्त्रीनिकी अभिलाषा अविवेकी करें, स्त्रियां स्वभाव हीतैं कुटिल हैं इनके अर्थ विवेकी विकारको न भजें, जिनको आत्मकल्याण करना होय सो स्त्रीनितैं अपना मन फेरे, या भांति विचार सबही भाई शांतचित्त भए, पहिले सबही युद्धके उद्यमी भए हुते रणके वादित्रनिका कोलाहल शंख झंझा भेरी झंझार इत्यादि अनेक जातिके वादित्र बाजने लगे अर जैसे इन्द्रकी विभूति देख छोटे देव अभिलाषी होंय तैसे ये सब स्वयम्वरविषै कन्यानिके अभिलाषी भए हुते सो बड़े भाइनिके उपदेशतैं विवेकी भए, अर उन आठों बड़े भाईनिको वैराग्य उपजा सो विचारै हैं यह स्थावर जंगमरूप जगतके जीव कर्मनिकी विचित्रताके योगकर नाना रूप हैं विनश्वर हैं जैसा जीवनिके होनहार है तैसा ही होय है जाके जो प्राप्ति होनी सो अवश्य होय है, और भांति नहीं अर लक्ष्मणकी रूपवती राणीका पुत्र हंसकर कहता भया—भो भ्रातः हो! स्त्री कहा प-

दार्थ है ? स्त्रीनितैं प्रेम करना महामूढता है, विवेकीनिको हांसी आवे है जो यह कामी कहा जान अनुराग करै हैं? इन दोऊ भाइनिने ये दोनों राणी पाईं तौ कहा बड़ी वस्तु पाई, जे जिनेश्वरी दीक्षा धरें वे धन्य हैं केलाके स्तंभ समान असार काम भोग आत्माके शत्रु तिनके वश होय रति अरति मानना महा मूढ़ता है, विवेकीनिको शोकहू न करना अर हास्यहू न करना। ये सबही संसारी जीव कर्मके वश भ्रम जालमें पड़े हैं ऐसा नाहीं करे हैं जाकर कर्मोंका नाश होय, कोई विवेकी करै सोई सिद्धपदको प्राप्त होय, या गहन संसार वनविषै ये प्राणी जिनपुरका मार्ग भूल रहे हैं ऐसा करहु जाकर भव दुःख निवृत्त होय। हे भाई हो, यह कर्मभूमि आर्यक्षेत्र मनुष्य देह उत्तम कुल हमने पाया सो एते दिन योंही खोये अब वीतरागका धर्म आराध मनुष्य देह सफल करो, एक दिन मैं बालक अवस्थाविषै पिताकी गोदमें बैठा हुता सो वे पुरुषोत्तम समस्त राजानिको उपदेश देते थे वे वस्तुका स्वरूप सुन्दरस्वरसूं कहते भए सो मैं रुचिसों सुन्या। चारों गतिमें मनुष्यगति दुर्लभ है। जो मनुष्यभव पाय आत्महित न करे हैं सो ठगाए गए जान। दान कर तो मिथ्यदृष्टि भोगभूमि जावें अर सम्यग्दृष्टि दानकर तपकर स्वर्ग जायं, परम्पराय मोक्ष जावें अर शुद्धोपयोग रूप आत्मज्ञान कर यह जीव याहीं भव मोक्ष पावें अर हिंसादिक पापनिकर दुर्गति लहे जो तप न करै सो भव वनविषै भटकै बारम्बार दुर्गतिके दुःख संकट पावै, या भांति विचार वे अष्टकुमार शूरवीर प्रतिबोधको प्राप्त भए संसार सागरके दुःखरूप भवनिसे डरे, शीघ्र ही पितापै गए, प्रणाम कर विनयसे खड़े रहे अर महा मधुर वचन हाथ जोड़ कहते भए—हे तात! हमारी विनती सुनो, हम जैनेश्वरी दीक्षा अङ्गीकार किया चाहे हैं, तुम आज्ञा देवो। यह संसार विजुरीके चमत्कार समान अस्थिर है केलाके स्तंभ समान असार है हमको अविनासी पुरके पंथ चलते विघ्न न करो तुम दयालु हो कोई महा भाग्यके उदयतैं हमको जिनमार्गका ज्ञान भया, अब ऐसा करें जाकर भवसागरके पार पहुंचे ए काम भोग आशीविष सर्पके फण समान भयंकर हैं परम दुःखके कारण हम दूर हीतै छोड़ा चाहे हैं या जीवके कोऊ माता पिता पुत्र बांधव नाहीं, कोऊ याका सहाई नाहीं, यह सदा कर्मके आधीन भव वनमें भ्रमण करे हैं याके कौन २

जीव कौन कौन सम्बन्धो न भए। हे तात! हमसूं तिहारा अत्यन्त वात्सल्य है अर मातावोंका है सो यही
बंधन है। हमने तिहारे प्रसादतें बहुत दिन नाना प्रकार संसारके सुख भोगे निदान एक दिन हमारा
तिहारा वियोग होयगा, यामें संदेह नाहीं, या जीवने अनेक भोग किए परन्तु तृप्त न भया। ये भोग रोग
समान हैं इनविषै अज्ञानी राचें अर यह देह कुमित्र समान है जैसे कुमित्रको नाना प्रकार कर पोषिये
परन्तु वह अपना नाहीं तैसे यह देह अपना नाहीं याके अर्थ आत्माका कार्य न करना यह विवेकीनिका
काम नाहीं, यह देह तो हमको तजेगी हम इससे प्रीति क्यों न तजें। ये वचन पुत्रनिके सुन लक्ष्मण परम
स्नेह कर विह्वल होय गए इनको उरसे लगाय मस्तक चूम्ब बारम्बार इनकी ओर देखते भए अर गदगद
वाणी कर कहते भए हे पुत्र हो! ये कैलाशके शिखर समान हेम रत्नके ऊंचे महल जिनके हजारां कनकके
स्तम्भ तिनविषै निवास करो नाना प्रकार रत्नोंसे निरमाए हैं आंगन जिनके महा सुन्दर सर्व उपकरणोंकर
मण्डित मलयागिरि चन्दनकी आवे है सुगन्ध जहां उसकर भ्रमर गुञ्जार करे हैं अर स्नानादिककी विधि
जहां ऐसी मंजनशाला अर सब संपत्तिसे भरे निर्मल है भूमि जिनकी इन महलोंमें देवों समान क्रीड़ा
करो तिहारे सुन्दर स्त्री देवांगना समान दिव्यरूपको धरें शरदके पूनोंके चन्द्रमा समान प्रजा जिनकी अनेक
गुणनिकर मण्डित बीण बांसुरी मृदंगादि अनेक वादित्र बजायवेविषै निपुण महा सुकंठ सुन्दर गीत
गायवेविषै निपुण नृत्यकी करणहारी जिनेंद्रकी कथाविषै अनुरागिणी महापतिव्रता पवित्र तिन सहित वन
उपवन तथा गिरि नदियोंके तट निज भवनके उपवन तहां नाना विधि क्रीड़ा करते देवोंको न्याईं रमो।
हे वत्स हो! ऐसे मनोहर सुखोंको तज कर जिनदीक्षा धर कैसे विषमवन अर गिरिके शिखर कैसे रहोगे।
मैं स्नेहका भरा अर तिहारी माता तिहारे शोक कर तप्तायमान तिनको तजकर जाना तुमको योग्य नाहीं
कैयक दिन पृथ्वीका राज्य करो तब वे कुमार स्नेहकी वासनासे रहित भया है चित्त जिनका संसारसे भय
भीत इन्द्रियोंके सुखसे पराङ्मुख महा उदार महा शूरवीर कुमार श्रेष्ठ आत्मतत्त्वविषै लगा है चित्त जिनका
क्षण एक विचार कर कहते भए—हे पिता! इस संसारविषै हमारे माता पिता अनन्त भए यह स्नेहका बंधन

नरकका कारण है यह घर रूप पिंजरा पापारंभका अर दुःखका बढ़ावनहारा है उसमें मूर्ख रति माने है ज्ञानी न माने अब कबहूं देह संबन्धी तथा मन संबंधी दुःख हमको न होय निश्चयसे ऐसा ही उपाय करेंगे जो आत्मकल्याण न करे सो आत्मघाती है कदाचित् घर न तजे अर मनविषे ऐसा जाने मैं निर्दोष हूं मुझे पाप नहीं तो वह मलिन है पापी है जैसे सुफेद वस्त्र अङ्गके संयोगसे मलिन होय तैसे घरके संयोगसे गृहस्थी मलिन होय है, जे गृहस्थाश्रमविषे निवास करे हैं तिनके निरन्तर हिंसा आरम्भकर पाप उपजै तातें सुपुरुषोंने गृहस्थाश्रम तजे अर तुम हमसों कही केयक दिन राज्य भोगो सो तुम ज्ञानवान् होयकर हमको अंधकूपविषै डारो हो जैसे तृषाकर आतुर मृग जल पीवै अर उसे पारधी मारे तैसे भोगनिकर अतृप्त जो पुरुष उसे मृत्यु मारे है, जगत्के जीव विषयकी अभिलाषा कर सदा आर्त्तध्यानरूप पराधीन हैं। जे काम सेवे हैं वे अज्ञानी विषहर गहारो जड़ी विना आशीविष सर्पसे क्रीड़ा करे हैं सो कैसे जीवें? यह प्राणी मीन समान गृहरूप तालावविषे वसते विषयरूप मांसके अभिलाषी रोगरूप लोहके आंकड़ेके योगकर काल-रूप धीवरके जालविषें पड़े हैं भगवान् श्रीतीर्थंकर देव तीन लोकके ईश्वर सुर नर विद्याधरनिकर वंदित यह ही उपदेश देते भए कि यह जगत्के जीव अपने अपने उपार्जे कर्मोंके वश हैं अर या जगत्को तजै सो कर्मोंको हत तातें हे तात। हमारे इष्ट संयोगके लोभकर पूर्णता न होवे यह संयोगसंबंध विजुरीके चमत्का-रवत् चंचल है जो विचक्षण जन हैं वे इनसे अनुराग न करे अर निश्चय सेती इस तनुसे अर तनुके सम्ब-न्धियोंसे वियाग होयगा इनमें कहा प्रीति अर महाक्लेशरूप यह संसार वन उसविषे कहा निवास अर यह मेरा प्यारा ऐसी बुद्धि जीवोंके अज्ञानसे है यह जीव सदा अकेला भवविषे भटके है गतिगतिमें गमन करता महा दुखी है॥ हे पिता! हम संसार सागरमें झकोला खाते अति खेदखिन्न भए। कैसा है संसार सागर? मिथ्या शास्त्ररूप है दुखदाई द्वीप जिसमें अर मोहरूप हैं मगर जिसमें अर शोक संतापरूप सिवा-न कर संयुक्त सो अर दुर्जयरूप नदियोंकर पूरित है अर भ्रमणरूप भंवरके समूहकर भयंकर है अर अनेक आधिव्याधि उपाधिरूप कलोलोंकर युक्त है अर कुभावरूप पाताल कुण्डोंकर अगम है अर क्रोधादिकर

भावरूप जलचरोंके समूहसे भरा है अर वृथा बकवादरूप होय है शब्द जहां अर ममत्वरूप पवनकर उठे हैं विकल्परूपतरङ्ग जहां अर दुर्गतिरूपखार जलकर भरा है अर महादुस्सह इष्ट वियोग अनिष्ट संयोग-रूप आताप सोई है वड़वानल जहां, ऐसे भवसागरमें हम अनादिकालके खेदखिन्न पड़े हैं नाना योनिविषै भ्रमण करते अतिकष्टसे मनुष्य देह उत्तम कुल पाया है सो अब ऐसा करेंगे बहुरि भवभ्रमण न होय। सो सबसे मोह छुड़ाय आठों कुमार महाशूरवीर घररूप वन्दीखानेसे निकसे उन महा भाग्योंके ऐसी वैराग्य वुद्धि उपजी जो तीनखंडका ईश्वरपणा जीर्ण तृणवत् तजा ते विवेकी महेन्द्रोदय नामा उद्यानविषै जायकर महाबल नामा मुनिके निकट दिगम्बर भए सर्व आरम्भरहित अन्तर्बाह्य परिग्रहके त्यागी विधिपूर्वक ईर्या समिति पालते विहार करते भए महा क्षमावान् इन्द्रियोंके वश करणहारे विकल्परहित निस्पृहो परम योगी महाध्यानी बारह प्रकारके तप कर कर्मोंको भस्म कर अध्यात्मयोगसे शुभाशुभ भावोंका निराकरण कर क्षीणकषाय होय केवल ज्ञान लह अनन्त सुख रूप सिद्ध पदको प्राप्त भए जगत्के प्रपंचसे छूटे। गौतम गणधर राजा श्रेणिकसे कहे हैं—हे नृप! यह अष्ट कुमारोंका मङ्गलरूप चरित्र जो विनयवान भक्तिकर पढ़े सुने उसके समस्त पाप क्षय जावें जैसे सूर्यकी प्रभाकर तिमिर विलाय जाय॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषा वचनिकाविषैं लक्ष्मणके आठ पुत्रोंका वैराग्य वर्णन करनेवाला एकसौ दसवा पर्व पूर्ण भया ॥ ११० ॥

अथानन्तर—महावीर जिनेन्द्रके प्रथम गणधर मुनियोंमें मुख्य गौतम ऋषि श्रेणिकसे भामण्डलका चरित्र कहते भए हे श्रेणिक! विद्याधरनिकी जो ईश्वरता सोई भई कुटिला स्त्री उसका विषय वासनारूप मिथ्या सुख सोई भया पुष्प उसके अनुराग रूप मकरन्दविषै भामण्डलरूप भ्रमर आसक्त होता भया चित्तमें यह चिंतवे जो मैं जिनेन्द्री दीक्षा धरूंगा तो मेरी स्त्रियोंका सौभाग्यरूप कमलनिका वन सूक जायगा ये मेरेसे आसक्त चित्त हैं अर इनके विरह कर मेरे प्राणनिका वियोग होयगा मैं यह प्राण सुखसूं पाले हैं इसलिये कैयक दिन राज्यके सुख भोग कल्याणका कारण जो तप सो करूंगा यह काम भोग

दुर्निवार हैं अर इनकर पाप उपजेगा सो ध्यानरूप अग्निकर क्षणमात्रमें भस्म करूंगा कोईयक दिन राज्य करूं बड़ी सेना राख जे मेरे शत्रु हैं तिनको राज्य रहित करूंगा वे खड्गके धारे बड़े सामंत मुझसे पराङ्मुख ते भये खड्गी कहिए गेंडा तिनके मानरूप खड्गकूं भंग करूंगा अर दक्षिण श्रेणी उत्तर श्रेणी विषे अपनी आज्ञा मनाऊं अर सुमेरु पर्वत आदि पर्वतोंविषे मरकत मणि आदि नाना जातिके रत्ननिकी निर्मल शिला तिनमें स्त्रियों सहित क्रीड़ा करूं इत्यादि मनके मनोरथ करता हुवा भामण्डल सैकड़ों वर्ष एक मुहूर्तकी न्याईं व्यतीत करता भया यह किया यह करूं यह करूंगा ऐसा चिंतवन करता आयुका अन्त न जानता भया एक सतखणी महिलके ऊपर सुन्दर सेजपर पोढ़ा था सो बिजुरी पड़ी अर तत्काल कालको प्राप्त भया। दीर्घसूत्री मनुष्य अनेक विकल्प करें परन्तु आत्माके उद्धारका उपाय न करें तृष्णाकर हता क्षणमात्रमें भी साता न पावे मृत्यु सिरपर फिरे ताकी सुध नहीं, क्षणभंगुर सुखके निमित्त दुर्बुद्धि आत्महित न करे विषयवासनाकर लुब्ध भया अनेक भांति विकल्प करता रहे सो विकल्प कर्म बंधके कारण हैं धन यौवन जीतव्य सब अस्थिर हैं जो इनको अस्थिर जान सर्व परिग्रहका त्याग करें आत्मकल्याण करें सो भवसागर न डूबें अर विषयाभिलाषी जीव भव भवविषे कष्ट सहें हजारों शास्त्र पढ़े अर शांतता न उपजी तो क्या अर एकही पदकर शांतदशा होय तो प्रशंसा योग्य है धर्म करिवेकी इच्छा तो सदा करवो करे अर करे नहीं सो कल्याणको न प्राप्त होय जैसे कटी पंखका काग उड़कर आकाशविषे पहुंचा चाहे पर न जाय सके जो निर्वाणके उद्यमकर रहित है सो निर्वाण न पावे जो निरुद्यमी सिद्धपद पावे तो कौन काहेको मुनिव्रत आदरे जो गुरुके उत्तम वचन उरमें धार धर्मको उद्यमी होय सो कभी खेद-खिन्न न होय जो गृहस्थ द्वारे आया साधु उसकी भक्ति न करें आहारादिक न दे सो अविवेकी है अर गुरुके वचन सुन धर्मका न आदरे सो भव भ्रमणसे न छूटे जो घने प्रमादी हैं अर नाना प्रकारके अशुभ उद्यमकर व्याकुल हैं उनकी आयु वृथा जाय है जैसे हथेलीमें आया रत्न जाता रहे ऐसा जान समस्त लौ-

किक कार्यको निरर्थक मान दुःखरूप इन्द्रियोंके सुख तिनको तजकर परलोक सुधारिवेके अर्थ जिनशासनमें श्रद्धा करो, भामण्डल मरकर पात्रदानके प्रभावसे उत्तम भोगभूमि गया ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषावचनिकाविषै भामण्डलका मरण वर्णन करनेवाला एकसौ ग्यारहवां पर्व पूर्ण भया ॥१११॥

अथानन्तर—राम लक्ष्मण परस्पर महास्नेहके भरे प्रजाके पिता समान परम हितकारी तिनका राज्यविषै सुखसे समय व्यतीत होता भया परम ईश्वरतारूप अति सुन्दर राज्य सोई भया कमलोंका वन उसमें क्रीड़ा करते वे पुरुषोत्तम पृथिवीको प्रमोद उपजावते भए इनके सुखका वर्णन कहां तक करें ऋतुराज कहिए वसंतऋतु उसमें सुगंध वायु वहे कोयल बोलें भ्रमर गुञ्जार करें समस्त वनस्पति फूले मदोन्मत्त होय समस्त लोक हर्षके भरे शृङ्गार क्रीड़ा करें मुनिराज विषम वनविषै विराजें आत्मस्वरूपका ध्यान करें उस ऋतुविषै राम लक्ष्मण रणवास सहित अर समस्त लोकों सहित रमणीक वनविषै तथा उपवनविषै नाना प्रकारके रङ्गक्रीड़ा रागक्रीड़ा जलक्रीड़ा वनक्रीड़ा करते भए अर ग्रीष्मऋतुविषै नदी सूकै दावानल समान ज्वाला वरसै महामुनि गिरिके शिखर सूर्यके सन्मुख कायोत्सर्ग धर तिष्ठें उस ऋतुविषै राम लक्ष्मण धारामंडप महिलमें अथवा महारमणीक वनविषै जहां अनेक जलयंत्र चन्दन कपूर आदि शीतल सुगंध सामग्री वहां सुखसे विराजे हैं चमर ढुरे हैं ताड़के बीजना फिरे हैं निर्मल स्फटिककी शिलापर तिष्ठें हैं अगुरु चन्दनकर चर्चे जलकर तर ऐसे कमल दल तथा पुष्पोंके सांथरेपर तिष्ठे मनोहर निर्मल शीतल जल जिसविषै लवङ्ग इलायची कपूर अनेक सुगंध द्रव्य उनकर महासुगंध उसका पान करते लताओंके मंडपोंविषै विराजते नाना प्रकारकी सुन्दर कथा करते सारङ्ग आदि अनेक राग सुनते सुन्दर स्त्रीनि सहित उष्ण ऋतुको बलात्कार शीतकाल सम करते सुखसे पूर्ण करते भए, अर वर्षाऋतु विषै योगीश्वर तरु तले तिष्ठते महातपकर अशुभ कर्मका क्षय करे हैं बिजुरी चमके हैं मेघकर अन्धकार होयरहा है मयूर बोले हैं ढाहा उपाड़ती महाशब्द करती नदी बहे हैं उस ऋतुविषै दोनों भाई सुमेरुके शिखर समान ऊंचे नाना मणिमई जे महिल तिनविषै महाश्रेष्ठ रंगीले वस्त्र पहिरे केसरके रङ्गकर लिप्त हैं अंग

जिनका अर कृष्णागरुका धूप खेए रहे हैं महासुन्दर स्त्रियोंके नेत्ररूप भ्रमरोंके कमल सारिखे इन्द्र समान क्रीड़ा करते सुखसों तिष्ठे अर शरद ऋतुविषै जल निर्मल होय चन्द्रमाकी किरण उज्ज्वल होय कमल फूलें हंस मनोहर शब्द करें मुनिराज वन पर्वत सरोवर नदीके तीर वैठे चिद्रूपका ध्यान करें उस ऋतुविषै राम लक्ष्मण राजलोकों सहित चांदनीके वस्त्र आभरण पहिरे सरिता सरोवरके तीर नाना विधि क्रीड़ा करते भए अर शीतऋतुविषै योगीश्वर धर्म ध्यानको ध्यावते रात्रिविषै नदी तालावोंके तटपे जहां अति शीत पड़े वर्फ वरसे महाठण्डी पवन बाजे तहां निश्चल तिष्ठे हैं महाप्रचण्ड शीतल पवन कर वृक्ष दाहे मारे हैं अर सूर्यका तेज मन्द होय गया है ऐसी ऋतुविषै राम लक्ष्मण महिलोंके भीतरले चौवारोंविषैं तिष्ठते मनवांछित विलास करते सुन्दर स्त्रीनिके समूह सहित वीणा मृदंग वांसुरी आदि अनेक वादित्रोंके शब्द कानोंको अमृत समान श्रवणकर मनको आल्हाद उपजावते दोनों वीर महाधीर देवों समान अर जिनके स्त्री देवांगना समान वाणीकर जीती है वीणाकी ध्वनि जिन्होंने महापतिव्रता तिन कर आदरते संते पुण्यके प्रभावसे सुखसे शीतकाल व्यतीत करते भए अद्भुत भोगोंकी सम्पदाकर मंडित वे पुरुषोत्तम प्रजाको आनन्दकारी दोनों भाई सुखसे तिष्ठे हैं।

अथानंतर—गोतमस्वामी कहे हैं—हे श्रेणिक। अव तू हनूमानका वृतांत सुन हनूमान पवनका पुत्र कर्णकुण्डल नगरविषै पूर्व पुण्यके प्रभावसे देवनिकेसे सुख भोगवै जिसकी हजारां विद्याधर सेवा करें अर उत्तम क्रियाका धारक स्त्रियों सहित परिवार सहित अपनी इच्छाकर पृथिवीमें विहार करे श्रेष्ठ विमानविषै आरूढ़ परम ऋद्धिकर मंडित महा शोभायमान सुन्दर वनोंमें देवनि समान क्रीड़ा करै सो वसंतका समय आया कामो जीवनको उन्मादका कारण अर समस्त वृक्षोंको प्रफुल्लित करणहारा प्रिया अर प्रीतमके प्रेमका बढ़ावनहारा सुगंध चले है पवन जिसमें ऐसे समयमें अंजनीका पुत्र जिनेंद्रकी भक्तिमें आरूढ़-चित्त, अति हर्ष कर पूर्ण हजारां स्त्रीनि सहित सुमेरु पर्वतकी ओर चला हजारां विद्याधर हैं संग जिसके श्रेष्ठ विमानविषै चढ़े परम ऋद्धिकर संयुक्त मार्गविषै वनविषै क्रीड़ा करते भए। कैसे हैं वन? शीतल

मंद सुगंध चले हैं पवन जहां नाना प्रकारके पुष्प अर फलों कर शोभित वृक्ष हैं जहां देवांगना रमे हैं अर कुलाचलोंके विषै सुन्दर सरोवरों कर युक्त अनेक मनोहर वन जिनविषै भ्रमर गुंजार करे हैं अर कोयल बोल रही हैं अर नाना प्रकारके पशु पक्षियोंके युगल विचरे हैं जहां सर्व जातिके पत्र पुष्प फल शोभे हैं अर रत्नानकी ज्योतिकर उद्योतरूप हैं पर्वत जहां अर नदी निर्मल जलकी भरी सुन्दर हैं तट जिनके अर सरोवर अति रमणीक नाना प्रकारके कमलोंके मकरन्दकर रङ्ग रूप होय रहा है सुगंध जल जिनका अर वापिका अति मनोहर जिनके रत्नोंके सिवान अर तटोंके निकट बड़े बड़े वृक्ष हैं अर नदीमें तरंग उठे हैं झागोंके समूह सहित महा शब्द करती वहे हैं जिनमें मगरमच्छ आदि जलचर क्रीड़ा करे हैं अर दोनो तटविषै लहलहाट करते अनेक वन उपवन महा मनोहर विचित्रगति लिये शोभे हैं जिनमें क्रीड़ा करवेके सुन्दर महिल अर नाना प्रकार रत्नकर निर्मापे जिनेश्वरके मंदिर पापोंके हरणहारे अनेक हैं। पवनपुत्र सुन्दर स्त्रियोंकर सेवित परम उदय कर युक्त अनेक गिरियोंविषैं अकृत्रिम चैत्यालयोंका दर्शन कर विमानविषै चढ़ा स्त्रियोंको पृथिवीकी शोभा दिखावता अति प्रसन्नतासे स्त्रियोंसे कहे है—हे प्रिये! सुमेरुविषैं अति रमणीक जिनमंदिर स्वर्ण रत्नमयी भासे हैं अर इनकी शिखर सूर्यसमान देदीप्यमान महामनोहर भासे हैं अर गिरिकी गुफा तिनके मनोहर द्वार रत्नजड़ित शोभा नाना रंगकी ज्योति परस्पर मिल रही हैं वहां अरति उपजे ही नाहीं सुमेरुकी भूमितलविषैं अतिरमणीक भद्रशाल वन है अर सुमेरुकी कटि मेखलाविषैं विस्तीर्ण नन्दन वन अर सुमेरुके वक्षस्थलविषै सौमनस वन है जहां कल्पवृक्ष कल्पलताओंसे वेढ़े सोहे हैं अर नाना प्रकार रत्नोंकी शिला शोभित हैं अर सुमेरुके शिखरमें पांडुक वन है जहां जिनेश्वर देवका जन्मोत्सव होय है इन चारों ही वनविषे चार चार चैत्यालय हैं जहां निरन्तर देव देवियोंका आगम है यक्ष किन्नर गंधर्वोंके संगीतकर नाद होय रहा है अप्सरा नृत्य करे हैं कल्पवृक्षोंके पुष्प मनोहर हैं नाना प्रकारके मंगल द्रव्य कर पूर्ण यह भगवान्‌के अकृत्रिम चैत्यालय अनादि निधन हैं। हे प्रिये पांडुक वनविषैं परम अद्‌भुत जिनमंदिर सोहे हैं जिनके देखे मन हरा जाय, महाप्रज्वलित निर्धूम अग्नि स-

मान संध्याके बादरोंके रंग समान उगते सूर्य समान स्वर्णमई शोभे हैं समस्त उत्तम रत्नकर शोभित सुन्द राकार हजारों मोतियोंकी माला तिनकर मंडित मनोहर हैं। मालावोंके मोती कैसे सोहे हैं मानों जलके बुदबुदा ही हैं अर घंटा झांझ मंजीरा मृदंग चमर तिनकर शोभित हैं चौगिरद कोट ऊंचे दरवाजे इत्यादि परम विभूति कर विराजमान हैं नाना रंगकी फरहरती ध्वजा स्वर्णके स्तंभ कर देदीप्यमान इन अकृत्रिम चैत्यालयोंकी शोभा कहां लग कहैं जिनका संपूर्ण वर्णन इन्द्रादिक देव भी न कर सकें है कांते! यह पांडुक वनके चैत्यालय मानों सुमेरुके मुकुट ही हैं अतिरमणीक है या भांति महाराणी पटराणियोंसे हनूमान वात करते जिनमंदिरोंकी प्रशंसा करते मंदिरके समीप आए विमानसे उतर महा हर्षित होय प्रदक्षिणा दई वहां श्रीभगवानके अकृत्रिम प्रतिबिंब सर्व अतिशय विराजमान महा ऐश्वर्यकर मंडित महा तेजपुंज देदी-प्यमान शरदके उज्ज्वल बादर तिनमें जैसे चंद्रमा सोहे तैसे सर्व लक्षणमंडित. हनूमान हाथ जोड़ रणवास स-हित नमस्कार करता भया। कैसा है हनूमान? जैसे ग्रहतारावोंके मध्य चंद्रमा सोहे तैसा राजा लोकके मध्य सोहे है जिनेंद्रके दर्शनकर उपजा है अतिहर्ष जिसको सो संपूर्ण स्त्रीजन अति आनंदको प्राप्त भई रोमांच होय आए नेत्र प्रफुल्लित भए विद्याधरी परम भक्तिकर युक्त सर्व उपकरणों सहित परम चेष्टाकी धरणहारी महापवित्र कुलविषै उपजी देवांगनाओंकी न्याईं अति अनुरागसे देवाधिदेवकी विधिपूर्वक पूजा करती भई महा पवित्र पद्मह्रद आदिकका जल अर महा सुगंध चंदन मुक्ताफलनिके अक्षत स्वर्णमई कमल तथा पद्मरागमणि मई तथा चंद्रकांति मणिमई तिनकर पूजा करती भई अर कल्पवृक्षनिके पुष्प अर अमृतरूप नैवेद्य अर महा ज्योतिरूप रत्नोंके दीप चढ़ाए अर मलयागिरि चंदन आदि महासुगंध जिनकर दशोदिशा सु-गंधमई होय रही हैं अर परम उज्ज्वल महा शीतल जल अर अगुरु आदि महापवित्र द्रव्योंकर उपजा जो धूप सो खेवती भई अर महा पवित्र अमृत फल चढ़ावती भई अर रत्नोंके चूर्णकर मण्डला माण्डती भई महा मनोहर अष्ट द्रव्योंसे पतिसहित पूजा करती भई। हनूमान राणीनिसहित भगवानकी पूजा करता कैसा सोहे है जैसा सौधर्म इन्द्र पूजा करता सोहे। कैसा है हनूमान जनेऊ पहिरे सर्व आभूषण पहिरे

महीन वस्त्र पहिरे महा पवित्र पापरहित बानरके चिन्हका है देदीप्यमान रत्नमई मुकुट जिसके महाप्रमोदका भरा फूल रहे हैं नेत्र कमल जिसके सुन्दर है बदन जिसका पूजाकर पापनिके नाश करणहारे स्तोत्र तिनकर सुर असुरोंके गुरु जिनेश्वर तिनके प्रतिबिंबकी स्तुति करता भया, सो पूजा करता अर स्तुति करता इन्द्रकी अप्सरावोंने देखा सो अति प्रशंसा करती भई अर यह प्रवीण वीण लेयकर जिनेन्द्रचन्द्रके यश गावता भया जे शुद्ध चित्त जिनेन्द्रकी पूजाविषैं अनुरागी हैं सब कल्याण तिनके समीप हैं तिनको कुछ ही दुर्लभ नहीं तिनका दर्शन मङ्गलरूप है उन जीवोंने अपना जन्म सुफल किया, जिन्होंने उत्तम मनुष्य देह पाय श्रावकके व्रत धर जिनवरविषैं दृढ़ भक्ति धारी अपने करविषैं कल्याणको धरा जन्मका फल तिन ही पाया हनूमानने पूजा स्तुति वन्दनाकर वीण वजाय अनेक राग गाय अद्भुत स्तुति करी यद्यपि भगवानके दर्शनसे बिछुरनेका नहीं है मन जिसका तथापि चैत्यालयविषैं अधिक न रह्या, मत कोई आच्छादन लागे तातैं जिनराजके चरण उरविषैं धर मंदिरसे बाहिर निकसा, विमानोंमें चढ़ हजारों स्त्रियोंकर संयुक्त सुमेरुकी प्रदक्षिणा दी, जैसे सूर्य देय तैसे श्रीशैल कहिए हनूमान सुन्दर हैं क्रिया जिसकी सो शैलराज कहिए सुमेरु उसकी प्रदक्षिणा देय समस्त चैत्यालयोंविषैं दर्शन कर भरतक्षेत्रकी ओर सन्मुख भया सो मार्गविषैं सूर्य अस्त होय गया अर संध्या भी सूर्यके पीछे विलय गई कृष्णपक्षकी रात्रि सो तारा रूप वधुवोंकर मंडित चन्द्रमारूप पति बिना न सोहती भई। हनूमानने तले उतर एक सुरदुन्दुभी नामा पर्वत वहां सेना सहित रात्रि व्यतीत करी,कमल आदि अनेक सुगंध पुष्पोंसे स्पर्श पवन आई उस कर सेनाके लोक सुखसे रहे जिनेश्वर देवकी कथा करतो किए रात्रिको आकाशसे देदीप्यमान एक तारा टूटा सो हनूमानने देखकर मनविषै विचारी हाय हाय इस संसार असार वनविषै देव भी कालवश है ऐसा कोई नहीं जो कालसे बचे विजुरीका चमत्कार अर जलकी तरङ्ग जैसे क्षणभंगुर हैं तैसे शरीर विनश्वर है इस संसारविषै इस जीवने अनंत भवविषै दुःखही भोगे, यह जीव विषयके सुखको सुख माने है सो सुख नहीं दुःखही है पराधीन है विषय क्षणभंगुर संसारविषै दुःख ही है सुख नहीं होय है, मोहका माहात्म्य है जो अनन्त काल जीव दुःख

भोगता भ्रमण करे है अनन्तावसर्पणी काल भ्रमणकर मनुष्य देह कभी कोई पावे है सो पायकर धर्मके साधन वृथा खोवे है यह विनाशीक सुखविषैं आसक्त होय महा संकट पावे है यह जीव रागादिकके वश भया वीतराग भावको नहीं जाने है यह इन्द्रिय जैन मार्गके आश्रय विना न जीते जायं यह इन्द्री चंचल कुमार्गके विषैं लगाय कर जीवोंको इस भव परभवविषैं दुःख देइ हैं जैसे मृग मीन अर पक्षी लोभके वशसे वधिकके जालमें पड़े हैं तैसे यह कामी क्रोधी लोभी जीव जिनमार्गको पाए विना अज्ञानके वशसे प्रपंचरूप पारधीके विछाए विषय रूप जालविषै पड़े हैं जो जीव आशीविष सर्प समान यह मन इन्द्री तिनके विषयोंमें रमे हैं सो मूढ़ अग्निविषै जरे हैं जैसे कोई एक दिन राज्यकर वर्ष दिन त्रास भोगवे तैसे यह मूढ़ जीव अल्पदिन विषयोंके सुख भोग अनन्त काल पर्यंत निगोदके दुःख भोगवे है जो विषयके सुखका अभिलाषी है सो दुःखोंका अधिकारी है, नरक निगोदके मूल यह विषय तिनको ज्ञानी न चाहें मोहरूप ठगका ठगा जो आत्मकल्याण न करे सो महा कष्टको पावे जो पूर्व भवविषै धर्म उपार्जे मनुष्य देह पाय धर्मका आदर न करे सो जैसे धन ठगाय कोई दुखी होय तैसे दुखी होय है अर देवोंके भी भोग भोगि यह जीव मरकर देवसे एकेंद्री होय है इस जीवके पाप शत्रु हैं अर कोई शत्रु मित्र नहीं अर यह भोग ही पापके मूल हैं इनसे तृप्ति न होय यह महा भयंकर हैं अर इनका वियोग निश्चय होयगा यह रहनेके नाहीं जो मैं इस राज्यको अर यह जो प्रियजन हैं तिनको तजकर तप न करूं तो अतृप्त भया सुभूमि चक्रवर्तीकी नाईं मरकर दुर्गतिको जाऊंगा अर यह मेरे स्त्री शोभायमान मृगनयनी सर्व मनोरथकी पूर्णहारी पतिव्रता स्त्रियों के गुणनिकर मंडित नव यौवन हैं सो अबतक मैं अज्ञानसे इनको तज न सका सो मैं अपनी भूलको कहां तक उराहना दूं । देखो ! मैं सागर पर्यन्त स्वर्गविषै अनेक देवांगना सहित रमा अर देवसे मनुष्य होय इस क्षेत्रविषैं भया सुन्दर स्त्रियों सहित रमा परन्तु तृप्त न भया जैसे ईंधनसे अग्नि तृप्त न होय अर नदियोंसे समुद्र तृप्त न होय तैसे यह प्राणी नाना प्रकारके विषय सुख तिनकर तृप्त न होय मैं नाना प्रकारके जन्म तिनविषैं भ्रमणकर खेद खिन्न भया । रे मन ! अब तू शांतताको प्राप्त होहु कहा व्याकुल होय रहा है

क्या तैंने भयंकर नरकोंके दुःख न सुने जहां रौद्रध्यान हिंसक जीव जाय हैं जिन नरकोंविषैं महा तीव्र वेदना असिपत्र वन वैतरणी नदी संकटरूप है सकल भूमि जहां? रे मन। तू नरकसे न डरे है रागद्वेष कर उपजे जे कर्म कलंक तिनको तपकर नाहिं खिपावे है तेरे एते दिन योंही वृथा गए विषय सुखरूप कूपविषैं पड़ा अपने आत्माको भव पिंजरसे निकास। पाया है जिनमार्गविषैं बुद्धिका प्रकाश तैंने तू अनादि कालका संसार भ्रमणसे खेदखिन्न भया अब अनादिके बंधे आत्माको छुड़ाय। हनूमान ऐसा निश्चयकर संसार शरीर भोगोंसे उदास भया जाना है यथार्थ जिनशासनका रहस्य जिसने जैसे सूर्य मेघरूप पटलसे रहित महा तेजरूप भासै तैसे मोह पटलसे रहित भासता भया जिस मार्ग होय जिनवर सिद्ध पदको सिधारे उस मार्गविषैं चलिवेको उद्यमी भया ॥

इतिश्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषा वचनिकाविषै हनूमानका वैराग्य चिंतवन वर्णन करनेवाला एकसौ वारहवा पर्व पूर्ण भया ॥११२

अथानन्तर—रात्रि व्यतीत भई सोला वानीके स्वर्ण समान सूर्य अपनी दीप्तिकर जगतविषैं उद्योत करता भया जैसे साधु मोक्षमार्गका उद्योत करे नक्षत्रोंके गण अस्त भए अर सूर्यके उदयकर कमल फूले जैसे जिनराजके उद्योतकर भव्य जीवरूप कमल फूले। हनूमान महा वैराग्यका भरा जगतके भोगोंसे विरक्त मंत्रियोंसे कहता भया जैसे भरत चक्रवर्ती पूर्व तपोवनको गए तैसे हम जावेंगे तब मंत्री प्रेमके भरे परम उद्वेगको प्राप्त होय नाथसे विनती करते भए हे देव! हमको अनाथ न करो प्रसन्न होवो हम तिहारे भक्त हैं हमारा प्रतिपालन करो तब हनूमानने कही तुम यद्यपि निश्चयकर मेरे आज्ञाकारी हो तथापि अनर्थके कारण हो हितके कारण नहीं जो संसार समुद्रसे उतरै अर उसे पीछे सागरमें डारें ते हितू कैसे? निश्चय थकी उनको शत्रुही कहिए जब या जीवने नरकके निवासविषैं महादुःख भोगे तब माता पिता मित्र भाई कोई ही सहाई न भया। यह दुर्लभ मनुष्य देह अर जिनशासनका ज्ञान पाय बुद्धिमानोंको प्रमाद करना उचित नहीं अर जैसे राज्य भोगसे मेरे अप्रीति भई तैसे तुमसे भी भई यह कर्म जनित ठाठ सर्व विनाशीक है निसंदेह हमारा तिहारा वियोग होयगा जहां संयोग है तहां वियोग है सुर नर अर इनके अधिपति इन्द्र

नरेंद्र यह सब ही अपने अपने कर्मोंके आधीन हैं कालरूप दावानल कर कौन २ भस्म न भए। मैं सागरा पर्यंत अनेक भव देवोंके सुख भोगे परन्तु तृप्त न भया जैसे सूके ईंधनकर अग्नि तृप्त न होय। गति जाति शरीर इनका कारण नाम कर्म है जाकर ये जीव गति गतिविषैं भ्रमण करे हैं सो मोहका बल महाबलवान है जाके उदयकर यह शरीर उपजा है सो न रहेगा यह संसार वन महाविषम है जाविषैं ये प्राणी मोहको प्राप्त भए भवसंकट भोगे हैं उसे उलंघकर में जन्मजरा मृत्यु रहित जो पद तहां गया चाहूं हूं यह बात हनूमानने मंत्रियोंसे कही सो रणवासकी स्त्रियोंने सुनी उसकर खेदखिन्न होय महारुदन करती भईं। जे समझाने विषै समर्थ ते उनको शांतचित्त करी कैसे हैं समझावनहारे नाना प्रकारके वृत्तांतविषै प्रवीण अर हनूमान् निश्चल है चित्त जाका सो अपने बड़े पुत्रको राज्य देय अर सबोंको यथा योग्य विभूति देय रत्नोंके समूह कर युक्त देवोंके विमान समान जो अपना मन्दिर उसे तजकर निकसा। स्वर्ण रत्नमई देदीप्यमान जो पालकी तापर चढ़ चैत्यवान् नामा वन तहां गया सो नगरके लोक हनूमानकी पालकी देख सजल नेत्र भये पालकीपर ध्वजा फरहरे हैं चमरोंकर शोभित हैं मोतियोंकी झालरियोंकर मनोहर है हनूमान वनविषैं आया। सो वन नाना प्रकारके वृक्षोंकर मंडित अर जहां सूवा मैना मयूर हंस कोयल भ्रमर सुन्दर शब्द करे हैं अर नाना प्रकारके पुष्पोंकर सुगंध है वहां स्वामी धर्मरत्न संयमी धर्म रूप रत्नकी राशि उत्तम योगीश्वर जिनके दर्शनसे पाप विलाय जावैं ऐसे सन्त चारण मुनि अनेक चारण मुनियोंकर मंडित तिष्ठते थे। आकाशविषै है गमन जिनका सो दूरसे उनको देख हनूमान पालकीसे उतरा महा भक्तिकर युक्त नमस्कार कर हाथ जोड़ कहता भया—हे नाथ मैं शरीरादिक परद्रव्योंसे निर्ममत्व भया यह परमेश्वरी दीक्षा आप मुझे कृपाकर देवो। तब मुनि कहते भए—अहो भव्य! तैंने भली विचारी तू उत्तम जन है जिनदीक्षा लेहु। यह जगत असार है शरीर विनश्वर है शीघ्र आत्मकल्याण करो अविनश्वर पद लेवेकी परमकल्याणकारिणी बुद्धि तुम्हारे उपजी है यह बुद्धि विवेकी जीवके ही उपजे है ऐसी मुनिकी आज्ञा पाय मुनिको प्रणामकर पद्मासन धर तिष्ठा मुकुट कुण्डल हार आदि सर्व आभूषण डारे अर वस्त्र डारे जगतसे मनका

राग निवारा, स्त्रीरूप बन्धन तुड़ाय ममता मोह मिटाय आपको स्नेहरूप पाशसे छुड़ाय विष समान विषय सुख तजकर वैराग्यरूप दीपकको शिखाकर रागरूप अन्धकार निवारकर शरीर अर संसारको असार जान कमलोंको जीतैं ऐसे सुकुमार जे कर तिनकर सिरके केश लौंच करता भया समस्त परिग्रहसे रहित होय मोक्षलक्ष्मीको उद्यमी भया महाव्रत धरे असंयम परहरे हनूमानकी लार साढे सातसौ बड़े राजा विद्याधर शुद्ध चित्त विद्युद्गतिको आदि दे हनूमानके परम मित्र अपने पुत्रोंको राज्य देय अठाईस मूल गुण धार योगीन्द्र भए अर हनूमानकी रानी अर इन राजावोंकी राणी प्रथम तो वियोगरूप अग्निकर तप्तायमान विलाप करती भईं फिर वैराग्यको प्राप्त होय बन्धुमति नामा आर्यिकाके समीप जाय महा भक्ति कर संयुक्त नमस्कारकर आर्यिकाके व्रत धारती भईं। वे महाबुद्धिवन्तो शीलवन्ती भव भ्रमणके भयसे आभूषण डार एक सुफेद वस्त्र राखती भईं शील ही है आभूषण जिनके तिनको राज्यविभूति जीर्ण तृण समान भासती भई अर हनूमान महाबुद्धिमान महातपोधन महापुरुष संसारसे अत्यन्त विरक्त पच महाव्रत पंचसमिति तीन गुप्ति धार शैल कहिए पर्वत उससे भी अधिक, श्रीशैल कहिये हनूमान राजा पवनके पुत्र चारित्रविषै अचल होते भए तिनका यश निर्मल इन्द्रादिक देव गावें वारम्बार वन्दना करें अर वड़े २ राजा कीर्ति करें निर्मल है आचरण जिनका, ऐसा सर्वज्ञ वीतराग देवका भाषा निर्मल धर्म आचास्था सो भवसागरके पार भया वे हनूमान महामुनि पुरुषोविषै सूर्य समान तेजस्वी जिनेंद्रदेवका धर्म आराध ध्यान अग्निकर अष्ट कर्मकी समस्त प्रकृति ईन्धनरूप तिनको भस्मकर तुङ्गिगिरिके शिखरसे सिद्ध भए। केवलज्ञान केवल दर्शन आदि अनन्त गुणनई सदा सिद्ध लोकविषै रहैंगे ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषा वचनिकाविषै हनूमानका निर्वाण गमन वर्णन करनेवाला एकसौ तेरहवां पर्व पूर्ण भया ॥ ११३ ॥

अथानन्तर—राम सिंहासनपर विराजे थे लक्ष्मणके आठों पुत्रोंका अर हनूमानका मुनि होना मनुष्योंके मुखसे सुनकर हंसे अर कहते भए इन्होंने मनुष्य भवके क्या सुख भोगे। यह छोटी अवस्थामें ऐसे

भोग तजकर योग धारण करे हैं सो वड़ा आश्चर्य है यह हठरूप ग्राहकर ग्रहे हैं देखो ! ऐसे मनोहर काम भोग तज विरक्त होय वैठे हैं या भांति कही यद्यपि श्रीराम सम्यक्दृष्टि ज्ञानी हैं तथापि चारित्र मोहके वश कइएक दिन लोकोंकी न्याईं जगतविषैं रहते भये संसारके अल्पसुख तिनविषैं राम लक्ष्मण न्याय सहित राज्य करते भये। एक दिन महाज्योतिका धारक सोधर्म इन्द्र परम ऋद्धिकर युक्त महाधीय अर गम्भीरताकर मंडित नाना अलंकार धरे सामान्य जातिके देव जे गुरुजन तुल्य अर लोकपाल जातिके देव देशपाल तुल्य अर त्रयस्त्रिंशत् जातिके देव मंत्री समान तिनकर मंडित तथा अन्य सकल देव सहित इन्द्रासनविषै वैठे कैसे सोहैं जैसे सुमेरु पर्वत और पर्वतोंके मध्य सोहै महातेज पुंज अद्भुत रत्नोंका सिंहासन उसपर सुखसे विराजता ऐसा भासै जैसे सुमेरुके ऊपर जिनराज भासें। चन्द्रमा अर सूर्यकी ज्योतिको जीतें ऐसे रत्नोंके आभूषण पहिरे सुन्दर शरीर मनोहर रूप नेत्रोंको आनन्दकारी जैसी जलकी तरंग निर्मल तैसा प्रभाकर युक्त हार पहिरे ऐसा सोहै मानों शीतोदा नदीके प्रवाहकर युक्त निषधाचल पर्वत ही है मुकुट कंठाभरण कुण्डल केयूर आदि उत्तम आभूषण पहिरे देवोंकर मंडित जैसा नक्षत्रोंकर चन्द्रमा सोहै तैसा सोहै है। अपने मनुष्य लोकविषैं चन्द्रमा नक्षत्र ही भासैं तातैं चन्द्रमा नक्षत्रोंका दृष्टान्त दिया है चन्द्रमा नक्षत्र जोतिषी देव हैं तिनसे स्वर्गवासी देवोंकी अति अधिक ज्योति है अर सब देवोंसे इन्द्रकी ही अधिक है अपने तेजकर दशोंदिशा विषै उद्योत करता सिंहासनविषैं तिष्ठता जैसा जिनेश्वर भासे तैसा भासे इन्द्रके इन्द्रासनका अर सभाका जो समस्त मनुष्य जिह्वा कर सैकड़ों वर्ष लग वर्णन करें तौभी न कर सकें सभाविषैं इन्द्रके निकट लोकपाल सब देवनिविषै मुख्य हैं सुन्दर हैं चित्त जिनके स्वर्गसे चयकर मनुष्य होय मुक्ति जावे हैं सोलह स्वर्गके वारह इन्द्र हैं एकएक इन्द्रके चार चार लोकपाल एक भवधारी हैं अर इन्द्रनिविषैं सौधर्म सनत्कुमार महेंद्र लांतवेंद्र शतारेन्द्र आरणेंद्र यह षट् एक भवधारी हैं अर शची इन्द्राणी लोकांतिक देव पंचम स्वर्गके तथा सर्वार्थसिद्धिके अहमिंद्र मनुष्य होय मोक्ष जावें हैं सो सौधर्म इन्द्र अपनी सभाविषैं अपने समस्त देवनिकर युक्त वैठा लोकपालादिक अपने अपने स्थानक वैठे सो इन्द्र शास्त्रका

व्याख्यान करते भए वहां प्रसंग पाय यह कथन किया अहो देवो। तुम अपने भावरूप पुष्प निरन्तर महा भक्तिकर अर्हंत देवको चढ़ावो अर्हंतदेव जगत्का नाथ है समस्त दोषरूप वनके भस्म करिवेको दावानल समान है जिसने संसारका कारण मोहरूप महा असुर अत्यन्त दुर्जय ज्ञान कर मारा, वह असुर जीवोंका वड़ा वैरी निर्विकल्प सुखका नाशक हैं अर भगवान् वीतराग भव्य जीवोंको संसार समुद्रसे तारिवे समर्थ है संसार समुद्र कषायरूप उग्र तरंग कर व्याकुल है कामरूप ग्राह कर चंचलतारूप, मोहरूप मगर कर मृत्युरूप है ऐसे भवसागरसे भगवान् बिना कोई तारिवे समर्थ नहीं। कैसे हैं भगवान्? जिनको जन्म कल्याणकविषैं इन्द्रादिक देव सुमेरुगिरि ऊपर क्षीरसागरके जल कर अभिषेक करावे हैं अर महा भक्तिकर एकाग्रचित्त होय परिवार सहित पूजा करे हैं धर्म अर्थ काम मोक्ष यह चारों पुरुषार्थ हैं तिनविषै लगा है चित्त जिनका जिनेंद्रदेव पृथिवीरूप स्त्रीको तजकर सिद्ध रूप वनिताको वरते भए। कैसी है पृथिवी रूप स्त्री? विंध्याचल अर कैलाश हैं कुच जिसके अर समुद्रकी तरंग हैं कटिमेखला जिसके ये जीव अनाथ महा मोहरूप अन्धकार कर आच्छादित तिनको वे प्रभु स्वर्ग लोकसे मनुष्य लोकविषैं जन्म धर भवसागरसे पार करते भए अपने अद्भुतानन्तवीर्य कर आठों कर्मरूप वैरी क्षणमात्रविषै खिपाए जैसे सिंह मदोन्मत्त हस्तियोंको नसावै भगवान् सर्वज्ञदेवको अनेक नामकर भव्य जीव गावे हैं जिनेंद्र भगवान् अर्हंत स्वयंभू शंभू स्वयंप्रभ सुगत शिवस्थान महादेव कालंजर हिरण्यगर्भ देवाधिदेव ईश्वर महेश्वर ब्रह्मा विष्णु बुद्ध वीतराग विमल विपुल प्रबल धर्मचक्री प्रभु विभु परमेश्वर परम ज्योति परमात्मा तीर्थंकर कृतकृत्य कृपालु संसारसूदन सुर ज्ञानचक्षु भवांतक इत्यादि अपार नाम योगीश्वर गावे हैं अर इन्द्र धरणीन्द्र चक्रवर्ती भक्तिकर स्तुति करे हैं जो गोप्य हैं अर प्रकट हैं जिनके नाम सकल अर्थ संयुक्त हैं जिसके प्रसाद कर यह जीव कर्मसे छूटकर परम धामको प्राप्त होय है जैसा जीवका स्वभाव है तैसा वहां रहे है जो स्मरण करै उसके पाप विलाय जायं वह भगवान पुराण पुरुषोत्तम परम उत्कृष्ट आनन्दकी उत्पत्तिका कारण महा कल्याणका मूल देवनिके देव उसके तुम भक्त होवो अपना कल्याण चाहो हो तो अपने हृदय कमलविषैं

जिनराजको पधरावो, यह जीव अनादि निधन है कर्मोंका प्रेरा भववनविषैं भटके है सव जन्मविषैं मनुष्य भव दुर्लभ है सो मनुष्य जन्म पायकर जे भूले हैं तिनको धिक्कार है चतुर्गति रूप है भ्रमण जिसविषैं ऐसा संसाररूप समुद्र उसमें वहुरि कव वोध पावोगे। जे अर्हंतका ध्यान नहीं करे हैं अहो धिक्कार उनको, जे मनुष्य देह पाय कर जिनेंद्रको न जपे हैं जिनेंद्र कर्मरूप वैरीका नाश करणहारा उसे भूल पापी नाना योनिविषैं भ्रमण करे हैं कभी मिथ्या तपकर क्षुद्र देव होय हैं वहुरि मरकर स्थावर योनिविषै जाय महा कष्ट भोगे हैं यह जीव कुमार्गके आश्रयकर महा मोहके वश भए इन्द्रोंका इन्द्र जो जिनेंद्र उसे नहीं ध्यावे हैं देखो मनुष्य होयकर मूर्ख विषयरूप मांसके लोभी मोहिनी कर्मके योगकर अहंकार ममकारको प्राप्त होय हैं जिन दीक्षा नहीं धरे हैं मंदभागियोंके जिन दीक्षा दुर्लभ है कभी कुतपकर मिथ्यादृष्टि स्वर्गसे आन उपजे हैं सो हीन देव होय पश्चात्ताप करे हैं कि हम मध्य लोक रत्नद्वीप विषें मनुष्य भए थे सो अर्हन्तका मार्ग न जाना अपना कल्याण न किया मिथ्या तपकर कुदेव भए हाय हाय धिक्कार उन पापियोंको जो कुशास्त्रकी प्ररूपणाकर मिथ्या उपदेश देय महा मानके भरे जीवोंको कुमार्गविषै डारे हैं मूढ़ोंको जिनधर्म दुर्लभ है तातैं भव भवविषैं दुखी होय हैं अर नारकी तिर्यंच तो दुखी ही हैं अर हीन देव भी दुखो ही हैं अर वड़ी ऋद्धिके धारी देव भी स्वर्गसे चये हैं सो मरणका वड़ा दुःख है अर इष्ट वियोगका वड़ा दुःख है वड़े देवोंकी भी यह दशा तो और क्षुद्रोंकी क्या वात जो मनुष्य देहविषैं ज्ञान पाय आत्मकल्याण करे हैं सो धन्य हैं। इन्द्र या भांति कहकर वहुरि कहता भया ऐसा दिन कव होय जो मेरी स्वर्ग लोकविषैं स्थिति पूर्ण होय अर मैं मनुष्य देह पाय विषयरूप वैरियोंको जीत कर्मोंका नाशकर तपके प्रभावसे मुक्ति पाऊं तव एक देव कहता भया यहां स्वर्गविषैं तो अपनी यही वुद्धि होय है परन्तु मनुष्य देह पाय भूल जाय हैं जो कदाचित् मेरे कहेकी प्रतीति न करो तो पंचम स्वर्गका ब्रह्मेन्द्रनामा इन्द्र अव रामचन्द्र भया है सो यहां तो योंही कहते थे अर अव वैराग्यका विचार ही नहीं तव शचीका पति सौधर्म इन्द्र कहता भया सव वन्धनमें स्नेहका वड़ा वन्धन है जो हाथ पग कंठ आदि अंग २ वंधा होय सो तो छूटे

परन्तु स्नेहरूप बन्धन कर बंधा कैसे छूटे स्नेहका बंधा एक अंगुल न जाय सके रामचन्द्रके लक्ष्मणसे अति अनुराग है लक्ष्मणके देखे बिना तृप्ति नाहीं अपने जीवसे भी उसे अधिक जाने है एक निमिष मात्र भी लक्ष्मणको न देखे तो रामका मन विकल होय जाय सो लक्ष्मणको तजकर कैसे वैराग्यको प्राप्त होय कर्मोंकी ऐसी ही चेष्टा है जो बुद्धिमान भी मूर्ख होय जाय है, देखे सुने हैं अपने सर्व भव जिसने ऐसा विवेकी राम भी आत्महित न करे। अहो देव हो! जीवोंके स्नेहका बड़ा बन्धन है या समान और नाहीं तातै सुबुद्धियोंको स्नेह तज संसार सागर तरिवेका यत्न करना चाहिए, या भांति इन्द्रके मुखका उपदेश तत्वज्ञानरूप अर जिनवरके गुणोंके अनुरागसे अत्यन्य पवित्र उसे सुनकर देव चित्तकी विशुद्धताको पाय जन्म जरा मरणके भयसे कंपायमान भए मनुष्य मुक्ति पायवेकी अभिलाषा करते भए ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषावचनिकाविषै इन्द्रका देवनिकू उपदेश वर्णन करनेवाला एकसौ चौदहवां पर्व पूर्ण भया ॥११४॥

अथानन्तर—इन्द्र सभासे उठे तव सुर कहिए कल्पवासी देव अर असुर कहिये भवनवासी विंतर ज्योतिषी देव इन्द्र नमस्कारकर उत्तम भावधर अपने अपने स्थानक गए,पहिले दूजे स्वर्ग लग भवनवासी विंतर ज्योतिषीदेव कल्पवासी देवोंकर ले गए जाय हैं सो सभामेंके दो स्वर्गवासी देव रत्नचूल अर मृगचूल बलभद्रनारायणके स्नेह परखिवेको उद्यमी भए, मनविषै यह धारणा करी ते दोनों भाई परस्पर प्रेमके भरे कहिए है। देखें उन दोनोंकी प्रीति। रामके लक्ष्मणसे एता स्नेह है जाके देखे बिना न रहैं सो रामका मरण भए लक्ष्मणकी क्या चेष्टा होय? लक्ष्मण शोककर विह्वल भया चेष्टा करै सो क्षण एक देखकर आवेंगे शोककर लक्ष्मणका कैसा मुख हो जाय कौनसे कोप करे क्या कहे ऐसी धारणाकर दोनों दुराचारी देव अयोध्या आए सो रामके महिलविषैं विक्रियाकर समस्त अन्तःपुरकी स्त्रिनिका रुदन शब्द कराया अर ऐसी विक्रिया करी द्वारपाल उमराव मन्त्री पुरोहित आदि नीचा मुखकर लक्ष्मणपै आए अर रामका मरण कहते भए, कि हे नाथ! राम परलोक पधारे ऐसे वचन सुनकर लक्ष्मणने मन्दपवनकर चपल जो नील कमल ता समान सुन्दर हैं नेत्र जाके सो हाय यह शब्द हू आधासा कह तत्काल ही प्राण तजे, सिं-

हासन ऊपर बैठा हुता सो वचनरूप वज्रपातका मारा जीवरहित होय गया आंखकी पलक ज्यों थी त्योंही रह गई जीव जाता रहा शरीर अचेतन रह गया लक्ष्मणको भ्राताकी मिथ्या मृत्युके वचनरूप अग्निकर जरा देख दोनों देव व्याकुल भए लक्ष्मणके जिवायवेको असमर्थ तव विचारी याकी मृत्यु इस ही विधि कही हुती मनविषै अति पछताए विषाद अर आश्चर्यके भरे अपने स्थानक गए शोकरूप अग्निकर तप्तायमान है चित्त जिनका लक्ष्मणकी वह मनोहर मूर्ति मृतक भई देव देख न सके तहां खड़े न रहे निन्द्य है उद्यम जिनका। गौतम स्वामी राजा श्रेणिकसे कहे हैं—हे राजन्! विना विचारे जे पापी कार्य करें तिनको पश्चात्ताप ही होय। देवता गए अर लक्ष्मणकी स्त्री पतिको अचेतनरूप देख प्रसन्न करनेको उद्यमी भईं कहे हैं—हे नाथ! किस अविवेकिनी सौभाग्यके गर्वकर गर्वितने आपका मान न किया सो उचित न करी हे देव! आप प्रसन्न होवो तिहारी अप्रसन्नता हमको दुःखका कारण ऐसा कहकर वे परम प्रेमकी भरी लक्ष्मणके अंगसे आलिंगनकर पांयन पड़ीं वे राणी चतुराईके वचन कहिवेविषै तत्पर कोई यक तो वीणा लेय वजावती भई कोई मृदंग वजावती भई पतिके गुण अत्यन्त मधुर स्वरसे गावती भई पतिके प्रसन्न करिवेविषै उद्यमी है चित्त जिनका कोई एक पतिका मुख देखे है अर पतिके वचन सुनिवेकी है अभिलाषा जिनके, कोई एक निर्मल स्नेहकी धरणहारी पतिके तनुसे लिपटकर कुण्डलकर मंडित महासुन्दर कांतके कपोलोंको स्पर्शती भई अर कोई एक मधुरभाषिणी पतिके चरण कमल अपने सिरपर मेलती भई अर कोई मृगनयनी उन्मादकी भरी विभ्रमकर कटाक्षरूप जे कमल पुष्प तिनका सेहरा रचती भई जम्भाई लेती पतिका वदन निरखती अनेक चेष्टा करती भई। या भांति यह उत्तम स्त्री पतिके प्रसन्न करिवेको अनेक यत्न करे हैं परन्तु उनके यत्न अचेतन शरीर विषैं निरर्थक भए वे समस्त राणी लक्ष्मणकी स्त्री ऐसे कंपायमान हैं जैसे कमलोंका वन पवन कर कंपायमान होय। नाथकी यह अवस्था होते संते स्त्रियोंका मन अति व्याकुल भया संशयको प्राप्त भईं कि क्षणमात्रमें यह क्या भया चिंतवनमें न आवे अर कथनमें न आवे ऐसा खेदका कारण शोक उसे मनमें धर कर वे मुग्धा मोहकी मारी पसर गईं इन्द्रकी इन्द्राणी स-

मान है चेष्टा जिनकी ऐसी वे राणी तापकर तप्तायमान शूक गईं न जानिए तिनकी सुन्दरता कहां जाती रही। यह वृत्तांत भीतरके लोकोंके मुखसे सुन श्रीरामचन्द्र मंत्रियों कर मंडित महा संभ्रमके भरे भाईपै आए भीतर राजलोकमें गए लक्ष्मणका मुख प्रभातके चन्द्रमा समान मन्दकांति देखा जैसा तत्कालका वृक्ष मूलसे उखड़ पड़ा होय तैसा भाईका देखा मनमें चितवते भए यह क्या भया बिना कारण भाई आज मोसे रूसा है यह सदा आनन्द रूप आज क्यों विषाद रूप होय रहा है स्नेहके भरे शीघ्र ही भाईके निकट जाय उसको उठाय उरसे लगाय मस्तक चूमते भए। दाहेका मारा जो वृक्ष उस समान हरिको निरख हलधर अंगसे लपट गया यद्यपि जीतव्यताके चिन्हरहित लक्ष्मणको देखा तथापि स्नेहके भरे राम उसे मूवा न जानते भए वक्र होय गई है ग्रीवा जिसकी शीतल होय गया है अङ्ग जिसका जगत्‌की आगल ऐसी भुजा सो शिथिल होय गई सांसोस्वास नहीं नेत्रोंकी पलक लगे न विघटे। लक्ष्मणकी यह अवस्था देख राम खेदखिन्न होय कर पसेवसे भर गए। यह दीनोंके नाथ राम दीन होय गये वारम्वार मूर्छा खाय पड़े आंसुवों कर भर गए हैं नेत्र जिनके भाईके अङ्ग निरखे इसके एक नखकी भी रेखा न आई कि ऐसा यह महावली कौन कारणकर ऐसी अवस्थाको प्राप्त भया यह विचार करते संते भया है कंपायमान शरीर जिनका यद्यपि आप सर्व विद्याके निधान तथापि भाईके मोहकर विद्या बिसर गई, मूर्छाका यत्न जानें ऐसे वैद्य बुलाए मन्त्र औषधिविषै प्रवीण कलाके पारगामी ऐसे वैद्य आये सो जीवता होय तो कछु यत्न करें वे माथा धुन नीचे होय रहे तब राम निराश होय मूर्छा खाय पड़े जैसे वृक्षकी जड़ उखड़ जाय अर वृक्ष गिर पड़े तैसे आप पड़े। मोतियोंके हार चन्दन कर मिश्रित जल ताड़के बीजनावोंकी पवनकर रामको सचेत किया तब महा विह्वल होय विलाप करते भये शोक अर विषादकर महा पीड़ित राम आँसुवोंके प्रवाह कर अपना मुख आच्छादित करते भये आंसुओं कर आच्छादित रामका मुख ऐसा भासै जैसा जल धारा कर आच्छादित चन्द्रमा भासे अत्यन्त विह्वल रामको देख सर्वराजलोकरूप समुद्रसे रुदन रूप ध्वनि प्रकट होती भई दुःख रूप सागरविषै मग्न सकल स्त्री जन अत्यर्थपणे रुदन करती भईं तिनके शब्द कर दशों दिशा पूर्ण

भई कैसे विलाप करे हैं हाय नाथ ! पृथिवीको आनन्दके कारण सर्व सुन्दर हमको वचन रूप दान देवो तुमने विना अर्थ क्यों मौन पकड़ी हमारा अपराध क्या विना अपराध हमको क्यों तजो हो तुम तो ऐसे दयालु हो जो अनेक चूक पड़े तो क्षमा करो ॥

अथानन्तर—इस प्रस्ताव विषै लव अर अंकुश परमविषादको प्राप्त होय विचारते भए कि धिक्कार इस संसार असारको अर इस शरीर समान और क्षणभंगुर कौन जो एक निमिष मात्रमें मरणको प्राप्त होय। जो वासुदेव विद्याधरोंकर न जीता जाय सो भी कालके जालमें आय पड़ा इसलिए यह विनश्वर शरीर यह विनश्वर राज्य संपदा उसकर हमारे क्या सिद्धि ? यह विचार सीताके पुत्र फिर गर्भमें आयवेका है भय जिनको, पिताके चरणारविन्दको नमस्कार कर महेन्द्रोदय नामा उद्यान विषै जाय अमृतेश्वर मुनिकी शरण लेय दोनों भाई महाभाग्य मुनि भए जब इन दोनों भाइयोंने दीक्षा धरी तब लोक अति-व्याकुल भए कि हमारा रक्षक कौन ? रामको भाईके मरणका बड़ा दुःख सो शोकरूप भंवरमें पड़े जिनको पुत्र निकसनेकी कुछ सुध नहीं रामको राज्यसे पुत्रोंसे प्रियायोंसे अपने प्राणसे लक्ष्मण अति-प्यारा यह कर्मोंकी विचित्रता जिसकर ऐसे जीवोंकी ऐसी अशुभ अवस्था होय ऐसा संसारका चरित्र देख ज्ञानी जीव वैराग्यको प्राप्त होय हैं जो उत्तम जन हैं तिनके कछु इक निमित्त मात्र बाह्य कारण देख अंतरंगके विकारभाव दूर होय ज्ञान रूप सूर्यका उदय होय है पूर्वोपार्जित कर्मोंका क्षयोपशम होय तब वैराग्य उपजे है ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषावचनिकाविषै लवणांकुशका वैराग्य वर्णन करनेवाला एकसौ पन्द्रहवा पर्व पूर्ण भया ॥११५॥

अथानन्तर—गौतम स्वामी राजा श्रेणिकसे कहे हैं—हे भव्योत्तम ! लक्ष्मणके काल प्राप्त भए समस्त लोक व्याकुल भए अर युगप्रधान जो राम सो अति व्याकुल होय सब बातोंसे रहित भए कछु सुध नहीं लक्ष्मणका शरीर स्वभाव ही कर महासुरूप कोमल सुगंध मृतक भया तो जैसेका तैसा सो श्रीराम लक्ष्मणको एक क्षण न तजें कबहूं उरसे लगाय लेंय कभी पपोलें कभी चूंवें कबहूं इसे लेकर आप बैठ

जावें कभी लेकर उठ चलें एक क्षण काहूका विश्वास न करें एक क्षण न तजें जैसे बालकके हाथ अमृत आवै अर वह गाढ़ा गाढ़ा गहे तैसे राम महाप्रिय जो लक्ष्मण उसको गाढ़ा २ गहैं। अर दीनोंकी नाईं विलाप करैं हाय भाई ! यह तोहि कहा योग्य जो मुझे तजकर तैंने अकेले भाजिवेकी बुद्धि करी। मैं तेरा विरह एक क्षण सहारवे समर्थ नाहीं यह बात तू कहा न जाने है ? तू तो सब बातोंविषैं प्रवीण है अब मोहि दुःखके सागरविषैं डारकर ऐसी चेष्टा करै है हाय भ्रात। यह क्या क्रूर उद्यम किया जो मेरे बिना जाने मेरे विना पूछै कूचका नगारा बजाय दिया। हे वत्स ! हे बालक ! एक बार मुझे वचनरूप अमृत प्याय, तू तो अति विनयवान् हुता विना अपराध मोसे क्यों कोप किया हे मनोहर। अब तक कभी मोसे ऐसा मान न किया अब कछु और ही होय गया। कह मैंने क्या किया जो तू रूसा तू सदा ऐसा विनय करता मुझे दूरसे देख उठ खड़ा होय सन्मुख आवता मोहि सिंहासन ऊपर वैठावता आप भूमिमें वेठता अब कहा दशा भई, मैं अपना सिर तेरे पांयनमें दूं तौभी नहीं बोले है तेरे चरण कमल चन्द्रकांति मणिसे अधिक ज्योतिको धरे जो नखोंकर शोभित देव विद्याधर सेवे हैं। हे देव। अब शीघ्र ही उठो मेरे पुत्र वनको गये सो दूर न गए हैं तिनको हम तुरतही उलट लावें अर तुम विना यह तिहारी राणी आर्त्तध्यानकी भरी कुरचीकी नाईं कल कलाट करे हैं तुम्हारे गुणरूप पाशसों वंधी पृथिवीमें लोटी लोटी फिरे हैं तिनके हार विखर गए हैं अर सीस फूल चूड़ामणि कटिमेखला कर्णाभरण विखरे फिरे हैं यह महा विलापकर रुदन करै हैं अति आकुल हैं इनको रुदनसे क्यों न निवारो अब मैं तुम विना कहा करूं कहां जाऊं ? ऐसा स्थानक नाहीं जहां मोहि विश्राम उपजे अर यह तिहारा चक्र तुमसे अनुरक्त इसे तजना तुमको कहा उचित अर तिहारे वियोगमें मोहि अकेला जान यह शोकरूप शत्रु दबावे हैं अब मैं हीनपुण्य कहा करूं ? मोहि अग्नि ऐसे न दहै अर ऐसा विष कंठको न सोखै जैसा तिहारा विरह सोखै है। अहो लक्ष्मीधर, क्रोध तज घनी वेर भई अर तुम ऐसे धर्मात्मा त्रिकालसामयिकके करणहारे जिनराजकी पूजामें निपुण सो सामयिकका समय टला पूजाका समय टला अब मुनिनिके आहार देयवेकी वेला है सो उठो। तुम

सदा साधुनिके सेवक ऐसा प्रमाद क्यों करो हो, अब यह सूर्य भी पश्चिम दिशाको आया कमल सरोवर में मुद्रित होय गए तैसे तिहारे दर्शन विना लोकोंके मन मुद्रित होय गये या प्रकार विलाप करते २ दिन व्यतीत भया निशा भई तब राम सुन्दर सेज बिछाय भाईको भुजावोंमें लेय सूते, किसीका विश्वास नाहीं रामने सब उद्यम तजे एक लक्ष्मणमें जीव, रात्रिको कानोंविषैं कहे हैं—हे देव। अब तो मैं अकेला हूं तिहारे जीवकी बात मोहि कहो तुम कौन कारण ऐसी अवस्थाको प्राप्त भये हो तिहारे वदन चन्द्रमातैं अतिमनोहर अब कांतिरहित क्यों भासे है अर तिहारे नेत्र मंद पवनकर चंचल जो नील कमल उस समान अब और रूप क्यों भासे है अहो तुमको कहा चाहिए सो ल्याऊं, हे लक्ष्मण! ऐसी चेष्टा करनी तुमको सोहै नाहीं, जो मनविषैं होय सो मुखकर आज्ञा करो, अथवा सीता तुमको याद आई होय वह पतिव्रता अपने दुखविषैं सहाय थी सो तो अब परलोक गई तुमको खेद करना नाहीं, हे धीर! विषाद तजो विद्याधर अपने शत्रु हैं सो छिद्र देख आए अब अयोध्या लुटेगी तातैं यत्न करना होय सो करो अर हे मनोहर! तुम काहूसे क्रोध ही करते तब भी ऐसे अप्रसन्न देखे नहीं अब ऐसे अप्रसन्न क्यों भासो हो। हे वत्स, अब ये चेष्टा तजो प्रसन्न होवो मैं तिहारे पायन परूं हूं नमस्कार करूं हूं तुम तो महा विनयवंत हो सकल पृथ्वीविषै यह बात प्रसिद्ध है कि लक्ष्मण रामका आज्ञाकारी है सदा सन्मुख है, कभी परांगमुख नाहीं, तुम अतुल प्रकाश जगत्के दीपक हो, मत कभी ऐसा होय जो कालरूप वायुकर बुझ जावो। हे राजानिके राजन्! तुमने या लोकको अति आनन्दरूप किया तिहारे राज्यमें अचैन किसीने न पाया। या भरतक्षेत्रके तुम नाथ हो अब लोकको अनाथकर गमन करना उचित नहीं, तुमने चक्रकर शत्रुनिके सकल चक्र जीते अब कालचक्रका पराभव कैसे सहो हो तिहारा यह सुन्दर शरीर राज्यलक्ष्मीकर जैसा सोहता था, वैसा ही मूर्छित भया सोहै है। हे राजेन्द्र! अब रात्रि भी पूर्ण भई सन्ध्या फूली सूर्य उदय होय गया अब तुम निद्रा तजो तुम जैसे ज्ञाता श्रीमुनिसुव्रतनाथके भक्त प्रभातका समय क्यों चूको हो, जो भगवान वीतरागदेव मोहरूप रात्रिको हर लोकालोकका प्रकट करणहारा केवलज्ञानरूप प्रताप प्रकट करते भए, वे

त्रैलोक्यके सूर्य भव्यजीवरूप कमलोंको प्रकट करणहारे तिनका शरण क्यों न लेवो अर यद्यपि प्रभात समय भया परन्तु मुझे अन्धकार ही भासे है क्योंकि मैं तिहारा मुख प्रसन्न नाहीं देखूं, तातें हे विचक्षण! अब निद्रा तजो, जिनपूजाकर सभाविषैं तिष्ठो, सब सामंत तिहारे दर्शनको खड़े हैं, बड़ा आश्चर्य है सरोवरविषैं कमल फूले तिहारा वदन कमल मैं फूला नहीं देखूं हूं, ऐसी विपरीत चेष्टा तुमने अब तक कभी भी नहीं करी, उठो राज्यकार्यविषैं चित्त लगावो हे भ्रातः! तिहारी दीर्घ निद्रासे जिनमंदिरोंकी सेवा विषैं कमी पड़ी है, संपूर्ण नगरविषैं मङ्गल शब्द मिट गए गीत नृत्य वादित्रादि बंद हो गये हैं औरोंकी कहा बात? जो महाविरक्त मुनिराज हैं तिनको भी तिहारी यह दशा सुन उद्वेग उपजै है तुम जिनधर्मके धारी हो सब ही साधर्मीक जन तिहारी शुभदशा चाहै हैं वीण बांसुरी मृदंगादिकके शब्दरहित यह नगरी तिहारे वियोगकर व्याकुल भई नहीं सोहै है कोई अगिले भवमें महाअशुभ कर्म उपार्जे तिनके उदयकर तुम सारिखे भाईकी अप्रसन्नतासे महाकष्टको प्राप्त भया हूं। हे मनुष्योंके सूर्य जैसे युद्धविषैं शक्तिके घावकर अचेत होय गए थे अर आनंदसे उठे मेरा दुःख दूर किया तैसे ही उठकर मेरा खेद निवारो॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषावचनिकाविषैं रामदेवका विलाप वर्णन करनेवाला एकसौ सोलहवां पर्व पूर्ण भया ॥११६॥

अथानन्तर—यह वृतान्त सुन विभीषण अपने पुत्रनि सहित अर विराधित सकल परिवार सहित अर सुग्रीव आदि विद्याधरनिके अधिपति अपनी स्त्रियों सहित शीघ्र अयोध्यापुरी आए आंसुनिकर भरे हैं नेत्र जिनके हाथ जोड़ सीस नवाय रामके समीप आए महा शोकरूप हैं चित्त जिनके अति विषादके भरे रामको प्रणामकर भूमिविषैं बैठे, क्षण एक तिष्ठकर मंद २ वाणी कर विनती करते भए—हे देव! यद्यपि यह भाईका शोक दुर्निवार है तथापि आप जिनवाणीके ज्ञाता हो सकल संसारका स्वरूप जानो हो तातैं आप शोक तजिवे योग्य हो, ऐसा कह सबही चुप होय रहे बहुरि विभीषण सब बातविषैं महा विचक्षण सो कहता भया—हे महाराज! यह अनादि कालकी रीति है कि जो जन्मा सो मूवा, सब संसार विषैं यही रीति है इनहीको नाहीं भई जन्मका साथी मरण है मृत्यु अवश्य है काहूसे न टरी अर न काहूसे टरे या

संसार पिंजरेविषैं पड़े यह जीवरूप पक्षी सबही दुखी हैं कालके वश हैं मृत्युका उपाय नाहीं अर सब४ उपाय हैं यह देह निस्संदेह विनाशीक है तातैं शोक करना वृथा है, जो प्रवीण पुरुष हैं वे आत्मकल्याणका उपाय करे हैं रुदन किएसे मरा न जीवे अर न वचनालाप करे, तातैं हे नाथ! शोक न करो यह मनुष्यनिके शरीर तो स्त्री पुरुषनिके संयोगसे उपजे हैं सो पानीके बुद्बुदावत् विलाय जायं इसका आश्चर्य कहा अहमिंद्र इन्द्र लोकपाल आदि देव आयुके क्षय भए स्वर्गसे चय हैं जिनकी सागरोंकी आयु अर किसीके मारे न मरें वे भी काल पाय मरैं मनुष्यनिकी कहा बात यह तो गर्भके खेदकर पीड़ित अर रोगनिकर पूर्ण डाभकी अणीके ऊपर जो ओसकी बून्द आय पड़े उस समान पड़नेको सन्मुख है महा मलिन हाड़ोंके पिंजरे ऐसे शरीरके रहिवेकी कहा आशा? आप यह प्राणी अपने सुजनोंका सोच करे सो आप क्या अजर अमर हैं आपही कालकी दाढ़में बैठा उसका सोच क्यों न करे? जो इन हीकी मृत्यु आई होय अर और अमर हैं तो रुदन करना जब सबकी यही दशा है तो रुदन काहेका जेते देहधारी हैं तेते सब कालके आधीन हैं सिद्ध भगवान्के देह नाहीं तातैं मरण नाहीं यह देह जिस दिन उपजा उसही दिनसे काल इसके लेयवेके उद्यममें है यह सब संसारी जीवोंकी रीति है तातैं संतोष अङ्गीकार करो इष्टके वियोगसे शोक करै सो वृथा है शोक कर मरै तौभी वह वस्तु पीछे न आवै तातैं शोक क्यों करिये देखो काल तो वज्रदण्ड लिए सिर पर खड़ा है अर संसारी जीव निर्भय भए तिष्ठे हैं जैसे सिंह तो सिर पर खड़ा है अर हिरण हरा तृण चरे है त्रैलोक्यनाथ परमेष्ठी अर सिद्ध परमेश्वर तिन सिवाय कोई तीन लोकविषैं मृत्युसे बचा सुना नाहीं वेही अमर हैं अर सब जन्म मरण करे हैं यह संसार विंध्याचलके वन समान कालरूप दावानल समान बलै है सो तुम क्या न देखो हो? यह जीव संसार वनमें भ्रमण कर अति कष्टसे मनुष्य देह पावे है सो वृथा खोवै है काम भोगके अभिलाषी होय माते हाथीकी न्याईं बंधनविषैं पड़े है नरक निगोदके दुःख भोगवे हैं कभी एक व्यवहार धर्मकर स्वर्गविषैं देव भी होय हैं आयुके अन्तमें वहांसे पड़े हैं जैसे नदीके ढाहेका वृक्ष कभी उखड़े ही तैसे चारों गतिके शरीर मृत्युरूप नदीके ढाहेके वृक्ष हैं इनके उखड़नेको क्या आश्चर्य है इन्द्र

धरणेंद्र चक्रवर्ती आदि अनन्त नाशको प्राप्त भए जैसे मेघकर दावानल बुझै तैसे शांतिरसरूप मेघकर कालरूप दावानल बुझै और उपाय नाहीं पातालविषैं भूतलविषैं अर स्वर्गविषैं ऐसा कोई स्थानक नहीं जहां कालसे बचे, अर छठे कालके अन्त इस भरतक्षेत्रमें प्रलय होयगी पहाड़ बिलय होय जावेंगे तो मनुष्यकी कहा बात ? जो भगवान तीर्थंकर देव वज्रवृषभ नाराच संहननके धारक जिनके सम चतुरस्र संस्थानक सुर असुर नरोंकर पूज्य जो किसी कर जीते न जायं तिनका भी शरीर अनित्य वेभी देह तज सिद्धलोकविषैं निज भावरूप रहैं तो औरोंका देह कैसे नित्य होय ? सुर नर नारक तिर्यंचोंका शरीर केलेके गर्भ समान असार है। जीव तो देहका यत्न करे हैं। अर काल प्राण हरे है जैसे बिलके भीतरसे गरुड़ सर्पको लेजाय तैसे इस देहके भीतरसे जीवको काल लेजाय है यह प्राणी अनेक मूवोंको रोवे है हाय भाई हाय पुत्र हाय मित्र या भांति शोक करे है अर कालरूप सर्प सबोंको निगले है जैसे सर्प मींडकको निगले यह मूढ़ बुद्धि झूठे विकल्प करे हैं यह मैं किया यह मैं करूं हूं यह करूंगा सो ऐसे विकल्प करता कालके मुखविषैं जाय है जैसे टूटा जहाज समुद्रके तले जाय परलोकको गया जो सज्जन उसके लार कोई जाय सके तो इष्टका वियोग कभी न होय जो शरीरादिक परवस्तुसे स्नेह करे हैं सो क्लेशरूप अग्निविषैं प्रवेश करे हैं। अर इन जीवोंके इस संसारविषैं एते स्वजनोंके समूह भए जिनकी संख्या नाहीं जो समुद्रकी रेणुकाके कण तिनसे भी अपार हैं अर निश्चय कर देखिए तो इस जीवके न कोई शत्रु है न कोई मित्र है शत्रु तो रागादिक हैं अर मित्र ज्ञानादिक हैं। जिसको अनेक प्रकारकर लड़ाइये अर निज जानिए सो भी वैरको प्राप्त भया महा रोसकर हणे जिसके स्तनोंका दुग्ध पाया जिसकर शरीर वृद्ध भया ऐसी माताको भी हने हैं धिक्कार है इस संसारकी चेष्टाको जो पहिले स्वामी था अर बार २ नमस्कार करता सो भी दास होय जाय है तब पांयोंकी लातोंसे मारिये है हे प्रभो। मोहकी शक्ति देखो इसके वश भया यह जीव आपको नहीं जाने है परको आप माने है जैसे कोई हाथ कर कारे नागको गहे तैसे कनक कामिनीको गहे है इस लोकाकाश विषैं ऐसा तिल मात्र क्षेत्र नाहीं जहां जीवने जन्म मरण न किए अर नरकविषैं इसको प्रज्वलित ताम्बा

प्याया अर एती वार यह नरकको गया जो उसका प्रज्वलित ताम्रपान जोड़िये तो समुद्रके जलसे अधिक होय अर सूकर कूकर गर्दभ होय इस जीवने एता मलका आहार किया जो अनन्त जन्मका जोड़िए तो हजारा विंध्याचलकी राशिसे अधिक होय अर या अज्ञानी जीवने क्रोधके वशसे एते पराए सिर छेदे अर उन्होंने इसके छेदे जो एकत्र करिए तो ज्योतिष चक्रको उलंघ कर यह सिर अधिक होवें जीव नरक प्राप्त भया वहां अधिक दुःख पाय निगोद गया वहां अनन्तकाल जन्म मरण किए यह कथा सुनकर कौन मित्रसे मोह माने एक निमिष मात्र विषयका सुख उसके अर्थ कौन अपार दुःख सहे, यह जीव मोहरूप पिशाचके वश पड़ा उन्मत्त भया संसार वनविषै भटके है। हे श्रेणिक! विभीषण रामसे कहे है हे प्रभो! यह लक्ष्मणका मृतक शरीर तजवे योग्य है। अर शोक करना योग्य नाहीं यह कलेवर उरसे लगाय रहना योग्य नाहीं, या भांति विद्याधरनिका सूर्य जो विभीषण उसने श्रीरामसे विनती करी अर राम महा विवेकी जिनसे और प्रति बुद्ध होय तथापि मोहके योगसे लक्ष्मणकी मूर्तिको न तजी जैसे विनयवान् गुरुकी आज्ञा न तजै।

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषा वचनिकाविषैं लक्ष्मणका वियोग रामका विलाप और विभीषणका संसार स्वरूप वर्णन करनेवाला एकसौ सतरहवां पर्व पूर्ण भया ॥ ११७ ॥

अथानन्तर—सुग्रीवादिक सब राजा श्रीरामचन्द्रसे विनती करते भए अब वासुदेवकी दग्ध क्रिया करो तब श्रीरामको यह वचन अतिअनिष्ट लगा अर क्रोध कर कहते भए तुम अपने माता पिता पुत्र पौत्र सबोंकी दग्धक्रिया करो, मेरे भाईकी दग्धक्रिया क्यों होय जो तुम्हारा पापियोंका मित्र बन्धु कुटुम्ब सो सब नाशको प्राप्त होय मेरा भाई क्यों मरे उठो उठो लक्ष्मण इन दुष्टनिके संयोगतैं और ठौर चलो जहां इन पापीनिके कटुक वचन न सुनिये ऐसा कह भाईको उरसे लगाय कांधे धर उठ चले विभीषण सुग्रीवादि अनेक राजा इनकी लार पीछे पीछे चले आवें राम काहूका विश्वास न करें। भाईको कांधे धरे फिरें जैसे बालकके हाथ विषफल आया अर हितू छुड़ाया चाहे वह न छोड़े तैसे राम लक्ष्मणके शरीर को न छोड़े आंसूनिकरि भीज रहे हैं नेत्र जिनके भाईसे कहते भए हे भ्रात! अब उठो बहुत वेर भई

ऐसो कहा सोवो हो अब स्नानकी वेला भई स्नानके सिंहासन विराजो ऐसा कह मृतक शरीरको सिंहासन पर बैठाया अर मोहका भरा राम मणि स्वर्णके कलशोंसे भाईको स्नान करावता भया अर मुकुट आदि सर्व आभूषण पहिराये अर भोजनकी तैयारी कराइ सेवकोंको कही नानाप्रकार रत्न स्वर्णके भाजन में नाना प्रकारका भोजन ल्यावो उसकर भाईका शरीर पुष्ट होय सुन्दर भात दाल फुलका नाना प्रकारके व्यंजन.नाना प्रकारके रस शीघ्रही ल्यावो यह आज्ञा पाय सेवक सब सामग्रीकर ल्याये नाथके आज्ञाकारी तब.आप रघुनाथ लक्ष्मणके मुखमें ग्रास देय सो न ग्रसै जैसे अभव्य जिनराजका उपदेश न ग्रहै तब आप कहते भए जो तैंने मोसे कोप किया तो आहारसे कहा कोप ? आहार तो करो मोसे मत वोलो जैसे जिन-वाणी अमृतरूप है परन्तु दीर्घ संसारीको न रुचै तैसे वह अमृतमई आहार लक्ष्मणके मृतक शरीरको न रुचा फिर रामचन्द्र कहै हैं—हे लक्ष्मीधर ! यह नाना प्रकारकी दुग्धादि पीने योग्य वस्तु सो पीवो ऐसा कहकर भाईको दुग्धादि प्याया चाहें सो कहा पीवे । यह कथा गौतमस्वामी श्रेणिकसे कहे हैं वह विवेकी राम स्नेहकर जैसी जीवतेकी सेवा करिये तैसे मृतक भाईकी करता भया अर नाना प्रकारके मनोहर गीत वीण बांसुरी आदि नाना प्रकारके नाद करता भया सो मृतकको कहा रुचै ? मानों मरा हुवा लक्ष्मण रामका सङ्ग न तजता भया । भाईको चन्दनसे चर्चा भुजावोंसे उठाय लेय उरसे लगाय सिर चूम्बे मुख चूम्बे हाथ चूम्बे अर कहे हैं—हे लक्ष्मण ! यह क्या भया तू तो ऐसा कभी न सोवता अब तो विशेष सोवने लगा अब निद्रा तजो या भांति स्नेहरूप ग्रहका ग्रहा वलदेव नाना प्रकारकी चेष्टा करै । यह वृत्तांत सब पृथिवीमें प्र-कट भया कि लक्ष्मण मूवा लव अंकुश मुनि भये अर राम मोहका मारा मूढ़ होय रहा है तब वैरी क्षोभको प्राप्त भये जैसे वर्षा ऋतुका समय पाय मेघ गाजै शंबुकका भाई सुन्दर इसका नन्दन विरोधरूप है चित्त जिसका सो इन्द्रजीतके पुत्र वज्रमाली पे आया अर कही मेरा बाबा अर दादा दोनों लक्ष्मणने मारे सो मेरा रघुवंशिनिसे वैर है अर हमारा पाताललंकाका राज्य खोस लिया अर विराधितको दिया अर वानर-वंशियोका शिरोमणि सुग्रीव स्वामीद्रोही होय रामसे मिला सो राम समुद्र उलंघ लंका आये राक्षसद्वीप

उजाड़ा रामको सीताका अति दुःख सो लङ्का लेयवेका अभिलाषी भया अर सिंहवाहिनी अर गरुड़वाहिनी दोय महा विद्या राम लक्ष्मणको प्राप्त भईं तिनकर इन्द्रजीत कुम्भकर्ण बन्दीमें किये अर लक्ष्मणके चक्र हाथ आया उसकर रावणको हता अब कालचक्र कर लक्ष्मण मूवा सो वानरवंशियोंकी पक्ष टूटी वानरवंशो लक्ष्मणकी भुजावोंके आश्रयसे उन्मत्त होय रहे थे अब क्या करेंगे वे निरपक्ष भये अर रामको ग्यारह पक्ष होय चुके बारहमां पक्ष लगा है सो गहला होय रहा है भाईके मृतक शरीरको लिये फिरे है ऐसा मोह कौनको होय ? यद्यपि राम समान योधा पृथ्वीमें और नहीं वह हल मूशलका धरणहारा अद्वितीय मल्ल है तथापि भाईके शोकरूप कीचमें फंसा निकसवे समर्थ नहीं सो अब रामसे वैर भाव लेनेका दाव है जिसके भाईने हमारे वंशके वहुत मारे शंबूकके भाईके पुत्रने इन्द्रजीतके बेटेको यह कहा सो क्रोधकर प्रज्वलित भया मन्त्रियोंको आज्ञा देय रण भेरी दिवाय सेना भेलीकर शंबूकके भाईके पुत्र सहित अयोध्याकी ओर चला सेनारूप समुद्रको लिए प्रथम तो सुग्रीव पर कोप किया कि सुग्रीवको मार अथवा पकड़ उसका देश खोसलें बहुरि रामसे लड़ें यह विचार इन्द्रजीतके पुत्र वज्रमालीने किया सुन्दरके पुत्र सहित चढ़ा तब ये समाचार सुनकर सर्व विद्याधर जे रामके सेवक थे वे रामचन्द्रके निकट अयोध्यामें आय भेले भए जैसी भीड़ अयोध्यामें लव अंकुशके आयवेके दिन भई थी तैसी भई। वैरियोंकी सेना अयोध्याके समीप आई सुनकर रामचन्द्र लक्ष्मणको कांधे लिए ही धनुष बाण हाथविषें समारे विद्याधरनकी सङ्ग लेय आप बाहिर निकसे उस समय कृतांतवक्रका जीव अर जटायु पक्षीका जीव चौथे स्वर्ग देव भए थे तिनके आसन कम्पायमान भए, कृतांतवक्रका जीव स्वामी अर जटायु पक्षीका जीव सेवक सो कृतांतवक्रका जीव जटायुके जीवसे कहता भया हे मित्र ! आज तुम क्रोधरूप क्यों भए हो तब वह कहता भया जब मैं गृहपक्षी था तो रामने मुझे प्यारे पुत्रकी न्याईं पाला अर जिनधर्मका उपदेश दिया मरण समय नमोकार मंत्र दिया उसकर मैं देव भया अब वह तो भाईके शोककर तप्तायमान है अर शत्रुकी सेना उसपर आई है तब कृतांतवक्रका जीव जो देव था उसने अवधि जोड़कर कही—हे मित्र ! मेरा वह स्वामी था मैं उसका सेनापति

था मुझे बहुत लड़ाया भ्रात पुत्रोंसे भी अधिक गिना अर मेरे उनके वचन हैं जब तुमको खेद उपजेगा तब तिहारे पास मैं आऊंगा, सो ऐसा परस्पर कहकर वे दोनों देव चौथे स्वर्गके वासी सुन्दर आभूषण पहिरे मनोहर हैं केश जिनके सो अयोध्याकी ओर आए दोनों विचक्षण परस्पर दोनों बतलाए कृतांतवक्रके जीवने जटायुके जीवसे कहा तुम तो शत्रुओंकी सेनाकी ओर जावो उनकी बुद्धि हरो अर मैं रघुनाथके समीप जाऊं हूं तब जटायुका जीव शत्रुओंकी ओर गया कामदेवका रूपकर उनको मोहित किया अर उनके ऐसी माया दिखाई जो अयोध्याके आगे अर पाछे दुरगम पहाड़ पड़े हैं अर अयोध्या अपार है यह अयोध्या काहूसे जीती न जाय यह कौशलीपुरी सुभटोंकर भरी है कोट आकाश लग रहे हैं अर नगरके वाहिर भीतर देव विद्याधर भरे हैं हमने न जानी जो यह नगरी महाविषम है धरतीविषैं देखिये तो आकाशमें देखिये तो देव विद्याधर भर रहे हैं अब कौन प्रकार हमारे प्राण बचें कैसे जीवते घर जावें जहां श्रीराम देव विराजें सो नगरी हमसे कैसे लई जाय, ऐसी विक्रियाशक्ति विद्याधरनिविषैं कहां ? हमने विना विचारे ये काम किया जो पटबीजना सूर्यसे वैर विचारै तो क्या कर सकै अब जो भागो तो कौन राह होयकर भागो मार्ग नाहीं या भांति परस्पर वार्ता कर कांपने लगे समस्त शत्रुओंको सेना विह्वल भई तब जटायुके जीवने देव विक्रियाकी क्रीड़ा कर उनको दक्षिणकी ओर भागनेका मार्ग दिया वे सब प्राणरहित होय कांपते भागे जैसे सिचान आगे परे वे भागें। आगे जायकर इन्द्रजीतके पुत्रने विचारी जो हम विभीषणको कहा उत्तर देंगे अर लोकोंको क्या मुख दिखावेंगे ऐसा विचार लज्जावान् होय सुन्दरके पुत्र चारों रत्न सहित अर विद्याधरनि सहित इन्द्रजीतके पुत्र वज्रमाली रतिवेग नामा मुनिके निकट मुनि भए, तब यह जटायुका जीव देव उन साधुओंका दर्शन कर अपना सकल वृत्तान्त कह क्षमा कराया अयोध्या आया जहां राम भाईके शोककर वालककीसी चेष्टा कर रहे हैं तिनके सम्बोधवेके अर्थ वे दोनों देव चेष्टा करते भए, कृतांतवक्रका जीव तो सूके वृक्षको सींचने लगा अर जटायुका जीव मृतक वैल युगल तिनकर हल वाहवेका उद्यमी भया अर शिला ऊपर बीज वोने लगा सो ये भी दृष्टान्त रामके मनमें न आया बहुरि

कृतान्तवक्रका जीव रामके आगे जलको घृतके अर्थ विलोवता भया अर जटायुका जीव वालू रेतको घानोमें. तेलके निमित्त पेलता भया सो इन दृष्टान्तनिकर रामको प्रतिबोध न भया अर भी अनेक कार्य इसी भांति देवोंने किए तब रामने पूछी तुम वड़े मूढ़ हो, सूका वृच्च सींचा सो कहा अर मूवे वैलोंसे हल वाहना करो सो कहा अर शिला ऊपर बीज बोवना सो कहा अर जलका विलोवना अर वालुका पेलना इत्यादि काये तुम किए सो कौन अर्थ ? तव वे दोनों कहते भए तुम भाईके मृतक शरीरको वृथा लिये फिरो हो उसविषैं क्या ? यह वचन सुनकर लक्ष्मणको गाढा उरसे लगाय पृथिवीका पति जो राम सो क्रोधकर उनसे कहता भया हे कुवुद्धि हो । मेरा भाई पुरुषोत्तम उसे अमंगलके शब्द क्यों कहो हो ऐसे शब्द वोलते तुमको दोष उपजेगा या भांति कृतांतवक्रके जीवके और रामके विवाद होय है उसही समय जटायुका जीव मूवे मनुष्यका कलेवर लेय रामके आगे आया उसे देख राम वोले मरेका कलेवर काहेको कांधे लिये फिरो हो तब उसने कही तुम प्रवीण होय प्राणरहित लक्ष्मणके शरीरको क्यों लिये फिरो हो पराया अणुमात्र भी दोष देखो हो अर अपना मेरु प्रमाण दोष नहीं देखो हो, सारिखेकी सारिखेसे प्रीति होय है सो तुमको मूढ़ देख हमारे अधिक प्रीति उपजो है हम वृथा कार्यके करणहारे तिनविषैं तुम मुख्य हो हम उन्मत्तताकी ध्वजा लिए फिरे हैं, सो तुमको अति उन्मत्त देख तुम्हारे निकट आए हैं ॥

या भांति उन दोनों मित्रोंके वचन सुन राम मोहित भया शास्त्रनिके वचन चितार सचेत भए जैसे सूर्य मेघ पटलसे निकस अपनी किरण कर देदीप्यमान भासै तैसे भरतक्षेत्रका पति राम सोई भया भानु सो मोहरूप मेघपटलसे निकस ज्ञानरूप किरणनिकर भासता भया, जैसे शरदऋतुमें कारी घटासे रहित आकाश निर्मल सोहै तैसे रामका मन शोकरूप कर्दमसे रहित निर्मल भासता भया, राम समस्त शास्त्रनिमें प्रवीण अमृत समान जिनवचन चितार खेदरहित भए, धीरताके अवलंबनकर ऐसे सोहैं जैसा भगवान्‌का जन्माभिषेकविषैं सुमेरु सोहै जैसे महा दाहेकी शीतल पवनके स्पर्शसे रहित कमलोंका वन सोहै अर फूले तैसे शोकरूप कलुपतारहित रामका चित्त विकसता भया जैसे कोई रात्रिके अन्धकारमें माग भूल गया था

अर सूर्यके उदय भए माग पाय प्रसन्न होय अर महाक्षुधाकर पीड़ित मन वांछित भोजन खाय अत्यन्त आनन्दको प्राप्त होय अर जैसे कोई समुद्रके तिरिवेका अभिलाषी जहाजको पाय हर्षरूप होय अर वनमें मार्ग भूला नगरका मार्ग पाय खुशी होय अर तृषाकर पीड़ित महा सरोवरको पाय सुखी होय, रोग कर पीड़ित रोग हरण औषधको पाय अत्यंत आनन्दको पावै, अर अपने देश गया चाहे अर साथी देख प्रसन्न होय अर वंदीगृहसे छूटा चाहै अर बेड़ी कटै जैसे हर्षित होय तैसे रामचन्द्र प्रतिबोधको पाय प्रसन्न भए। प्रफुल्लित भया है हृदय कमल जिनका परम कांतिको धारते आपको संसार अंधकूपसे निकसा मानते भए, मनमें जानी मैं नवा जन्म पाया श्रीराम विचारै हैं अहो डाभकी अणीपर पड़ी ओसकी बून्द ता समान चंचल मनुष्यका जीतव्य एक एक क्षणमात्रमें नाशको प्राप्त होय है चतुर्गति संसारमें भ्रमण करते मैंने अत्यंत कष्टसे मनुष्य शरीरको पाया सो वृथा खोया कौनके भाई कौनके पुत्र कौनका परिवार कौनका धन कौनकी स्त्री ? या संसारमें या जीवने अनंत संबंधी पाये एक ज्ञान दुर्लभ है या भांति श्रीराम प्रतिबुद्ध भए तब वे दोनों देव अपनी माया दूरकर लोकोंको आश्चर्यकी करणहारी स्वर्गकी विभूति प्रकट दिखावते भए शीतल मंद सुगन्ध पवन वाजी अर आकाशमें देवोंके विमान ही विमान होय गए अर देवांगना गावती भई वीण वांसुरी मृदंगादि बाजते भए वे दोनों देव रामसे पूछते भए आपने इतने दिवस राज्य किया सो सुख पाया ? तब राम कहते भए, राज्यविषैं काहेका सुख ? जहां अनेक व्याधि हैं जो याहि तज मुनि भये वे सुखी अर मैं तुमको पूछूं हूं तुम महा सौम्यवदन कौन हो अर कौन कारण कर मोसूं इतना हित जनाया तब जटायुका जीव कहता भया—हे प्रभो ! मैं वह गृध्र पक्षी हूं आप मुनिनिकूं आहार दिया वहां मैं प्रतिबुद्ध भया अर आप मोहि निकट राखा, पुत्रकी न्याईं पाला अर लक्ष्मण सीता मोसूं अधिक कृपा करते सीता हरी गई ता दिन मैं रावणसे युद्धकर कंठगत प्राण भया, आपने आय मोहि पंचनमोकार मंत्र दिया सो मैं तुम्हारे प्रसाद कर चौथे स्वर्ग देव भया स्वर्गके सुखकर मोहित भया अबतक आपके निकट न आया अब अवधिज्ञान कर तुमको लक्ष्मणके शोक कर व्याकुल जान तुम्हारे निकट आया हूं अर कृतांतवक्रके

जीवने कही—हे नाथ ! मैं कृतांतवक्र आपका सेनापति हुता आपे मोहि भ्रात पुत्रनितैं हू अधिक जाना अर वैराग्य होते मोहि आप आज्ञा करी हुती जो देव होवो तो हमको कबहू चिंता उपजै तब चितारियो सो आपके लक्ष्मणके मरणकी चिंता जान हम तुमपे आये तब राम दोनों देवनिसूं कहते भये तुम मेरे परम मित्र हो महा प्रभावके धारक चौथे स्वर्गके महाऋद्धि धारी देव मेरे संबोधिवेको आये तुमको यही योग्य ऐसा कहकर रामने लक्ष्मणके शोकसे रहित होय लक्ष्मणके शरीरको सरयू नदीके डाहे दग्ध किया श्रीराम आत्मभावके ज्ञाता धर्मकी मर्यादा पालनेके अर्थ शत्रुघ्न भाईको कहते भए हे शत्रुघ्न ! मैं मुनिके व्रत धार सिद्ध पदको प्राप्त हुआ चाहूं हूं तू पृथिवीका राज्य कर तब शत्रुघ्न कहते भये हे देव ! मैं भोगनिका लोभी नहीं जाके राग होय सो राज्य करे मैं तिहारे संग जिनराजके व्रत धरूंगा अन्य अभिलाषा नहीं है मनुष्यनिके शत्रु ये काम भोग मित्र बांधव जीतव्य इनसे कौन तृप्त भया कोई ही तृप्त न भया तातैं इन सबनिका त्याग ही जीवको कल्याणकारी है ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषावचनिकाविषैं लक्ष्मणकी दग्धक्रिया अर मित्रदेवनिका आगमन वर्णन करनेवाला एकसौ अठारहवां पर्व पूर्ण भया ॥११८॥

अथानन्तर—श्रीरामचन्द्रने शत्रुघ्नके वैराग्यरूप वचन सुन ताहि निश्चयसे राज्यसे पराङ्मुख जान क्षणएक विचार अनंग लवणके पुत्रको राज्य दिया सो पिता तुल्य गुणनिकी खान कुलकी धुराका धरणहारा नमस्कार करे हैं समस्त सामंत जाको, सो राज्यविषैं तिष्ठा प्रजाका अति अनुराग है जासे महा प्रतापी पृथिवीविषैं आज्ञा प्रवर्तावता भया अर विभीषण लंकाका राज्य अपने पुत्र सुभूषणको देय वैराग्यको उद्यमी भया अर सुग्रीव हू अपना राज्य अंगदको देयकर संसार शरीर भोगसे उदास भया ये सब रामके मित्र रामको लार भवसागर तरवेको उद्यमी भए राजा दशरथका पुत्र राम भरतचक्रवर्तीकी न्याईं राज्यका भार तजता भया। कैसा है राम ? विषसहित अन्नसमान जाने हैं विषय सुख जाने अर कुलटा स्त्रीसमान जानी है समस्त विभूति जाने एक कल्याणका कारण मुनिनिके सेयवे योग्य सुर असु-

जन्ममरणके भयसे कम्पायमान
रोंकर पूज्य श्री मुनिसुव्रतनाथका भाषा मार्ग ताहि उरविषै धारता भया जन्ममरणके भयसे कम्पायमान
भया है हृदय जाका ढीले किये हैं कर्मबंध जाने धोय डाले हैं रागादिक कलंक जाने महावैराग्यरूप है
चित्त जाका क्लेशभावसे निवृत्त जैसा मेघपटलसे रहित भानु भासै तैसा भासता भया मुनिव्रत धारि-
वेका है अभिप्राय जाके ता समय अरहदास सेठ आया तब ताहि श्रीराम चतुर्विध संघकी कुशल
पूछते भए। तब वह कहता भया हे देव। तिहारे कष्टकर मुनिनिका हू मन अनिष्ट संयोगको प्राप्त भया ये
बात करे है अर खबर आई है कि मुनिसुव्रतनाथके वंशमें उपजे चार ऋद्धिके धारक स्वामी सुव्रत महा
व्रतके धारक कामक्रोधके नाशक आए हैं। यह वार्ता सुनकर महाआनन्दके भरे राम रोमांच होय गया है
शरीर जिनका फूल गए हैं नेत्र कमल जिनके अनेक भूचर खेचर नृपनिसहित जैसे प्रथम बलभद्र विजय
स्वर्णकुम्भ स्वामीके समीप जाय मुनि भये हुते तैसे मुनि होनेको सुव्रतमुनिके नकट गये ते महा श्रेष्ठ गु-
णोंके धारक हजारां मुनि माने हैं आज्ञा जिनकी तिनपै जाय प्रदक्षिणा देय हाथ जोड़ सिर निवाय नम-
स्कार किया साक्षात् मुक्तिके कारण महा मुनि तिनका दर्शनकर अमृतके सागरविषैं मग्न भए परम श्रद्धा-
कर मुनिराजतैं रामचन्द्रने जिनचन्द्रकी दीक्षा धारवेकी विनती करी—हे योगीश्वरनिके इन्द्र! मैं भव प्रपं-
चसे विरक्त भया तिहारा शरण ग्रहा चाहूं हूं तिहारे प्रसादसे योगीश्वरनिके मार्गविषैं विहार करूं या भांति
रामने प्रार्थना करी। कैसे हैं राम? धोये हैं समस्त रागद्वेषादिक कलंक जिन्होंने तब मुनींद्र कहते भये—
हे नरेन्द्र! तुम या बातके योग्य ही हो, यह संसार कहा पदार्थ है यह तज कर तुम जिनधर्मरूप समुद्रका
अवगाह करो, यह मार्ग अनादि सिद्ध बाधारहित अविनाशी सुखका देनहारा तुमसे बुद्धिमान हो आदरें।
ऐसा मुनिने कहा तब राम संसारसे विरक्त महा प्रवीण जैसे सूर्य सुमेरुकी प्रदक्षिणा करे तैसे मुनींद्रकी
प्रदक्षिणा करते भए। उपजा है महाज्ञान जिनको वैराग्यरूप वस्त्र पहिरे बांधी है कर्मोंके नाशको कमर
जिन्होंने आशारूप पाश तोड़ स्नेहका पींजरा दग्धकर स्त्रीरूप बंधनसे छूट मोहका मान मार हार कुण्डल
मुकट केयूर कटिमेखलादि सर्व आभूषण डार तत्काल वस्त्र तजे, परम तत्त्वविषैं लगा है मन जिनका वस्त्रा-

भरण यूं तजे ज्यों शरीर ताजये महासुकुमार अपने कर तिनकर केश लोंच किए पद्मासन धर विराजे शीलके मन्दिर अष्टम बलभद्र समस्त परिग्रहको तजकर ऐसे सोहते भए जैसा राहुसे रहित सूर्य सोहै पंच महाव्रत आदरे पंच समिति अङ्गीकारकर तीन गुप्तिरूप गढ़विषैं विराजे मनोदण्ड वचनदण्ड कायदण्डके दूर करणहारे षट कायके मित्र, सप्त भयरहित आठ कर्मोंके रिपु नवधा ब्रह्मचर्यके धारक, दश लक्षण धर्म धारक श्रीवत्स लक्षणकर शोभित है उरस्थल जिनका गुणभूषण सकलदूषणरहित तत्वज्ञानविषैं दृढ़ रामचन्द्र महामुनि भए देवनिने पंचाश्चर्य किए सुन्दर दुन्दुभी वाजे अर दोनों देव कृतांतवक्रका जीव एक जटायुका जीव तिन्होंने परम उत्साह किए जब जीव पृथिवीका पति राम पृथिवीको तज निकसा तब भूमिगोचरी विद्याधर सब ही राजा आश्चर्यको प्राप्त भये अर विचारते भए जो ऐसी विभूति ऐसे रत्न यह प्रताप तजकर रामदेव मुनि भये तो और हमारे कहा परिग्रह ? जाके लोभतैं घरमें तिष्ठें व्रत विना हम एते दिन योंही खोये ऐसा विचारकर अनेक राजा गृह बन्धनसे निकसे अर रागमई पाशी काट द्वेषरूप वैरीको विनाश सर्व परिग्रहका त्यागकर भाई शत्रुघ्न मुनि भये अर विभीषण सुग्रीव नील नल चन्द्रनख विराधित इत्यादि अनेक राजा मुनि भये विद्याधर सर्व विद्याका त्यागकर ब्रह्मविद्याको प्राप्त भये कैयकोंको चारणऋद्धि उपजी या भांति रामके वैराग्य भये सोलह हजार कछु अधिक महीपति मुनि भये। अर सत्ताईस हजार राणी श्रीमती आर्यिकाके समीप आर्यिका भईं ॥

अथानन्तर—श्रीराम गुरुकी आज्ञा लेय एकविहारी भये तजे हैं समस्त विकल्प जिन्होंने गिरिनिकी गुफा अर गिरिनिके शिखर अर विषम वन जिनविषैं दुष्ट जीव विचरें वहां श्रीराम जिनकल्पी होय ध्यान धरते भये अवधिज्ञान उपजा जाकर परमाणु पर्यन्त देखते भये अर जगतके मूर्तिक पदार्थ सकल भासे लक्ष्मणके अनेक भव जाने, मोहका सम्बन्ध नाहीं, तातैं मन ममत्वको न प्राप्त होता भया। अब रामकी आयुका व्याख्यान सुनो कौमार काल वर्ष सौ १०० मण्डलीक पद वर्ष तीन सौ ३०० दिग्विजय वर्ष चालीस ४० अर ग्यारह हजार पांचसै साठ वर्ष ११५६० तीन खण्डका राज्य बहुरि मुनि भये। लक्ष्मणका

मरण याही भांति था देवनिका दोष नाहीं अर भाईके मरणके निमित्ततैं रामके वैराग्यका उदय था अवधिज्ञानके प्रतापकर रामने अपने अनेक भव जाने, महा धीर्यको धरैं व्रत शीलके पहाड़, शुक्ल लेश्या कर युक्त महा गंभीर गुणनिके सागर समाधान चित्त मोक्ष लक्ष्मीविषैं तत्पर शुद्धोपयोगके मार्गविषैं प्रवरते। सो गौतम स्वामी राजा श्रेणिक आदि सकल श्रोताओंसे कहे हैं जैसे रामचन्द्र जिनेन्द्रके मार्गविषैं प्रवर्त्ते तैसे तुमहू प्रवरतो, अपनी शक्ति प्रमाण महा भक्ति कर जिनशासनविषैं तत्पर होवो जिन नामके अक्षर महारत्नोंको पाय कर हो प्राणी हो खोटा आचरण तजो, दुराचार महा दुःखका दाता है खोटे ग्रन्थनिकर मोहित है आत्मा जिनका अर पाखण्ड क्रियाकर मलिन है चित्त जिनका वे कल्याणके मार्गको तज जन्मके आंधेकी न्याईं खोटे पंथमें प्रवरते हैं, कैयक मूर्ख साधुका धर्म नाहीं जाने हैं, अर नानाप्रकारके उपकरण साधुके बतावै हैं अर निर्दोष जान ग्रहे हैं वे वाचाल है जे कुलिंग कहिये खोटे भेष मूढ़निने आचरें है वे वृथा हैं तिनसे मोक्ष नाहीं जैसे कोई मूर्ख मृतकके भारको वहे है सो वृथा खेद करै हैं, जिनके परिग्रह नहीं अर काहूसे याचना नहीं, वे ऋषि हैं वेई निर्ग्रन्थ उत्तम गुणनिकर मंडित पंडितों कर सेयवे योग्य हैं यह महाबली बलदेवके वैराग्यका वर्णन सुन संसारसे विरक्त होवो जाकर भवतापरूप सूर्यका आताप न पावो॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषावचनिकाविषैं श्रीरामका वैराग्य वर्णन करनेवाला एकसौ उन्नीसवां पर्व पूर्ण भया ॥११९॥

अथानन्तर—गौतम स्वामी राजा श्रेणिकसे कहे हैं—हे भव्योत्तम ! श्रीरामचन्द्रके अनेक गुण धरणीन्द्र हू अनेक जीभ कर गायवे समर्थ नाही,वे महामुनीश्वर जगतके त्यागी महाधीर पचोपवासकी है प्रतिज्ञा जिनके सो ईर्यासमिति पालते नन्दस्थली नामा नगरी तहां पारणाके अर्थ गए उगते सूर्य समान है दीप्ति जिनकी मानों चालते पहाड़ ही हैं महा स्फटिकमणि समान शुद्ध हृदय जिनका वे पुरुषोत्तम मानों मूर्तिवन्त धर्मही, मानों तीन लोकका आनन्द एकत्र होय रामकी मूर्ति निपजी है महा कांतिके प्रवाहकर पृथ्वी को पवित्र करते मानों आकाशविषैं अनेक रंगकर कमलोंका वन लगावते नगरविषैं प्रवेश करते भए तिनके रूपको देख नगरके सब लोक क्षोभको प्राप्त भए लोक परस्पर बतलावे हैं—अहो देखो ! यह अद्भुत रूप

ऐसा आकार जगतविषैं दुर्लभ कवहूं देखिवेविषैं न आवे यह कोई महापुरुष महासुन्दर शोभायमान अपूर्व नर दोनों वाहु लम्बाये आवै है। धन्य यह धीर्य धन्य यह पराक्रम धन्य यह रूप धन्य यह कांति धन्य यह दीप्ति धन्य यह शांति धन्य यह निर्ममत्वता यह कोई मनोहर पुराण पुरुष है ऐसा और नाहीं जूड़े प्रमाण धरती देखता जीव दया पालता शांतदृष्टि समाधानचित्त जैनका यति चला आवे है ऐसा कौनका भाग्य जाके घर यह पुण्याधिकारी आहार कर कौनको पवित्र करै? ताके वड़े भाग्य जाके घर यह आहार लेय, यह इन्द्रसमान रघुकुलका तिलक अक्षोभ पराक्रमी शीलका पहाड़ रामचन्द्र पुरुषोत्तम है, याके दर्शनकर नेत्र सफल होंय मन निर्मल होय जन्म सफल होय, देही पायेका यह फल जो चारित्र पालिए। या भांति नगरके लोक रामके दर्शन कर आश्चर्यको प्राप्त भए, नगरमें रमणीक ध्वनि भई श्रीराम नगरविषैं पैठे अर समस्त गली अर मार्ग स्त्री पुरुषनिके समूह कर भर गया, नर नारी नाना प्रकारके भोजन हैं घरविषै जिनके प्रासुक जलकी झारी भरे द्वारे पेखन करे हैं निर्मल जल दिखावते पवित्र धोवती पहिरें नमस्कार करे हैं। हे स्वामी! अत्र तिष्ठैं अन्न जल शुद्ध है या भांतिके शब्द करे हैं नाहीं समावे है हृदयविषैं हर्ष जिनके हे मुनींद्र! जयवन्त होवो, हे पुण्यके पहाड़। नादो विरदो इन वचनोंकर दशों दिशा पूरित भईं, घर घरविषैं लोग परस्पर बात करे हैं स्वर्णके भोजनमें दुग्ध दधि घृत ईखरस दाल भात क्षीर शीघ्र ही तैयार कर राखो, मिश्री मोदक कपूरकर युक्त शीतल जल सुन्दर पूरी शिखिरणी भलीभांति विधिसे राखो। या भांति नर नारिनिके वचनालाप तिनकर समस्त नगर शब्दरूप होय गया महासंभ्रमके भरे जन अपने वाल-कोंको न विलोकते भए मार्गमें लोक दौड़ें सो काहूके धकेसे कोई गिर पड़ें या भांति लोकनके कोलाहल कर हाथी खूंटा उपाड़ते भए अर ग्रामविषैं दौड़ते भए तिनके कपोलोंसे मद झरिवे कर मार्गविषैं जलका प्रवाह होय गया, हाथिनिके भयसे घोड़े घास तज तज वन्धन तुड़ाय तुड़ाय भाजे अर हींसते भए सो हाथी घोड़निकी घमसाणकर लोक व्याकुल भए, तव दानविषैं तत्पर राजा कोलाहल शब्द सुन मंदिरके ऊपर आय खड़ा रहा दूरसे मुनिका रूप देख मोहित भया राजाके मुनिसे राग विशेष परन्तु विवेक नहीं

सो अनेक सामन्त दौड़ाए अर आज्ञाकारी स्वामी पधारे हैं सो तुम जाय प्रणामकर बहुत भक्ति विनती कर यहां आहारको ल्यावो सो सामन्त भी मूर्छ जाय पांयन पर पड़ कहते भए हे प्रभो ! राजाके घर भोजन करहु वहां महा पवित्र सुन्दर भोजन हैं अर सामान्य लोकनिके घर आहार विरस आपके लेयवे योग्य नाहीं अर लोकोंको मने किए कि तुम कहा दे जानों हो ? यह वचन सुनकर महा मुनि आपको अन्तराय जान नगरसे पीछे चले तब सब लोग अति व्याकुल भए। वे महापुरुष जिन आज्ञाके प्रतिपालक आचारांग सूत्र प्रमाण है आचरण जिनका आहारके निमित्त नगरविषैं विहार कर अन्तराय जान नगरसे पीछे वनविषैं गए। चिद्रूपध्यानविषैं मग्न कायोत्सर्ग धर तिष्ठे वे अद्भुत अद्वितीय सूर्य मन अर नेत्रको प्यारा लागे रूप जिनका नगरसे बिना आहार गए तब सबही खेदखिन्न भये ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषा वचनिकाविषै राममुनिका आहारके अर्थि नगरमें आगमन बहुरि लोकनिके कोलाहलतें अतराय पाछा वनमें आना वर्णन करनेवाला एकसौ वसिवा पर्व पूर्ण भया ॥१२०॥

अथानन्तर—राम मुनियोंमें श्रेष्ठ बहुरि पंचोपवासका प्रत्याख्यान कर यह अवग्रह धारते भये कि वनविषैं कोई श्रावक शुद्ध आहार देय तो लेना नगरमें न जाना या भांति कांतारचर्याकी प्रतिज्ञा करी सो एक राजा प्रतिनन्द वाको दुष्ट तुरंग लेय भागा सो लोकनिको दृष्टिसे दूर गया तब राजाकी पटरानी प्रभवा अतिचिन्तातुर शीघ्रगामी तुरंग पर आरूढ़ राजाके पीछे ही सुभटनिके समूह कर चली अर राजाको तुरंग हर ले गया था सो वनके सरोवरनिविषैं कींचमें फंस गया उतनेहीमें पटराणी जाय पहुंची राजा राणी पँ आया तब राणी राजासे हास्यके वचन कहती भई—हे महाराज ! जो यह अश्व आपको न हरता तो यह नन्दन वनसा वन अर मानसरोवरसा सर कैसे देखते ! तब राजाने कही हे राणी ! वनयात्रा अब सुफल भई जो तिहारा दर्शन भया, या भांति दम्पती परस्पर प्रीतिकी वात कर सखोजन सहित सरोवरके तीर बैठे नाना प्रकार जलक्रीड़ा कर दोनों भोजनके अर्थ उद्यमी भए ता समय श्रीराम मुनि कांतारचर्याके करणहारे या तरफ आहारको आए यह साधुकी क्रियामें प्रवीण तिनको देख राजा हर्ष कर रोमांच भया,

राणीसहित सन्मुख जाय नमस्कार कर ऐसे शब्द कहता भया हे भगवन् ! यहां तिष्ठो अन्न जल पवित्र है, प्रासुक जलकर राजाने मुनिके पग धोए, नवधा भक्ति कर सप्तगुण सहित मुनिको महापवित्र क्षीर आहार दिया, स्वर्णके पात्रमें लेय कर महा पात्र जे मुनि तिनके करपात्रमें पवित्र अन्न देता भया निरंतराय आहार भया तव देव हर्षित होय पंचाश्चर्य करते भए अर आप अक्षीण महा ऋद्धिके धारक सो वा दिन रसोईका अन्न अटूट होय गया, पंचाश्चर्यके नाम, पंच वर्ण रत्नोंकी वर्षा अर महा सुगंध कल्पवृक्षोंके पुष्पकी वर्षा शीतल मंद सुगंध पवन दुन्दुभी नाद, जय जय शब्द धन्य यह दान धन्य यह पात्र धन्य यह विधि धन्य यह दाता नीके करी नीके करी नादो विरधो फूलो फलो या भांतिके शब्द आकाशमें देव करते भए अथवा नवधा भक्तिके नाम, मुनिको पड़गाहनो ऊंचे स्थानक राखना चरणारविन्द धोवने चरणोदक माथे चढ़ावना पूजा करनी मन शुद्ध वचन शुद्ध काय शुद्ध आहार शुद्ध यह नवधा भक्ति अर श्रद्धा भक्ति निर्लोभता दया क्षमा अदेय सापणो नहीं हर्षसंयुक्त यह दाताके सात गुण वह राजा प्रतिनन्दी मुनिदानसे देवों कर पूज्य भया अर श्रावकके व्रत धारे निर्मल है सम्यक्त जाके पृथिवीमें प्रसिद्ध होता भया वहुत महिमा पाई अर पश्चाश्चर्यमें नाना प्रकारके रत्न स्वर्णकी वर्षा भई सो दशों दिशामें उद्योत भया अर पृथिवीका दरिद्र गया, राजा राणी सहित महाविनयवान् भक्ति कर नम्रीभूत महा मुनिको विधिपूर्वक निरंतराय आहार देय परम प्रवोधको प्राप्त भया, अपना मनुष्य जंन्म सफल जानता भया अर राम महामुनि तपके अर्थ एकांत रहैं वारह प्रकार तपके करणहारे तप ऋद्धि कर अद्वितीय पृथिवीमें अद्वितीय सूर्य विहार करते भए ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषावचनिकाविषैं राम मुनिका निरंतराय आहार वर्णन करनेवाला एकसौ इक्कीसवां पर्व पूर्ण भया ॥१२१॥

अथानन्तर—गौतमस्वामी राजा श्रेणिकसे कहे हैं—हे श्रेणिक ! वह आत्माराम मुनि वलदेव स्वामी शांत किए हैं रागद्वेष जाने जो और मनुष्योंसे न वन आवे ऐसा तप करते भए, महा वन विषैं विहार करते पंचमहाव्रत पंच समिति तीन गुप्ति पालते, शास्त्रके वेत्ता जितेंद्री जिनधर्ममें है अनुराग

जिनका स्वाध्यायाध्ययनमें सावधान अनेक ऋद्धि उपजो परंतु ऋद्धिनिकी खबर नहीं महा विरक्त निर्विकार बाईस परीषहके जीतनहारे तिनके तपके प्रभावतैं वनके सिंह व्याघ्र मृगादिकके समूह निकट आय बैठे, जीवोंका जाति विरोध मिट गया, रामका शांतरूप निरख शांतरूप भए श्रीराम महाव्रती चिदानन्दनविषैं है चित्त जिनका, परवस्तुकी वांछारहित, विरक्त कर्मकलंक हरिवेको है यत्न जिनके, निर्मल शिला पर तिष्ठते, पद्मासन धरे आत्मध्यानविषैं प्रवेश करते भए, जैसे रवि मेघमालाविषैं प्रवेश करै वे प्रभु सुमेरु सारिखे अचल है चित्त जिनका पवित्र स्थानविषैं कायोत्सर्ग धरे निज स्वरूपका ध्यान करते भये, कबहुंक विहार करैं सो ईर्या समिति पालते जूड़ा प्रमाण पृथिवी निरखते महा शांत जीव दया प्रतिपाल देव देवांगनादिक कर पूजित भए। वे आत्मज्ञानी जिन आज्ञाके पालक जैनके योगी ऐसा तप करते भए जो पंचम कालविषैं काहूके चितवनविषैं न आवै एक दिन विहार करते कोटिशिला आए जो लक्ष्मणने नमोकार मंत्र जप कर उठाई हुती सो आप कोटि शिला पर ध्यान धर तिष्ठे कर्मोंके खिपायवे विषैं उद्यमी क्षपकश्रेणि चढ़वेका है मन जिनका ॥

अथानन्तर—अच्युतस्वर्गका प्रतीन्द्र सीताका जीव स्वयंप्रभ नामा अवधिकर विचारता भया, रामका अर आपका परम स्नेह अपने अनेक भव अर जिनशासनका माहात्म्य अर रामका मुनि होना अर कोटिशिलापर ध्यान धर तिष्ठना बहुरि मनविषैं विचारी वे मनुष्यनिके इन्द्र पृथिवीके आभूषण मनुष्यलोकविषैं मेरे पति हुते मैं उनकी स्त्री सीता हुती देखो कर्मकी विचित्रता, मैं तो व्रतके प्रभावतैं स्वर्गलोक पाया अर लक्ष्मण रामका भाई प्राणहूतैं प्रिय सो परलोक गया, राम अकेले रह गये, जगत्के आश्चर्यके करणहारे दोनों भाई बलभद्र नारायण कर्मके उदयतैं बिछुरे श्रीराम कमल सारिखे नेत्र जिनके शोभायमान हल मूसलके धारक बलदेव महाबली सो वासुदेवके वियोगकर जिनदेवकी दीक्षा अंगीकार करते भये राज अवस्थाविषैं तो शस्त्रोंकर सर्व शत्रु जीते बहुरि मुनि होय मन इन्द्रिय जीते अब शुक्लध्यान धार कर कर्म शत्रुको जीता चाहे हैं ऐसा होय जो मेरी देव मायाकर कछुइक इनका मन मोहमें आवै वह शुद्धोपयोगसे

च्युत होय शुभोपयोगविषैं आय यहां अच्युतस्वर्गविषें आवें, मेरे इनके महाप्रीति है, मैं अर वे मेरु नन्दीश्वरादिककी यात्रा करें अर बाईस सागरपर्यंत भेले रहें। मित्रता बढावें अर दोनों मिल लक्ष्मणको देखें यह विचारकर सीताका जीव प्रतीन्द्र जहां राम ध्यानारूढ़ थे तहां आया इनको ध्यानसे च्युत करवे अर्थ देवमाया रची, वसन्त ऋतु वनविषें प्रकट करी, नाना प्रकारके फूल फूले अर सुगन्ध वायु वाजने लगी, पक्षी मनोहर शब्द करने लगे अर भ्रमर गुञ्जार करे हैं कोयल बोले हैं, मैना, सूवा, नाना प्रकारकी ध्वनि कर रहे हैं आंब मौर आये भ्रमरोंकर मण्डित सोहे हैं कामके वाण जे पुष्प तिनकी सुगन्धता फैल रही है अर कर्णिकार जातिके वृक्ष फूले हैं तिनकर वह पीत हो रहा है सो मानों वसन्तरूप राजा पीताम्बर कर क्रीड़ा कर रहा है अर मौलश्रीकी वर्षा होय रही है ऐसी वसन्तकी लीलाकर आप वह प्रतीन्द्र जानकीका रूप धर रामके समीप आया, वह मनोहर वन जहां अर कोई जन नहीं अर नाना प्रकारके वृक्ष सबऋतुके फूल रहे हैं, ता समय रामके समीप सीता सुन्दरी कहती भई—हे नाथ! पृथिवीविषें भ्रमण करते कोई पुण्यके योगतैं तुमको देखे वियोगरूप लहरका भरा जो स्नेहरूप समुद्र ताविषै मैं डूबू हूं सो मोहि थांभो अनेक प्रकार रागके वचन कहे परन्तु मुनि अकम्प सो वह सीताका जीव मोहके उदयकर कभी दाहिने कभी बांये भ्रमै कामरूप ज्वरके योगकर कम्पित है शरीर अर महा सुन्दर अरुण हैं अधर जाके या भांति कहती भई हे देव। मैं विना विचारे तिहारी आज्ञा विना दीक्षा लीनी मोहि विद्याधरिनिने बहकाया अब मेरा मन तुमविषें है, या दीक्षा कर पूर्णता होवै। यह दीक्षा अत्यन्त वृद्धनिको योग्य है कहां यह यौवन अवस्था अर कहां यह दुर्द्धर व्रत? महाकोमल फूल दावानलकी ज्वाला कैसे सहार सके? अर हजारां विद्याधरनिकी कन्या और हू तुमको वरा चाहे हैं मोहि आगे धार ल्याई हैं कहे हैं तिहारे आश्रय हम बलदेवको वरें, यह कहे हैं अर हजारां दिव्य कन्या नाना प्रकारके आभूषण पहरे राजहंसिनी समान है चाल जिनकी सो प्रतीन्द्रकी विक्रिया कर मुनीन्द्रके समीप आईं कोयलतें हू अधिक मधुर बोलें ऐसी सोहैं मानों साक्षात् लक्ष्मी ही हैं मनको आल्हाद उपजावें कानोंको अमृत समान ऐसे दिव्य गीत गावती भईं अर वीण वां-

सुरी मृदंग बजावती भईं भ्रमर सारिखे श्याम केश विजुरी समान चमत्कार महासुकुमार पातरी कटि क-
ठोर अति उन्नत हैं कुच जिनके सुन्दर शृंगार करे नाना वर्णके वस्त्र पहिरे, हाव भाव विलास विभ्रमको
रती मुलकती अपनी कांतिकर व्याप्त किया है आकाश जिन्होंने मुनिके चौगिर्द बेठी प्रार्थना करती भईं
हे देव ! हमारी रक्षा करो अर कोई एक पूछती भई हे देव । यह कौन वनस्पति है अर कोई एक माधवी
लताके पुष्पके ग्रहणके मिस बाहू ऊंची करती अपना अङ्ग दिखावती भई, अर कोई एक भेली होयकर
ताली देती रासमण्डल रचती भई, पल्लवसमान हैं कर जिनके अर कोई परस्पर जलकेलि करती भईं या
प्रकार नाना भांतिकी क्रीड़ाकर मुनिके मन डिगायवेका उद्यम करती भई, सो हे श्रेणिक ! जैसे पवनकर
सुमेरु न डिगै तैसे श्रीरामचन्द्र मुनिका मन न डिगा आत्मस्वरूपके अनुभवी रामदेव सरल हैं दृष्टि जि-
नकी, विशुद्ध है आत्मा जिनका, परीषहरूप वज्रपातसे न डिगे, क्षपकश्रेणी चढ़े, शुक्लध्यानके प्रथम
पाएविषै प्रवेश किया, रामचन्द्रका भाव आत्माविषैं लग अत्यन्त निर्मल भया सो उनका जोर न पहुंचा
मूढ़जन अनेक उपाय करैं परन्तु ज्ञानी पुरुषनिका चित्त न चलै, वे आत्मस्वरूपविषैं ऐसे दृढ़ भए जो
काहू प्रकार न चिगे, प्रतीन्द्रदेवने मायाकर रामका ध्यान डिगायवेको अनेक यत्न किए परन्तु कछुही
उपाय न चला, वे भगवान् पुरुषोत्तम अनादि कालके कर्मोंकी वर्गणाके दग्ध करिवेको उद्यमी भये पहिले
पाएके प्रसादसे मोहका नाश कर बारहवें गुणस्थान चढ़े तहां शुक्लध्यानके दूजे पायेके प्रसादतैं ज्ञानावरण
अन्तरायका अन्त किया माघ शुक्ला द्वादशीकी पिछली रात्रि केवलज्ञानको प्राप्त भये केवलज्ञानविषैं सर्व
द्रव्य समस्त पर्याय प्रतिभासे ज्ञानरूप दर्पणमें लोकालोक सब भासे तब इन्द्रादिक देवनिके आसन क-
म्पायमान भये अवधिज्ञानकर भगवान् रामको केवल उपजा जानकर केवलकल्याणककी पूजाको आए,
महा विभूति संयुक्त देवनिके समूह सहित बड़े श्रद्धावान् सबही इन्द्र आये घातिया कर्मके नाशक अर्हन्त पर-
मेष्ठी तिनको चारणमुनि अर चतुरनिकायके देव सब ही प्रणाम करते भए । वे भगवान् छत्र चमर सिंहा-
सन आदिकर शोभित त्रैलोक्यकर वन्दिवे योग्य सयोगकेवली तिनकी गंधकुटी देव रचते भए दिव्यध्वनि

खिरता भई सब ही श्रवण करते भए अर बारम्बार स्तुति करते भये सीताका जीव स्वयंप्रभ नामा प्रतींद्र केवलीकी पूजाकर तीन प्रदक्षिणा देय बारम्बार क्षमा करावता भया, हेभगवन्! मैं दुर्बुद्धिने जो दोष किए सो क्षमा करो, गौतम स्वामी कहे हैं—हे श्रेणिक! वे भगवान् बलदेव अनंत लक्ष्मी कांतिकर संयुक्त आनंदमूर्त्ति केवली तिनकी इन्द्रादिक देव महाहर्षके भरे अनादि रीति प्रमाण पूजा स्तुतिकर विनती करते भए, केवली विहार किया, तब देवहु विहार करते भए।

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषा वचनिकाविषैं रामकू केवलज्ञानकी उत्पत्ति वर्णन करनेवाला एकसौ बाईसवा पर्व पूर्ण भया ॥१२२॥

अथानन्तर—सीताका जीव प्रतींद्र लक्ष्मणके गुण चितार लक्ष्मणका जीव जहां हुता अर खरदूषणका पुत्र शम्बूक असुरकुमार जातिका देव जहां था तहां जायकर ताकूं सम्यग्ज्ञानका ग्रहण कराया सो तीजे नरक नारकिनिकूं बाधा करावे हिंसानंद रौद्रध्यानविषैं तत्पर पापी नारकीको लड़ावै। पापके उदयकर जीव अधोगति जाय। सो तीजेतक तो असुरकुमारहू लड़ावैं आगे असुरकुमार न जायं, नारकी ही परस्पर लड़ै। जहां कैयकनिकूं अग्निकुण्डविषैं डारै हैं सो पुकारै हैं। कैयकनिकूं कांटेनिकर युक्त शाल्मली वृक्ष, तिनपर चढ़ाय घसीटै हैं। कैयकनिकूं लोहमई मुद्गरनिकरि कूटै है। अर जे मांस आहारी पापी तिनकूं उनहीका मांस काटि खवावै है अर प्रज्वलित लोहेके गोला तिनकौं मुखमें मारि २ देहै। अर कैयकनकी विक्रिया है। कैयकनिको सूली चढ़ावैं हैं अर वज्रके मुद्गरनितै मारै हैं, कई एकनिकूं कुम्भीपाकविषै डारै हैं, कैयकनिको ताता तांबा गालि २ प्यावै हैं अर कहै हैं ये मदिरा पानके फल हैं। कैयकोंको काठमें बांधकर करौतोसे चीरे हैं अर कैयकोंको कुठारोंसे काटै हैं, कैयकोंको घानीमें पेले हैं कैयकोंकी आंख काढे हैं कैयकोंकी जीभ काढे हैं वह क्रूर कैयकोंके दांत तोड़े हैं इत्यादि नारकीनिको अनेक दुःख हैं सो अवधिज्ञानकर प्रतीन्द्र नारकीनिकी पीड़ा देख शंबूकके समझायवेको तीजी भूमि गया सो असुरकुमार जातिके देव क्रीड़ा करते थे वे तो इनके तेजसे डर गए अर शम्बूकको प्रतींद्र कहते भए—अरे पापी निर्दई

तैंने यह क्या आरम्भा जो जीवोंको दुःख देवे है। हे नीच देव ! क्रूरकर्म तज क्षमा पकड़, यह अनर्थके कारण-कर्म तिनकर कहा अर यह नरकके दुःख सुनकर भय उपजे है तू प्रत्यक्ष नारकियोंको पीड़ा करे है करावे है सो तुझे त्रास नहीं यह वचन प्रतीन्द्रके सुन शंबूक प्रशांत भया, दूसरे नारको तेज न सह सके रोवते भये अर भागते भए तब प्रतीन्द्रने कही हो नारकी हो मुझसे मत डरो जिन पापोंकर नरकमें आए हो तिनसे डरो, जब या भांति प्रतीन्द्रने कही तब उनमें कैयक मनमें विचारते भए जो हम हिंसा मृषावाद परधन हरण परनारिरमण बहु आरम्भ बहु परिग्रहमें प्रवर्ते रौद्रध्यानी भए उसका यह फल है भोगोंविषै आसक्त भए क्रोधादिककी तीव्रता भई खोटे कर्म किये उससे ऐसा दुःख पाया देखो यह स्वर्गलोकके देव पुण्यके उदयसे नाना प्रकारके विलास करे हैं रमणीक विमान चढ़े जहां इच्छा होय वहांही जायं या भांति नारकी विचारते भए अर शम्बूकका जीव जो असुरकुमार उसको ज्ञान उपजा फिर रावणके जीवने प्रतींद्रसे पूछा—तुम कौन हो ? तब उसने सकल वृत्तांत कहा म सीताका जीव तपके प्रभावकर सोलवें स्वर्गमें प्रतींद्र भया, अर श्रीरामचन्द्र महामुनींद्र होय ज्ञानावरण दर्शनावरण मोहिनी अंतरायनिका नाशकर केवली भए सो धर्मोपदेश देते जगतको तारते भरतक्षेत्रविषैं तिष्ठे हैं नाम गोत्र वेदनी आयुका अन्तकर परमधाम पधारेंगे अर तू विषय वासनाकर विषम भूमिविषैं पड़ा अब भी चेत, ज्यूं कृतार्थ होय, तब रावणका जीव प्रतिबोधको प्राप्त भया अपने स्वरूपका ज्ञान उपजा अशुभ कर्म बुरे जाने, मनमें विचारता भया मैं मनुष्य भव पाय अणुव्रत महाव्रत न आराधे तिससे इस अवस्थाको प्राप्त भया। हाय, हाय, मैं कहा किया जो आपको दुःखसमुद्रमें डारा। यह मोहका माहात्म्य है जो जीव आत्महित न कर सकें रावण प्रतीन्द्रको कहे देव ! तुम धन्य हो विषयकी वासना तजी जिनवचनरूप अमृतको पीकर देवोंके नाथ भए। तब दयालु होयकर कही तुम भय मत करो चलो हमारे स्थानको चलो ऐसा कह याके उठायवेको भया तब रावणके जीवके शरीरकी परमाणु बिखर गईं जैसे अग्निकर माखन पिगल जाय काहू समर्थ न भया जैसे दर्पणमें तिष्ठती छाया न गही जाय, तब रावणका जीव कहता

भया, हे प्रभो ! तुम दयालु हो सो तुमको दया उपजेही परन्तु इन जीवनिने पूर्वे जे कर्म उपार्जे हैं तिनका फल अवश्य भोगे हैं विषयरूप मांसका लोभी दुर्गतिकी आयु वांधे है सो आयु पर्यंत दुःख भोगवे है यह जीव कर्मोंके आधीन इसका देव क्या करें हमने अज्ञानके योगसे अशुभ कर्म उपार्जे हैं इनका फल अवश्य भोगवेंगे आप छुड़ायवे समर्थ नहीं तिससे कृपाकर वह उपदेश कहो जिसकर फिर दुर्गतिके दुःख न पावें, हे दयानिधे ! तुम परम उपकारी हो, तब देवने कही परमकल्याणका मूल सम्यक्ज्ञान है सो जिनशासन का रहस्य है अविवेकियोंको अगम्य है तीन लोकमें प्रसिद्ध है आत्मा अमूर्तिक सिद्ध समान उसे समस्त परद्रव्योंसे जुदा जाने जिनधर्मका निश्चय करे यह सम्यग्दर्शन कर्मोंका नाशक शुद्ध पवित्र परमार्थका मूल जीवोंने न पाया तातैं अनंत भव ग्रहे यह सम्यग्दर्शन अभव्योंको अप्राप्य है अर कल्याणरूप है जगतमें दुर्लभ है सकलमें श्रेष्ठ है सो जो तू आत्मकल्याण चाहे है तो उसे अङ्गीकार कर जिसकर मोक्ष पावै उससे श्रेष्ठ और नहीं न हुआ न होयगा इसीकर सिद्ध भए हैं अर होयंगे जे अरहन्त भगवानने जीवादिक नव पदार्थ भाखे हैं तिनकी दृढ़ श्रद्धा करनी उसे सम्यग्दर्शन कहिए इत्यादि वचनोंकर रावणके जीवकों सुरेंद्रने सम्यक्त्व ग्रहण कराया अर याकी दशा देख विचारता भया जो देखो रावणके भवमें याकी कहा कांति थी महासुन्दर लावण्यरूप शरीर था सो अब ऐसा होय गया जैसा नवीन वन अग्निकर दग्ध हो जाय जिसे देख सकल लोक आश्चर्यको प्राप्त होते सो ज्योति कहां गई ? बहुरि ताहि कहता भया कर्मभूमिमें तुम मनुष्य भए थे सो इन्द्रियोंके क्षुद्र सुखके कारण दुराचारकर ऐसे दुःखरूप समुद्रमें डूबे ॥

इत्यादि प्रतींद्रने उपदेशके वचन कहे, तिनको सुन कर उसके सम्यक्दर्शन दृढ़ भया अर मनमें विचारता भया कर्मोंके उदय कर दुर्गतिके दुःख प्राप्त भए तिनको भोग यहांसे छूट मनुष्य देह पाय जिनराजका शरण गहूंगा। प्रतींद्रसे कही अहो देव ! तुमने मेरा बड़ा हित किया जो सम्यक्दर्शनमें मोहि लगाया, हे प्रतींद्र महाभाग्य ! अब तुम जावो, वहां अच्युतस्वर्गमें धर्मके फलसे सुख भोग मनुष्य होय शिवपुरकूं प्राप्त होवो, जब ऐसा कहा तब प्रतीन्द्र उसे समाधान रूप कर कर्मोंके उदयको सोचते संते सम्यक्दृष्टि

वहांसे ऊपर आया संसारकी मायासे शंकित है आत्मा जाका अर्हंत सिद्ध साधु जिनधर्म्मके शरणविषैं
तत्पर है मन जाका तीन वेर पंच मेरुकी प्रदक्षिणा कर चैत्यालयोंका दर्शन कर नारकीनिके दुःखसे कंपाय-
मान है चित्त जाका स्वर्ग लोकमेंहू भोगाभिलाषी न भया मानों नारकीनिकी ध्वनि सुनै है, सोलमें स्वर्गके
देवको छठे नरक लग अवधिज्ञान कर दीखे है तीजे नरकके विषैं रावणके जीवको अर शंबूकका जीव जो
असुरकुमार देव था ताहि संबोधि सम्यक्त्व प्राप्त किया। हे श्रेणिक। उत्तम जीवोंसे पर उपकार ही बने
बहुरि स्वर्ग लोकसे भरतक्षेत्रमें श्रीरामके दर्शनको आए पवनसेहू शीघ्रगामी जो विमान तामें आरूढ़ अनेक
देवोंको संग लिये नाना प्रकारके वस्त्र पहिरे हार माला मुकुटादिक कर मंडित शक्ति गदा खड्ग धनुष
बरछी शतघ्नी इत्यादि अनेक आयुधोंको धरे गज तुरंग सिंह इत्यादि अनेक वाहनों पर चढ़े मृदंग बांसुरी
वीण इत्यादि अनेक वादित्रनिके शब्द तिन कर दशों दिशा पूर्ण करते केवलीके निकट आए। देवोंके
वाहन गज तुरंग सिंहादिक तिर्यंच नहीं देवोंकी विक्रिया है। श्रीरामको हाथ जोड़ सीस नवाय वारंवार
प्रणाम कर सीताका जीव प्रतींद्र स्तुति करता भया—हे संसारसागरके तारक। तुमने ध्यानरूप पवन कर
ज्ञानरूप अग्नि दीप्त करी, संसार रूप वन भस्म किया अर शुद्ध लेश्या रूप त्रिशूल कर मोहरिपु हना, वैरा-
ग्यरूप वज्र कर दृढ़ स्नेहरूप पिंजरा चूर्ण किया। हे नाथ। हे मुनीन्द्र! हे भवसूदन। संसाररूप वनसे जे
डरे हैं तिनको तुम शरण हो। हे सर्वज्ञ कृतकृत्य जगतगुरु पाया है पायवे योग्य पद जिन्होंने हे प्रभो!
मेरी रक्षा करो संसारके भ्रमणसे अतिव्याकुल है मन मेरा तुम अनादि निधन जिनशासनका रहस्य जान
प्रबल तप कर संसार सागरसे पार भए, हे देवाधिदेव। यह तुमको कहा युक्त? जो मुझे भववनमें तज आप
अकेले विमल पदको पधारे तब भगवान् कहते भए हे प्रतींद्र! तू राग तज जे वैराग्यमें तत्पर हैं तिन ही
को मुक्ति है। रागी जीव संसारमें डूबे है जैसे कोई शिलाको कंठमें बांध भुजावों कर नदीको नहीं तिर
सके तैसे रागादिक भार कर चतुर्गतिरूप नदी न तिरी जाय, जे ज्ञान वैराग्य शील संतोषके धारक हैं वेई
संसारको तिरे हैं जे श्रीगुरुके वचन कर आत्मानुभवके मार्ग लगे वेई भव भ्रमणसे छूटे और उपाय नहीं

काहूका भी ले जाया कोई लोकशिखर न जाय एक वीतराग भावी हीसे जाय। इसीभांति श्रीराम भगवान् सीताके जीवको कहते भए, सो यह वार्ता गौतमस्वामीने श्रेणिकसे कही बहुरि कहते भए हे नृप! सीताके जीव प्रतीन्द्रने जो केवलीसे पूछी अर उनने कही सो तू सुन, प्रतीन्द्रने पूछी हे नाथ! दशरथादिक कहां गए अर लव अंकुश कहां जावेंगे? तब भगवान्ने कही दशरथ कौशल्या सुमित्रा केकई सुप्रभा अर जनकका भाई कनक यह सब तपके प्रभाव कर तेरहमें देवलोक गए हैं यह सब ही समान ऋद्धिके धारी देव हैं अर लवअंकुश महाभाग्य कर्म रूप रजसे रहित होय विमल पदको इसही जन्मसे पावेंगे, इस भांति केवलीकी ध्वनि सुन भामंडलकी गति पूछी, हे प्रभो! भामंडल कहां गया, तब आप कहते भए हे प्रतीन्द्र! तेरा भाई राणी सुन्दरमालिनी सहित मुनिदानके प्रभाव कर देवकुरु भोगभूमिमें तीन पल्यकी आयुके भोक्ता भोगभूमिया भए तिनके दानकी वार्ता सुन—अयोध्यामें एक बहु कोटि धनका धनी सेठ कुलपति उसके मकरा नामा स्त्री जिसके पुत्र राजावोंके तुल्य पराक्रमी सो कुलपतिने सुनी सीताको वनमें निकासी तब उसने विचारी वह महागुणवती शीलवती सुकुमार अङ्ग निर्जन वनमें कैसे अकेली रहेगी। धिक्कार है संसारकी चेष्टाको, यह विचार दयालुचित्त होय द्युति भट्टारकके समीप मुनि भया अर उसके दोय पुत्र एक अशोक दूजा तिलक यह दोनों मुनि भए सो द्युतिभट्टारक तो समाधि मरणकर नवमग्रैवेयकमें अहिमिन्द्र भए अर यह पिता पुत्र तीनों मुनि ताम्रचूड़नामा नगर वहां केवलीको वंदनाको गए सो मार्गमें पचास योजनकी एक अटवी वहां चतुर्मासिक आय पड़ा तब एक वृक्षके तले तीनों साधु विराजे मानों साक्षात् रत्नत्रयही हैं वहां भामण्डल आय निकसा अयोध्या आवे था सो विषम वनमें मुनिनिको देख विचार किया, यह महापुरुष जिनसूत्रकी आज्ञा प्रमाण निर्जन वनमें विराजे चौमासे मुनियोंका गमन नहीं अब यह आहार कैसे करें तब विद्याकी प्रबल शक्ति कर निकट एक नगर बसाया जहां सब सामग्री पूर्ण बाहिर नाना प्रकारके उपवन सरोवर अर धानके क्षेत्र अर नगरके भीतर बड़ी बस्ती महासंपत्ति, चार महीना आप भी परिवार सहित उस नगरमें रहा अर मुनियोंके वैयावृत किये, वह वन, ऐसा था जिसमें

जल नहीं सो अद्भुत नगर बसाया, जहां अन्नजलकी बाहुल्यता सो नगरमें मुनिनिका आहार भया अर और भी दुखित भुखित जीवोंको भांति भांतिके दान दिए, अर सुन्दरमालिनी राणी सहित आप मुनोको अनेक वार निरंतराय आहार दिया चतुर्मास पूर्ण भए मुनि विहार करते भए अर भामंडल अयोध्या आय फिर अपने स्थानक गया एक दिन सुन्दरमालिनी राणी सहित सुखसे शयन करै था सो महल पर विजुरी पड़ी राजा राणी दोनों मरकर मुनिदानके प्रभावसे सुमेरु पर्वतकी दाहिनी ओर देवकुरु भोग भूमि वहां तीन पल्यके आयुके भोक्ता युगल उपजे, सो दानके प्रभावसे सुख भोगवे हैं जे सम्यक्त रहित हैं अर दान करे हैं सो सुपात्र दानके प्रभावसे उत्तमगतिके सुख पावे हैं सो यह पात्रदान महासुखका दाता है यह बात सुन फिर प्रतीन्द्रने पूछी हे नाथ। रावण तीजो भूमिसे निकस कहां उपजेगा अर मैं स्वर्गसे चयकर कहां उपजूंगा मेरे अर लक्ष्मणके अर रावणके केते भव बाकी हैं सो कहो ॥

तब सर्वज्ञदेवने कही—हे प्रतीन्द्र सुन, वे दोनों विजयावती नगरीमें सुनंद नामा कुटुम्बी सम्यकदृष्टि उसके रोहिणी नामा भार्या उसके गर्भविषैं अरहदास ऋषिदास नामा पुत्र होवेंगे महा गुणवान निर्मलचित्त दोनों भाई उत्तम क्रियाके पालक श्रावकके व्रत आराध समाधि मरणकर जिनराजका ध्यान धर स्वर्गविषैं देव होयंगे तहां सागरान्त पर्यन्त सुख भोगि स्वर्गसे चयकर बहुरि वाही नगरीविषैं वड़े कुलविषैं उपजेंगे सो मुनिनिको दान देकर हरिक्षेत्र जो मध्यम भोगभूमि वहां युगलिया होय दोय पल्यका आयु भोग स्वर्ग जावेंगे बहुरि उस ही नगरीविषैं राजा कुमारकीर्ति राणी लक्ष्मी तिनके महायोधा जयकांत जयप्रभ नामा पुत्र होवेंगे बहुरि तपकर सातवें स्वर्ग उत्कृष्ट देव होवेंगे देवलोकके महासुख भोगेंगे अर तू सोलवां अच्युत स्वर्ग वहांसे चयकर या भरतक्षेत्रविषैं रत्नस्थलपुर नामा नगर वहां चौदह रत्नका स्वामी षट् खंड पृथिवीका धनी चक्रनामा चक्रवर्ती होयगा तब वे सातवें स्वर्गसे चयकर तेरे पुत्र होवेंगे रावणके जीवका नाम तो इन्द्ररथ अर वसुदेवके जीवका नाम मेघरथ दोनों महाधर्मात्मा होवेंगे परस्पर उनमें अतिस्नेह होगा अर तेरा उनसे अतिस्नेह होयगा। जिस रावणने नीतिसे तीन खण्ड पृथिवीका अखण्ड राज्य किया

अर ये प्रतिज्ञा जन्मपर्यंत निबाही जो परस्त्री मोहि न इच्छे ताहि मैं न सेऊं सो रावणका जीव इन्द्ररथ धर्मात्मा कैयक श्रेष्ठ भव धार तीर्थंकर देव होयगा तीनलोक उसको पूजेंगे अर तू चक्रवर्ती राज्यपद तज मुनिव्रतधारी होय पंचोत्तरोंविषैं वैजयन्त नामा विमान तहां तपके प्रभावसे अहमिंद्र होवेगा तहांसे चयकर रावणका जीव तीर्थंकर उसके प्रथम गणधर होय निर्वाण पद पावेगा। यह कथा श्रीभगवान् राम केवली तिनके मुख प्रतींद्र सुनकर अतिहर्षित भया बहुरि सर्वज्ञदेवने कही हे प्रतींद्र। तेरा चक्रवर्ती पदका दूजा पुत्र मेघरथ सो कैयक महाउत्तम भवधर धर्मात्मा पुष्पकर द्वीपके महा विदेह क्षेत्रविषैं शतपत्र नामा नगर तहां पञ्चकल्याणकका धारक तीर्थंकर देव चक्रवर्ती पदको धरे होयगा संसारका त्यागकर केवल उपाय अनेकोंको तारेगा अर आप परमधाम पधारेगा, ये वासुदेवके भव तोहि कहे अर मैं अब सात वर्षविषैं आयु पूर्णकर लोक शिखर जाऊगा जहांसे बहुरि आना नहीं, अर जहां अनंत तीर्थंकर गए अर जावेंगे अनंत केवली तहां पहुंचे जहां ऋषभादि भरतादि विराजे हैं अविनाशी पुर त्रैलोक्यके शिखर हैं, जहां अनन्तसिद्ध है, वहां मैं तिष्ठूंगा ये वचन सुन प्रतीन्द्र पद्म नाम जे श्रीरामचन्द्र सर्वज्ञ वीतराग तिनको बार बार नमस्कार करता भया अर मध्यलोकके सब तीर्थ वन्दे भगवानके कृत्रिम अकृत्रिम चैत्यालय अर निर्वाणक्षेत्र वहां सर्वत्र पूजाकर अर नन्दीश्वरद्वीपविषैं अञ्जनिगिरि दधिमुख रतिकर तहां बड़े निधानसे अष्टाह्निकाकी पूजा करी देवाधिदेव जे अरहंत सिद्ध तिनका ध्यान करता भया, अर केवलीके वचन सुन ऐसा निश्चय भया जो मैं केवली होय चुका अल्प भव हैं अर भाईके स्नेहसे भोग भूमिविषै जहां भामण्डलका जीव है तहां उसे देखा अर उसको कल्याणका उपदेश दिया अर बहुरि अपना स्थान सोलवां स्वर्ग वहां गया जाके हजारों देवांगना तिनसहित मानसिक भोग भोगता भया। श्रीरामचन्द्रका सतरह हजार वर्षका आयु सोलह धनुषकी ऊंची काया कैयक जन्मके पापोंसे रहित होय सिद्ध भये वे प्रभु भव्य जीवोंको कल्याण करो जन्म जरा मरण महारिपु जीते परामात्मा भये जिनशासनविषैं प्रकट है महिमा जिनकी जन्मजरा मरणका विच्छेदकर अखंड अविनाशी परम अतींद्रिय सुख पाया सुर असुर मुनिवर तिनके जे अधिपति

तिनकर सेयवे योग्य नमस्कार करवे योग्य दोषोंके विनाशक पच्चोस वर्ष तपकर मुनिव्रत पाल केवली भये सो आयु पर्यंत केवली दशाविषैं भव्योंको धर्मोपदेश देय तीन भवनका शिखर जो सिद्धपद वहां सिधारे।

सिद्धपद सकल जीवोंका तिलक है राम सिद्ध भए तुम रामको सीस नवाय नमस्कार करो राम सुर-नर मुनियोंकर आराधिवे योग्य हैं शुद्ध हैं भाव जिनके संसारके कारण जे रागद्वेष मोहादिक तिनसे रहित हैं परम समाधिके कारण हैं अर महामनोहर हैं, प्रतापकर जीता है तरुण सूर्यका तेज जिनने अर उन जैसो शरदकी पूर्णमासीके चन्द्रमामें कांति नहीं सर्व उपमा रहित अनुपम वस्तु हैं अर स्वरूप जो आत्मरूप उसमें आरूढ हैं, श्रेष्ठ हैं चरित्र जिनके, श्रीराम यतीश्वरोंके ईश्वर देवोंके अधिपति प्रतीन्द्रको मायासे मोहित न भए जीवोंके हितू परम ऋद्धिकर युक्त अष्टम बलदेव पवित्र शरीर शोभायमान अनन्त वीर्यके धारी अतुल महिमाकर मण्डित निर्विकार अठारह दोषकर रहित अष्टादशसहस्र शीलके भेद तिनकर पूर्ण अति उदार अति गम्भीर ज्ञानके दीपक तीन लोकमें प्रकट है प्रकाश जिनका अष्टकर्मके दग्ध करणहारे गुणोंके सागर क्षोभरहित सुमेरुसे अचल धर्मके मूल कषाय रूप रिपुके नाशक समस्त विकल्परहित महानिर्द्वन्द्व जिनेन्द्रके शासनका रहस्य पाय अन्तरात्मासे परमात्मा भए उनने त्रैलोक्यपूज्य परमेश्वरपद पाया तिनको तुम पूजो धोय डारे हैं कर्मरूप मल जिनने, केवलज्ञान केवल दर्शनमई योगीश्वरोंके नाथ सर्व दुःखके दूर करणहारे मन्मथके मथनहारे तिनको प्रणाम करो, यह श्रीबलदेवका चरित्र महामनोज्ञ जो भाव धर निरन्तर वांचें सुनें पढ़ें पढ़ावें शङ्कारहित होय महा हर्षका भरा रामकी कथाका अभ्यास करै तिनके पुण्यकी वृद्धि होय अर वैरी खड्ग हाथमें लिए मारिवेको आया होय सो शान्त होय जाय, या ग्रंथके श्रवणसे धर्मके अर्थी इष्टधर्मको लहैं यशके अर्थी यशको पावें राज्य भ्रष्ट हुए यदि राज्य कामना होय तो राज्य पावें यामें संदेह नाहीं, इष्ट संयोगका अर्थी इष्ट संयोग लहै धनका अर्थी धन पावे, जीतका अर्थी जीत पावे स्त्रीका अर्थी सुन्दर स्त्री पावे, लाभका अर्थी लाभ पावे, सुखका अर्थी सुख अर काहूका कोई वल्लभ विदेश गया होय अर उसके आयवेकी आकुलता होय सो वह सुखसे

घर आवै जो मनविषै अभिलाषा होय सोही सिद्ध होय सर्व व्याधि शान्त होय ग्रामके नगरके वनके देव जलके देव प्रसन्न होंय अर नवग्रहोंकी बाधा न होय, क्रूर ग्रह सौम्य होय जायं अर जे पाप चितवनमें न आवैं वे विलाय जायं अर सकल अकल्याण राम कथाकर क्षय होय जायं, अर जितने मनोरथ हैं वे सब राम कथाके प्रसादसे पावै अर वीतराग भाव दृढ़ होय उसकर हजारां भवके उपार्जे पापोंको प्राणी दूर करे कष्टरूप समुद्रको तिर सिद्धपद शीघ्र ही पावै। यह ग्रन्थ महापवित्र है, जीवको समाधि उपजावनेका कारण है नाना जन्ममें जीवने पाप उपार्जे महा क्लेशके कारण तिनका नाशक है अर नाना प्रकारके व्याख्यान तिनकर संयुक्त है जिसमें बड़े २ पुरुषोंकी कथा भव्यजीवरूप कमलोंको प्रफुल्लित करणहारा है सकल लोककर नमस्कार करिवे योग्य श्रीवर्धमान भगवान उनने गौतमसे कहा अर गौतमने श्रेणिकसे कहा। याही भांति केवली श्रुतकेवली कहते भए। रामचन्द्रका चरित्र साधुवोंकी समाधिकी वृद्धिका कारण सर्वोत्तम महामंगलरूप सो मुनिनिका परिपाटीकर प्रकट होता भया। सुन्दर है वचन जिसमें समीचीन अर्थको धरे अति अद्भुत इन्द्रगुरु नामा मुनि तिनके शिष्य दिवाकरसेन तिनके शिष्य लक्ष्मणसेन तिनके शिष्य रविषेण तिनने जिनआज्ञा अनुसार कहा। यह रामका पुराण सम्यग्दर्शनकी सिद्धिका कारण महाकल्याणका कर्ता निर्मल ज्ञानका दायक विचक्षण जीवोंको निरंतर सुनिवे योग्य है अतुल पराक्रमी अद्भुत आचरणके धारक महासुकृती जे दशरथके नंदन तिनकी महिमा कहां लग कहूं इस ग्रन्थमें बलभद्र नारायण प्रतिनारायण तिनका विस्ताररूप चरित्र है। जो यामें बुद्धि लगावे तो अकल्याणरूप पापोंको तजकर शिव कहिये मुक्ति उसे अपनी करै जीव विषयकी वांछाकर अकल्याणको प्राप्त होय हैं। विषयाभिलाष कदाचित् शांतिके अर्थ नहीं, देखो विद्याधरनिका अधिपति रावण परस्त्रीकी अभिलाषाकर कष्टको प्राप्त भया कामके रागकर हना गया ऐसे पुरुषोंकी यह दशा है तो और प्राणी विषय वासनाकर कैसे सुख पावें, रावण हजारां स्त्रियों कर मण्डित निरन्तर सुख सेवे था तृप्त न भया परदाराकी कामनाकर विनाशको प्राप्त भया। इन व्यसनों कर जीव कैसे सुखी होय जो पापी परदाराका सेवन करे सो कष्टके सागरमें पड़े, अर

श्रीरामचन्द्र महा शीलवान परदारा पराङ्मुख जिनशासनके भक्त धर्मानुरागी वे बहुतकाल राज्य भोग संसारको असार जान वीतरागके मार्गमें प्रवर्ते परम पदको प्राप्त भए अर भी जे वीतरागके मार्गमें प्रवर्तेंगे वे शिवपुर पहुंचेंगे इसलिए जे भव्य जीव हैं वे जिनमार्गका दृढ़प्रतीति कर अपनी शक्ति प्रमाण व्रतका आचरण करो जो पूर्णशक्ति होय तो मुनि होवो अर न्यून शक्ति होय तो अणुव्रतके धारक श्रावक होवो। यह प्राणी धर्म फलकर स्वर्ग मोक्षके सुख पावे हैं अर पापके फलसे नरक निगोदके दुःख पावे हैं यह निःसंदेह जानो अनादि कालकी यही रीति है धर्म सुखदाई अधर्म दुखदाई पाप किसे कहिए अर पुण्य किसे कहिए सो उरविषे धारो जेते धर्मके भेद हैं तिनविषैं सम्यक्त्व मुख्य है अर जितने पापके भेद हैं तिनमें मिथ्यात्व मुख्य है सो मिथ्यात्व कहा ? अतत्त्वकी श्रद्धा अर कुगुरु कुदेव कुधर्मका आराधन परजीवको पीड़ा उपजावना अर क्रोध मान माया लोभकी तीव्रता अर पांच इन्द्रियोंके विषय सप्त व्यसनका सेवन अर मित्रद्रोह कृतघ्न विश्वासघात अभक्ष्यका भक्षण अगम्यविषैं गमन मर्मका छेदक वचन सुरापान इत्यादि पापके अनेक भेद हैं वे सब तजने अर दया पालनी सत्य बोलना चोरी न करनी शील पालना तृष्णा तजनी काम लोभ तजने शास्त्र पढ़ना काहूको कुवचन न कहना गर्व न करना प्रपंच न करना अदेखसका न होना शान्त भाव धारना पर उपकार करना परदारा परधन परद्रोह तजना परपीड़ाका वचन न कहना बहु आरंभ बहु परिग्रहका त्याग करना दान देना तप करना परदुःखहरण इत्यादि जो अनेक भेद पुण्यके हैं वे अङ्गीकार करने, अहो प्राणी हो सुखदाता शुभ है अर दुःखदाता अशुभ है दारिद्र दुःख रोग पीड़ा अपमान दुर्गति यह सब अशुभके उदयसे होय हैं अर सुख संपत्ति सुगति यह सब शुभके उदयसे होय हैं। शुभ अशुभही सुख दुःखके कारण हैं अर कोई देव दानव मानव सुख दुःखका दाता नहीं अपने अपने उपार्जे कर्मका फल सब भोगवे हैं सब जीवोंसे मित्रता करना किसीसे वैर न करना किसीको दुःख न देना सब ही सुखी हों यह भावना मनमें धरना, प्रथम अशुभको तज शुभमें आवना बहुरि शुभाशुभसे रहित होय शुद्ध पदको प्राप्त होना, बहुत कहिवे कर क्या ? इस पुराणके श्रवणकर एक शुद्ध सिद्ध पदमें आरूढ़ होना अनेक भेद

महाऋद्धिका धारक देव भया अर जो भूपणके भवविषै याका पिता धनदत्त सेठ था विनोद ब्राह्मणका जीव सो मोहके योगतैं अनेक कुयोनिविषै भ्रमणकर जम्बूद्वीप भरतक्षेत्र तहां वादम नाम नगर ता विषै अग्निमुख नामा ब्राह्मण ताके शकुना नामा स्त्री मृदुमतिनामा पुत्र भया सो नाम तो मृदुमति परन्तु कठोर चित्त अतिदुष्ट महा जुवारी अविनयी अनेक अपराधोंका भरा दुराचारी सो लोकोंके उराहनेसे माता पिताने घरसे निकासा सो पृथिवीविषै परिभ्रमण करता पोदनापुर गया, किसीके घर तृपातुर पानी पीवनेको पैठा सो एक ब्राह्मणी आंसू डारती हुई इसे शीतल जल प्यावती भई यह शीतल मिष्टजलसे तृप्त हो ब्राह्मणीको पूछता भया तू कौन कारण रुदन करे है तब ताने कही तेरे आकार एक मेरा पुत्र था सो मैं कठोर चित्त होय क्रोधकर घरसे निकासा सो तैंने भ्रमण करते कहूं देखा होय तो कह, नील कमल समान तो सारिखा ही है, तब यह आंसू डार कहता भया—हे मात। तू रुदन तज वह मैं ही हूं तोहि देखे बहुत दिन भये तातैं मोहि नाहीं पहिचाने है तु विश्वास गह मैं तेरा पुत्र हूं तब वह पुत्र जान राखती भई, अर मोहके योगतैं ताके स्तनोंसे दुग्ध झरा, यह मृदुमति तेजस्वी रूपवान् स्त्रीनिके मनका हरणहारा धूर्तोंका शिरोमणि जुवाविषै सदा जीतै बहुत चतुर अनेक कला जानै काम भोगविषै आसक्त, एक वसन्तमाला नामा वेश्या सो ताके अति वल्लभ अर याके माता पिताने यह काढ़ा हुता सो इसके पीछे वे अति लक्ष्मीको प्राप्त भये पिता कुण्डलादिक अनेक भूपणकर मण्डित अर माता कांचीदामादिक अनेक आभरणोंकर शोभित सुखसे तिष्ठे अर एक दिन यह मृदुमति संसाक नगरविषै राजमन्दिरविषै चोरीको गया सो राजा नन्दीवर्धन शशांक मुख स्वामीके मुख धर्मोपदेश सुन विरक्तचित्त भया था सो अपनी राणीसे कहे था कि हे देवि। मैं मोक्ष सुखका देनहारा मुनिके मुख परमधर्म सुना। ये इन्द्रियनके विषय विषसमान दारुण हैं इनके फल नरक निगोद हैं सो मैं जैनेश्वरी दीक्षा धरूंगा तुम शोक मत करियो या भांति स्त्रीको शिक्षा देता हुता सो मृदुमति चोरने यह वचन सुन अपने मनविषै विचारी देखो यह राजऋद्धि तज मुनिव्रत धारे है अर मैं पापी चोरीकर पराया द्रव्य हरूं हूं, धिक्कार मोको ऐसे विचारकर नि-

समीप सर्व परिग्रहका त्या-
र्मलचित्त होय सांसारिक विषय भोगोंसे उदासचित्त भया स्वामी चन्द्रमुखके
गकर जिनदीक्षा आदरी शास्त्रोक्त महादुर्धर तप करता महाक्षमावान् महाप्रासुक आहार लेता भया ॥

अथानन्तर—दुर्गनाम गिरिके शिखर एक गुणनिधि नाम मुनि चार महीनेके उपवास धर
तिष्ठे थे वे सुर असुर मनुष्यनिकर स्तुति करिवे योग्य महा ऋद्धिधारी चारण मुनि थे सो चौमासेका
नियम पूर्ण कर आकाशके मार्ग होय किसी तरफ चले गये, अर यह मृदुमति मुनि आहारके निमित्त
दुर्ग नामा गिरिके समीप अलोक नाम नगर वहां आहारको आया, जूड़ा प्रमाण भूमिको निरखता जाय
था सो नगरके लोकोंने जानी यह वे ही मुनि हैं जो चार महीना गिरिके शिखर रहे यह जानकर अति-
भक्ति कर पूजा करी अर इसे अति मनोहर आहार दिया नगरके लोकोंने बहुत स्तुति करी इसने जानी
गिरिपर चार महीना रहे तिनके भरोसे मेरी अधिक प्रशंसा होय है सो मानका भरा मौन पकड़ रहा,
लोकोंसे यह न कही कि मैं और ही हूं अर वे मुनि अर थे, और गुरुके निकट मायाशल्य दूर न करी,
प्रायश्चित्त न लिया तातैं तिर्यंचगतिका कारण भया तप बहुत किये थे सो पर्याय पूरी कर छठे देव लोक
जहां अभिरामका जीव देव भया था वहां ही यह गया, पूर्वजन्मके स्नेहकर उसके याके अति स्नेह भया
दोनों ही समान ऋद्धिके धारक अनेक देवांगनावों कर मंडित सुखके सागरविषै मग्न दोनों ही सागरों
पर्यन्त सुखसे रमें सो अभिरामका जीव तो भरत भया अर यह मृदुमतिका जीव स्वर्गसे चय मायाचारके
दोषसे इस जम्बूद्वीपके भरत क्षेत्रविषै उतंग है शिखर जिसके ऐसा जो निकुञ्ज नामा गिरि उसविषै महा
गहन शल्लकी नामा वन वहां मेघकी घटा समान श्याम अतिसुन्दर गजराज भया, समुद्रकी गाज समान
है गर्जना जिसकी अर पवन समान है शीघ्र गमन जिसका महा भयंकर आकारको धरे, अति मदोन्मत्त
चन्द्रमा समान उज्ज्वल हैं दांत जिसके, गजराजोंके गुणोंकर मंडित विजयादिक महा हस्ती तिनके
वंशविषै उपजा महाकांतिका धारक ऐरावत समान अति स्वच्छन्द सिंह व्याघ्रादिकका हननहारा महा
वृक्षोंका उपारनहारा पर्वतोंके शिखरका ढाहनहारा विद्याधरोंकर न ग्रहा जाय तो भूमिगोचरियोंकी क्या

वात जाकी वासरो सिंहादिक निवास तज भाग जावैं ऐसा प्रवल गजराज गिरिके वनविषै नाना प्रकार पल्लवका आहार करता मानसरोवर विषै क्रीड़ा करता अनेक गजों सहित विचरे कभी कैलाशविषै विलास करे कभी गंगाके मनोहर द्रहोंविषै क्रीडा करै अर अनेक वन गिरि नदी सरोवरोंविषै सुन्दर क्रीड़ा करे अर हजारों हथिनीनि सहित रमै, अनेक हाथियोंके समूहका शिरोमणि यथेष्ट विचरता ऐसा सोहै जैसा पक्षि-योंके समूह कर गरुड़ सोहे मेघ समान गर्जता मदके नीझरने तिनके झरनेका पर्वत सो एक दिन लंकेश्व-रने देखा, सो विद्याके पराक्रम कर महाउग्र उसने यह नीठि नोठि वश किया इसका त्रैलोक्यमण्डन नाम धरा सुन्दर है लक्षण जिसके जैसे स्वर्गविषै चिरकाल अनेक अप्सराओं सहित क्रीड़ा करी तैसे हाथियोंकी पर्यायविषै हजारों हथिनियोंसे क्रीड़ा करता भया यह कथा देशभूषण केवली राम लक्ष्मणसे कहे हैं कि ये जीव सर्व योनिविषै रति मान लेय हैं निश्चय विचारिए तो सर्व ही गति दुःख रूप हैं अभिरामका जीव भरत अर मृदुमतिका जीव गज सूर्योदय चन्द्रोदयके जन्मसे लेकर अनेक भवके मिलापी हैं तातैं भरतको देख पूर्व भव चितार गज उपशांतचित्त भया अर भरत भोगोंसे परांगमुख दूर भया है मोह जिसका अब मुनिपद लिया चाहै है इस ही भवसे निर्वाण प्राप्त होवेंगे वहुरि भव न धरेंगे श्रीऋषभदेवके समय यह दोनों सूर्योदय चन्द्रोदय नामा भाई थे, मारीचके भरमाये मिथ्यात्वका सेवन कर वहुत काल संसारविषै भ्रमण किया, त्रस स्थावर योनिविषै भ्रमे चन्द्रोदयका जीव कैयक भव पीछे राजा कुलङ्कर वहुरि कैयक भव पीछे रमण ब्राह्मण वहुरि कैयक भव धर, समाधि मरण करणहारा मृग भया, वहुरि स्वर्गविषै देव-वहुरि भूषण नामा वैश्यका पुत्र वहुरि स्वर्ग वहुरि जगद्युत नाम राजा वहांसे भोगभूमि वहुरि दूजे स्वर्ग देव वहांसे चयकर महाविदेह क्षेत्रविषै चक्रवर्ती पुत्र अभिराम भए वहांसे छठे स्वर्ग देव देवसे भरत नरेन्द्र सो चरमशरीरी है वहुरि देह न धारेंगे, अर सूर्योदयका जीव वहुत काल भ्रमण कर राजा कुलङ्करका श्रुतिनामा पुरोहित भया वहुरि अनेक जन्म लेय विनोमनामा विप्र भया, वहुरि अनेक जन्म लेय आर्तध्यानसे मरणहारा मृग भया वहुरि अनेक जन्म भ्रमण कर भूषणका पिता धनदत्त नामा वणिक

बहुरि अनेक जन्म धर मृदुमति नामा मुनि उसने अपनी प्रशंसा सुन राग किया मायाचार शल्य दूर न करी तपके प्रभावसे छठे स्वर्ग देव भया वहांसे चयकर त्रैलोक्य मण्डन हाथी अब श्रावकके व्रत धर देव होयगा ये भी निकट भव्य है। या भांति जीवोंकी गति आगति जान अर इन्द्रियोंके सुख विनाशीक जान या विषम संसार वनको तजकर ज्ञानी जीव धर्मविषै रमो, जे प्राणी मनुष्य देह पाय जिनभाषित धर्म नाहीं करे हैं वे अनन्त काल संसार भ्रमण करेंगे आत्मकल्याणसे दूर हैं तातैं जिनवरके मुखसे निकसा दयामई धर्म मोक्ष प्राप्त करनेको समर्थ याके तुल्य अर नाहीं मोह तिमिरका दूरकरणहारा जोती हैं सूर्यकी कांति जाने सो मन वचन कायकर अंगीकार करो जातैं निर्मल पद पावो ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषा वचनिकाविषै भरतके अर हाथीके पूर्वभव वर्णन करनेवाला पच्चासीवा पर्व पूर्ण भया ॥ ८५ ॥

अथानन्तर—श्रीदेशभूषण केवलीके वचन महा पवित्र मोह अन्धकारके हरणहारे संसार सागरके तारणहारे नानाप्रकारके दुःखके नाशक उनविषै भरत अर हाथीके अनेक भवका वर्णन सुनकर राम लक्ष्मण आदि सकल भव्यजन आश्चर्यको प्राप्त भए, सकल सभा चेष्टारहित चित्राम कैसी होय गई अर भरत नरेंद्र देवेंद्र समान है प्रभा जाकी अविनाशी पदके अर्थ मुनि होयवेकी है इच्छा जिसके गुरुवोंके चरणविषै नम्रीभूत है सीस जिसका महा शांतचित्त परम वैराग्यको प्राप्त हुवा तत्काल उठकर हाथ जोड़ केवलीको प्रणामकर महा मनोहर वचन कहता भया—हे नाथ। मैं संसार वनविषै अनन्त काल भ्रमण करता नाना प्रकार कुयोनियोंविषै संकट सहता दुःखी भया अब मैं संसार भ्रमरसे थका मुझे मुक्तिका कारण तिहारी दिगम्बरी दीक्षा देवो यह आशारूप चतुर्गति नदी मरणरूप उग्र तरंगको धरे उसविषै मैं डूबूं हूं सो मुझे हस्तावलम्बन दे निकासो ऐसा कह केवलीकी आज्ञा प्रमाण तजा है समस्त परिग्रह जिसने अपने हाथोंसे सिरके केश लोंच किये परम सम्यक्तो महाव्रतको अंगीकार जिन दीक्षाधर दिगंबर भया तब आकाशविषै देव धन्य धन्य शब्द कहते भये अर कल्पवृक्षोंके फूलोंकी वर्षा करते भये ॥ हजारसे अधिक राजा भरतके अनुरागसे राजऋद्धि तज जिनेन्द्री दीक्षा धरते भये अर कैयक अल्पशक्ति हुते ते अणुव्रतधर श्रावक भये,

अर माता केकई पुत्रके वैराग्य सुन आंसुनिकी वर्षा करती भई व्याकुलचित्त होय दौड़ी सो भूमिविषै पड़ी, महामोहको प्राप्त भई पुत्रको प्रीतिकर मृतक समान होय गया है शरीर जाका सो चन्दनादिकके जलसे छांटी तो भी सचेत न भई, घनीवेर विषै सचेत भई जैसे वत्स विना गाय पुकारे तैसे विलाप करती भई, हाय पुत्र ! महा विनयवान गुणनिकी खान मनको आल्हादका कारण हाय तू कहां गया, हे अंगज ! मेरा अंग शोकके सागर विषै डूबै है सो थांभ, तो सारिखे पुत्र विना मैं दुःखके सागर विषै मग्न शोककी भरी कैसे जीऊंगी। हाय ! हाय ! यह कहा भया ? या भांति विलाप करती माता श्रीराम लक्ष्मणने संबोधकर विश्रामको प्राप्त करी, अति सुन्दर वचननिकर धीर्य वन्धाया—हे मात ! भरत महा विवेकी ज्ञानवान है तुम शोक तजो, हम कहा तिहारे पुत्र नाहीं, आज्ञाकारी किंकर हैं अर कौशल्या सुमित्रा सुप्रभाने वहुत संबोधा तब शोकरहित होय प्रतिवोधको प्राप्त भई। शुद्ध है मन जाका अपने अज्ञानकी वहुत निन्दा करती भई, धिक्कार या स्त्री पर्यायकूं यह पर्याय महा दोषनिकी खान है, अत्यन्त अशुचि वीभत्स नगरकी मोरी समान अब ऐसा उपाय करूं जाकर स्त्री पर्याय न धरूं, संसार समुद्रको तिरूं यह महा ज्ञानवान सदाही जिनशासनकी भक्तिवन्त हुती अब महा वैराग्यको प्राप्त होय पृथिवीमती आर्यिकाके समीप आर्यिका भाई, एक श्वेत वस्त्र धारा अर सर्व परिग्रह तज निर्मल सम्यक्तकूं धरती सर्व आरम्भ टारती भई। याके साथ तीनसै आर्यिका भईं। यह विवेकिनी परिग्रह तजकर वैराग्य धार ऐसी सोहती भई जैसी कलंकरहित चन्द्रमाकी कला मेघपटलरहित सोहै। श्रीदेशभूषण केवलीका उपदेश सुन अनेक मुनि भये अनेक आर्यिका भईं तिन कर पृथ्वी ऐसी सोहती भई जैसे कमलनिकर सरोवरी सोहै अर अनेक नर नारी पवित्र हैं चित्त जिनके तिन्होंने नाना प्रकारके नियम धर्म रूप श्रावक श्राविकाके व्रत धारे, यह युक्त ही है जो सूर्यके प्रकाश कर नेत्रवान् वस्तुका अवलोकन करे ही करै।

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषा वचनिकाविषै भरत अर कैकयीका वैराग्य वर्णन करनेवाला छियासीवा पर्व पूर्ण भया ॥ ८६ ॥

अथानन्तर—त्रैलोक्यमण्डन हाथी अतिप्रशांतचित्त केवलीके निकट श्रावकके व्रत धारता भया सम्यक्दर्शन संयुक्त महाज्ञानी शुभक्रियाविषै उद्यमी हाथी धर्मविषै तत्पर होता भया, पन्द्रह पन्द्रह दिनके उपवास तथा मासोपवास करता भया, सूके पत्रनिकर पारणा करता भया, हाथी संसारसे भयभीत उत्तम चेष्टाविषै परायण लोकनिकर पूज्य महाविशुद्धताको धरे पृथिवीविषै विहार करता भया कभी पक्षोपवास कभी मासोपवासके पारण ग्रामादिकविषै जाय तो श्रावक ताहि अतिभक्तिकर शुद्ध अन्न शुद्ध जलकर पारणा करावते भए क्षीण होय गया है शरीर जाका वैराग्यरूप खूंटेसे बन्धा महा उग्र तप करता भया। यमनियम रूप है अंकुश जाके बहुरि महाउग्र तपका करणहारा गज शनैः शनैः आहारका त्याग कर अन्त संलेषणा धर शरीर तज छठे स्वर्ग देव होता भया, अनेक देवांगनाकर युक्त हारकुण्डलादिक आभूषणनिकर मण्डित पुण्यके प्रभावतैं देवगतिके सुख भोगता भया। छठे स्वर्गहीतैं आया हुता अर छठे ही स्वर्ग गया परम्पराय मोक्ष पावेगा, अर भरत महामुनि महा तपके धारक पृथिवीके गुरु निर्ग्रन्थ जाके शरीरका भी ममत्व नाहीं वे महाधीर जहां पिछिला दिन रहै तहां ही बैठ रहै जिनको एक स्थान न रहना, पवन सारिखे असंगी पृथिवीसमान क्षमाको धरैं, जलसमान निर्मल अग्नि समान कर्म काष्ठके भस्म करनहारे अर आकाश समान अलेप चार आराधनाविषै उद्यमी तेरा प्रकार चारित्र पालते भए निर्ममत्व स्नेहके बन्धनतैं रहित मृगेन्द्र सारिखे निर्भय समुद्र समान गम्भीर सुमेरु समान निश्चल यथाजातरूपके धारक सत्यका वस्त्र पहरे क्षमारूप खड्गको धरे बाईस परीषहके जीतनहारे महातपस्वी, समान हैं शत्रु मित्र जिनके अर समान है सुख दुःख जिनके अर समान है तृणरत्न जिनके महा उत्कृष्ट मुनि शास्त्रोक्त मार्ग चलते भये, तपके प्रभावकर अनेक ऋद्धि उपजीं। सूई समान तीक्ष्ण तृणकी सली पावोंमें चुभे हैं परन्तु ताकी कछु सुध नाहीं अर शत्रुनिके स्थानक विषै उपसर्ग सहिवे निमित्त विहार करते भए तपके संयमके प्रभावकर शुक्ल ध्यान उपजा शुक्लध्यानके बलकर मोहका नाशकर ज्ञानावरण दर्शनावरण अन्तराय कर्महर लोकालोकके प्रकाश करणहारा केवलज्ञान प्रकट भया बहुरि अघातिया कर्मको दूरकर सिद्धपदको प्राप्त भये जहांतैं

बहुरि संसारविषै भ्रमण नाहीं यह केकईके पुत्र भरतका चरित्र जो भक्ति कर पढ़ै सुनै सो सव क्लेशरहित होय यश कीर्ति वल विभूति आरोग्यताको पावै अर स्वर्ग मोक्ष पावै यह परम चरित्र महा उज्ज्वल श्रेष्ठ गुणनिकर युक्त भव्य जीव सुनो जातैं शीघ्र ही सूर्यसे अधिक तेजके धारक होहु ।

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषा वचनिकाविषै भरतका निर्वाण गमन करनेवाला सतासीवा पर्व पूर्ण भया ॥८७॥

अथानन्तर—भरतके साथ जे राजा महाधीर वीर अपने शरीरविषै भी जिनका अनुराग नहीं घरसे निकसे जैनेश्वरी दीक्षा धर दुर्लभ वस्तुको प्राप्त भए तिनविषै कैयकनिके नाम कहिए है—हे श्रेणिक! तू सुन—सिद्धार्थ, रतिवर्धन, मेघरथ, जांबू, नन्द, शल्य, शशांक, निरसनन्दन, नन्द, आनन्द, सुमति, सदाश्रय, महाबुद्धि, सूर्य, इन्द्रध्वज, जनवल्लभ, श्रुतिधर, सुचंद्र, पृथिवीधर, अलक, सुमति, अक्रोध, कुण्डर, सत्यवा-हन, हरि, वासुमित्र, धर्ममित्र, पूर्णचन्द्र, प्रभाकर, नघोप, सुनंद, शांति, प्रियधर्मा इत्यादि एक हजारतैं अधिक राजा वैराग्य धारते भए विशुद्धकुलविषै उपजे सदा आचारविषै तत्पर पृथिवीविषै प्रसिद्ध हैं शुभ चेष्टा जिनकी ये महाभाग्य हाथी घोड़े रथ पयादे स्वर्ण रत्न रणवास सर्व तजकर पंच महाव्रत धारते भए, राज्यको जिनने तृणवत् तजा महाशान्त नानाप्रकार योगीश्वर ऋद्धिके धारक भए सो आत्मध्यानके ध्याता कैयक तो मोक्ष गए कैयक अहमिन्द्र भए कैयक उत्कृष्ट देव भए ॥ भरत चक्रवर्ती सारिखे दशरथके पुत्र भरत तिनको घरसे निकसे पीछे लक्ष्मण तिनके गुण चितार चितार अतिशोकवन्त भया अपना राज्य शून्य गिनता भया शोककर व्याकुल है चित्त जाका अति विषाद रूप आंसू डारता भया, दीर्घ निश्वास नाखता भया नील कमल समान है कांति जाकी सो कुमलाय गया, विराधितकी भुजानिपर हाथ धरै ताके सहारे बैठा मंद मंद वचन कहै, वे भरत महाराज गुण ही हैं आभूषण जिनके सो कहां गये? जिन तरुण अव-स्थाविषै शरीरसूं प्रीति छांड़ी, इन्द्र समान राजा अर हम सव उनके सेवक वे रघुवंशके तिलक समस्त वि-भूति तजकर मोक्षके अर्थी महादुर्द्धर मुनिका धर्म धारते भए। शरीर तो अति कोमल कैसे परीषह सहेंगे? धन्य वे अर श्रीराम महा ज्ञानवान कहते भए, भरतकी महिमा कही न जाय जिनका चित्त कभी संसार-

विषै न रचा जो शुद्धबुद्धि है तो उनकी ही है अर जन्म कृतार्थ है तो उनका ही है, जे विषके भरे अन्नकी न्याईं राज्यको तज कर जिनदीक्षा धरते भये वे पूज्य प्रशंसा योग्य परम योगी उनका वर्णन देवेंद्र भी न कर सके तो औरोंकी कहा शक्ति जो करे वे राजा दशरथके पुत्र केकईके नंदन तिनकी महिमा हमतैं न कही जाय। या भरतके गुण गावते एक मुहूर्त सभाविषै तिष्ठे, समस्त राजा भरत हीके गुण गाया करें। बहुरि श्रीराम लक्ष्मण दोऊ भाई भरतके अनुरागकर अति उद्वेग रूप उठे सब राजा अपने अपने स्थानकू गये घर घर भरतकी चर्चा सब ही लोक आश्चर्यको प्राप्त भए। यह तो उनकी यौवन अवस्था अर यह राज्य ऐसे भाई सब सामग्री पूर्ण ऐसे ही पुरुष तजें सोई परम पदको प्राप्त होवें या भांति सबही प्रशंसा करते भए।

बहुरि दूजे दिन सब राजा मंत्रकर राम पै आए नमस्कारकर अति प्रीतिसे वचन कहते भये, हे नाथ! जो हम असमझ हैं तो आपके अर बुद्धिवन्त हैं तो आपके हम पर कृपाकर एक विनती सुनो—हे प्रभो! हम सब भूमिगोचरी अर विद्याधर आपका राज्याभिषेक करें जैसे स्वर्गविषै इन्द्रका होय, हमारे नेत्र अर हृदय सफल होवें तिहारे अभिषेकके सुखकर पृथिवी सुखरूप होय तब राम कहते भए तुम लक्ष्मणका राज्याभिषेक करो वह पृथिवीका स्तम्भ भूधर है समस्त राजानिका गुरु वासुदेव राजानिका राजा सब गुण ऐश्वर्यका स्वामी सदा मेरे चरणनिको नमै या उपरान्त मेरे राज्य कहां॥ तब वे समस्त श्रीरामकी अति-प्रशंसा कर जय जयकार शब्द कर लक्ष्मणपै गए अर सब वृत्तान्त कहा तब लक्ष्मण सबोंको साथ लेय रामपै आया अर हाथ जोड़ नमस्कार कर कहता भया हे वीर! या राज्यके स्वामी आप ही हो मैं तो आपका आज्ञाकारी अनुचर हूं तब रामने कहा, हे वत्स! तुम चक्रके धारी नारायण हो तातैं राज्याभिषेक तुम्हारा ही योग्य है, सो इत्यादि वार्तालापसे दोनोंका राज्याभिषेक ठहरा बहुरि जैसी मेघकी ध्वनि होय तैसी वादित्रनिकी ध्वनि होती भई दुन्दुभी बाजे नगारे ढोल मृदंग वीणा तमूरे झालर झांझ मजीरे बांसुरी शंख इत्यादि वादित्र बाजे अर नाना प्रकारके मंगल गीत नृत्य होते भए याचकोंको मनवांछित दान दिया

सबनिको अति हर्ष भया दोऊ भाई एक सिंहासन पर विराजे स्वर्ण रत्नके कलश जिनके मुख कमलसे ढके पवित्र जलसे भरे तिनकर विधिपूर्वक अभिषेक भया, दोऊ भाई मुकुट भुजबन्ध हार केयूर कुण्डलादिक कर मण्डित मनोग्य वस्त्र पहिरे सुगन्धकर चर्चित तिष्ठे विद्याधर भूमिगोचरी तथा तीन खण्डके देव जय जय शब्द कहते भये। यह बलभद्र श्रीराम हलमूसलके धारक अर यह वासुदेव श्रीलक्ष्मण चक्रका धारक जयवंत होहु दोऊ राजेन्द्रनिका अभिषेक कर विद्याधर बड़े उत्साहसे सीता अर विशल्याका अभिषेक करावते भये, सीता रामकी राणी अर विशल्या लक्ष्मणकी तिनका अभिषेक विधिपूर्वक होता भया॥

अथानन्तर—विभीषणको लंका दई सुग्रीवको किहकंधापुर हनूमानको श्रीनगर अर हनूरुह द्वीप दिया विराधितको नागलोक समान अलङ्कापुर दिया, नल नीलको किकंधपुर दिया, समुद्रकी लहरोंके समूहकर महाकौतुकरूप अर भामण्डलको वैताड्यकी दक्षिण श्रेणीविषै रथनूपुर दिया समस्त विद्याधरनिका अधिपति किया अर रत्नजटीको देवोपुनीत नगर दिया अर भी यथा योग्य सबनिको स्थान दिये अपने पुण्यके उदय योग्य सबही रामलक्ष्मणके प्रतापतें राज्य पावते भये। रामकी आज्ञाकर यथा योग्य स्थानमें तिष्ठे। जे भव्यजीव पुण्यके प्रभावका जगतविषै प्रसिद्ध फल जान धर्मविषै रति करे हैं वे मनुष्य सूर्यसे अधिक ज्योतिको पावे हैं॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषा वचनिकाविषै राम लक्ष्मणका राज्याभिषेक वर्णन करनेवाला अठासीवां पर्व पूर्ण भया॥ ८८॥

अथानन्तर—राम लक्ष्मण महा प्रीतिकर भाई शत्रुघ्नसूं कहते भए, जो तुमको रुचे सो देश लेवो जो तुम आधी अयोध्या चाहो तो आधी अयोध्या लेवो अथवा राजगृह अथवा पोदनापुर अथवा पौंड्रसुन्दर इत्यादि सैकड़ा राजधानी हैं। तिनविषै जो नीकी सो तिहारी तब शत्रुघ्न कहता भया मोहि मथुराका राज्य देवो तब राम बोले—हे भ्रात! वहां राजा मधुका राज्य है अर वह रावणका जमाई है अनेक युद्धनिका जीतनहारा ताको चमरेन्द्रने त्रिशूल रत्न दिया है ज्येष्ठके सूर्य समान दुस्सह है अर देवनिसे दुर्निवार है ताकी चिन्ता हमारे भी निरन्तर रहे है वह राजा मधु हरिवंशियोंके कुलरूप आकाश विषै सूर्य

समान प्रतापी है जाने वंशविषै उद्योत किया है अर जाका लवणार्णव नामा पुत्र विद्याधरनि हूं कर असाध्य है पिता पुत्र दोऊ महाशूरवीर हैं तातैं मथुरा टार और राज्य चाहो सोही लेवो तब शत्रुघ्न कहता भया बहुत कहिवेकर कहा मोहि मथुरा ही देवो जो मैं मधुके छातेकी न्याईं मधुको रण संग्रामविषै न तोड़ लूं तो दशरथका पुत्र नाहीं जैसे सिंहनिके समूहको अष्टापद तोड़ डारे तैसे ताके कटकसहित ताहि न चूर डारूं, तो मैं तिहारा भाई नाहीं, जो मधुको मृत्यु प्राप्त न करूं तो मैं सुप्रभाकी कुक्षिविषै उपजा ही नहीं या भांति प्रचण्ड तेजका धरणहारा शत्रुघ्न कहता भया तब समस्त विद्याधरनिके अधिपति आश्चर्यको प्राप्त भये अर शत्रुघ्नकी बहुत प्रशंसा करते भए शत्रुघ्न मथुरा जायवेको उद्यमी भया तब श्रीराम कहते भये हे भाई! मैं एक याचना करूं हूं सो मोहि दक्षिणा देहु तब शत्रुघ्न कहता भया सबके दाता आप हो सब आपके याचक हैं आप याचो सो वस्तु कहा? मेरे प्राणहीके नाथ आप हो तो अर वस्तुकी कहा बात एक मधुसे युद्ध तो मैं न तजूं अर कहो सोही करूं तब श्रीरामने कही-हे वत्स! तू मधुसे युद्ध करै तो जा समय वाके हाथ त्रिशूलरत्न न होय ता समय करियो तब शत्रुघ्नने कही जो आप आज्ञा करोगे सोही होयगा ऐसा कह भगवानकी पूजाकर नमोकार मन्त्र जप सिद्धनिकों नमस्कारकर भोजनशालाविषै जाय भोजनकर माताके निकट आय आज्ञा मांगी तब वे माता अतिस्नेहतें याके मस्तकपर हाथधर कहती भईं-हे वत्स! तू तीक्ष्ण बाणनिकर शत्रुनिके समूहको जीत। वह योधाकी माता अपने योधापुत्रसे कहती भईं-हे पुत्र! अब तक संग्रामविषै शत्रुवनिने तेरी पीठ नाहीं देखी है अर अब हूं न देखेंगे तू रण जीत आवेगा। तब मैं स्वर्णके कमलनिकर श्रीजिनेन्द्रकी पूजा कराऊंगी वे भगवान त्रैलोक्य मंगलके कर्ता आप महामंगलरूप सुर असुरनिकर नमस्कार करवे योग्य रागादिकके जीतनहारे तोहि मंगल करें। वे परमेश्वर पुरुषोत्तम अरहन्त भगवन्त जिनने अत्यन्त दुर्जय मोहरिपु जीता वे तोहि कल्याणके दायक होहु सर्वज्ञ त्रिकालदर्शी स्वयंबुद्ध तिनके प्रसादतैं तेरी विजय होह। जे केवलज्ञानकर लोकालोकको हथलीविषैं आंवलाकी न्याईं देखे हैं ते तोहि मंगल-होहु। हे वत्स! वे सिद्धपरमेष्ठी अष्ठकर्मकररहित अष्टगुण आदि अनन्त गुणनिकर विराजमान लोकके

शिखर तिष्ठे ते सिद्ध तोहि सिद्धिके कर्ता होवें अर आचार्य भव्यजीवनिके परम आधार तेरे विघ्न हरें जे कमल समान अलिप्त सूर्यसमान तिमिर हर्ता अर चन्द्रमा समान आल्हादके कर्ता भूमिसमान क्षमावान सुमेरु समान अचल समुद्र समान गम्भीर आकाश समान अखंड इत्यादि अनेक गुणनिकर मण्डित हैं अर उपाध्याय जिनशासनके पारगामी तोहि कल्याणके कर्ता होहु अर कर्म शत्रुनिके जीतवेको महा शूर: वीर बारह प्रकार तपकर जे निर्वाणको साधैं हैं ते साधु तोहि महावीर्यके दाता होवें या भांति विघ्नकी हरणहारी मंगलकी करणहारी माता आशीस देती सो शत्रुघ्न माथे चढाय माताको प्रणामकर बाहिर निकसा। स्वर्णकी सांकलनिकर मण्डित जो गज तापर चढ़ा ऐसा सोहता भया जैसे मेघमाला ऊपर चन्द्रमा सोहै अर नाना प्रकार बाहननिपर आरूढ़ अनेक राजा संग चले सो तिनकर ऐसा सोहता भया जैसा देवनिकर मण्डित देवेंद्र सोहै राम लक्ष्मणकी भाईसूं अधिक प्रीति सो तीन मञ्जिल भाईके संग गये तब भाई कहता भया—हे पूज्य पुरुषोत्तम ! पीछे अयोध्या जावो मेरी चिन्ता न करो मैं आपके प्रसादतैं शत्रुनिको निस्सन्देह जीतूंगा तब लक्ष्मणने समुद्रावर्त नामा धनुष दिया प्रज्वलित है मुख जिनके पवन सारिखे वेगको धरे ऐसे बाण दिये अर कृतान्तवक्रको लार दिया अर लक्ष्मणसहित राम पीछे अयोध्या आये परन्तु भाईकी चिन्ता विशेष।

अथानन्तर— शत्रुघ्न महाधीर वीर बड़ी सेना कर संयुक्त मथुराकी तरफ गया अनुक्रमसे यमुना नदीके तीर जाय डेरे दिये जहां मन्त्री महासूक्ष्मबुद्धि मंत्र करते भये। देखो, इस बालक शत्रुघ्नकी बुद्धि जो मधुके जीतवेकी बांछा करी है। यह नयवर्जित केवल अभिमान कर प्रवर्ता है, जा मधुने पूर्व राजा मान्धाता रणविषै जीता सो मधु देवनिकर विद्याधरनिकर न जीता जाय, ताहि यह कैसे जीतेगा, राजा मधु सागर समान है उछलते पियादे तेई भये उतंग लहर अर शत्रुनिके समूह तेई भये ग्रह तिनकर पूर्ण ऐसे मधुसमुद्रकूं शत्रुघ्न भुजानिकर तिरा चाहे है सो कैसे तिरेगा, तथा मधुभूपति भयानक वन समान है ताविषै प्रवेशकर कौन जीवता निसरै। कैसा है राजा मधुरूप वन ? पयादेके समूह तेई हैं वृक्ष जहां अर माते

हाथिनिकर महा भयंकर अर घोड़निके समूह तेई हैं मृग जहां, ये वचन मंत्रिनिके सुन कृतांतवक्र कहता भया। तुम साहस छोड़ ऐसे कायरताके वचन क्यों कहो हो? यद्यपि वह राजा मधु चमरेन्द्र कर दिया जो अमोघ त्रिशूल ताकर अति गर्वित है तथापि ता मधुको शत्रुघ्न सुन्दर जीतेगा जैसे हाथी महावलवान है अर सूण्डकर वृक्षनिकों उपाड़े है मद झरे है तथापि ताहि सिंह जीतै है यह शत्रुघ्न लक्ष्मी अर प्रताप कर मण्डित है महाबलवान है शूरवीर है महा पंडित प्रवीण है अर याके सहाई श्रीलक्ष्मण हैं अर आप सबही भले भले मनुष्य याके संग हैं तातैं यह शत्रुघ्न अवश्य शत्रुको जीतेगा जब ऐसे वचन कृतान्तवक्रने कहे तब सबही प्रसन्न भए अर पहिलेही मंत्रीजननिने जो मथुरामें हलकारे पठाये हुते ते आयकर सर्व वृत्तांत शत्रुघ्नसूं कहते भए। हे देव! मथुरा नगरीकी पूर्व दिशाकी ओर अत्यन्त मनोग्य उपवन है तहां रणवास सहित राजा मधु रमै है। राजाके जयन्ती नाम पटराणी है ता सहित वनक्रीड़ा करै है जैसे स्पर्श इन्द्रियके वश भया गजराज वन्धन विषै पड़े है, तैसे राजा मोहित भया विषयनिके वन्धन विषै पड़ा है, महा कामी आज छठा दिन है कि सर्व राज्य काज तज प्रमादके वश भया वनविषै तिष्ठै है कामान्ध मूर्ख तिहारे आगमको नाहीं जाने है, अर तुम ताके जीतवेको वांछा करी है ताकी ताहि सुध नाहीं अर मन्त्रिनिने बहुत समझाया सो काहूकी वात धारे नाहीं, जैसे मूढ़ रोगी वैद्यकी औषध न धारै इस समय मथुरा हाथ आवे तो आवे अर कदाचित् मधुपुरीमें धसा तो समुद्रसमान अथाह है यह वचन हलकारोंके मुखसे शत्रुघ्न सुनकर कार्यमें प्रवीण ताहि समय वलवान योधानिके सहित दौड़कर मथुरा गया, अर्धरात्रिके समय सब लोक प्रमादी हुते अर नगरी राजारहित हुती सो शत्रुघ्न नगर विषै जाय पैठा जैसे योगी कर्मनाश कर सिद्धपुरीविषै प्रवेश करै, तैसे शत्रुघ्न द्वारको चूरकर मथुरा विषै प्रवेश करता भया। मथुरा महामनोग्य है तब वन्दीजननिके शब्द होते भये जो राजा दशरथका पुत्र शत्रुघ्न जयवन्त होहु ये शब्द सुनके नगरीके लोक परचक्रका आगम जान अति व्याकुल भए, जैसे लंका अंगदके प्रवेशकर अतिव्याकुल हुती तैसे मथुराविषै व्याकुलता भई। कई एक कायर हृदयकी धरनहारी स्त्री हुतीं तिनके भयकर गर्भ-

पात होय गये, अर कैयक महाशूरवीर कलकलाट शब्द सुन तत्काल सिंहकी न्याईं उठे, शत्रुघ्न राजमंदिर गया आयुधशाला अपने हाथ कर लीनी अर स्त्री बालक आदि जे नगरीके लोक अतित्रासकूं प्राप्त भये तिनको महा मधुर वचनकर धीर्य बन्धाया जो यह श्रीरामका राज्य है यहां काहूको दुःख नाहीं तब नगरीके लोक त्रासरहित भये अर शत्रुघ्नको मथुराविषै आया सुन राजा मधु महाकोप कर उपवनतैं नगरको आया सो मथुराविषै शत्रुघ्नके सुभटोंकी रक्षाकर प्रवेश न कर सका जैसे मुनिके हृदयमें मोह प्रवेश न कर सकै, नाना प्रकारके उपाय कर प्रवेश न पाया अर त्रिशूलहूतैं रहित भया तथापि महा अभिमानी मधुने संधि न करी युद्धहीको उद्यमी भया तब शत्रुघ्नके योधा युद्धको निकसे दोनों सेना समुद्र समान तिन विषै परस्पर युद्ध भया, रथनिके तथा हाथिनिके तथा घोड़निके असवार परस्पर युद्ध करते भए अर परस्पर पयादे भिड़े नाना प्रकारके आयुधनिके धारक महासमर्थ नाना प्रकार आयुधनि कर युद्ध करते भये ता समय परसेनाके गर्वको न सहता सन्ता कृतांतवक्र सेनापति परसेनाविषै प्रवेश करता भया। नाहीं निवारी जाय है गति जाकी तहां रणक्रीड़ा करै है जैसे स्वयम्भू रमण उद्यानविषै इन्द्र क्रीड़ा करै, तब मधुका पुत्र लवणार्णवकुमार याहि देख युद्धके अर्थ आया अपने बाणनिरूप मेघकर कृतान्तवक्र रूप पर्वतको आच्छादित करता भया, अर कृतान्तवक्र भी आशीविष तुल्य बाणनिकर ताके बाण छेदता भया अर धरती आकाशको अपने बाणनिकर व्याप्त करता भया, दोऊ महा योधा सिंहसमान बलवान गजनिपर चढ़े क्रोधसहित युद्ध करते भए. वाने वाको रथरहित किया अर वाने वाको, बहुरि कृतान्तवक्रने लवणार्णवके वक्षस्थलविषै बाण लगाया अर ताका बख्तर भेदा तब लवणार्णव कृतान्तवक्र ऊपर तोमर जातिका शस्त्र चलावता भया क्रोधकर लाल हैं नेत्र जाके दोनों घायल भए, रुधिर कर रङ्ग रहे हैं वस्त्र जिनके, महा सुभटताके स्वरूप दोनों क्रोध कर उद्धत फूले टेसूके वृक्ष समान सोहते भए, गदा खड्ग चक्र इत्यादि अनेक आयुधनिकर परस्पर दोऊ महा भयङ्कर युद्ध करते भये। बल उन्माद विषादके भरे बहुत वेर लग युद्ध भया, कृतान्तवक्रने लवणार्णवके वक्षस्थलविषै घाव किया, सो पृथिवीविषै पड़ा जैसे पुण्यके क्षयतैं स्वर्गवासी

देव मध्य लोकविषै आय पड़ें, लवणार्णव प्राणान्त भया, तब पुत्रको पड़ा देख मधु कृतान्तवक्रपर दौड़ा
तब शत्रुघ्नने मधुको रोका, जैसे नदीके प्रवाहको पर्वत रोकै, मधु महा दुस्सह शोक अर कोपका भरा युद्ध
करता भया सो आशीविषकी दृष्टि समान मधुकी दृष्टि शत्रुघ्नकी सेनाके लोक न सहार सकते भए जैसे
उग्र पवनके योगतें पत्रनिके समूह चलायमान होंय तैसे लोक चलायमान भए बहुरि शत्रुघ्नको मधुके
सन्मुख जाता देख धीर्यकूं प्राप्त भए। शत्रुके भयकर लोक तवलगही डरें जबलग अपने स्वामीको प्रबल
न देखें अर स्वामीको प्रसन्नवदन देख धीर्यको प्राप्त होंय। शत्रुघ्न उत्तम रथपर आरूढ़ मनोग्य धनुष
हाथविषै सुन्दर हारकर शोभे है वक्षस्थल जाका सिरपर मुकुट धरे मनोहर कुण्डल पहिरे शरदके सूर्य
समान महातेजस्वी अखण्डित है गति जाकी शत्रुके सन्मुख जाता अति सोहता भया जैसे गजराजपर
जाता मृगराज सोहै, अर अग्नि सूके पत्रनिको जलावै तैसे मधुके अनेक योधा क्षणमात्रविषैं विध्वंस किए,
शत्रुघ्नके सन्मुख मधुका कोई योधा न ठहर सका जैसे जिनशासनके पण्डित स्याद्वादी तिनके सन्मुख
एकांतवादी न ठहर सके, जो मनुष्य शत्रुघ्नसे युद्ध किया चाहै सो तत्काल विनाशको पावै जैसे सिंहके
आगे मृग। मधुकी समस्त सेनाके लोक अति व्याकुल हो मधुके शरण आये सो मधु महा सुभट शत्रुघ्नको
सन्मुख आवता देख शत्रुघ्नकी ध्वजा छेदी अर शत्रुघ्नने बाणनिकर ताके रथके अश्व हते। तब मधु पर्वत
समान जो वरुणेंद्र गज तापर चढ़ा क्रोधकर प्रज्वलित है शरीर जाका शत्रुघ्नको निरन्तर बाणनिकर आ-
च्छादने लगा जैसे महामेघ सूर्यको आच्छादे सो शत्रुघ्न महा शूरवीरने ताके बाण छेद डारे अर मधुका
बख्तर भेदा जैसे अपने घर कोई पाहुना आवै अर ताकी भले मनुष्य भलीभांति पाहुन गति करैं तैसे श-
त्रुघ्न मधुकी रणविषै शस्त्रनिकर पाहुणगति करता भया॥

अथानन्तर—मधु महा विवेकी शत्रुघ्नको दुर्जय जान आपको त्रिशूल आयुधसे रहित जान पुत्र
की मृत्यु देख अर अपनी आयुहू अल्प जान मुनिनिका वचन चितारता भया—अहो जगतका समस्त ही
आरम्भ महा सिंहरूप दुःखका देनहारा सर्वथा त्याज्य है यह क्षण भंगुर संसारका चरित्र तामें मूढ़जन

रावै या संसार विषै धर्म ही प्रशंसायोग्य है अर अधर्मका कारण अशुभ कर्म प्रशंसा योग्य नाहीं महा निंद्य यह पाप कर्म नरक निगोदका कारण है, जो दुलभ मनुष्य देहको पाय धर्मविषै बुद्धि नाहीं धारे हैं सो प्राणी मोह कर्म कर ठगाया अनन्त भव भ्रमण करे है। मे पापीने संसार असारको सार जाना, क्षणभंगुर शरीरको ध्रुव जाना. आत्महित न किया। प्रमादविषै प्रवरता, रोग समान थे इन्द्रयनिके भोग भले जान भोगे, जब में स्वाधीन हुता तव मोहि सुबुद्धि न आई,जब अन्तकाल आया अब कहा करूं,घरमें आग लागी ता समय तालाव खुदवाना कौन अर्थ? अर सर्पने डसा ता समय देशांतरसे मन्त्राधीश बुलवाना अर दूरदेशसे मणि औषधि मंगवाना कौन अर्थ? तातैं अब सर्व चिन्ता तज निराकुल होय अपना मन समाधानविषै ल्याऊं यह विचार वह धीरवीर घावकर पूर्ण हाथी चढ़ाही भावमुनि होता भया, अरहन्त सिद्ध आचार्य उपाध्याय साधुनिको मनकर वचनकर कायकर वारंवार नमस्कार कर अर अरहन्त सिद्ध साधु तथा केवली प्रणीत धर्म यही मंगल हैं यही उत्तम हैं इनहीका मेरे शरण है अढाई द्वीप विषै पन्द्रहकर्म भूमि तिनविषै भगवान् अरहन्त देव होय हैं वे त्रैलोक्यनाथ मेरे हृदयविषै तिष्ठो। मैं वारम्वार नमस्कार करूं हूं अब मैं यावज्जीवन सर्व पाप योग तजे चारों आहार तजे, जे पूर्व पाप उपार्जे हुते तिनकी निन्दा करूं हूं अर सकल वस्तुका प्रत्याख्यान करूं हूं अनादि कालतें या संसार वनविषै जो कर्म उपार्जे हुते ते मेरे दुःकृत मिथ्या होहु॥ भावार्थ—मुझे फल मत देहु, अब मैं तत्वज्ञानविषै तिष्ठा तजवे योग्य जो रागादिक तिनको तजूं हूं अर लेयवे योग्य जो जिनभाव तिनको लेऊं हूं, ज्ञान दर्शन मेरे स्वभाव ही हैं सो मोसे अभेद्य हैं अर जे शरीरादिक समस्त पदार्थ कर्मके संयोग कर उपजे ते मोसे न्यारे हैं, देह त्यागके समय संसारी लोक भूमिका तथा तृणका सांथरा करे हैं सो सांथरा नाहीं। यह जीव ही पाप बुद्धिरहित होय तब अपना आप ही सांथरा है। ऐसे विचारकर राजा मधुने दोनों प्रकारके परिग्रह भावोंसे तजे अर हाथीकी पीठ पर बैठा ही सिरके केश लोंच करता भया, शरीर घावनिकर अतिव्याप्त है तथापि महा दुर्धर धीर्यको धर कर अध्यातम योगविषै आरूढ होय कायाका ममत्व तजता भया, विशुद्ध है बुद्धि जाकी। तब शत्रुघ्न

मधुकी परम शांत दशा देख नमस्कार करता भया अर कहता भया हे साधो ! मो अपराधीका अपराध क्षमा करो, देवनिकी अप्सरा, मधुका संग्राम देखनेको आई हुतीं आकाशसे कल्पवृक्षनिके पुष्पोंकी वर्षा करती भईं मधुका वीर रस अर शांत रस देख देव भी आश्चर्यको प्राप्त भए । बहुरि मधु महा धीर एक क्षणमात्रविषै समाधि मरण कर महासुखके सागरविषै तीजे सनत्कुमार स्वर्गविषै उत्कृष्ट देव भया अर शत्रुघ्न मधुकी स्तुति करता महा विवेकी मथुराविषै प्रवेश करता भया जैसे हस्तिनागपुरविषै जयकुमार प्रवेश करता सोहता भया तैसा शत्रुघ्न मधुपुरीविषै प्रवेश करता सोहता भया । गौतमस्वामी राजा श्रेणिकसे कहे हैं—हे नराधिपति श्रेणिक ! प्राणियोंके या संसारविषै कर्मोंके प्रसंग कर नाना अवस्था होय हैं तातैं उत्तमजन सदा अशुभ कर्म तजकर शुभकर्म करो जाके प्रभाव कर सूर्यसमान कांतिको प्राप्त होहु ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषा वचनिकाविषै मधुका युद्ध अर वैराग्य होनेका वर्णन करनेवाला नवासीवां पर्व पूर्ण भया ॥ ८९ ॥

अथानन्तर—सुरकुमारोंके इन्द्र जो चमरेंद्र महाप्रचण्ड तिनका दिया जो त्रिशूलरत्न मधुके हुता ताके अधिष्ठाता देव त्रिशूलको लेकर चमरेंद्रके पास गए अतिखेद खिन्न महा लज्जावान होय मधुके मरणका वृत्तांत असुरेंद्रसे कहते भए तिनकी मधुसे अतिमित्रता सो पातालसे निकसकर महाक्रोधके भरे मथुरा आयवेका उद्यमी भए ता समय गरुडेंद्र असुरेंद्रके निकट आये अर पूछते भए हे दैत्येंद्र ! कौन तरफ गमनको उद्यमी भए हो ? तब चमरेन्द्रने कही—जाने मेरा मित्र मधु मारा है ताहि कष्ट देवेको उद्यमी भया हूं तब गरुडेंद्रने कही कहा विशिल्याका माहात्म्य तुमने न सुना है । तब चमरेंद्रने कही वह अद्भुत अवस्था विशिल्याकी कुमार अवस्थाविषै ही हुती अर अब तो निर्विष भुजंगी समान है जौलग विशिल्याने वासुदेवका आश्रय न किया हुता तौलग ब्रह्मचर्यके प्रसादतैं असाधारण शक्ति हुती, अब वह शक्ति विशिल्याविषै नाहीं, जे निरतिचार बालब्रह्मचर्य धारैं तिनके गुणनिकी महिमा कहिवेविषै न आवै शीलके प्रसादकर सुर असुर पिशाचादि सब डरें, जौलग शीलरूप खड्गको धारे तौलग सबकर जीता न जाय

महा दुर्जय है अब विशिल्या पतिव्रता है ब्रह्मचारिणी नाहीं तातें वह शक्ति नाहीं मद्य मांस मैथुन यह महा पाप हैं इनके सेवनसे शक्तिका नाश होय है जिनका व्रतशील नियमरूप कोट भाग्य न भया तिनको कोई विघ्न करवे समर्थ नाहीं, एक कालाग्नि नाम रुद्र महाभयङ्कर भया सो हे गरुड़ेन्द्र ! तुम सुना ही होयगा बहुरि वह स्त्रीसे आसक्त होय नाशको प्राप्त भया तातैं विषयका सेवन विषसे भी विषम है परम आश्चर्यका कारण एक अखण्ड ब्रह्मचर्य है। अब मैं मित्रके शत्रुपर जाऊंगा तुम तिहारे स्थानक जावहु। ऐसा गरुड़ेन्द्रसे कहकर चमरेंद्र मथुरा आए, मित्रके मरणकर कोपरूप मथुराविषै वही उत्सव देखा जो मधुके समय हुता तब असुरेन्द्रने विचारी—ये लोक महादुष्ट कृतघ्न हैं देशका धनी पुत्रसहित मर गया है अर अन्य आय बैठा है इनको शोक चाहिये कि हर्ष, जाके भुजाकी छाया पाय बहुत काल सुखसे वसे ता मधुकी मृत्युका दुःख इनको क्यों न भया ? ये महाकृतघ्न हैं सो कृतघ्नका मुख न देखिये लोकनिकर शूरवीर सेवायोग्य शूरवीरनिकर पण्डित सेवा योग्य हैं। सो पण्डित कौन जो पराया गुण जाने सो ये कृतघ्न महामूर्ख हैं ऐसा विचारकर मथुराके लोकनिपर चमरेन्द्र कोपा—इन लोकोंका नाश करूं। यह मथुरापुरी या देशसहित क्षय करूं। महाक्रोधके वश होय असुरेंद्र लोकनिको दुस्सह उपसर्ग करता भया, अनेक रोग लोगनिको लगाये, प्रलय कालकी अग्नि समान निर्दयी होय लोकरूप वनको भस्म करवेको उद्यमी भया, जो जहां ऊभा हुता सो वहां ही मर गया अर बैठा हुता सो बैठा ही रहा, सूता था सो सूता ही रहा, मरी, पड़ी, लोकको उपसर्ग देख मित्र देव देवताके भयसे शत्रुघ्न अयोध्या आया सो जीतकर महावीर भाई आया बलभद्र नारायण अति हर्षित भये अर शत्रुघ्नकी माता सुप्रभा भगवानकी अद्भुत पूजा करावती भई, अर दुखी जीवनिको करुणाकर अर धर्मात्मा जीवनिको अति विनयकर अनेक प्रकार दान देती भई, यद्यपि अयोध्या महा सुन्दर है स्वर्ण रत्ननिके मन्दिरनिकर मण्डित है कामधेनु समान सर्व कामना पूरणहारी देवपुरी समान पुरी है तथापि शत्रुघ्नका जीव मथुरासे अति आसक्त सो अयोध्याविषैं अनुरागी न होता भया जैसे कैयक दिन सीता विना राम उदास रहे तैसे शत्रुघ्न मथुरा विना अयोध्याविषै उदास

रहे जीवोंको सुन्दर वस्तुका संयोग स्वप्न समान क्षणभंगुर है परम दाहको उपजावै है ज्येष्ठके सूर्यसे हू अधिक आतापकारी है ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषा वचनिकाविषै मथुराके लोकनिकू असुरेन्द्रकृत उपसर्गका वर्णन करनेवाला नव्वेवां पर्व पूर्ण भया ॥ ९० ॥

अथानन्तर—राजा श्रेणिक गौतमस्वामीसे पूछता भया—हे भगवन्! कौन कारणकर शत्रुघ्न मथुरा हीको याचता भया। अयोध्याहूतैं ताहि मथुराका निवास अधिक क्यों रुचा, अनेक राजधानी स्वर्ग लोक समान सो न वांछी अर मथुराही वांछी ऐसी मथुरासे कहा प्रीति, तव गौतमस्वामी ज्ञानके समुद्र सकल सभारूप नक्षत्रनिके चन्द्रमा कहते भये, हे श्रेणिक! इस शत्रुघ्नके अनेक भव मथुरामें भये तातैं याका मधु-पुरीसे अधिक स्नेह भया। यह जीव कर्म्मनिके सम्बन्धतें अनादि कालका संसार सागरमें वसै है सो अनन्त भव धरै। यह शत्रुघ्नका जीव अनन्त भव भ्रमणकर मथुरा विषै एक यमनदेव नामा मनुष्य भया, महाक्रूर धर्मसे विमुख सो मर कर शूकर खर काग ये जन्म धर अज पुत्र भया सो अग्निमें जल मूवा, भैंसा जलके लादनेका भया सो छैवार भैंसा होय दुःखसे मूवा, नीचकुलविषै निर्धन मनुष्य भया, हे श्रेणिक! महापापी तो नरकको प्राप्त होय हैं, अर पुण्यवान् जीव स्वर्ग विषै देव होय हैं अर शुभाशुभ मिश्रित कर मनुष्य होय हैं वहुरि यह कुलन्धरनामा ब्राह्मण भया रूपवान अर शीलरहित सो एक समय नगरका स्वामी दिग्विजय निमित्त देशांतर गया ताकी ललिता नामा राणी महलके झरोखाविषै तिष्ठे थी सो पापिनी इस दुराचारी विप्रको देख काम वाण कर वेधी गई सो याहि महलमें वुलाया। एक आसनपर राणी अर यह वैठे रहे ताही समय राजा दूरका चला अचानक आया अर याहि महलमें देखा सो राणीने मायाचार कर कही—जो यह वन्दीजन है भिक्षुक है तथापि राजाने न मानी राजाके किंकर ताहि पकड़कर नृपकी आज्ञातैं आठों अंग दूर करवेके अर्थ नगरके वाहिर ले जाते हुते सो कल्याणनामा साधुने देख कही जो तू मुनि होय तो तोहि छुड़ावें तव याने मुनि होना कबूल किया तव किंकरानिसे छुड़ाया सो

मुनि होय महातप कर स्वर्गमें ऋजु विमानका स्वामी देव भया। हे श्रेणिक ! धर्मसे कहा न होय ? मथुरा विषै चन्द्रभद्र राजा ताके राणी धारा ताके भाई सूर्य देव अग्निदेव यमुनादेव अर आठ पुत्र तिनके नाम श्रीमुख संमुख सुमुख इन्द्रमुख प्रमुख उग्रमुख अर्कमुख परमुख अर राजा चन्द्रभद्रके दूजी राणी कनकप्रभा ताके वह कुलन्धर नामा ब्राह्मणका जीव स्वर्ग विषै देव होय तहांतै चयकर अचल नाम पुत्र भया सो कलावान अर गुणनिकर पूर्ण सर्व लोकके मनका हरणहारा देव कुमार तुल्य क्रीड़ाविषै उद्यमी होतो भया। एक अंकनामा मनुष्य धर्मकी अनुमोदनाकर श्रावस्ती नगरीविषे एक कंपनाम पुरुष ताके अङ्गिका नामा स्त्री उसके अपनामा पुत्र भया सो अविनयी तव कंपने अपको घरसे निकास दिया सो महादुखी भूमिविषै भ्रमण करै अर अचलनामा कुमार पिताको अतिवल्लभ सो अचलकुमारको वड़ी माता धरा उसके तीन भाई अर आठ पुत्र तिन्होंने एकांतमें अचलके मारणेका मंत्र किया सो यह वार्ता अचलकुमारकी माताने जानी तव पुत्रको भगाय दिया सो तिलकवनविषै उसके पांवविषे कांटा लगा सो कम्पका पुत्र अप काष्ठका भार लेकर आवे सो अचल कुमारको कांटेके दुःखसे करुणावन्त देखा तव अपने काष्ठका भार मेल छुरीसे कुमारका कांटा काढ कुमारको दिखाया सो कुमार अति प्रसन्न भया अर अपको कहा—तू मेरा अचलकुमार नाम याद रखियो अर मोहि भूपति सुने वहां मेरे निकट आइयो। इस भांति कह अपको विदा किया सो अप गया अर राजपुत्र महादुखी कौशांवी नगरीके विषे आया महापराक्रमी सो वाण विद्याका गुरु जो विशिपाचार्य उसे जीतकर प्रतिष्ठा पाई सो राजाने अचलकुमारको नगरविषे ल्यायकर अपनी इन्द्रदत्ता नामा पुत्री परणाई अनुक्रमकर पुण्यके प्रभावसे राज पाया सो अङ्गदेश आदि अनेक देशनिको जीतकर महा प्रतापी मथुरा आया नगरके वाहिर डेरा दिया वडी सेना साथ सब सामन्तोंने सुना कि यह राजा चन्द्रभद्रका पुत्र अचल कुमार है सो सब आय मिले राजा चन्द्रभद्र अकेला रह गया। तब राणी धराके भाई सूर्यदेव अग्निदेव यमुनादेव इनको संधि करने ताईं भेजे सो ये जायकर कुमारको देख विलखे होय भागे अर धराके आठ पुत्र हू भाग गए। अचलकुमारकी माता आय पुत्रको ले गई पि-

चारणमुनि यहां आये हुते तुमने हूं वह वंदे हैं वे महा पुरुष महातपके धारक हैं चार महीना मथुरा निवास किया है अर चाहे जहां अहार ले जाय आज अयोध्या विषै आहार लिया चैत्यालय दर्शन कर गये हमसे धर्मचर्चा करी, वे महा तपोधन गगनगामी शुभ चेष्टाके धरणहारे परम उदार ते मुनि वन्दिवे योग्य हैं। तब वह श्रावकनिविषै अग्रणी आचार्यके मुखसे चारण मुनिनिकी महिमा सुनकर खेदखिन्न होय पश्चाताप करता भया। धिक्कार मोहि, मैंने सम्यक्दर्शन रहित वस्तुका स्वरूप न पिछाना, मैं अत्याचारी मिथ्यादृष्टि मो समान अर अधर्मी कौन, वे महा मुनि मेरे मन्दिर आहारको आये अर मैं नवधा भक्तिकर आहार न दिया। जो साधुको देख सन्मान न करे अर भक्तिकर अन्न जल न देय सो मिथ्यादृष्टि है, मैं पापी पापात्मा पापका भाजन महा निन्द्य मो समान और अज्ञानी कौन, मैं जिनवाणीसे विमुख, अब मैं जौं लग उनका दर्शन न करूं तौलग मेरे मनका दाह न मिटे, चारण मुनिनिकी तो यही रीति है चौमासे निवास तो एक स्थान करैं अर आहार अनेक नगरीविषै कर आवैं, चारण ऋद्धिके प्रभाव कर उनके अंगसे जीवोंको बाधा न होय ॥

अथानन्तर—कार्तिककी पूनो नजदीक जान सेठ अर्हद्दत्त महासम्यक्दृष्टि नृपतुल्य विभूति जाके, अयोध्यातैं मथुराको सर्वकुटुम्ब सहित सप्त ऋषिके पूजन निमित्त चला, जाना है मुनिनिका माहात्म्य जाने अर अपनी वारम्वार निन्दा करै है रथ हाथी पियादे तुरङ्गनिके असवार इत्यादि वड़ी सेनासहित योगीश्वरनिकी पूजाको शीघ्र ही चला,वड़ी विभूति कर युक्त शुभ ध्यानविषै तत्पर कार्तिक सुदी सप्तमीके दिन मुनिनिके चरणनिविषै जाय पहुंचा। वह उत्तम सम्यक्तका धारक विधिपूर्वक मुनिवन्दनाकर मथुराविषै अतिशोभा करावता भया, मथुरा स्वर्ग समान सोहती भई, यह वृत्तान्त सुन शत्रुघ्न शीघ्रही महा तुरङ्ग चढ़ा सप्त ऋषिनिके निकट आया अर शत्रुघ्नकी माता सुप्रभा भी मुनिनिकी भक्ति कर पुत्रके पीछे ही आई अर शत्रुघ्न नमस्कार कर मुनिनिके मुख धर्म श्रवण करता भया, मुनि कहते भये हे नृप। यह संसार असार है वीतरागका मार्ग सार है, जहां श्रावकके बारह व्रत कहे, मुनिके अठाईस मूल गुण कहे मु-

पिता श्रीनन्दन तो केवली भया अर ये सातों महामुनि चरण ऋद्धि आदि अनेक ऋद्धिके धारक श्रुतकेवली भये सो चातुर्मासिक विषै मथुराके वनविषै वटके वृक्ष तले आय विराजे। तिनके तपके प्रभावकर चमरेंद्रकी प्रेरी मरी दूर भई जैसे श्वसुरको देखकर व्यभिचारणी नारी दूर भागै मथुराका समस्त मण्डल सुखरूप भया बिना वाहे धान्य सहजहीमें उगे, समस्त रोगनिसे रहित मथुरापुरी ऐसी शोभती भई जैसे नई वधू पतिको देखकर प्रसन्न होय, वह महामुनि रसपरत्यागादि तप अर वेला तेल पक्षोपवासादि अनेक तपके धारक जिनको चार महीना चौमासे रहना तो मथुराके वनविषै अर चारण ऋद्धिके प्रभावतैं चाहे जहां आहार कर आवें सो एक निमिष मात्र विषै आकाशके मार्ग होय पोदनापुर पारणाकर आवें बहुरि विजयपुर कर आवें उत्तम श्रावकके घर पात्र भोजनकर संयमनिमित्त शरीरको राखें, कर्मके खिपायवेको उद्यमी एक दिन वे धीर वीर महाशांतभावके धारक जूड़ा प्रमाण धरती देख विहारकर ईर्या समितिके पालनहारे आहारके समय अयोध्या आंये, शुद्ध भिक्षाके लेनहारे प्रलंवित हैं महा भुजा जिनकी अर्हदत्त सेठके घर आय प्राप्त भए तब अर्हदत्तने विचारी वर्षा कालविषै मुनिका विहार नाहीं ये चौमासा पहिलि तो यहां आये नाहीं अर मैं यहां जे जे साधु विराजै हैं गुफामें नदीके तीर वृक्ष तल शून्य स्थानकविषै वनके चैत्यालयनिविषै जहां जहां चौमासा साधु तिष्ठे हैं वे मैं सर्व बंदे यह तो अबतक देखे नाहीं ये आचारांग सूत्रकी आज्ञासे परांगमुख इच्छा विहारी हैं वर्षाकाल विषै भी भ्रमते फिरे हैं जिन आज्ञा परांगमुख ज्ञानरहित निराचारी आचार्यकी आम्नायसे रहित हैं, जिन आज्ञा पालक होंय तो वर्षाविषै विहार क्यों करें, सो यह तो उठ गया अर याके पुत्रकी वधूने अति भक्तिकर प्रासुक आहार दिया सो मुनि आहार लेय भगवानके चैत्यालय आय जहां द्युतिभट्टारक विराजते हुते ये सप्तर्षि ऋद्धिके प्रभावकर चार अंगुल अलिप्त चले आये अर चैत्यालय विषै धरतीपर पग धरते आये आचार्य उठ खड़े भये अतिआदरसे इनको नमस्कार किया अर जे द्युति भट्टारकके शिष्य हुते तिन सबने नमस्कार किया बहुरि ये सप्त तो जिन बन्दनाकर आकाशके मार्ग मथुरा गये इनके गये पीछे अर्हदत्त सेठ चैत्यालयविषै आया तब द्युतिभट्टारकने कही - सप्तमहर्षि महायोगीश्वर

चारणमुनि यहां आये हुते तुमने हूं वह बंदे हैं वे महा पुरुष महातपके धारक हैं चार महीना मथुरा निवास किया है अर चाहे जहां अहार ले जाय आज अयोध्या विषै आहार लिया चैत्यालय दर्शन कर गये हमसे धर्मचर्चा करी, वे महा तपोधन गगनगामी शुभ चेष्टाके धरणहारे परम उदार ते मुनि वन्दिवे योग्य हैं। तब वह श्रावकनिविषै अग्रणी आचार्यके मुखसे चारण मुनिनिकी महिमा सुनकर खेदखिन्न होय पश्चाताप करता भया। धिक्कार मोहि, मैंने सम्यक्दर्शन रहित वस्तुका स्वरूप न पिछाना, मैं अत्याचारी मिथ्यादृष्टि मो स-मान अर अधर्मी कौन, वे महा मुनि मेरे मन्दिर आहारको आये अर मैं नवधा भक्तिकर आहार न दिया। जो साधूको देख सन्मान न करे अर भक्तिकर अन्न जल न देय सो मिथ्यादृष्टि है, मैं पापी पापात्मा पा-पका भाजन महा निन्द्य मो समान और अज्ञानी कौन, मैं जिनवाणीसे विमुख, अब मैं जौं लग उनका दर्शन न करूं तौलग मेरे मनका दाह न मिटे, चारण मुनिनिकी तो यही रीति है चौमासे निवास तो एक स्थान करें अर आहार अनेक नगरीविषै कर आवें, चारण ऋद्धिके प्रभाव कर उनके अंगसे जीवोंको बाधा न होय॥

अथानन्तर—कार्तिककी पूनो नजदीक जान सेठ अर्हद्दत्त महासम्यक्दृष्टि नृपतुल्य विभूति जाके, अ-योध्यातैं मथुराको सर्वकुटम्ब सहित सप्त ऋषिके पूजन निमित्त चला, जाना है मुनिनिका माहात्म्य जाने अर अपनी बारम्बार निन्दा करै है रथ हाथी पियादे तुरङ्गनिके असवार इत्यादि बड़ी सेनासहित योगी-श्वरनिकी पूजाको शीघ्र ही चला, बड़ी विभूति कर युक्त शुभ ध्यानविषै तत्पर कार्तिक सुदी सप्तमीके दिन मुनिनिके चरणनिविषै जाय पहुंचा। वह उत्तम सम्यक्तका धारक विधिपूर्वक मुनिवन्दनाकर मथुराविषै अतिशोभा करावता भया, मथुरा स्वर्ग समान सोहती भई, यह वृत्तान्त सुन शत्रुघ्न शीघ्रही महा तुरङ्ग चढ़ा सप्त ऋषिनिके निकट आया अर शत्रुघ्नकी माता सुप्रभा भी मुनिनिकी भक्ति कर पुत्रके पीछे ही आई अर शत्रुघ्न नमस्कार कर मुनिनिके मुख धर्म श्रवण करता भया, मुनि कहते भये हे नृप! यह संसार असार है वीतरागका मार्ग सार है, जहां श्रावकके बारह व्रत कहे, मुनिके अठाईस मूल गुण कहे मु-

नीनिको निर्दोष आहार लेना अकृत अकारित राग रहित प्रासुक आहार विधिपूर्वक लिये योगीश्वरोंके तपकी वधवारी होय तब वह शत्रुघ्न कहता भया—हे देव ! आपके आये या नगरतैं मरी गई, रोग गए, दुर्भिक्ष गया, सब विघ्न गए, सुभिक्ष भया सब साता भई प्रजाके दुःख गए, सर्व समृद्धि भई जैसे सूर्यके उदयतैं कमलनी फूलै, कोई दिन आप यहां ही तिष्ठो। तब मुनि कहते भये—हे शत्रुघ्न ! जिन आज्ञा सिवाय अधिक रहना उचित नाहीं, यह चतुर्थकाल धर्मके उद्योतका कारण है याविषैं मुनीन्द्रका धर्म भव्य जीव धारै हैं जिन आज्ञा पालै हैं महामुनिनिके केवलज्ञान प्रगट होय है मुनिसुव्रतनाथ तो मुक्त भये अब नमि, नेमि, पार्श्व, महावीर चार तीर्थङ्कर और होवेंगे बहुरि पंचमकाल जाहि दुखमा काल कहिये सो धर्मकी न्यूनतारूप प्रवरतेगा, ता समय पाखण्डी जीवनिकर जिनशासन अति ऊंचा है तोहू आच्छादित होयगा जैसे रजकर सूर्यका विम्ब आच्छादित होय पाखण्डी निर्दई दया धर्मको लोपकर हिंसाका मार्ग प्रवर्तन करेंगे ता समय मसान समान ग्राम अर प्रेत समान लोक कुचेष्टाके करणहारे होवेंगे, महाकुधर्मविषैं प्रवीण क्रूर चोर पाखण्डी दुष्टजीव तिनकर पृथिवी पीड़ित होयगी, किसाण दुखी होवेंगे, प्रजा निर्धन होयगी, महा हिंसक जीव परजीवनिके घातक होवेंगे निरन्तर हिंसाकी बढवारी होयगी पुत्र माता पिताकी आज्ञासे विमुख होवेंगे अर माता पिता हू स्नेहरहित होवेंगे अर कलिकालविषै राजा लुटेरे होवेंगे कोई सुखी नजर न आवेगा कहिवेके सुखी वे पापचित्त दुर्गतिकी दायक कुकथा कर परस्पर पाप उपजावेंगे। हे शत्रुघ्न ! कलिकालविषै कषायकी बहुलता होवेगी अर अतिशय समस्त विलय जावेंगे चारण मुनि देव विद्याधरनिका आवना न होयगा। अज्ञानी लोक नग्नमुद्राके धारक मुनिनिको देख निन्दा करेंगे, मलिनचित्त मूढ़जन अयोग्यको योग्य जानेंगे जैसे पतंग दीपककी शिखाविषै पड़ै तैसे अज्ञानी पापपंथविषै पड़ दुर्गतिके दुःख भोगेंगे अर जे महा शांत स्वभाव तिनकी दुष्ट निन्दा करेंगे, विषयी जीवनिको भक्तिकर पूजेंगे, दीन अनाथ जीवनिको दया भावकर कोई न देवेगा अर मायाचारी दुराचारिनिको लोक देवेंगे सो वृथा जायगा जैसे शिलाविषै बीज बोय निरन्तर सींचे तेऊ कछु कार्यकारी नाहीं, तैसे कुशील पुरुषनिको

विनय भक्तिकर दिया कल्याणकारी नाहीं, जो कोई मुनिनिकी अवज्ञा करै है अर मिथ्या मार्गियोंको भक्तिकर पूजे है सो मलयागिरिचन्दनको तजकर कटकवृक्षको अगीकार करै है ऐसा जानकर हे वत्स ! तू दान पूजा कर जन्म कृतार्थ कर, गृहस्थीको दान पूजा ही कल्याणकारी है अर समस्त मथुराके लोक धर्मविषै तत्पर होवो, दया पालो, साधर्मियोंसे वात्सल्य धारो, जिनशासनकी प्रभावना करो, घर घर जिनबिंब थापो पूजा अभिषेककी प्रवृत्ति करो जाकर सब शांति हो, जो जिनधर्मका आराधन न करेगा अर जाके घरमें जिन पूजा न होयगी, दान न होवेगा ताहि आपदा पड़ेगी जैसे मृगको व्याघ्री भखै तैसे धर्मरहितको मरी भखेगी अंगुष्ठ प्रमाण हू जिनेंद्रकी प्रतिमा जिसके विराजेगी उसके घरविषै मरी यूं भाजेगी जैसे गरुड़के भयसे नागिनि भागे। ये वचन मुनिके सुन शत्रुघ्नने कहा—हे प्रभो ! जो आप आज्ञा करी त्यों ही लोक धर्मविषै प्रवर्तेंगे ॥

अथानन्तर—मुनि आकाश मार्ग विहार कर अनेक निर्वाण भूमि वन्दकर सीताके घर आहारको आये। कैसे हैं मुनि ? तप ही है धन जिनके सीता महा हर्षको प्राप्त होय श्रद्धा आदि गुणोंकर मंडित परम अन्नकर विधिपूर्वक पारणा करावती भई, मुनि आहार लेय आकाशके मार्ग विहार कर गये शत्रुघ्नने नगरीके वाहर अर भीतर अनेक जिनमन्दिर कराये घर घर जिनप्रतिमा पधराईं नगरी सब उपद्रवरहित भई, वन उपवन फल पुष्पादिक कर शोभित भए, वापिका सरोवरी कमलों कर मंडित सोहती भई पक्षी शब्द करते भए कैलाशके तटसमान उज्ज्वल मंदिर नेत्रोंको आनन्दकारी विमान तुल्य सोहते भए अर सर्व किसाण लोक संपदाकर भरे सुखसूं निवास करते भए गिरिके शिखर समान ऊंचे अनाजोंके ढेर गावोंविषै सोहते भये स्वर्ण रत्नादिककी पृथिवीविषै विस्तीर्णता होती भई सकल लोक सुखी रामके राज्यविषै देवों समान अतुल विभूतिके धारक धर्म अर्थ कामविषै तत्पर होते भए शत्रुघ्न मथुराविषै राज्य करे रामके प्रतापसे अनेक राजाओंपर आज्ञा करता सोहै जैसे देवोंविषै वरुण सोहे या भांति मथुरापुरीका ऋद्धिके धारी मुनिनिका प्रतापकर उपद्रव दूर होता भया। जो यह अध्याय बांचे सुने सो पुरुष शुभनाम

शुभगोत्र शुभसातावेदनोका बन्ध करै जो साधुवोंकी भक्ति विषै अनुरागी होय, अर साधुवोंका समागम चाहे वह मनवांछित फलको प्राप्त होय या साधुवोंके संगको पायकर धर्मको आराध कर प्राणी सूर्यसे भी अधिक दीप्तिको प्राप्त होवे हैं ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषा वचनिकाविषै मथुराका उपसर्ग निवारण वर्णन करनेवाला बानवेवां पर्व पूर्ण भया ॥ ९२ ॥

अथानन्तर—विजियार्धकी दक्षिण श्रेणीविषै रत्नपुरनामा नगर वहां राजा रत्नरथ उसकी राणी पूर्णचन्द्रानना उसके पुत्री मनोरमा महारूपवती उसे यौवनवती देख राजा वर ढूंढवेकी बुद्धिकर व्याकुल भया मन्त्रियोंसे मंत्र किया कि यह कुमारी कौनको परणाऊं या भांति राजा चिन्तासंयुक्त कईएक दिन गए एक दिन राजाकी सभाविषै नारद आया राजाने बहुत सन्मान किया नारद सबही लौकिक रीतियोंविषै प्रवीण, उसे राजाने पुत्रोंके विवाहनेका वृत्तांत पूछा तब नारदने कहा रामका भाई लक्ष्मण महा सुन्दर है जगतविषै मुख्य है चक्रके प्रभावकर नवाए हैं समस्त नरेंद्र जिसने ऐसी कन्या उसके हृदयविषैं आनंददायिनी होवै जैसे कुमुदनीके वनको चांदनी आनंददायिनी होय। जब या भांति नारदने कही तब रत्नरथके पुत्र हरिवेग मनोवेग वायुवेगादि महामानी स्वजनोंके घातकर उपजा है वैर जिनके प्रलयकालकी अग्नि समान प्रज्ज्वलित होय कहते भए जो हमारा शत्रु, जिसे हम मारा चाहैं उसे कन्या कैसे देवें यह नारद दुराचारी है इसे यहांसे काढ़ो, ऐसे वचन राजपुत्रोंके सुन किंकर नारद पर दौड़े तब नारद आकाश मार्ग विहार कर शीघ्रही अयोध्या लक्ष्मणपै आया अनेक देशांतरकी वार्त्ता कह रत्नरथकी पुत्री मनोरमाका चित्राम दिखाया, सो वह कन्या तीन लोककी सुंदरियोंका रूप एकत्र कर मानों बनाई है। सो लक्ष्मण चित्रपट देख अति मोहित होय कामके वश भया यद्यपि महा धीर वीर है तथापि वशीभूत होय गया. मनविषै विचारता भया जो यह स्त्री रत्न मुझे न प्राप्त होय तो मेरा राज्य निष्फल अर जीतव्य वृथा। लक्ष्मण नारदसे कहता भया—हे भगवन्! आपने मेरे गुणकीर्तन किये अर उन दुष्टोंने आपसे विरोध किया, सो वे पापी प्रचण्डमानी महा क्षुद्र दुरात्मा कार्यके विचारसे रहित हैं उनका मान मैं दूर करूंगा आप समाधानविषै

चित्त लावो तिहारे चरण मेरे सिर पर हैं अर उन दुष्टोंको तिहारे पायन पाड़ूंगा ऐसा कहकर विराधित विद्याधरको बुलाया अर कही रत्नपुर ऊपर हमारी शीघ्र ही तयारी है तातैं पत्र लिख सर्व विद्याधरोंको बुलावो रणका सरंजाम करावो ॥

तब विराधितने सर्वोंको पत्र पठाये वे महासेना सहित शीघ्र ही आए लक्ष्मण राम सहित सर्व नृपोंको लेकर रत्नपुरकी तरफ चले जैसे लोकपालों सहित इन्द्र चले, जीत जिसके सन्मुख है नाना प्रकारके शस्त्रोंके समूह कर आच्छादित करी हैं सूर्यकी किरण जाने, सो रत्नपुर जाय पहुंचे उज्ज्वल छत्रकर शोभित तब राजा रत्नरथ परचक्र आया जान अपनी समस्त सेना सहित युद्धको निकसा, महातेज कर। सो चक्र करोत कुठार बाण खड्ग बरछी पाश गदादि आयुधनिकर तिनके परस्पर महा युद्ध भया, अप्सरोंके समूह युद्ध देख योधावों पर पुष्पवृष्टि करते भए, लक्ष्मण परसेनारूप समुद्रके सोखिवेको बड़वानल समान आप युद्ध करनेको उद्यमी भया, परचक्रके योधा रूप जलचरोंके क्षयका कारण, सो लक्ष्मणके भयकर रथोंके तुरंगोंके हाथियोंके सवार सब दशोंदिशाओंको भागे अर इन्द्रसमान है शक्ति जिनकी, ऐसे श्रीराम अर सुग्रीव हनूमान इत्यादि सब ही युद्धको प्रवरते इन योधाओंकर विद्याधरोंकी सेना ऐसे भागी जैसे पवन कर मेघ पटल विलाय जावें तब रत्नरथ अर रत्नरथके पुत्रोंको भागते देख नारदने परम हर्षित होय ताली देय हंसकर कहा अरे रत्नरथके पुत्र हो। तुम महाचपल दुराचारी मन्दबुद्धि लक्ष्मणके गुणोंको उच्चता न सह सके सो अब अपमानको पाय क्यों भागो हो? तब उन्होंने कुछ जवाब नहीं दिया उसी समय मनोरमा कन्या अनेक सखियों सहित रथपर चढ़कर महा प्रेमकी भरी लक्ष्मणके समीप आई जैसे इन्द्राणी इन्द्रके समीप आवै, उसे देखकर लक्ष्मण क्रोधरहित भए, भृकुटी चढ़ रही थी सो शीतल वदन भए कन्या आनन्दकी उपजावनहारी तब राजा रत्नरथ अपने पुत्रों सहित मान तज नाना प्रकारकी भेंट लेकर श्रीराम लक्ष्मणके समीप आया राजा देश कालकी विधिको जाने है अर देखा है अपना अर इनका पुरुषार्थ जिसने तब नारद सबके बीच रत्नरथको कहते भए हे रत्नरथ। अब तेरी क्या वार्ता तू रत्नरथ है कै

रजरथ है वृथा मान करे हुता सो नारायण बलदेवोंसे कहा मान अर ताली वजाय रत्नरथके पुत्रोंसे हंसकर कहता भया—हो रत्नरथके पुत्र हो ! यह वासुदेव जिनको तुम अपने घरमें उद्धत चेष्टा रूप होय मनविषै आया सो ही कही अव पायन क्यों पड़ो हो ? तव वे कहते भए—हे नारद ! तिहारा कोप भी गुण करै जो तुमने हमसे कोप किया तो बड़े पुरुषोंका सम्बन्ध भया, इनका सम्बन्ध दुर्लभ है या भांति क्षणमात्र वार्ता कर सब नगरविषै गए श्रीरामको श्रीदामा परणाई रति समान है रूप जाका उसे पायकर राम आनन्दसे रमते भये अर मनोरमा लक्ष्मणको परणाई सो साक्षात् मनोरमा ही है,या भांति पुण्यके प्रभाव कर अद्भुत वस्तुकी प्राप्ति होय है तातैं भव्य जीव सूर्यसे अधिक प्रकाश रूप जो वीतरागका मार्ग उसे जानकर धर्मकी आराधना करो ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषा वचनिकाविषै रामको रतिदामाका लाभ अर लक्ष्मणको मनोरमाका लाभ वर्णन करनेवाला तिराणवेवा पर्व पूर्ण भया ॥ ९३ ॥

अथानन्तर—और भी विजयार्धके दक्षिण श्रेणीविषैं विद्याधर हुते वे सब लक्ष्मणने युद्धकर जीते कैसा है युद्ध ? जहां नानाप्रकारके शस्त्रोंके प्रहारकर अर सेनाके संघट्टकर अंधकार होय रहा है। गौतम स्वामी कहै हैं—हे श्रेणिक ! वे विद्याधर अत्यंत दुस्सह महा विषधर समान हुते सो सब राम लक्ष्मणके प्रतापकर मानरूप विषसे रहित होय गए, इनके सेवक भए तिनकी राजधानी देवोंकी पुरी समान तिनके नाम कैयक तुझे कहूं हूं—रविप्रभ कांचनप्रभ मेघप्रभ शिवमंदिर गंधर्वगति अमृतपुर लक्ष्मीधरप्रभ किन्नर पुर मेघकूट मर्त्यगति चक्रपुर रथनूपुर वहुरव श्रीमलय श्रीगृह अरिंजय भास्करप्रभ ज्योतिपुर चंद्रपुर गंधार मलय सिंहपुर श्रीविजयपुर भद्रपुर यक्षपुर तिलक स्थानक इत्यादि बड़े बड़े नगर सो सब लक्ष्मणने वशमें किए सब पृथिवीको जीत, सप्त रत्न कर सहित लक्ष्मण नारायणके पदका भोक्ता होता भया, सप्तरत्नोंके नाम चक्र, शंख, धनुष, शक्ति, गदा, खड्ग, कौस्तुभ मणि, अर रामके चार हल, मूसल, रत्नमाला, गदा। या भांति दोनों भाई अभेद भाव पृथिवीका राज्य करें, तव श्रेणिक गौतमस्वामीको पूछता भया—हे भगवन् !

तिहारे प्रसादसे मैंने राम लक्ष्मणका माहात्म्य विधिपूर्वक सुना अब लवण अंकुशकी उत्पत्ति अर लक्ष्मणके पुत्रोंका वर्णन सुना चाहूं हूं सो आप कहो । तब गौतम गणधर कहते भए—हे राजन् ! मैं कहूं हूं सुन-राम लक्ष्मण जगतविषै प्रधानपुरुष निःकंटक राज्य भोगते भए तिनके दिन पक्ष मास वर्ष महा सुखसे व्यतीत होंय जिनके बड़े कुलकी उपजी देवांगना समान स्त्री लक्ष्मणके सोलहहजार तिनमें आठ पटराणी कीर्ति समान लक्ष्मी समान रति समान गुणवती शीलवती अनेक कलामें निपुण महा सौम्य सुन्दराकार तिनके नाम प्रथम पटराणी राजा द्रोणमेघकी पुत्री विशिल्या दूजी रूपवती जिस समान और रूपवान नाहीं तीजी वनमाला चौथी कल्याणमाला पांचमी रतिमाला छठी जिनपद्मा जिसने अपने मुखकी शोभाकर कमल जीते सातमी भगवती आठमी मनोरमा अर रामके राणी आठ हजार देवांगना तिनविषै चार पटराणी जगत्विषै प्रसिद्ध कीर्ति जिनमें प्रथम जानकी दूजी प्रभावती तीजी रतिप्रभा चौथी श्रीदामा इन सबोंके मध्य सीता सुन्दर लक्षण ऐसी सोहै ज्यों तारानिमें चंद्रकला अर लक्ष्मणके पुत्र अढ़ाईसौ तिनमें कैयकोंके नाम कहूं हूं सो सुन—वृषभ धरण चन्द्र शरभ मकरध्वज हरिनाग श्रीधर मदन यह महाप्रसिद्ध सुन्दर चेष्टाके धारक जिनके गुणनि कर सब लोकनिके मन अनुरागी अर विशिल्याका पुत्र श्रीधर अयोध्यामें ऐसा सोहै जैसा आकाशविषै चन्द्रमा अर रूपवतीका पुत्र पृथिवीतिलक सो पृथिवीमें प्रसिद्ध अर कल्याणमाला का पुत्र महा कल्याणका भाजन मंगल अर पद्मावती पुत्र विमलप्रभ अर वनमालाका पुत्र अर्जुनप्रभ अर अतिवीर्यकी पुत्रीका पुत्र श्रीकेशी अर भगवतीका पुत्र सत्यकेसी अर मनोरमाका पुत्र सुपार्श्वकीर्ति ये सब ही महा बलवान पराक्रमके धारक शस्त्र शास्त्र विद्यामें प्रवीण इन सब भाईनिमें परस्पर अधिक प्रीति जैसे नख मांसमें दृढ़ कभी भी जुदे न होवें, तैसे भाई जुदे नाहीं, योग्य है चेष्टा जिनकी परस्पर प्रेमके भरे वह उसके हृदयमें तिष्ठे वह वाके हृदयमें तिष्ठ जैसे स्वर्गमें देव रमें तैसे ये कुमार अयोध्यापुरीमें रमते भये, जे प्राणी पुण्याधिकारी हैं पूर्व पुण्य उपार्जे हैं महाशुभ चित्त हैं तिनके जन्मसे लेकर सकल मनोहर वस्तु ही आय मिले हैं रघुवंशिनिके साढ़े चारकोटि कुमार महामनोज्ञ चेष्टाके धारक नगरके वन उपवनादिमें

महा मनोग्य चेष्टासहित देवनि समान रमते भये अर राम लक्ष्मणके सोलह हजार मुकुटबन्ध राजा सूर्यहूतैं अधिक तेजके धारक सेवक होते भये।

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषा वचनिकाविषै राम लक्ष्मणकी ऋद्धि वर्णन करनेवाला चौरानवेवा पर्व पूर्ण भया ॥ ९४॥

अथानन्तर—राम लक्ष्मणके दिन अति आनन्दसे व्यतीत होय हैं धर्म अर्थ काम ये तीनों इनके अविरुद्ध होते भये, एक समय सीता सुखसे विमान समान जो महिल तामें शरदके मेघ समान उज्ज्वल सेजपर सोवती थी सो पिछले पहिर वह कमलनयनी दोय स्वप्न देखती भई बहुरि दिव्य वादित्रनिके नाद सुन प्रतिबोधको प्राप्त भई निर्मल प्रभात भए स्नानादि देह क्रियाकर सखिनि सहित स्वामीपै गई जायकर पूछती भई—हे नाथ! मैंने आज रात्रिविषै स्वप्ने देखे तिनका फल कहो, दोय उत्कृष्ट अष्टापद शरदके चन्द्रमासमान उज्ज्वल अर क्षोभको प्राप्त भया जो समुद्र ताके शब्द समान जिनके शब्द कैलाशके शिखरसमान सुन्दर सर्व आभरणनिकर मंडित महा मनोहर हैं केश जिनके अर उज्ज्वल हैं दाढ़ जिनकी सो मेरे मुखमें पैठे अर पुष्पक विमानके शिखरसे प्रबल पवनके झकोरकर मैं पृथ्वीविषै पड़ी तब श्रीरामचन्द्र कहते भये—हे सुन्दरि। दोय अष्टापद मुखमें पैठे देखे ताके फलकर तेरे दोय पुत्र होयंगे अर पुष्पक विमानसे पृथ्वीविषै पड़ना प्रशस्त नाहीं सो कछु चिन्ता न करो, दानके प्रभावसे क्रूर ग्रह शांत होवेंगे॥

अथानन्तर—वसन्तसमयरूपी राजा आया तिलक जातिके वृक्ष फूले सोई उसके बख्तर अर नीम जातिके वृक्ष फूले वेई गजराज तिनपर आरूढ अर आंब मौर आये सो मानो वसन्तका धनुष अर कमल फूले सो वसन्तके बाण अर केसरी फूले वेई रतिराजके तरकश अर भ्रमर गुञ्जार करे हैं सो मानो निर्मल श्लोकोंकर वसंत नृपका यश गावे हैं अर कदम्ब फूले तिनकी सुगन्ध पवन आवै है सोई मानों वसंत नृपके निश्वास भये अर मालतीके फूल फूले सो मानो वसंत शीतकालादिक अपने शत्रुनिको हंसै है अर कोयल मिष्ट वाणी बोले है सो मानों वसंतराजाके वचन है या भांति वसंत समय नृपतिकीसी लीला धरे

आया। वसंतकी लीला लोकनिको कामका उद्वेग उपजावनहारी है बहुरि यह वसंत मानों सिंह ही है आकोट जाति वृक्षादिके फूल वेई हैं नख जाके अर कुरवक जातिके वृक्षनिके फूल आये तेई भए दाढ़ जाके अर महारक्त अशोकके पुष्प वेई हैं नेत्र जाके अर चंचलपल्लव वेई हैं जिह्वा जिसकी ऐसा वसंत केसरी आय प्राप्त भया लोकोंके मनकी वृत्ति सोई भई गुफा तिनमें पैठा। महेन्द्रनामा उद्यान नंदनवन समान सदा ही सुन्दर है सो वसंत समय अति सुन्दर होता भया, नाना प्रकारके पुष्पनिकी पाखुडी अर नाना प्रकारकी कूपल दक्षिणदिशिकी पवनकर हालती भई सो मानों उन्मत्त भई घूमे हैं अर वापिका कमलादिक करि आच्छादित अर पक्षिनिके समूह नाद करे हैं अर लोक सिवाणोंपर तथा तीरपर बैठे हैं अर हंस सारस चकवा कौंच मनोहर शब्द करे हैं अर कारण्ड बोल रहे हैं इत्यादि मनोहर पक्षिनिके मनोहर शब्दकरि रागी पुरुषनिको राग उपजावे हैं, पक्षी जलविषै पड़े हैं अर उठे हैं तिनकर निर्मल जल कलोल रूप होय रहा है जल तो कमलादिक कर भरा है अर स्थल जो है सो स्थल पद्मादिक पुष्पनि कर भरे हैं अर आकाश पुष्पनिकी मकरन्दकर मंडित होय रहा है, फूलनिके गुच्छे अर लता वृक्ष अनेक प्रकारके फूल रहे हैं वनस्पतिकी परमशोभा होय रही है ता समय सीता कछु गर्भके भारकर दुर्बलशरीर भई तब राम पूछते भये—हे कांते! तेरे जो अभिलाषा होय सो पूर्ण करूं। तब सीता कहती भई—हे नाथ! अनेक चैत्यालयनिके दर्शन करवेकी मेरी वांछा है, भगवानके प्रतिबिंब पांचों वर्णके लोकविषै मंगलरूप तिनको नमस्कार करवेको मेरा मनोरथ है, स्वर्ण रत्नमई पुष्पनिकर जिनेंद्रको पूजूं यह मेरे महाश्रद्धा है अर कहा वांछूं? ये सीताके वचन सुनकर राम हर्षित भये, फूल गया है मुखकमल जिनका राजलोकविषै विराजते हुते सो द्वारपालीको बुलाय आज्ञा करी कि हे भद्रे। मंत्रिनिको आज्ञा पहुंचावो जो समस्त चैत्यालयनिविषै प्रभावना करें अर महेंद्रोदयनाम उद्यानविषै जे चैत्यालय हैं तिनकी शोभा करावें अर सर्व लोकको आज्ञा पहुंचावो कि जिन मंदिरविषै पूजा प्रभावना आदि अति उत्सव करें अर तोरण ध्वजा घण्टा झालरी चन्दोवा सायवान महामनोहर वस्त्रनिके बनावें तथा सुन्दर समस्त उपकरण देहुरा चढ़ावें,

लोक समस्त पृथिवी विषैं जिनपजा करैं अर कैलाश सम्मेदशिखर पावापुर चम्पापुर गिरिनार शत्रुञ्जय मांगीतुंगी आदि निर्वाण क्षेत्रनिविषै विशेष शोभा करावो कल्याण रूप दोहुला साताको उपजा है सो पृथिवीविषै जिनपूजाकी प्रवर्त्ति करा हम सीतासहित धर्मक्षेत्रनिमें विहार करेंगे। यह रामकी आज्ञा सुन वह द्वारपाली अपनी ठौर अन्यका राखकर जाय मंत्रीनको आज्ञा पहुंचावनी भई अर वे स्वामीकी आज्ञा प्रमाण अपने किंकरनिका आज्ञा करते भए। सर्व चैत्यालयनिविषै शोभा कराई अर महा पर्वतोंकी गुफाओंके द्वार पूर्ण कलश थापे, मोतिनिके हारनिकर शोभित अर विशाल स्वर्णकी भांतिविषै मणिनिके चित्राम रचे महेन्द्रोदय नाम उद्यानकी शोभा नन्दनवनकी शोभा समानकर अत्यन्त निर्मल शुद्धमणिनिके दर्पण थंभविषै थापे अर झरोखनिके मुखविषै निर्मल मोतिनिके हार लटकाये सो जलनीझरना समान सोहैं अर पांच प्रकारके रत्ननिको चूर्णकर भूमि मंडित करी अर सहस्रदल कमल तथा नाना प्रकारके कमल तिनकर शोभा करी अर पांच वर्णके मणिनिके दण्ड तिनविषै महा सुन्दर वस्त्रनिको ध्वजा लगाय मंदिरनिके शिखरपर चढ़ाई, अर नाना प्रकारके पुष्पनिको माला जिनपर भ्रमर गुञ्जार करैं ठौर ठौर लुंबाई हैं अर विशाल वादित्रशाला नाट्यशाला अनेक रची हैं तिनकर वन अति शोभै है मानों नंदनवन ही है तब श्रीरामचन्द्र इन्द्रसमान सब नगरके लोकनिकर युक्त समस्त राजलोकनिसहित वनविषै पधारे। सीता अर आप गजपर आरूढ़ कैसे सोहैं? जैसे शची सहित इन्द्र ऐरावत गजपर चढ़े सोहैं अर लक्ष्मण भी परम ऋद्धिको धरे वनविषै जाते भए अर औरहू सब लोक आनंदसे वनविषै गये, अर सबनिके अन्न पान वनहीमें भया जहां महा मनोग्य लतानिके मंडप अर केलिके वृक्ष तहां राणी तिष्ठो अर औरहू लोक यथायोग्य वनविषै तिष्ठे, राम हाथीतैं उतरकर निर्मल जलका भरा जो सरोवर नाना प्रकारके कमलनिकर संयुक्त उसविषै रमते भए जैसे इन्द्र क्षीर सागरविषै रमैं तहां क्रीड़ाकर जलतैं बाहिर आए, दिव्य सामग्रीकर विधिपूर्वक सीतासहित जिनेन्द्रकी पूजा करते भए, राम महा सुंदर अर वनलक्ष्मी समान जे वल्लभा तिनकर मंडित ऐसे सोहते भये मानो मूर्तिवंत वसंत ही है। आठ हजार राणी देवांगना समान तिन सहित

राम ऐसे सोहैं मानों ये तारानिकर मंडित चंद्र ही हैं अमृतका आहार अर सुगंधका विलेपन मनोहर सेज मनोहर आसन नाना प्रकारके सुगंध माल्यादिक स्पर्श रस गंधरूप शब्द पांचों इंद्रियनिके विषय अति मनोहर रामको प्राप्त भए जिनमंदिरविषै भलीविधिसे नृत्य पूजा करी, पूजा प्रभावनाविषै रामके अति अनुराग होता भया, सूर्यहूतैं अधिक तेजके धारक राम देवांगनासमान सुन्दर जे दारा तिन सहित कैयक दिन सुखसे वनविषै तिष्ठे ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषा वचनिकाविषै जिनेंद्रपूजाकी सीताकू अभिलाषा गर्भका प्रादुर्भाव वर्णन करनेवाला पिचाणवेवां पर्व पूर्ण भया ॥ ९५ ॥

अथानन्तर—प्रजाके लोक रामके दर्शनकी अभिलाषा कर वनही विषै आये जैसे तिसाये पुरुष सरोवरपै आवैं, तब बाहिरले दरवानने लोकोंके आवनेका वृत्तांत द्वारपालियोंसे कहा। वे द्वारपाली भीतर राजलोकमें रामसे जायकर कहती भईं कि—हे प्रभो! प्रजाके लोक आपके दर्शनका आये हैं अर सीताके दाहिनी आंख फुरकी तब सीता विचारती भई यह आंख मुझे क्या कहे है। कछू दुःखका आगमन बतावै है। आगे अशुभके उदय कर समुद्रके मध्यमें दुःख पाये तौहू दुष्ट कर्म संतुष्ट न भया क्या और भी दुःख दिया चाहे है जो इस जीवने रागद्वेषके योग कर कर्म उपार्जे हैं तिनका फल ये प्राणी अवश्य पावे हैं काहू कर निवारा न जाय तब सीता चिंतावती होय और राणीनिसे कहती भई—मेरी दाहिनी आंख फरकनेका फल कहो। तब एक अनुमति नामा राणी महाप्रवीण कहती भई—हे देवि! या जीवने जे कर्म शुभ अथवा अशुभ उपार्जे हैं वे या जीवके भले बुरे फलके दाता हैं कर्महीको काल कहिये अर विधि कहिये अर दैव कहिये ईश्वर भी कहिये, सब संसारी जीव कर्मनिके आधीन हैं, सिद्ध परमेष्ठी कर्मनिसे रहित हैं। बहुरि गुणदोषकी ज्ञाता राणी गुणमाला सीताको रुदन करती देख धीर्य बंधाय कहती भई—हे देवि! तुम पतिके सबनिविषै श्रेष्ठ हो, तुमको काहू प्रकारका दुःख नाहीं अर और राणी कहती भई—बहुत विचारकर कहा? शांतिकर्म करो, जिनेन्द्रका अभिषेक अर पूजा करावो अर किमिच्छिक दान देवो जाकी जो

इच्छा होय सो ले जावो, दान पूजाकर अशुभका निवारण होय है तातैं शुभ कार्यकर अशुभको निवारो। उ० १५६ या भांति इन्होंने कहो तब सीता प्रसन्न भई अर कही—योग्य है, दान पूजा अभिषेक अर तप ये अशुभके नाशक हैं दानधर्म विघ्नका नाशक वैरका नाशक है पुण्यका अर जशका मूल कारण है यह विचार कर भद्रकलश नामा भंडारीको बुलायकर कही—मेरे प्रसूति होय तौंलग किमिच्छा दान निरंतर देवो। तब भद्रकलशने कही जो आप आज्ञा करेंगे सोही होयगा, यह कहकर भंडारी गया अर जिनपूजादि शुभक्रियाविषै प्रवरता जितने भगवानके चैत्यालय हैं तिनविषैं नाना प्रकारके उपकरण चढ़ाये अर सब चैत्यालयनिमें अनेक प्रकारके वादित्र बजवाये मानों मेघ ही गाजे हैं अर भगवान्के चरित्र पुराण आदिके ग्रन्थ जिनमंदिरनिविषे पधराये अर त्रैलोक्यके पाठ समोसरणके पाठ द्वीपसमुद्रांतके पाठ प्रभुके मन्दिरोंमें पधराये अर दूध, दही, घृत, जल, मिष्टान्नके भरे कलश अभिषेकको पठाये अर सब खोजाओंमें प्रधान जो खोजा सो वस्त्राभूषण पहरे हाथी चढ़ा नगरविषे घोषणा फेरे जाकी जो इच्छा होय सो ही लेवो। या भांति विधिपूर्वक दान पूजा उत्सव कराये, लोकपूजा दान तप आदिविषै प्रवर्तें पापबुद्धि रहित समाधानको प्राप्त भये। सीता शांतचित्त धर्ममार्गविषै अनुरक्त भई अर श्रीरामचंद्र मंडपविषे आय तिष्ठे। द्वारपालने जे नगरीके लोक आये हुते ते रामसे मिलाये। स्वर्ण रत्नकर निर्मापित अद्भुत सभाको देख प्रजाके लोक चकित होय गये, हृदयको आनन्दके उपजावनहारे राम तिनका देखकर नेत्र प्रसन्न भये प्रजाके लोक हाथजोड़ नमस्कार करते भये, कांपे है तन जिनका अर डरे है मन जिनका। तब राम कहते भए, हे लोको! तिहारे आगमका कारण कहो। तब विजयसुराजो मधुमानव सुलाधर काश्यप पिंगल कालोपम इत्यादि नगरके मुखिया मनुष्य निश्चल होय चरणनिकी तरफ चौंके। गल गया है गर्व जिनका राज तेजके प्रतापकर कछु कह न सके। यद्यपि चिरकाल में सोच सोच कहा चाहें तथापि इनके मुखरूप मंदिरसे वाणीरूप वधू न निकसे तब रामने बहुत दिलासाकर कहा तुम कौन अर्थ आये हो सो कहो। या भांति कहा तोभी वे चित्राम कैसे होय रहे कछु न कहैं लज्जारूप फांसकर बंधा है कंठ जिनका अर चलायमान हैं नेत्र जिनके जैसे हिरणके बालक व्याकुलचित्त देखें तैसे देखें। तब

तिनविषै मुख्य विजय नाम पुरुष चलायमान है शब्द जिसका सो कहता भया—हे देव ! अभयदानका प्रसाद होय। तब रामने कहा तुम काहू बातका भय मत करो तिहारे चित्तविषैं जो होय सो कहो तिहारा दुःख दूरकर तुमको साता उपजाऊंगा तिहारे औगुण न लूंगा गुण ही लूंगा जैसे मिले हुए दूध जल तिनमें जलको टार हंस दूध ही पीवे हैं। श्रीरामने अभय दान दिया तोभी अतिकष्टसे विचार २ धीरे स्वरकर विजय हाथ जोड़ सिर नवाय कहता भया कि हे नाथ नरोत्तम ! एक विनती सुनो अब सकल प्रजा मर्यादा रहित प्रवर्तै है यह लोक स्वभावहीसे कुटिल हैं अर एक दृष्टांत प्रगट पावें तब इनको अकार्य करनेविषै कहा भय ? जैसे बानर सहज ही चपल है अर महाचपल जो यंत्रपिंजरा उसपर चढ़ा तब कहा कहना। निर्बलोंकी यौवनवंत स्त्री पापी बलवंत छिद्र पाय बलात्कार हरे हैं अर काईयक शीलवंती विरहकर पराये घर अत्यंत दुखी होय हैं तिनको कोईयक सहाय पाय अपने घर ले आवे हैं सा धर्मकी मर्यादा जाय है यह न जाय सो यत्न करो प्रजाके हितकी वांछा करो जिस विधि प्रजाका दुःख टरे सो करो या मनुष्यलोकविषै तुम बड़े राजा हो तुम समान अर कौन तुम ही जो प्रजाकी रक्षा न करोगे तो कौन करेगा नदियोंके तट तथा वन उपवन कूप वापिका सरोवरके तीर ग्राम ग्रामविषै घर घरविषै सभाविषै एक यही अपवादकी कथा है और नाहीं कि श्रीराम राजा दशरथके पुत्र सब शास्त्रविषै प्रवीण सो रावण सीताको हर ले गया ताहि घरविषै ले आये तब औरोंको कहा दोष है जो बड़े पुरुष करें सो सब जगतको प्रमाण जिस रीति राजा प्रवर्तै उस ही रीति प्रजा प्रवर्तै "यथा राजा तथा प्रजा" यह वचन है या भांति दुष्टचित्त निरंकुश भए पृथिवीविषै अपवाद करे हैं तिनका निग्रह करो। हे देव ! आप मर्यादाके प्रवर्तक पुरुषोत्तम हो एक यही अपवाद तिहारे राज्यविषै न होता तो तिहारा यह राज्य इन्द्रसे भी अधिक है। यह वचन विजयके सुनकर क्षणएक रामचन्द्र विषादरूप मुद्गरके मारे चलायमान चित्त होय गये चित्तविषै चिंतवते भये यह कौन कष्ट पड़ा मेरा यशरूप कमलोंका वन अपयशरूप अग्निकर जलने लगा है जिस सीताके निमित्त मैं विरहका कष्ट सहा सो मेरे कुलरूप चन्द्रमाको मलिन करे है अयोध्यामें मैं सुखके निमित्त आया अर सुग्रीव हनूमानादिकसे मेरे सुभट

सो मेरे गोत्ररूप कुमुदनीको यह सीता मलिन करे है जिसके निमित्त मैंने समुद्र तिर रणसंग्राम कर रिपुको जीता सो जानकी मेरे कुलरूप दर्पणको कलुषित करे है अर लोक कहे हैं सो सांच है दुष्ट पुरुषके घरविषै तिष्ठी सीता मैं क्यों लाया अर सीतासे मेरा अतिप्रेम जिसे क्षणमात्र न देखूं तो विरहकर आकुलता लहूं अर वह पतिव्रता मोसे अनुरक्त उसे कैसे तजूं जो सदा मेरे नेत्र अर उरविषै वसै महागुणवती निर्दोष सीता सती उसे कैसे तजूं अथवा स्त्रियोंके चित्तकी चेष्टा कौन जाने जिनविषै सब दोषोंका नायक मन्मथ वसे है धिक्कार स्त्रीके जन्मको सर्वदोषोंकी खान आतापका कारण निर्मल कुलविषै उपजे पुरुषोंको कर्दम समान मलिनताका कारण है, अर जैसे कीचविषै फंसा मनुष्य तथा पशु निकस न सके, तैसे स्त्रीके रागरूप पंकविषै फंसा प्राणी निकस न सके, यह स्त्री समस्त बलका नाश करणहारी है अर रागका आश्रय है अर बुद्धिको भ्रष्ट करै है अर आषटवेको खाई समान है निर्वाण सुखकी विघ्न करणहारी ज्ञानकी उत्पत्तिको निवारणहारी भवभ्रमणका कारण है भस्मसे दबी अग्नि समान दाहक है डाभकी सूई समान तीक्ष्ण है देखवे मात्र मनोग्य परन्तु अपवादका कारण ऐसी सीता उसे मैं दुःख दूर करवे निमित्त तजूं जैसे सर्प कांचिलीको तजे फिर चितवै है जिसकर मेरा हृदय तीव्र स्नेहके बन्धनकर वशीभूत सो कैसे तजी जाय, यद्यपि मैं स्थिर हूं तथापि यह जानकी निकटवर्तिनो अग्निकी ज्वाला समान मेरे मनको आताप उपजावे है अर यह दूर रही भी मेरे मनको मोह उपजावे जैसे चन्द्ररेखा दूरहीसे कुमुदनीको विकसित करे। एक ओर लोकापवादका भय अर एक ओर सीताके दुर्निवार स्नेहका भय अर राग कर विकल्पके सागरविषै पड़ा हूं अर सीता सर्व प्रकार देवांगनासे भी श्रेष्ठ महापतिव्रता सती शीलरूपिणी मोसे सदा एकचित्त उसे कैसे तजूं अर जो न तजूं तो अपकीर्ति प्रगट होय है इस पृथिवीविषै मोसमान और दीन नाहीं स्नेह अर अपवादका भय उसविषै लगा है मन जिसका दोनोंकी मित्रताका तीव्र विस्तार वेगकर वशीभूत जो राम सो अपवादरूप तीव्र कष्टको प्राप्त भए सिंहका है ध्वजा जिसके ऐसे राम तिनको दोनों

वार्ताकी अति आकुलतारूप चिंता असाताका कारण दुस्सह आताप उपजावती भई जैसे जेष्ठके मध्यान्हका सूर्य दुस्सह दाह उपजावे ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषा वचनिकाविषै रामकू लोकापवादकी चिन्ताका वर्णन करनेवाला छियानवेवा पर्व पूर्ण भया ॥९६॥

अथानन्तर-श्रीराम एकाग्र चित्तकर द्वारपालको लक्ष्मणके बुलावनेकी आज्ञा करते भये सो द्वारपाल लक्ष्मणपै गया आज्ञा प्रमाण तिनको कही, लक्ष्मण द्वारपालके वचन सुनकर तत्काल तेज तुरंगपर चढ़ रामके निकट आया हाथ जोड़ नमस्कारकर सिंहासनके नीचे पृथिवीपर बैठा रामके चरणोंकी ओर है दृष्टि जाकी राम उठकर आधे सिंहासनपर ले बैठे, शत्रुघ्न आदि सब ही राजा अर विराधित आदि सब ही विद्याधर यथा योग्य बैठे पुरोहित श्रेष्ठी मन्त्री सेनापति सब ही सभामें तिष्ठे तब क्षण एक विश्रामकर रामचन्द्रने लक्ष्मणसे लोकापवादका वृत्तांत कहा, सुनकर लक्ष्मण क्रोधकर लालनेत्र भये अर योधावोंको आज्ञा करी अवार मैं उन दुर्जनोंके अन्त करवेको जाऊंगा पृथिवीको मृषावादरहित करूंगा जे मिथ्या वचन कहे हैं तिनकी जिह्वा छेद करूंगा उपमारहित जो शीलव्रतकी धारणहारी सीता ताकी जे निन्दा करे हैं तिनका क्षय करूंगा। या भांति लक्ष्मण महाक्रोधरूप भये नेत्र अरुण होय गये तब श्रीराम इन वचनोंसे शांत करते भये कि—हे सौम्य! यह पृथिवी सागर प र्यंत उसकी श्रीऋषभ देवने रक्षा करी बहुरि भरतने प्रतिपालना करी अर इक्ष्वाकुवंशके तिलक भये जिनकी पीठ रणमें रिपुओंने न देखी जिनकी कीर्तिरूप चांदनीसे यह जगत् शोभित है सो अपने वंशविषै अनेक यशके उपजावन हारे भये अब मैं क्षणभंगुर पापरूप रागके निमित्त यशको कैसे मलिन करूं, अल्प भी अकीर्ति जो न टारिये तो वृद्धिको प्राप्त होय अर उन नीतिवान् पुरुषोंकी कीर्ति इन्द्रादिक देवोंसे गाइये है ये भोग विनाशीक तिनसे क्या जिनसे अकीर्ति रूप अग्नि कीर्तिरूप वनको बाले यद्यपि सीता सती शीलवन्ती निर्मल चित्त है तथापि इसको घर विषै राखै मेरा अपवाद न मिटै यह अपवाद शास्त्रादिकसे हता न जाय यद्यपि सूर्यकमलोंके वनका प्रफुल्लित करणहारा है अर तिमिरका हरणहारा है तथापि रात्रिके होते सूर्य अस्त होय है तैसे अपवादरूप रज महा विस्तारको

प्राप्त भइ तेजस्वी पुरुषांकी कांतिकी हानि करे है सो यह रज निवारनी चाहिए। हे भ्रातः ! चन्द्रमा समान निर्मल गोत्र हमारा अकीर्तिरूप मेघमालासे आच्छादा जाय है सो न आच्छादा जाय येही मेरे यत्न है जैसे सूके ईंधनके समूहविषै लगी आग जलसे बुझाये विना वृद्धिको प्राप्त होय है तैसे अकीर्तिरूप अग्नि पृथिवीविषै विस्तरै है सो निवारे विना न मिटे यह तीर्थंकर देवोंका कुल महा उज्ज्वल प्रकाश रूप है याका कलंक न लगे सो उपाय करो यद्यपि सीता महा निर्दोष शीलवंती है तथापि मैं तजूंगा अपनी कीर्ति मलिन न करूंगा। तब लक्ष्मण कहता भया कैसा है लक्ष्मण ? रामके स्नेहविषै तत्पर है बुद्धि जिसकी। हे देव ! सीताको शोक उपजावना योग्य नाहीं लोक तो मुनियोंका भी अपवाद करे हैं जिनधर्मका अपवाद करे हैं तो क्या लोकापवादसे धर्म तजिये है तैसे लोकापवाद मात्रसे जानकी कैसे तजिये जो सब सतियोंके सीस विराजै है काहू प्रकार निंदाके योग्य नाहीं अर पापी जीव शीलवंत प्राणियोंकी निंदा करे हैं, क्या तिनके वचनसे शीलवंतोंको दोष लागे है वे निर्दोष ही हैं ये लोक अविवेकी हैं। इनके वचनविषै परमार्थ नहीं विषकर दूषित हैं जिनके नेत्र वे चन्द्रमाको श्यामरूप देखे हैं परन्तु चंद्रमा श्वेत ही हैं श्याम नहीं तैसे लोकोंके कहे निकलंकियोंको कलङ्क नाहीं लगे है जे शीलसे पूर्ण हैं तिनको अपना आत्मा ही साक्षी है परजीवनिका प्रयोजन नाहीं नीच जीवनिके अपवादकरि पंडित विवेकी क्रोधको न प्राप्त होयं जैसे स्वानके भौंकनेतें गजेंद्र नाहीं कोप करे हैं। ये लोक विचित्रगति हैं तरंग समान है चेष्टा जिनकी परदोष कथवेविषै आसक्त सो इन दुष्टोंका स्वयंमेव ही निग्रह होयगा जैसे कोई अज्ञानी शिलाको उपाड़कर चन्द्रमाकी ओर वगाय (फेंके) वहुरि मारा चाहे सो सहज ही आप निस्सन्देह नाशको प्राप्त होय है जो दुष्ट पराए गुणनिको न सह सकें अर सदा पराई निंदा करे हैं सो पापकर्मी निश्चयसेती दुर्गतिको प्राप्त होय हैं जब ऐसे वचन लक्ष्मणने कहे तब श्रीरामचन्द्र कहते भए—हे लक्ष्मण ! तू कहै है सो सब सत्य है तेरी बुद्धि रागद्वेषरहित अति मध्यस्थ महाशोभायमान है परन्तु जे शुद्ध न्यायमार्गी मनुष्य हैं वे लोकविरुद्ध कार्जको तजे हैं जाकी दशोंदिशामें अकीर्तिरूप दावानलकी ज्वाला प्रज्वलित है ताको जगतमें कहा सुख अर कहा ताका जीतव्य ? अन-

र्थका करणहारा जो अर्थ ताकर कहा अर विषकर संयुक्त जो औषधि ताकर कहा ? अर जो बलवान् होय जीवनिकी रक्षा न करे शरणागतपालक न होय ताके बलकर कहा अर जाकर आत्मकल्याण न होय तो आचरणकर कहा ? चारित्र सोई जो आत्महित करे अर जो अध्यात्मगोचर आत्माको न जानै नाके ज्ञानकर कहा ? अर जाकी कीर्तिरूपवधू अपवादरूप बलवान् हरै ताका जन्म प्रशस्त नाहीं ऐसे जीवनेतैं मरण भला, लोकापवादकी बात तो दूर हो रही, मोहि यह महा दोष है जो परपुरुषने हरी सीता मैं बहुरि घरमें लाया। राक्षसके भवनमें उद्यान तहां यह बहुत दिन रही अर ताने दूती पठाय मनवांछित प्रार्थना करी अर समीप आय दुष्ट दृष्टिकर देखी अर मनमें आये सो वचन कहे ऐसी सीता मैं घरमें लयाया या समान अर लज्जा कहा ? सो मूढ़ोंसे कहा न होय ? या संसारकी मायाविषै मैंहू मूढ़ भया। या भांति कहकर आज्ञा करी जो शीघ्रही कृतांतवक्र सेनापतिको बुलावो, यद्यपि दो बालकनिके गर्भसहित सीता है तौहू याहि तत्काल मेरे घरतै निकासो यह आज्ञा करी। तब लक्ष्मण हाथ जोड़ नमस्कारकर कहता भया—हे देव! सीताको तजना योग्य नाहीं, यह राजा जनककी पुत्री महा शीलवती जिनधर्मिणी कोमल चरण कमल जाके महा सुकुमार भोरी सदा सुखिया अकेली कहां जायगी ? गर्भके भारकर संयुक्त परम खेदको धरै यह राजपुत्री तिहारे तजे कौनके शरण जायगी अर आपने देखवेको कही सो देखवेकर कहा दोष भया ? जैसे जिनराजके निकट चढ़ाया द्रव्य निर्माल्य होय है ताहि देखिए है परन्तु दोष नाहीं अर अयोग्य अभक्ष्य वस्तु आंखनिसे देखिए हैं परन्तु देखे दोष नाहीं, अंगीकार किये दोष है तातैं हे नाथ! मोपर प्रसन्न होवो, मेरी विनती सुनो महा निर्दोष सीता सती तुमविषै एकाग्र है चित्त जाका ताहि न तजो तब राम अत्यन्त विरक्त होय क्रोधमें आगए अर अप्रसन्न होय कहा—लक्ष्मण अब कछू न कहना, मैं यह अवश्य निश्चय किया शुभ होवे अथवा अशुभ होवे, निर्मानुष वन जहां मनुष्यका नाम नाहीं सुनिये वहां द्वितीय सहाय रहित अकेली सीताको तजो अपने कर्मके योग कर जीवो अथवा मरो एक क्षणमात्रहू मेरे देशविषै अथवा नगरमें काहूके मन्दिरविषै मत रहो वह मेरी अपकीर्तिको करणहारी है, कृतांतवक्र-

को बुलाया सो चार घोड़ेका रथ चढ़ा बड़ी सेनासहित जाका वंदीजन विरद बखाने हैं लोक जय जयकार करे हैं सो राजमार्ग होय आया जोपर छत्र फिरता अर धनुष चढ़ाय बखतर पहिरे कुण्डल पहिरे ताहि या विधि आवता देख नगरके नर नारी अनेक विकल्पकी वार्ता करते भए। आज यह सेनापति शीघ्र दौड़ा जाय है सो कौनपर विदा होयगा आप कौनपर कोप भए हैं? आज काहूका कछू विगाड़ है ज्येष्ठके सूर्य समान ज्योति जाकी काल समान भयङ्कर शत्रुनिके समूहके मध्य चला जाय है सो आज न जानिये कौन पर कोप है? या भांति नगरके नर नारी वार्ता करै हैं अर सेनापति रामदेवके समीप आया स्वामीको सीस नवाय नमस्कार कर कहता भया—हे देव! जो आज्ञा होय सो ही करूं॥ तव रामने कही शीघ्रही सीताको ले जावो अर मार्गविषै जिनमन्दिरनिका दर्शन कराय सम्मेद शिखर अर निर्वाण भूमि तथा मार्गके चैत्यालय तहां दर्शन कराय वाकी आशा पूर्णकर अर सिंहनाद नामा अटवी जहां मनुष्यका नाम नाहीं तहां अकेली मेल उठ आवो। तव ताने कही जो आज्ञा होयगी सोही होयगा कछू वितर्क न करो अर जानकीपै जाय कही—हे माता! उठो, रथविषै चढ़ो, चैत्यालयनिकी वांछा है सो करो। या भांति सेनापतिने मधुरस्वरकर हर्ष उपजाया तव सीता रथ चढ़ी, चढ़ते समय भगवानको नमस्कार किया अर यह शब्द कहा जो चतुर्विध संघ जयवंत होवें। श्री रामचन्द्र महाजिनधर्मी उत्तम आचरणविषै तत्पर सो जयवन्त होहु अर मेरे प्रमादसे असुन्दर चेष्टा भई होय सो जिनधर्मके अधिष्ठाता देव क्षमा करो अर सखी जन लार भईं तिनसे कही तुम सुखसे तिष्ठो, मैं शीघ्रही जिन चैत्यालयनिके दर्शनकर आऊं हूं। या भांति तिनसे कही अर सिद्धनिको नमस्कार कर सीता आनन्दसे रथ चढ़ी सो रत्न स्वर्णका रथ तापर चढ़ी ऐसी सोहती भई जैसी विमान चढ़ी देवांगना सोहै, वह रथ कृतांतवक्रने चलाया सो ऐसा शीघ्र चलाया जैसा भरत चक्रवर्तीका चलाया बाण चले सो चलते समय सीताको अपशकुन भये, सूके वृक्षपर काग बैठा विरस शब्द करता भया अर माथा धुनता भया अर सन्मुख स्त्री महाशोककी भरी सिरके बाल बखेरे रुदन करती भई इत्यादि अनेक अपशकुन भए तो पुणि सीता जिनभक्तिविषै अनुरागिणी निश्चलचित्त चली

गई, अपशकुन न गिने, पहाड़निके शिखर कंदरा अनेक वन उपवन उलंघ कर शीघ्रही रथ दूर गया गरुड़ समान वेग जाका ऐसे अश्वोंकर युक्त सफेद ध्वजाकर विराजित सूर्यके रथ समान रथ शीघ्र चला। मनोरथ समान वह रथ तापर चढ़ो रामको राणी इन्द्राणीसमान सो अति सोहती भई कृतांतवक्र सारथीने मार्गविषै सीताको नाना प्रकारको भूमि दिखाई ग्राम नगर वन अर कमलसे फूल रहे हैं सरोवर नाना प्रकारके वृक्ष, कहूं सघन वृक्षानिकर वन अन्धकार रूप है। जैसे अन्धेरी रात्रि मेघमालाकर मंडित महा अन्धकार रूप भासै कछू नजर न आवै अर कहूं विरले वृक्ष हैं सघनता नाहीं तहां कैसा भासै है जैसा पंचमकालमें भरत ऐरावत क्षेत्रनिकी पृथिवी विरले सत्पुरुषनिकर सोहै अर कहूं वनी पतझर होय गई है सो पत्र रहित पुष्पफलादिरहित छायारहित कैसी दीखै जैसे बड़े कुलकी स्त्री विधवा। भावार्थ—विधवा हू पुत्र रूपी पुष्पफलादिरहित हैं अर आभरण तथा सुन्दर वस्त्रादिरहित अर कांतिरहित हैं शोभारहित हैं तैसी वनी दीखै है अर कहूं एक वनविषै सुन्दर माधुरी लता आम्रके वृक्षसे लगी ऐसी सोहै हैं जैसी चपल वेश्या, आम्रसूं लगि अशोककी वांछा करे हैं अर केयक दावानल कर वृक्ष जर गये हैं सो नाहीं सोहै हैं जैसे हृदय क्रोधरूप दावानल कर जग न सोहै अर कहूं एक सुन्दर पल्लवनिके समूह मंद पवनकर हालते सोहै हैं;मानों बसंतराजके आयवेकर वनपंक्ति रूप नारी आनंदसे नृत्यही करे हैं अर कहीं एक भीलनिके समूह तिनके कलकलाट शब्दकर मृग दूर भाग गए हैं अर पक्षी उड़ गये ह अर कहीं एक वनी अल्प है जल जिनमें ऐसी नदी तिनकर कैसी भासै है जैसो संतापकी भरी,विरहिनी नायिका अंसुवन कर भरे नेत्र संयुक्त भासैं अर कहूं एक वनी नाना पक्षिनिके नादकर मनोहर शब्द करे है अर कहूं एक निर्मल नीझरनावोंके नादकर शब्द करतो तीव्रहास्य करे है अर कहूं इक मकरंदमें अति लुब्ध जे भ्रमर तिनके गुञ्जारकर मानों वनी वसन्त नृपकी स्तुति ही करे है अर कहूइक वनी फलनिकर नम्रीभूत भई शोभाको धरे है जैसे सफल पुरुष दातार नम्रीभूत भये सोहे हैं अर कहूं इक वायुकर हालते जे वृक्ष तिनकी शाखा हालै हैं अर पल्लव हाले हैं अर पुष्प पड़े हैं सो मानों पुष्पवृष्टि ही करे हैं। इत्यादि रीतिको

धरे वनी अनेक क्रूर जीवनिकर भरी ताहि देखती सीता चली जाय है राममें है चित्त जाका मधुर शब्द सुनकर विचारती भई मानों रामके दुन्दुभी वाजेही बाजे हैं। या भांति चिंतवती सीता आगे गंगाको देखती भई। कैसी है गंगा ? अति सुन्दर हैं शब्द जाके अर जाके मध्य अनेक जलचर जीव मीन मकर ग्राहादिक विचरै हैं तिनके विचरवेकर उद्धत लहर उठे हैं तातै कम्पायमान भये हैं कमल जाविषै अर मूलसे उपाड़ै हैं तीरके उतंग वृक्ष जाने अर उखाड़े हैं पर्वतनिके पाषाणोके समूह जाने समुद्रकी ओर चली जाय है अति गम्भीर है उज्ज्वल फूलोंकर शोभे है झागोंके समूह उठै हैं अर भ्रमते जे भंवर तिनकर महा भयानक है अर दोनों ढाहावोंपर वैठे पक्षी शब्द करैं है सो परमतेजके धारक रथके तुरंग ता नदी को तिर पार भये, पवन समान है वेग जिनका जैसे साधु संसार-समुद्रके पार होय। नदीके पार जाय सेनापति यद्यपि मेरुसमान अचलचित्त हुआ तथापि दयाके योगकर अतिविषादको प्राप्त भया महा दुःखका भरा कछु कह न सकै आंखनिते आसू निकल आये रथको थांभ ऊंचे स्वरकर रुदन करने लगा ढीला होय गया है अंग जाका, जाती रही है कांति जाकी, तव सीता सती कहती भई—हे कृतान्तवक्र ! तू काहेको महादुखीकी न्याईं रोवै है, आज जिनवन्दनाके उत्सवका दिन तू हर्षमें विषाद क्यों करे है ? या निर्जन वनमें क्यों रोवे है तव वह अति रुदनकर यथावत् वृतांत कहता भया। जो वचन विषसमान अग्नि समान शस्त्र समान है। हे मातः ! दुर्जननिके वचनतैं राम अकीर्तिके भयसे जो न तजा जाय तिहारा स्नेह ताहि तजकर चैत्यालयनिके दर्शनकी तिहारे अभिलाषा उपजी हुती सो तुमको चैत्यालयोंके अर निर्वाण क्षेत्रोंके दर्शन कराय भयानक वनविषै तजी है। हे देवि ! जैसे यति रागपरणतिको तजे तैसे रामने तुमको तजी है, अर लक्ष्मणने जो कहिवेकी हद थी सो कही, कछू कमी न राखी तिहारे अर्थ अनेक न्यायके वचन कहे, परन्तु रामने हठ न छोड़ी। हे स्वामिनि ! राम तुमसे नीराग भये अब तुमको धर्महीं शरण है सो या संसारविषै न माता, न पिता, न भ्राता, न कुटुम्ब एक धर्म ही जीवका सहाई है। अब तुमको यह मृगोंका भरा वन ही आश्रय है। ये वचन सीता सुनकर वज्रपातकी मारी कैसी होय गई। हृदयविषै दुःखके भार-

कर मूर्छाको प्राप्त भई बहुरि सचेत होय गद २ वाणीसे कहती भई—शीघ्रही मोहि प्राणनाथसे मिला। तब वाने कही—हे मातः! नगरी दूर रहो अर रामका दर्शन दूर। तब अश्रुपातरूप जलकी धारासे मुख-कमल प्रचालती हुई कहती भई कि— हे सेनापति! तू मेरे वचन रामसूं कहियो कि मेरे त्यागका विषाद आप न करणा, परम धीर्यको अवलंबनकर सदा प्रजाकी रक्षा करियो, जैसे पिता पुत्रकी रक्षा करे, आप महा न्यायवन्त हो अर समस्त कलाके पारगामी हो, राजाको प्रजा ही आनन्दका कारण है राजा वही जाहि प्रजा शरदकी पूनोंके चन्द्रमाकी न्याईं चाहे। अर यह संसार असार है महाभयंकर दुःखरूप है जा सम्यक्दर्शन कर भव्यजीव संसारसे मुक्त होवे हैं सो तिहारे आराधिवे योग्य है, तुम राजा तैं सम्यक्दर्शनको विशेष भला जानियो। यह राज्य तो अविनाशी सुखका दाता है सो अभव्य जीव निन्दा करें तो उनकी निन्दाके भयसे हे पुरुषोत्तम! सम्यक् दर्शनको कदाचित् न तजना यह अत्यन्त दुर्लभ है जैसे हाथमें आया रत्न समुद्रविषै डालिये तो बहुरि कौन उपायसे हाथ आवे। अर अमृत फल अंधकूपमें डारा बहुरि कैसे मिले जैसे अमृतफलको डाल बालक पश्चात्ताप करे तैसे सम्यक्दर्शनसे रहित हुवा जीव विषाद करे है यह जगत दुर्निवार है जगतका मुख बन्द करवेको कौन समर्थ जाके मुखमें जो आवे सो ही कहै तातैं जगतकी बात सुनकर जो योग्य होय सो करियो लोक गडलिका प्रवाह हैं सो अपने हृदयमें हे गुणभूषण! अलौकिक वार्ता न धरणी अर दानसे प्रीतिके योगकर जनोंको प्रसन्न राखना अर विमल स्वभावकर मित्रोंको वश करना अर साधु तथा आर्यिका आहारको आवें तिनको प्रासुक अन्नसे अतिभक्ति कर निरन्तर आहार देना अर चतुर्विध संघकी सेवा करनी, मन वचन कायकर मुनिको प्रणाम पूजन अर्चनादिकर शुभ कर्म उपार्जन करना अर क्रोधको क्षमाकर मानको निगर्वताकर मायाको निष्कपटता कर लोभको सन्तोष कर जीतना आप सर्व शास्त्रविषै प्रवीण हो सो हम तुमको उपदेश देनेको समर्थ नाहीं क्योंकि हम स्त्रीजन हैं आपकी कृपाके योगसे कभी कोई परिहास्यकर अविनय भरा वचन कहा हो तो क्षमा करियो ऐसा कहकर रथसे उतरी अर तृण पाषाणकर भरी जो पृथ्वी उसमें अचेत होय मूर्च्छा खाय

पड़ी सो जानकी भूमिमें पड़ी ऐसी सोहती भई मानों रत्नोंकी राशिही पड़ी है कृतांतवक्र सीताको चेष्टा-रहित मूर्छित देख महादुखी भया अर चित्तमें चिंतवता भया हाय यह महा भयानक वन अनेक दुष्ट जीवोंकर भरा जहां जे महाधीर शूरवीर होंय तिनके भी जीवनेकी आशा नहीं तो यह कैसे जीवेगी ? इसके प्राण बचने कठिन हैं इस महासती माताको मैं अकेली वनमें तजकर जाऊं हूं सो मुझ समान निर्दई कौन, मुझे किसी प्रकार भी किसी ठौर शांति नहीं एक तरफ स्वामीकी आज्ञा अर एक तरफ ऐसी निर्दयता मैं पापी दुःखके भंवरविषै पड़ा हूं धिक्कार पराई सेवाको जगतविष निन्द्य पराधीनता तजो स्वामी कहे सो ही करना जैसे यंत्रको यंत्री बजावै त्योंही बाजै सो पराया सेवक यन्त्र तुल्य है अर चाकरसे कूकर भला जो स्वाधीन आजीविका पूर्ण करे है जैसे पिशाचके वश पुरुष ज्यों वह बकावे त्यों बकै तैसे नरेन्द्रके वश नर वह जो आज्ञा करै सो करै चाकर क्या न करै अर क्या न कहै अर जैसे चित्रामका धनुष निष्प्रयोजन गुण कहिये पिणचको धरे है सदा नम्रीभूत है तैसे परकिंकर निःप्रयोजन गुणको धरे है सदा नम्रीभूत है धिक्कार किंकरका जीवना, पराई सेवा करनी तेजरहित होना है जैसे निर्माल्य वस्तु निंद्य है तैसे परकिंकरता निंद्य है धिग् २ पराधीनके प्राण धारणको यह पराधीन पराया किंकर टीकली समान है जैसे टीकली परतंत्र होय कूपका जीव कहिए जल हरे है तैसे यह परतंत्र होय पराए प्राण हरे है कभी भी चाकरका जन्म मत होवे पराया चाकर काठकी पूतली समान है ज्यों स्वामी नचावे त्यों नाचै उच्चता उज्वलता लज्जा अर कांति तिनसे परकिंकर रहित है जैसे विमान पराये आधीन है चलाया चाले थमाया थमे ऊंचा चलावे तो ऊंचा चढ़े नीचा उतारे तो नीचा उतरे धिक्कार पराधीनके जीतव्यको जो निर्मल अपने मांसको वेचन हारा महालघु अपने अधीन नहीं सदा परतंत्र धिक्कार किंकरके प्राण धारणको मैं पराई चाकरी करी अर परवश भया तो ऐसे पापकर्मको करूं हूं, जो इस निर्दोष महासतीको अकेली भयानक वनमें तजकर जाऊं हूं । हे श्रेणिक ! जैसे कोई धर्मकी बुद्धिको तजे तैसे वह सीताको वनविषै तजकर अयोध्याको सन्मुख भया अतिलज्जावान् होयकर चला सीता याके गये पाछे केतीक वारमें मूर्छासे सचेत

गज तिनकर विकराल यह वन ता विषै यह चन्द्रकला समान महामनोग्य कौन रोवे है ? यह कोई देवांगना सौधर्म स्वर्गसे पृथिवीविषै आई है। यह विचारकर सेनाके लोक आश्चर्यको प्राप्त होय खड़े रहे अर वह सेना समुद्र समान जिसमें तुरंग ही मगर अर पयादे मीन अर हाथी ग्राह हैं समुद्र भी गाजे अर सेना भी गाजे है अर समुद्रमें लहर उठे हैं सेनामें सूर्यकी किरणकर शस्त्रोंकी जोति उठै है समुद्र भी भयङ्कर है सेना भी भयंकर है सो सकल सेना निश्चल होय रही ॥

श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषा वचनिकाविषै सीताका वनविषै विलाप अर वज्रजंघका आगमन वर्णन करनेवालो सत्तानवेवां पर्व पूर्ण भया ॥ ९७ ॥

—जैसी महाविद्याकी थांभी गंगा थंभी रहे तैसे सेनाको थंभी देख राजा वज्रजंघ निकटपुरुषोंको पूछता भया कि सेनाके थंभनेका कारण क्या है तब वह निश्चयकर राजपुत्रीके समाचार कहते पहिले राजाने भी रुदनके शब्द सुने, सुनकर कहता भया जिसका यह मनोहर रुदनका शब्द कहो कौन है तब कई एक अग्रसर होय जाकर पूंछते भये—हे देवि ! तू कौन है अर क्यों रुदन करे है ता समान कोऊ और नाहीं तू देवी है अक नागकुमारी है अक कोई कल्याण रूपिणी उत्तम शरीरकी धरणहारी तोहि यह शोक कहां हमको यह बड़ा आश्चर्य है। शस्त्रधारक पुरुषोंको देख प्राप्त भई कांपे है शरीर जाका सो भयकर उनको अपने आभूषण देने लगी तब वे स्वामीके भयकर यह कहते भये—हे देवि ! तू क्यों डरे है शोकको तज, ये आभूषण हमको काहेको देवे है तेरे ये आभूषण तेरे ही रहो ये तोहि योग्य हैं हे माता ! तू विह्वल क्यों होय है विश्वास गह यह राजा वज्रजंघ पृथिवीविषै प्रसिद्ध महा नरोत्तम राजनीतिकर युक्त सम्यग्दर्शनरूप रत्न भूषणकर शोभित है। कैसा है सम्यग्दर्शन जिस समान और रत्न नाहीं अविमोलिक है काहूसे हरा न जाय महा सुखका दायक शंकादिक मल रहित सुमेरु सारिखा नि-

हिंसादिक पाप किये, अर परोपकारविषै अन्तराय किए, हिंसादिक पाप किये, गुरु-
निन्दा करी, अथवा पूजा दानमें विघ्न किया, अर परोपकारविषै अन्तराय किए तिनके यह फल हैं अनछाना पानी पिया रात्रिको भोजन
मदाह, वनदाह स्त्री बालक पशुहत्यादि पाप किए तिनके यह फल हैं अनछाना पानी पिया रात्रिको भोजन
किया, बीधा अन्न भषा, अभक्ष्य वस्तुका भक्षण किया, न करिबे योग्य काम किए, तिनका यह फल है,
बलभद्रकी पटराणी स्वर्ग समान महलकी निवासिनी हजारां सहेली मेरी सेवाकी करनहारी सो अब पापके
उदयकर निर्जन वनविषै दुःखके सागरविषै डूबी कैसे तिष्ठूं ? रत्ननिके मंदिर विषै महा रमणीक वस्त्र तिन-
कर शोभित सुन्दर सेजपर शयन करणहारी मैं कहां पड़ी हूं सब सामग्रीकर पूर्ण महा रमणीक महलविषै
रहणहारी मैं अब कैसी अकेली वनका निवास करूंगी ? महा मनोहर बीणा बांसुरी मृदंगादिके मधुर स्वर
तिनकर सुख निद्राकी लेनहारी मैं कैसे भयंकर शब्द कर भयानक वन विषै अकेली तिष्ठूंगी, रामदेवकी
पटराणी अपयशरूपी दावानल कर जरी महा दुःखिनी एकाकिनी पापिना कष्टका कारण जो यह वन जहां
अनेक जातिके कीट अर करकस डाभकी अणी अर कांकरनिसे भरी पृथिवी यामें कैसे शयन करूंगी ऐसी
अवस्था भी पायकर मेरे प्राण न जायं तो ये प्राण ही वज्रके हैं अहो ऐसी अवस्था पायकर मेरे हृदयके सौ
टूक न होय हैं सो यह वज्रका हृदय है कहा करूं कहां जाऊं कौनसे कहा कहूं कौनके आश्रय तिष्ठूं
हाय गुणसमुद्र राम ! मोहि क्यों तजी, हे महाभक्त लक्ष्मण मेरी क्यों न सहाय करी। हाय पिता जनक
हाय माता विदेही यह कहा भया ? अहो विद्याधरनिके स्वामी भामण्डल ! मैं दुःखके भंवरमें पड़ी कैसे तिष्ठूं
मैं ऐसी पापिनी जो मोसहित पतिने परम संपदाकर जिनेन्द्रका दर्शन अर्चन चिन्तया था सो मोहि इस
वनीमें डारी। हे श्रेणिक ! या भांति सीता सती विलाप करै है अर राजा वज्रजंघ पुण्डरीकपुरका स्वामी
हाथी पकड़वे निमित्त वनमें आया था सो हाथी पकड़ बड़ी विभूतिसे पीछे जाय था सो ताकी सेनाके प्यादे
शूर वीर कटारी आदि नानाप्रकारके शस्त्र धरे कमर बांधे जाय निकसे सो याके रुदनके मनोहर शब्द सुन-
कर संशयको अर भयको प्राप्त भये पैंड भी न जाय सके, अर तुरंगनिके सवार हू ताका रुदन सुन खड़े
होय रहे उनको यह आशंका उपजी जो या वनविषै अनेक दुष्ट जीव तहां यह सुन्दर स्त्रीके रुदनका नाद

.. रीक्ष सांप रीछ ल्याली वघेरा आरणे भैंसे चीता गैंड़ा शार्दूल अष्टापद वन शूकर कराल यह वन ता विषै यह चन्द्रकला समान महामनोग्य कौन रोवे है ? यह कोई देवां- गना स्वर्गसे पृथिवीविषै आई है। यह विचारकर सेनाके लोक आश्चर्यको प्राप्त होय खड़े रहे अर सेना समुद्र समान जिसमें तुरंग ही मगर अर पयादे मीन अर हाथी ग्राह हैं समुद्र भी गाजे अर सेना भी गाजे है अर समुद्रमें लहर उठे हैं सेनामें सूर्यकी किरणकर शस्त्रोंकी जोति उठै है समुद्र भी भयङ्कर है सेना भी भयंकर है सो सकल सेना निश्चल होय रही ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषा वचनिकाविषै सीताका वनविषै विलाप अर वज्रजंघका आगमन वर्णन करनेवाला सत्तानवेवा पर्व पूर्ण भया ॥ ९७ ॥

अथानन्तर—जैसी महाविद्याकी थांभी गंगा थंभी रहे तैसे सेनाको थंभी देख राजा वज्रजंघ निकट- वर्ती पुरुषोंको पूछता भया कि सेनाके थंभनेका कारण क्या है तब वह निश्चयकर राजपुत्रीके समाचार कहते भये उससे पहिले राजाने भी रुदनके शब्द सुने, सुनकर कहता भया जिसका यह मनोहर रुदनका शब्द सुनिये है सो कहो कौन है तब कई एक अग्रसर होय जाकर पूंछते भये—हे देवि ! तू कौन है अर इस निर्जन वनविषै क्यों रुदन करे है त । समान कोऊ और नाहीं तू देवी है अक नागकुमारी है अक कोई उत्तम नारी है तू महा कल्याण रूपिणी उत्तम शरीरकी धरणहारी तोहि यह शोक कहां हमको यह बड़ा कौतुक है। तब यह शस्त्रधारक पुरुषोंको देख प्राप्त भई कांपे है शरीर जाका सो भयकर उनको अपने आभरण उतारकर देने लगी तब वे स्वामीके भयकर यह कहते भये—हे देवि ! तू क्यों डरै है शोकको तज धीरता भज आभूषण हमको काहेको देवे है तेरे ये आभूषण तेरे ही रहो ये तोहि योग्य हैं हे माता। तू विह्वल क्यों होय है विश्वास गह यह राजा वज्रजंघ पृथिवीविषै प्रसिद्ध महा नरोत्तम राजनीतिकर युक्त है अर सम्यक्दर्शनरूप रत्न भूषणकर शोभित है। कैसा है सम्यग्दर्शन जिस समान और रत्न नाहीं अवि- नाशी है अमोलिक है काहूसे हरा न जाय महा सुखका दायक शंकादिक मल रहित सुमेरु सारिखा नि-

श्चल है हे माता ! जाके सम्यग्दर्शन होवे उसके गुण हम कहां लग वर्णन करें यह राजा जिनमार्गके रहस्यका ज्ञाता शरणागतप्रतिपालक है परोपकारमें प्रवीण महा दयावान महा निर्मल पवित्रात्मा निंद्यकर्मसे निवृत्त लोकोंका पिता समान रक्षक, महा दातार जीवोंकी रक्षाविषे सावधान दीन अनाथ दुर्बल देह धारियोंको माता समान पाले है सिद्ध कार्यका करणहारा शत्रुरूप पर्वतनिको वज्रसमान है शास्त्र विद्याका अभ्यासी परधनका त्यागी परस्त्रीको माता बहिन बेटी समान माने है अन्याय मार्गको अजगरसहित अन्धकूप समान जाने है, धर्मविषै तत्पर अनुरागी संसारके भ्रमणसे भयभीत सत्यवादी जितेंद्रिय है याके समस्त गुण जो मुखसे कहा चाहे सो भुजानिकर समुद्रको तिरा चाहे है। ये बात वज्रजंघके सेवक कहे हैं, इतनेविषे ही राजा आप आया, हाथीसे उतर बहुत विनयकर सहज ही है शुद्ध दृष्टि जाकी सो सीतातैं कहता भया—हे बहिन। वह वज्रसमान कठोर महा असमझ है जो तोहि ऐसे वनमें तजे अर तोहि तजते जाका हृदय न फट जाय। हे पुण्यरूपिणी ! अपनी अवस्थाका कारण कह, विश्वासको भज, भय मत करै अर गर्भका खेद मत करै। तब यह शोककर पीड़ितचित्त बहुरि रुदन करती भई। राजाने बहुत धीर्य बंधाया तब यह हंसकी न्याईं आंसू डार गद्गद वाणीतैं कहती भई—हे राजन् ! मो मंदभागिनीकी कथा अत्यन्त दीर्घ है यदि तुम सुना चाहो हो तो चित्त लगाय सुनो, मैं राजा जनककी पुत्री भामण्डलकी बहिन राजा दशरथके पुत्रकी वधू सीता मेरा नाम रामकी राणी राजा दशरथने केकईको वरदान दिया हुता सो भरतको राज्य देकर राजा तो गी भये अर राम लक्ष्मण वनको गए सो मैं पतिके संग वनमें रही, रावण कपटसे मोहि हर ले गया, ग्यारवें दिन मैंने पतिकी वार्ता सुन भोजन किया पति सुग्रीवके घर रहे बहुरि अनेक विद्याधरनिको एकत्रकर आकाशके मार्ग होय समुद्रको उलंघ लंका गये, रावणको युद्धमें जीत मोहि ल्याये बहुरि राजरूप कीचको तज भरत तो वैरागी भये। कैसे हैं भरत ? जैसे ऋषभदेवके भरत चक्रवर्ती तिन समान है उपमा जिनकी, भरत तो कर्म कलंकरहित परमधामको प्राप्त भये अर केकई शोकरूप अग्निकर आतापको प्राप्त भई बहुरि रागका मार्ग सार जानकर आर्यिका होय महा तपसे स्त्रीलिंग छेद स्वर्गविषे देव भई मनुष्य होय मोक्ष

पावेगी। राम लक्ष्मण अयोध्याविषै इन्द्रसमान राज्य करें सो लोक दुष्टचित्त निश्शंक होय अपवाद करते भये कि रावण हरकर सीताको ले गया बहुरि राम ल्याय घरमें राखी सो राम महा विवेकी धर्मशास्त्रके वेत्ता न्यायवंत ऐसी रीति क्यों आचरें जिस रीति राजा प्रवर्तें उसी रीति प्रजा प्रवरते सो लोक मर्यादारहित होने लगे, कहें-रामहीके घर यह रीति तो हमको कहा दोष? अर में गर्भसहित दुवल शरीर यह चिंतवन करती हुती कि जिनेंद्रके चैत्यालयोंकी अर्चना करूंगी अर भरतार भी मुझसहित जिनेंद्रके निर्वाण स्थानक अर अतिशय स्थानक तिनको बन्दना करनेको भावसहित उद्यमी भये हुते अर मोहि ऐसे कहते थे कि प्रथम तो हम कैलाश जाय श्रीऋषभदेवका निर्वाण क्षेत्र वन्दैंगे बहुरि और निर्वाण क्षेत्रनिको वन्दकर अयोध्याविषै ऋषभ आदि तीर्थंकर देवनिका जन्मकल्याणक है सो अयोध्याकी यात्रा करेंगे जेते भगवानके चैत्यालय हैं तिनका दर्शन करेंगे, कम्पिल्या नगरीविषै विमलनाथका दर्शन करेंगे अर रत्नपुरमें धर्मनाथका दर्शन करेंगे। कैसे हैं धर्मनाथ? धर्मका स्वरूप जीवनिको यथार्थ उपदेशे हैं बहुरि श्रावस्ती नगरी सम्भवनाथका दर्शन करेंगे अर चम्पापुरमें वासुपूज्यका अर काकंदीमें पुष्पदन्तका, चंद्रपुराविषै चंद्रप्रभका, कौशाम्बीपुरीमें पद्मप्रभका भद्रलपुरमें शीतलनाथका अर मिथिलापुरीमें मल्लिनाथस्वामीका दर्शन करेंगे अर वाणारसीमें सुपार्श्वनाथ स्वामीका दर्शन करेंगे अर सिंहपुरमें श्रेयांसनाथका अर हस्तनागपुरमें शांति कुंथु अरहनाथका पूजन करेंगे अर हे देवि! कुशाग्रनगरमें श्रीमुनिसुव्रतनाथका दर्शन करेंगे जिनका धर्मचक्र अब प्रवर्ते है अर औरहू जे भगवानके अतिशय स्थानक महापवित्र हैं पृथिवीमें प्रसिद्ध हैं तहां पूजा करेंगे, भगवानके चैत्य अर चैत्यालय सुर असुर अर गंधर्वनिकर स्तुति करवे योग्य हैं नमस्कार योग्य हैं तिन सबनिकी वंदना हम करेंगे, अर पुष्पक विमानविषै चढ़ सुमेरुके शिखरपर जे चैत्यालय हैं तिनका दर्शनकर भद्रशाल वन नंदन वन सौमनस वन तहां जिनेंद्रकी अर्चाकर अर कृत्रिम अकृत्रिम अढ़ाई द्वीपविषै जेते चैत्यालय हैं तिनकी वंदनाकर हम अयोध्या आवेंगे।

हे प्रिये! भावसहित एकवारहू नमस्कार श्री अरहंतदेवको करें तो अनेक जन्मनिके पापनिसे छूटे

हैं, हे कांते। धन्य तेरा भाग्य, जो गर्भके प्रादुर्भावविषैं तेरे जिन वन्दनाकी वांछा उपजी, मेरेहू मनमें यही है तो सहित महापवित्र जिनमंदिरनिका दर्शन करूं। हे प्रिये ! पहिले भोगभूमिविषै धर्मकी प्रवृत्ति न हुती लोक असमझ थे सो भगवान ऋषभदेवने भव्योंको मोक्ष मार्गका उपदेश दिया जिनको संसारभ्रमणका भय होय तिनको भव्य कहिये, कैसे हैं भगवान् ऋषभ ? प्रजाके पति जगतविषै श्रेष्ठ त्रैलोक्य कर वन्दवे योग्य नानाप्रकार अतिशय कर संयुक्त सुर नर असुरनिके आश्चर्यकारी ते भगवान भव्योंको जीवादिक तत्वोंका उपदेश देय अनेकोंको तारि निर्वाण पधारे सम्यक्तादि अष्ट गुणमंडित सिद्ध भए जिनका चैत्यालय सर्व रत्नमई भरत चक्रवर्तीने कैलाशपर कराया अर पांचसै धनुषकी रत्नमई प्रतिमा सूर्य्यहूतें अधिक तेजको धरे मंदिरविषै पधराई सो विराजै है जाको अबहू देव विद्याधर गन्धर्व किन्नर नाग दैत्य पूजा करे हैं जहां अप्सरा नृत्य करे हैं जो प्रभु स्वयंभू सर्वगति निर्मल त्रैलोक्यपूज्य जाका अन्त नाहीं अनन्तरूप अनंत ज्ञान विराजमान परमात्मा सिद्ध शिव आदिनाथ ऋषभ तिनकी कैलाश पर्वतपर हम चलकर पूजाकर स्तुति करेंगे ? वह दिन कब होयगा, या भांति मोसे कृपाकर वार्ता करते थे अर ताही समय नगरके लोक भेले होय आय लोकापवादकी दावानलसे दुस्सह वार्ता रामसे कही सो राम बड़े विचारके कर्ता चित्तमें यह चिताई यह लोक स्वभाव ही कर वक्र हैं सो और भांति अपवाद न मिटे या लोकापवादसे प्रियजनको तजना भला अथवा मरणा भला, लोकापवादतैं यशका नाश होय कल्पान्त काल पर्यन्त अपयश जगतमें रहै सो भला नाहीं ऐसा विचार महाप्रवीण मेरा पति ताने लोकापवादके भयतैं मोहि महा अरण्यवनमें तजा मैं दोष-रहित सो पति नीके जाने अर लक्ष्मणने बहुत कहा सो न माना, मेरे ऐसा ही कर्मका उदय जे विशुद्ध कुलमें उपजे क्षत्री शुभचित्त सर्व शास्त्रनिके ज्ञाता तिनकी यही रीति है अर काहूसे न डरें एक लोकापवादसे डरें। यह अपने निकासनेका वृत्तांत कह बहुरि रुदन करने लगी शोकरूप अग्निकर तप्तायमान है चित्त जाका। सो याको रुदन करती अर रजकर धूसरा है अंगजाका महा दीन दुखी देख राजा वज्रजंघ उत्तम धर्मका धरणहारा अति उद्वेगको प्राप्त भया अर याको जनककी पुत्री जान समीप आय बहुत

आदरसे धीर्य बंधाया, अर कहता भया हे शुभमते ! तू जिनशासनमें प्रवीण है शोक कर रुदन मत करै, यह आर्तध्यान दुःखका वढ़ावनहारा है, हे जानकी ! या लोककी स्थिति तू जाने है तू महा सुज्ञान अनित्य अशरण एकत्व अन्यत्व इत्यादि द्वादश अनुप्रेक्षा की चिंतवन करणहारी तेरा पति सम्यक् दृष्टि अर तू सम्यक्त्वसहित विवेकवन्ती है मिथ्या दृष्टि जीवनिकी न्याईं कहा वारम्बार शोक करै, तू जिनवाणीकी श्रोता अनेक वार महा मुनिनके मुख श्रुतिके अर्थ सुने निरन्तर ज्ञान भावनाको धरणहारी तोहि शोक उचित नाहीं, अहो या संसारमें भ्रमता यह मूढ़ प्राणी वाने मोक्षमार्गको न जाना, यातें कहा कहा दुःख न पाये याको अनिष्टसंयोग इष्टवियोग अनेक वार भये यह अनादिकालसे भवसागरके मध्य क्लेश रूप भवरमें पड़ा है, या जीवने तिर्यंच योनिविषै जलचर नभचरके शरीर धर वर्षा शीत आताप आदि अनेक दुःख पाये अर मनुष्य देह विषै अपवाद विरह रुदन क्लेशादि अनेक दुःख भोगे अर नरकविषै शीत उष्ण छेदन भेदन शूलारोहण परस्पर घात महा दुर्गन्ध क्षीरकुण्डविषै निपात अनेक रोग अनेक दुःख लहे अर कवहूं अज्ञान तपकर अल्प ऋद्धिका धारक देवहू भया तहांहू उत्कृष्ट ऋद्धिके धारक देवनिको देख दुखी भया, अर मरणसमान महा दुखी होय विलापकर मूवा अर कवहूं महा तपकर इन्द्रतुल्य उत्कृष्ट देव भया तोहू विषयानुरागकर दुखी ही भया। या भांति चतुर्गतिविषै भ्रमण करते या जीवने भववनविषै आधि व्याधि संयोग वियोग रोग शोक जन्ममृत्यु दुःख दाह दरिद्रहीनता नाना प्रकारकी वांछा विकल्पता कर शोच संताप रूप होय अनंत दुःख पाये, अधोलोक मध्य लोक ऊर्ध्व लोक विषै ऐसा स्थानक नाहीं जहां या जीवने जन्म मरण न किये, अपने कर्म रूप पवनके प्रसंगकर भवसागर विषै भ्रमण करता जो यह जीव ताने मनुष्य देहविषै स्त्रीका शरीर पाया तहां अनेक दुःख भोगे, तेरे शुभ कर्मके उदयकर राम सारिखे सुन्दर पति भये, जिनके सदा शुभका उपार्जन सो पुण्यके उदय कर पति सहित महा सुख भोगे अर अशुभके उदयतैं दुस्सह दुःखको प्राप्त भई, लंकाद्वीपविषै रावण हर कर ले गया तहां पतिकी वार्ता न सुन ग्यारह दिनतक भोजन विना रही अर जवतक पतिका दर्शन न भया तवतक आभूषण सुगन्ध लेपनादि-

अथानन्तर—वज्रजङ्घने सीताके चढ़वेको क्षणमात्रविषै अद्भुत पालकी मंगाई सो सीता तापर आरूढ़ भई पालकी विमानसमान महा मनोज्ञ समीचीन प्रमाणकर युक्त सुन्दर हैं थंभ जाके श्रेष्ठ दर्पण थंभोंविषै जड़े हैं अर मोतिनिकी झालरी कर पालकी मण्डित है अर चन्द्रमा समान उज्ज्वल चमर तिनकर शोभित है मोतिनके हार जलके बुदबुदे समान शोभे हैं विचित्र जे वस्त्र तिनकर मण्डित है चित्राम कर शोभित है सुन्दर हैं झरोखा जामें ऐसी सुखपालपर चढ़ परम ऋद्धिकर युक्त बड़ी सेना मध्य सीता चली जाय है, आश्चर्यको प्राप्त भई कर्मोंकी विचित्रताको चिन्तवे है तीन दिन विषै भयंकर वनको उलङ्घ पुण्डरीकपुरके देशमें आई, उत्तम है चेष्टा जाकी, सब देशके लोक माताको आय मिले ग्राम ग्राममें भेंट करें। कैसा है वज्रजंघका देश? समस्त जातिके अन्नकर जहां समस्त पृथिवी आच्छादित होय रही है अर कूकडाउडान नजदीक हैं ग्राम जहां, रत्ननिकी खान स्वर्ण रूपादिककी खान सुरपुर जैसे पुर सो देखती थकी सीता हर्षको प्राप्त भई वन उपवनकी शोभा देखती चली जाय है, ग्रामके महंत भेंटकर नाना प्रकार स्तुति करे हैं। हे भगवति! हे माता! आपके दर्शन कर हम पापरहित भए कृतार्थ भए अर बारम्बार वन्दना करते भये अर्घपाद्य किये अर अनेक राजा देवनि समान आय मिले सो नाना प्रकार भेंट करते भए अर बारम्बार वन्दना करते भए। या भांति सीता सती पैंड़ पैंड़पर राजा प्रजानिकर पूजी सन्ती चली जाय है वज्रजंघका देश अति सुखी ठौर ठौर वन उपवनादिकर शोभित ठौर ठौर चैत्यालय देख अतिहर्षित भई मनविषैं विचारे है जहां राजा धर्मात्मा होय वहां प्रजा सुखी होय ही। अनुक्रम कर पुण्डरीकपुरके समीप आए सो राजाकी आज्ञातैं सीताका आगमन सुन नगरके सब लोक सन्मुख आए अर भेंट करते भए, नगरकी अति शोभा करी, सुगन्ध कर पृथिवी छांटी, गली बाजार सब सिङ्गारे अर इन्द्रधनुष समान तोरण चढ़ाए अर द्वारनिविषै पूर्ण कलश थापे, जिनके मुख सुन्दरपल्लवयुक्त हैं अर मन्दिरनिपर ध्वजा चढ़ी अर घर घर मंगल गावे हैं मानों वह नगर आनन्द कर नृत्य ही करे है नगरके दरवाजे पर तथा कोटके कंगूरनिपर लोक खड़े देखे हैं हर्षकी वृद्धि होय रही है नगरके बाहिर अर भीतर राजद्वारतक सीताके दर्शनको

लोक खड़े हैं, चलायमान जे लोकनिके समूह तिनकर नगर यद्यपि स्थावर है तथापि जानिए जंगम होय रहा है। नाना प्रकारके वादित्र वाजे हैं तिनके नादकर दशोंदिशा शब्दायमान होय रही हैं शंख वाजे हैं वन्दीजन विरद वखाने हैं समस्त नगरके लोक आश्चर्यको प्राप्त भए देखे हैं अर सीताने नगरविषै प्रवेश किया जैसे लक्ष्मी देवलोकविषै प्रवेश करै वज्रजङ्घके मन्दिरविषै अति सुन्दर जिनमन्दिर हैं, सर्व राजलोककी स्त्रीजन सीताके सन्मुख आई, सीता पालकीसे उतर जिनमन्दिरमें गई। कैसा है जिनमन्दिर? महा सुन्दर उपवन कर वेष्टित है अर वापिका सरोवरी तिनकर शोभित है, सुमेरु शिखर समान सुन्दर स्वर्णमई है जैसे भाई भामण्डल सीताका सन्मान करै तैसे वज्रजङ्घ आदर करता भया, वज्रजङ्घके समस्त परिवारके लोक अर राजलोककी समस्त राणी सीताकी सेवा करैं अर ऐसे मनोहर शब्द निरन्तर कहे हैं हे देवते! हे पूज्ये! हे स्वामिनी! हे ईशानने! सदा जयवन्त हो वहुत दिन जीवो आनन्दको प्राप्त होवो, वृद्धिको प्राप्त होवो आज्ञा करो। या भांति स्तुति करें अर जो आज्ञा करे सो सीस चढ़ावें अति हर्षसे दौरकर सेवा करें अर हाथ जोड़ सीस नवाय नमस्कार करैं वहां सीता अति आनन्दतें जिनधर्मकी कथा करती तिष्ठे अर जो सामंतनिकी भेंट आवे अर राजा भेंट करे सो जानकी धर्म कार्यमें लगावे यह तो यहां धर्मकी अराधना करे है।

अर वह कृतांतवक्र सेनापति तप्तायमान है चित्त जाका रथके तुरङ्ग खेदको प्राप्त भए हुते तिनको खेदरहित करता हुवा श्रीरामचन्द्रके समीप आया याको आवता सुन अनेक राजा सन्मुख आए सो कृतांतवक्र आयकर श्रीरामचन्द्रके चरणनिको नमस्कार कर कहता भया—हे प्रभो! मैं आज्ञा प्रमाण सीताको भयानक वनविषै मेलकर आया हूं वाके गर्भमात्रही सहाई है। हे देव। वह वन नाना प्रकारके भयङ्कर जीवनिके अति घोर शब्दकर महा भयकारी है अर जैसा वैताल कहिए प्रेतनिका वन ताका आकार देखा न जाय तैसे सघन वृक्षनिके समूह कर अंधकार रूप है, जहां स्वतः स्वभाव आरणे भैंसे अर सिंह द्वेषकर सदा युद्ध करै हैं अर जहां घूघू वसै हैं सो विरूप शब्द करैं हैं अर गुफानिमें सिंह गुञ्जार करे हैं सो गुफा ग-

गुंजार रहा हैं अर महाभयंकर अजगर शब्द करे हैं अर चितानिकर हते गये हैं मृग जहां कालको भी विकराल ऐसा वह वन ता विषै हे प्रभो ! सीता अश्रुपात करती महादीनवदन आपको जो शब्द कहती भई सो सुनो, आप आत्मकल्याण चाहो हो तो जैसे मोहि तजी तैसे जिनेंद्रको भक्ति न तजनी जैसे लोकनिके अपवादकर मोसे अति अनुराग हुता तोहू तजी तैसे काहूके कहवेतैं जिनशासनकी श्रद्धा न तजनी। लोक विना विचारे निर्दोषनिको दोष लगावे हैं जैसे मोहि लगाया सो आप न्याय करो सो अपनी बुद्धिसे विचार यथार्थ करना काहूके कहेतैं काहूको झूठा दोष न लगावना अर सम्यक्दर्शनतैं विमुख मिथ्यादृष्टि जिनधर्मरूप रत्नका अपवाद करे हैं सो उनके अपवादके भयतै सम्यक्दर्शनकी शुद्धता न तजनी वीतरागका मार्ग उरविषै दृढ़ धारणा, मेरे तजनेका या भवविषै किंचित् मात्र दुःख है अर सम्यक्दर्शनकी हानितैं जन्म २ विषै दुःख है या जीवको लोकविषै निधि रत्न स्त्री वाहन राज्य सबही सुलभ हैं एक सम्यक्दर्शन रत्नही महादुर्लभ है। राजविषै पापकर नरकविषै पड़ना है, एक ऊर्ध्वगमन सम्यक्दर्शनके प्रतापहीसे होय। जाने अपनी आत्मा सम्यक्दर्शनरूप आभूषणकर मंडित किया सो कृतार्थ भया। ये शब्द जानकीने कहे हैं जिनको सुनकर कौनके धर्मबुद्धि न उपजै—हे देव ! एक तो वह सीता स्वभावहीकर कायर अर महा भयंकर वनके दुष्ट जीवनितैं कैसे जीवेगी ? जहां महा भयानक सर्पनिके समूह अर अल्पजल ऐसे सरोवर तिनविषै माते हाथी कर्दम करै हैं अर जहां मृगनिके समूह मृगतृष्णाविषै जल जान वृथा दौड़ व्याकुल होय हैं, जैसे संसारकी मायाविषै रागकर रागी जीव दुखी होय अर जहां कौंछिकी रजके संगकर मर्कट अति चंचल होय रहे हैं अर जहां तृष्णासे सिंह व्याघ्र ल्यालियोंके समूह तिनकी रसनारूप पल्लव लहलहाट करै हैं अर चिरम समान लालनेत्र जिनके ऐसे क्रोधायमान भुजङ्ग फुङ्कार करै हैं अर जहां तीव्र पवनके संचारकर क्षणमात्रविषै वृक्षनिके पत्रोंके ढेर होय हैं अर महा अजगर तिनकी विषरूप अग्निकर अनेक वृक्ष भस्म होय गये हैं अर माते हाथिनिकी महा भयंकर गर्जना ताकर वह वन अति विकराल है अर वनके शूकरनिकी सेनाकर सरोवर मलिन जल होय रहे हैं, अर जहां ठौर ठौर भूमिविषै कांटे अर

सांठे अर सांपोंकी बमी अर कंकर पत्थर तिनकर भूमि महा संकटरूप है अर डाभकी अणी सूई तैंहू अति पैनी हैं अर सूके पान फूल पवनकर उडे उडे फिरे हैं ऐसे महाअरण्यविषै, हे देव ! जानकी कैसे जीवेगी, मैं ऐसा जानूं हूं क्षणमात्रहू वह प्राण राखिवेको समर्थ नाहीं ।

हे श्रेणिक ! सेनापतिके यह वचन सुन श्रीराम अतिविषादको प्राप्त भए, कैसे हैं वचन ? जिनकर निर्दईका भी मन द्रवीभून होय, श्रीरामचन्द्र चिंतवते भए, देखो मो मूढचित्तने दुष्टनिके वचनकर अत्यन्त निंद्य कार्य किया कहां वह राजपुत्री अर कहां वह भयङ्कर वन ? यह विचारकर मूर्छाको प्राप्त भये बहुरि शीतोपचारकर सचेत होय विलाप करते भए सीताविषै है चित्त जिनका, हाय श्वे.ा श्याम रक्त तीन वर्णके कमल समान नेत्रनिकी धरणहारी, हाय निर्मल गुणनिकी खान मुखकर जीता है चन्द्रमा जाने, कमलकी किरण समान कोमल, हाय जानकी मोसे वचनालाप कर, तू जाने ही है कि मेरा चित्त तो विना अतिकायर है । हे उपमारहित, शीलव्रतकी धारणहारी, मेरे मनकी हरणहारी, हितकारी हैं आलाप जिसके, हे पापवर्जिते, निरपराध, मेरे मनकी निवासनी ! तू कौन अवस्थाको प्राप्त भई होगी, हे देवि ! वह महा भयङ्कर वन क्रूर जीवों कर भरा उसमें सर्वसामग्री रहित कैसे तिष्ठेगी ? हे मोमें आसक्त चकोरनेत्र लावण्य रूप जलकी सरोवरी महा लज्जावती विनयवती तू कहां गई, तेरे श्वासकी सुगन्धकर मुखपर गुञ्जार करते जे भ्रमर तिनको हस्तकमलकर निवारतो अति खेदको प्राप्त होयगी, तू यूथसे विछुरी मृगीकी न्याई अकेली भयंकर वनविषै कहां जायगी जो वन चिंतवन करते भी दुस्सह उसविषै तू अकेली कैसे तिष्ठेगी कमलके गर्भ समान कोमल तेरे चरण महासुन्दर लक्षणके धारणहारे कर्कश भूमिका स्पर्श कैसे सहेंगे अर वनके भील महा म्लेच्छ कृत्य अकृत्यके भेदसे रहित है मन जिनका सो तुझे पाकर भयङ्कर पल्लीमें ले गये होवेंगे सो पहिले दुःखसे भी यह अत्यन्त दुःख है तू भयानक वनविषै मोविना महादुःखको प्राप्त भई होयगी अथवा तू खेदखिन्न महा अन्धेरी रात्रिविषै वनकी रजकर मण्डित कहीं पड़ी होयगी सो कदाचित् तुझे हाथियोंने दावी होय तो इस समान अर अनर्थ कहा अर गृध्र रीछ

सिंह व्याघ्र अष्टापद इत्यादि दुष्ट जीवोंकर भरा जो वन उसविषे कैसे निवास करेगी ? जहां माग नाहीं विकराल दाढ़के धरणहारे व्याघ्र महा क्षुधातुर तिन ऐसी अवस्थाको प्राप्त करी होयगी जो कहिवेविषै न आवे अथवा अग्निकी ज्वालाके समूहकर जलता जो वन उसविषै अशुभ स्थानकको प्राप्त भई होयगी, अथवा सूर्य्यकी अत्यंत दुस्सह किरण तिनके आतापकर लाखकी न्यांई पिघल गई होयगी, छायाविष जायवेकी नाहीं है शक्ति जिसकी अथवा शोभायमान शीलकी धरणहारी मो निर्दईविषै मनकर हृदय फटकर मृत्युको प्राप्त भई होयगी। पहिले जैसे रत्नजटीने मोहि सीताके कुशलकी वार्ता आय कही थी तैसे कोई अब भी कहे, हाय प्रिये पतिव्रते विवेकवती सुखरूपिणी तू कहां गई कहां तिष्ठेगी क्या करेगी अहो कृतांतवक्र कह क्या तैंने सचमुच वनहीविषै डारी, जो कहुं शुभ ठौर मेली होय तो तेरे मुखरूप चन्द्रसे अमृतरूप वचन खिरें। जब ऐसा कहा तब सेनापतिने लज्जाके भारकर नीचा मुख किया प्रभारहित हो गया कछू कह न सके अति व्याकुल भया मौन गह रहा। तब रामने जानी सत्यही यह सीताको भयंकर वनविषै डार आया तब मूर्च्छाको प्राप्त होय राम गिरे बहुत बेरमें नीठि नीठि सचेत भए तब लक्ष्मण आए अंतःकरणविषै सोचको धरे कहते भए—हे देव ! क्यों व्याकुल भये हो धीर्यको अंगीकार करो जो पूर्वकर्म उपार्जा उसका फल आय प्राप्त भया अर सकल लोकको अशुभके उदयकर दुःख प्राप्त भया केवल सीताहीको दुःख न भया। सुख अथवा दुःख जो प्राप्त होना होय सो स्वयमेव ही किसी निमित्तसे आय प्राप्त होय है। प्रभो ! जो कोई किसीको आकाशमें ले जाय अथवा क्रूर जीवोंके भरे वनविषै डारे अथवा गिरिके शिखर धरे तौभी पूर्व पुण्य कर प्राणीकी रक्षा होय है सब ही प्रजा दुःख कर तप्तायमान है आंसुवोंके प्रवाहकर मानों हृदय गल गया है सोई झरे है यह वचन कह लक्ष्मण भी अत्यन्त व्याकुल होय रुदन करने लगा जैसा दाहका मारा कमल होय तैसा होय गया है मुखकमल जिसका हाय माता। तू कहां गई दुष्टजनोंके वचन रूप अग्निकर प्रज्वलित है शरीर जिसका हे गुणरूप धान्यके उपजनेकी भूमि बारह अनुप्रेक्षाके चिंतवनकी करणहारी हे शीलरूप पर्वतकी पृथिवी हे सीते सौम्य स्वभावकी धारक हे विवेकिनी दुष्टोंके व-

चन सोई भये तुषार तिनकर दाहा गया है हृदय कमल जिसका राजहंस श्रीराम तिनके प्रसन्न करनेको मानसरोवर समान सुभद्रा सारिखी कल्याणरूप सर्व आचारविषे प्रवीण लोकोंको मूर्तिवन्त सुखकी आशिषा हे श्रेष्ठ ! तू कहां गई जैसे सूर्य बिना आकाशकी शोभा कहां अर चन्द्रमा बिना निशाकी शोभा कहां तैसे हे माता ! तो बिना अयोध्याकी शोभा कहां। इस भांति लक्ष्मण विलाप कर रामसे कहे हैं हे देव ! समस्त नगर वीण बांसुरी मृदंगादिकी ध्वनि कर रहित भया है अर अहर्निश रुदनकी ध्वनि कर पूर्ण है गली गलीमें वन उपवनविषे नदियोंके तटविषे चौहटेमें हाट हाटविषे घर घरमें समस्त लोक रुदन करे हैं तिनके अश्रुपातकी धारा कर कीच होय रही है, मानों अयोध्याविषे वर्षा कालही फिर आया है समस्त लोक आंसू डारते गद्गद् वाणी कर कष्टसे वचन उचारते जानकी प्रत्यक्ष नहीं है परोक्ष ही है, तोभी एकाग्रचित्त भए गुण कीर्तिरूप पुष्पोंके समूह कर पूजे हैं। वह सीता पतिव्रता समस्त सतियोंके सिर पर विराजे है गुणोंकर महा उज्ज्वल उसके यहां आवनेकी अभिलाषा सबोंके है यह सब लोक माताने ऐसे पाले हैं जैसे जननी पुत्रको पाले सो सबही महा शोककर गुण चितार २ रुदन करे हैं ऐसा कौन है जिसके जानकीका शोक न होय तातें हे प्रभो। तुम सब बातोंमें प्रवीण हो अब पश्चात्ताप तजो पश्चात्तापसे कछु कार्यकी सिद्धि नाहीं जो आपका चित्त प्रसन्न है तो सीताको हेरकर बुलाय लेंगे अर उनको पुण्यके प्रभाव कर कोई विघ्न नहीं आप धीर्य अवलम्बन करवे योग्य हो या भांति लक्ष्मणके वचनकर रामचन्द्र प्रसन्न भए कछु एक शोक तज कर्तव्यविषे मन धरा। भद्रकलश भण्डारीको बुलायकर कही तुम सीताकी आज्ञासे जिस विधि किम इच्छा दान करते थे तैसेही दिया करो सीताके नामसे दान बटे तब भण्डारीने कही जो आप आज्ञा करोगे सोही होयगा नव महीने अर्थियोंको किम इच्छा दान बटिबो कियो, रामके आठहजार स्त्री तिनकर सेवमान तोभी एक क्षणमात्र भी मन कर सीताको न विसारता भया। सीता सीता यह अलाप सदा होता भया, सीताके गुणोंकर मोहा है मन जिसका सर्वदिशा सीतामई देखता भया स्वप्नविषे सीताको या भांति देखे पर्वतकी गुफामें पड़ी है पृथिवीकी रज कर मंडित है अर नेत्रोंके अश्रुपात कर चो-

मासा कर राखा है महा शोक कर व्याप्त है या भांति स्वप्नमें अवलोकन करता भया। सीताकर शब्द करता राम ऐसा चिंतवन करे है—देखो सीता सुन्दर चेष्टाकी धरणहारी दूर देशान्तरविषै तिष्ठे है तौभी मेरे चित्तसे दूर न होय है वह साध्वी शीलवंती मेरे हितविषै सदा उद्यमी। या भांति सदा चितारवो करे अर लक्ष्मणके उपदेशकर अर सूत्रसिद्धान्तके श्रवण कर कछू इक रामका शोक क्षीण भया धीर्यको धारि धर्म ध्यानविषै तत्पर भया। यह कथा गौतम स्वामी राजा श्रेणिकसे कहे हैं वे दोनों भाई महा न्यायवन्त अखण्ड प्रीतिके धारक प्रशंसायोग्य गुणोंके समुद्र रामके हल मूसलका आयुध लक्ष्मणके चक्रायुध समुद्र पर्यंत पृथिवीको भली भांति पालते संते सौधर्म ईशान इंद्र सारिखे शोभते भए वे दोनों धीर स्वर्ग समान जो अयोध्या उसमें देवों समान ऋद्धि भोगते महा कांतिके धारक पुरुषोत्तम पुरुषोंके इंद्र देवेंद्र समान राज्य करते भए सुकृतके उदयसे सकल प्राणियोंको आनंद देयवेमें चतुर सुन्दर चरित्र जिनके, सुखसागरमें मग्न सूर्यसमान तेजस्वी पृथिवीमें प्रकाश करते भए।

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषा वचनिकाविषै रामको सीताका शोक वर्णन करनेवाला निन्नानवेवा पर्व पूर्ण भया ॥९९॥

अथानन्तर—गौतमस्वामी कहे हैं—हे नराधिप! रामलक्ष्मण तो अयोध्याविषै तिष्ठे हैं अर अब लवणांकुशका वृत्तांत कहे हैं सो सुन—अयोध्याके सबही लोक सीताके शोकसे पांडुताको प्राप्त भये अर दुर्बल होय गये अर पुण्डरीकपुरमें सीता गर्भके भारकर कछू एक पांडुताको प्राप्त भई अर दुर्बल भई। मानों सकल प्रजा महापवित्र उज्ज्वल इसके गुण वर्णन करे हैं सो गुणोंकी उज्ज्वलता कर श्वेत होय गई है अर कुचोंकी बीटली श्यामताको प्राप्त भई सो मानों माताके कुच पुत्रोंके पान करिवेके पयके घट हैं सो मुद्रित कर राखे हैं अर दृष्टि क्षीरसागर समान उज्ज्वल अत्यन्त मधुरताको प्राप्त भई अर सर्वमंगलके समूहका आधार जिसका शरीर सर्वमंगलका स्थानक जो निर्मल रत्नमई आंगण उसविषै मन्द मन्द विचरे सो चरणोंके प्रतिबिम्ब ऐसे भासें मानों पृथ्वी कमलोंसे सीताकी सेवा ही करे है अर रात्रिमें चन्द्रमा याके मंदिर ऊपर आय निकसै सो ऐसा भासे मानों सुफेद छत्र ही है अर सुगन्धके महलमें सुन्दर सेज

ऊपर सोती ऐसा स्वप्न देखती भई कि महागजेन्द्र कमलोंके पुट विषै जल भरकर अभिषेक करावे हैं अर बारम्बार सखीजनोंके मुख जय जयकार शब्द सुनकर जाग्रत होय है परिवारके लोक समस्त आज्ञारूप प्रवर्तें हैं क्रीड़ाविषै भी यह आज्ञाभङ्ग न सह सकै सब आज्ञाकारी भये शीघ्र ही आज्ञा प्रमाण करे हैं तौभी सर्वोपर तेज करे है काहेसे कि तेजस्वी पुत्र गर्भविषै तिष्ठे हैं अर मणियोंके दर्पण निकट हैं तौभी खड्ग काढ खड्गमें मुख देखे है अर वीणावांसुरी मृदंगादि अनेक वादित्रोंके नाद होय हैं सो न रुचें अर धनुषके चढ़ायवेकी ध्वनि रुचे है अर सिंहोंके पिंजरे देख जिसके नेत्र प्रसन्न होंय अर जिसका मस्तक जिनेन्द्र टार औरको न नमै ॥ अथानन्तर—नव महीना पूर्ण भये श्रावण सुदी पूर्णमासीके दिन श्रवण नक्षत्रके विषै वह मंगल रूपिणी सर्व लक्षण पूर्ण शरदकी पूनोंके चन्द्रमा समान है वदन जिसका सुखसे पुत्र युगल जनती भई सो पुत्रोंके जन्ममें पुण्डरीकपुरकी सकल प्रजा अतिहर्षित भई मानों नगरी नाच उठी ढोल नगारे आदि अनेक प्रकारके वादित्र बाजने लगे शंखोंके शब्द भये ! राजा वज्रजंघने अतिउत्साह किया बहुत सम्पदा याचकोंको दई अर एकका नाम अनंगलवण दूजेका नाम मदनांकुश ये यथार्थ नाम धरे फिर ये बालक वृद्धिको प्राप्त भए माताके हृदयको अति आनंदके उपजावन हारे महाधीर शूरवीरताके अंकुर उपजे,सरसोंके दाणे इनको रक्षाके निमित्त इनके मस्तक डारे सो ऐसे सोहते भए मानों प्रतापरूप अग्निके कण ही हैं जिनका शरीर ताये सुवर्ण समान अति देदीप्यमान सहजस्वभाव तेजकर अति सोहता भया अर जिनके नख दर्पणसमान भासते भए। प्रथम बालअवस्थामें अव्यक्त शब्द बोलें सो सर्वलोकके मनको हरें इनकी मंद मुलकनि महामनोग्य पुष्पोंके विकसने समान लोकनके हृदयको मोहती भई अर जैसे पुष्पोंकी सुगंधता भ्रमरोंके समूहको अनुरागी करे तैसे इनकी वासना सबके मनको अनुरागरूप करती भई यह दोनो माताका दूध पानकर पुष्ट भए अर जिनका मुख महासुंदर सुफेद दांतों कर अति सोहता भया मानों यह दांत दुग्ध समान उज्ज्वल हास्यरस समान शोभायमान दीखे हैं, धायकी आंगरी पकड़े आंगनमें पांव धरते कौनका मन न हरते भए जानकी ऐसे सुंदर क्रीड़ाके करनहारे

कुमारोंको देखकर समस्त दुःख भूल गई। बालक बड़े भए अति मनोहर सहज ही सुंदर हैं नेत्र जिनके विद्या पढ़ने योग्य भए तब इनके पुण्यके योगकर एक सिद्धार्थनामा क्षुल्लक शुद्धात्मा पृथिवीमें प्रसिद्ध वज्रजंघके मंदिर आया सो महाविद्याके प्रभाव कर त्रिकाल संध्यामें सुमेरुगिरिके चैत्यालय वंदि आवे प्रशांत वदन साधु समान है भावना जिसकी अर खंडितवस्त्र मात्र है परिग्रह जिसके उत्तम अणुव्रतका धारक नाना प्रकारके गुणों कर शोभायमान, जिनशासनके रहस्यका वेत्ता समस्त कलारूप समुद्रका पारगामी तपकर मंडित अति सोहै सो आहारके निमित्त भ्रमता संता जहां जानकी तिष्ठे थी वहां आया सीता महासती मानों जिनशासनकी देवी पद्मावती ही है सो क्षुल्लकको देख अति आदरसे उठकर सन्मुख जाय इच्छाकार करती भई अर उत्तम अन्नपानसे तृप्त किया सीता जिनधर्मियोंको अपने भाईसमान जाने है सो क्षुल्लक अष्टांग निमित्त ज्ञानका वेत्ता दोनों कुमारोंको देखकर अति संतुष्ट होयकर सीतासे कहता भया—हे देवि ! तुम सोच न करो जिसके ऐसे देवकुमार समान प्रशस्त पुत्र उसे कहा चिन्ता। यद्यपि क्षुल्लक महाविरक्त चित्त है तथापि दोनों कुमारोंके अनुरागसे कैयकदिन तिनके निकट रहा थोड़े दिनोंमें कुमारोंको शस्त्रविद्यामें निपुण किया सो कुमार ज्ञान विज्ञानविषै पूर्ण सर्व कलाके धारक गुणोंके समूह दिव्यास्त्रके चलायवे अर शत्रुओंके दिव्यास्त्र आवें तिनके निराकरण करवेकी विद्याविषै प्रवीण होते भए, महापुण्यके प्रभावसे परमशोभाको धारें महालक्ष्मीवान् दूर भए हैं मति श्रुति आवरण जिनके मानो उघडे निधिके कलश ही हैं। शिष्य बुद्धिमान् होय तब गुरुको पढ़ायवेका कछू खेद नाहीं जैसे मंत्री बुद्धिमान् होय तब राजाको राज्यकार्यका कछु खेद नाहीं अर जैसे नेत्रवान् पुरुषोंको सूर्यके प्रभावकर घट पटादिक पदार्थ सुखसूं भासैं तैसे गुरुके प्रभावकर बुद्धिवन्तको शब्द अर्थ सुखसे भासैं जैसे हंसोंको मानसरोवरविषै आवते कछु खेद नाहीं तैसे विवेकवान् विनयवान् बुद्धिमान्को गुरुभक्तिके प्रभावसे ज्ञान आवते परिश्रम नाहीं सुखसे अति गुणोंकी वृद्धि होय है अर बुद्धिमान् शिष्यको उपदेश देय गुरु कृतार्थ होय है अर कुबुद्धिको उपदेश देना वृथा है जैसे सूर्यका उद्योत घूघूओंको वृथा है यह दोनों भाई देदीप्यमान है यश जिनका अति सुन्दर

महाप्रतापी सूर्यकी न्याईं जिनकी ओर कोऊ विलोक न सके, दोऊ भाई चन्द्र सूय समान दोनोंमें अग्नि अर पवन समान प्रीति मानो वह दोनों ही हिमाचल विंध्याचलसमान हैं वज्रवृषभनाराचसंहनन जिनके सर्व तेजस्वीनिके जीतवेको समर्थ सब राजावोंका उदय अर अस्त जिनके आधीन होयगा महाधर्मात्मा धर्मके धोरी अत्यंत रमणीक जगत्को सुखके कारण सब जिनको आज्ञाविषै, राजा ही आज्ञाकारी तो औरों-की क्या बात काहूको आज्ञारहित न देख सकें अपने पांवनिके नखोंमें अपनाही प्रतिबिम्ब देख न सकें तो और कौनसे नम्रीभूत होंय अर जिनको अपने नख अर केशोंका भंग न रुचे तो अपनी आज्ञाका भंग कैसे रुचे, अर अपने सिरपर चूड़ामणि धरिये अर सिरपर छत्र फिरे अर सूर्य ऊपर होय आय निकसे सोभी न सहार सकें तो औरोंकी ऊंचता कैसे सहारें, मेघका धनुष चढ़ा देख कोप करें तो शत्रुके धनुषकी प्रबलता कैसे देख सकें चित्रामके नृप न नमैं तो भी सहार न सकें तो साक्षात् नृपोंका गर्व कब देख सकें, अर सूय नित्य उदय अस्त होय उसे अल्प तेजस्वी गिनें अर पवन महाबलवान है परन्तु चंचल सो उसे वलवान न गिनें जो चलायमान सो वलवान काहेका ? जो स्थिर भूत अचल सो वलवान् अर हिमवान पर्वत उच्च है स्थिरीभूत है परन्तु जड़ अर कठोर कंटक सहित है तातैं प्रशंसा योग्य न गिनें अर समुद्र गंभीर है रत्नोंकी खान है परन्तु क्षार अर जलचर जीवोंको धरै अर शंखोंकर युक्त तातैं समुद्रको तुच्छ गिनें ये महागुणनिके निवास अति अनूपम जेते प्रबल राजा हुते तेजरहित होय इनकी सेवा करते भए ये महाराजावोंके राजा सदा प्रसन्न वदन मुखसे अमृत वचन बोलें सबनिकर सेवने योग्य जे दूरवर्ती दुष्ट भूपाल हुते ते अपने तेजकर मलिनवदन किये सब मुरझाय गये इनका तेज ये जब जन्मे तबसे इनके साथही उपजा है शस्त्रोंके धारणकर जिनके कर अर उदर श्यामताको धरे हैं अर मानों अनेक राजावोंके प्रतापरूप अग्निके बुझावनेसे श्याम हैं समस्त दिशारूप स्त्री वशीभूत कर देने वाली भईं महाधीर धनुषके धारक तिनके सब आज्ञाकारी भए जैसा लक्षण तैसा ही अंकुश दोनों भाइनिविषै कोई कमी नाहीं ऐसा शब्द पृथिवीविषै सबके मुख, ये दोनों नवयौवन महासुन्दर अद्भुत चेष्टाके धरणहारे पृथिवीमें प्रसिद्ध

समस्त लोकोंकर स्तुति करवे योग्य जिनके देखवेकी सबके अभिलाषा पुण्य परमाणुनिकर रचा है पिंड जिनका, सुखका कारण है दर्शन जिनका स्त्रियोंके मुखरूप कुमुद तिनके प्रफुल्लित करनेको शरदकी पूर्णमासीके चन्द्रमा समान सोहते भए माताके हृदयको आनन्दके जंगम मंदिर ये कुमार सूर्यसमान कमल नेत्र देवकुमार सारिखे श्रीवत्सलक्षणकर मडित है वक्षस्थल जिनका अनंतपराक्रमके धारक संसार समुद्रके तट आये चरम शरीर परस्पर महाप्रेमके पात्र सदा धर्मके मार्गमें तिष्ठे हैं देवोंका अर मनुष्योंका मन हरे हैं।

भावार्थ—जो धर्मात्मा होय सो काहूका कुछ न हरे ये धर्मात्मा परधन परस्त्री तो न हरें परन्तु पराया मन हरें। इनको देख सबनिका मन प्रसन्न होय ये गुणोंकी हदको प्राप्त भए हैं। गुण नाम डोरेका भी है सो हदपर गांठको प्राप्त होय है अर इनके उरविषै गांठ नाहीं महा निःकपट हैं अपने तेजकर सूर्यको जीते हैं अर कांतिकर चंद्रमाको जीते हैं अर पराक्रमकर इंद्रको अर गम्भीरताकर समुद्रको स्थिरताकर सुमेरुको अर क्षमाकर पृथिवीको अर शूरवीरताकर सिंहको चालकर हंसको जीते हैं अर महाजलविषै मकर ग्राह नक्रादिक जलचरोंसे क्रीडा करे हैं अर माते हाथियोंसे तथा सिंह अष्टापदोंसे क्रीडा करते खेद न गिनें अर महा सम्यक्दृष्टि उत्तम स्वभाव अति उदार उज्ज्वल भाव जिनसे कोई युद्ध कर न सके महायुद्ध विषै उद्यमी जे कुमार सारिखे मधु कैटभ सारिखे इन्द्रजीत मेघनाद सारिखे योधा जिनमार्गी गुरुसेवाविषै तत्पर जिनेश्वरकी कथाविषै रत जिनका नाम सुन शत्रुओंको त्रास उपजे, यह कथा गौतम स्वामी राजा श्रेणिकसे कहते भए—हे राजन्! ते दोनों वीर महाधीर गुणरूप रत्नके पर्वत महा ज्ञानवान लक्ष्मीवान् शोभा कांति कीर्तिके निवास चित्तरूप माते हाथीके वश करवेको अंकुश महाराजरूप मंदिरके दृढ स्तंभ पृथ्वीके सूर्य उत्तम आचरणके धारक लवण अंकुश नरपति विचित्र कार्यके करणहारे पुण्डरीक नगरविषै यथेष्ट देवोंकी न्याईं रमें महा उत्तम पुरुष जिनके विकट जिनका तेज लख सूर्य भी लज्जावान् होय जैसे बलभद्र नारायण अयोध्याविषै रमें तैसे यहां पुण्डरीकपुरविषै रमे हैं॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषा वचनिकाविषै लवणांकुशका पराक्रम वर्णन करनेवाला एकसौवां पर्व पूर्ण भया ॥१००॥

अथानन्तर—अति उदार क्रियाविषै योग्य अति सुन्दर तिनको देख वज्रजंघ इनके परणायवेविषै उद्यमी भया, तब अपनी शशिचूला नामा पुत्री लक्ष्मी राणीके उदरविषै उपजी सो वत्तीस कन्या सहित लवणकुमारको देनी विचारी अर अंकुश कुमारका भी विवाह साथही करना सो अंकुश योग्य कन्या ढूंढिवेको चितावान भया फिर मनविषै विचारी पृथिवीपुर नगरका राजा पृथु ताके राणी अमृतवती ताकी पुत्री कनकमाला चन्द्रमाकी किरण समान निर्मल अपने रूपकर लक्ष्मीको जीते है वह मेरी पुत्री शशि-चूला समान है यह विचार तापै दूत भेजा सो दूत विचक्षण पृथ्वीपुर जाय पृथुसे कही। जौलग दूतने कन्यायाचनके शब्द न कहे तौलग इसका अति सनमान किया अर जब याने याचनेका वृत्तांत कहा तब वह क्रोधायमान भया अर कहता भया तू पराधीन है अर पराई कहाई कहै है तुम दूत लोग जलके धारा समान हो, जा दिशा चलावे ताही दिशि चलो तुममें तेज नाहीं बुद्धि नाहीं जो ऐसे पापके वचन कहै ताका निग्रह करूं पर तू पराया प्रेरा यन्त्र समान है यन्त्री यन्त्र बजावे है त्यों वाजै तातैं तू हनिवे योग्य नाहीं। हे दूत! १ कुल २ शील ३ धन ४ रूप ५ समानता ६ वल ७ वय ८ देश ९ विद्या ये नव गुण वरके कहे हैं तिनविषै कुल मुख्य है सो जिनका कुल ही न जानिए तिनको कन्या कैसे दीजिए तातैं ऐसो निर्लज्ज बात कहै सो राजा नीतिसे प्रतिकूल है सो कुमारी तो मैं न दूं अर कु कहिए खोटी मारी कहिए मृत्यु सो दूं या भांति दूतको विदा किया सो दूतने आयकर वज्रजघको व्योरा कहा सो वज्रजघ आपही चढ़ कर आधी दूर आय डेरा किये अर वड़े पुरुषनिको भेज वहुरि पृथुसे कन्या याची ताने न दई तब राजा वज्रजंघ पृथुका देश उजाड़ने लगा अर देशका रक्षक राजा व्याघ्ररथ ताहि युद्धविषै जीति बांध लिया तब राजा पृथुने सुनी कि व्याघ्ररथको राजा वज्रजंघने बांधा अर मेरा देश उजाड़ै है तब पृथुने अपना परम मित्र पोदनापुरका पति परम सेनासे बुलाया तब वज्रजंघने पुण्डरीकपुरसे अपने पुत्र वुलाए तब पिताकी आज्ञा पाय पुत्र शीघ्र ही चलिवेको उद्यमी भए, नगरविषै राजपुत्रनिके कूचका नगारा वजा सब सामंत वखतर पहिरे आयुध सजकर युद्धके चलनेको उद्यमी भए नगरविषै अति कोलाहल भया पुण्डरीकपुरमें जैसा

समुद्र गाजे ऐसा शब्द भया तब सामन्तनिके शब्द सुन लवण अर अंकुश निकटवर्तीको पूछने भए यह कोलाहल शब्द काहेका है ? तब काहूने कही अंकुशकुमारके परणायवे निमित्त वज्रजंघ राजाने पृथुकी पुत्री याची हुती सो ताने न दई तब राजा युद्धको चढ़े अर अब राजा अपनी सहायताके अर्थ अपने पुत्रनिको वुलाया है अर सेना वुलाई है सो यह सेनाका शब्द है। यह समाचार सुन कर दोऊ भाई आप युद्धके अर्थ अति शीघ्रही जायवेको उद्यमी भए। कैसे हैं कुमार आज्ञा भंगको नाहीं सह सके हैं तब वज्रजंघके पुत्र इनको मने करते भए अर सर्व राजलोक मने करते भए तौ हू इन न मानी तब सीता पुत्रनिके स्नेहकर द्रवीभूत हुवा है मन जाका सो पुत्रनिको कहती भई तुम बालक हो, तिहारा युद्धका समय नाहीं। तब कुमार कहते भए-हे माता ! तू यह कहा कही वडा भया अर कायर भया तो कहा ? यह पृथिवी योधानि कर भोगवे योग्य है अर अग्निका कण छोटा ही होय है अर महावनको भस्म करे है या भांति कुमारने कही तब माता इनको सुभट जान आंखोंसे हर्ष अर शोकके किंचितमात्र अश्रुपात करती भई ये दोऊ वीर महा धीर स्नान भोजन कर आभूषण पहिरे मन वचन कायकर सिद्धनिका नमस्कारकर बहुरि माताको प्रणामकर समस्त विधिविषै प्रवीण घरते बाहिर आए तब भले भले शकुन भए दोऊ रथ चढ़ सम्पूर्ण शस्त्रनिकर युक्त शीघ्रगामी तुरंग जोड़ पृथुपर चले महा सेनाकर मंडित धनुषबाणही है सहाय जिनके महा पराक्रमी परम उदारचित्त संग्रामके अग्रेसर पांच दिवसमें वज्रजंघपै जाय पहुंचे तब राजा पृथु शत्रुनिकी बड़ी सेना आई सुन आप भी बड़ी सेनासहित नगरसे निकसा जाके भाई मित्र पुत्र मामाके पुत्र सबही परम प्रीति पात्र अर अंगदेश बंगदेश मगधदेश आदि अनेक देशनिके बड़े बड़े राजा तिन सहित रथ तुरंग हाथी पयादे बड़े कटकसहित वज्रजंघपर आया तब वज्रजंघके सामन्त परसेनाके शब्द सुन युद्धको उद्यमी भए दोऊ सेना समीप भई तब दोऊ भाई लवणांकुश महा उत्साहरूप परसेनाविषै प्रवेश करते भए वे दोऊ योधा महा कोपको प्राप्त भए अति शीघ्र है परावर्त जिनका परसेनारूप समुद्रमें क्रीड़ा करते सब ओर परसेनाका निपात करते भए जैसे बिजलीका चमत्कार जिस ओर चमके उस ओर चमक उठे तैसे सब ओर मार मार करते

भए शत्रुनितैं न सहा जाय पराक्रम जिनका धनुष पकड़ते वाण चलाते दृष्टि न पड़ें अर वाणनिकर हते अनेक दृष्टि पड़ें नाना प्रकारके क्रूर वाण तिनकर वाहन सहित परसेनाके अनेक योधा पीड़े पृथिवी दुर्गम्य होय गई एक निमिषमें पृथुकी सेना भागी जैसे सिंहके त्राससे मदोन्मत्त गजनिके समूह भागें एक क्षण-मात्रमें पृथुकी सेनारूप नदी लवणांकुशरूप सूर्य तिनके वाणरूप किरणनिकर शोकको प्राप्त भई कैयक मारे पड़े कैयक भयतैं पीड़ित होय भागे, जैसे आकके फूल उड़े उड़े फिरैं। राजा पृथु सहायरहित खिन्न होय भागनेको उद्यमी भया तब दोऊ भाई कहते भए—हे पृथु! हम अज्ञात कुल शील हमारा कुल कोऊ जाने नाहीं तिनपै भागता तू लज्जावान् न होय है तू खड़ा रह, हमारा कुल शील तोहि वाणनिकरि बतावैं, तब पृथु भागता हुता सो पीछा फिर हाथ जोड़ नमस्कारकर स्तुति करता भया तुम महा धीरवीर हो मेरा अज्ञानताजनित दोष क्षमा करहु मैं मूर्ख तिहारा माहात्म्य अबतक न जाना हुता महा धीरवीरनिका कुल, या सामंतताहीतै जाना जाय है कछु वाणीके कहेसे न जाना जाय है सो अब मैं निःसन्देह भया। वनके दाहकूं समर्थ जो अग्नि सो तेजहीतैं जानी जाय है सो आप परम धीर महाकुलविषै उपजे हमारे स्वामी हो महाभाग्यके योग्य तिहारा दर्शन भया तुम सबको मन वांछित सुखके दाता हो या भांति पृथुने प्रशंसा करी॥ तब दोऊ भाई नीचे होय गये अर क्रोध मिट गया शांतमन अर शांतमुख होय गये वज्रजंघ कुमारनिके समीप आया अर सब राजा आये कुमारनिके अर पृथुके प्रीति भई जे उत्तम पुरुष हैं वे प्रणाममात्र ही करि प्रसन्नताको प्राप्त होय हैं जैसे नदीका प्रवाह नम्रीभूत जे बेल तिनको न उपाड़े अर जे महावृक्ष नम्रीभूत नाहीं तिनको उपाड़े फिर राजा वज्रजंघको अर दोऊ कुमारनिको पृथु नगर में ले गया, दोऊ कुमार आनन्दके कारण। मदनांकुशको अपनी कन्या कनकमाला महाविभूतिसहित पृथुने परणाई एक रात्रि यहां रहे फिर यहां दोऊ भाई विचक्षण दिग्विजय करवेको निकसे सुह्यदेश, मगध देश अंगदेश वंगदेश जीत पोदनापुरके राजाको आदि दे अनेक राजा संग लेय लोकाक्ष नगर गए, वा तरफके बहुत देश जीते कुबेरकांत नामा राजा अतिमानी ताहि ऐसा वश किया जैसे गरुड़ नागकूं जीतै

सत्यार्थपनेतैं दिन दिन इनके सेना वढ़ी हजारां राजा वश भए अर सेवा करने लगे फिर लंपाक देश गए वहां करण नामा राजा अतिप्रबल ताहि जीतकर विजयस्थलको गए वहांके राजा सौ भाई तिनको अवलोकन मात्रतैं ही जीत, गंगा उतर कैलाशकी उत्तर दिशि गए,वहांके राजा नाना प्रकारकी भेंट ले आय मिले झष कुन्तला नामा देश तथा सालायं, नंदी नंदन स्यघल शलभ अनल चल भीम, भूतरव, इत्यादि अनेक देशाधिपतिनिको वशकर सिंधु नदाके पार गये समुद्रके तटके राजा अनेकनिको नमाये अनेक नगर अनेक खेट अनेक अटंव अनेक देश वश किये भीरु देश यवन कच्छ चारव त्रजट नट सक केरल नेपाल मालव अरल सर्वरत्रिशिर पार शैल गोशाल कुसीनर सूरपारक सनत विधि शूरसेन बाह्लीक उलूक कोशल गांधार सौवीर अन्ध्र काल कलिंग इत्यादि अनेक देश वश किये कैसे हैं देश जिनविषै नाना प्रकारको भाषा अर वस्त्रनिका भिन्न भिन्न पहराव अर जुदे २ गुण नाना प्रकारके रत्न अनेक जातिके वृत्त जिनविषै अर नाना प्रकार स्वर्ण आदि धनके भरे।

कैयक देशनिके राजा प्रतापहीतैं आय मिले कैयक युद्धविषै जीति वश किये, कैयक भाग गए बड़े बड़े राजा देशपति अति अनुरागी होय लवणांकुशके आज्ञाकारी होते भए इनकी आज्ञा प्रमाण पृथिवीविषै विचरें। वे दोनों भाई पुरुषोत्तम पृथिवीको जीत हजारा राजानिके शिरोमणि होते भए सबनिको वशकर लार लिए नाना प्रकारकी सुन्दर कथा करते सबका मन हरते पुण्डरीकपुरको उद्यमी भये। वज्रजंघ लार ही है अति हर्षके भरे अनेक राजानिकी अनेक प्रकार भेंट आई सो महाविभूतिको लिये अतिसेना कर मंडित पुण्डरीकपुरके समीप आए सीता सतखणके महल चढ़ी देखे है राजलोककी अनेक राणी समीप हैं अर उत्तम सिहासन पर तिष्ठे हैं दूरसे अति सेनाकी रजके पटल उठे देख सखीजनको पूछती भई—यह दिशाविषै रजका उड़ाव कैसा है तब तिनने कहा-हे देवि! सेनाकी रज है जैसे जलविषै मकर किलोल करें तैसे सेनाविषै अश्व उछलते आवे हैं हे स्वामिनि! ये दोनों कुमार पृथिवी वशकर आये या भांति सखीजन कहे हैं अर बधाई देनहारे आए नगरकी अति शोभा भई लोकनिके अति आनंद भया निर्मल

ध्वजा चढ़ाई समस्त नगर सुगंधकर छांटा अर वस्त्र आभूषणनिकर शोभित किया दरवाजेपर कलश थापे सो कलश पल्लवनिकरि ढके अर ठौर २ वंदनमाला शोभायमान दिखती भईं अर हाट बाजार पाटंबरादि वस्त्रकर शोभित भए जैसी श्रीराम लक्ष्मणके आये अयोध्याकी शोभा भई हुती तैसेही पुण्डरीकपुरकी शोभा कुमारनिके आयेसे भई। जा दिन महाविभूतिसूं प्रवेश किया ता दिन नगरके लोगनिको जो हर्ष भया सो कहिवेमें न आवै दोऊ पुत्र कृतकृत्य तिनको देखकर सीता आनन्दके सागरविषै मग्न भई दोऊ वीर महा धीर आयकर हाथ जोड़ माताको नमस्कार करते भये सेनाकी रजकर धूसरा है अंग जिसका, सीताने पुत्रनिको उरसे लगाय माथे हाथ धरा माताको अति आनन्द उपजाय दोऊ कुमार चांद सूर्यकी न्याईं लोकविषैं प्रकाश करते भये ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषा वचनिकाविषै लवणांकुशकर्म दिग्विजय वर्णन करनेवाला एकसौएकवा पर्व पूर्ण भया ॥१०१॥

अथानन्तर—ये उत्तम मानव परम ऐश्वर्यके धारक प्रबल राजानि पर आज्ञा करते सुखसूं तिष्ठें एक दिन नारदने कृतान्तवक्रको पूछी कि तू सीताको कहां मेल आया, तब ताने कही कि सिंहनाद अटवी विषै मेली सो यह सुनकर अति व्याकुल होय ढूंढ़ता फिरे हुता सो दोऊ कुमार वनक्रीड़ा करते देखे तब नारद इनके समीप आया कुमार उठकर सन्मान करते भये नारद इनको विनयवान देख बहुत हर्षित भया अर असीस दई जैसे राम लक्ष्मण नरनाथकै लक्ष्मी है तैसी तुम्हारे होओ। तब ये पूछते भये कि हे देव! राम लक्ष्मण कौन हैं, अर कौन कुलविषै उपजे हैं अर कहा उनविषै गुण हैं अर कैसा तिनका आचरण है तब नारद क्षण एक मौन पकड़ कहते भये—हे दोऊ कुमारो! कोई मनुष्य भुजानिकर पर्वतको उखाड़ै अथवा समुद्रको तिरै तौहू राम लक्ष्मणके गुण कह न सकै अनेक वदननिकर दीर्घ काल तक तिनके गुण वर्णन करें तौभी राम लक्ष्मणके गुण कह न सकें तथापि मैं तिहारे वचनसे किंचित्मात्र वर्णन करूं हूं तिनके गुण पुण्यके बढ़ावनहारे हैं। अयोध्यापुरीविषै राजा दशरथ होते भये दुराचाररूप ईंधनके भस्म करवेको अग्नि समान, अर इक्ष्वाकुवंश रूप आकाशविषै चन्द्रमा महा तेजोमय सूर्य समान सकल पृथिवी-

विषै प्रकाश करते अयोध्याविषै तिष्ठैं वे पुरुषरूप पर्वत तिनकरि कीर्तिरूप नदी निकसी, सो सकल जगतको आनन्द उपजावती समुद्र पर्यन्त विस्तारको धरती भई ता दशरथ भूपतिके राज्य भारके धुरंधरही चार पुत्र महा गुणवान भए एक राम दूजा लक्ष्मण तीजा भरत चौथा शत्रुघ्न तिनविषै राम अति मनोहर सर्वशास्त्रके ज्ञाता पृथिवीविषै प्रसिद्ध सो छोटे भाई लक्ष्मणसहित अर जनककी पुत्री जो सीता ता सहित पिताकी आज्ञा पालवे निमित्त अयोध्याको तज पृथिवीविषै विहार करते दण्डक वनविषै प्रवेश करते भये। सो स्थानक महाविषम जहां विद्याधरनिके गम्यता नाहीं खरदूषणते संग्राम भया रावणने सिंहनाद किया ताहि सुनकर लक्ष्मणकी सहाय करनेको राम गया पीछेसूं सीताको रावण हर ले गया तब रामसे सुग्रीव हनूमान विराधित आदि अनेक विद्याधर भेले भये रामके गुणनिके अनुरागकरि वशीभूत है हृदय जिनका सो विद्याधरनिको लेयकर राम लङ्काको गये रावणको जीत सीताको लेय अयोध्या आये स्वर्गपुरी समान अयोध्या विद्याधरनिने बनाई तहां राम लक्ष्मण पुरुषोत्तम नागेन्द्र समान सुखसे राज्य करें रामको तुम अब तक कैसे न जाना जाके लक्ष्मणसा भाई ताके हाथ सुदर्शन चक्र सो आयुध जाके एक एक रत्नकी हजार हजार देव सेवा करें सात रत्न लक्ष्मणके अर चार रत्न रामके जाने प्रजाके हित निमित्त जानकी तजी ता रामको सकल लोक जानें ऐसा कोई पृथिवीविषै नाहीं जो रामको न जाने। या पृथिवीकी कहा वात ? स्वर्गविषै देवनिके समूह रामके गुण वर्णन करे हैं।

तब अंकुशने कही—हे प्रभो। रामने जानकी काहे तजी सो वृत्तांत मैं सुना चाहूं हूं तब सीताके गुणनिकर धर्मानुरागमें है चित्त जाका ऐसा नारद सो आंसू डार कहता भया—हे कुमार हो! वह सीता सती महा निर्मल कुलविषै उपजी शीलवंती गुणवंती पतिव्रता श्रावकके आचारविषै प्रवीण रामकी आठ हजार राणी तिनकी शिरोमणि लक्ष्मी कीर्ति धृति लज्जा तिनको अपनी पवित्रतातैं जीतकर साक्षात् जिनवाणी तुल्य, सो कोई पूर्वोपार्जित पापके प्रभावकर मूढ़लोक अपवाद करते भये तातैं, रामने दुखित होय निर्जन वनविषै तजी खोटे लोक तिनकी वाणी सोई भई जेठके सूर्यकी किरण ताकर तप्तायमान वह सती कष्टको

प्राप्त भई महा सुकुमार जाविषै अल्प भी खेद न सहारा पड़े मालतीकी माला दीपके आतापकर मुरझाय सो दावानलका दाह कैसे सहार सके, महा भीम वन जाविषै अनेक दुष्ट जीव तहां सीता कैसे प्राणनिको धरे, दुष्ट जीवनिको जिह्वा भुजङ्ग समान निरपराध प्राणीनिको क्यूं डसे ? शुभ जीवनिकी निन्दा करते दुष्टनिके जीभके सौ टूक क्यूं न होवें वह महा सती पतिव्रतानिकी शिरोमणि पटुता आदि अनेक गुणनिकर प्रशंसायोग्य अत्यन्त निर्मल महा सती ताकी जो लोक निंदा कर सो या भव अर परभवविषै दुःखको प्राप्त होंय ऐसा कहकर शोकके भारकर मौन गह रहा विशेष कछू कह न सका सुनकर अंकुश बोले-हे स्वामिन् ! भयंकर वनविषै रामने सीताको तजते भला न किया। यह कुलवंतोंकी रीति नाहीं है लोकापवाद निवेरबेके और अनेक उपाय हैं ऐसा अविवेकका कार्य ज्ञानवंत क्यों करें। अंकुशने तो यही कही अर अनंगलवण बोला यहांसूं अयोध्या केतीक दूर है ? तब नारदने कहा यहांसे एकसौ साठ योजन है जहां राम विराजै हैं। तब दोऊ कुमार बोले हम राम लक्ष्मणपर जावेंगे या पृथिवीविषै ऐसा कौन जाकी हम आगे प्रबलता, नारदसों यह कही अर वज्रजंघसे कही—हे मामा ! सूक्ष्म देश सिंधु देश कलिंग देश इत्यादि देशनिके राजाओंको आज्ञापत्र पठावहु जो संग्रामका सब सरञ्जाम लेकर शीघ्रही आवें हमारा अयोध्याकी तरफ कूच है अर हाथी समारो मदोन्मत्त केते अर निर्मद केते अर घोड़े वायु समान है वेग जिनका सो संग लेकर अर जे योधा रणसंग्रामविषै विख्यात कभी पीठ न दिखावें तिनको लार लेवो, सब शस्त्र सम्हारो बख्तरनिकी मरम्मत करावहु अर युद्धके नगारे दिवावहु ढोल बजावहु शंखनिके शब्द करावहु सब सामंतोंको युद्धका विचार प्रगट करहु। यह आज्ञाकर दोऊ वीर मनविषै युद्धका निश्चयकर तिष्ठे मानों दोऊ भाई इन्द्र ही हैं देवनि समान जे देशपति राजा तिनको एकत्र करिवेको उद्यमी भये तब राम लक्ष्मणपर कुमारनिकी असवारी सुन सीता रुदन करती भई अर सीताके समीप नारदको सिद्धार्थ कहता भया यह अशोभन कार्य तुम कहा आरम्भा रणविषै उद्यम करिवेका है उत्साह जिनके ऐसे तुम सो पिता अर पुत्रनिविषै क्यों विरोधका उद्यम किया अब काहू भांति यह विरोध निवारो, कुटुम्ब भेद करना उ-

चित नाहीं तब नारदने कहा मैं तो ऐसा कछू जान्या नाहीं इनने विनय किया मैंने आशीस दिया कि तुम राम लक्ष्मणसे होवो इनने सुनकर पूछी राम लक्ष्मण कौन ? मैंने सब वृत्तांत कहा अब भी तुम भय न करो सब नीके होयगा अपना मन निश्चल करहु कुमारनि सुनी कि माता रुदन करे है तब दोऊ पुत्र माताके पास आय कहते भये हे मात ! तुम रुदन क्यों करो हो सो कारण कहो तिहारी आज्ञाको कौन लोपे असुन्दर वचन कौन कहे ता दुष्टके प्राण हरें ऐसा कौन है जो सर्पकी जीभतें क्रीड़ा करे ऐसा कौन मनुष्य अर कौन देव जो तुमको असाता उपजावै हे मातः। तुमने कौनपर कोप किया है जापर तुम कोप करो ताका जानिये आयुका अन्त आया है हमपर कृपाकर कोपका कारण कहहु या भांति पुत्रनि विनती करी तब माता आंसू डार कहती भई हे पुत्र ! मैं काहू पर कोप न किया न मुझे काहूने असाता दई तिहारा पितासे युद्धका आरम्भ सुन मैं दुखित भई रुदन करूं हूं। गौतम स्वामी कहे हैं हे श्रेणिक ! तब पुत्र मातासे पूछते भये हे माता ! हमारा पिता कौन ? तब सीताने आदिसे लेय सब वृत्तांत कहा—रामका वंश अर अपना वंश विवाहका वृत्तांत अर वनका गमन अपना रावणकर हरण अर आगमन जो नारदने वृत्तांत कहा हुता सो सब विस्तारसूं कहा कछु छिपाय न राखा अर कही तुम गर्भविषै आए तब ही तिहारे पिताने लोकापवादका भयकर मुझे सिंहनाद अटवीमें तजी तहां मैं रुदन करती हुती सो राजा वज्रजंघ हाथी पकड़ने गया हुता सो हाथी पकड़ वाहुड़े था मोहि रुदन करती देखी सो यह महा धर्मात्मा शीलवन्त श्रावक मोहि महा आदरसूं ल्याया बड़ी बहिनका आदर जनाया अर सत् सन्मानतं यहां राखी। मैं भाई भामंडल समान याका घर जाना तिहारा यहां सन्मान भया तुम श्रीरामके पुत्र हो राम महाराजाधिराज हिमाचल पर्वतसूं लेय समुद्रांत पृथिवीका राज्य करे हैं जिनके लक्ष्मणसा भाई महाबलवान् संग्रामविषै निपुण है न जानिये नाथकी अशुभ वार्ता सुनूं अक तिहारो अथवा देवरको तातैं आर्तचित्त भई मैं रुदन करूं हूं अर कोऊ कारण नाहीं तब सुनकर पुत्र प्रसन्नवदन भए अर मातासे कहते भए हे माता ! हमारा पिता महा धनुषधारी लोकविषै श्रेष्ठ लक्ष्मीवान् विशाल कीर्तिका धारक है अर अनेक अद्भुत

काध किए हैं परन्तु तुमको वनविषै तजी सो भला न किया तातैं हम शीघ्रही राम लक्ष्मणका मानभंग करेंगे तुम विषाद मत करहु तब सीता कहती भई हे पुत्र हो। वे तिहारे गुरुजन हैं उनसूं विरोध योग्य नाहीं। तुम चित्त सौम्य करहु। महा विनयवन्त होय जायकर पिताको प्रणाम करहु यह हो नीतिका मार्ग है॥ तब पुत्र कहते भए हे माता! हमारा पिता शत्रुभावको प्राप्त भया हम कैसे जाय प्रणाम करें अर दीनताके वचन कैसे कहें हम तो माता तिहारे पुत्र हैं तातैं रण संग्रामविषै हमारा मरण होय तो होवो परन्तु योधानिसे निन्द्य कायर वचन तो हम न कहें, यह वचन पुत्रनिके सुन सीता मौन पकड़ रहीं परन्तु चित्तमें अति चिन्ता है दोऊ कुमार स्नानकर भगवानकी पूजा कर मंगल पाठ पढ़ सिद्धनिको नमस्कारकर माताको धीर्य बन्धाय प्रणाम कर दोऊ महा मंगलरूप हाथीपर चढ़ मानों चांद सूर्य गिरिके शिखर तिष्ठे हैं अयोध्या ऊपर युद्धको उद्यमी भए जैसे राम लक्ष्मण लंका ऊपर उद्यमी भए हुते इनका कूच सुन हजारों योधा पुण्डरीकपुरसे निकसे सब ही योधा अपना अपना हल्ला देते भए वह जाने मेरी सेना अच्छी दीखे वह जाने मेरी, महाकटक संयुक्त नित्य एक योजनका कूच करें सो पृथिवीकी रक्षा करते चले जायं हैं किसीका कछु उजाड़ें नाहीं। पृथिवी नाना प्रकारके धान्यकरि शोभायमान है कुमारनिका प्रताप आगे आगे बढ़ता जाय है मागके राजा भेंट दे मिले हैं, दस हजार वेलदार कुदाल लिए आगे आगे चले जाय हैं अर धरतो ऊंची नीचीको सम करे हैं अर कुल्हाड़े हैं हाथविषै जिनके वे भी आगे आगे चले जाय हैं अर हाथी ऊंट भैंसा बलद खच्चर खजानेके लदे जाय हैं, मत्री आगे आगे चले जाय हैं अर प्यादे हिरणकी न्याईं उछलते जाय हैं अर तुरंगनिके असवार अति तेजीसे चले जाय हैं तुरङ्गनिकी हींस होय रही है अर गजराज चले जाय हैं जिनके स्वर्णकी सांकल अर महा घंटानिका शब्द होय है अर जिनके कानोंपर चमर शोभे हैं अर शंखनिकी ध्वनि होय रही है अर मोतिनिकी झालरी पानीके बुदबुदा समान अत्यन्त सोहे हैं अर सुन्दर हैं आभूषण जिनके महा उद्धत जिनके उज्वल दांत-निके स्वर्ण आदिके बन्ध बन्धे हैं अर रत्न स्वर्ण आदिककी माला तिनसे शोभायमान चलते पर्वत समान नाना प्रकारके रंगसूं रंगे अर जिनके मद झरे हैं अर कारी घटा समान श्याम प्रचण्ड वेगको धरें जिन पर

पाखर परी हैं नानाप्रकारके शस्त्रनिकरि शोभित हैं अर गर्जना करे हैं अर जिन पर महादीप्तिके धारक सामन्त लोक चढ़े हैं अर महावतनिने अति सिखाये हैं अपनी सेनाका अर परसेनाका शब्द पिछाने हैं सुन्दर है चेष्टा जिनकी, अर घोड़ानिके असवार बख्तर पहिरे खेट नामा आयुधको धरे बरछी है जिनके हाथमें घोड़ानिके समूह तिनके खुरनिके घातकरि उठी जो रज ताकरि आकाश व्याप्त होय रहा है ऐसा सोहे है मानों सुफेद बादलनिसे मंडित है अर पियादे शस्त्रनिके समूहकरि शोभित अनेक चेष्टा करते गर्वसे चले जाय हैं वह जाने में आगे चलूं वह जाने में, अर-शयन आसन तांबूल सुगंध माला महामनोहर वस्त्र आहार विलेपन नानाप्रकारकी सामग्री बंटती जाय है ताकरि सबही सेनाके लोक सुखरूप हैं काहूको काहु प्रकारका खेद नाहीं अर मञ्जिल मञ्जिलपै कुमारनिकी आज्ञाकरि भले भले मनुष्यनिको लोक नानाप्रकारकी वस्तु देवे हैं उनको यही कार्य सौंपा है सो बहुत सावधान हैं नाना प्रकारके अन्न जल मिष्टान्न लवण घृत दुग्ध दही अनेक रस भांति भांति खानेको वस्तु आदरसो देवे हैं, समस्त सेनामें कोई दीन विभुक्षित तृषातुर कुवस्त्र मलिन चिन्तावान दृष्टि नाहीं पड़े है। सेनारूप समुद्रमें नर नारी नाना प्रकारके आभरण पहिरे सुन्दर वस्त्रनिकर शोभायमान महा रूपवान अति हर्षित दीखें। या भांति महा विभूति कर मण्डित सीता के पुत्र चले चले अयोध्याके देशविषै आये, मानों स्वर्गलोकमें इन्द्र आए जो देशमें यव गेहूं चावल आदि अनेक धान्य फल रहे हैं अर पौंडे सांठेनिके वाडे ठौर ठौर शोभे हैं। पृथिवी अन्न जल तृणकर पूर्ण है अर जहां नदीनिके तीर हू मुनिके समूह क्रीड़ा करे हैं अर सरोवर कमलनिके शोभायमान हैं अर पर्वत नाना प्रकारके पुष्पनिकर सुगंधित होय रहे हैं अर गीतनिकी ध्वनि ठौर ठौर होय रही है अर गाय भैंस बलध-निके समूह विचर रह हैं अर ग्वालणी विलोवणा बिलोवे हैं,जहां नगरनि सारिखे नजदीक नजदीक ग्राम हैं अर नगर ऐसे शोभे हैं मानों सुरपुर ही है। महा तेजकर युक्त लवणांकुश देशकी शोभा देखते अति नी-तिसे आये काहूको काहू ही प्रकारका खेद न भया हाथिनिके मद झरवे कर पंथमें रज दब गई,कीच होय गयी अर चंचल घोड़निके खुरनिके घातकर पृथ्वी जर्जरी होय गई। चले चले अयोध्याके समीप आए

दूरसे सन्ध्याके बादलनिके रंग समान अति सुन्दर अयोध्या देख वज्रजंघको पूछी—हे माम ! यह महा ज्योतिरूप कौनसी नगरी है तब वज्रजंघने निश्चयकर कही—हे देव ! यह अयोध्या नगरी है जाके स्वर्णमई कोट तिनकी यह ज्योति भासै है या नगरीमें तिहारा पिता बलदेवस्वामी विराजे है जाके लक्ष्मण अर शत्रुघ्न भाई या भांति वज्रजंघसे कही अर दोऊ कुमार शूरवीरताकी कथा करते सुखसे आय पहुंचे कटकके अर अयोध्याके बीच सरयू नदी रही दोऊ भाईनिकी यह इच्छा कि शीघ्र ही नदी उतर नगरी लेवें जैसे कोई मुनि शीघ्रही मुक्त हुआ चाहै ताहि मोक्षकी आशारूप नदी यथाख्यात चारित्र होने न देय आशारूप नदीको तिरै तब मुनि मुक्त होय तैसे सरयू नदीके योगसे शीघ्र ही नदीतें पार उतर नगरीमें न पहुंच सके तब जैसे नन्दन वनमें देवनिकी सेना उतरे तैसे नदीके उपवनादिमें ही कटकके डेरा कराए ॥

अथानन्तर—परसेना निकट आई सुन रामलक्ष्मण आश्चर्यको प्राप्त भये अर दोनों भाई परस्पर बतलावें ये कोई युद्धके अर्थ हमारे निकट आए हैं सो मुवा चाहे हैं वासुदेवने विराधितको आज्ञा करी—युद्धके निमित्त शीघ्र ही सेना भेली करो ढील न होय जिन विद्याधरोंके कपियोंकी ध्वजा अर बैलोंकी ध्वजा अर हाथियोंकी ध्वजा सिंहोंकी ध्वजा इत्यादि अनेक भांतिकी ध्वजा तिनको बेग बुलावो सो विराधितने कही जो आज्ञा होयगी सोई होयगा उस ही समय सुग्रीवादिक अनेक राजावोंपर दूत पठाये सो दूतके देखवे मात्रही सब विद्याधर बड़ी सेनासे अयोध्या आये। भामंडल भी आया सो भामण्डलका अत्यन्त आकुलता देख शीघ्रही सिद्धार्थ अर नारद जाय कर कहते भये—यह सीताके पुत्र हैं सीता पुण्डरीकपुरमें है तब यह बात सुनकर बहुत दुखित भया अर कुमारोंके अयोध्या आयवे पर आश्चर्यको प्राप्त भया अर इनका प्रताप सुन हर्षित भया मनके वेग समान जो विमान उसपर चढ़कर परिवार सहित पुण्डरीकपुर गया। बहिनसे मिला सीता भामण्डलको देख अति मोहित भई आंसू नाखती संती विलाप करती भई अर अपने ताईं घरसे काढ़नेका अर पुण्डरीकपुर आयवेका सर्व वृत्तान्त कहा तब भामण्डल बहिनको धीर्य बंधाय कहता भया—हे बहिन ! तेरे पुण्यके प्रभावसे सब भला होयगा अर कुमार अयोध्या गये सो भला न किया,

जायकर बलभद्र नारायणको क्रोध उपजाया राम लक्ष्मण दोनो भाई पुरुषोत्तम देवोंसे भी न जीते जायं महा योधा हैं कुमारोंके अर उनके युद्ध न होय सो ऐसा उपाय करें इसलिये तुमहू चलो। तब सीता पुत्रोंकी बधू संयुक्त भामंडलके विमान विषै बैठ चली। राम लक्ष्मण महा क्रोधकर रथ घोटक गज पियादे देव विद्याधर तिनकर मण्डित समुद्र समान सेना लेय बाहिर निकसे अर घोड़निके रथ चढ़ा शत्रुघ्न महा प्रतापी मोतिनिके हारकर शोभायमान है वक्षस्थल जिसका सो रामके संग भया अर कृतांतवक्र सब सेनाका अग्रेसर भया जैसे इन्द्रकी सेनाका अग्रगामी हृदयकेशी नामा देव होय उसका रथ अत्यन्त सोहता भया देवनिके समान जिसका रथ सो सेनापति चतुरंग सेना लिये अतुलबली अतिप्रतापी महा-ज्योतिको धरे धनुष चढ़ाय बाण लिये चला जाय , जिसकी श्याम ध्वजा शत्रुओंसे देखी न जाय उसके पीछे त्रिमूर्धन वह्निशिख सिंहविक्रम दीर्घभुज सिंहोदर सुमेरु बालखिल्य रौद्रभूत जिसके अष्टापदोंके रथ वज्रकर्ण पृथु मारदमन मृगेंद्रदव इत्यादि पांच हजार नृपति कृतांतवक्रके संग अग्रगामी भए वन्दीजन बखाने हैं विरद जिनके अर अनेक रघुवंशी कुमार देखे हैं अनेक रण जिन्होंने शस्त्रोंपर है दृष्टि जिनकी युद्धका है उत्साह जिनके, स्वामी भक्तिविषै तत्पर महाबलवन्त धरतीको कंपाते शीघ्रही निकसे कईएक नाना प्रकारके रथोंपर चढ़े कईएक पर्वत समान ऊंचे कारी घटा समान हाथिनिपर चढ़े, कईएक समुद्रकी तरंग समान चंचल तुरंग तिनपर चढ़े। इत्यादि अनेक वाहनों पर चढ़े युद्धको निकसे वादित्रोंके शब्दकर करी है व्याप्त दशोंदिशा जिन्होंने बखतर पहिरे टोप धरे क्रोधकर संयुक्त है चित्त जिनका, तब लव अंकुश परसेनाका शब्द सुन युद्धको उद्यमी भए वज्रजंघको आज्ञा करी, कुमारकी सेनाके लोक युद्धके उद्यमी हुते ही। प्रलयकालकी अग्नि समान महाप्रचंड अंगदेश वंगदेश नेपाल वर्बर पौंड्र मागध पारसैल स्यंघल कलिंग इत्यादि अनेक देशनिके राजा रत्नांकको आदि दे महा बलवंत ग्यारह हजार राजा उत्तम तेजके धारक युद्धके उद्यमी भए दोनों सेनानिका संघट्ट भया दोनों सेनानिके संगमविषै देवनिको असुरनिको आश्चर्य उपजै ऐसा महा भयंकर शब्द भया जैसा प्रलयकालका समुद्र गाजै परस्पर यह शब्द होते भए

क्या देख रहा है प्रथम प्रहार क्यों न करै मेरा मन तोपर प्रथम प्रहार करिवेपर नाहीं तातें तू ही प्रथम प्रहार कर अर कोई कहे है एक डिग आगे होवो जो शस्त्र चलाऊं कोई अत्यंत समीप होय गये तव कहे हैं खञ्जर तथा कटारी हाथ लेवो निपट नजदीक भए वाणका अवसर नाहीं। कोई कायरको देख कहे हैं तू क्यों कांपे है मैं कायरको न मारूं तू परे हो आगे महा योधा खड़ा है उससे युद्ध करने दे कोई वृथा गाजे है उसे सामंत कहे है हे क्षुद्र। कहा वृथा गाजे है गाजनेमें सामन्तपना नाहीं जो तोविषै सामर्थ्य है तो आगे आव, तेरी रणकी भूख भगाऊं इस भांति योधानिमें परस्पर वचनालाप होय रहे हैं तरवार वहे हैं भूमिगोचरी विद्याधर सबही आए हैं भामण्डल पवनवेग वीर मृगांक विद्युद्‌ध्वज इत्यादि बड़े २ राजा विद्याधर बड़ी सेनाकर युक्त महारण विषै प्रवीण सो लवण अंकुशके समाचार सुन युद्धसे पराङ्मुख शिथिल होय गये अर सब वातोंविषै प्रवीण हनूमान सो भी सीताके पुत्र जान युद्धसे शिथिल होय रहा अर विमानके शिखरविषै आरूढ़ जानकीको देख सबही विद्याधर हाथ जोड़ सीस नवाय प्रणामकर मध्यस्थ होय रहे सीता दोनों सेना देख रोमांच होय आई, कांपे है अग जाका। लवण अंकुश लहलहाट करे हैं ध्वजा जिनकी राम लक्ष्मणसे युद्धके उद्यमी भए। रामके सिंहकी ध्वजा लक्ष्मणके गरुड़की सो दोनों कुमार महायोधा राम लक्ष्मणसे युद्ध करते भये। लवण तो रामसे लड़े अर अंकुश लक्ष्मणसे लड़े सो लवने आवते ही श्रीरामकी ध्वजा छेदी अर धनुष तोड़ा तब राम हंसकर और धनुष लेयवेको उद्यमी भया। इतनेविषै लवने रामका रथ तोड़ा तब राम और रथ चढ़ प्रचंड है पराक्रम जिसका क्रोधकर भृकुटी चढ़ाय ग्रीषमके सूर्य समान तेजस्वी जैसे चमरेंद्रपर इन्द्र जाय तैसे गया तब जानकीका नंदन लवण युद्धकी पाहुनगति करनेको रामके सन्मुख आया रामके अर लवके परस्पर महायुद्ध भया। वाने वाके शस्त्र छेदे वाने वाके जैसा युद्ध राम अर लवका भया तैसा ही अंकुश अर लक्ष्मणका भया। या भांति परस्पर दोनों युगल लड़े तब योधा भी परस्पर लड़े घोड़ोंके समूह रणरूप समुद्रकी तरङ्ग समान उछलते भये कोई एक योधा प्रतिपक्षीको टूटे बख्तर देख दयाकर मौन गह रहा अर कईएक योधा मने करते परसेनाविषै पैठे सो स्वामीका नाम उंचा-

रते परचक्रसे लड़ते भये कईएक महाभट माते हाथियोंसे भिड़ते भये कईएक हाथियोंके दांत रूप सेजपर रणनिद्रा सुखसे लेते भये काहू एक महाभटका तुरङ्ग काम आया सो पियादा ही लड़ने लगा काहूके शस्त्र टूट गये तो भी पीछे न होता भया हाथोंसे मुष्टि प्रहार करता भया अर कोईएक सामन्त बाण वाहने चुक गया उसे प्रतिपक्षी कहता भया बहुरि चलाय सो लज्जा कर न चलावता भया अर कोईएक निर्भयचित्त प्रतिपक्षीको शस्त्ररहित देख आप भी शस्त्र तज भुजावोंसे युद्ध करता भया ते योधा बड़े दाता रण संग्रामविषै प्राण देते भये परन्तु पीठ न देते भये जहां रुधिरकी कीच होय रही है सो रथोंके पहिये डूब गये हैं सारथी शीघ्र ही नहीं चला सके हैं। परस्पर शस्त्रोंके संपातकर अग्नि पड़ रही है अर हाथियोंकी सूंड़के छांटे उछले हैं। अर सामन्तोंने हाथियोंके कुम्भस्थल विदारे हैं सामन्तोंके उरस्थल विदारे हैं हाथी काम आय गये हैं तिनकर मार्ग रुक रहा है अर हाथियोंके मोती विखर रहे हैं वह युद्ध महा भयंकर होता भया जहां समन्त अपना सिर देयकर यशरूप रत्न खरीदते भये जहां मूर्छितपर कोई घात नहीं करै अर निर्बल पर घात न करै सामन्तोंका है युद्ध जहां महा-युद्धके करणहारे योधा जिनके जीवनेकी आशा नहीं क्षोभको प्राप्त भया समुद्र गाजै तैसा होय रहा है शब्द जहां सो वह संग्राम समरस कहिये समान रस होता भया॥

भावार्थ—न वह सेना हटी न वह सेना हटी योधानिमें न्यूनाधिकता परस्पर दृष्टि न पड़ी। कैसे हैं योधा ? स्वामीविषै हैं परम भक्ति जिनकी अर स्वामीने आजीविका दई थी उसके बदले यह जीव दिया चाहे हैं प्रचण्ड रणकी है खाज जिनके सूर्य समान तेजको धरे संग्रामके धुरन्धर होते भए॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषा वचनिकाविषै लवणांकुशका लक्ष्मणसेयुद्ध वर्णन करनेवाला एकसोदोवां पर्व पूर्ण भया ॥१०२॥

अथानन्तर—गौतम स्वामी कहे हैं—हे श्रेणिक! अब जो वृत्तांत भया सो सुनो अनंगलवणके तो सारथी राजा वज्रजंघ अर मदनांकुशके राजा पृथु अर लक्ष्मणके विराधित अर रामके कृतांतवक्र तब श्रीराम वज्रावर्त धनुषको चढ़ायकर कृतांतवक्रसे कहते भए अब तुम शीघ्र ही शत्रुवों पर रथ चलावो ढील न करो,

तब वह कहता भया हे देव ! देखो यह घोड़े नरवीरके बाणनिकर जरजरे होय रहे हैं इनमें तेज नाहीं मानों निद्राको प्राप्त भए हैं यह तुरंग लोहूकी धाराकर धरतीको रगे हैं मानों अपना अनुराग प्रभुको दिखावे हैं अर मेरी भुजा इसके बाणनिकर भेदी गई है बख्तर टूट गया है तब श्रीराम कहते भए मेरा भी धनुष युद्ध कर्मरहित ऐसा होय गया है मानों चित्रामका धनुष हैं अर यह मूसल भी कार्यरहित होय गया है अर दुर्निवार जे शत्रु रूप गजराज तिनको अंकुश समान यह हल सो भी शिथिलताको भजे है शत्रुके पक्षको भयंकर मेरे अमोघशस्त्र जिनकी सहस्र सहस्र यक्ष रक्षा करें वे शिथिल होय गये हैं शस्त्रोंकी सामर्थ्य नाहीं जो शत्रु पर चलें । गौतमस्वामी कहे हैं—हे श्रेणिक ! जैसे अनंगलवण आगे रामके शस्त्र निरर्थक होय गये तैसे ही मदनांकुशके आगे लक्ष्मणके शस्त्र कार्यरहित होय गए । वे दोनों भाई तो जानें कि ये राम लक्ष्मण तो हमारे पिता अर पितृव्य (चचा) हैं सो वे तो इनका अंग बचाय शर चलावें अर ये उनको जानें नहीं सो शत्रु जान कर शर चलावें लक्ष्मण दिव्यास्त्रकी सामर्थ्य उनपर चलवेकी न जान शर शेल सामान्यचक्र खड्ग अंकुश चलावता भया सो अंकुशने वज्रदण्डकर लक्ष्मणके आयुध निराकरण किए अर रामके चलाए आयुध लवणने नराकरण किए फिर लवणने रामकी ओर शेल चलाया अर अंकुशने लक्ष्मण पर चलाया सो ऐसी निपुणतासे दोनोंके मर्मकी ठौर न लागे समान्य चोट लगी सो लक्ष्मणके नेत्र घूमने लगे विराधितने अयोध्याकी ओर रथ फेरा तब लक्ष्मण सचेत होय कोप कर विराधितसे कहता भया—हे विराधित ! तैंने क्या किया मेरा रथ फेरा अब पीछा बहुरि शत्रुका सन्मुख लेवो रणमें पीठ न दीजिए जे शूरवीर हैं तिनको शत्रुके सन्मुख मरण भला परन्तु यह पीठ देना महा निंद्यकर्म शूरवीरोंको योग्य नाहीं । कैसे हैं शूरवीर ? युद्धमें बाणनिकर पूरित है अंग जिनका जे देव मनुष्यनिकर प्रशंसा योग्य वे कायरता कैसे भजें । मैं दशरथका पुत्र रामका भाई वासुदेव पृथिवीविषै प्रसिद्ध सो संग्राममें पीठ कैसे देऊं यह वचन लक्ष्मणने कहे तब विराधितने रथको युद्धके सन्मुख किया सो लक्ष्मणके अर मदनांकुशके महायुद्ध भया लक्ष्मणने क्रोधकर महाभयंकर चक्र हाथमें लिया चक्र महाज्वाला रूप देखा न जाय

ग्रीष्मके सूर्य समान सो अंकुश पर चलाया सो अंकुशके समीप जाय प्रभारहित होय गया अर उलटा ल-क्ष्मणके हाथमें आया बहुरि लक्ष्मणने चक्र चलाया सो पीछे आया या भांति बारबार पीछा आया बहुरि अंकुशने धनुष हाथविषै गहा तब अंकुशको महा तेजरूप देख लक्ष्मणके पक्षके सब सामन्त आश्चर्यको प्राप्त भए तिनको यह बुद्धि उपजी यह महापराक्रमी अर्धचक्री उपजा लक्ष्मणने कोटि शिला उठाई अर मुनिके वचन जिनशासनका कथन और भांति कैसे होय अर लक्ष्मण भी मनविषै जानता भया कि ये बलभद्र नारायण उपजे आप अति लज्जावान होय युद्धकी क्रियासे शिथिल भया ॥

अथानन्तर—लक्ष्मणको शिथिल देख सिद्धार्थ नारदके कहेसे लक्ष्मणके समीप आय कहता भया वा-सुदेव तुमही हो जिनशासनके वचन सुमेरुसे अति निश्चल हैं यह कुमार जानकीके पुत्र हैं गर्भविषै थे तब जानकीको वनमें तजी यह तिहारे अंग हैं तातैं इनपर चक्रादिक शस्त्र न चलें तब लक्ष्मणने दोनों कुमारों-का वृत्तांत सुन हर्षित होय हाथसे हथियार डार दिए बख्तर दूर किया सीताके दुःखकर अश्रुपात डारने लगा अर नेत्र घूमने लगे राम शस्त्र डार बख्तर उतार मोहकर मूर्च्छित भए, चन्दनसे छांट सचेत किए तब स्नेहके भरे पुत्रनिके समीप चले पुत्र रथसे उतर हाथ जोड़ सीस नवाय पिताके पायन पड़े श्रीराम स्नेहकर द्रवीभूत भया है मन जिनका पुत्रोंको उरसे लगाय विलाप करते भये आंसुनि कर मेघकासा दिन किया। राम कहे हैं हाय पुत्र हो! मैं मंदबुद्धि गर्भविषै तिष्ठते तुमको सीता सहित भयंकर वनविषै तजे तिहारी माता निर्दोष, हाय पुत्र हो! मैं कोई विस्तीर्ण पुण्य कर तुम सारिखे पुत्र पाये सो उदर विषै तिष्ठते तुम भयङ्कर वनविषै कष्टको प्राप्त भये हाय वत्स हो! जो यह वज्रजंघ वनमें न आवता तो तिहारा मुखरूप च-न्द्रमा मैं कैसे देखता, हाय बालक हो। इन अमोघ दिव्यास्त्रोंकर तुम न हते गये सो मेरे पुण्यके उदयकर देवोंने सहाय करी हाय मेरे अङ्गज हो मेरे बाणनिकर बींधे तुम रणक्षेत्रविषै पड़ते तो न जानूं जानकी क्या करती सब दुःखोंमें घरसे काढनेका बड़ा दुःख है सो तिहारी माता महा गुणवन्ती व्रतवंती पतिव्रता मैं वनमें तजी अर तुमसे पुत्र गर्भविषै सो मैं यह काम बहुत बिन समझे किया अर जो कदाचित् तिहारा

तव वह कहता भया हे देव ! देखो यह घोड़े नरवीरके वाणनिकर जरजरे होय रहे हैं इनमें तेज नाहीं मानों निद्राको प्राप्त भए हैं यह तुरंग लोहूकी धाराकर धरतीको रंगे हैं मानों अपना अनुराग प्रभुको दिखावे हैं अर मेरी भुजा इसके वाणनिकर भेदी गई है वख्तर टूट गया है तव श्रीराम कहते भए मेरा भी धनुष युद्ध कर्मरहित ऐसा होय गया है मानों चित्रामका धनुष है अर यह मूसल भी कार्यरहित होय गया है अर दुर्निवार जे शत्रु रूप गजराज तिनको अंकुश समान यह हल सो भी शिथिलताको भजे है शत्रुके पक्षको भयंकर मेरे अमोघशस्त्र जिनकी सहस्र सहस्र यक्ष रक्षा करें वे शिथिल होय गये हैं शस्त्रोंकी सामर्थ्य नाहीं जो शत्रु पर चलें। गौतमस्वामी कहे हैं—हे श्रेणिक ! जैसे अनंगलवण आगे रामके शस्त्र निरर्थक होय गये तैसे ही मदनांकुशके आगे लक्ष्मणके शस्त्र कार्यरहित होय गए। वे दोनों भाई तो जानें कि ये राम लक्ष्मण तो हमारे पिता अर पितृव्य (चचा) हैं सो वे तो इनका अंग बचाय शर चलावें अर ये उनको जानें नहीं सो शत्रु जान कर शर चलावें लक्ष्मण दिव्यास्त्रकी सामर्थ्य उनपर चलवेकी न जान शर शेल सामान्यचक्र खड्ग अंकुश चलावता भया सो अंकुशने वज्रदण्डकर लक्ष्मणके आयुध निराकरण किए अर रामके चलाए आयुध लवणने नराकरण किए फिर लवणने रामकी ओर शेल चलाया अर अंकुशने लक्ष्मण पर चलाया सो ऐसी निपुणतासे दोनोंके मर्मकी ठौर न लागे समान्य चोट लगी सो लक्ष्मणके नेत्र घूमने लगे विराधितने अयोध्याकी ओर रथ फेरा तव लक्ष्मण सचेत होय कोप कर विराधितसे कहता भया—हे विराधित। तैंने क्या किया मेरा रथ फेरा अव पीछा वहुरि शत्रुका सन्मुख लेवो रणमें पीठ न दीजिए जे शूरवीर हैं तिनको शत्रुके सन्मुख मरण भला परन्तु यह पीठ देना महा निंद्यकर्म शूरवीरोंको योग्य नाहीं। कैसे हैं शूरवीर ? युद्धमें वाणनिकर पूरित है अंग जिनका जे देव मनुष्यनिकर प्रशंसा योग्य वे कायरता कैसे भजें। मैं दशरथका पुत्र रामका भाई वासुदेव पृथिवीविषै प्रसिद्ध सो संग्राममें पीठ कैसे देऊं यह वचन लक्ष्मणने कहे तव विराधितने रथको युद्धके सन्मुख किया सो लक्ष्मणके अर मदनांकुशके महायुद्ध भया लक्ष्मणने क्रोधकर महाभयंकर चक्र हाथमें लिया चक्र महाज्वाला रूप देखा न जाय

ग्रीष्मके सूर्य समान सो अंकुश पर चलाया सो अंकुशके समीप जाय प्रभारहित होय गया अर उलटा लक्ष्मणके हाथमें आया बहुरि लक्ष्मणने चक्र चलाया सो पीछे आया या भांति बारबार पीछा आया बहुरि अंकुशने धनुष हाथविषै गहा तब अंकुशको महा तेजरूप देख लक्ष्मणके पक्षके सब सामन्त आश्चर्यको प्राप्त भए तिनको यह बुद्धि उपजी यह महापराक्रमी अर्धचक्री उपजा लक्ष्मणने कोटि शिला उठाई अर मुनिके वचन जिनशासनका कथन और भांति कैसे होय अर लक्ष्मण भी मनविषै जानता भया कि ये बलभद्र नारायण उपजें आप अति लज्जावान होय युद्धकी क्रियासे शिथिल भया ॥

अथानन्तर—लक्ष्मणको शिथिल देख सिद्धार्थ नारदके कहेसे लक्ष्मणके समीप आय कहता भया वासुदेव तुमही हो जिनशासनके वचन सुमेरुसे अति निश्चल हैं यह कुमार जानकीके पुत्र हैं गर्भविषै थे तब जानकीको वनमें तजी यह तिहारे अंग हैं तातैं इनपर चक्रादिक शस्त्र न चलें तब लक्ष्मणने दोनों कुमारोंका वृत्तांत सुन हर्षित होय हाथसे हथियार डार दिए बख्तर दूर किया सीताके दुःखकर अश्रुपात डारने लगा अर नेत्र घूमने लगे राम शस्त्र डार बख्तर उतार मोहकर मूर्च्छित भए, चन्दनसे छांट सचेत किए तब स्नेहके भरे पुत्रनिके समीप चले पुत्र रथसे उतर हाथ जोड़ सीस नवाय पिताके पायन पड़े श्रीराम स्नेहकर द्रवीभूत भया है मन जिनका पुत्रोंको उरसे लगाय विलाप करते भये आंसुनि कर मेघकासा दिन किया। राम कहे हैं हाय पुत्र हो ! मैं मंदबुद्धि गर्भविषै तिष्ठते तुमको सीता सहित भयंकर वनविषै तजे तिहारी माता निर्दोष, हाय पुत्र हो ! मैं कोई विस्तीर्ण पुण्य कर तुम सारिखे पुत्र पाये सो उदर विषै तिष्ठते तुम भयङ्कर वनविषै कष्टको प्राप्त भये हाय वत्स हो । जो यह वज्रजंघ वनमें न आवता तो तिहारा मुखरूप चन्द्रमा मैं कैसे देखता, हाय बालक हो ! इन अमोघ दिव्यास्त्रोंकर तुम न हते गये सो मेरे पुण्यके उदयकर देवोंने सहाय करी हाय मेरे अङ्गज हो मेरे बाणनिकर बींधे तुम रणक्षेत्रविषै पड़ते तो न जानूं जानकी क्या करती सब दुःखोंमें घरसे काढनेका बड़ा दुःख है सो तिहारी माता महा गुणवन्ती व्रतवंती पतिव्रता मैं नमें तजी अर तुमसे पुत्र गर्भविषै सो मैं यह काम बहुत बिन समझे किया अर जो कदाचित् तिहारा

युद्धमें अन्यथा भाव भया होता तो मैं निश्चयसे जानूं हूं शोकसे विह्वल जानकी न जीवती। या भांति रामने विलाप किया, बहुरि कुमार विनयकर लक्ष्मणको प्रणाम करते भये लक्ष्मण सीताके शोकसे विह्वल आंसू डारता स्नेहका भरा दोनों कुमारनिको उरसे लगावता भया। शत्रुघ्न आदि यह वृत्तांत सुन तहां आए कुमार यथायोग्य विनय करते भये ये उरसों लगाय मिले। परस्पर अति प्रीति उपजी दोनों सेनाके लोक अतिहित कर परस्पर मिले क्योंकि जब स्वामीकूं स्नेह होय तब सेवकोंके भी होय सीता पुत्रोंका माहात्म्य देख अति हर्षित होय विमानके मार्ग होय पीछे पुण्डरीकपुरविषै गई अर भामण्डल विमानसे उतर स्नेहका भरा आंसू डारता भानजोंसे मिला, अतिहर्षित भया अर प्रीतिका भरा हनूमान उरसे लगाय मिला अर वारम्वार कहता भया भली भई, भली भई, अर विभीषण सुग्रीव विराधित सबही कुमारनिसे मिले, परस्पर हित संभाषण भया भूमिगोचरी विद्याधर सबही मिले अर देवनिका आगम भया सबोंको आनन्द उपजा राम पुत्रनिको पाय कर अति आनन्दको प्राप्त भए, सकल पृथिवीके राज्यसे पुत्रोंका लाभ अधिक मानते भए, जो रामके हर्ष भया सो कहिवेमें न आवै अर विद्याधरी आकाशविषे आनन्दसे नृत्य करती भईं अर भूमिगोचरिनिकी स्त्री पृथिवीविषैं नृत्य करती भईं अर लक्ष्मण आपको कृतार्थ मानता भया मानों सब लोक जीता हर्षसे फूल गए हैं लोचन जिनके, अर राम मनविषै जानता भया मैं सगर चक्रवर्ती समान हूं अर कुमार दोनों भीम अर भगीरथ समान हैं राम वज्रजंघसे अति प्रीति करता भया जो तुम मेरे भामंडल समान हो अयोध्यापुरी तो पहिले ही स्वर्गपुरी समान थी तो बहुरि कुमारनिके आयवेकर अति शोभायमान भई जैसे सुन्दर स्त्री सहजही शोभायमान होय अर शृङ्गार कर अति शोभाको पावै, श्रीराम लक्ष्मणसहित अर दोऊ पुत्रों सहित सूर्यकी ज्योतिसमान जो पुष्पक विमान उसविषे विराजे सूर्य समान है ज्योति जिनकी रामलक्ष्मण अर दोऊ कुमार अद्भुत आभूषण पहिरे सो कैसी शोभा बनी है मानों सुमेरुके शिखरपर महामेघ विजुरीके चमत्कार सहित तिष्ठा है॥

भावार्थ—विमान तो सुमेरुका शिखर भया अर लक्ष्मण महामेघका स्वरूप भया अर राम तथा

रामके पुत्र विद्युत् समान भये सो ये चढ़कर नगरके बाह्य उद्यान विषै जिनमंदिर हैं तिनके दर्शनको चले सो नगरके कोटपर ठौर ठौर ध्वजा चढ़ी हैं तिनको देखते धीरे धीरे जाय हैं लार अनेक राजा केई हाथियों पर चढ़े, केई घोड़ों पर केई रथों पर चढ़े जाय हैं अर पियादोंके समूह जाय हैं, धनुष बाण इत्यादि अनेक आयुध अर ध्वजा छत्रनिकर सूर्यकी किरण नजर नहीं पड़े हैं अर स्त्रीनिके समूह झरोखनि विषै बैठी देखे हैं। लव अंकुशके देखवेका सबनिकूं बहुत कौतूहल है नेत्ररूप अञ्जुलिनिकर लवणांकुशके सुन्दरतारूप अमृतका पान करे हैं सो तृप्त नाहीं होय हैं एकाग्रचित्त भई इनको देखे हैं अर नगरमें नर नारिनिकी ऐसी भीड भई काहूके हार कुण्डलकी गम्य नाहीं अर नारी जन परस्पर वार्ता करै हैं कोई कहे है—हे माता। टुक मुख इधर कर मोहि कुमारनिके देखिवेका कौतुक है। हे अखण्डकौतुके। तूने तो घनी बार लग देखे अब हमें देखने देवो अपना सिर नीचा कर ज्यों हमको दीखे कहा ऊंचा सिर कर रही है, कोई कहे है—हे सखि! तेरे सिरके केश बिखर रहे हैं, सो नीके समार अर कोई कहे है—हे चितमानसे कहिये एक ठौर नाहीं है चित्त जाका सो तू कहा हमारे प्राणोंको पीड़े है ने तू देखे यह गर्भवती स्त्री खड़ी है पीडित है कोऊ कहे टुक परे होहु कहा अचेतन होय रही है कुमारोंको न देखने देहै यह दोनों रामदेवके कुमार रामदेवके समीप बैठे अष्टमीके चन्द्रमासमान है ललाट जिनका कोई पूछे है इनमें लवण कौन अर अंकुश कौन यह तो दोनो तुल्यरूप भासे हैं तब कोई कहे है यह लाल वस्त्र पहिरे लवण है अर यह हरे वस्त्र पहिरे अंकुश है। अहो धन्य सीता महापुण्यवती जिनने ऐसे पुत्र जने अर कोई कहे है धन्य है वह स्त्री जिसने ऐसे वर पाए हैं एकाग्रचित्त भई स्त्री इत्यादि वार्ता करती भईं इनके देखवेमें है चित्त जिनका, अति भीड़ भई सो भीड़में कर्णाभरणरूप सर्पकी डाढकर डसे गये हैं कपोल जिनके सो न जानती भई तद्गत है चित्त जिनका काहूकी कांचीदाम जाती रही सो वाहि खबर नहीं काहूके मोतिनिके हार टूटे सो मोती बिखर रहे हैं। मानों कुमार आये सो ये पुष्पांजलि बरसे हैं अर केई एकोंको नेत्रोंकी पलक नहीं लगे हैं असवारी दूर गई है तोभी उसी ओर देखे हैं नगरकी उत्तम

स्त्री वेई भई वेल सो पुष्पवृष्टि करती भई सो पुष्पोंकी मकरंदकर मार्ग सुगन्ध होय रहा है श्रीराम अति शोभाकूं प्राप्त भए पुत्रोंसहित वनके चैत्यालयोंका दर्शनकर अपने मन्दिर आये। कैसा है मन्दिर? महा मंगलकर पूर्ण है ऐसे अपने प्यारे जनोंके आगमका उत्साह सुखरूप ताका वर्णन कहां लग करिये पुण्य रूपी सूर्यका प्रकाशकर फूला है मन कमल जिनका ऐसे मनुष्य वेई अद्भुत सुखकूं पावे हैं ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषा वचनिकाविषै राम लक्ष्मणसूं लवणांकुशका मिलाप वर्णन करनेवाला एकसौतीनवा पर्व पूर्ण भया॥१०३॥

अथानन्तर—विभीषण सुग्रीव हनूमान् मिलकर रामसे विनती करते भये हे नाथ! हमपर कृपा करो हमारी विनती मानो जानकी दुःखसे तिष्ठे हैं इसलिये यहां लायबेकी आज्ञा करो, तब राम दीर्घ उष्ण निश्वास नाख क्षण एक विचारकर बोले, मैं सीताको शील दोषरहित जानूं हूं, वह उत्तम चित्त है परन्तु लोकापवादकर घरसे काढा है अब कैसे बुलाऊं, इसलिये लोकनिको प्रतीति उपजायकर जानकी आवै तब हमारा उनका सहवास होय, अन्यथा कैसे होय इसलिये सब देशनिके राजानिको बुलावो समस्त विद्याधर अर भूमिगोचरी आवें सबनिके देखते सीता दिव्य लेकर शुद्ध होय मेरे घरविषै प्रवेश करे जैसे शची इंद्रके घरविषै प्रवेश करे तब सबने कही जो आप आज्ञा करोगे सोही होयगा तब सब देशनिके राजा बुलाये सो बाल वृद्ध स्त्री परिवार सहित अयोध्या नगरी आये जे सूर्यको भी न देखें घरहीविषै रहें वे नारी भी आईं अर लोकनिकी कहा बात? जे वृद्ध बहुत वृतान्तके जाननेहारे देशविषै मुखिया सब दिशानिसे आए कैयक तुरंगों पर चढ़ कैयक रथनिपर चढ़े तथा पालकी हाथी अर अनेक प्रकार असवारिनिपर चढ़े बड़ी विभूतिसे आये विद्याधर आकाशके मार्ग होय विमान बैठे आए अर भूमिगोचरी भूमिके मार्ग आये मानों जगत् जंगम होय गया, रामकी आज्ञासे जे अधिकारी हुते तिन्होंने नगरके बाहिर लोकनिके रहनेके लिये डेरे खड़े कराए अर महा विस्तीर्ण अनेक महिल बनाये तिनके दृढ़स्तंभके ऊंचे मंडप उदार झरोखे सुन्दर जाली तिनविषै स्त्रियें भेली अर पुरुष भेले भये, पुरुष यथायोग्य बैठे दिव्यको दिखबेकी है अभिलाषा जिनके जेते मनुष्य आए तिनकी सर्व भांति पाहुनगति राजद्वारके अधिकारियोंने करी, सबनिको

शय्या आसन भोजन तांबूल वस्त्र सुगंध मालादिक समस्त सामग्री राजद्वारसे पहुंची सबनिकी स्थिरता
करी अर रामकी आज्ञासे भामण्डल विभीषण हनूमान सुग्रीव विराधित रत्नजटी यह बड़े बड़े राजा आ-
काशके मार्ग क्षणमात्रविषै पुण्डरीकपुर गए सो सब सेना नगरके बाहिर राख अपने समीप लोगनि सहित
जहां जानकी थी वहां आए जय जय शब्दकर पुष्पांजलि चढ़ाय पांयनको प्रणामकर अति विनयसंयुक्त
आंगणविषै बैठे, तब सीता आंसू डारती अपनी निंदा करती भई—दुर्जनोंके वचनरूप दावानलकरि दग्ध
भये हैं अंग मेरे सो क्षीरसागरके जलकर भी सींचे शीतल न होंय। तब वे कहते भये हे देवि ! भगवति !
सौम्य उत्तमे ! अब शोक तजो अर अपना मन समाधानविषै लावो या पृथिवीविषै ऐसा कौन प्राणी है जो
तुम्हारा अपवाद करे ऐसा कौन जो पृथ्वीको चलायमान करे अर अग्निकी शिखाको पीवे अर सुमेरुके
उठायवेका उद्यम करै अर जीभकर चांद सूर्यको चाटै ऐसा कोई नाहीं। तुम्हारा गुणरूप रत्ननिका पर्वत
कोई चलाय न सके, अर जो तुम सारिखी महा सतियोंका अपवाद करे तिनकी जीभके हजार टूक क्यों
न होवें हम सेवकोंके समूहको भेजकर जो कोई भरतक्षेत्रविषै अपवाद करेंगे उन दुष्टोंका निपात करेंगे
अर जो विनयवान तुम्हारे गुणगायवे विषै अनुरागी हैं उनके गृहविषै रत्नवृष्टि करेंगे यह पुष्पक विमान
श्रीरामचन्द्रने भेजा है उसमें आनंदरूप होय अयोध्याकी तरफ गमन करो सब देश अर नगर अर श्रीराम-
का घर तुम बिना न सोहे जैसे चन्द्रकला विना आकाश न सोहे अर दीपक विना मंदिर न सोहे अर
शाखा विना वृक्ष न सोहे हे राजा जनककी पुत्री ! आज रामका मुखचन्द्र देखो, हे पण्डिते ! पतिव्रते !
तुमको अवश्य पतिका वचन मानना जब ऐसा कहा तब सीता मुख्य सहेलियोंको लेकर पुष्पक विमानविषै
आरूढ़ होय शीघ्रही संध्याके समय अयोध्या आई सूर्य अस्त होय गया सो महेंद्रोदय नामा उद्यानविषै
रात्रि पूर्ण करी आगे राम सहित यहां आवती हुती सो अति मनोहर देखती हुती सो अब राम
बिना रमणीक न भासा ॥

अथानन्तर—सूर्य उदय भया कमल प्रफुल्लित भये जैसे राजाके किंकर पृथ्वीविषै विचरें तैसे सूर्यकी

किरण पृथ्वीमें विस्तरी जैसे दिव्यकर अपवाद नस जाय तैसे सूर्यके प्रताप कर अंधकार दूर भया तब सीता उत्तम नारियों कर युक्त रामके समीप चली हथिनी पर चढ़ी मनकी उदासीनता कर हती गई है प्रभा जिसकी तौभी भद्र परिणामकी धरणहारी अत्यंत सोहती भई जैसे चन्द्रमाकी कला ताराओंकर मंडित सोहे वैसे सीता सखियोंकर मंडित सोहे। सब सभा विनयसंयुक्त सीताको देख वंदना करती भई यह पापरहित धीरताकी धरणहारी रामकी रमा सभाविषै आई राम समुद्र समान क्षोभको प्राप्त भये लोक सीताके जायवेकर विषादके भरे थे अर कुमारोंका प्रताप देख आश्चर्यके भरे भये अब सीताके आयवे कर हर्षके भरे ऐसे शब्द करते भए हे माता! सदा जयवंत होवो नंदो वरधो फूलो फलो धन्य यह रूप धन्य यह धीर्य धन्य यह सत्य धन्य यह ज्योति धन्य यह महानुभावता धन्य यह गंभीरता धन्य निर्मलता ऐसे वचन समस्तही नर नारीनिके मुखसे निकसे आकाशविषै विद्याधर भूमिगोचरी महा कौतुक भरे पलक रहित सीताके दर्शन करते भए। अर परस्पर कहते भए पृथ्वीके पुण्यके उदयसे जनकसुता पीछे आई, कैयक तो वहां श्रीरामकी ओर निरखे हैं जैसे इन्द्रकी ओर देव निरखें कैएक रामके समीप बैठे लव अर अंकुश तिनको देख परस्पर कहे हैं ये कुमार रामके सदृशही हैं अर कईएक लक्ष्मणकी ओर देखे हैं कैसे हैं लक्ष्मण शत्रुवोंके पक्षके क्षय करिवेको समर्थ अर कई शत्रुघ्नकी ओर कईएक भामण्डलकी ओर कईएक हनूमानकी ओर कईएक विभीषणकी ओर कईएक विराधितकी ओर अर कईएक सुग्रीवकी ओर निरखे हैं अर कईएक आश्चर्यको प्राप्त भए सीताकी ओर देखे हैं॥

अथानन्तर—जानकी जायकर रामको देख आपको वियोग सागरके अन्तको प्राप्त भई मानती भई, जब सीता सभामें आई तब लक्ष्मण अर्घ देय नमस्कार करता भया, अर सब राजा प्रणाम करते भए सीता शीघ्रता कर निकट आवने लगी तब राघव यद्यपि अक्षोभित हैं तथापि सकोप होय मनमें विचारते भए इसे विषम वनमें मेली थी सो मेरे मनकी हरणहारी फिर आई। देखो यह महा ढीठ है मैं तजी तौभी मोसे अनुराग नहीं छाड़े है यह रामकी चेष्टा जान महा सती उदासचित्त होय विचा-

रती भई मेरे वियोगका अन्त नहीं आया मेरा मनरूप जहाज विरहरूप समुद्रके तीर आय फटा चाहे है। ऐसी चितासे व्याकुल चित्त भई पगके अंगूठेसे पृथ्वी कुचरती भई बलदेवके समीप भामण्डलकी वहिन कैसी सोहे है जेसी इन्द्रके आगे सम्पदा सोहै तव राम बोले—हे सीते। मेरे आगे कहां तिष्ठे है तू परे जा, मैं तेरे देखवेका अनुरागी नाहीं मेरी आंख मध्याह्नके सूर्य अर आशीविष सर्प तिनको देख सके परंतु तेरे तनुको न देख सके है तू बहुत मास दशमुखके मन्दिरमें रही अब तोहि घरमें राखना मोहि कहा उचित तव जानकी बोली तुम महा निर्दई चित्त हो तुमने महा पण्डित होयकर भी मूढ़ लोकनकी न्याई मेरा तिरस्कार किया सो कहा उचित मुझ गर्भवतीको जिनदर्शनका अभिलाष उपजा हुता सो तुम कुटिलतासे यात्राका नाम लेय विषम वनमें डारी यह कहां उचित मेरा कुमरण होता अर कुगति जाती याविषे तुमको कहा सिद्ध होता, जो तिहारे मनविषै तजवेकी हुती तो आर्यिकावोंके समीप मेली होती। जे अनाथ दीन दरिद्री कुटुम्ब रहित महा दुखी तिनको दुख हरिवेका उपाय जिनशासनका शरण है या समान अर उत्कृष्ट नाहीं। हे पद्मनाभ! तुम करवेमें तो कछू कमी न करी अब प्रसन्न होवो आज्ञा करो सो करूं यह कहकर दुःखकी भरी रुदन करती भई। तब राम बोले हे देवि! मैं जानूं हूं तिहारा निर्दोषशील है अर तुम निष्पाप अणुव्रतकी धरणहारी मेरी आज्ञाकारिणी हो तिहारे भावनकी शुद्धता मैं भली भांति जानूं हूं परन्तु ये जगतके लोक कुटिल स्वभाव हैं। इन्होंने वृथा तिहारा अपवाद उठाया सो इनको संदेह मिटे अर इनको यथावत् प्रतीति आवे सो करहु। तब सीताने कही आप आज्ञा करो सो ही प्रमाण जगतविषै जेते प्रकारके दिव्य हैं सो सब करके पृथिवीका संदेह हरूं हे नाथ! विषोंविषै महाविष कालकूट है जिसे सूंघकर आशीविष सर्प भी भस्म होय जाय सो मैं पीऊं अर अग्निकी विषम ज्वालाविषै प्रवेश करूं अर जो आप आज्ञा करो सो करूं तब क्षण एक विचारकर राम बोले अग्नि कुण्डविषै प्रवेश करो, सीता महाहर्षकी भरी कहती भई यही प्रमाण। तब नारद मनविषै विचारते भए यह तो महा सती है परन्तु अग्निका कहा विश्वास याने मृत्यु आदरी अर भामण्डल, हनूमानादिक महाकोपसे पीड़ित

भये अर लव अंकुश माताका अग्निविषै प्रवेश करवेका निश्चय जान अति व्याकुल भये अर सिद्धार्थ दोनों भुजा ऊंचीकर कहता भया हे राम। देवोंसे भी सीताके शीलकी महिमा न कही जाय तो मनुष्य कहा कहैं। कदाचित सुमेरु पातालविषै प्रवेश करै अर समस्त समुद्र सूक जाय तौभी सीताका शीलव्रत चलायमान न होय, जो कदाचित् चन्द्रकिरण उष्ण होय, अर सूर्यकिरण शीतल होय तौभी सीताको दूषण न लगे मैं विद्याके बलसे पंच सुमेरुविषै तथा जे अर अकृत्रिम चैत्यालय शास्वते वहां जिनवन्दना करी—हे पद्मनाभ ! सीताके व्रतकी महिमा मैं ठौर २ मुनियोंके मुखसे सुनी है तातैं तुम महा विचक्षण हो महासतीको अग्नि प्रवेशकी आज्ञा न करो अर आकाशविषै विद्याधर और पृथिवीविषै भूमिगोचरी सब यही कहते भये-हे देव ! प्रसन्न होय सौम्यता भजो हे नाथ ! अग्नि समान कठोरचित्त न करो सीता सती है सीता अन्यथा नहीं अन्यथा जे महा पुरुषोंकी राणी होवें कदे ही विकाररूप न होवें सब प्रजाके लोक यही वचन कहते भये अर व्याकुल भये मोटी मोटी आंसुओंकी वृन्द डारते भये ॥

तव रामने कही तुम ऐसे दयावान् हो तो पहिले अपवाद क्यों उठाया ? रामने किंकरोंको अज्ञा करी एक तीनसै हाथ चौखटिया वापी खोदहु अर सूके ईंधन चन्दन अर कृष्णागुरु तिनकर भरहु अर अग्नि कर जाज्वल्यमान करहु साचात् मृत्युका स्वरूप करहु तब किंकरनिने आज्ञा प्रमाण कुदालनिसे खोद अग्निवापिका बनाई अर ताहि रात्रिकूं महेन्द्रोदय नामा उद्यानविषै सकलभूषण मुनिकूं पूर्व वेरके योग कर महा रौद्र विद्युद्वक्रनामा राक्षसीने अत्यन्त उपसर्ग किया सो मुनि अत्यन्त उपसर्गको जीत केवलज्ञानको प्राप्त भये। यह कथा सुन गौतमस्वामीसे श्रेणिकने पूछी हे प्रभो ! राक्षसीके अर मुनिके पूर्व वैर कहा ? तब गौतमस्वामी कहते भये हे श्रेणिक ! सुन—विजियार्द्ध गिरिके उतर श्रेणीविषै महा शोभायमान गुञ्जनामा नगर तहां राजा सिंहविक्रम राणी श्री ताके पुत्र सकलभूषण ताके स्त्री आठसै तिनमें मुख्य किरणमण्डला सो एक दिन उसने अपनी सौतिनके कहेसूं अपने मामाके पुत्र हेमशिखका रूप चित्रपटमें लिखा सो सकलभूषणने देख कोप किया तब सब स्त्रीनिने कही यह हमने सिखाया है इसका कोई दोष नहीं

तव सकलभूषण कोप तज प्रसन्न भया। एक दिन यह किरणमण्डला पतिव्रता पतिसहित सोती थी सो प्रमाद थकी वरडकर हेमशिख ऐसा नाम कहा सो यह तो निर्दोष इसके हेमशिखमें भाईकी बुद्धि अर सकलभूषणने कछु और भाव विचारा राणीसे कोपकर वैराग्यको प्राप्त भए अर राणी किरणमंडला भी आर्यिका भई परन्तु धनीसे द्वेष भाव जो इसने झूठा दोष लगाया सो मर कर विद्युद्वक्र नामा राक्षसी भई सो पूर्व वैर थकी सकलभूषण स्वामी आहारको जायं तव यह अन्तराय करे कभी माते हाथियाके बन्धन तुड़ाय देय हाथी ग्राममें उपद्रव करें इनको अन्तराय होय कभी यह आहारको जायं तव अग्नि लगाय देय कभी यह रजवृष्टि करे इत्यादि नाना प्रकारके अन्तराय करे कभी अश्वका कभी वृषभका रूपकर इनके सन्मुख आवे कभी मार्गमें कांटे वखेरे इस भांति यह पापिनी कुचेष्टा करे एक दिन स्वामी कायोत्सर्ग धर तिष्ठे थे अर इसने शोर किया यह चोर है सो इसका शोर सुनकर दुष्टोंने पकड़े अपमान किया फिर उत्तमपुरुषोंने छुड़ाय दिए एक दिन यह आहार लेकर जाते थे सो पापिनी राक्षसीने काहू स्त्रीका हार लेकर इनके गलेमें डार दिया अर शोर किया कि यह चोर है हार लिये जाय है तव लोग आय पहुंचे इनको पोड़ा करी हार लिया भले पुरुषोंने छुड़ाय दिये इस भांति यह क्रूरचित्त दयारहित पूर्व वैर विरोधसे मुनिको उपद्रव करे, गई रात्रिको प्रतिमा योग धर महेंद्रोदय नामा उद्यानविषै विराजे थे सो राक्षसीने रौद्र उपसर्ग किया वितर दिखाये अर हस्ती सिंह व्याघ्र सर्प दिखाए अर रूप गुण मंडित नाना प्रकारकी नारी दिखाईं भांति भांतिके उपद्रव किए परन्तु मुनिका मन न डिगा तव केवलज्ञान उपजा सो केवलकी महिमा कर दर्शनको इन्द्रादिक देव कल्पवासी भवनवासी व्यंतर जोतिषी कैयक हाथियोंपर चढ़े कैयक सिंहोंपर चढ़े कैयक ऊंट खच्चर मीढा वघेरा अष्टापद इनपर चढ़े कैयक पक्षियोंपर चढ़े कैयक विमान वैठे कैयक रथोंपर चढ़े कैयक पालकी चढ़े इत्यादि मनोहर वाहनोंपर चढ़े आए देवोंकी असवारीके तिर्यंच नाहीं देवोंहीकी माया है देव ही विक्रियाकर तिर्यंचका रूप धरे हैं आकाशके मार्ग होय महाविभूति सहित सर्व दिशाविषैं उद्योत करते आए मुकुट धरे हार कुण्डल पहिरे अनेक आभूषणोंकर शोभित सकलभूषण केवलीके दर्शन

को आये पवनसे चंचल है ध्वजा जिनकी अप्सरावोंके समूह सहित अयोध्याकी ओर आए महेंद्रोदय उद्यानविषे केवली विराजे हैं तिनके चरणारविंदविषै है मन जिनका पृथिवीकी शोभा देखते आकाशसे नीचे उतरे अर सीताके दिव्यको अग्निकुण्ड तयार होय रहा था सो देखकर एक मेघकेतु नामा देव कहता भया–हे देवेंद्र ! हे नाथ ! सीता महासतीको उपसर्ग आय प्राप्त भया है यह महाश्राविका पतिव्रता शीलवंती अति निर्मल चित्त है इसे ऐसा उपद्रव क्यों होय ? तब इन्द्रने आज्ञा करी हे मेघकेतु ! मैं सकलभूषण केवलीके दर्शनको जाऊं हूं अर तू महासतीका उपसर्ग दूर करियो । या भांति आज्ञाकर इन्द्र तो महेंद्रोदय नामा उद्यानविषै केवलीके दर्शनको गया अर मेघकेतु सीताके अग्निकुण्डके ऊपर आय आकाशविषै विमान विषै तिष्ठा । कैसा है विमान ? सुमेरुके शिखर समान है शोभा जिसकी, वह देव आकाशविषै सूर्य सारिखा देदीप्यमान श्रीरामकी ओर देखे राम महासुन्दर सब जीवोंके मनको हरे हैं ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषा वचनिकाविषै सकलभूषणकेवलीके दर्शनकू देवनिका आगमन वर्णन करनेवाला एकसौचारवा पर्व पूर्ण भया ॥ १०४ ॥

अथानन्तर—श्रीराम उस अग्निवापिकाको निरख कर व्याकुल मन भया विचारे है अब इस कांता को वहां देखूंगा यह गुणनिकी खान महा लावण्यता कर युक्त कांतिकी धरणहारी शील रूप वस्त्रकर मण्डित मालतीकी माला समान सुगन्ध सुकुमार शरीर अग्निके स्पर्शहीसे भस्म होय जायगी जो यह राजा जनकके घर न उपजती तो भला था यह लोकापवाद अग्निविषै मरण तो न होता.इस विना मुझे क्षणमात्र भी सुख नाहीं इस सहित वनविषै वास भला अर या विना स्वर्गका वास भी भला नाहीं यह महा शीलवंती परम श्राविका है इसे मरणका भय नाहीं इहलोक परलोक मरण वेदना. अकस्मात असहायता चोर यह सप्त भय तिनकर रहित सम्यग्दर्शन इसके दृढ़ है यह अग्निविषै प्रवेश करेगी अर मैं रोकूं तो लोगोंविषै लज्जा उपजे अर यह लोक सब मुझे कह रहे यह महासती है याहि अग्निकुण्डविषै प्रवेश न करावो सो मैं न मानी अर सिद्धार्थ हाथ ऊंचे कर कर पुकारा मैं न मानी सो वह भी चुप होय

रहा अब कौन मिसकर इसे अग्निकुण्डविषै प्रवेश न कराऊं अथवा जिसके जिस भांति मरण उदय होय है उसी भांति होय है टारा टरे नाहीं तथापि इसका वियोग मुझसे सहा न जाय या भांति राम चिंता करे हैं अर वापीविषै अग्नि प्रज्वलित भई समस्त नर नारियोंके आंसुवोंके प्रवाह चले धूमकर अन्धकार होय गया मानों मेघमाला आकाशविषै फैल गई आकाश भ्रमर समान श्याम होय गया अथवा कोकिल स्वरूप होय गया अग्निके धूमकर सूर्य आच्छादित हुवा मानों सीताका उपसर्ग देख न सका सो दया कर छिप-गया ऐसी अग्नि प्रज्वली जिसकी दूरतक ज्वाला विस्तरी मानों अनेक सूर्य ऊगे अथवा आकाशविषै प्रलय-कालकी सांझ फूली, जानिए दशो दिशा स्वर्णमई होय गई हैं मानों जगत् विजुरीमय होय गया अथवा सुमेरुके जीतवेको दूजा जंगम सुमेरु और प्रकटा तब सीता उठी अत्यन्त निश्चलचित्त कायोत्सर्ग कर अप-ने हृदयविषै श्रीऋषभादि तीर्थंकरदेव विराजे हैं तिनकी स्तुतिकर सिद्धोंको साधुवोंको नमस्कार कर श्री-मुनिसुव्रत नाथ हरिवंशके तिलक वीसवां तीर्थंकर जिनके तीर्थविषै ये उपजे हैं तिनका ध्यान कर सर्व प्रा-णियोंके हितु आचार्य तिनको प्रणाम कर सर्व जीवोंसे क्षमा भाव कर जानकी कहती भई मन कर वचन-कर कायकर स्वप्नविषै भी राम बिना और पुरुष मैंने न जाना जो मैं झूठ कहती हूं तो यह अग्निकी ज्वाला क्षणमात्रविषै मुझे भस्म करियो जो मेरे पतिव्रता भावविषै अशुद्धता होय राम सिवाय अर नर मनसे भी अभिलाषा होय तो हे वैश्वानर। मुझे भस्म करियो जो मैं मिथ्यादर्शिनी पापिनी व्यभिचारिणी हूं तो इस अग्निसे मेरा देह दाहको प्राप्त होवे अर जो मैं महा सती पतिव्रता अणुव्रतधारिणी श्राविका हूं तो मुझे भस्म न करियो, ऐसा कहकर नमोकार मन्त्र जप सीता सती अग्निवापिकामें प्रवेश करती भई सो याके शीलके प्रभावसे अग्नि था सो स्फटिक मणि सारिखा निर्मल शीतल जल हो गया मानों धरतीको भेदकर यह वापिका पातालसे निकसी जलविषै कमल फूल रहे हैं भ्रमर गुञ्जार करे हैं अग्निकी सामग्री सब वि-लाय गई न ईन्धन न अंगार जलके झाग उठने लगे अर अति गोल गंभीर महा भयङ्कर भ्रमर उठने लगे जैसी मृदङ्गकी ध्वनि होय तैसे शब्द जलविषै होते भए जैसा क्षोभको प्राप्त भया समुद्र गाजे तैसा शब्द

वापीविषै होता भया अर जल उछला पहले गोड़ोंतक आया बहुरि कमर तक आया फिर निमिषमात्र-विषै छाती तक आया तब भूमिगोचरी डरे अर आकाशविषै जे विद्याधर हुते तिनको भी विकल्प उपजा न जानिए क्या होय बहुरि वह जल लोगोंके कण्ठतक आया तब अति भय उपजा सिर ऊपर पानी चला तब लोग अति भयको प्राप्त भए ऊंची भुजाकर वस्त्र अर बालकोंको उठाय पुकार करते भए—हे देवि ! हे लक्ष्मी ! हे सरस्वति ! हे कल्याणरूपिणी ! हे धर्मधुरन्धरे ! हे मान्ये ! हे प्राणीदयारूपिणी ! हमारी रक्षा करो हे महासाध्वि ! मुनिसमान निर्मल मनकी धरणहारी ! दया करो ! हे माता ! बचावो बचाओ प्रसन्न होवो जब ऐसे वचन विह्वल जो लोक तिनके मुखसे निकसे तब माताकी दयासे जल थंभा लोक बचे जलविषै नाना जातिके ठौर ठौर कमल फूले जल सौम्यताको प्राप्त भया जे भंवर उठे थे सो मिटे अर भयङ्कर शब्द मिटे। वह जल जो उछला था सो मानों वापिरूप वधू अपने तरंगरूप हस्तोंकर माताके चरण युगल स्पर्शती थी। कैसे हैं चरण युगल ? कमलके गर्भसे हू अति कोमल हैं अर नखोंकी ज्योतिकर देदीप्यमान हैं जलविषै कमल फूले तिनकी सुगंधता कर भ्रमर गुञ्जार करे हैं सो मानों संगीत करे हैं अर क्रौंच चकवा हंस तिनके समूह शब्द करे हैं अति शोभा होय रही है अर मणि स्वर्णके सिवाण बन गए तिनको जलके तरंगोंके समूह स्पर्शे हैं अर जिसके तट मरकत मणि कर निर्मापे अति सोहे हैं ऐसे सरोवरके मध्य एक सहस्रदलका कमल कोमल विमल विस्तीर्ण प्रफुल्लित महाशुभ उसके मध्य देवनिने सिंहासन रचा रत्ननिकी किरणनिकर मण्डित चंद्रमण्डल तुल्य निर्मल उसमें देवांगनाओंने सीताको पधराई अर सेवा करती भई सो सीता सिंहासनविषै तिष्ठी अति अद्भुत है उदय जिसका शची तुल्य सोहती भई अनेक देव चरणनिके तले पुष्पांजलि चढ़ाय धन्य धन्य शब्द कहते भए आकाशविषै कल्पवृक्षनिके पुष्पनिकी वृष्टि करते भए, अर नाना प्रकारके दुन्दुभी बाजे तिनके शब्दकर सब दिशा शब्दरूप होती भईं गुञ्ज जातिके वादित्र महामधुर गुञ्जार करते भये अर मृदङ्ग बाजते भए ढोल दमामा बाजे नांदी जातके वादित्र बाजे अर कोलाहल जातिके वादित्र बाजे अर तुरही करनाल अनेक वादित्र बाजे शंखके समूह शब्द करते भए अर वीण बांसुरी बाजा ताल झांझ मंजीर झालरी इत्यादि अनेक

वादित्र वाजे विद्याधरनिके समूह नाचते भए अर देवनिके यह शब्द भए श्रीमत् जनक राजाकी पुत्री परम उदयकी धरणहारी श्रीमत् रामकी राणी अत्यन्त जयवंत होवे अहो निर्मल शील जिसका आश्चर्यकारी ऐसे शब्द सब दिशाविषै देवनिके होते भये तब दोनों पुत्र लवण अंकुश अकृत्रिम है मातासे हित जिनका सो जल तिरकर अतिहर्षके भरे माताके समीप गए दोनों पुत्र दोनों तरफ जाय ठाढे भए, माताको नमस्कार किया सो माताने दोनोंके शिर हाथ धरा रामचन्द्र मिथिलापुरीके राजाकी पुत्री मैथिली कहिए सीता उसे कमलवासिनी लक्ष्मी समान देख महा अनुरागके भरे समीप गए कैसो है सीता मानों स्वर्णकी मूर्ति अग्निविषै शुद्ध भई है अति उत्तम ज्योतिके समूहकर मंडित है शरीर जिसका राम कहे हैं हे देवि। कल्याणरूपिणी उत्तम जीवनिकर पूज्य महा अद्भुत चेष्टाकी धरणहारी शरदकी पूर्णमासीके चन्द्रमा समान है मुख जिसका ऐसी तुम सो हमपर प्रसन्न होवो अब मैं कभी ऐसा दोष न करूंगा जिसमें तुमको दुःख होय। हे शीलरूपिणी ! मेरा अपराध क्षमा करो मेरे आठ हजार स्त्री हैं तिनकी सिरताज तुम हो, मोको आज्ञा करो सो करूं। हे महासती ! मैं लोकापवादके भयसे अज्ञानी होकर तुमको कष्ट उपजाया सो क्षमा करो अर हे प्रिये ! पृथ्वीविषै मो सहित यथेष्ट विहार करो यह पृथ्वी अनेक वन उपवन गिरियों कर मंडित है देव विद्याधरनिकर संयुक्त है समस्त जगतकर आदरसों पूजी थकी मोसहित लोकविषै स्वर्ग समान भोग भोगो उगते सूर्यसमान यह पुष्पकविमान उसविषै मेरे सहित आरूढ़ भई सुमेरु पर्वतके वनविषै जिनमंदिर हैं तिनका दर्शन कर अर जिन२ स्थाननिविषै तेरी इच्छा होय वहां क्रीड़ा करो। हे कांते ! तू जो कहे सोही मैं करूं तेरा वचन कदाचित् न उलंघूं देवांगना समान वह विद्याधरी तिनकर मंडित हे बुद्धिवंती ! तू ऐश्वर्यको भज, जो तेरी अभिलाषा होयगी सो तत्काल सिद्ध होयगी। मैं विवेक रहित दोषके सागरविषै मग्न तेरे समीप आया हूं सो साध्वि ! अब प्रसन्न होवो॥ अथानन्तर—जानकी बोली—हे राम ! तुम्हारा कुछ दोष नाहीं अर लोकोंका दोष नहीं मेरे पूर्वोपार्जित अशुभ कर्मके उदयसे यह दुःख भया मेरा काहू पर कोप नहीं तुम क्यों विषादको प्राप्त भए ? हे बलदेव ! तिहारे प्रसादसे स्वर्ग

समान भोग भोगे अब यह इच्छा है ऐसा उपाय करूं जिसकर स्त्रीलिंगका अभाव होय यह महाक्षुद्र विनश्वर भयंकर इन्द्रियनिके भोग मूढ जनोंकर सेव्य तिनकर कहा प्रयोजन ? में अनन्त जन्म चौरासी लक्ष योनिविषै खेद पाया अब समस्त दुःखके निवृत्तिके अर्थ जिनेश्वरी दीक्षा धरूंगी ऐसा कहकर नवीन अशोक वृक्षके पल्लव समान अपने जे कर तिनकर सिरके केश उपाड़ रामके समीप डारे सो इंद्र नील मणि समान श्याम सचिक्कण पातरे सुगन्ध वक्र लम्बायमान महामृदु महामनोहर ऐसे केशोंको देखकर राम मोहित होय मूर्च्छा खाय पृथ्वीविषै पडे सो जौंलग इनको सचेत करें तौंलग सीता पृथ्वीमती आर्यिकापै जायकर दीक्षा धरती भई एक वस्त्र मात्र है परिग्रह जिसके अर सब परिग्रह तजकर आर्यिकाके व्रत धर महा पवित्र परम वैराग्यकर युक्त व्रतकर शोभायमान जगतके वंदिवे योग्य होती भई अर राम अचेत भए थे सो मुक्ताफल अर मलयागिरि चन्दनके छांटिवे कर तथा ताड़के वीजनोकी पवन कर सचेत भए तब दशों दिशाकी ओर देखें तो सीताको न देख कर चित्त शून्य हो गया, शोक अर कषायकर युक्त महा गजराज पर चढ़ सीताकी ओर चले सिर पर छत्र फिरे हैं चमर ढुरे हैं जैसे देवनिकर मंडित इंद्र चले तैसे नरेन्द्रों कर युक्त राम चले कमल सारिखे हैं नेत्र जिनके कषाय वचन कहते भए अपने प्यारे जनका मरण भला परंतु विरह भला नहीं देवनिने सीताका प्रतिहार्य किया सो भला किया पर उसने हमको तजनो विचारा सो भला न किया अब मेरी राणी जो यह देव न दे तो मेरे अर देवनिके युद्ध होयगा यह देव न्यायवान् होयकर मेरी स्त्री क्यों हरें ऐसे अविचारके वचन कहे। लक्ष्मण समझावे सो समाधान न भया अर क्रोधसंयुक्त श्रीरामचन्द्र सकलभूषण केवलीको गंधकुटीको चले सो दूरसे सकलभूषण केवलीकी गंधकुटी देखी। केवली महाधीर सिंहासन पर विराजमान अनेक सूर्यकी दीप्ति धरें केवली ऋद्धिकर युक्त पापोंके भस्म करिवेको साक्षात् अग्निरूप जैसे मेघपटल रहित सूर्यका बिंब सोहे तैसे कर्मपटलरहित केवल ज्ञानके तेजकर परम ज्योतिरूप भासे हैं इंद्रादिक समस्त देव सेवा करे हैं दिव्य ध्वनि खिरे है धर्मका उपदेश होय है सो श्रीराम गंधकुटीको देख कर शांतचित्त होय हाथीसे उतर प्रभुके समीप गए तीन

प्रदक्षिणा देय हाथ जोड़ नमस्कार किया भगवान् केवली मुनियोंके नाथ तिनका दर्शन कर अति हर्षित भए वारम्वार नमस्कार किया केवलीके शरीरकी ज्योतिकी छटा राम पर आय पड़ी सो अति प्रकाशरूप होय गए भावसहित नमस्कार कर मनुष्यनिकी सभाविषे बेठे अर चतुरनिकायके देवोंकी सभा नाना प्रकारके आभूषण पहिरे ऐसी भासे मानों केवलीरूप जे रवि तिनकी किरण ही हैं अर राजावोंके राजा श्रीरामचंद्र केवलीके निकट ऐसे सोहे हैं मानों सुमेरुके शिखरके निकट कल्पवृक्ष ही हैं अर लक्ष्मण नरेंद्र मुकुट कुण्डल हारादि कर शोभित कैसे सोहैं मानों विजुरीसहित श्याम घटा ही है अर शत्रुघ्न शत्रुवोंके जीतनहारे ऐसे सोहैं मानों दूसरे कुबेर ही हैं अर लव अंकुश दोनों वीर महा धीर महा सुन्दरगुण सौभाग्यके स्थानक चांद सूर्यसे सोहैं अर सीता आर्यिका आभूषणादि रहित एक वस्त्र मात्र परिग्रह ऐसी सोहे मानों सूर्यकी मूर्ति शांतताको प्राप्त भई है। मनुष्य अर देव सब ही विनयसंयुक्त भूमिविषै बैठे धर्म्म श्रवणकी है अभिलाषा जिनकी। तहां एक अभयघोष नामा मुनि सब मुनिनिविषैं श्रेष्ट संदेहरूप आतापकी शांतिके अर्थ केवलीसे पूछते भए-हे सर्वोत्कृष्ट सर्वज्ञदेव। ज्ञानरूप शुद्ध आत्मतत्त्वका स्वरूप नीके जाननेसे मुनिनिको केवल बोध होय उसका निर्णय करो, तब सकलभूषण केवली योगीश्वरोंके ईश्वर कर्म्मोंके क्षयका कारण तत्त्वका उपदेश दिव्यध्वनिकर कहते भए—हे श्रेणिक। केवलीने जो उपदेश दिया उसका रहस्य में तुमको कहूं हूं जैसे समुद्रमेंसे एक बून्द कोई लेय तैसे केवलीकी वाणी अति अथाह उसके अनुसार संक्षेप व्याख्यान करूं हूं, सो सुनो॥

हो भव्य जीव हो। आत्मतत्त्व जो अपना स्वरूप सो सम्यक्दर्शन ज्ञान आनंद रूप अर अमूर्तीक चिद्रूप लोकप्रमाण असंख्य प्रदेशी अतेंद्री अखंड अव्याबाध निराकार निर्मल निरंजन परवस्तुसे रहित निज गुण पर्याय स्वद्रव्य स्वक्षेत्र स्वकाल स्वभाव कर अस्तित्व रूप हे जिसका ज्ञान निकट भव्योंको होय शरीरादिक पर वस्तु असार हैं आत्मतत्त्व सार है सो अध्यातम विद्या कर पाइये है वह सबका देखनहारा जाननहारा अनुभवदृष्टि कर देखिये आत्मज्ञान कर जानिये अर जड़ पदार्थ पुद्गल धर्म अधर्म

काल आकाश ज्ञेयरूप हैं ज्ञाता नाहीं अर यह लोक अनन्ते अलोकाकाशके मध्य अनन्तवें भागविषै तिष्ठे है अधोलोक मध्य लोक ऊर्ध्वलोक ये तीनलोक तिनविषै सुमेरु पर्वतकी जड़ हजार योजन उसके तले पाताल लोक है उसविषै सूक्ष्म स्थावर तो सर्वत्र हैं अर बादर स्थावर आधारविषै हैं विकलत्रय अर पंचेन्द्रिय तिर्यंच नाहीं मनुष्य नाहीं खरभाग पंचभागविषै भवनवासी देव तथा व्यंतरदेवनिके निवास हैं तिनके तले सात नरक हैं तिनके नाम रत्नप्रभा १ शर्करा २ बालुका ३ पंकप्रभा ४ धूमप्रभा ५ तमःप्रभा ६ महातमःप्रभा ७ सो सातों ही नरककी धारा महा दुःखकी देनहारी सदा अंधकाररूप हैं चार नरकविषै तो उष्णकी बाधा है अर पांचवें नरक ऊपरले तीन भाग उष्ण अर नीचला चौथा भाग शीत अर छठे नरक शीत ही हैं अर सातवें महा शीत ऊपरले नरकनिविषै उष्णता है सो महा विषम अर नीचले नरकनिविषै शीत है सो अति विषम नरकको भूमि महा दुस्सह परम दुर्गम हैं जहां राधि रुधिरका कीच है महादुर्गंध है श्वान सर्प मार्जार मनुष्य खर तुरङ्ग ऊंट इनका मृतक शरीर सड़ जाय उसकी दुर्गंधसे असंख्यातगुणी दुर्गंध है नाना प्रकार दुःखनिके सब कारण हैं अर पवन महा प्रचण्ड विकराल चले है जाकर भयंकर शब्द होय रहा है जे जीव विषय कषाय संयुत हैं कामी हैं कोधी हैं पंचइन्द्रियोंके लोलुपी हैं जैसे लोहेका गोला जलविषै डूबे तैसे नरकमें डूबे हैं जे जीवनिकी हिंसा करें मृषावाणी बोलें परधन हरें परस्त्री सेवें महा आरम्भी परिग्रही ते पापके भारकर नरकविषै पड़े हैं मनुष्य देह पाय जे निरन्तर भोगासक्त भये हैं जिनके जीभ वश नाहीं मन चंचल ते पापी प्रचण्ड कर्मके करणहारे नरक जाय हैं जे पाप करें करावें पापकी अनुमोदना करें ते आर्त रौद्र ध्यानी नरकके पात्र हैं वह वज्राग्निके कुण्डमें डारिये हैं वज्राग्निके दाहकर जलते थके पुकारे हैं अग्निकुण्डसे छूटे हैं तब वैतरणी नदीकी ओर शीतल जलकी वांछा कर जाय हैं वहां जल महा खार दुर्गंध उसके स्पर्शहीसे शरीर गल जाय है। दुःखका भाजन वैक्रियिक शरीर ताकर आयु पर्यंत नाना प्रकार दुःख भोगवे हैं पहिले नरक आयु उत्कृष्ट सागर १ दूजे ३ तीजे ७ चौथे १० पांचवें १७ छठे २२ सो पूर्णकर मरे हैं मारसे मरे नाही वैतरणीके दुःखसे डर छायाके अर्थ असिपत्र वनमें जा

य हैं तहां खड्ग बाण बरछी कटारी समीपत्र असराल पवनकर पड़े हैं तिनकर तिनका शरीर विदारा जाय है पछाड़ खाय भूमिमें पड़े है अर तिनको कभी कुंभी पाकमें पकावे हैं कभी नीचा माथा ऊंचा पगकर लटकावे हैं मुद्गरोंसे मारिये हैं कुहाड़ोंसे काटिये हैं करोतनसे विदारिये हैं घानीमें पेलिये हैं नाना प्रकारके छेदन भेदन हैं। यह नारकी जीव महा दीन महा तृषा कर तृषित पीनेका पानी मांगे हैं तब तांबादिक गला प्यावे हैं ते कहे हैं हम-का यहां तृषा नाही हमारा पीछा छोड़ दो तब बलात्कार तिनको पछाड़ संडासियोंसे मुख फार मार मार प्यावे है कण्ठ हृदय विदीर्ण होय जाय है उदर फट जाय है तीजे नरकतक तो परस्पर भी दुःख हैं अर असुर कुमारनिकी प्रेरणासे भी दुःख हैं अर चौथेसे लेय सातवें तक असुरकुमारनिका गमन नाहीं परस्पर ही पीड़ा उपजावे हैं नरकविषै निचलेसे निचले बढ़ता दुःख है सातवां नरक सबनिमें महादुःखरूप है नारकियोंको पहिला भव याद आवे है अर दूसरे नारकी तथा तीजे लग असुरकुमार पूर्वले कर्म याद करावे हैं तुम भले गुरुवोंके वचन उलंघ कुगुरु कुशास्त्रके बलकर मांसको निर्दोष कहते हुते नाना प्रकारके मांसकर अर मधुकर अर मदिरा कर कुदेवोंका आराधन करते हुते सो मांसके दोषसे नरकविषै पड़े हो ऐसा कहके इनहीका शरीर काट काट इनके मुखविषै देय हैं अर लोहेकी तथा तांबेके गोला चलते पछाड़ पछाड़ संडासियोंसे मुख फाड़ फाड़ छातीपर पांव देय देय तिनके मुखविषै घाले हैं अर मुद्गरोंसे मारे हैं अर मद्यपायियोंको मार मार ताता तांबा शीशा प्यावे हैं अर परदारारत पापियोंको वज्राग्निकर तप्तायमान लोहेकी जे पुतली तिनसे लिपटावे हैं अर जे परदारारत फूलनिके सेज सोते हैं तिनको सूलनिके सेजऊपर सुलावे हैं अर स्वप्नकी माया समान असार जो राज्य उसे पायकर जे गर्वे हैं अनीति करे हैं तिनको लोहेके कीलों पर बैठाय मुद्गरोंसे मारे हैं सो महा विलाप करे हैं इत्यादि पापी जीवोंको नरकके दुःख होय हैं सो कहांलग कहें एक निमिषमात्र भी नरकमें विश्राम नाहीं आयु पर्यंत तिलमात्र आहार नाहीं अर बून्दमात्र जलपान नाहीं केवल मारहीका आहार है। तातैं यह दुस्सह दुःख अधर्मके फल जान अधर्मको तजो ते अधर्म मधु मांसादिक अभक्ष्य भक्षण अन्याय वचन दुराचार रात्रिआहार वेश्यासेवन परदारा

गमन स्वामिद्रोह मित्रद्रोह विश्वासघात कृतघ्नता लम्पटता ग्रामदाह वनदाह परधनहरण अनागसेवन परनिंदा परद्रोह प्राणघात बहु आरम्भ बहुपरिग्रह निर्दयता खोटी लेश्या रौद्रध्यान मृषावाद कृपणता कठोरता दुर्जनता मायाचार निर्माल्यका अंगीकार माता पिता गुरुओंकी अवज्ञा बाल वृद्ध स्त्री दीन अनाथोंका पीड़न इत्यादि दुष्टकर्म नरकके कारण हैं वे तज शांतभावधर जिनाशासनको सेवो जाकर कल्याण होय। जीव छै कायके हैं पृथ्वी काय अप (जल) काय, तेजः (अग्नि) काय, वायुकाय, वनस्पतिकाय, त्रसकाय। तिनकी दया पालो अर जीव पुद्गल धर्म अधर्म आकाश काल यह छै द्रव्य हैं अर सात तत्व नव पदार्थ पंचास्ति-काय तिनकी श्रद्धा करो अर चतुर्दश गुणस्थान चतुर्दश मार्गणा स्वरूप अर सप्तभंगी वाणीका स्वरूप भलीभांति केवलीकी आज्ञा प्रमाण उरविषै धारो, स्यात्अस्ति, स्यात्नास्ति, स्यात् अस्ति नास्ति, स्यादव-क्तव्य, स्यात्अस्ति अवक्तव्य, स्यानास्ति अवक्तव्य, स्यात्अस्तिनास्ति अवक्तव्य ये सप्तभंग कहे अर प्रमाण कहिये वस्तुका सर्वांग कथन अर नय कहिये वस्तुका एक अंग कथन अर निक्षेप कहिये नाम स्थापना द्रव्य भाव ये चार अर जीवोंविषै एकेंद्रीके दोय भेद सूक्ष्म बादर अर पंचेंद्रीके दो भेद सैनी अ-सैनी अर वेइन्द्री तेइन्द्री चौइन्द्री ये सात भेद जीवोंके हैं सो पर्याप्त अपर्याप्तकर चौदह भेद जीवसमास होय हैं अर जीवके दो भेद एक संसारी एक सिद्ध। जिसमें संसारीके दो भेद—एक भव्य दूसरा अभव्य जो मुक्ति होने योग्य सो भव्य अर मुक्ति न होने योग्य सो अभव्य अर जीवका निज लक्षण उपयोग है उसके दोय भेद एक ज्ञान एक दर्शन। ज्ञान समस्त पदार्थोंको जाने दर्शन समस्त पदार्थोंको देखे। सो ज्ञानके आठ भेद मति श्रुति अवधि मनःपर्यय केवल कुमति कुश्रुत कुअवधि अर दर्शनके भेद चार—चक्षु अचक्षु अवधि केवल अर जिनके एक स्पर्शन इन्द्री होय सो स्थावर कहिये तिनके भेद पांच पृथिवी अप् तेज वायु वनस्पति अर त्रसके भेद चार वेइन्द्री तेइन्द्री चौइन्द्री पंचेंद्री—जिनके स्पर्श अर रसना वे द्वे इन्द्री, जिनके स्पर्श रसना नासिका सो तेइन्द्री, जिनके स्पर्श रसना नासिका चक्षु वे चौइन्द्री, जिनके स्पर्श रसना नासिका चक्षु श्रोत्र वे पंचेंद्री। चौइन्द्री तक तो सब संमूर्च्छन अर असैनी हैं अर पंचेन्द्रीविषे

केई सम्मूर्छन केई गर्भज तिनविषै केई सैनी केई असैनी जिनके मन वे सैनी अर जिनके मन नहीं वे असैनी अर जे गर्भसे उपज वे गर्भज अर जे गर्भविना उपजें स्वतः स्वभाव उपजें वे सम्मूर्छन। गर्भजके भेद तीन जरायुज अंडज पोतज। जे जराकर मण्डित गर्भसे निकसे मनुष्य घोटकादिक वे जरायुज अर जे विना जेरके सिंहादिक सो पोतज अर जे अण्डावोंसे उपजे पक्षी आदिक वे अण्डज अर देव नारकियोंका उपपाद जन्म है माता पिताके संग विनाही पुण्य पापके उदयसे उपजे हैं। देव तो उत्पादकशय्याविषै उपजे हैं अर नारकी विलोंमें उपजे हैं देवयोनि पुण्यके उदयसे है अर नारक योनि पापके उदयसे है अर मनुष्य जन्म पुण्य पापकी मिश्रतासे है अर तिर्यंच गति मायाचारके योगसे है देव नारकी मनुष्य इन विना सर्व तिर्यंच जानने, जीवोंकी चौरासी लाख योनिये हैं उनके भेद सुनो—पृथिवीकाय जलकाय अग्निकाय वायुकाय नित्य निगोद इतरनिगोद ये तो सात २ लाख योनि हैं सो बयालीस लाख योनि भईं अर प्रत्येक वनस्पति दस लाख ये बावन लाख भेद स्थावरके भये, अर वेइन्द्री तेइन्द्री चौइन्द्री ये दोय दोय लाख योनि उसके छे लाख योनि भेद विकलत्रयके भए अर पंचेंद्री तिर्यंचके भेद चार लाख योनियें सब तिर्यंच योनिके बासठ लाख भेद भए अर देवयोनिके भेद चार लाख नरकयोनिके भेद चार लाख अर मनुष्य योनिके चौदह लाख ये सब चौरासी लाख योनि महा दुःखरूप हैं इनसे रहित सिद्धपद ही अविनाशी सुखरूप है, संसारी जीव सब ही देहधारी हैं अर सिद्ध परमेष्ठी देहरहित निराकार हैं, शरीरके भेद पांच औदारिक, वैक्रियक, आहारक, तैजस, कार्म्मण, तिनविषै तैजस कार्म्मण तो अनादिकालसे सब जीवनको लग रहे हैं तिनका अन्तकर महा मुनि सिद्ध पद पावे हैं औदारिकसे असंख्यातगुणी अधिक वर्गणा वैक्रियिकके हैं अर वैक्रियकतैं असंख्यातगुणी आहारकके हैं अर आहारकतैं अनन्तगुणी तैजसकी हैं अर तैजसतैं अनन्तगुणी कार्म्मणकी हैं जा समय संसारी जीव देहकूं तजकर दूसरी गतिकूं जाय है ता समय अनाहार कहिए जितनी देरी एक गतिसे दूसरी गतिविषै जाते हुए जीवको लगे है उस अवस्थामें जीवको अनाहारी कहिये। अर जितना वक्त एक गतिसे दूसरी गतिमें जानेमें लगे सो वह एक समय तथा दो समय

अधिकतैं अधिक तीन समय लगै है सो ता समय जीवके तैजस अर कार्म्मण ये दो ही शरीर पाइये है बगैर शरीरके यह जीव सिवा सिद्ध अवस्थाके अर काहू अवस्थामें काहू समय नाहीं होता। या जीवके हर वक्त अर हर गतिमें जन्मते मरते साथ ही रहते हैं जा समय यह जीव घातिया अघातिया दोऊ प्रकारके कर्म चय करके सिद्ध अवस्थाको जाता है ता समय तैजस अर कार्म्मणका चय होता है अर जीवनिके शरीरोंके परमाणुओंकी सूक्ष्मता या प्रकार है—औदारिकतैं वैक्रियक सूक्ष्म अर वैक्रियकसे आहारक सूक्ष्म आहारकतैं तैजस सूक्ष्म अर तैजसतैं कार्म्मण सूक्ष्म है सो मनुष्य अर तिर्यंचनिके तो औदारिक शरीर है, अर देवनारकिनिके वैक्रियक है अर आहारक ऋद्धिधारी मुनिनिके संदेह निवारिवेके अर्थ दसवे द्वारसे निकसे है सो केवलीके निकट जाय संदेह निवार पीछा आय दशमें द्वारमें प्रवेश करे हैं, ये पांच प्रकारके शरीर कहे तिनमें एक काल एक जीवके कबहू चार शरीर हू पाइए ताका भेद सुनहु तीन तो सब ही जीवनिके पाइए, नर अर तिर्यंचके औदारिक अर देव नारकनिके वैक्रियक अर तैजस कार्म्मण सबोंके हैं तिनमें कार्म्मण तो दृष्टिगोचर नाहीं अर तैजस काहू मुनिके प्रकट होय है ताके भेद दोय हैं एक शुभ तैजस एक अशुभ तैजस। सो शुभ तैजस तो लोकनिको दुखी देख दाहिनी भुजातैं निकस लोकनिका दुःख निवारे है अर अशुभ तैजस क्रोधके योगकर वाम भुजातै निकसि प्रजाको भस्म करे है अर मुनिकूं हू भस्म करे है अर काहू मुनिके वैक्रिया ऋद्धि प्रकट होय है तब शरीरको सूक्ष्म तथा स्थूल करे हैं सो मुनिके चार शरीर हू काहू समय पाइए एक काल पांचों शरीर काहू जीवके न होंय ॥

अथानन्तर— मध्यलोकमें जम्बूद्वीप आदि असंख्यात द्वीप अर लवण समुद्र आदि असंख्यात समुद्र हैं शुभ हैं नाम जिनके सो द्विगुण द्विगुण विस्तारको लिए वलयाकार तिष्ठे हैं, सबके मध्य जम्बूद्वीप है ताके मध्य सुमेरु पर्वत तिष्ठे है सो लाख योजन ऊंचा है अर जे द्वीप समुद्र कहे तिनमें जम्बूद्वीप लाख योजनके विस्तार है अर प्रदक्षिणा तिगुणी कछु इक अधिक है अर जम्बूद्वीप विषे देवारण्य अर भूतारण्य दो वन हैं तिनविषै देवनिके निवास हैं अर षट् कुलाचल हैं। पूर्व समुद्रसूं पश्चिमके समुद्र तक लावे

पड़े हैं तिनके नाम हिमवान् महाहिमवान् निषध नील रुकमी शिखरी। समुद्रके जलका है स्पर्श जिनके तिनमें हृद अर हृदनिमें कमल तिनमें षट्कुमारिका देवी है श्री ह्री धृति कीर्ति बुद्धि लक्ष्मी अर जम्बूद्वीपमें सात क्षेत्र हैं—भरत हैमवत हरि विदेह रम्यक हैरण्यवत ऐरावत अर षट् कुलाचलनिसूं गंगादिक चौदह नदी निकसी हैं आदिकेसे तीन अर अंतकेसे तीन अर मध्यके चारोंसे दोय २ यह चौदह हैं अर दूजाद्वीप धातुकी खण्ड सो लवण समुद्रते दूना है ताविषें दोय सुमेरुपर्वत हैं अर बारह कुलाचल अर चौदह क्षेत्र। यहां एक भरत वहां दोय यहां एक हिमवान वहां दोय। याही भांति सर्व दुगुण जानने अर तीजा द्वीप पुष्कर ताके अर्ध भागविषें मानुषोत्तर पर्वत है सो अढ़ाई द्वीपही विषें मनुष्य पाये हैं आगे नाहीं, आधे पुष्करविषें दोय मेरु बारां कुलाचल चौदह क्षेत्र धातुकीखण्डद्वीप समान तहां जानने। अढ़ाई द्वीपविषें पांच सुमेरु तीस कुलाचल पांच भरत पांच ऐरावत पांच महाविदेह तिनमें एक सौ साठ विजय समस्त कर्मभूमिके क्षेत्र एक सौ सत्तर एक एक क्षेत्रमें छह छह खण्ड तिनमें पांच पांच म्लेच्छखण्ड एक-एक आर्यखण्ड आर्यखण्डमें धर्मकी प्रवृत्ति विदेहक्षेत्र अर भरत ऐरावत इनविषें कर्मभूमि तिनमें विदेह तो शाश्वती कर्मभूमि अर भरत ऐरावतमें अठारा कोड़ाकोड़ी सागर भोगभूमि दोय कोड़ाकोड़ी सागर कर्मभूमि अर देवकुरु उत्तरकुरु यह शाश्वती उत्कृष्ट भोगभूमि तिनमें तीन २ पल्यकी आयु अर तीन तीन कोसकी काय अर तीन तीन दिन पीछे अल्प आहार सो पांच मेरु संबंधी पांच देवकुरु पांच उत्तरकुरु अर हरि अर रम्यक यह मध्य भोगभूमि तिनविषें दोय पल्यकी आयु अर दोय कोसकी काय दोय दिन गए आहार। या भांति पांच मेरु सम्बन्धी पांच हरि पांच रम्यक यह दश मध्य भोगभूमि अर हैमवत हैरण्यवत यह जघन्य भोगभूमि तिनमें एक पल्यकी आयु अर एक कोसकी काय एक दिनके अन्तरे आहार, सो पांच मेरु संबन्धी पांच हैमवत पांच हैरण्यवत जघन्य भोगभूमि दश या भांति तीस भोगभूमि अढ़ाई द्वीपमें जाननी, अर पंच महा विदेह पंच भरत पंच ऐरावत यह पंद्रह कर्मभूमि हैं तिनमें मोक्षमार्ग प्रवरते है॥

अढाई द्वीपके आगे मानुषोत्तरके परे मनुष्य नाहीं देव अर तिर्यंच ही हैं तिनविषें जलचर तो तीन

ही समुद्रविषै हैं लवणोदधि कालोदधि तथा अन्तका स्वयंभूरमण इन तीन विना और समुद्रनिविषै जलचर नाहीं अर विकलत्रय जीव अढाईद्वीपविष हैं अर अन्तका स्वयंभूरमण द्वीप ताके अर्ध भागविषै नागेन्द्र पर्वत है. ताके परे आधे स्वयंभूरमण द्वीपविषै अर सारे स्वयंभूरमण समुद्रविषै विकलत्रय हैं। मानुषोत्तरसे लेय नागेन्द्र पर्वत पर्यंत जघन्य भोगभूमिकी रीति है, वहां तिर्यंचनिका एक पल्यका आयु है अर सूक्ष्म स्थावर तो सर्वत्र तीन लोकमें हैं अर वादर स्थावर आधारविषै सर्वत्र नाही एकराजूविषै समस्त मध्य लोक है। मध्य लोकमें अष्ट प्रकार व्यंतर अर दश प्रकार भवनपतियोंके निवास हैं अर ऊपर ज्योतिषी देवनिके विमान हे तिनके पांच भेद चन्द्रमा सूर्य ग्रह तारा नक्षत्र सो अढ़ाई द्वीपमें ज्योतिषी चर हू हैं अर स्थिर हू हैं आगे असंख्यात द्वीपनिमें ज्योतिषी देवनिके विमान स्थिर ही हैं वहुरि सुमेरुके ऊपर स्वर्गलोक है तहां सोलह स्वर्ग तिनके नाम—सौधर्म ईशान सनत्कुमार महेन्द्र ब्रह्म ब्रह्मोत्तर लांतव कापिष्ठ शुक्र महाशुक्र शतार सहस्रार आनत प्राणत आरण अच्युत यह सोलह स्वर्ग तिनमें कल्पवासी देव देवी हैं अर सोलह स्वर्गनिके ऊपर नवग्रीव तिनके ऊपर नव अनुत्तर तिनके ऊपर पंचोत्तर विजय वैजयन्त जयंत अपराजित सर्वार्थसिद्धि। यह अहमिन्द्रनिके स्थानक हैं जहां देवांगना नाहीं अर स्वामी सेवक नाहीं और ठौर गमन नाहीं, अर पांचवां स्वर्ग ब्रह्म ताके अन्तमे लौकान्तिक देव हे तिनके देवांगना नाहीं वे देवर्षि हैं। भगवानके तप कल्याणमें ही आवें, ऊर्ध्वलोकमें देव ही हैं अथवा पंच स्थावर ही हैं। हे श्रेणिक। यह तीन लोकका व्याख्यान जो केवलीने कहा ताका संक्षेपरूप जानना विस्तारसू त्रिलोकसारसू जानना तीनलोकके शिखर सिद्धलोक है ता समान देदीप्यमान और क्षेत्र नाहीं जहां कर्म वंधनसे रहित अनंत सिद्ध विराजे हैं मानों वह मोक्ष स्थानक तीन भवनका उज्जल छत्र ही है वह मोक्ष स्थानक अष्टमी धरा है ये अष्ट पृथिवीके नाम नारक १ भवनवासी२ मानुष३ ज्योतिषी ४ स्वर्गवासी५ ग्रीव६ अर अनुत्तर विमान ७ मोक्ष ८ ये आठ पृथिवी हैं सो शुद्धोपयोगके प्रसादकर जे सिद्ध भये हैं तिनकी महिमा कही न जाय तिनका मरण नाहीं वहुरि जन्म नाहीं, महा सुखरूप हे, अनन्त शक्तिके धारक समस्त दुःखरहित महानिश्चल

सर्वके ज्ञाता दृष्टा हैं ॥ यह कथन सुन श्रीरामचन्द्र सकलभूषण केवलीसूं पूछते भये-हे प्रभो ! अष्टकर्म रहित अष्टगुण आदि अनन्त गुण सहित सिद्ध परमेष्ठी संसारके भावनेसे रहित हैं सो दुःख तो उनको काहू प्रकारका नाहीं अर सुख कैसा है ? तब केवली दिव्य ध्वनिकर कहते भये-इस तीन लोकविषै सुख नाहीं दुःखही है अज्ञानसे वृथा सुख मान रहे हैं । संसारका इन्द्रियजनित सुख बाधासंयुक्त क्षणभंगुर है अष्टकर्म कर बंधे सदा पराधीन ये जगत्के जीव तिनके तुच्छ मात्रहू सुख नाही जैसे स्वर्ण का पिंड लोहकर संयुक्त होय तब स्वर्णकी कांति दब जाय है तैसे जीवकी शक्ति कर्मनिकर दब रही है सो सुखरूप नाहीं दुःखही भोगवे हैं यह प्राणी जन्म जरा मरण रोग शोक जे अनन्त उपाधि तिनकर महापीड़ित हैं तनुका अर मनका दुःख मनुष्य तिर्यंच नारकीनिको है अर देवनिको दुःख मनहीका है सो मनका महा दुःख है ताकर पीड़ित हैं। या संसारविषै सुख काहेका ? ये इन्द्रियजनित विषयके सुख इन्द्र धरणींद्र चक्रवर्तीनिकूं शहतकी लपेटी खड्गकी धारा समान हैं अर विषमिश्रित अन्न समान हैं अर सिद्धनिके मन इंद्रिय नाहीं शरीर नाहीं केवल स्वाभाविक अविनाशी उत्कृष्ट निराबाध निरुपम सुख है ताकी उपमा नाहीं जैसे निद्रारहित पुरुषकूं सोयवे कर कहा अर निरोगनिको औषधिकर कहा ? तैसे सर्वज्ञ वीतराग कृतार्थ सिद्ध भगवान तिनको इन्द्रीनिके विषयनिकर कहा ? दीपको सूर्य चन्द्रादिककर कहा ? जे निर्भय जिनके शत्रु नाहीं तिनके आयुधनिकर कहा ? जे सबके अंतर्यामी सबको देखे जानें जिनके सकल अर्थ सिद्ध भये कछु करना नाहीं वांछा काहू वस्तुकी नाही ते सुखके सागर हैं । इच्छा मनसे होय है सो मन नाहीं आत्मसुखविषै तृप्त परम आनंद स्वरूप क्षुधा तृषादि बाधारहित हैं तीर्थंकर देव जा सुखकी इच्छा करें ताकी महिमा कहांलग कहिए अह-मिंद्र इन्द्र नागेन्द्र नरेंद्र चक्रवर्त्यादिक निरंतर ताही पदका ध्यान करे हैं अर लौकांतिक देव ताही सुखके अभिलाषी हैं ताकी उपमा कहांलग करें । यद्यपि सिद्ध पदका सुख उपमारहित केवलीगम्य है तथापि प्रतिबोधके अर्थ तुमको सिद्धनिके सुखका कछु इक वर्णन करे हैं । अतीत अनागत वर्तमान तीन कालके तीर्थङ्कर चक्रवर्त्यादिक सर्व उत्कृष्ट भूमिके मनुष्यनिका सुख अर तीन कालका भोगभूमिका सुख अर

इंद्र अहमिंद्र आदि समस्त देवनिका सुख भूत भविष्यत् वर्तमान कालका सकल एकत्र करिए अर ताहि अनंत गुणा फलाइए सो सिद्धनिके एक समयके सुख तुल्य नाहीं, काहेसे ? जो सिद्धनिका सुख निराकुल निर्मल अव्याबाध अखण्ड अतीन्द्रिय अविनाशी है अर देव मनुष्यनिका सुख उपाधिसंयुक्त बाधासहित विकल्परूप व्याकुलताकर भरा विनाशीक है अर एक दृष्टांत और सुनहु–मनुष्यनितें राजा सुखी राजानितें चक्रवर्ती सुखी अर चक्रवर्तीनितें वितरदेव सुखी अर वितरनिसे ज्योतिषी देव सुखी तिनतें भवनवासी अधिक सुखी अर भवनवासिनितें कल्पवासी सुखी अर कल्पवासीनितें नवग्रीवके सुखी नवग्रीवतें नवअनुत्तर के सुखी अर तिनते पंच पंचोत्तरके सुखी पंचोत्तर सर्वार्थसिद्धि समान और सुखी नाहीं सो सर्वार्थसिद्धिके अहमिंद्रनिते अनंतानंत गुणा सुख सिद्धपदमें है, सुखकी हद्द सिद्धपदका सुख है अनंतदर्शन अनंतज्ञान अनंत सुख अनंत वीर्य्य यह आत्माका निज स्वरूप सिद्धनिमें प्रवर्ते है अर संसारी जीवनिके दर्शन ज्ञान सुख वीर्य कर्मनिके क्षयोपशमसे बाह्य वस्तुके निमित्त थकी विचित्रता लिए अल्परूप प्रवरते है, यह रूपादिक विषय सुख व्याधिरूप विकल्परूप मोहके कारण इनमें सुख नाहीं जैसे फोड़ा राध रुधिरकर भरा फूलै ताहि सुख कहां ? तैसे विकल्परूप फोड़ा महाव्याकुलतारूप राधका भरा जिनके है तिनके सुख कहां ? सिद्ध भगवान गतागतरहित समस्त लोकके शिखर विराजे हैं तिनके सुख समान दूजा सुख नाहीं जिनके दर्शन ज्ञान लोकालोकको देखें जानें तिन समान सूर्य कहां ? सूर्य तो उदय अस्तकूं धरे है सकल प्रकाशक नाहीं, वह भगवान सिद्ध परमेष्ठी हथेलीमें आंवलेकी नाईं सकल वस्तुको देखे जाने हैं, छद्मस्थ पुरुषका ज्ञान उन समान नाहीं, यद्यपि अवधिज्ञानी मनःपर्ययज्ञानी मुनि अविभागी परमाणु पर्यंत देखे हैं अर जीवनिके असंख्यात जन्म जाने हैं तथापि अरूपी पदार्थनिको न जाने हैं अर अनंतकालकी न जाने, केवली ही जाने, केवलज्ञान केवलदर्शनकर युक्त तिन समान और नाहीं सिद्धनिके ज्ञान अनंत दर्शन अनंत अर संसारी जीवनिके अल्पज्ञान अल्पदर्शन, सिद्धनिके अनंत सुख अनंत वीर्य अर संसारनिके अल्प-सुख अल्पवीर्य यह निश्चय जानो सिद्धनिके सुखकी महिमा केवलज्ञानीही जाने अर चार ज्ञानके धार-

कहू पूर्ण न जानें यह सिद्धपद अभव्योंको अप्राप्य है इस पदको निकट भव्य ही पावें, अभव्य अनन्त कालहू काय क्लेश करें अनेक यत्न करें तौहू न पावें, अनादि कालकी लगी जो अविद्यारूप स्त्री ताका विरह अभव्यनिके न होय, सदा अविद्याको लिए भव वनविषै शयन करें अर मुक्तिरूप स्त्रीके मिलापकी वांछाविषे तत्पर जे भव्य जीव ते कैयक दिन संसारमे रहै हैं सो संसारमें राजी नाहीं तप विषै तिष्ठते मोक्ष हीके अभिलाषी हैं जिनमें सिद्ध होनेकी शक्ति नाहीं उन्हें अभव्य कहिए अर जे सिद्ध होनहार हैं उन्हें भव्य कहिए। केवली कहै हैं—हे रघुनन्दन। जिनशासन विना और कोई मोक्षका उपाय नाहीं। विना सम्यक्त कर्मनिका क्षय न होय, अज्ञानी जीव कोटि भवमें जे कर्म न खिपाय सकै सो ज्ञानी तीन गुप्तिको धरे एक मुहूर्तमें खिपावे, सिद्ध भगवान परमात्मा प्रसिद्ध हैं सर्व जगतके लोग उनको जाने हैं कि वे भगवान हैं केवली विना उनको कोई प्रत्यक्ष देख जान न सकै, केवलज्ञानी ही सिद्धनिको देखे जाने हैं। मिथ्यात्वका मार्ग संसारका कारण या जीवने अनंत भवमें धारा। तुम निकट भव्य हो परमार्थकी प्राप्तिके अर्थ जिनशासनकी अखण्ड श्रद्धा धारो। हे श्रेणिक। यह वचन सकलभूषण केवलीके सुन, श्रीरामचंद्र प्रणामकर कहते भए—हे नाथ। या संसार समुद्रतै मोहि तारो हे भगवन्! यह प्राणी कौन उपायकर संसारके वासतैं छूटे है। तब केवली भगवान् कहते भए—हे राम। सम्यक्दर्शन ज्ञान चारित्र मोक्षका मार्ग है जिनशासनविषै यह कहा है तत्त्वका जो श्रद्धान ताहि सम्यग्दर्शन कहिए तत्त्व अनन्तगुणपर्यायरूप है ताके दोय भेद हैं एक चेतन दूसरा अचेतन है। सो जीव चेतन है अर सवे अचेतन हैं अर दर्शन दोय प्रकार तैं उपजे है एक निसर्ग एक अधिगम। जो स्वतः स्वभाव उपजे सो निसर्ग अर गुरुके उपदेशतैं उपजे सो अधिगम। सम्यक्दृष्टि जीव जिनधर्मविषै रत है। सम्यक्तके अतीचार पांच हैं—शंका कहिये जिनधर्मविषै संदेह अर कांक्षा कहिये भोगनिकी अभिलाषा अर विचिकित्सा कहिये महामुनिको देख ग्लानि करनी अर अन्यदृष्टि प्रशंसा कहिये मिथ्यादृष्टिको मनमें भला जानना अर संस्तव कहिये वचनकर मिथ्यादृष्टिकी स्तुति करना इनकर सम्यक्तमें दूषण उपजे हैं अर मैत्री प्रमोद करुणा मध्यस्थ ये चार

भावना अथवा अनित्यादि वारह भावना अथवा प्रशम सवेग अनुकंपा आस्तिक्य अर शंकादि दोष रहितपना जिनप्रतिमा जिनमन्दिर जिनशास्त्र मुनिराजनिकी भक्ति इनकर सम्यक्दर्शन निर्मल होय है अर सर्वज्ञके वचन प्रमाण वस्तुका जानना सो ज्ञानकी निर्मलताका कारण है अर जो काहूतें न सधै ऐसी दुर्धरक्रिया आचरणी ताहि चारित्र कहिये पांचों इन्द्रियनिका निरोध मनका निरोध वचनका निरोध सर्व पापक्रियनिको त्याग सो चारित्र कहिये त्रस स्थावर सर्व जीवकी दया सवको आप समान जानै सो चारित्र कहिये, अर सुननेवालेके मन अर काननिको आनंदकारी स्निग्ध मधुर अर्थसंयुक्त कल्याणकारी वचन वोलना सो चारित्र कहिये, अर मन वचन कायकर परधनका त्याग करना किसीका विना दिया कछु न लेना अर दिया हुआ आहारमात्र लेना सो चारित्र कहिये अर जो देवनिकर पूज्य महादुर्धर ब्रह्मचर्यव्रतका धारण सो चारित्र कहिये अर शिवमार्ग कहिये निर्वाणका मार्ग ताहि विघ्नकरणहारी मूर्छा कहिये मनको अभिलाषा ताका त्याग सोई परिग्रहका त्याग सोहू चारित्र कहिये है। ये मुनिनिके धर्म कहे अर जो अणुव्रती श्रावक मुनिनिको श्रद्धा आदि गुणनिकर युक्त नवधा भक्तिकर आहार देना सो एकदेशचारित्र कहिये अर परदारा परधनका परिहार परपीड़ाका निवारण दयाधर्मका अंगीकार दान शील पूजा प्रभावना पर्वोपवासादिक सो ए देशचारित्र कहिये अर यम कहिये यावज्जीव पापका परिहार, नियम कहिये मर्यादारूप व्रत तपका अंगीकार वैराग्य विनय विवेक ज्ञान मन इन्द्रियोंका निरोध ध्यान इत्यादि धर्मका आचरण सो एकदेश चारित्र कहिये यह अनेक गुणकर युक्त जिनभासित चारित्र परम धामका कारण कल्याणकी प्राप्तिके अर्थ सेवने योग्य है जो सम्यक्दृष्टि जीव जिनशासनका श्रद्धानी परनिंदाका त्यागी अपनी अशुभ कियाका निंदक जगतके जीवोंसे न सधै ऐसे दुर्द्धर तपका धारक संयमका साधनहारा सो ही दुर्लभ चारित्र धारिवेको समर्थ होय अर जहां दया आदि समीचीन गुण नाहीं तहां चारित्र नाहीं अर चारित्र विना संसारसे निवृत्ति नाही जहां दया क्षमा ज्ञान वैराग्य तप संयम नही तहां धर्म नही विषय कषायका त्याग सोई धर्म है शम कहिए समता भाव परम शांत दम कहिये मन इन्द्रियोंका विरोध संवर कहिये नवीन कर्मनिका विरोध जहां

ये नहीं तहां चारित्र नहीं जे पापी जीव हिंसा करे हैं झूठ बोले हैं चोरी करे हैं परस्त्री सेवन करे हैं महा आरम्भी हैं परिग्रही हैं तिनके धर्म नही, जे धर्मके निमित्त हिंसा करे हैं ते अधर्मी अधमगतिके पात्र हैं जो मूढ़ जिनदीक्षा लेकर आरम्भ करे हैं सो यति नहीं। यतिका धर्म आरंभ परिग्रहसे रहित है परिग्रह धारियोंको मुक्ति नहीं जे हिंसामें धर्म जान पट्कायिक जीवोंकी हिंसा करे हैं ते पापी हैं हिंसामें धर्म नाहीं हिंसकोंको या भव परभवके सुख नहीं शिव कहिये मोक्ष नहीं। जे सुखके अर्थ धर्मके अर्थ जीवघात करे हैं सो वृथा है जे ग्राम क्षेत्रादिकमें आसक्त हैं गाय भैंस राखे हैं मारे हैं बांधे हैं तोड़े हैं दाहे हैं उनके वैराग्य कहां ? जे क्रय विक्रय करे हैं रसोई परहेंडा आदि आरम्भ राखे हैं सुवर्णादिक राखे हैं तिनको मुक्ति नाहीं जिनदीक्षा निरारम्भ है अतिदुर्लभ है जे जिनदीक्षा धारि जगतका धंधा करे हैं वे दीर्घ संसारी हैं जे साधु होय तेलादिकका मर्दन करे हैं स्नान करे हैं शरीरका संस्कार करे हैं पुष्पादिकको सूंघे हैं सुगन्ध लगावे हैं दीपकका उद्योत करे हैं धूप खेवे है सो साधु नहीं, मोक्षमार्गसे पराङ्मुख हैं अपनी बुद्धिकर जे कहे हैं हिंसाविषै दोष नाहीं वे मूर्ख हैं तिनको शास्त्रका ज्ञान नाहीं चारित्र नाहीं।

जे मिथ्या दृष्टि तप करे हैं ग्रामविषै एक रात्रि वसे हैं नगर विषै पांच रात्रि अर सदा ऊर्ध्ववाहु राखे हैं मास मासोपवास करे हैं अर वनविषै विचरे हैं मौनी हैं निपरिग्रही हैं तथापि दयावान नहीं दुष्ट है हृदय जिनका सम्यक्त बीज विना धर्मरूप वृक्षको न उगाय सकें अनेक कष्ट करें तौभी शिवालय कहिए मुक्ति उसे न लहे जे धर्मकी बुद्धिकर पर्वतसे पड़े अग्निविषै जरें जलमें डूवें धरतीमें गड़ें वे कुमरण कर कुगतिको जावें है जे पापकर्मी कामनापरायण आर्त रौद्र ध्यानी विपरीत उपाय करें वे नरक निगोद लहे। मिथ्यादृष्टि जो कदाचित् दान दे तप करैं सो पुण्यके उदय कर मनुष्य अर देव गतिके सुख भोगे हैं परन्तु श्रेष्ठ देव श्रेष्ठ मनुष्य न होंय सम्यग्दृष्टियोंके फलके असंख्यातवें भाग भी फल नहीं। सम्यग्दृष्टि चौथे गुणठाणे अव्रती हैं तौ हू नियम विषै है प्रेम जिनका सो सम्यक्दर्शनके प्रसादसे देवलोकविषै उत्तम देव होवें अर मिथ्यादृष्टि कुलिंगी महातप भी करें तो देवनिके किंकर हीनदेव होंय, वहुरि संसार

भ्रमण करें अर सम्यक्दृष्टि भव धरै तो उत्तम मनुष्य होय तिनमें देवनके भव सात मनुष्यनिके भव आठ या भांति पंद्रह भवविषै पंचमगति पावें वीतराग सर्वज्ञ देवने मोक्षका मार्ग प्रगट दिखाया है परन्तु यह विषयी जीव अङ्गीकार न करे हैं आशारूपी फांसीसे बंधे मोहके वश पड़े तृष्णाके भरे पापरूप जंजीरसे जकड़े कुगतिरूप वन्दीगृहविषै पड़े हैं स्पर्श अर रसना आदि इन्द्रियोंके लोलुपी दुःख हीको सुख माने हैं यह जगतके जीव एक जिनधर्मके शरण विना क्लेश भोगे हैं इंद्रियोंके सुख चाहे हैं सो मिले नाहीं अर मृत्युसे डरें सो मृत्यु छोड़े नाहीं विफल कामना अर विफल भयके वश भए जीव केवल तापहीको प्राप्त होय हैं तापके हरिवेका उपाय और नाहीं आशा अर शंका तजना यही सुखका उपाय है यह जीव आशाकर भरा भोगोंका भोग किया चाहे है अर धर्मविषै धीय नाहीं धरे है क्लेश रूप अग्निकर उष्ण महा आरम्भ विषै उद्यमी कछु भी अर्थ नहीं पावे है उलटा गांठका खोवे है यह प्राणी पापके उदयसे मनवांछित अर्थको नहीं पावे हैं उलटा अनर्थ होय है सो अनर्थ अतिदुर्जय है यह मैं किया यह मैं करूं हूं यह मैं करूंगा ऐसा विचार करते ही मरकर कुगति जाय है ये चारोंही गति कुगति हैं एक पंचम गति निर्वाण सोई सुगति है जहांसे बहुरि आवना नहीं अर जगतविषै मृत्यु ऐसा नहीं देखे है जो याने यह किया यह न किया वाल अवस्था आदिसे सर्व अवस्थाविषै आय दावे है जैसे सिंह मृगको सब अवस्थामें आय दावे अहो यह अज्ञानी जीव अहितविषै हितकी वांछा धरे है अर दुःखविषै सुखकी आशा करे है अनित्यको नित्य जाने है भय विषै शरण माने है इनके विपरीत बुद्धि है यह सब मिथ्यात्वका दोष है यह मनुष्यरूप माता हाथी भार्या रूप गर्तविषै पड़ा अनेक दुःखरूप बन्धनकर बंधे है विषयरूप मांसका लोभी मत्स्यकी नाईं विकल्परूपी जालमें पड़े है यह प्राणी दुर्बल बलदकी न्याईं कुटुम्बरूप कीचमें फंसा खेदखिन्न होय है जैसे वैरियोंसे बंधा अर अन्धकूपमें पड़ा उसका निकसना अति कठिन है तैसे स्नेहरूप फांसीकर बंधा संसाररूप अन्धकूपविषै पड़ा अज्ञानी जीव उसका निकसना अति कठिन है कोई निकट भव्य जिनवाणीरूप रस्सेको गहे अर श्रीगुरु निकासनेवाले होंय तो निकसे अर अभव्य जीव जैनेंद्री आ-

ज्ञारूप अति दुर्लभ आनन्दका कारण जो आत्मज्ञान उसे पायवे समर्थ नहीं जिनराजका निश्चय मार्ग निकटभव्य ही पावे अर अभव्य सदा कर्मोंकर कलंकी भए अतिक्लेशरूप संसारचक्रविषै भ्रमे हैं। हे श्रेणिक! यह वचन श्रीभगवान सकलभूषण केवलीने कहे तब श्रीरामचन्द्र हाथ जोड़ सीस नवाय कहते भए—हे भगवन्! मैं कौन उपायकर भव भ्रमणसे छूटूं मैं सकल राणी अर पृथ्वीका राज्य तजवे समर्थ हूं परन्तु भाई लक्ष्मणका स्नेह तजवे समर्थ नहीं, स्नेह समुद्रकी तरङ्गोंविषै डूबूं हूं आप धर्मोपदेश रूप हस्तावलम्बन कर काढ़ो। हे करुणानिधान! मेरी रक्षा करो। तब भगवान कहते भये हे राम! शोक न कर तू बलदेव है कैयक दिन वासुदेव सहित इन्द्रकी न्याईं इस पृथिवीका राज्यकर जिनेश्वरका व्रत धर केवल ज्ञान पावेगा, ए केवलीके वचन सुन श्रीरामचन्द्र हर्षकर रोमांचित भए नयनकमल फूल गये वदन कमल विकसित भया परम धीर्ययुक्त होते भये अर रामको केवलीके मुखसे चरम शरीरी जान सुर नर असुर सब ही प्रशंसाकर अति प्रीति करते भए॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषा वचनिकाविषैं रामका केवलीके मुखधर्म श्रवण वर्णन करनेवाला एकसौ पाचवां पर्व पूर्ण भया॥ १०५॥

अथानन्तर—विद्याधरनिविषै श्रेष्ठ राजा विभीषण रावणका भाई सुन्दर शरीरका धारक रामकी भक्ति ही है आभूषण जिसके सो दोनों कर जोड़ प्रणाम कर केवलीको पूछता भया, हे देवाधिदेव! श्रीरामचन्द्रने पूर्व भवविषै क्या सुकृत किया जिसकर ऐसी महिमा पाई अर इनकी स्त्री-सीता दण्डक वनसे कौन प्रसंगकर रावण हर ले गया धर्म अर्थ काम मोक्ष चारों पुरुषार्थका वेत्ता अनेक शास्त्रका पाठी कृत्य अकृत्यको जान धर्म अधर्मको पिछाने प्रधान गुण सपन्न सो काहेसे मोहके वश होय परस्त्रीकी अभिलाषा रूप अग्नि-विषैं पतंगके भावको प्राप्त भया अर लक्ष्मणने उसे संग्रामविषै हता रावण ऐसा बलवान विद्याधरनिका महेश्वर अनेक अद्भुत कार्योंका करणहारा सो कैसे ऐसे मरणको प्राप्त भया? तब केवली अनेक जन्मकी कथा विभीषणको कहते भये—हे लंकेश्वर! राम लक्ष्मण दोनों अनेक भवके भाई हैं अर रावणके जीवसे

लक्ष्मणके जीवका बहुत भवसे बैर है सो सुन। जम्बूद्वीपके भरतक्षेत्रविषै एक नगर वहां नयदत्त नामा वणिक अल्प धनका धनी उसकी सुनंदा स्त्री उसके धनदत्त नामा पुत्र सो रामका जीव अर दूजा पुत्र वसुदत्त सो लक्ष्मणका जीव अर एक यज्ञवलि नामा विप्र वसुदत्तका मित्र सो तेरा जीव अर उसही नगरविषै एक और वणिक सागरदत्त जिसके स्त्री रत्नप्रभा पुत्री गुणवती सो सीताका जीव अर गुणवतीका छोटा भाई जिसका नाम गुणवान सो भामण्डलका जीव अर गुणवती रूप यौवन कला कांति लावण्यताकर मण्डित सो पिताका अभिप्राय जान धनदत्तसे वहिनकी सगाई गुणवानने करी अर उसही नगरमें एक महा धनवान वणिक श्रीकांत सो रावणका जीव जो निरन्तर गुणवतीके परणवेकी अभिलाषा राखे अर गुणवतीके रूपकर हरा गया है चित्त जिसका सो गुणवतीका भाई लोभी धनदत्तको अल्प धनवन्त जान श्रीकांतको महाधनवन्त देख परणायवेको उद्यमी भया ॥

सो यह वृत्तान्त यज्ञवलि ब्राह्मणने वसुदत्तको कहा तेरे बड़े भाईकी मांग कन्याका बड़ा भाई, श्रीकांतको धनवान जान परणाया चाहे है तब वसुदत्त यह समाचार सुन श्रीकान्तके मारिवेको उद्यमी भया खड्ग पैनाय अन्धेरी रात्रीविषै श्याम वस्त्र पहिर शब्दरहित धीरा धीरा पग धरता जाय श्रीकान्तके घरविषै गया सो वह असावधान बैठा हुता सो खड्गसे मारा तब पड़ते पड़ते श्रीकान्तने भी वसुदत्तको खड्गसे मारा सो दोनों मरे सो विंध्याचलके वनमें हिरण भये अर नगरके दुर्जन लोक हुते तिन्होंने गुणवती धनदत्तको न परणायवे दीनी कि इसके भाईने अपराध किया, दुर्जन लोक बिना अपराध कोप करें सो यह तो एक बहाना पाया तब धनदत्त अपने भाईका मरण अर अपना अपमान तथा मांगका अलाभ जान महादुखी होय घरसे निकस विदेश गमन करता भया अर वह कन्या धनदत्तकी अप्राप्ति कर अतिदुखी भई और भी किसीको न परणती भई, अर कन्या मुनिनिकी निंदा अर जिनमार्गकी मिथ्यात्वके अनुरागकर पाप उपार्जै काल पाय आर्त ध्यानकर मूई सो जिस वनविषै दोनों मृग हैं तिस वनविषै यह मृगी भई सो पूर्वले विरोधकर इसीके अर्थ ते दोनों मृग परस्पर लड़कर मूए,

विषै देव भया देवांगनानिके नेत्ररूप कमल तिनके प्रफुल्लित करनेको सूर्य समान होता भया तहां मनवांछित क्रीड़ा करता भया अर पद्मरुचि सेठ भी समाधिमरणकर दूजे ही स्वर्ग देव भया दोनों वहां परम मित्र भए वहांसे चयकर पद्मरुचिका जीव पश्चिम विदेहविषै विजयार्धगिरि जहां नंद्यावर्त नगर वहां राजा नन्दीश्वर उसकी राणी कनकप्रभा उसके नयनानन्द नामा पुत्र भया सो विद्याधरनिके चक्रपदकी संपदा भोगी बहुरि महा मुनिकी अवस्था धर विषम तप किया समाधिमरण कर चौथे स्वर्ग देव भया वहां पुण्यरूप बेलके सुखरूप फल महा मनोग्य भोगे बहुरि वहांसे चयकर सुमेरु पर्वतके पूर्व दिशाकी ओर विदेह वहां क्षेमपुरी नगरी राजा विपुलवाहन राणी पद्मावती तिनके श्रीचन्द्र नामा पुत्र भया वहां स्वर्ग समान सुख भोगे तिनके पुण्यके प्रभावसे दिन दिन राजकी वृद्धि भई अटूट भंडार भया समुद्रांत पृथ्वी एक ग्रामकी न्याईं वश करी अर जिसके स्त्री इन्द्राणी समान सो इन्द्रकैसे सुख भोगे हजारों वर्ष सुखसे राज्य किया एक दिन महा संघ सहित तीन गुप्तिके धारक समाधिगुप्ति योगीश्वर नगरके बाहिर आय विराजे तिनको उद्यानविषै आया जान नगरके लोक वन्दनाको चले सो महा स्तुति करते वादित्र बजावते हर्षसे जाय हैं, श्रीचन्द्र समीपके लोकोंसे पूछता भया—यह हर्षका नाद जैसा समुद्र गाजे तैसा होय है सो कौन कारण है ? तब मंत्रियनिने किंकर दौड़ाए निश्चय किया जो मुनि आए हैं तिनके दर्शनको लोक जाय हैं। यह समाचार राजा सुनकर फूले कमल समान भए हैं नेत्र जिसके अर शरीरविषै हर्षसे रोमांच होय आये राजा समस्त लोक अर परिवार सहित मुनिके दर्शनको गया। प्रसन्न है मुख जिनका ऐसे मुनिराज तिनको राजा देख प्रणामकर महा विनयसंयुक्त पृथ्वीविषै बैठा। भव्य जीवरूप कमल तिनके प्रफुल्लित करवेको सूर्य समान ऋषिनाथ तिनके दर्शनसे राजाको अति धर्म स्नेह उपजा, वे महा तपोधन धर्मशास्त्रके वेत्ता परम गंभीर लोकोंको तत्त्वज्ञानका उपदेश देते भए यतिका धर्म अर श्रावकका धर्म संसार समुद्रका तारणहारा अनेक भेद संयुक्त कहा अर प्रथमानुयोग करणानुयोग द्रव्यानुयोगका स्वरूप कहा। प्रथमानुयोग कहिए उत्तम पुरुषोंका कथन अर करणानुयोग कहिए तीन लोकका कथन चरणानुयोग कहिए मुनि

के स्थानक गया अपना पूर्व चरित्र चितार यह वृषभध्वज कुमार हाथीसे उतर पूर्वजन्मकी मरणभूमि देख दुःखित भया अपने मरणका सुधारणहारा नमोकार मंत्रका देनहारा उसके जानिवेके अर्थ एक कैलाशके शिखर समान ऊंचा चैत्यालय बनाया अर चैत्यालयके द्वारविषै एक वड़े वैलकी मूर्ति जिसके निकट बैठा एक पुरुष नमोकार मंत्र सुनावे है ऐसा एक चित्रपट लिखाय मेला अर उसके समीप समझने मनुष्य मेले। दर्शन करवेको मेरु श्रेष्ठीका पद्मरुचि आया सो देख अति हर्षित भया अर भगवानका दर्शन कर पीछे आय बैलके चित्रपटको ओर निरखकर मनविषै विचारे है बैलको नमोकार मंत्र मैंने सुनाया था सो खड़ा खड़ा देखे ते पुरुष रखवारे थे तिन जाय राजकुमारको कही सो सुनते ही बड़ी ऋद्धिसे युक्त हाथी चढ़ा शीघ्रही अपने परम मित्रसे मिलने आया हाथीसे उतर जिनमंदिरविषै गया बहुरि बाहिर आया पद्मरुचिको बैलकी ओर निहारता देखा राजकुमारने श्रेष्ठीके पुत्रको पूछी तुम बैलके पटकी ओर कहा निरखो हो? तब पद्मरुचिने कही एक मरते बैलको मैंने नमोकार मंत्र दिया था सो कहां उपजा है यह जानिवेकी इच्छा है तब वृषभध्वज बोले वह मैं हूं, ऐसा कह पायन पड़ा अर पद्मरुचिकी स्तुति करी जैसे गुरुकी शिष्य करै अर कहता भया मैं पशु महा अविवेकी मृत्युके कष्टकर दुखी था सो तुम मेरे महा मित्र नमोकार मंत्रके दाता समाधिमरणके कारण होते भए तुम दयालु परभवके सुधारणहारेने महा मंत्र मुझे दिया उससे मैं राजकुमार भया जैसा उपकार राजा देव माता सहोदर मित्र कुटुम्ब कोई न करै तैसा तुमने किया जो तुमने नमोकार मंत्र दिया उस समान पदार्थ त्रैलोक्यमें नहीं उसका बदला मैं क्या दूं तुमसे उऋण नहीं तथापि तुमविषै मेरी भक्ति अधिक उपजी है जो आज्ञा देवो सो करूं। हे पुरुषोत्तम! तुम आज्ञा दानकर मुझको भक्त करो यह सकल राज्य लेवो मैं तुम्हारा दास यह मेरा शरीर उसकर इच्छा होय सो सेवा करावो। या भांति वृषभध्वजने कहो तव पद्मरुचिके अर याके अति प्रीति वढ़ी दोनों सम्यकदृष्टि राजमें श्रावकके व्रत पालते भए ठौर ठौर भगवानके बड़े २ चैत्यालय कराए तिनमें जिनबिंब पधराए यह पृथिवी तिनकर शोभायमान होती भई बहुरि समाधिमरण कर वृषभध्वज पुण्यकर्मके प्रसादकर दूजे स्वर्ग

सूय समान होता भया तहां मन-
विषै देव भया देवांगनानिके नेत्ररूप कमल तिनके प्रफुल्लित करनेको दूजे ही स्वर्ग देव भया दोनों वहां
वांछित क्रीड़ा करता भया अर पद्मरुचि सेठ भी समाधिमरणकर विदेहविषै विजयार्धगिरि जहां नंद्यावर्त नगर
परम मित्र भए वहांसे चयकर पद्मरुचिका जीव पश्चिम नामा पुत्र भया सो विद्याधरनिके चक्रपद की
वहां राजा नन्दीश्वर उसकी राणी कनकप्रभा उसके नयनानन्द समाधिमरण कर चौथे स्वर्ग देव भया
संपदा भोगी बहुरि महा मुनिकी अवस्था धर विषम तप किया वहांसे चयकर सुमेरु पर्वतके पूर्व दिशाकी ओर
वहां पुण्यरूप बेलके सुखरूप फल महा मनोग्य भोगे बहुरि तिनके श्रीचन्द्र नामा पुत्र भया वहां स्वर्ग
विदेह वहां क्षेमपुरी नगरी राजा विपुलवाहन राणी पद्मावती वृद्धि भई अटूट भंडार भया समुद्रांत पृथ्वी
समान सुख भोगे तिनके पुण्यके प्रभावसे दिन दिन राजकी सो इन्द्रकेसे सुख भोगे हजारों वर्ष सुखसे
एक ग्रामकी न्याई वश करी अर जिसके स्त्री इन्द्राणी समान समाधिगुप्ति योगीश्वर नगरके बाहिर आय
राज्य किया एक दिन महा संघ सहित तीन गुप्तिके धारक चले सो महा स्तुति करते वादित्र बजावते
विराजे तिनको उद्यानविषै आया जान नगरके लोक वन्दनाको नाद जैसा समुद्र गाजे तैसा होय है
हर्षसे जाय हैं, श्रीचन्द्र समीपके लोकोंसे पूछता भया—यह हर्षका जो मुनि आए हैं तिनके दर्शनको लोक
सो कौन कारण है ? तब मंत्रियनिने किंकर दौड़ाए निश्चय किया हैं नेत्र जिसके अर शरीरविषै हर्षसे रोमांच
जाय हैं। यह समाचार राजा सुनकर फूले कमल समान भए दर्शनको गया। प्रसन्न है मुख जिनका ऐसे मुनि-
होय आये राजा समस्त लोक अर परिवार सहित मुनिके बैठा। भव्य जीवरूप कमल तिनके प्रफुल्लित
राज तिनको राजा देख प्रणामकर महा विनयसयुक्त पृथ्वीविषै धर्म स्नेह उपजा, वे महा तपोधन धर्मशास्त्रके
करवेंको सूर्य समान ऋषिनाथ तिनके दर्शनसे राजाको अति यतिका धर्म अर श्रावकका धर्म संसार समुद्रका
वेत्ता परम गंभीर लोकोंको तत्त्वज्ञानका उपदेश देते भए करणानुयोग द्रव्यानुयोगका स्वरूप कहा। प्रथमानु-
तारणहारा अनेक भेद संयुक्त कहा अर प्रथमानुयोग तीन लोकका कथन चरणानुयोग कहिए मुनि
योग कहिए उत्तम पुरुषोंका कथन अर करणानुयोग कहिए

श्रावकका धर्म अर द्रव्यानुयोग कहिए षट्द्रव्य सप्त तत्व नव पदार्थ पंचास्तिकायका निर्णय। कैसे हैं मुनिराज वक्तानिविषै श्रेष्ठ हैं अर आक्षेपणी कहिए जिन मार्ग उद्योतनी अर क्षेपणी कहिए मिथ्यात्वखं-डनी अर संवेगिनी कहिए धर्मानुरागिणी अर निर्वेदिनी कहिए वैराग्यकारिणी यह चार प्रकार कथा कहते भए, इस संसार असारविषै कर्मके योगसे भ्रमता जो यह प्राणी सो महा कष्टसे मोक्ष मार्गको प्राप्त होय है संसारका ठाठ बिनाशीक है जैसा संध्याका वर्ण अर जलका बुदबुदा तथा जलके झाग अर लहर अर विजरीका चमत्कार इन्द्रधनुष क्षणभंगुर हैं असार हैं ऐसा जगतका चरित्र क्षणभंगुर जानना यामें सार नहीं नरक तिर्यंचगति तो दुःख रूप ही हैं अर देव मनुष्य गतिविषै यह प्राणी सुख जाने है सो सुख नहीं दुःख ही है जिससे तृप्ति नाहीं सोही दुःख जो महेन्द्र स्वर्गके भोगोंसे तृप्त नहीं भया सो मनुष्य भवके तुच्छ भोगसे कैसे तृप्त होय ? यह मनुष्य भव भोग योग्य नहीं वैराग्य योग्य है काहू एक प्रकारसे दुर्लभ मनुष्य देह पाया जैसे दरिद्री निधान पावै सो विषय रसका लोभी होय वृथा खोया मोहको प्राप्त भया जैसे सूके ईंधनसे अग्निको कहां तृप्ति अर नादयानक जलसे समुद्रको कहां तृप्ति ? तैसे विषय सुखसे जीवनको तृप्ति न होय, चतुर भी विषय रूप मद कर मोहित भया मन्दताको प्राप्त होय है, अज्ञान रूप तिमिरसे मंद भया है मन जिसका सो जलविषै डूबता खेदखिन्न होय त्यों खेदखिन्न है परन्तु अविवेकी तो विषय हीको भला जाने है सूर्य तो दिनको ताप उपजावै अर काम रात्रि दिन आताप उपजावै सूर्यके आताप निवारिवेके अनेक उपाय हैं अर कामके निंवारवेका उपाय एक विवेकही है जन्म जरा मरणका दुःख संसारविषै भयं-कर है जिसका चिंतवन किए कष्ट उपजे यह कर्मजनित जगतका ठाठ अरहटके यंत्रकी घड़ी समान है रीता भर जाय है भरा रीता होय है निचला ऊपर ऊपरला नीचे, अर यह शरीर दुर्गंध मय है यंत्र समान चलाया चले है विनाशीक है मोह कर्मके योगसे जीवका कायासे स्नेह है जलके बुद्बुदा समान मनुष्य भवके उपजे सुख असार जान बड़े कुलके उपजे पुरुष विरक्त होय जिनराजका भाषा मार्ग अंगीकार करे हैं उत्साहरूप वख्तर पहिरे निश्चय रूप तुरंगके असवार ध्यानरूप खड्गके धारक धीर कर्मरूप शत्रुको विनाश निर्वाणरूप

नगर लेय हैं, यह शरीर भिन्न अर में भिन्न ऐसा चिंतवन कर शरीरका स्नेह तज हे मनुष्यो। धर्मको करो धर्म समान अर नहीं और धर्मोंसे मुनिका धर्म श्रेष्ठ है जिन महामुनियोंके सुखदुःख दोनों तुल्य अपना अर पराया तुल्य जे राग-द्वेष रहित महा पुरुष हैं वे परम उत्कृष्ट शुक्ल ध्यानरूप अग्निसे कर्मरूप वनी दुःख रूप दुष्टोंसे भरी भस्म करे हैं॥ ये मुनिके वचन राजा श्रीचन्द्र सुन बोधको प्राप्त भया, विषयानुभव सुखसे वैराग्य होय अपने ध्वजकांति नामा पुत्रको राज्य देय समाधिगुप्त नामा मुनिके समीप मुनि भया। महा विरक्त है मन जिसका, सम्यक्की भावनासे तीनों योग जे मन वचन काय तिनकी शुद्धता धरता संता पांच समिति तीन गुप्तिसे मंडित राग-द्वेषसे परांगमुख रत्नत्रयरूप आभूषणोंका धारक उत्तम क्षमा आदि दश-लक्षण धर्मकर मंडित जिनशासनका अनुरागी समस्त अङ्ग पूर्वाङ्गका पाठक समाधानरूप पंच महाव्रतका धारक जीवोंका दयालु सप्त भयरहित परमधीर्यका धारक बाईस परीषहका सहनहारा, वेला तेला पक्ष मासादिक अनेक उपवासका करणहारा शुद्ध आहारका लेनहारा ध्यानाध्ययनमें तत्पर निर्ममत्व अतींद्रिय भोगोंकी वांछाका त्यागी निदान बंधनरहित महाशांत जिनशासनमें है वात्सल्य जिसका, यतिके आचारमें संघके अनुग्रहविषै तत्पर बालके अग्रभागके कोटिवें भागहू नाहीं है परिग्रह जाके, स्नानका त्यागी, दिगंबर, संसारके प्रबंधतैं रहित, ग्रामके वनविषै एक रात्रि अर नगरके वनविषै पांच रात्रि रहनहारा, गिरि गुफा गिरिशिखर नदीके पुलिन उद्यान इत्यादि प्रशस्त स्थानविषैं निवास करणहारा कायोत्सर्गका धारक देहतैं हू निर्ममत्व निश्चल मौनी पंडित महातपस्वी इत्यादि गुणनिकर पूर्ण कर्म पिंजरको जर्जराकर काल पाय श्रीचंद्रमुनि रामचंद्रका जीव पांचवें स्वर्ग इन्द्र भया, तहां लक्ष्मी कीर्ति कांति प्रतापका धारक देवनिका चूड़ामणि तीन लोकविषै प्रसिद्ध परम ऋद्धिकर युक्त महासुख भोगता भया। नंदनादिक वनविषै सौधर्मादिक इन्द्र याकी संपदाको देख रहैं, याके अवलोकनकी सबके वांछा रहै महा सुन्दर विमान मणि हेममई मोतिनिकी झाल-रिनिकर मंडित, वामें बैठा विहार करै दिव्य स्त्रीनिके नेत्रोंको उत्सवरूप महासुखतैं काल व्यतीत करता भया, श्रीचन्द्रका जीव ब्रह्मेंद्र ताकी महिमा, हे विभीषण! वचन कर न कही जाय; केवलज्ञानगम्य है। यह

जिनशासन अमौलिक परमरत्न उपमारहित त्रैलोक्यविषै प्रकट है तथापि मूढ़ न जानै। श्रीजिनेंद्र मुनींद्र अर जिनधर्म इनकी महिमा जानकरहू मूर्ख मिथ्या अभिमानकर गर्वित भए धर्मसे परांगमुख रहैं। जो अज्ञानी या लोकके सुखविषै अनुरागी भया है सो बालक समान अविवेकी हैं जैसे बालक विना समझे अभक्ष्यका भक्षण करै है विषपान करै है तैसे मूढ़ अयोग्यका आचरण करे है जे विषयके अनुरागी हैं सो अपना बुरा करे हैं, जीवोंके कर्म बंधकी विचित्रता है इसलिए सबही ज्ञानके अधिकारी नहीं, कैयक महा भाग्य ज्ञानको पावे हैं अर कैयक ज्ञानको पाय और वस्तुकी वांछाकर अज्ञान दशाको प्राप्त होय हैं अर कैयक महानिंद्य जो यह संसारी जीवनिके मार्ग तिनमें रुचि करे हैं, वे मार्ग महादोषके भरे हैं जिनमें विषय कषायकी बहुलता है जिनशासनसे और कोई दुःखके छुड़ायवेका मार्ग नहीं इसलिए हे विभीषण! तुम आनंद चित्त होयकर जिनेश्वर देवका अर्चन करो, इस भांति धनदत्तका जीव मनुष्यसे देव, देवसे मनुष्य होयकर नवमे भव रामचंद्र भए, उसकी विगत पहिले भव धनदत्त १ दूजे भव पहले स्वर्ग देव २ तीजे भव पद्मरुचि सेठ ३ चौथे भव दूजे स्वर्ग देव ४ पांचवें भव नयनानंद राजा ५ छठे भव चौथे स्वर्ग देव ६ सातमें भव श्रीचंद्र राजा ७ आठवें भव पांचवें स्वर्ग इन्द्र–नवमें भव रामचंद्र ९ आगे मोक्ष यह तो रामके भव कहे अब हे लंकेश्वर! वसुदत्तादिकका वृत्तांत सुन--कर्मोंकी विचित्रगतिके योगकर मृणालकुण्ड नामा नगर तहां राजा विजयसेन राणी रत्नचूला उसके वज्रकंबु नामा पुत्र उसके हेमवती राणी उसके शंभु नामा पुत्र पृथ्वीमें प्रसिद्ध सो यह श्रीकांतका जीव रावण होनहार सो पृथ्वीमें प्रसिद्ध अर वसुदत्तका जीव राजाका पुरोहित उसका नाम श्रीभूति सो लक्ष्मण होनहार, महा जिनधर्मी सम्यग्दृष्टि उसके स्त्री सरस्वती उसके वेदवती नामा पुत्री भई, सो गुणवतीका जीव सीता होनहार गुणवतीके भवसे पूर्व सम्यक्त विना अनेक तिर्यंच योनिविषै भ्रमणकर साधुवोंकी निंदाके दोषकर गंगाके तट मरकर हथिनी भई। एक दिन कीचमें फंसी पराधीन होय गया है शरीर जिसका नेत्र तिरमिराट अर मंद २ सांस लेय सो एक तरंगवेग नामा विद्याधर महादयावान उसने हथिनीके कानमें नमोकार मंत्र दिया सो नमोकार मंत्रके प्रभावकर मंद

कषाय भई अर विद्याधरने व्रत भी दिए सो जिनधर्मके प्रसादसे श्रीभूति पुरोहितके वेदवती पुत्री भई एक दिन मुनि आहारको आए सो यह हंसने लगी तब पिताने निवारी सो यह शांतचित्त होय श्राविका भई अर यह कन्या परमरूपवती सो अनेक राजावोंके पुत्र इसके परिणायवेको अभिलाषी भए अर यह राजा विजयसेनका पोता शंभू जो रावण होनहार है सो विशेष अनुरागी भया अर पुरोहित श्रीभूति महा जिनधर्मी सो उसने जो मिथ्यादृष्टि कुवेर समान धनवान होय तौहू मैं पुत्री न दूं यह मेरी प्रतिज्ञा है तब शंभुकुमारने रात्रिविषै पुरोहितको मारा सो पुरोहित जिनधर्मके प्रसादसे स्वर्ग लोकविषै देव भया अर शंभुकुमार पापी वेदवती साक्षात् देवी समान उसे न इच्छतीको वलात्कार परणवेको उद्यमी भया वेदवतीके सर्वथा अभिलाषा नहीं तब कामकर प्रज्वलित इस पापीने जोरावरी कन्याको आलिंगनकर मुख चुंब मैथुन किया तब कन्या विरक्त हृदय कांपे है शरीर जिसका अग्निकी शिखा समान प्रज्वलित अपने शील घातकर अर पिताके घातकर परम दुःखको धरती लाल नेत्र होय महा कोपकर कहती भई—अरे पापी। तैंने मेरे पिताको मार मो कुमारीसे वलात्कार विषयसेवन किया सो नीच। मैं तेरे नाशका कारण होऊंगी मेरा पिता तैंने मारा सो वड़ा अनर्थ किया मैं पिताका मनोरथ कभी भी न उलंघू मिथ्यादृष्टि सेवनसे मरण भला ऐसा कह वेदवती श्रीभूति पुरोहितकी कन्या हरिकांता आर्याके समीप जाय आर्यिकाके व्रत लेय परम दुर्धर तप करती भई, केश लुंच किए महा तप कर रुधिर मांस सुकाय दिए प्रकट दीखे हैं अस्थि अर नसा जिसके, तपकर सुकाय दी है देह जिसने समाधि मरणकर पांचवें स्वर्ग गई पुण्यके उदयकर स्वर्गके सुख भोगे अर शंभु संसारविषै अनीतिके योगकर अति निन्दनीक भया कुटम्ब सेवक अर धनसे रहित भया उन्मत्त होय गया जिनधर्म परांगमुख भया साधुवोंको देख हंसै निन्दा करै मद्य मांस शहतका आहारी पाप क्रियाविषै उद्यमी अशुभके उदयकर नरक तिर्यंचविषै महा दुःख भोगतो भया।

अथानन्तर—कछु इक पापकर्मके उपशमसे कुशध्वज नामा ब्राह्मण ताके सावित्री नामा स्त्रीके प्रभासकुन्द नामा पुत्र भया सो दुर्लभ जिनधर्मका उपदेश पाय विचित्रमुनिके निकट मुनि भया काम क्रोध मद

कान्तिशोक ताकी स्त्री रत्नांगिनी ताके स्वप्रभ नामा पुत्र भया महासुन्दर जाको शुभ आचार भावै सो जिनधर्मविषै निपुण संयत नामा मुनि होय हजारों वर्ष विधिपूर्वक बहुत भांतिके महातप किए, निर्मल है मन जाका सो तपके प्रभावकर अनेक ऋद्धि उपजी तथापि अति निगर्व संयोग सम्बन्धविषै ममताको तज उपशम श्रेणी धार शुक्ल ध्यानके पहिले पाएके प्रभावतैं सर्वार्थसिद्धि गया सो तैंतीस सागर अहमिंद्र पदके सुख भोग राजा सूयरज ताके बालि नामा पुत्र भया, विद्याधरनिका अधिपति किहकन्धपुरका धनी जिसका भाई सुग्रीव महा गुणवान सो जब रावण चढ़ आया तब जीव दयाके अर्थ बालीने युद्ध न किया सुग्रीवको राज्य देय दिगम्बर भया सो जब कैलाशविषै तिष्ठे था अर रावण आय निकसा क्रोधकर कैलाशके उठायबेको उद्यमी भया सो बाली मुनि चैत्यालयोंकी भक्तिसे ढीलासों अंगुष्ठ दबाया सो रावण दबने लगा तब राणीने साधुकी स्तुति कर अभयदान दिवाया। रावण अपने स्थानक गया अर बाली महामुनि गुरुके निकट प्रायश्चित्तनामा तप लेय दोष निराकरण कर क्षपक श्रेणी चढ़ कर्म दग्ध किए लोकके शिखर सिद्धिक्षेत्र है वहां गए जीवका निज स्वभाव प्राप्त भया अर वसुदत्तके अर श्रीकान्तके गुणवतीके कारण महा वैर उपजा था सो अनेक जन्मोंमें दोनों परस्पर लड़ लड़ मरे अर गुणवतीसे तथा वेदवतीसे रावणके जीवके अभिलाषा उपजी थी उस कारण कर रावणने सीता हरी अर वेदवतीका पिता श्रीभूति सम्यक्दृष्टि उत्तम ब्राह्मण सो वेदवतीके अर्थ शत्रुने हता सो स्वर्ग जाय वहांसे चयकर प्रतिष्ठित नामा नगरविषै पुनर्वसु नाम विद्याधर भया सो निदानसहित तपकर तीजे स्वर्ग जाय रामका लघु भ्राता महा स्नेहवन्त लक्ष्मण भया अर पूर्वले वैरके योगसे रावणको मारा अर वेदवतीसे शंभुने विपर्यय करी तातैं सीता रावणके नाशका कारण भई जो जिसको हते सो उसकर हता जाय। तीन खण्डकी लक्ष्मी सोई भई रात्रि उसका चन्द्रमा रावण उसे हतकर लक्ष्मण सागरान्त पृथिवीका अधिपति भया रावणसा शूर वीर पराक्रमी या भांति मारा जाय यह कर्मोंका दोष है दुर्बलसे सबल होय सबलसे दुर्बल होय घातक है सो हता जाय अरहता होय सो घातक होय जाय। संसारके जीवोंकी यही गति है कर्मकी चेष्टा-

कर कभी स्वर्गके सुख पावें कभी नरकके दुःख पावें अर जैसे कोई महास्वादरूप परम अन्न उस विषै विष मिलाय दूषित करै तैसे मूढ़ जीव उग्र तपको भोगाभिलाषकर दूषित करे है जैसे कोई कल्पवृक्षको काटि कोईकी बाड़ि करै अर विषके वृक्षको अमृतरस कर सींचे अर भस्मके निमित्त रत्नोंकी राशिको जलावे अर कोयलोंके निमित्त मलयागिरि चन्दनको दग्ध करै तैसे निदान बन्धकर तपको यह अज्ञानी दूषित करैं या संसारविषै सर्व दोषकी खान स्त्री है तिसके अर्थ क्या कुकर्म अज्ञानी न करें। जो या जीवने कर्म उपार्जे हैं सो अवश्य फल देय हैं कोऊ अन्यथा करबे समर्थ नहीं. जे धर्मविषै प्रीति करैं बहुरि अधर्म उपार्जे वे कुगतिको प्राप्त होय हैं तिनकी भूल कहा कहिए? जे साधु होयकर मदमत्सर धरे हैं तिनको उग्रतप कर मुक्ति नहीं अर जिसके शांति भाव नहीं संयम नहीं तप नहीं उस दुर्जन मिथ्यादृष्टिके संसार सागरके तिरबेका उपाए कहां अर जैसे असराल पवनकर मदोन्मत्त गजेन्द्र उड़े तो सुसाके उड़बेका कहा आश्चर्य तैसे संसारकी झूठो मायाविषै चक्रवर्त्यादिक बड़े पुरुष भूले तो छोटे मनुष्यनिकी क्या बात इस जगतविषै परम दुःखका कारण वैर भाव है सो विवेकी न करें आत्मकल्याणकी है भावना जिनके पापकी करणहारी वाणी कदापि न बोलें। गुणवतीके भवविषै मुनिका अपवाद किया था अर वेदवतीके भवमें एक मंडलका नामा ग्राम वहां सुदर्शननामा मुनि वनमें आए लोक वन्दना कर पीछे गये अर मुनिकी बहिन सुदर्शना नामा आर्यिका सो मुनिके निकट वैठी धर्म श्रवण करे थी सो वेदवतीने देखकर ग्रामके लोकोंके निकट मुनिकी निंदा करी कि मैं मुनिको अकेला स्त्रीके समीप बैठा देखा तब कैयकोंने बात मानी अर कैयक बुद्धिवन्तोंने न मानी परन्तु ग्राममें मुनिका अपवाद भया, तब मुनिने नियम किया कि यह झूठा अपवाद दूर होय तो आहारको उतरना तब नगरके देवताने वेदवतीके मुखकर समस्त ग्रामके लोकोंको कहाई कि मैंने झूठा अपवाद किया। यह बहिन भाई हैं अर मुनिके निकट जाय वेदवतीने क्षमा कराई कि हे प्रभो। मैं पापिनीने मिथ्या वचन कहे सो क्षमा करो या भांति मुनिकी निंदाकर सीताका झूठा अपवाद भया, अर मुनिसे क्षमा कराई उसकर अपवाद दूर भया तातैं जे जिनमार्गी हैं वे कभी भी परनिंदा न करें

किसीमें सांचा भी दोष है तौहू ज्ञानो न कहैं अर कोऊ कहता होय उसे मने करें सर्वथा प्रकार पराया दोष ढांकें जे कोई परनिंदा करे हैं सो अनन्त काल संसार वनविषै दुःख भोगवे हैं सम्यक्‌दर्शनरूप जो रत्न उसका बड़ा गुण यही है जो पराया अवगुण सर्वथा ढांके जो सांचा भी दोष पराया कहे सो अपराधी है अर जो अज्ञानसे मत्सर भावसे पराया झूठा दोष प्रकाशे उस समान और पापी नहीं अपने दोष गुरुके निकट प्रकाशने अर पराए दोष सर्वथा ढांकने जो पराई निंदा करे सो जिन मार्गसे पराङ्मुख है। यह केवलीके परम अद्‌भुत वचन सुनकर सुर असुर नर सबही आनन्दको प्राप्त भए वैरभावके दोष सुन सब सभाके लोग महादुःखके भयकर कम्पायमान भए मुनि तो सर्व जीवनिसे निर्वैर हैं अधिक शुद्ध भाव धारते भए अर चतुर्निकायके सबही देव क्षमाकूं प्राप्त होय वैरभाव तजते भए अर अनेक राजा प्रतिबुद्ध होय शांति भाव धार गर्वका भार तज मुनि अर श्रावक भए अर जे मिथ्यावादी थे वह हू सम्यक्तकूं प्राप्त भए सबही कर्मनिकी विचित्रता जान निश्वास नाषते भए। धिक्कार या जगत्‌की मायाको या भांति सब ही कहते भए अर हाथ जोड़ सीस नवाय केवलीको प्रणामकर सुर असुर मनुष्य विभीषणकी प्रशंसा करते भए जो तिहारे आश्रयसे हमने केवलीके मुख उत्तम पुरुषनिके चारित्र सुने तुम धन्य हो बहुरि देवेंद्र नरेंद्र नागेंद्र सबही आनन्दके भरे अपने परिवार वर्ग सहित सर्वज्ञ देवकी स्तुति करते भए। हे भगवान पुरुषोत्तम! यह त्रैलोक्य सकल तुमकर शोभे हैं तातैं तिहारा सकलभूषण नाम सत्यार्थ है तिहारी केवल दर्शन केवल ज्ञानमई निजविभूति सर्व जगतकी विभूतिको जीतकर शोभे हैं यह अनन्त चतुष्टय लक्ष्मी सर्व लोकका तिलक है, यह जगत्‌के जीव अनादि कालके कर्म वश होय रहे हैं महादुःखके सागरमें पड़े हैं तुम दीननिके नाथ दीनबन्धु करुणानिधान! जीवनिको जिनराज पद देहु। हे केवलिन्! हम भव वनके मृग जन्म जरा मरण रोग शोक वियोग व्याधि अनेक प्रकारके दुःख भोक्ता अशुभ कर्मरूप जालविषै पड़े हैं तातैं छूटना कठिन है सो तुमही छुड़ाइवे समर्थ हो हमको निज बोध देवो जाकर कर्मका क्षय होय। हे नाथ! यह विषय वासनारूप गहन वन तामें हम निजपुरीका मार्ग भूल रहे हैं सो तुम जगत्‌के दीपक हमको शिव-

पुरीका पंथ दरसावो अर जे आत्मबोधरूप शांत रसके तिसाये तिनको तुम तृषाके हरणहारे महासरोवर हो अर कर्म भर्मरूप वनके भस्म करिवेको साक्षात् दावानलरूप हो अर जे विकल्प जाल नाना प्रकारके तेई भए वरफ ताकर कंपायमान जगत्के जीव तिनकी शीत व्यथा हरिवेको तुम साक्षात् सूर्य हो। हे सर्वेश्वर! सर्व भूतेश्वर जिनेश्वर! तिहारी स्तुति करिवेको चारज्ञानके धारक गणधरदेवहू समर्थ नाहीं तो अर कौन है प्रभो! तुमको हम वारम्वार नमस्कार करे हैं ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषा वचनिकाविषैं लक्ष्मण विभीषण सुग्रीव सीता भामण्डलके भव वर्णन करनेवाला एकसौ छवा पर्व पूर्ण भया ॥ १०६ ॥

अथानन्तर—केवलीके वचन सुन संसार भ्रमणका जो महादुःख ताकर खेदखिन्न होय जिनदीक्षाकी है अभिलाषा जाके ऐसा रामका सेनापति कृतान्तवक्र रामसूं कहता भया—हे देव! मैं या संसार असार-विषै अनादि कालका मिथ्या मार्गकर भ्रमता हुआ दुःखित भया अब मेरे मुनिव्रत धरिवेकी इच्छा है, तब श्रीराम कहते भए जिनदीक्षा अति दुर्धर है तू जगतका स्नेह तज कैसे धारैगो महातीव्र शीत उष्ण आदि वाईस परिषह कैसे सहेगा अर दुर्जन जनोंके दुष्टवचन कंटक तुल्य कैसे सहेगा अर अवतक तैंने कभी भी दुःख सहे नहीं कमलकी कर्णिका समान शरीर तेरा सो कैसे विषमभूमिके दुःख सहेगा, गहन वनविषैं कैसे रात्रि पूरी करेगा अर प्रकट दृष्टि पड़े हैं शरीरके हाड़ अर नसा जाल जहां ऐसे उग्र तप कैसे करेगा अर पक्ष मास उपवासकर दोष टाल पर घर नीरस भोजन कैसे करेगा? तू महा तेजस्वी शत्रुओंकी सेनाके शब्द न सहि सकै सो कैसे नीच लोकोंके किये उपसर्ग सहेगा? तब कृतांतवक्र बोला हे देव। जब मैं तिहारे स्नेहरूप अमृतको ही तजवेकों समर्थ भया तो मुझै कहा विषम है जब तक मृत्यु रूप वज्रकर यह देहरूप स्तम्भ न चिगे ता पहिले मैं महादुःखरूप यह भव वन अन्धकारमई वासे निकसा चाहूहूं जो वलतें घरमेंसे निकसे उसे दयावान न रोकै यह संसार असार महानिंद्य है इसे तजकर आत्महित करूं। अवश्य इष्टका वियोग होयगा या शरीरके योगकर सर्व दुःख हैं सो हमारे शरीर वहुरि उदय न आवें या

उपायविषैं बुद्धि उद्यमी भई है। ये वचन कृतान्तवक्रके सुन श्रीरामके आंसू आए अर नीठे नीठे मोहको दाब कहते भए—मेरीसी विभूतिको तज तू तपको सन्मुख भया है सो धन्य है जो कदाचित् या जन्मविषै मोक्ष न होय अर देव होय तो संकटविषै आय मोहि संबोधियो। हे मित्र! जो तू मेरा उपकार जाने है तो देवगतिमें विस्मरण मत करियो। तब कृतान्तवक्रने नमस्कारकर कही हे देव! जो आप आज्ञा करोगे सोही होयगा ऐसा कह सर्व आभूषण उतारे अर सकलभूषण केवलीको प्रणामकर अन्तर बाहिरके परिग्रह तजे कृतान्तवक्र था सो सौम्यवक्र होय गया। सुन्दर है चेष्टा जिसकी, इसको आदि दे अनेक महाराजा वैरागी भए उपजी है जिनधर्मकी रुचि जिनके निर्ग्रंथव्रत धारते भए अर कैयक श्रावक व्रतको प्राप्त भए अर कैयक सम्यक्तको धारते भए वह सभा हर्षित होय रत्नत्रय आभूषणकर शोभित भई। समस्त सुर असुर नर सकलभूषण स्वामीको नमस्कारकर अपने अपने स्थानक गए अर कमल समान हैं नेत्र जिनके, ऐसे श्रीराम सकलभूषण स्वामीको अर समस्त साधुवोंको प्रणामकर महा विनयरूपी सीताके समीप आए। कैसी है सीता? महा निर्मल तपकर तेज धरे जैसी घृतकी आहुतिकर अग्निकी शिखा प्रज्वलित होय तैसी पापोंके भस्म करिवेको साक्षात् अग्निरूप तिष्ठी है आर्यिकावोंके मध्य तिष्ठती देखी देदीप्यमान है किरणोंका समूह जिसके, मानों अपूर्व चन्द्रकांति तारावोंके मध्य तिष्ठती है, आर्यिकावोंके व्रत धरे अत्यंत निश्चल है। तजे हैं आभूषण जिसने तथापि श्री ह्री धृति कीर्ति बुद्धि लक्ष्मी लज्जा इनकी शिरोमणि सोहै है श्वेत वस्त्रको धरे कैसी सोहै है मानों मन्द पवनकर चलायमान हैं फेन कहिए झाग जिसके ऐसी पवित्र नदी ही है अर मानों निर्मल शरद पूनोंकी चांदनी समान शोभाको धरे समस्त आर्यिकारूप कुमुदनियोंको प्रफुल्लित करणहारी भासे है महा वैराग्यको धरे मूर्तिवंती जिनशासनकी देवता ही है सो ऐसी सीताको देख आश्चर्यको प्राप्त भया है मन जिनका ऐसे श्रीराम कल्पवृक्ष समान क्षण एक निश्चल होय रहे स्थिर हैं नेत्र भ्रकुटी जिनकी जैसे शरदकी मेघमालाके समीप कंचनगिरि सोहै तैसे श्रीराम आर्यिकावोंके समीप भासते भए, श्रीराम चित्तविषै चिंतवते हैं यह साक्षात् चन्द्रकिरण भव्य जन कुमुदनीको

प्रफुल्लित करणहारी सोहै है बड़ा आश्चर्य है यह कायर स्वभाव मेघके शब्दसे डरती सो अब महा तपस्विनी भयङ्कर वनविषै कैसे भयको न प्राप्त होयगी? नितंबहीके भारसे आलस्यरूप गमन करणहारी महा कोमलशरीर तपसे विलाय जायगी। कहां यह कोमल शरीर अर कहां यह दुधर जिनराजका तप? सो अति कठिन है जो दाह बड़े २ वृक्षोंको दाहे उसकर कमलिनीकी कहा बात? यह सदा मनवांछित मनोहर आहारकी करणहारी अब कैसे यथालाभ भिक्षा कर कालक्षेप करेगी? यह पुण्याधिकरिणी रात्रिविषै स्वर्गके विमान समान सुन्दर महलमें मनोहर सेजपर पौढ़ती अर वीण बांसुरी मृदंगादि शब्दकर निद्रा लेती सो अब भयकर वनविषै कैसे रात्रि पूर्ण करेगी वन तो डाभकी तीक्ष्ण अणियोंकर विषम अर सिंह व्याघ्रादिके शब्दकर डरावना, देखो मेरी भूल जो मूढ़ लोकोंके अपवादसे मैं महासती पतिव्रता शीलवंती सुन्दरी मधुरभाषिणी घरसे निकासी। इस भांति चिंताके भारकर पीड़ित श्रीराम पवनकर कंपायमान कमल समान कंपायमान होते भए फिर केवलीके वचन चितार धीर्य धर आंसू पोंछ शोकरहित होय महा विनय कर सीताको नमस्कार किया, लक्ष्मण भी सौम्य है चित्त जिसका हाथ जोड़ नमस्कारकर राम सहित स्तुति करता भया—हे भगवति। धन्य तू सती बंदनीक है सुन्दर है चेष्टा जिसकी जैसे धरा सुमेरुको धारे तैसे तू जिनराजका धर्म धारे है तैंने जिनवचनरूप अमृत पीया उसकर भव रोग निवारेगी सम्यक्त ज्ञानरूप जहाजकर संसार समुद्रको तिरेगी। जे पतिव्रता निर्मल चित्तकी धरणहारी हैं तिनकी यही गति है अपना आत्मा सुधारें अर दोनों लोक अर दोनों कुल सुधारें पवित्र चित्तकर ऐसी क्रिया आदरी। हे उत्तम नियमकी धरणहारी हम जो कोई अपराध किया होय सो क्षमा करियो संसारी जीवोंके भाव अविवेकरूप होय हैं सो तू जिनमार्गविषै प्रवरती संसारकी माया अनित्य जानी अर परम आनंद रूप यह दशा जीवोंको दुर्लभ है इस भांति दोनों भाई जानकीकी स्तुतिकर लव अंकुशको आगे धरे अनेक विद्याधर महीपाल तिन सहित अयोध्यामें प्रवेश करते भए जैसे देवों सहित इन्द्र अमरावतीमें प्रवेश करे अर समस्त राणी नाना प्रकारके वाहनोंपर चढ़ी परिवारसहित नगरमें प्रवेश करती भई सो रामको नगरमें प्रवेश करता देख

मादर ऊपर बैठी स्त्री परस्पर वार्ता करै हैं यह श्रीरामचन्द्र महा शूरवीर शुद्ध है अन्तःकरण जिनका महा विवेकी मूढ़ लोकोंके अपवादसे ऐसी पतिव्रता नारी खोई तब कैयक कहती भई जे निर्मल कुलके जन्मे शूरवीर क्षत्री हैं तिनकी यही रीति है किसी प्रकार कुलको कलंक न लगावें लोकोंके संदेह दूर करिवे निमित्त रामने उसको दिव्य दई वह निर्मल आत्मा दिव्यमें सांची होय लोकोंके संदेह मेट जिन दीक्षा धारती भई अर कोई कहै—हे सखि ! जानकी विना राम कैसे दीखै हैं जैसे विना चांदनी चांद अर दीप्ति विना सूर्य तब कोई कहती भई यह आप ही महाकांतिधारी हैं इनकी कांति पराधीन नहीं अर कोई कहती भई सीताका वज्रचित्त है जो ऐसे पुरुषोत्तम पतिको छोड़ जिन दीक्षा धारी तब कोई कहती भई धन्य है सीता जो अनर्थरूप गृहवासको तज आत्मकल्याण किया अर कोई कहती भई ऐसे सुकुमार दोनों कुमार महा धीर लव अंकुश कैसे तजे गए स्त्रीका प्रेम पतिसे छूटे परन्तु अपने जाए पुत्रोंसे न छूटे तब कोई कहती भई ये दोनों पुत्र परम प्रतापी हैं इनका माता क्या करेगी इनका सहाई पुण्य ही है अर सबही जीव अपने अपने कर्मके आधीन हैं इस भांति नगरकी नारी वचनालाप करे हैं जानकीकी कथा कौनको आनंद-कारिणी न होय अर यह सबही रामके दर्शनकी अभिलाषिनी रामको देखती देखती तृप्त न भई जैसे भ्रमर कमलके मकरन्दसे तृप्त न होय अर कैयक लक्ष्मणकी ओर देख कहती भई ये नरोत्तम नारायण लक्ष्मी-वान अपने प्रतापकर वश करी है पृथ्वी जिन्होंने चक्रके धारक उत्तम राज्य लक्ष्मीके स्वामी वैरियोंकी स्त्रियोंको विधवा करणहारे रामके आज्ञाकारी हैं इस भांति दोनों भाई लोककर प्रशंसा योग्य अपने मंदिरमें प्रवेश करते भए जैसे देवेंद्र देवलोकमें प्रवेश करें। यह श्रीरामका चरित्र जो निरन्तर धारण करे सो अवि-नाशी लक्ष्मीको पावै ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषावचनिकाविषै कृतान्तवक्त्रके वैराग्य वर्णन करनेवाला एकसौ सातवां पर्व पूर्ण भया ॥१०७॥

अथानन्तर—राजा श्रेणिक गौतम स्वामीके मुख श्रीरामका चरित्र सुन मनविषै विचारता भया कि सीताने लव अंकुश पुत्रोंसे मोह तजा सो वह सुकुमार मृगनेत्र निरन्तर सुखके भोक्ता कैसे माताका वि-

योग सह सके ? ऐसे पराक्रमके धारक उदारचित्त तिनको भी इष्ट वियोग अनिष्ट संयोग होय है तो औरोंकी कहा बात ? यह विचार कर गणधर देवसे पूछा, हे प्रभो ! मैं तिहारे प्रसादकर राम लक्ष्मणका चरित्र सुना अब बाकी लव अंकुशका सुना चाहू हूं तब इन्द्रभूति कहिए गौतम स्वामी कहते भये—हे राजन् । काकन्दी नाम नगरी उसमें राजा रतिवर्द्धन राणी सुदर्शना ताके पुत्र दोय एक प्रियंकर दूजा हितंकर अर मन्त्री सर्वगुप्त राज्यलक्ष्मीका धुरंधर सो स्वामीद्रोही राजाके मारवेका उपाय चितवे अर सर्वगुप्तकी स्त्री विजयावती सो पापिनी राजासे भोग किया चाहे अर राजा शीलवान परदारापराङ्मुख याकी मायाविषै न आया, तब याने राजासे कही—मन्त्री तुमको मारा चाहे है सो राजाने याकी बात न मानी तब यह पतिको भरमावती भई जो राजा तोहि मार मोहि लिया चाहे है तब मन्त्री दुष्टने सब सामन्त राजासे फोरे अर राजाका जो सोवनेका महल तहां रात्रिको अग्नि लगाई सो राजा सदा सावधान हुता अर महलविषै गोप सुरङ्ग रखाई थी सो सुरंगके मार्ग होय दोनों पुत्र अर स्त्रीको लेय राजा निकसा सो काशीका धनी राजा कश्यप महान्यायवान उग्रवंशी राजा रतिवर्धनका सेवक था उसके नगरको राजा गोप्य चला अर सर्वगुप्त रतिवर्धनके सिंहासनपर बैठा सबको आज्ञाकारी किए अर राजा कश्यपको भी पत्र लिख दूत पठाया कि तुम भी आय मोहि प्रणामकर सेवा करो, तब कश्यपने कही हे दूत । सर्वगुप्त स्वामीद्रोही है सो दुर्गतिके दुःख भोगेगा, स्वामीद्रोहीका नाम न लीजे मुख न देखिये सो सेवा कैसे कीजे ? उसने राजाको दोनों पुत्र अर स्त्री सहित जलाया सो स्वामीघात स्त्रीघात अर बालघात यह महादोष उसने उपार्जे तातैं ऐसे पापीका सेवन कैसे करिये ? जाका मुख न देखना सो सर्व लोकोंके देखते उसका सिरकाट धनीका वैर लूंगा, तब यह वचन कह दूत फेर दिया दूतने जाय सर्वगुप्तको सर्व वृतांत कहा, सो अनेक राजावोंकर युक्त महासेनासहित कश्यप ऊपर आया सो आयकर कश्यपका देश घेरा काशीके चौगिर्द सेना पड़ी तथापि कश्यपके सुलहकी इच्छा नहीं, युद्धहीका निश्चय, अर राजा रतिवर्धन रात्रिके विषै काशीके वनविषै आया अर एक द्वारपाल तरुण कश्यपपर भेजा सो जाय कश्यपसे राजाके आवनेका वृत्तांत

कहता भया सो कश्यप अतिप्रसन्न भया अर कहां महाराज कहां महाराज ऐसे वचन वारम्वार कहता भया तब द्वारपालने कहा, महाराज वनविषै तिष्ठे हैं तब यह धर्मी स्वामिभक्त अतिहर्षित होय परिवार सहित राजापै गया अर उसकी आरती करी अर पांव पड़कर जय जयकार करता नगरमें लाया नगर उछाला अर यह ध्वनि नगरविषै विस्तरी कि जो काहूसे न जीता जाय ऐसा रतिवर्धन राजेंद्र जयवन्त होवो। राजा कश्यपने धनीके आवनेका अति उत्सव किया अर सब सेनाके सामन्तनिको कहाय भेजा जो स्वामी तो विद्यमान तिष्ठे हैं अर तुम स्वामीद्रोहीके साथ होय स्वामीसे लड़ोगे, कहा यह तुमको उचित है? तब वह सकल सामन्त सर्वगुप्तको छोड़ स्वामीपै आए अर युद्धविषै सर्वगुप्तको जीवता पकड़ काकंदी नगरीका राज्य रतिवर्धनके हाथविषै आया राजा जीवता बचा सो बहुरि जन्मोत्सव किया। महा दान किए सामन्तोंके सन्मान किए भगवान्की विशेष पूजा करी कश्यपका बहुत सन्मान किया अति बधाया अर घरको विदा किया सो कश्यप काशीके विषै लोकपालनिकी नाईं रमै अर सर्वगुप्त सर्वलोकनिद्य मृतकके तुल्य भया कोई भीटे नाहीं मुख देखे नाहीं, तब सर्वगुप्तने अपनी स्त्री विजयावतीका दोष सर्वत्र प्रकाशा जो याने राजा बीच अर मो बीच अन्तर डाला यह वृतान्त सुन विजयावती अति द्वेषको प्राप्त भई जो मैं न राजाकी भई न धनीकी भई सो मिथ्या तपकर राक्षसी भई, अर राजा रतिवर्धनने भोगनितै उदास होय सुभानुस्वामीके निकट मुनिव्रत धरे सो राक्षसीने रतिवर्धन मुनिको अति उपसर्ग किए। मुनि शुद्धोपयोगके प्रसादतैं केवली भए अर प्रियंकर हितंकर दोनों कुमार पहिले याही नगरविषै दामदेव नामा विप्रके श्यामली स्त्रीके सुदेव वसुदेव नामा पुत्र हुते। सो वसुदेवकी स्त्री विश्वा अर सुदेवकी स्त्री प्रियंगु इनका गृहस्थ पद प्रशंसा योग्य हुता इन श्रीतिलक नाम मुनिको आहारदान दिया सो दानके प्रभावकर दोनों भाई स्त्रीसहित उत्तरकुरु भोगभूमिविषै उपजे तीन पल्यका आयु भया, साधुका जो दान सोई भया वृक्ष उसके महाफल भोगभूमिविषै भोग दूजे स्वर्ग देव भये वहां सुख भोग चये सो सम्यग्ज्ञानरूप लक्ष्मी-कर मंडित पाप कर्मके क्षय करणहारे प्रियंकर हितंकर भये, मुनि होय ग्रैवेयक गये तहांसे चयकर लवणां-

कुश भये महा भव्य तद्भव मोक्षगामी अर राजा रतिवर्धनकी राणी सुदर्शना प्रियंकर हितंकरकी माता पुत्रनिमें जाका अत्यन्त अनुराग था सो भरतार अर पुत्रनिके वियोगसे अत्यन्त आर्तिरूप होय नाना योनिनिमें भ्रमणकर किसी एक जन्मविषै पुण्य उपार्ज यह सिद्धार्थ भया धर्मविषै अनुरागी सर्व विद्याविषै निपुण सो पूर्व भवके स्नेहसे लवणअंकुशको पढ़ाये ऐसे निपुण किये जो देवनि कर भी न जीते जायं यह कथा गौतमस्वामीने राजा श्रेणिकसे कही अर आज्ञाकारी हे नृप ! यह संसार असार है अर इस जीवके कौन कौन माता पिता न भये जगत्‌के सबही संबंध झूठे हैं एक धर्महीका सम्बन्ध सत्य है इसलिये विवेकियोंको धर्महीका यत्न करना जिसकर संसारके दुःखोंसे छूटे समस्त कर्म महानिंद्य दुःखको वृद्धिके कारण तिनको तजकर जैनका भाषा तपकर अनेक सूर्यकी कांतिको जीत साधु शिवपुर कहिये मुक्ति तहां जाय हैं ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषावचनिकाविषै लवणांकुशके पूर्वभवका वर्णन करनेवाला एकसौ आठवां पर्व पूर्ण भया ॥१०८॥

अथानन्तर—सीता पति अर पुत्रोंको तजकर कहां कहां तप करती भई सो सुनो—कैसी है सीता ? तीन लोकविषै प्रसिद्ध है यश जिसका । जिस समय सीता भई वह श्रीमुनि सुव्रतनाथजीका समय था । ते बीसवें भगवान् महाशोभायमान भवभ्रमके निवारणहारे जैसा अरहनाथ अर मल्लिनाथका समय तैसा मुनिसुव्रतनाथका समय उसमें श्रीसकलभूषण केवली केवल ज्ञानकर लोकालोकके ज्ञाता विहार करे हैं अनेक जीव महाव्रती अणुव्रती किए सकल अयोध्याके लोक जिनधर्मविषै निपुण विधिपूर्वक गृहस्थका धर्म आराधे सकल प्रजा भगवान् सकलभूषणके वचनविषै श्रद्धावान जैसे चक्रवर्तीकी आज्ञाको पालें तैसे भगवान् धर्मचक्री तिनकी आज्ञा भव्य जीव पाले, रामका राज्य महाधर्मका उद्योतरूप जिस समय घने लोक विवेकी साधुसेवाविषै तत्पर । देखो जो सीता अपनी मनोग्यता कर देवांगनानिकी शोभाको जीतती हुती सो तपकर ऐसी होय गई मानों दग्ध भई माधुरीलता ही है महावैराग्य कर मण्डित अशुभ भावकर रहित स्त्री पर्यायको अतिनिंदती महातप करती भई धूरकर धूसर होय रहे हैं केश जिसके अर स्नानरहित शरीरके संस्काररहित पसेव कर युक्त गात्र जिसमें रज आय पड़े सो शरीर मलिन होय रहा है बेला तेला पक्ष

उपवास अनेक उपवास कर तनु क्षीण किया दोष टारि शास्त्रोक्त पारणा करे शील व्रत गुणनिविषै अनुरागिणी आध्यात्मके विचार कर अत्यन्त शान्त होय गया है चित्त जाका वश किये हैं इन्द्रिय जाने औरनितैं न वने ऐसा उग्र तप करती भई मांस अर रुधिर कर वर्जित भया है सर्व अंग जाका प्रकट नजर आवे है अस्थि अर नसा जाल जाके मानों काठकी पुतली हो है सूको नदी समान भासती भई बैठ गये हैं कपोल जाके जूड़ा प्रमाण धरती देखती चले महा दयावंती सौम्य है दृष्टि जाकी तपका कारण देह उसके समाधानके अर्थ विधिपूर्वक भिक्षा वृत्ति कर आहार करै। ऐसा तप किया कि शरीर और ही होय गया अपना पराया कोई न जाने जो यह सीता है इसे ऐसा तप करती देख सकल आर्या इसहीकी कथा करैं इसहीकी रीति देख और हू आदरें सबनिविषै मुख्य भई इस भांति बासठ वर्ष महा तप किये अर तैंतीस दिन आयुके बाकी रहे तब अनशन व्रत धार परम आराधना आराध जैसे पुष्पादिक उच्छिष्ट साथरेको तजिये तैसे शरीरको तजकर अच्युतस्वर्गविषै प्रतीन्द्र भई।

गौतम स्वामी कहे हैं, हे श्रेणिक। जिनधर्मका माहात्म्य देखो जो यह प्राणी स्त्री पर्यायविषै उपजी हुती सो तपके प्रभावकर देवोंका प्रभु होय। सीता अच्युत स्वर्गविषै प्रतींद्र भई वहां मणिनिकी कांतिकर उद्योत किया है आकाशविषै जाने ऐसे विमानविषै उपजी विमान मणि कांचनादि महाद्रव्यनिकर मंडित विचित्रता धरे परम अद्भुत सुमेरुके शिखर समान ऊंचा है वहां परम ईश्वरताकर सम्पन्न प्रतेंद्र भया। हजारों देवांगना तिनके नेत्रोंका आश्रय जैसा तारावोंकर मंडित चन्द्रमा सोहै तैसा सोहता भया अर भगवानकी पूजा करता भया, मध्यलोकमें आय तीर्थोंकी यात्रा साधुवोंकी सेवा करता भया अर तीर्थंकरोंके समोसरणमें गणधरोंके मुखसे धर्म श्रवण करता भया, यह कथा सुन गौतमस्वामीसे राजा श्रेणिकने पूछा—हे प्रभो। सीताका जीव सोलवें स्वर्ग प्रतंद्र भया उस समय वहां इन्द्र कौन था? तब गौतमस्वामीने कहा उस समय वहां राजा मधुका जीव इन्द्र था। उसके निकट यह प्रतेंद्र भया सो वह मधुका जीव नेमिनाथ स्वामीके समय अच्युतेन्द्रपदसे चयकर वासुदेवकी रुक्मणी राणी ताके प्रद्युम्न पुत्र भया अर

उसका भाई कैटभ जाम्बुवतीके शंभु नाम पुत्र भया, तब श्रेणिकने गौतम स्वामीसे विनती करी हे प्रभो ! मैं तुम्हारे वचनरूप अमृत पीवता पीवता तृप्त नाहीं जैसे लोभी जीव धनसे तृप्त नाहीं इसलिये मुझे मधुका अर उसके भाई कैटभका चरित्र कहो। तब गणधर कहते भये—एक मगध नामा देश सर्व धान्यकर पूर्ण जहां चारों वर्ण हर्ष से वसैं धर्म अर्थ काम मोक्षके साधक अनेक पुरुष पाइये अर भगवानके सुन्दर चैत्यालय अर अनेक नगर ग्राम तिनकर वह देश शोभित जहां नदियोंके तट गिरियोंके शिखर वनमें ठौर ठौर साधुवोंके संघ विराजे हैं राजा नित्योदित राज्य करै उस देशमें एक शालि नाम ग्राम नगर सारिखा शोभित वहां एक ब्राह्मण सोमदेव उसके स्त्री अग्निला पुत्र अग्निभूत वायुभूत सो वे दोनों भाई लौकिक शास्त्रमें प्रवीण अर पठन पाठन दान प्रतिग्रहमें निपुण अर कुलके तथा विद्याके गर्वकर गर्वित मनविषै ऐसा जानें, हमसे अधिक कोई नहीं जिनधर्मतैं परांमुख रोग समान इन्द्रीनिके भोग तिनहीको भले जानैं। एक दिन स्वामी नन्दोवर्धन अनेक मुनिनिसहित वनविषै आय विराजे, बड़े आचार्य अवधिज्ञान कर समस्त मूर्तिक पदार्थनिको जानैं सो मुनिनिका आगमन सुन ग्रामके लोक सब दर्शनको आए हुते अर अग्निभूत वायुभूतने काहूसे पूछा जो यह लोक कहां जाय हैं ? तब वाने कहा नन्दीवर्धन मुनि आये हैं तिनके दर्शनकू जाय हैं। तब सुनकर दोऊ भाई क्रोधायमान भये जो हम वादकर साधुनिको जीतेंगे तब इनकू माता पिताने मने किया जो तुम साधुनितैं वाद न करो तथापि इन्होंने न मानी वादको गए तब इनको आचार्यके निकट जाते देख एक सात्विक नामा मुनि अवधिज्ञानी इनको पूछते भए—तुम कहां जावो हो ? तब इन्होंने कही तुमविषै श्रेष्ठ तुम्हारा गुरु है, उसको वादकर जीतवे जाय हैं, तब सात्विक मुनिने कहा हमसे चर्चा करो। तब यह क्रोधकर मुनिके समीप बैठे अर कही तू कहांते आया है तब मुनिने कहा तुम कहांतैं आए ? तब वह क्रोधकर कहते भए यह तैंने कहा पूछा ? हम ग्रामतैं आए हैं। कोई शास्त्रकी चर्चा करहु। तब मुनिने कही यह तो हम जाने हैं तुम शालिग्रामसे आए हो अर तिहारे बापका नाम सोमदेव माताका नाम अग्निला अर तिहारे नाम अग्निभूत वायुभूत तुम विप्रकुल हो सो यह तो प्रकट

है परंतु हम तुमसे यह पूछे हैं अनादिकालके भव वनविषै भ्रमण करो हो सो या जन्मविषै कौन जन्मसे आए हो ? तव इनने कही यह जन्मांतरकी वात हम कों पूछो सो और कोई जाने है ? तव मुनिने कही हम जाने हैं तुम सुनो--पूर्वभवविषै तुम दोऊ भाई या ग्रामके वनविषै परस्पर स्नेहके धारक स्याल हुते विरूपमुख अर याही ग्रामविषै एक वहुत दिनका वासी पामर नामा पितहड ब्राह्मण सो वह खेतविषै सूर्य अस्त समय क्षुधाकर पीड़ित नाड़ी आदि उपकरण तजकर आया अर अंजनगिरि तुल्यमेघ माला उठी, सात अहोरात्रका झड़ भया,सो पामर तो घरसे आय न सका अर वे दोऊ स्याल अति क्षुधातुर अंधेरी रात्रिविषै आहारको निकसे सो पामरके खेतविषै भीजी नाड़ी कर्दमकर लिप्त पड़ी हुती सो उन भक्षण करी उसकर विकराल उदर वेदना उपजी स्याल मूवे,अकाम निर्जराकर तुम सोमदेवके पुत्र भए अर वह पामर सात दिन पीछे खेतमें आया सो दोऊ स्याल मूए देख अर नाडी कटो देख स्यालनिका चर्म ले भाथड़ी करी सो अव तक पामरके घरविषै टंगी है अर पामर मरकर पुत्रके घर पुत्र भया सो जातिस्मरण होय मौन पकड़ा जो मैं कहा कहों, पिता तो मेरा पूर्व भवका पुत्र अर माता पूर्व भवके पुत्रकी वधू तातैं न वोलना ही भला सो यह पामरका जीव मौनी यहांही वैठा है ऐसा कह मुनि पामरके जीवसूं वोले-अहो तू पुत्रके पुत्र भया सो यह आश्चर्य नहीं, संसारका ऐसा ही चरित्र है जैसे नृत्यके अखाड़ेमें वहुरूपिया अनेक रूप वनाय नाचे तैसे यह जीव नाना पर्यायरूप भेष धर नाचै है, राजातैं रंक होय रंकसे राजा होय, स्वामीसे सेवक, सेवकसे स्वामी, पितासे पुत्र, पुत्रसे पिता, मातासे भार्या, भार्यासे माता, यह संसार अरहटकी घड़ी है। ऊपरली नीचे निचली ऊपर, ऐसा संसारका स्वरूप जान, हे वत्स ! अव तू गूंगापना तज, वचनालाप कर। या जन्मका पिता है तासे पिता कह, मातासे माता कह,पूर्व भवका कहा व्यवहार रहा ? यह वचन सुन वह विप्र हर्षकर रोमांच होय फूल गए हैं नेत्र जाके मुनिको तीन प्रदक्षिणा देय नमस्कारकर जैसे वृक्षकी जड़ उखड़ जाय अर गिर पडे तैसे पायन पड़ा अर मुनिको कहता भया—हे प्रभो ! तुम सर्वज्ञ हो सकल लोककी व्यवस्था जानो हो, या भयानक संसार सागरविषै मैं डूबूं था सो तुमने दयाकर निकासा, आत्मवोध दिया। मेरे मनकी सव जानी अव मोहि दीक्षा देवहु ऐसा कहकर समस्त कुटुम्वका त्यागकर मुनि भया।

यह पामरका चरित्र सुन अनेक लोक मुनि भए अनेक श्रावक भए अर इन दोनों भाईनिको पूर्व भवकी खाल लोक ले आए सो इनिने देखी, लोकोंने हास्य करी जो यह मांसके भक्षक स्याल थे सो यह दोऊ भाई द्विज बड़े मूर्ख जो मुनिनिसे वाद करने आए। ये महामुनि तपोधन शुद्धभाव सबके गुरु अहिंसा महाव्रतके धारक इन समान और नाहीं यह महामुनि महाव्रतरूप शिखाके धारक क्षमारूप यज्ञोपवीत धरैं ध्यानरूप अग्निहोत्रके कर्त्ता महाशांत मुक्तिके साधनविषै तत्पर अर जे सर्व आरम्भविषैं प्रवरतैं ब्रह्मचर्य रहित वे मुखसे कहे हैं कि हम द्विज हैं परन्तु क्रिया करे नहीं जैसे कोई मनुष्य या लोकमें सिंह कहावे देव कहावे परन्तु वह सिंह नाहीं, तैसे यह नाममात्र ब्राह्मण कहावें परन्तु इनमें ब्रह्मत्व नाहीं अर मुनिराज धन्य हैं परम संयमी महा क्षमावान् तपस्वी जितेंद्री निश्चय थकी ये ही ब्राह्मण है ये साधु महाभद्रपरणामी भगवतके भक्त महा तपस्वी यति धीर वीर मूल गुण उत्तरगुणके पालक इन समान अर कोऊ नाहीं यह अलौकिक गुण लिये हैं। अर इनहीकूं परिव्राजक कहिये काहेतै जो वह संसारकूं तज मुक्तिको प्राप्त होयं ये निर्ग्रंथ अज्ञान तिमिरके हर्त्ता तपकर कर्मकी निर्जरा करे है. क्षीण किये हैं रागादिक जिन्होने महाक्षमावान पापनिके नाशक तातैं इनको क्षपणक हू कहिये यह संयमी कषायरहित शरीरतैं निर्मोह दिगम्बर योगीश्वर ध्यानी ज्ञानी पंडित निःस्पृह सो ही सदा वंदिवे योग्य हैं ये निर्वाणको साधैं ताते ये साधु कहिये अर पंच आचारको आप आचरैं औरनिको आचरावें तातैं आचार्य कहिये अर आगार कहिये घर ताके त्यागी तातैं अनागार कहिये शुद्ध भिक्षाके ग्राहक तातैं भिक्षुक कहिये. अति कायक्लेश करें अशुभकर्मके त्यागी उज्ज्वल क्रियाके कर्ता तप करते खेद न मानैं तातैं श्रमण कहिये आत्मस्वरूपकूं प्रत्यक्ष अनुभवैं तातैं मुनि कहिये रागादिक रोगोंके हरिवेका यत्न करें तातैं यति कहिये या भांति लोकनिने साधुकी स्तुति करी अर इन दोनों भाईनिकी निन्दा करी तब यह मानरहित प्रभारहित विलखे होय घर गये रात्रिके विषै पापी मुनिके मारिवेको आए अर वे सात्विक मुनि अपरिग्रही संघको तज अकेले मसान भूमिविषै अस्थ्यादिकसे दूर एकांत पवित्र भूमिमें विराजे थे कैसी है वह भूमि जहां रीछ व्याघ्र आदि दुष्ट

जीवोंका नाद होय रहा है अर राक्षस भूत पिशाचोंकर भरा है नागोंका निवास है अर अंधकाररूप भयंकर तहां शुद्ध शिला जीव जंतुरहित उसपर कायोत्सर्ग धर खड़े थे सो उन पापियोंने देखे दोनों भाई खड्ग काढ़ क्रोधायमान होय कहते भए जब तो तोहि लोकोंने बचाया अब कौन बचावेगा हम पंडित पृथ्वीविषै श्रेष्ठ प्रत्यक्ष देवता तू निलज्ज हमको स्याल कहे यह शब्द कह दोनों अत्यंत प्रचण्ड होय उसते लाल नेत्र दयारहित मुनिके मारिवेको उद्यमी भए तब वनका रक्षक यक्ष उसने देख मनविषै चिंतवता भया—देखो ऐसे निर्दोष साधु ध्यानी कायासे निर्ममत्व तिनके मारिवेको उद्यमी भए तब यक्षने यह दोनों भाई कीले सो हलचल सके नाहीं, दोनों पसवारे खड़े प्रभात भया सकल लोक आए देखें तो यह दोनों मुनिके पसवारे कीले खड़े हैं अर इनके हाथविषै नांगी तलवार है तब इनको सब लोक धिक्कार धिक्कार कहते भये यह दुराचारी पापी अन्यायी ऐसा कर्म करनेको उद्यमी भए इन समान और पापी नाहीं और यह दोनों चित्तविषै चितवते भए जो यह धर्मका प्रभाव है हम पापी थे सो बलात्कार कीले स्थावर समकर डारे अब या अवस्थामें जीवते बचें तो श्रावकके व्रत आदरें अर उस ही समय इनके माता पिता आए वारम्बार मुनिको प्रणामकर विनती करते भए—हे देव! यह कुपूत पुत्र हैं इन्होंने बहुत बुरी करी आप दयालु हो जीवदान देवो साधु बोले हमारे काहूसे कोप नहीं हमारे सब मित्र बांधव हैं तब यक्ष लाल नेत्रकर अति गुंजारसे बोला अर सबोंके समीप सर्व वृत्तांत कहा कि जो प्राणी साधुवोंकी निन्दा करें सो अनर्थको प्राप्त होवें जैसे निर्मल कांचविषै वांका मुखकर निरखे तो वांका ही दीखै तैसे जो साधुवोंको जैसा भावकर देखै तैसा ही फल पावै जो मुनियोंकी हास्य करे सो बहुत दिन रुदन करे अर कठोर वचन कहे सो क्लेश भोगवे अर मुनिका वध करे तो अनेक कुमरण पावे द्वेष करे सो पाप उपार्जे भव २ दुःख भोगवे अर जैसा करे तैसा फल पावे यक्ष कहे है हे विप्र! तेरे पुत्रोंके दोषकर मैं कीले हैं विद्याके मानकर गर्वित मायाचारी दुराचारी संयमियोंके घातक हैं ऐसे वचन यक्षने कहे तब सोमदेव विप्र हाथ जोड़ साधुकी स्तुति करता भया अर रुदन करता भया आपको निन्दता छाती कूटता ऊर्ध्व भुजाकर स्त्रीसहित विलाप करता भया तब मुनि

परम दयालु यक्षको कहते भए—हे सुन्दर! हे कमलनेत्र! यह बालबुद्धि हैं इनका अपराध तुम क्षमा करो तुम जिनशासनके सेवक हो सदा जिनशासनकी प्रभावना करो हो तातैं मेरे कहेसे इनसे क्षमा करो तब यक्षने कही आप कहा सो ही प्रमाण वे दोनों भाई छोड़े तब यह दोनों भाई मुनिको प्रदक्षिणा देय नमस्कारकर साधुका व्रत धरिवेको असमर्थ तातैं सम्यक् सहित श्रावकके व्रत आदरते भए जिनधर्मकी श्रद्धाके धारक भए अर इनके माता पिता व्रत ले छोड़ते भए सो वे तो अव्रतके योगसे पहिले नरक गये अर यह दोनों विप्रपुत्र निस्संदेह जिनशासन रूप अमृतका पानकर हिंसाका मार्ग विषवत् तजते भए समाधिमरण कर पहिले स्वर्ग उत्कृष्ट देव भए वहांसे चयकर अयोध्याविषै समुद्र सेठ उसके धारणी स्त्री उसकी कुक्षि विषै उपजे नेत्रोंको आनंदकारी एकका नाम पूर्णभद्र दूजेका नाम कांचनभद्र सो श्रावकके व्रत धार पहिले स्वर्ग गए अर ब्राह्मणके भवके इनके माता पिता पापके योगसे नरक गए हुते वे नरकसे निकस चाण्डाल अर कूकरी भए वे पूर्णभद्र अर कांचनभद्रके उपदेशसे जिनधर्मका आराधन करते भए समाधिमरणकर सोमदेव द्विजका जीव चाण्डालसे नंदीश्वर द्वीपका अधिपति देव भया अर अग्निला ब्राह्मणीका जीव कूकरीसे अयोध्याके राजाकी पुत्री होय उस देवके उपदेशसे विवाहका त्यागकर आर्यिका होय उत्तम गति गई वे दोनो परम्पराय मोक्ष पावेंगे। अर पूर्णभद्र कांचनभद्रका जीव प्रथम स्वर्गसे चयकर अयोध्याका राजा हेम राणी अमरावती उसके मधुकैटभ नामा पुत्र जगत्प्रसिद्ध भए जिनको कोई जीत न सके महाप्रबल महारूपवान् जिन्होंने यह समस्त पृथिवी वश करी सब राजा तिनके आधीन भए। भीम नाम राजा गढ़के बलकर इनकी आज्ञा न माने जैसे चमरेन्द्र असुर कुमारनिका इन्द्र नन्दनवनको पाय प्रफुल्लित होय है, तैसे वह अपने स्थानकके बलसे प्रफुल्लित रहे अर एक वीरसेन नाम राजा वटपुरका धनी मधुकैटभका सेवक उसने मधुकैटभको विनतीपत्र लिखा—हे प्रभो! भीमरूप अग्निने मेरा देश रूप वन भस्म किया। तब मधु क्रोधकर बड़ी सेनासे भीम ऊपर चढ़ा सो मार्गविषै वटपुर जाय डेरा किए वीरसेनने सन्मुख जाय अतिभक्ति कर मिहमानी करी उसके स्त्री चंद्राभा चंद्रमा समान है वदन जिसका सो वीरसेन

मूर्खनेउसके हाथ मधुका आरता कराया अर उसहीके हाथ जिमाया चंद्राभाने पतिसे घनी ही कही जो अपने घरविषै सुन्दर वस्तु होय सो राजाको न दिखाइये पतिने न मानी। राजा मधु चंद्राभाको देख मोहित भया मनविषै विचारी इस सहित विन्ध्याचलके वनका वास भला अर या विना सब भूमिका राज्य भी भला नाहीं सो राजा अन्याय ऊपर आया तब मंत्रीने समझाया अबार यह बात करोगे तो कार्य सिद्ध न होयगा अर राज्यभ्रष्ट होयगा तब राजा मंत्रियोंके कहेसे राजा वीरसेनको लार लेय भीम पर गया उसे युद्धविषै जीत वशीभूत किया अर और सब राजा वश किए बहुरि अयोध्या आय चन्द्राभाके लेयवेका उपाय चिंतया सब राजा वसंतकी क्रीड़ाके अर्थ स्त्रीसहित बुलाए अर वीरसेनको चन्द्राभा सहित बुलाया, तब हूं चंद्राभाने कही कि मुझे मत ले चलो सो न मानी लेही आया, राजाने मास पर्यंत वनविषै क्रीड़ा करी अर राजा आए थे तिनको दान सन्मान कर स्त्रियों सहित विदा किए अर वीरसेनको कैयक दिन राखा अर वीरसेनको भी अति दान सनमान कर विदा किया अर चन्द्राभाके निमित्त कही इनके निमित्त अद्भुत आभूषण बनवाये हैं सो अभी बन नहीं चुके हैं तातैं इनको तिहारे पीछे विदा करेंगे सो वह भोला कछू समझे नहीं घर गया वाके गए पीछे मधुने चन्द्राभाको महलविषै बुलाया अभिषेककर पटराणी पद दिया सब राणियोंके ऊपर करी। भोगकर अन्ध भया है मन जिसका इसे राख आपको इन्द्रसमान मानता भया अर वीरसेनने सुनी कि चन्द्राभा मधुने राखी तब पागल होय कैयक दिनविषै मंडव नामा तापसका शिष्य होय पंचाग्नि तप करता भया अर एकदिन राजा मधु न्यायके आसन बैठा सो एक परदारारतका न्याय आया सो राजा न्यायविषै बहुत बेर लग बैठे रहे बहुरि मन्दिरविषै गए तब चन्द्राभाने कही महाराज आज घनी बेर क्यों लगी? हम क्षुधाकर खेदखिन्न भईं आप भोजन करो तो पीछे भोजन करूं, तब राजा मधुने कही आज एक परनारीरतका न्याय आय पड़ा तातैं देर लगी तब चन्द्राभाने हंसकर कही जो परस्त्रीरत होय उसकी बहुत मानता करनी तब राजाने कोधकर कही तुम यह क्या कही जे दुष्ट व्यभिचारी हैं तिनका निग्रह करना जे परस्त्रीका स्पर्श करें संभाषण करें वे पापी हैं सेवन करें तिनकी कहा बात? जे ऐसे कर्म

करें तिनको महादण्ड दे नगरसे काढ़ने जे अन्यायमार्गी हैं वे महा पापी नरकविषै पड़े हैं अर राजाओंके दण्ड योग्य हैं तिनका मान कहा ? तब राणी चन्द्राभा राजाको कहती भई—हे नृप ! यह परदारा सेवन महा दोष है तो तुम आपको दण्ड क्यों न देवो तुमही परदारारत हो तो औरोंको कहा दोष ? जैसा राजा तैसी प्रजा जहां राजा हिंसक होय अर व्यभिचारी होय तहां न्याय कैसा ? तातें नृप होय सो जिस जलकर बीज उगे अर जगत् जीवे सो जलही जो जलाय मारे तो और शीतल करणहारा कौन ? ऐसे उलाहनाके वचन चन्द्राभाके सुन राजा कहता भया—हे देवि ! तुम कहो हो सो ही सत्य है बारम्बार इनकी प्रशंसा करी अर कहा मैं पापी लक्ष्मीरूप पाश कर बंधा विषयरूप कीचविषै फंसा अब इस कीचसे कैसे छूटूं राजा ऐसा विचार करे है अर अयोध्याके सहस्राम्रनामा वनविषै महासंघ सहित सिंहपाद नामा मुनि आए राजा सुनकर रणवाससहित अर लोकों सहित मुनिके दर्शनको गया, विधिपूर्वक तीन प्रदक्षिणा देय प्रणाम कर भूमिविषै बैठा जिनेन्द्रका धर्म श्रवणकर भोगोंसे विरक्त होय मुनि भया अर राणी चन्द्राभा बड़े राजाकी बेटी रूपकर अनुपम सो राज विभूति तज आर्यिका भई दुर्गतिकी वेदनाका है अधिक भय जिसको अर मधुका भाई कैटभ राजको विनाशीक जान महा व्रतधर मुनि भया। दोऊ भाई महा तपस्वी पृथिवीविषै विहार करते भए अर सकल स्वजन परजनके नेत्रनिको आनन्दका कारण मधुका पुत्र कुलवर्धन अयोध्याका राज्य करता भया अर मधु सैकड़ों वर्ष तप कर दर्शन ज्ञान चारित्र तप यही चार आराधना आराध समाधि मरण कर सोलहवां अच्युत नामा स्वर्ग वहां अच्युतेंद्र भया अर कैटभ पंद्रहवां आरण नामा स्वर्ग वहां आरणेंद्र भया गौतम स्वामी कहे हैं—हे श्रेणिक ! यह जिनशासनका प्रभाव जानो जो ऐसे अनाचारी भी अनाचारका त्यागकर अच्युतेंद्र पद पावें अथवा इन्द्र पदका कहा आश्चर्य ? जिनधर्मके प्रसादसे मोक्ष पावें मधुका जीव अच्युतेंद्र था उसके समीप सीताका जीव प्रतीन्द्र भया अर मधुका जीव स्वर्गसे चयकर श्रीकृष्णकी रुक्मिणी राणीके प्रद्युम्न नामा पुत्र कामदेव होय मोक्ष गये अर कैटभका जीव कृष्णकी जामवन्ती राणीके शंबुकुमार नामा पुत्र होय परम धामको प्राप्त भया। यह मधुका व्याख्यान

तुझे कहा अब हे श्रेणिक। बुद्धिवंतोंके मनको प्रिय ऐसे लक्ष्मणके अष्ट पुत्र महा धीर वीर तिनका चरित्र पापोंका नाश करणहारा चित्त लगाय सुनो॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषावचनिकाविषै राजा मधुका वर्णन करनेवाला एकसौ नवा पर्व पूर्ण भया ॥१०९॥

अथानन्तर—कांचनस्थान नामा नगर वहां राजा कांचनरथ उसकी राणी शतह्रदा उसके पुत्री दोय अति रूपवन्ती रूपके गर्व कर महा गर्वित तिनके स्वयंवरके अर्थ अनेक राजा भूचर खेचर तिनके पुत्र कन्याके पिताने पत्र लिख दूत भेज शीघ्र बुलाए। सो दूत प्रथम ही अयोध्या पठाया अर पत्रविषै लिखा मेरी पुत्रियोंका स्वयंवर है सो आप कृपाकर कुमारोंको शीघ्र पठावो। तब राम लक्ष्मणने प्रसन्न होय परम ऋद्धियुक्त सर्व सुत पठाये दोनों भाइयोंके सकल कुमार लव अंकुशको अग्रेसर कर परस्पर महा प्रेमके भरे कांचनस्थानपुरको चले सैकड़ों विमानविषै बैठे अनेक विद्याधर लार, रूपकर लक्ष्मीकर देवनि सारिखे आकाशके मार्ग गमन करते भये सो बड़ी सेना सहित आकाशसे पृथिवीको देखते जावें कांचनस्थानपुर पहुंचे वहां दोनों श्रेणियोंके विद्याधर राजकुमार आये थे सो यथा योग्य तिष्ठे जैसे इन्द्रकी सभाविषै नाना प्रकारके आभूषण पहिरे देव तिष्ठें अर नन्दनवनविषै देव नाना प्रकारकी चेष्टा करें तैसे चेष्टा करते थे अर वे दोनों कन्या मन्दाकिनी अर चन्द्रवक्त्रा मंगल स्नानकर सर्व आभूषण पहिरे निज वाससे रथ चढ़ी निकसी मानों साक्षात् लक्ष्मी अर लज्जा ही हैं महा गुणोंकर पूर्ण तिनके खोजा लार था सो राजकुमारोंके देश कुल संपत्ति गुण नाम चेष्टा सब कहता भया। अर कही ये आए हैं तिन विषै कई वानरध्वज कई सिंहध्वज कई वृषभध्वज कई गजध्वज इत्यादि अनेक भांतिकी ध्वजाको धरे महा पराक्रमी हैं इनविषै इच्छा होय सो वरो तब वह सबनिको देखती भई अर यह सब राजकुमार उनको देख संदेहकी तुलामें आरूढ़ भये कि यह रूप गर्वित हैं न जानिये कौनको वरें ऐसी रूपवन्ती हम देखी नहीं मानों ये दोनों समस्त देवियोंका रूप एकत्र कर बनाई हैं यह कामकी पताका लोकोंको उन्मादका कारण इस भांति सब राजकुमार अपने मनमें अभिलाषा रूप भए दोनों उन्मत्त कन्या लव अंकुशको देख कामबाण कर वेधी

गई उनमें मन्दाकिनो नामा जो कन्या उसने लवके कंठमें बरमाला डारी, अर दूजी कन्या चंद्रवक्राने अंकुशके कंठमें बरमाला डारी तब समस्त राजकुमारोंके मनरूप पक्षी तनुरूप पींजरसे उड़ गये अर जे उत्तम जन थे तिन्होंने प्रशंसा करी कि इन दोनों कन्यावोंने रामके दोनों पुत्र वरे सो नीके करी ये कन्या इनही योग्य है इस भांति सज्जनोंके मुखसे वाणी निकसी जे भले पुरुष हैं तिनका चित्त योग्य सम्बन्धसे आनन्दको प्राप्त होय ॥

अथानन्तर—लक्ष्मणकी विशल्यादि आठ पटराणी तिनके पुत्र आठ महा सुन्दर उदार चित्त शूरवीर पृथिवीविषै प्रसिद्ध इन्द्रसमान सो अपने अढ़ाईसे भाइयों सहित महा प्रीति युक्त तिष्ठते थे जैसे तारावोंमें ग्रह तिष्टे सो आठ कुमारनि बिना और सब ही भाई रामके पुत्रनिपर क्रोधित भये। जो हम नारायणके पुत्र कांतिधारी कलाधारी नवयौवन लक्ष्मीवान वलवान् सेनावान् कौन गुणकर हीन जो इन कन्यानिने हमको न वरे अर सीताके पुत्र वरे ऐसा विचारकर कोपित भये तब बड़े भाई आठने इनको शांतचित किये जैसे मंत्रकर सर्पको वश करिये तिनके समझावेतैं सबही भाई लव अंकुशसे शांतचित्त भये अर मनमें विचारते भए जो इन कन्यानिने हमारे बाबाके बेटे बड़े भाई वरे तब ये हमारे भावज सो माता समान हैं अर स्त्री पर्याय महा निन्द्य है स्त्रीनिकी अभिलाषा अविवेकी करें, स्त्रियां स्वभाव हीतैं कुटिल हैं इनके अर्थ विवेकी विकारको न भजें, जिनको आत्मकल्याण करना होय सो स्त्रीनितैं अपना मन फेरे, या भांति विचार सबही भाई शांतचित्त भए, पहिले सबही युद्धके उद्यमी भए हुते रणके वादित्रनिका कोलाहल शंख झंझा भेरी झंझार इत्यादि अनेक जातिके वादित्र वाजने लगे अर जैसे इन्द्रकी विभूति देख छोटे देव अभिलाषी होंय तैसे ये सब स्वयम्वरविषै कन्यानिके अभिलाषी भए हुते सो बड़े भाइनिके उपदेशतैं विवेकी भए, अर उन आठों बड़े भाईनिको वैराग्य उपजा सो विचारे हैं यह स्थावर जंगमरूप जगतके जीव कर्मनिकी विचित्रताके योगकर नाना रूप हैं विनश्वर हैं जैसा जीवनिके होनहार है तैसा ही होय है जाके जो प्राप्ति होनी सो अवश्य होय है, और भांति नहीं अर लक्ष्मणकी रूपवती राणीका पुत्र हंसकर कहता भया—भो भ्रातः हो! स्त्री कहा प-

दार्थ है ? स्त्रीनितैं प्रेम करना महामूढता है, विवेकीनिको हांसी आवे है जो यह कामी कहा जान अनुराग करें हैं? इन दोऊ भाइनिने ये दोनों राणी पाईं तौ कहा बड़ी वस्तु पाई, जे जिनेश्वरी दीक्षा धरें वे धन्य हैं केलाके स्तंभ समान असार काम भोग आत्माके शत्रु तिनके वश होय रति अरति मानना महा मूढ़ता है, विवेकीनिको शोकहू न करना अर हास्यहू न करना। ये सबही संसारी जीव कर्मके वश भ्रम जालमें पड़े हैं ऐसा नाहीं करे हैं जाकर कर्मोंका नाश होय, कोई विवेकी करै सोई सिद्धपदको प्राप्त होय, या गहन संसार वनविषै ये प्राणी जिनपुरका मार्ग भूल रहे हैं ऐसा करहु जाकर भव दुःख निवृत्त होय। हे भाई हो, यह कर्मभूमि आर्यक्षेत्र मनुष्य देह उत्तम कुल हमने पाया सो एते दिन योंही खोये अब वीतरागका धर्म आराध मनुष्य देह सफल करो, एक दिन मैं बालक अवस्थाविषै पिताकी गोदमें बैठा हुता सो वे पुरुषोत्तम समस्त राजानिको उपदेश देते थे वे वस्तुका स्वरूप सुन्दरस्वरसूं कहते भए सो मैं रुचिसों सुन्या। चारों गतिमें मनुष्यगति दुर्लभ है। जो मनुष्यभव पाय आत्महित न करे हैं सो ठगाए गए जान। दान कर तो मिथ्यदृष्टि भोगभूमि जावें अर सम्यग्दृष्टि दानकर तपकर स्वर्ग जायं, परम्पराय मोक्ष जावें अर शुद्धोपयोग रूप आत्मज्ञान कर यह जीव याहीं भव मोक्ष पावें अर हिंसादिक पापनिकर दुर्गति लहे जो तप न करै सो भव वनविषै भटकै बारम्बार दुर्गतिके दुःख संकट पावै, या भांति विचार वे अष्टकुमार शूर-वीर प्रतिबोधको प्राप्त भए संसार सागरके दुःखरूप भवनिसे डरे, शीघ्र ही पितापै गए, प्रणाम कर विनयसे खड़े रहे अर महा मधुर वचन हाथ जोड़ कहते भए—हे तात ! हमारी विनती सुनो, हम जैनेश्वरी दीक्षा अङ्गीकार किया चाहे हैं, तुम आज्ञा देवो। यह संसार विजुरीके चमत्कार समान अस्थिर है केलाके स्तंभ समान असार है हमको अविनासी पुरके पंथ चलते विघ्न न करो तुम दयालु हो कोई महा भाग्यके उदयतैं हमको जिनमार्गका ज्ञान भया, अब ऐसा करें जाकर भवसागरके पार पहुंचे ए काम भोग आशीविष सर्पके फण समान भयंकर हैं परम दुःखके कारण हम दूर हीतै छोड़ा चाहे हैं या जीवके कोऊ माता पिता पुत्र बांधव नाहीं, कोऊ याका सहाई नाहीं, यह सदा कर्मके आधीन भव वनमें भ्रमण करे हैं याके कौन २

जीव कौन कौन सम्बन्धो न भए। हे तात! हमसूं तिहारा अत्यन्त वात्सल्य है अर मातावोंका है सो एही
बंधन है। हमने तिहारे प्रसादतैं बहुत दिन नाना प्रकार संसारके सुख भोगे निदान एक दिन हमारा
तिहारा वियोग होयगा, यामें संदेह नाहीं, या जीवने अनेक भोग किए परन्तु तृप्त न भया। ये भोग रोग
समान हैं इनविषै अज्ञानी राचें अर यह देह कुमित्र समान है जैसे कुमित्रको नाना प्रकार कर पोषिये
परन्तु वह अपना नाहीं तैसे यह देह अपना नाहीं याके अर्थ आत्माका कार्य न करना यह विवेकीनिका
काम नाहीं, यह देह तो हमको तजेगी हम इससे प्रीति क्यों न तजें। ये वचन पुत्रनिके सुन लक्ष्मण परम
स्नेह कर विह्वल होय गए इनको उरसे लगाय मस्तक चूम्ब वारम्वार इनकी ओर देखते भए अर गदगद
वाणी कर कहते भए हे पुत्र हो! ये कैलाशके शिखर समान हेम रत्नके ऊंचे महल जिनके हजारां कनकके
स्तम्भ तिनविषै निवास करो नाना प्रकार रत्नोंसे निरमाए हैं आंगन जिनके महा सुन्दर सर्व उपकरणोंकर
मण्डित मलयागिरि चन्दनकी आवे है सुगन्ध जहां उसकर भ्रमर गुञ्जार करे हैं अर स्नानादिककी विधि
जहां ऐसी मंजनशाला अर सब संपत्तिसे भरे निर्मल है भूमि जिनकी इन महलोंमें देवों समान क्रीड़ा
करो तिहारे सुन्दर स्त्री देवांगना समान दिव्यरूपको धरें शरदके पूर्नोके चन्द्रमा समान प्रजा जिनकी अनेक
गुणनिकर मण्डित बीण बांसुरी मृदंगादि अनेक वादित्र बजायवेविषै निपुण महा सुकंठ सुन्दर गीत
गायवेविषै निपुण नृत्यकी करणहारी जिनेंद्रकी कथाविषै अनुरागिणी महापतिव्रता पवित्र तिन सहित वन
उपवन तथा गिरि नदियोंके तट निज भवनके उपवन तहां नाना विधि क्रीड़ा करते देवोंको न्याईं रमो।
हे वत्स हो। ऐसे मनोहर सुखोंको तज कर जिनदीक्षा धर कैसे विषमवन अर गिरिके शिखर कैसे रहोगे।
मैं स्नेहका भरा अर तिहारी माता तिहारे शोक कर तप्तायमान तिनको तजकर जाना तुमको योग्य नाहीं
कैयक दिन पृथ्वीका राज्य करो तब वे कुमार स्नेहकी वासनासे रहित भया है चित्त जिनका संसारसे भय
भीत इन्द्रियोंके सुखसे पराङ्मुख महा उदार महा शूरवीर कुमार श्रेष्ठ आत्मतत्त्वविषै लगा है चित्त जिनका
क्षण एक विचार कर कहते भए—हे पिता! इस संसारविषै हमारे माता पिता अनन्त भए यह स्नेहका बंधन

नरकका कारण है यह घर रूप पिंजरा पापारंभका अर दुःखका बढ़ावनहारा है उसमें मूर्ख रति माने है ज्ञानी न माने अब कबहूं देह संबन्धी तथा मन संबंधी दुःख हमको न होय निश्चयसे ऐसा ही उपाय करेंगे जो आत्मकल्याण न करै सो आत्मघाती है कदाचित् घर न तजे अर मनविषै ऐसा जाने मैं निर्दोष हूं मुझे पाप नहीं तो वह मलिन है पापी है जैसे सुफेद वस्त्र अङ्गके संयोगसे मलिन होय तैसे घरके संयोगसे गृ...र्या मलिन होय है, जे गृहस्थाश्रमविषै निवास करे हैं तिनके निरन्तर हिंसा आरम्भकर पाप उपजै तातें ...पुरुषोंने गृहस्थाश्रम तजे अर तुम हमसों कही केयक दिन राज्य भोगो सो तुम ज्ञानवान् होयकर हमको अंधकूपविषै डारो हो जैसे तृषाकर आतुर मृग जल पीवै अर उसे पारधी मारे तैसे भोगनिकर अतृप्त जो पुरुष उसे मृत्यु मारे है, जगत्के जीव विषयकी अभिलाषा कर सदा आर्त्तध्यानरूप पराधीन हैं। जे काम सेवे हैं वे अज्ञानी विषहर गहारो जड़ी विना आशीविष सर्पसे क्रीड़ा करे हैं सो कैसे जीवें? यह प्राणी मीन समान गृहरूप तालावविषै वसते विषयरूप मांसके अभिलाषी रोगरूप लोहके आंकड़ेके योगकर काल-रूप धीवरके जालविषैं पड़े हैं भगवान् श्रीतीर्थंकर देव तीन लोकके ईश्वर सुर नर विद्याधरनिकर वंदित यह ही उपदेश देते भए कि यह जगत्के जीव अपने अपने उपार्जे कर्मोंके वश हैं अर या जगत्को तजै सो कर्मोंको हत तातें हे तात। हमारे इष्ट संयोगके लोभकर पूर्णता न होवे यह संयोगसंबंध विजुरीके चमत्का-रवत् चांचल है जो विचक्षण जन हैं वे इनसे अनुराग न करे अर निश्चय सेती इस तनुसे अर तनुके सम्ब-न्धियोंसे वियोग होयगा इनमें कहा प्रीति अर महाक्लेशरूप यह संसार वन उसविषै कहा निवास अर यह मेरा प्यारा ऐसी बुद्धि जीवोंके अज्ञानसे है यह जीव सदा अकेला भवविषै भटके है गतिगतिमें गमन करता महा दुखी है॥ हे पिता! हम संसार सागरमें झकोला खाते अति खेदखिन्न भए। कैसा है संसार सागर? मिथ्या शास्त्ररूप हैं दुखदाई द्वीप जिसमें अर मोहरूप हैं मगर जिसमें अर शोक संतापरूप सिवा-न कर संयुक्त सो अर दुर्जयरूप नदियोंकर पूरित है अर भ्रमणरूप भंवरके समूहकर भयंकर है अर अनेक आधिव्याधि उपाधिरूप कलोलोंकर युक्त है अर कुभावरूप पाताल कुण्डोंकर अगम है अर क्रोधादिकर

भावरूप जलचरोंके समूहसे भरा है अर वृथा बकवादरूप होय है शब्द जहां अर ममत्वरूप पवनकर उठे हैं विकल्परूपतरङ्ग जहां अर दुर्गतिरूपक्षार जलकर भरा है अर महादुस्सह इष्ट वियोग अनिष्ट संयोग-रूप आताप सोई है वड़वानल जहां, ऐसे भवसागरमें हम अनादिकालके खेदखिन्न पड़े हैं नाना योनिविषै भ्रमण करते अतिकष्टसे मनुष्य देह उत्तम कुल पाया है सो अब ऐसा करेंगे बहुरि भवभ्रमण न होय। सो सबसे मोह छुड़ाय आठों कुमार महाशूरवीर घररूप बन्दीखानेसे निकसे उन महा भाग्योंके ऐसी वैराग्य बुद्धि उपजी जो तीनखंडका ईश्वरपणा जीर्ण तृणवत् तजा। ते विवेकी महेन्द्रोदय नामा उद्यानविषै जायकर महाबल नामा मुनिके निकट दिगम्बर भए सर्व आरम्भरहित अन्तर्बाह्य परिग्रहके त्यागी विधिपूर्वक ईर्या समिति पालते विहार करते भए महा क्षमावान् इन्द्रियोंके वश करणहारे विकल्परहित निस्पृहो परम योगी महाध्यानी बारह प्रकारके तप कर कर्मोंको भस्म कर अध्यात्मयोगसे शुभाशुभ भावोंका निराकरण कर क्षीणकषाय होय केवल ज्ञान लह अनन्त सुख रूप सिद्ध पदको प्राप्त भए जगत्के प्रपंचसे छूटे। गौतम गणधर राजा श्रेणिकसे कहे हैं—हे नृप ! यह अष्ट कुमारोंका मङ्गलरूप चरित्र जो विनयवान भक्तिकर पढे सुने उसके समस्त पाप क्षय जावें जैसे सूर्यकी प्रभाकर तिमिर विलाय जाय ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषा वचनिकाविषै लक्ष्मणके आठ पुत्रोंका वैराग्य वर्णन करनेवाला एकसौ दसवा पर्व पूर्ण भया ॥ ११० ॥

अथानन्तर—महावीर जिनेन्द्रके प्रथम गणधर मुनियोंमें मुख्य गौतम ऋषि श्रेणिकसे भामण्डलका चरित्र कहते भए हे श्रेणिक ! विद्याधरनिकी जो ईश्वरता सोई भई कुटिला स्त्री उसका विषय वासनारूप मिथ्या सुख सोई भया पुष्प उसके अनुराग रूप मकरन्दविषै भामण्डलरूप भ्रमर आसक्त होता भया चित्तमें यह चिंतवे जो मैं जिनेन्द्री दीक्षा धरूंगा तो मेरी स्त्रियोंका सौभाग्यरूप कमलनिका वन सूक जायगा ये मेरेसे आसक्त चित्त हैं अर इनके विरह कर मेरे प्राणनिका वियोग होयगा मैं यह प्राण सुखसूं पाले हैं इसलिये कैयक दिन राज्यके सुख भोग कल्याणका कारण जो तप सो करूंगा यह काम भोग

दुर्निवार हैं अर इनकर पाप उपजेगा सो ध्यानरूप अग्निकर क्षणमात्रमें भस्म करूंगा कोईयक दिन राज्य करूं बड़ी सेना राख जे मेरे शत्रु हैं तिनको राज्य रहित करूंगा वे खड्गके धारो बड़े सामंत मुझसे पराङ्मुख ते भये खड्गी कहिए मेंडा तिनके मानरूप खड्गकूं भंग करूंगा अर दक्षिण श्रेणी उत्तर श्रेणी विषे अपनी आज्ञा मनाऊं अर सुमेरु पर्वत आदि पर्वतोंविषे मरकत मणि आदि नाना जातिके रत्ननिकी निर्मल शिला तिनमें स्त्रियों सहित क्रीड़ा करूं इत्यादि मनके मनोरथ करता हुवा भामण्डल सैकड़ों वर्ष एक मुहूर्तकी न्याईं व्यतीत करता भया यह किया यह करूं यह करूंगा ऐसा चितवन करता आयुका अन्त न जानता भया एक सतखणे महिलके ऊपर सुन्दर सेजपर पोढ़ा था सो बिजुरी पड़ी अर तत्काल कालको प्राप्त भया। दीर्घसूत्री मनुष्य अनेक विकल्प करें परन्तु आत्माके उद्धारका उपाय न करें तृष्णाकर हता क्षणमात्रमें भी साता न पावे मृत्यु सिरपर फिरे ताकी सुध नहीं, क्षणभंगुर सुखके निमित्त दुर्बुद्धि आत्महित न करे विषयवासनाकर लुब्ध भया अनेक भांति विकल्प करता रहे सो विकल्प कर्म बंधके कारण हैं धन यौवन जीतव्य सब अस्थिर हैं जो इनको अस्थिर जान सर्व परिग्रहका त्याग करें आत्मकल्याण करें सो भवसागर न डूबें अर विषयाभिलाषी जीव भव भवविषै कष्ट सहें हजारों शास्त्र पढ़े अर शांतता न उपजी तो क्या अर एकही पदकर शांतदशा होय तो प्रशंसा योग्य है धर्म करिवेकी इच्छा तो सदा करवो करे अर करे नहीं सो कल्याणको न प्राप्त होय जैसे कटी पंखका काग उड़कर आकाशविषै पहुंचा चाहे पर न जाय सके जो निर्वाणके उद्यमकर रहित है सो निर्वाण न पावे जो निरुद्यमी सिद्धपद पावे तो कौन काहेको मुनिव्रत आदरे जो गुरुके उत्तम वचन उरमें धार धर्मको उद्यमी होय सो कभी खेद-खिन्न न होय जो गृहस्थ द्वारे आया साधु उनकी भक्ति न करें आहारादिक न दे सो अविवेकी है अर गुरुके वचन सुन धर्मका न आदरे सो भव भ्रमणसे न छूटे जो घने प्रमादी हैं अर नाना प्रकारके अशुभ उद्यमकर व्याकुल हैं उनकी आयु वृथा जाय है जैसे हथेलीमें आया रत्न जाता रहे ऐसा जान समस्त लौ-

किक कार्यको निरर्थक मान दुःखरूप इन्द्रियोंके सुख तिनको तजकर परलोक सुधारिबेके अर्थ जिनशासनमें श्रद्धा करो, भामण्डल मरकर पात्रदानके प्रभावसे उत्तम भोगभूमि गया ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषावचनिकाविषै भामण्डलका मरण वर्णन करनेवाला एकसौ ग्यारहवा पर्व पूर्ण भया ॥१११॥

अथानन्तर—राम लक्ष्मण परस्पर महास्नेहके भरे प्रजाके पिता समान परम हितकारी तिनका राज्यविषै सुखसे समय व्यतीत होता भया परम ईश्वरतारूप अति सुन्दर राज्य सोई भया कमलोंका वन उसमें क्रीड़ा करते वे पुरुषोत्तम पृथिवीकों प्रमोद उपजावते भए इनके सुखका वर्णन कहां तक करें ऋतुराज कहिए वसंतऋतु उसमें सुगंध वायु वहे कोयल बोलें भ्रमर गुञ्जार करें समस्त वनस्पति फूले मदोन्मत्त होय समस्त लोक हर्षके भरे शृङ्गार क्रीड़ा करें मुनिराज विषम वनविषै विराजें आत्मस्वरूपका ध्यान करें उस ऋतुविषै राम लक्ष्मण रणवास सहित अर समस्त लोकों सहित रमणीक वनविषै तथा उपवनविषै नाना प्रकारके रङ्गक्रीड़ा रागक्रीड़ा जलक्रीड़ा वनक्रीड़ा करते भए अर ग्रीष्मऋतुविषै नदी सूकै दावानल समान ज्वाला वरसै महामुनि गिरिके शिखर सूर्यके सन्मुख कायोत्सर्ग धर तिष्ठें उस ऋतुविषै राम लक्ष्मण धारामंडप महिलमें अथवा महारमणीक वनविषै जहां अनेक जलयंत्र चन्दन कपूर आदि शीतल सुगंध सामग्री वहां सुखसे विराजे हैं चमर ढुरे हैं ताड़के बीजना फिरे हैं निर्मल स्फटिककी शिलापर तिष्ठे हैं अगुरु चन्दनकर चर्चे जलकर तर ऐसे कमल दल तथा पुष्पोंके सांथरेपर तिष्ठे मनोहर निर्मल शीतल जल जिसविषै लवङ्ग इलायची कपूर अनेक सुगंध द्रव्य उनकर महासुगंध उसका पान करते लताओंके मंडपोंविषै विराजते नाना प्रकारकी सुन्दर कथा करते सारङ्ग आदि अनेक राग सुनते सुन्दर स्त्रीनि सहित उष्ण ऋतुको बलात्कार शीतकाल सम करते सुखसे पूर्ण करते भए, अर वर्षाऋतु विषै योगीश्वर तरु तले तिष्ठते महातपकर अशुभ कर्मका क्षय करे हैं बिजुरी चमके हैं मेघकर अन्धकार होयरहा है मयूर बोले हैं ढाहा उपाड़ती महाशब्द करती नदी वहे हैं उस ऋतुविषै दोनों भाई सुमेरुके शिखर समान ऊंचे नाना मणिमई जे महिल तिनविषै महाश्रेष्ठ रंगीले वस्त्र पहिरे केसरके रङ्गकर लिप्त है अंग

जिनका अर कृष्णागरुका धूप खेए रहे हैं महासुन्दर त्रियोंके नेत्ररूप भ्रमरोंके कमल सारिखे इन्द्र समान
क्रीड़ा करते सुखसों तिष्ठे अर शरद ऋतुविषै जल निमल होय चन्द्रमाकी किरण उज्ज्वल होय कमल
फूलें हंस मनोहर शब्द करें मुनिराज वन पर्वत सरोवर नदीके तीर वैठै चिद्रूपका ध्यान करें उस ऋतुविषै
राम लक्ष्मण राजलोकों सहित चांदनीके वस्त्र आभरण पहिरे सरिता सरोवरके तीर नाना विधि क्रीड़ा करते
भए अर शीतऋतुविषै योगीश्वर धर्म ध्यानको ध्यावते रात्रिविषै नदी तालावोंके तटपे जहां अति शीत
पड़े वर्फ वरसे महाठराडी पवन बाजे तहां निश्चल तिष्ठे हैं महाप्रचराड शीतल पवन कर वृक्ष दाहे मारे हैं
अर सूर्यका तेज मन्द होय गया है ऐसी ऋतुविषै राम लक्ष्मण महिलोंके भीतरले चौवारोंविषैं तिष्ठते
मनवांछित विलास करते सुन्दर स्त्रीनिके समूह सहित वीणा मृदंग वांसुरी आदि अनेक वादित्रोंके शब्द
कानोंको अमृत समान श्रवणकर मनको आल्हाद उपजावते दोनों वीर महाधीर देवां समान अर जिनके
स्त्री देवांगना समान वाणीकर जीती है वीणाकी ध्वनि जिन्होंने महापतिव्रता तिन कर आदरते संते पुरायके
प्रभावसे सुखसे शीतकाल व्यतीत करते भए अद्भुत भोगोंकी सम्पदाकर मंडित वे पुरुषोत्तम प्रजाको
आनन्दकारी दोनों भाई सुखसे तिष्ठे हैं ।

अथानंतर—गोतमस्वामी कहे हैं—हे श्रेणिक । अब तू हनूमानका वृतांत सुन हनूमान पवनका पुत्र
कर्णकुराडल नगरविषै पूर्व पुरायके प्रभावसे देवनिकेसे सुख भोगवै जिसकी हजारां विद्याधर सेवा करें
अर उत्तम क्रियाका धारक स्त्रियों सहित परिवार सहित अपनी इच्छाकर पृथिवीमें विहार करे श्रेष्ठ विमा-
नविषै आरूढ़ परम ऋद्धिकर मंडित महा शोभायमान सुन्दर वनोंमें देवनि समान क्रीड़ा करै सो वसंतका
समय आया कामो जीवनको उन्मादका कारण अर समस्त वृक्षोंको प्रफुल्लित करणहारा प्रिया अर प्रीत-
मके प्रेमका बढ़ावनहारा सुगंध चले है पवन जिसमें ऐसे समयमें अंजनीका पुत्र जिनेंद्रकी भक्तिमें आरूढ़-
चित्त, अति हर्ष कर पूर्ण हजारां स्त्रीनि सहित सुमेरु पर्वतकी ओर चला हजारां विद्याधर हैं संग जिसके
श्रेष्ठ विमानविषै चढ़े परम ऋद्धिकर संयुक्त मार्गविषै वनविषै क्रीड़ा करते भए । कैसे हैं वन ? शीतल

मंद सुगंध चले हैं पवन जहां नाना प्रकारके पुष्प अर फलों कर शोभित वृक्ष हैं जहां देवांगना रमे हैं अर कुलाचलोंके विषै सुन्दर सरोवरों कर युक्त अनेक मनोहर वन जिनविषै भ्रमर गुंजार करे हैं अर कोयल बोल रही हैं अर नाना प्रकारके पशु पक्षियोंके युगल विचरे हैं जहां सर्व जातिके पत्र पुष्प फल शोभे हैं अर रत्नानकी ज्योतिकर उद्योतरूप हैं पर्वत जहां अर नदी निर्मल जलकी भरी सुन्दर हैं तट जिनके अर सरोवर अति रमणीक नाना प्रकारके कमलोंके मकरन्दकर रङ्ग रूप होय रहा है सुगंध जल जिनका अर वापिका अति मनोहर जिनके रत्नोंके सिवान अर तटोंके निकट बड़े बड़े वृक्ष हैं अर नदीमें तरंग उठे हैं झागोंके समूह सहित महा शब्द करती वहे हैं जिनमें मगरमच्छ आदि जलचर क्रीड़ा करे हैं अर दोनो तटविषै लहलहाट करते अनेक वन उपवन महा मनोहर विचित्रगति लिये शोभे हैं जिनमें क्रीड़ा करवेके सुन्दर महिल अर नाना प्रकार रत्नकर निर्मापे जिनेश्वरके मंदिर पापोंके हरणहारे अनेक हैं। पवन-पुत्र सुन्दर स्त्रियोंकर सेवित परम उदय कर युक्त अनेक गिरियोंविषै अकृत्रिम चैत्यालयोंका दर्शन कर विमानविषै चढ़ा स्त्रियोंको पृथिवीकी शोभा दिखावता अति प्रसन्नतासे स्त्रियोंसे कहे है—हे प्रिये! सुमेरुविषै अति रमणीक जिनमंदिर स्वर्ण रत्नमयी भासे हैं अर इनकी शिखर सूर्यसमान देदीप्यमान महा-मनोहर भासे हैं अर गिरिकी गुफा तिनके मनोहर द्वार रत्नजड़ित शोभा नाना रंगकी ज्योति परस्पर मिल रही हैं वहां अरति उपजे ही नाहीं सुमेरुकी भूमितलविषैं अतिरमणीक भद्रशाल वन है अर सुमेरुकी कटि मेखलाविषैं विस्तीर्ण नन्दन वन अर सुमेरुके वक्षस्थलविषै सौमनस वन है जहां कल्पवृक्ष कल्पलताओंसे वेढ़े सोहे हैं अर नाना प्रकार रत्नोंकी शिला शोभित हैं अर सुमेरुके शिखरमें पांडुक वन है जहां जिनेश्वर देवका जन्मोत्सव होय है इन चारों ही वनविषे चार चार चैत्यालय हैं जहां निरन्तर देव देवियोंका आगम है यक्ष किन्नर गंधर्वोंके संगीतकर नाद होय रहा है अप्सरा नृत्य करे हैं कल्पवृक्षोंके पुष्प मनोहर हैं नाना प्रकारके मंगल द्रव्य कर पूर्ण यह भगवान्के अकृत्रिम चैत्यालय अनादि निधन हैं। हे प्रिये पांडुक वनविषैं परम अद्भुत जिनमंदिर सोहे हैं जिनके देखे मन हरा जाय, महाप्रज्वलित निर्धूम अग्नि स-

मान संध्याके वादरोंके रंग समान उगते सूर्य समान स्वर्णमई शोभे हैं समस्त उत्तम रत्नकर शोभित सुन्द राकार हजारों मोतियोंकी माला तिनकर मंडित मनोहर हैं। मालावोंके मोती कैसे सोहे हैं मानों जलके वुद्वुदा ही हैं अर घंटा झांझ मंजीरा मृदंग चमर तिनकर शोभित हैं चौगिरद कोट ऊचे दरवाजे इत्यादि परम विभूति कर विराजमान हैं नाना रंगकी फरहरती ध्वजा स्वर्णके स्तंभ कर देदीप्यमान इन अकृत्रिम चैत्यालयोंकी शोभा कहां लग कहें जिनका संपूर्ण वर्णन इन्द्रादिक देव भी न कर सकें.हे कांते! यह पांडुक वनके चैत्यालय मानों सुमेरुके मुकुट ही हैं अतिरमणीक है या भांति महाराणी पटराणियोंसे हनूमान वात करते जिनमंदिरोंकी प्रशंसा करते मंदिरके समीप आए विमानसे उतर महा हर्षित होय प्रदक्षिणा दई वहां श्रीभगवानके अकृत्रिम प्रतिबिंब सर्व अतिशय विराजमान महा ऐश्वर्यकर मंडित महा तेजपुंज देदी- प्यमान शरदके उज्ज्वल वादर तिनमें जैसे चंद्रमा सोहे तैसे सर्व लक्षणमंडित. हनूमान हाथ जोड़ रणवास स- हित नमस्कार करता भया। कैसा है हनूमान ? जैसे ग्रहतारावोंके मध्य चंद्रमा सोहे तैसा राजा लोकके मध्य सोहे है जिनेंद्रके दर्शनकर उपजा है अनिहर्ण जिसको सो संपूर्ण स्त्रीजन अति आनंदको प्राप्त भई रोमांच होय आए नेत्र प्रफुल्लित भए विद्याधरी परम भक्तिकर युक्त सर्व उपकरणों सहित परम चेष्टाकी धरणहारी महापवित्र कुलविर्षे उपजी देवांगनाओंकी न्याईं अति अनुरागसे देवाधिदेवकी विधिपूर्वक पूजा करती भई महा पवित्र पद्महृद आदिकका जल अर महा सुगंध चंदन मुक्ताफलनिके अक्षत स्वर्णमई कमल तथा पद्मरागमणि मई तथा चंद्रकांति मणिमई तिनकर पूजा करती भई अर कल्पवृक्षनिके पुष्प अर अमृतरूप नैवेद्य अर महा ज्योतिरूप रत्नोंके दीप चढ़ाए अर मलयागिरि चंदन आदि महासुगंध जिनकर दशोदिशा सु- गंधमई होय रही हैं अर परम उज्ज्वल महा शीतल जल अर अगुरु आदि महापवित्र द्रव्योंकर उपजा जो धूप सो खेवती भई अर महा पवित्र अमृत फल चढ़ावती भई अर रत्नोंके चूर्णकर मण्डला माण्डती भई महा मनोहर अष्ट द्रव्योंसे पतिसहित पूजा करती भई। हनूमान राणीनिसहित भगवानकी पूजा करता कैसा सोहे है जैसा सौधर्म इन्द्र पूजा करता सोहे। कैसा है हनूमान जनेऊ पहिरे सर्व आभूषण पहिरे

महीन वस्त्र पहिरे महा पवित्र पापरहित बानरके चिन्हका है देदीप्यमान रत्नमई मुकुट जिसके महाप्रमोदका भरा फूल रहे हैं नेत्र कमल जिसके सुन्दर है बदन जिसका पूजाकर पापनिके नाश करणहारे स्तोत्र तिनकर सुर असुरोंके गुरु जिनेश्वर तिनके प्रतिबिंबकी स्तुति करता भया, सो पूजा करता अर स्तुति करता इन्द्रकी अप्सरावोंने देखा सो अति प्रशंसा करती भई अर यह प्रवीण बीण लेयकर जिनेन्द्रचन्द्रके यश गावता भया जे शुद्ध चित्त जिनेन्द्रकी पूजाविषैं अनुरागी हैं सब कल्याण तिनके समीप हैं तिनको कुछ ही दुर्लभ नहीं तिनका दर्शन मङ्गलरूप है उन जीवोंने अपना जन्म सुफल किया, जिन्होंने उत्तम मनुष्य देह पाय श्रावकके व्रत धर जिनवरविषैं दृढ़ भक्ति धारी अपने करविषैं कल्याणको धरा जन्मका फल तिन ही पाया हनूमानने पूजा स्तुति वन्दनाकर वीण वजाय अनेक राग गाय अद्भुत स्तुति करी यद्यपि भगवानके दर्शनसे बिछुरनेका नहीं है मन जिसका तथापि चैत्यालयविषैं अधिक न रह्या, मत कोई आच्छादन लागे तातैं जिनराजके चरण उरविषैं धर मंदिरसे बाहिर निकसा, विमानोंमें चढ़ हजारों स्त्रियोंकर संयुक्त सुमेरुकी प्रदक्षिणा दी, जैसे सूर्य देय तैसे श्रीशैल कहिए हनूमान सुन्दर हैं क्रिया जिसकी सो शैलराज कहिए सुमेरु उसकी प्रदक्षिणा देय समस्त चैत्यालयोंविषैं दर्शन कर भरतक्षेत्रकी ओर सन्मुख भया सो मार्गविषैं सूर्य अस्त होय गया अर संध्या भी सूर्यके पीछे विलय गई कृष्णपक्षकी रात्रि सो तारा रूप वधुवोंकर मंडित चन्द्रमारूप पति बिना न मोहती भई। हनूमानने तले उतर एक सुरदुन्दुभी नामा पर्वत वहां सेना सहित रात्रि व्यतीत करी, कमल आदि अनेक सुगंध पुष्पोंसे स्पर्श पवन आई उस कर सेनाके लोक सुखसे रहे जिनेश्वर देवकी कथा करवो किए रात्रिको आकाशसे देदीप्यमान एक तारा टूटा सो हनूमानने देखकर मनविषै विचारी हाय हाय इस संसार असार वनविषै देव भी कालवश हैं ऐसा कोई नही जो कालसे बचे विजुरीका चमत्कार अर जलकी तरङ्ग जैसे क्षणभंगुर हैं तैसे शरीर विनश्वर है इस संसारविषै इस जीवने अनंत भवविषै दुःखही भोगे, यह जीव विषयके सुखको सुख माने है सो सुख नही दुःखही है पराधीन है विषय क्षणभंगुर संसारविषै दुःख ही है सुख नहीं होय है, मोहका माहात्म्य है जो अनन्त काल जीव दुःख

भोगता भ्रमण करे है अनन्तावसर्पणी काल भ्रमणकर मनुष्य देह कभी कोई पावे है सो पायकर धर्मके साधन वृथा खोवे है यह विनाशीक सुखविषै आसक्त होय महा संकट पावे है यह जीव रागादिकके वश भया वीतराग भावको नहीं जाने है यह इन्द्रिय जैन मार्गके आश्रय विना न जीते जायं यह इन्द्री चंचल कुमार्गके विषै लगाय कर जीवोंको इस भव परभवविषै दुःख देइ हैं जैसे मृग मीन अर पक्षी लोभके वशसे वधिकके जालमें पड़े हैं तैसे यह कामी क्रोधी लोभी जीव जिनमार्गको पाए विना अज्ञानके वशसे प्रपंचरूप पारधीके बिछाए विषय रूप जालविषै पड़े हैं जो जीव आशीविष सर्प समान यह मन इन्द्री तिनके विषयोंमें रमे हैं सो मूढ़ अग्निविषै जरे हैं जैसे कोई एक दिन राज्यकर वर्ष दिन त्रास भोगवे तैसे यह मूढ़ जीव अल्पदिन विषयोंके सुख भोग अनन्त काल पर्यंत निगोदके दुःख भोगवे है जो विषयके सुखका अभिलाषी है सो दुःखोंका अधिकारी है, नरक निगोदके मूल यह विषय तिनको ज्ञानी न चाहें मोहरूप ठगका ठगा जो आत्मकल्याण न करे सो महा कष्टको पावै जो पूर्व भवविषै धर्म उपार्जे मनुष्य देह पाय धर्मका आदर न करे सो जैसे धन ठगाय कोई दुखी होय तैसे दुखी होय है अर देवोंके भी भोग भोगि यह जीव मरकर देवसे एकेंद्री होय है इस जीवके पाप शत्रु हैं अर कोई शत्रु, मित्र नहीं अर यह भोग ही पापके मूल हैं इनसे तृप्ति न होय यह महा भयंकर हैं अर इनका वियोग निश्चय होयगा यह रहनेके नाहीं जो मैं इस राज्यको अर यह जो प्रियजन हैं तिनको तजकर तप न करूं तो अतृप्त भया सुभूमि चक्रवर्तीकी नाईं मरकर दुर्गतिको जाऊंगा अर यह मेरे स्त्री शोभायमान मृगनयनी सर्व मनोरथकी पूर्णहारी पतिव्रता स्त्रियों के गुणनिकर मंडित नव यौवन हैं सो अबतक मैं अज्ञानसे इनको तज न सका सो मैं अपनी भूलको कहां तक उराहना दूं। देखो ! मैं सागर पर्यन्त स्वर्गविषै अनेक देवांगना सहित रमा अर देवसे मनुष्य होय इस क्षेत्रविषै भया सुन्दर स्त्रियों सहित रमा परन्तु तृप्त न भया जैसे ईंधनसे अग्नि तृप्त न होय अर नदियोंसे समुद्र तृप्त न होय तैसे यह प्राणी नाना प्रकारके विषय सुख तिनकर तृप्त न होय मैं नाना प्रकारके जन्म तिनविषै भ्रमणकर खेद खिन्न भया। रे मन ! अब तू शांतताको प्राप्त होहु कहा व्याकुल होय रहा है

क्या तैंने भयंकर नरकोंके दुःख न सुने जहां रौद्रध्यान हिंसक जीव जाय हैं जिन नरकोंविषैं महा तीव्र वेदना असिपत्र वन वैतरणी नदी संकटरूप है सकल भूमि जहां? रे मन। तू नरकसे न डरे है रागद्वेष कर उपजे जे कर्म कलंक तिनको तपकर नाहिं खिपावे है तेरे एते दिन योंही वृथा गए विषय सुखरूप कूपविषैं पड़ा अपने आत्माको भव पिंजरसे निकास। पाया है जिनमार्गविषैं बुद्धिका प्रकाश तैंने तू अनादि कालका संसार भ्रमणसे खेदखिन्न भया अब अनादिके बंधे आत्माको छुड़ाय। हनूमान ऐसा निश्चयकर संसार शरीर भोगोंसे उदास भया जाना है यथार्थ जिनशासनका रहस्य जिसने जैसे सूर्य मेघरूप पटलसे रहित महा तेजरूप भासै तैसे मोह पटलसे रहित भासता भया जिस मार्ग होय जिनवर सिद्ध पदको सिधारे उस मार्गविषैं चलिवेको उद्यमी भया॥

इतिश्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषा वचनिकाविषै हनूमानका वैराग्य चिंतवन वर्णन करनेवाला एकसौ बारहवा पर्व पूर्ण भया॥११२

अथानन्तर—रात्रि व्यतीत भई सोला वानीके स्वर्ण समान सूर्य अपनी दीप्तिकर जगतविषैं उद्योत करता भया जैसे साधु मोक्षमार्गका उद्योत करे नक्षत्रोंके गण अस्त भए अर सूर्यके उदयकर कमल फूले जैसे जिनराजके उद्योतकर भव्य जीवरूप कमल फूले। हनूमान महा वैराग्यका भरा जगतके भोगोंसे विरक्त मंत्रियोंसे कहता भया जैसे भरत चक्रवर्ती पूर्व तपोवनको गए तैसे हम जावेंगे तब मंत्री प्रेमके भरे परम उद्वेगको प्राप्त होय नाथसे विनती करते भए हे देव! हमको अनाथ न करो प्रसन्न होवो हम तिहारे भक्त हैं हमारा प्रतिपालन करो तब हनूमानने कही तुम यद्यपि निश्चयकर मेरे आज्ञाकारी हो तथापि अनर्थके कारण हो हितके कारण नहीं जो संसार समुद्रसे उतरै अर उसे पीछे सागरमें डारें ते हितू कैसे? निश्चय थकी उनको शत्रु ही कहिए जब या जीवने नरकके निवासविषैं महादुःख भोगे तब माता पिता मित्र भाई कोई ही सहाई न भया। यह दुर्लभ मनुष्य देह अर जिनशासनका ज्ञान पाय बुद्धिमानोंको प्रमाद करना उचित नहीं अर जैसे राज्य भोगसे मेरे अप्रीति भई तैसे तुमसे भी भई यह कर्म जनित ठाठ सर्व विनाशीक है निःसंदेह हमारा तिहारा वियोग होयगा जहां संयोग है तहां वियोग है सुर नर अर इनके अधिपति इन्द्र

नरेंद्र यह सब ही अपने अपने कर्मोंके आधीन हैं कालरूप दावानल कर कौन २ भस्म न भए। मैं सागरा पर्यंत अनेक भव देवोंके सुख भोगे परन्तु तृप्त न भया जैसे सूके ईंधनकर अग्नि तृप्त न होय। गति जाति शरीर इनका कारण नाम कर्म है जाकर ये जीव गति गतिविषैं भ्रमण करे हैं सो मोहका वल महावलवान है जाके उदयकर यह शरीर उपजा है सो न रहेगा यह संसार वन महाविषम है जाविषैं ये प्राणी मोहको प्राप्त भए भवसंकट भोगे हैं उसे उलंघकर मैं जन्मजरा मृत्यु रहित जो पद तहां गया चाहूं हूं यह वात हनूमानने मंत्रियोंसे कही सो रणवासकी स्त्रियोंने सुनी उसकर खेदखिन्न होय महारुदन करती भईं। जे समझाने विषै समर्थ ते उनको शांतचित्त करी कैसे हैं समझावनहारे नाना प्रकारके वृत्तांतविषै प्रवीण अर हनूमान् निश्चल है चित्त जाका सो अपने वड़े पुत्रको राज्य देय अर सबोंको यथा योग्य विभूति देय रत्नोंके समूह कर युक्त देवोंके विमान समान जो अपना मन्दिर उसे तजकर निकसा। स्वर्ण रत्नमई देदीप्यमान जो पालकी तापर चढ़ चैत्यवान् नामा वन तहां गया सो नगरके लोक हनूमानकी पालकी देख सजल नेत्र भये पालकीपर ध्वजा फरहरे हैं चमरोंकर शोभित हैं मोतियोंकी झालरियोंकर मनोहर है हनूमान वनविषैं आया। सो वन नाना प्रकारके वृक्षोंकर मंडित अर जहां सूवा मैना मयूर हंस कोयल भ्रमर सुन्दर शब्द करे हैं अर नाना प्रकारके पुष्पोंकर सुगंध है वहां स्वामी धर्मरत्न संयमी धर्मरूप रत्नकी राशि उत्तम योगीश्वर जिनके दर्शनसे पाप विलाय जावैं ऐसे सन्त चारण मुनि अनेक चारण मुनियोंकर मंडित तिष्ठते थे। आकाशविषै है गमन जिनका सो दूरसे उनको देख हनूमान पालकीसे उतरा महा भक्तिकर युक्त नमस्कार कर हाथ जोड़ कहता भया—हे नाथ मैं शरीरादिक परद्रव्योंसे निर्ममत्व भया यह परमेश्वरी दीक्षा आप मुझे कृपाकर देवो। तब मुनि कहते भए—अहो भव्य! तैंने भली विचारी तू उत्तम जन है जिनदीक्षा लेहु। यह जगत असार है शरीर विनश्वर है शीघ्र आत्मकल्याण करो अविनश्वर पद लेवेकी परमकल्याण-कारिणी बुद्धि तुम्हारे उपजी है यह बुद्धि विवेकी जीवके ही उपजे है ऐसी मुनिकी आज्ञा पाय मुनिको प्रणामकर पद्मासन धर तिष्ठा मुकुट कुण्डल हार आदि सर्व आभूषण डारे अर वस्त्र डारे जगतसे मनका

राग निवारा, स्त्रीरूप बन्धन तुड़ाय ममता मोह मिटाय आपको स्नेहरूप पाशसे छुड़ाय विष समान विषय सुख तजकर वैराग्यरूप दीपकको शिखाकर रागरूप अन्धकार निवारकर शरीर अर संसारको असार जान कमलोंको जीतैं ऐसे सुकुमार जे कर तिनकर सिरके केश लौंच करता भया समस्त परिग्रहसे रहित होय मोक्षलक्ष्मीको उद्यमी भया महाव्रत धरे असंयम परहरे हनूमानकी लार साढ सातसौ बड़े राजा विद्याधर शुद्ध चित्त विद्युद्गतिको आदि दे हनूमानके परम मित्र अपने पुत्रोंको राज्य देय अठाईस मूल गुण धार योगीन्द्र भए अर हनूमानकी रानी अर इन राजावोंकी राणी प्रथम तो वियोगरूप अग्निकर तप्तायमान विलाप करती भईं फिर वैराग्यको प्राप्त होय बन्धुमति नामा आर्यिकाके समीप जाय महा भक्ति कर संयुक्त नमस्कारकर आर्यिकाके व्रत धारती भईं। वे महाबुद्धिवन्तो शीलवन्ती भव भ्रमणके भयसे आभूषण डार एक सुफेद वस्त्र राखती भईं शील हो है आभूषण जिनके तिनको राज्यविभूति जीर्ण तृण समान भासती भई अर हनूमान महाबुद्धिमान महातपोधन महापुरुष संसारसे अत्यन्त विरक्त पच महाव्रत पंचसमिति तीन गुप्ति धार शैल कहिए पर्वत उससे भी अधिक, श्रीशैल कहिये हनूमान राजा पवनके पुत्र चारित्रविषै अचल होते भए तिनका यश निर्मल इन्द्रादिक देव गावैं वारम्बार वन्दना करें अर बड़े २ राजा कीर्ति करें निर्मल है आचरण जिनका, ऐसा सर्वज्ञ वीतराग देवका भाषा निर्मल धर्म आचार्या सो भवसागरके पार भया वे हनूमान महामुनि पुरुषोविषै सूर्य समान तेजस्वी जिनेंद्रदेवका धर्म आराध ध्यान अग्निकर अष्ट कर्मकी समस्त प्रकृति ईन्धनरूप तिनको भस्मकर तुङ्गिगिरिके शिखरसे सिद्ध भए। केवलज्ञान केवल दर्शन आदि अनन्त गुणनई सदा सिद्ध लोकविषै रहैंगे ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषा वचनिकाविषै हनूमानका निर्वाण गमन वर्णन करनेवाला एकसौ तेरहवां पर्व पूर्ण भया ॥ ११३ ॥

अथानन्तर—राम सिंहासनपर विराजे थे लक्ष्मणके आठों पुत्रोंका अर हनूमानका मुनि होना मनुष्योंके मुखसे सुनकर हंसे अर कहते भए इन्होंने मनुष्य भवके क्या सुख भोगे। यह छोटी अवस्थामें ऐसे

भोग तजकर योग धारण करे हैं सो बड़ा आश्चर्य है यह हठरूप ग्राहकर ग्रहे हैं देखो ! ऐसे मनोहर काम भोग तज विरक्त होय वैठे हैं या भांति कही यद्यपि श्रीराम सम्यक्दृष्टि ज्ञानी हैं तथापि चारित्र मोहके वश कइएक दिन लोकोंकी न्याईं जगतविषैं रहते भये संसारके अल्पसुख तिनविषैं राम लक्ष्मण न्याय सहित राज्य करते भये। एक दिन महाज्योतिका धारक सोधर्म इन्द्र परम ऋद्धिकर युक्त महाधीय अर गम्भीरताकर मंडित नाना अलंकार धरे सामान्य जातिके देव जे गुरुजन तुल्य अर लोकपाल जातिके देव देशपाल तुल्य अर त्रयस्त्रिंशत् जातिके देव मंत्री समान तिनकर मंडित तथा अन्य सकल देव सहित इन्द्रासनविषै वैठे कैसे सोहै जैसे सुमेरु पर्वत और पर्वतोंके मध्य सोहै महातेज पुंज अद्भुत रत्नोंका सिंहासन उसपर सुखसे विराजता ऐसा भासै जैसे सुमेरुके ऊपर जिनराज भासें। चन्द्रमा अर सूर्यकी ज्योतिको जीतें ऐसे रत्नोंके आभूषण पहिरे सुन्दर शरीर मनोहर रूप नेत्रोंको आनन्दकारी जैसी जलकी तरंग निर्मल तैसा प्रभाकर युक्त हार पहिरे ऐसा सोहै मानों शीतोदा नदीके प्रवाहकर युक्त निषधाचल पर्वत ही है मुकुट कंठाभरण कुण्डल केयूर आदि उत्तम आभूषण पहिरे देवोंकर मंडित जैसा नक्षत्रोंकर चन्द्रमा सोहै तैसा सोहै है। अपने मनुष्य लोकविषैं चन्द्रमा नक्षत्र ही भासैं तातैं चन्द्रमा नक्षत्रोंका दृष्टान्त दिया है चन्द्रमा नक्षत्र जोतिषी देव हैं तिनसे स्वर्गवासी देवोंकी अति अधिक ज्योति है अर सब देवोंसे इन्द्रकी ही अधिक है अपने तेजकर दशोंदिशा विषे उद्योत करता सिंहासनविषैं तिष्ठता जैसा जिनेश्वर भासे तैसा भासे इन्द्रके इन्द्रासनका अर सभाका जो समस्त मनुष्य जिह्वा कर सैकड़ों वर्ष लग वर्णन करें तौभी न कर सकें सभाविषैं इन्द्रके निकट लोकपाल सब देवनिविषे मुख्य हैं सुन्दर हैं चित्त जिनके स्वर्गसे चयकर मनुष्य होय मुक्ति जावे हैं सोलह स्वर्गके वारह इन्द्र हैं एकएक इन्द्रके चार चार लोकपाल एक भवधारी हैं अर इन्द्रनिविषैं सौधर्म सनत्कुमार महेंद्र लांतवेंद्र शतारेन्द्र आरणेंद्र यह षट् एक भवधारी हैं अर शची इन्द्राणी लोकांतिक देव पंचम स्वर्गके तथा सर्वार्थसिद्धिके अहमिंद्र मनुष्य होय मोक्ष जावें हैं सो सौधम इन्द्र अपनी सभाविषैं अपने समस्त देवनिकर युक्त वैठा लोकपालादिक अपने अपने स्थानक वैठे सो इन्द्र शास्त्रका

व्याख्यान करते भए वहां प्रसंग पाय यह कथन किया अहो देवो। तुम अपने भावरूप पुष्प निरन्तर महा भक्तिकर अर्हंत देवको चढ़ावो अर्हंतदेव जगत्का नाथ है समस्त दोषरूप वनके भस्म करिवेको दावानल समान है जिसने संसारका कारण मोहरूप महा असुर अत्यन्त दुर्जय ज्ञान कर मारा, वह असुर जीवोंका बड़ा वैरी निर्विकल्प सुखका नाशक हैं अर भगवान् वीतराग भव्य जीवोंको संसार समुद्रसे तारिवे समर्थ है संसार समुद्र कषायरूप उग्र तरंग कर व्याकुल है कामरूप ग्राह कर चंचलतारूप, मोहरूप मगर कर मृत्युरूप है ऐसे भवसागरसे भगवान् बिना कोई तारिवे समर्थ नहीं। कैसे हैं भगवान्? जिनको जन्म कल्याणकविषैं इन्द्रादिक देव सुमेरुगिरि ऊपर क्षीरसागरके जल कर अभिषेक करावे हैं अर महा भक्तिकर एकाग्रचित्त होय परिवार सहित पूजा करे हैं धर्म अर्थ काम मोक्ष यह चारों पुरुषार्थ हैं तिनविषै लगा है चित्त जिनका जिनेंद्रदेव पृथिवीरूप स्त्रीको तजकर सिद्ध रूप वनिताको वरते भए। कैसी है पृथिवी रूप स्त्री? विंध्याचल अर कैलाश हैं कुच जिसके अर समुद्रकी तरंग हैं कटिमेखला जिसके ये जीव अनाथ महा मोहरूप अन्धकार कर आच्छादित तिनको वे प्रभु स्वर्ग लोकसे मनुष्य लोकविषैं जन्म धर भवसागरसे पार करते भए अपने अद्भुतानन्तवीर्य कर आठों कर्मरूप वैरी क्षणमात्रविषै खिपाए जैसे सिंह मदोन्मत्त हस्तियोंको नसावै भगवान् सर्वज्ञदेवको अनेक नामकर भव्य जीव गावे हैं जिनेंद्र भगवान् अर्हंत स्वयंभू शंभू स्वयंप्रभ सुगत शिवस्थान महादेव कालंजर हिरण्यगर्भ देवाधिदेव ईश्वर महेश्वर ब्रह्मा विष्णु बुद्ध वीतराग विमल विपुल प्रबल धर्मचक्री प्रभु विभु परमेश्वर परम ज्योति परमात्मा तीर्थंकर कृतकृत्य कृपालु संसारसूदन सुर ज्ञानचक्षु भवांतक इत्यादि अपार नाम योगीश्वर गावे हैं अर इन्द्र धरणीन्द्र चक्रवर्ती भक्तिकर स्तुति करे हैं जो गोप्य हैं अर प्रकट हैं जिनके नाम सकल अर्थ संयुक्त हैं जिसके प्रसाद कर यह जीव कर्मसे छूटकर परम धामको प्राप्त होय है जैसा जीवका स्वभाव है तैसा वहां रहे है जो स्मरण करें उसके पाप विलाय जायं वह भगवान पुराण पुरुषोत्तम परम उत्कृष्ट आनन्दकी उत्पत्तिका कारण महा कल्याणका मूल देवनिके देव उसके तुम भक्त होवो अपना कल्याण चाहो हो तो अपने हृदय कमलविषैं

जिनराजको पधरावो, यह जीव अनादि निधन है कर्मोंका प्रेरा भववनविषैं भटके है सव जन्मविषैं मनुष्य भव दुर्लभ है सो मनुष्य जन्म पायकर जे भूले हैं तिनको धिक्कार है चतुर्गति रूप है भ्रमण जिसविषैं ऐसा संसाररूप समुद्र उसमें वहुरि कव वोध पावोगे। जे अर्हंतका ध्यान नहीं करे हैं अहो धिक्कार उनको, जे मनुष्य देह पाय कर जिनेंद्रको न जपे हैं जिनेंद्र कर्मरूप वेरीका नाश करणहारा उसे भूल पापी नाना योनिविषैं भ्रमण करे हैं कभी मिथ्या तपकर चुद्र देव होय हैं वहुरि मरकर स्थावर योनिविषैं जाय महा कष्ट भोगे हैं यह जीव कुमार्गके आश्रयकर महा मोहके वश भए इन्द्रोंका इन्द्र जो जिनेंद्र उसे नहीं ध्यावे हैं देखो मनुष्य होयकर मूर्ख विषयरूप मांसके लोभी मोहिनी कर्मके योगकर अहंकार ममकारको प्राप्त होय हैं जिन दीक्षा नहीं धरे हैं मंदभागियोंके जिन दीक्षा दुर्लभ है कभी कुतपकर मिथ्यादृष्टि स्वर्गसे आन उपजे हैं सो हीन देव होय पश्चात्ताप करे हैं कि हम मध्य लोक रत्नद्वीप विषैं मनुष्य भए थे सो अर्हन्तका मार्ग न जाना अपना कल्याण न किया मिथ्या तपकर कुदेव भए हाय हाय धिक्कार उन पापियोंको जो कुशास्त्रकी प्ररूपणाकर मिथ्या उपदेश देय महा मानके भरे जीवोंको कुमार्गविषै डारै हैं मूढ़ोंको जिनधर्म दुर्लभ है तातैं भव भवविषैं दुखी होय हैं अर नारकी तिर्यंच तो दुखी ही हैं अर हीन देव भी दुखी ही हैं अर वड़ी ऋद्धिके धारी देव भी स्वर्गसे चये हैं सो मरणका वड़ा दुःख है अर इष्ट वियोगका वड़ा दुःख है वड़े देवोंकी भी यह दशा तो और चुद्रोंकी क्या वात जो मनुष्य देहविषैं ज्ञान पाय आत्मकल्याण करे हैं सो धन्य हैं। इन्द्र या भांति कहकर वहुरि कहता भया ऐसा दिन कव होय जो मेरी स्वर्ग लोकविषैं स्थिति पूर्ण होय अर मैं मनुष्य देह पाय विषयरूप वैरियोंको जीत कर्मोंका नाशकर तपके प्रभावसे मुक्ति पाऊं तव एक देव कहता भया यहां स्वर्गविषैं तो अपनी यही वुद्धि होय है परन्तु मनुष्य देह पाय भूल जाय हैं जो कदाचित् मेरे कहेको प्रतीति न करो तो पंचम स्वर्गका व्रह्मेन्द्रनामा इन्द्र अव रामचन्द्र भया है सो यहां तो योंही कहते थे अर अव वैराग्यका विचार ही नहीं तव शचीका पति सौधर्म इन्द्र कहता भया सव वन्धनमें स्नेहका वड़ा वन्धन है जो हाथ पग कंठ आदि अंग २ वंधा होय सो तो छूटे

परन्तु स्नेहरूप बन्धन कर बंधा कैसे छूटे स्नेहका बंधा एक अंगुल न जाय सके रामचन्द्रके लक्ष्मणसे अति अनुराग है लक्ष्मणके देखे बिना तृप्ति नाहीं अपने जीवसे भी उसे अधिक जाने है एक निमिष मात्र भी लक्ष्मणको न देखे तो रामका मन विकल होय जाय सो लक्ष्मणको तजकर कैसे वैराग्यको प्राप्त होय कर्मोंकी ऐसी ही चेष्टा है जो बुद्धिमान भी मूर्ख होय जाय है, देखे सुने हैं अपने सर्व भव जिसने ऐसा विवेकी राम भी आत्महित न करे। अहो देव हो! जीवोंके स्नेहका बड़ा बन्धन है या समान और नाहीं तातै सुबुद्धियोंको स्नेह तज संसार सागर तरिवेका यत्न करना चाहिए, या भांति इन्द्रके मुखका उपदेश तत्वज्ञानरूप अर जिनवरके गुणोंके अनुरागसे अत्यन्य पवित्र उसे सुनकर देव चित्तकी विशुद्धताको पाय जन्म जरा मरणके भयसे कंपायमान भए मनुष्य मुक्ति पायवेकी अभिलाषा करते भए॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषावचनिकाविषै इन्द्रका देवनिकू उपदेश वर्णन करनेवाला एकसौ चौदहवा पर्व पूर्ण भया ॥११४॥

अथानन्तर—इन्द्र सभासे उठे तव सुर कहिए कल्पवासी देव अर असुर कहिये भवनवासी विंतर ज्योतिषी देव इन्द्र नमस्कारकर उत्तम भावधर अपने अपने स्थानक गए, पहिले दूजे स्वर्ग लग भवनवासी विंतर ज्योतिषीदेव कल्पवासी देवोंकर ले गए जाय हैं सो सभामेंके दो स्वर्गवासी देव रत्नचूल अर मृगचूल बलभद्रनारायणके स्नेह परखिवेको उद्यमी भए, मनविषै यह धारणा करी ते दोनों भाई परस्पर प्रेमके भरे कहिए है। देखें उन दोनोंकी प्रीति। रामके लक्ष्मणसे एता स्नेह है जाके देखे बिना न रहैं सो रामका मरण भए लक्ष्मणकी क्या चेष्टा होय? लक्ष्मण शोककर विह्वल भया चेष्टा करै सो क्षण एक देखकर आवेंगे शोककर लक्ष्मणका कैसा मुख हो जाय कौनसे कोप करे क्या कहे ऐसी धारणाकर दोनों दुराचारी देव अयोध्या आए सो रामके महिलविषैं विक्रियाकर समस्त अन्तःपुरकी स्त्रिनिका रुदन शब्द कराया अर ऐसी विक्रिया करी द्वारपाल उमराव मन्त्री पुरोहित आदि नीचा मुखकर लक्ष्मणपै आए अर रामका मरण कहते भए, कि हे नाथ! राम परलोक पधारे ऐसे वचन सुनकर लक्ष्मणने मन्दपवनकर चपल जो नील कमल ता समान सुन्दर हैं नेत्र जाके सो हाय यह शब्द हू आधासा कह तत्काल ही प्राण तजे, सिं-

हासन ऊपर बैठा हुता सो वचनरूप वज्रपातका मारा जीवरहित होय गया आंखकी पलक ज्यों थी त्योंही रह गई जीव जाता रहा शरीर अचेतन रह गया लक्ष्मणको भ्राताकी मिथ्या मृत्युके वचनरूप अग्निकर जरा देख दोनों देव व्याकुल भए लक्ष्मणके जिवायवेको असमर्थ तव विचारी याकी मृत्यु इस ही विधि कही हुती मनविषै अति पछताए विषाद अर आश्चर्यके भरे अपने स्थानक गए शोकरूप अग्निकर तप्ताय-मान है चित्त जिनका लक्ष्मणकी वह मनोहर मूर्ति मृतक भई देव देख न सके तहां खड़े न रहे निन्द्य है उद्यम जिनका। गौतम स्वामी राजा श्रेणिकसे कहे हैं—हे राजन्! विना विचारे जे पापी कार्य करें तिनको पश्चात्ताप ही होय। देवता गए अर लक्ष्मणकी स्त्री पतिको अचेतनरूप देख प्रसन्न करनेको उद्यमी भईं कहे हैं—हे नाथ! किस अविवेकिनी सौभाग्यके गर्वकर गर्वितने आपका मान न किया सो उचित न करी हे देव! आप प्रसन्न होवो तिहारी अप्रसन्नता हमको दुःखका कारण ऐसा कहकर वे परम प्रेमकी भरी लक्ष्मणके अंगसे आलिंगनकर पांयन पड़ीं वे राणी चतुराईके वचन कहिवेविषै तत्पर कोई यक तो वीण लेय वजावती भई कोई मृदंग वजावती भई पतिके गुण अत्यन्त मधुर स्वरसे गावती भई पतिके प्रसन्न करिवेविषै उद्यमी है चित्त जिनका कोई एक पतिका मुख देखे है अर पतिके वचन सुनिवेकी है अभिलाषा जिनके, कोई एक निर्मल स्नेहकी धरणहारी पतिके तनुसे लिपटकर कुण्डलकर मंडित महासुन्दर कांतके कपोलोंको स्पर्शती भई अर कोई एक मधुरभाषिणी पतिके चरण कमल अपने सिरपर मेलती भई अर कोई मृगनयनी उन्मादकी भरी विभ्रमकर कटाक्षरूप जे कमल पुष्प तिनका सेहरा रचती भई जम्भाई लेती पतिका बदन निरखती अनेक चेष्टा करती भई। या भांति यह उत्तम स्त्री पतिके प्रसन्न करिवेको अनेक यत्न करे हैं परन्तु उनके यत्न अचेतन शरीर विषैं निरर्थक भए वे समस्त राणी लक्ष्मणकी स्त्री ऐसे कंपायमान हैं जैसे कमलोंका वन पवन कर कंपायमान होय। नाथकी यह अवस्था होते संते स्त्रियोंका मन अति व्याकुल भया संशयको प्राप्त भईं कि क्षणमात्रमें यह क्या भया चिंतवनमें न आवे अर कथनमें न आवे ऐसा खेदका कारण शोक उसे मनमें धर कर वे मुग्धा मोहकी मारी पसर गईं इन्द्रकी इन्द्राणी स-

मान है चेष्टा जिनकी ऐसी वे राणी तापकर तप्तायमान शूक गईं न जानिए तिनकी सुन्दरता कहां जाती रही। यह वृत्तांत भीतरके लोकोंके मुखसे सुन श्रीरामचन्द्र मंत्रियों कर मंडित महा संभ्रमके भरे भाईपै आए भीतर राजलोकमें गए लक्ष्मणका मुख प्रभातके चन्द्रमा समान मन्दकांति देखा जैसा तत्कालका वृक्ष मूलसे उखड़ पड़ा होय तैसा भाईका देखा मनमें चितवते भए यह क्या भया बिना कारण भाई आज मोसे रूसा है यह सदा आनन्द रूप आज क्यों विषाद रूप होय रहा है स्नेहके भरे शीघ्र ही भाईके निकट जाय उसको उठाय उरसे लगाय मस्तक चूमते भए। दाहेका मारा जो वृक्ष उस समान हरिको निरख हलधर अंगसे लपट गया यद्यपि जीतव्यताके चिन्हरहित लक्ष्मणको देखा तथापि स्नेहके भरे राम उसे मूवा न जानते भए वक्र होय गई है ग्रीवा जिसकी शीतल होय गया है अङ्ग जिसका जगत्की आगल ऐसी भुजा सो शिथिल होय गई सांसोस्वास नहीं नेत्रोंकी पलक लगे न विघटे। लक्ष्मणकी यह अवस्था देख राम खेदखिन्न होय कर पसेवसे भर गए। यह दीनोंके नाथ राम दीन होय गये वारम्वार मूर्छा खाय पड़े आंसुवों कर भर गए हैं नेत्र जिनके भाईके अङ्ग निरखे इसके एक नखकी भी रेखा न आई कि ऐसा यह महाबली कौन कारणकर ऐसी अवस्थाको प्राप्त भया यह विचार करते संते भया है कंपायमान शरीर जिनका यद्यपि आप सर्व विद्याके निधान तथापि भाईके मोहकर विद्या बिसर गई, मूर्छाका यत्न जानें ऐसे वैद्य बुलाए मन्त्र औषधिविषै प्रवीण कलाके पारगामी ऐसे वैद्य आये सो जीवता होय तो कछु यत्न करें वे माथा धुन नीचे होय रहे तब राम निराश होय मूर्छा खाय पड़े जैसे वृक्षकी जड़ उखड़ जाय अर वृक्ष गिर पड़े तैसे आप पड़े। मोतियोंके हार चन्दन कर मिश्रित जल ताड़के बीजनावोंकी पवनकर रामको सचेत किया तब महा विह्वल होय विलाप करते भये शोक अर विषादकर महा पीड़ित राम आंसुवोंके प्रवाह कर अपना मुख आच्छादित करते भये आंसुओं कर आच्छादित रामका मुख ऐसा भासै जैसा जल धारा कर आच्छादित चन्द्रमा भासे अत्यन्त विह्वल रामको देख सर्वराजलोकरूप समुद्रसे रुदन रूप ध्वनि प्रकट होती भई दुःख रूप सागरविषै मग्न सकल स्त्री जन अत्यर्थपणे रुदन करती भईं तिनके शब्द कर दशों दिशा पूर्ण

भई कैसे विलाप करे हैं हाय नाथ ! पृथिवीको आनन्दके कारण सर्व सुन्दर हमको वचन रूप दान देवो तुमने विना अर्थ क्यों मौन पकड़ी हमारा अपराध क्या विना अपराध हमको क्यों तजो हो तुम तो ऐसे दयालु हो जो अनेक चूक पड़े तो क्षमा करो ॥

अथानन्तर—इस प्रस्ताव विषै लव अर अंकुश परमविषादको प्राप्त होय विचारते भए कि धिक्कार इस संसार असारको अर इस शरीर समान और क्षणभंगुर कौन जो एक निमिष मात्रमें मरणको प्राप्त होय । जो वासुदेव विद्याधरोंकर न जीता जाय सो भी कालके जालमें आय पड़ा इसलिए यह विनश्वर शरीर यह विनश्वर राज्य संपदा उसकर हमारे क्या सिद्धि ? यह विचार सीताके पुत्र फिर गर्भमे आयवेका है भय जिनको, पिताके चरणारविन्दको नमस्कार कर महेन्द्रोदय नामा उद्यान विषै जाय अमृतेश्वर मुनिकी शरण लेय दोनों भाई महाभाग्य मुनि भए जब इन दोनों भाइयोंने दीक्षा धरी तब लोक अति-व्याकुल भए कि हमारा रक्षक कौन ? रामको भाईके मरणका बड़ा दुःख सो शोकरूप भंवरमें पड़े जिनको पुत्र निकसनेकी कुछ सुध नहीं रामको राज्यसे पुत्रोंसे प्रियायोंसे अपने प्राणसे लक्ष्मण अति-प्यारा यह कर्मोंकी विचित्रता जिसकर ऐसे जीवोंकी ऐसी अशुभ अवस्था होय ऐसा संसारका चरित्र देख ज्ञानी जीव वैराग्यको प्राप्त होय हैं जो उत्तम जन हैं तिनके कछु इक निमित्त मात्र वाह्य कारण देख अंतरंगके विकारभाव दूर होय ज्ञान रूप सूर्यका उदय होय है पूर्वोपार्जित कर्मोंका क्षयोपशम होय तब वैराग्य उपजे है ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषावचनिकाविषैं लवणांकुशका वैराग्य वर्णन करनेवाला एकसौ पन्द्रहवा पर्व पूर्ण भया ॥११५॥

अथानन्तर—गौतम स्वामी राजा श्रेणिकसे कहे हैं—हे भव्योत्तम ! लक्ष्मणके काल प्राप्त भए समस्त लोक व्याकुल भए अर युगप्रधान जो राम सो अति व्याकुल होय सब बातोंसे रहित भए कछु सुध नहीं लक्ष्मणका शरीर स्वभाव ही कर महासुरूप कोमल सुगंध मृतक भया तो जैसेका तैसा सो श्रीराम लक्ष्मणको एक क्षण न तजें कबहूं उरसे लगाय लेंय कभी पपोलें कभी चूंवें कबहूं इसे लेकर आप बैठ

जावें कभी लेकर उठ चलें एक क्षण काहूका विश्वास न करैं एक क्षण न तजें जैसे बालकके हाथ अमृत आवै अर वह गाढ़ा गाढ़ा गहै तैसे राम महाप्रिय जो लक्ष्मण उसको गाढ़ा २ गहैं। अर दीनोंकी नाईं विलाप करैं हाय भाई! यह तोहि कहा योग्य जो मुझे तजकर तैंने अकेले भाजिवेकी बुद्धि करी। मैं तेरा विरह एक क्षण सहारवे समर्थ नाहीं यह बात तू कहा न जाने है? तू तो सब बातोंविषैं प्रवीण हैं अब मोहि दुःखके सागरविषैं डारकर ऐसी चेष्टा करै है हाय भ्रात। यह क्या क्रूर उद्यम किया जो मेरे बिना जाने मेरे विना पूछै कूचका नगारा बजाय दिया। हे वत्स। हे बालक! एक बार मुझे वचनरूप अमृत प्याय, तू तो अति विनयवान् हुता विना अपराध मोसे क्यों कोप किया हे मनोहर। अब तक कभी मोसे ऐसा मान न किया अब कछु और ही होय गया। कह मैंने क्या किया जो तू रूसा तू सदा ऐसा विनय करता मुझे दूरसे देख उठ खड़ा होय सन्मुख आवता मोहि सिंहासन ऊपर बैठावता आप भूमिमें बैठता अब कहा दशा भई, मैं अपना सिर तेरे पांयनमें दूं तौभी नहीं बोले है तेरे चरण कमल चन्द्रकांति मणिसे अधिक ज्योतिको धरे जे नखोंकर शोभित देव विद्याधर सेवे हैं। हे देव। अब शीघ्र ही उठो मेरे पुत्र वनको गये सो दूर न गए हैं तिनको हम तुरतही उलट लावें अर तुम विना यह तिहारी राणी आर्त्तध्यानकी भरी कुरचीकी नाईं कल कलाट करे हैं तुम्हारे गुणरूप पाशसों बंधी पृथिवीमें लोटी लोटी फिरे हैं तिनके हार विखर गए हैं अर सीस फूल चूड़ामणि कटिमेखला कर्णाभरण विखरे फिरे हैं यह महा विलापकर रुदन करै हैं अति आकुल हैं इनको रुदनसे क्यों न निवारो अब मैं तुम विना कहा करूं कहां जाऊं? ऐसा स्थानक नाहीं जहां मोहि विश्राम उपजै अर यह तिहारा चक्र तुमसे अनुरक्त इसे तजना तुमको कहा उचित अर तिहारे वियोगमें मोहि अकेला जान यह शोकरूप शत्रु दबावे हैं अब मैं हीनपुण्य कहा करूं? मोहि अग्नि ऐसे न दहै अर ऐसा विष कंठको न सोखै जैसा तिहारा विरह सोखै है। अहो लक्ष्मीधर, क्रोध तज घनी वेर भई अर तुम ऐसे धर्मात्मा त्रिकालसामयिकके करणहारे जिनराजकी पूजामें निपुण सो सामयिकका समय टला पूजाका समय टला अब मुनिनिके आहार देयवेकी वेला है सो उठो। तुम

सदा साधुनिके सेवक ऐसा प्रमाद क्यों करो हो, अब यह सूर्य भी पश्चिम दिशाको आया कमल सरोवर में मुद्रित होय गए तैसे तिहारे दर्शन विना लोकोंके मन मुद्रित होय गये या प्रकार विलाप करते २ दिन व्यतीत भया निशा भई तब राम सुन्दर सेज विछाय भाईको भुजावोंमें लेय सूते, किसीका विश्वास नाहीं रामने सब उद्यम तजे एक लक्ष्मणमें जीव, रात्रिको कानोविषैं कहे हैं—हे देव। अब तो मैं अकेला हूं तिहारे जीवकी बात मोहि कहो तुम कौन कारण ऐसी अवस्थाको प्राप्त भये हो तिहारे वदन चन्द्रमातैं अतिमनोहर अब कांतिरहित क्यों भासे है अर तिहारे नेत्र मंद पवनकर चंचल जो नील कमल उस समान अब और रूप क्यों भासे है अहो तुमको कहा चाहिए सो ल्याऊं, हे लक्ष्मण! ऐसी चेष्टा करनी तुमको सोहै नाहीं, जो मनविषैं होय सो मुखकर आज्ञा करो, अथवा सीता तुमको याद आई होय वह पतिव्रता अपने दुखविषैं सहाय थी सो तो अब परलोक गई तुमको खेद करना नाहीं, हे धीर! विषाद तजो विद्याधर अपने शत्रु हैं सो छिद्र देख आए अब अयोध्या लुटेगी तातैं यत्न करना होय सो करो अर हे मनोहर! तुम काहूसे क्रोध ही करते तब भी ऐसे अप्रसन्न देखे नहीं अब ऐसे अप्रसन्न क्यों भासो हो। हे वत्स, अब ये चेष्टा तजो प्रसन्न होवो मैं तिहारे पायन परूं हूं नमस्कार करूं हूं तुम तो महा विनयवंत हो सकल पृथ्वीविषै यह बात प्रसिद्ध है कि लक्ष्मण रामका आज्ञाकारी है सदा सन्मुख है, कभी परांगमुख नाहीं, तुम अतुल प्रकाश जगत्के दीपक हो, मत कभी ऐसा होय जो कालरूप वायुकर बुझ जावो। हे राजानिके राजन्! तुमने या लोकको अति आनन्दरूप किया तिहारे राज्यमें अचैन किसीने न पाया। या भरतक्षेत्रके तुम नाथ हो अब लोकको अनाथकर गमन करना उचित नहीं, तुमने चक्रकर शत्रुनिके सकल चक्र जीते अब कालचक्रका पराभव कैसे सहो हो तिहारा यह सुन्दर शरीर राज्यलक्ष्मीकर जैसा सोहता था, वैसा ही मूर्छित भया सोहै है। हे राजेन्द्र! अब रात्रि भी पूर्ण भई सन्ध्या फूली सूर्य उदय होय गया अब तुम निद्रा तजो तुम जैसे ज्ञाता श्रीमुनिसुव्रतनाथके भक्त प्रभातका समय क्यों चूको हो, जो भगवान वीतरागदेव मोहरूप रात्रिको हर लोकालोकका प्रकट करणहारा केवलज्ञानरूप प्रताप प्रकट करते भए, वे

त्रैलोक्यके सूर्य भव्यजीवरूप कमलोंको प्रकट करणहारे तिनका शरण क्यों न लेवो अर यद्यपि प्रभात समय भया परन्तु मुझे अन्धकार ही भासे है क्योंकि मैं तिहारा मुख प्रसन्न नाहीं देखूं, तातैं हे विचक्षण! अब निद्रा तजो, जिनपूजाकर सभाविषैं तिष्ठो, सब सामंत तिहारे दर्शनको खड़े हैं, बड़ा आश्चर्य है सरोवरविषैं कमल फूले तिहारा वदन कमल मैं फूला नहीं देखूं हूं, ऐसी विपरीत चेष्टा तुमने अब तक कभी भी नहीं करी, उठो राज्यकार्यविषैं चित्त लगावो हे भ्रातः! तिहारी दीर्घ निद्रासे जिनमंदिरोंकी सेवा विषैं कमी पड़ है, संपूर्ण नगरविषै मङ्गल शब्द मिट गए गीत नृत्य वादित्रादि बंद हो गये हैं औरोंकी कहा बात? जो महाविरक्त मुनिराज हैं तिनको भी तिहारी यह दशा सुन उद्वेग उपजै है तुम जिनधर्मके धारी हो सब ही साधर्मीक जन तिहारी शुभदशा चाहै हैं बीण बांसुरी मृदंगादिकके शब्दरहित यह नगरी तिहारे वियोगकर व्याकुल भई नहीं सोहै है कोई अगिले भवमें महाअशुभ कर्म उपार्जे तिनके उदयकर तुम सारिखे भाईकी अप्रसन्नतासे महाकष्टको प्राप्त भया हूं। हे मनुष्योंके सूर्य जैसे युद्धविषैं शक्तिके घावकर अचेत होय गए थे अर आनंदसे उठे मेरा दुःख दूर किया तैसे ही उठकर मेरा खेद निवारो॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषावचनिकाविषैं रामदेवका विलाप वर्णन करनेवाला एकसौ सोलहवां पर्व पूर्ण भया ॥११६॥

अथानन्तर—यह वृतान्त सुन विभीषण अपने पुत्रनि सहित अर विराधित सकल परिवार सहित अर सुग्रीव आदि विद्याधरनिके अधिपति अपनी स्त्रियों सहित शीघ्र अयोध्यापुरी आए आंसुनिकर भरे हैं नेत्र जिनके हाथ जोड़ सीस नवाय रामके समीप आए महा शोकरूप हैं चित्त जिनके अति विषादके भरे रामको प्रणामकर भूमिविषैं बैठे, क्षण एक तिष्ठकर मंद २ वाणी कर विनती करते भए—हे देव! यद्यपि यह भाईका शोक दुर्निवार है तथापि आप जिनवाणीके ज्ञाता हो सकल संसारका स्वरूप जानो हो तातैं आप शोक तजिवे योग्य हो, ऐसा कह सबही चुप होय रहे बहुरि विभीषण सब बातविषैं महा विचक्षण सो कहता भया—हे महाराज! यह अनादि कालकी रीति है कि जो जन्मा सो मूवा, सब संसार विषैं यही रीति है इनहीको नाहीं भई जन्मका साथी मरण है मृत्यु अवश्य है काहूसे न टरी अर न काहूसे टरे या

संसार पिंजरेविषैं पड़े यह जीवरूप पक्षी सबही दुखी हैं कालके वश हैं मृत्युका उपाय नाहीं अर सब४ उपाय हैं यह देह निस्संदेह विनाशीक है तातैं शोक करना वृथा है, जे प्रवीण पुरुष हैं वे आत्मकल्याणका उपाय करे हैं रुदन किएसे मरा न जीवे अर न वचनालाप करे, तातैं हे नाथ। शोक न करो यह मनुष्यनिके शरीर तो स्त्री पुरुषनिके संयोगसे उपजे हैं सो पानीके बुदबुदावत् विलाय जायं इसका आश्चर्य कहा अहमिंद्र इन्द्र लोकपाल आदि देव आयुके क्षय भए स्वर्गसे चय हैं जिनकी सागरोंकी आयु अर किसीके मारे न मरें वे भी काल पाय मरैं मनुष्यनिकी कहा बात यह तो गर्भके खेदकर पीड़ित अर रोगनिकर पूर्ण डाभकी अणीके ऊपर जो ओसकी बून्द आय पड़े उस समान पड़नेको सन्मुख है महा मलिन हाड़ोंके पिंजरे ऐसे शरीरके रहिवेकी कहा आशा ? आप यह प्राणी अपने सुजनोंका सोच करे सो आप क्या अजर अमर हैं आपही कालकी दाढ़में बैठा उसका सोच क्यों न करे ? जो इन हीकी मृत्यु आई होय अर और अमर हैं तो रुदन करना जब सबकी यही दशा है तो रुदन काहेका जेते देहधारी हैं तेते सब कालके आधीन हैं सिद्ध भगवान्के देह नाहीं तातैं मरण नाहीं यह देह जिस दिन उपजा उसही दिनसे काल इसके लेयवेके उद्यममें है यह सब संसारी जीवोंकी रीति है तातैं संतोष अङ्गीकार करो इष्टके वियोगसे शोक करै सो वृथा है शोक कर मरै तौभी वह वस्तु पीछे न आवै तातैं शोक क्यों करिये देखो काल तो वज्रदण्ड लिए सिर पर खड़ा है अर संसारी जीव निर्भय भए तिष्ठे हैं जैसे सिंह तो सिर पर खड़ा है अर हिरण हरा तृण चरे है त्रैलोक्यनाथ परमेष्ठी अर सिद्ध परमेश्वर तिन सिवाय कोई तीन लोकविषैं मृत्युसे बचा सुना नाहीं वेही अमर हैं अर सब जन्म मरण करे हैं यह संसार विंध्याचलके वन समान कालरूप दावानल समान बलै है सो तुम क्या न देखो हो ? यह जीव संसार वनमें भ्रमण कर अति कष्टसे मनुष्य देह पावे है सो वृथा खोवै है काम भोगके अभिलाषी होय माते हाथीकी न्याईं बंधनविषैं पड़े है नरक निगोदके दुःख भोगवे हैं कभीयक व्यवहार धर्मकर स्वर्गविषैं देव भी होय हैं आयुके अन्तमें वहांसे पड़े हैं जैसे नदीके ढाहेका वृक्ष कभी उखड़े ही तैसे चारों गतिके शरीर मृत्युरूप नदीके ढाहेके वृक्ष हैं इनके उखड़नेको क्या आश्चर्य है इन्द्र

धरणेंद्र चक्रवर्ती आदि अनन्त नाशको प्राप्त भए जैसे मेघकर दावनाल बुझै तैसे शांतिरसरूप मेघकर
कालरूप दावानल बुझै और उपाय नाहीं पातालविषैं भूतलविषैं अर स्वर्गविषैं ऐसा कोई स्थानक नहीं जहां
कालसे बचे, अर छठे कालके अन्त इस भरतक्षेत्रमें प्रलय होयगी पहाड़ बिलय होय जावेंगे तो मनुष्यकी
कहा बात ? जो भगवान तीर्थंकर देव वज्रवृषभ नाराच संहननके धारक, जिनके सम चतुरस्र संस्थानक सुर
असुर नरोंकर पूज्य जो किसी कर जीते न जायं तिनका भी शरीर अनित्य वेभी देह तज सिद्धलोकविषैं
निज भावरूप रहैं तो औरोंका देह कैसे नित्य होय ? सुर नर नारक तिर्यंचोंका शरीर केलेके गर्भ समान
असार है। जीव तो देहका यत्न करे हैं। अर काल प्राण हरे है जैसे बिलके भीतरसे गरुड़ सर्पको लेजाय
तैसे इस देहके भीतरसे जीवको,काल लेजाय है यह प्राणी अनेक मूवोंको रोवे है हाय भाई हाय पुत्र हाय
मित्र या भांति शोक करे है अर कालरूप सर्प सबोंको निगले है जैसे सर्प मींडकको निगले यह मूढ बुद्धि
झूठे विकल्प करे हैं यह मैं किया यह मैं करूं हूं यह करूंगा सो ऐसे विकल्प करता कालके मुखविषैं जाय
है जैसे टूटा जहाज समुद्रके तले जाय परलोकको गया जो सज्जन उसके लार कोई जाय सके तो इष्टका
वियोग कभी न होय जो शरीरादिक परवस्तुसे स्नेह करे हैं सो क्लेशरूप अग्निविषैं प्रवेश करे हैं। अर इन
जीवोंके इस संसारविषैं एते स्वजनोंके समूह भए जिनकी संख्या नाहीं जो समुद्रकी रेणुकाके कण तिनसे
भी अपार हैं अर निश्चय कर देखिए तो इस जीवके न कोई शत्रु है न कोई मित्र है शत्रु तो रागादिक
हैं अर मित्र ज्ञानादिक हैं। जिसको अनेक प्रकारकर लड़ाइये अर निज जानिए सो भी वैरको प्राप्त भया
महा रोसकर हणे जिसके स्तनोंका दुग्ध पाया जिसकर शरीर वृद्ध भया ऐसी माताको भी हने हैं धिक्कार है
इस संसारकी चेष्टाको जो पहिले स्वामी था अर वार २ नमस्कार करता सो भी दास होय जाय है तब
पांयोंकी लातोंसे मारिये है हे प्रभो। मोहकी शक्ति देखो इसके वश भया यह जीव आपको नहीं जाने है
परको आप माने है जैसे कोई हाथ कर कारे नागको गहे तैसे कनक कामिनीको गहे है इस लोकाकाश
विषैं ऐसा तिल मात्र क्षेत्र नाहीं जहां जीवने जन्म मरण न किए अर नरकविषैं इसको प्रज्वलित ताम्बा

प्याया अर एती बार यह नरकको गया जो उसका प्रज्वलित ताम्रपान जोड़िये तो समुद्रके जलसे अधिक होय अर सूकर कूकर गर्दभ होय इस जीवने एता मलका आहार किया जो अनन्त जन्मका जोड़िए तो हजारां विंध्याचलकी राशिसे अधिक होय अर या अज्ञानी जीवने क्रोधके वशसे एते पराए सिर छेदे अर उन्होंने इसके छेदे जो एकत्र करिए तो ज्योतिष चक्रको उलंघ कर यह सिर अधिक होवें जीव नरक प्राप्त भया वहां अधिक दुःख पाय निगोद गया वहां अनन्तकाल जन्म मरण किए यह कथा सुनकर कौन मित्रसे मोह माने एक निमिष मात्र विषयका सुख उसके अर्थ कौन अपार दुःख सहे, यह जीव मोहरूप पिशाचके वश पड़ा उन्मत्त भया संसार वनविषै भटके है। हे श्रेणिक! विभीषण रामसे कहे है हे प्रभो! यह लक्ष्मणका मृतक शरीर तजवे योग्य है। अर शोक करना योग्य नाही यह कलेवर उरसे लगाय रहना योग्य नाही, या भांति विद्याधरनिका सूर्य जो विभीषण उसने श्रीरामसे विनती करी अर राम महा विवेकी जिनसे और प्रति बुद्ध होय तथापि मोहके योगसे लक्ष्मणकी मूर्तिको न तजी जैसे विनयवान् गुरुकी आज्ञा न तजै।

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषा वचनिकाविषैं लक्ष्मणका वियोग रामका विलाप अर विभीषणका संसार स्वरूप वर्णन करनेवाला एकसौ सतरहवां पर्व पूर्ण भया ॥ ११७ ॥

अथानन्तर—सुग्रीवादिक सब राजा श्रीरामचन्द्रसे विनती करते भए अब वासुदेवकी दग्ध क्रिया करो तब श्रीरामको यह वचन अतिअनिष्ट लगा अर क्रोध कर कहते भए तुम अपने माता पिता पुत्र पौत्र सबोंकी दग्धक्रिया करो, मेरे भाईकी दग्धक्रिया क्यों होय जो तुम्हारा पापियोंका मित्र बन्धु कुटुम्ब सो सब नाशको प्राप्त होय मेरा भाई क्यों मरे उठो उठो लक्ष्मण इन दुष्टनिके संयोगतैं और ठौर चलों जहां इन पापीनिके कटुक वचन न सुनिये ऐसा कह भाईको उरसे लगाय कांधे धर उठ चले विभीषण सुग्रीवादि अनेक राजा इनकी लार पीछे पीछे चले आवैं राम काहूका विश्वास न करें। भाईको कांधे धरे फिरें जैसे बालकके हाथ विषफल आया अर हितू छुड़ाया चाहे वह न छोड़े तैसे राम लक्ष्मणके शरीर को न छोड़ें आंसूनिकरि भीज रहे हैं नेत्र जिनके भाईसे कहते भए हे भ्रात! अब उठो बहुत वेर भई

ऐसो कहा सोवो हो अब स्नानकी वेला भई स्नानके सिंहासन विराजो ऐसा कह मृतक शरीरको सिंहासन पर बैठाया अर मोहका भरा राम मणि स्वर्णके कलशोंसे भाईको स्नान करावता भया अर मुकुट आदि सर्व आभूषण पहिराये अर भोजनकी तैयारी कराइ सेवकोंको कही नानाप्रकार रत्न स्वर्णके भाजन में नाना प्रकारका भोजन ल्यावो उसकर भाईका शरीर पुष्ट होय सुन्दर भात दाल फुलका नाना प्रकारके व्यंजन नाना प्रकारके रस शीघ्रही ल्यावो यह आज्ञा पाय सेवक सब सामग्रीकर ल्याये नाथके आज्ञाकारी तब आप रघुनाथ लक्ष्मणके मुखमें ग्रास देय सो न ग्रसै जैसे अभव्य जिनराजका उपदेश न ग्रहै तब आप कहते भए जो तैंने मोसे कोप किया तो आहारसे कहा कोप ? आहार तो करो मोसे मत वोलो जैसे जिन-वाणी अमृतरूप है परन्तु दीर्घ संसारीको न रुचै तैसे वह अमृतमई आहार लक्ष्मणके मृतक शरीरको न रुचा फिर रामचन्द्र कहै हैं—हे लक्ष्मीधर ! यह नाना प्रकारकी दुग्धादि पीने योग्य वस्तु सो पीवो ऐसा कहकर भाईको दुग्धादि प्याया चाहें सो कहा पीवे। यह कथा गौतमस्वामी श्रेणिकसे कहे हैं वह विवेकी राम स्नेहकर जैसी जीवतेकी सेवा करिये तैसे मृतक भाईकी करता भया अर नाना प्रकारके मनोहर गीत वीण वांसुरी आदि नाना प्रकारके नाद करता भया सो मृतकको कहा रुचै ? मानों मरा हुवा लक्ष्मण रामका सङ्ग न तजता भया। भाईको चन्दनसे चर्चा भुजावोंसे उठाय लेय उरसे लगाय सिर चूम्बे मुख चूम्बे हाथ चूम्बे अर कहे हैं—हे लक्ष्मण! यह क्या भया तू तो ऐसा कभी न सोवता अब तो विशेष सोवने लगा अब निद्रा तजो या भांति स्नेहरूप ग्रहका ग्रहा बलदेव नाना प्रकारकी चेष्टा करै। यह वृत्तांत सब पृथिवीमें प्र-कट भया कि लक्ष्मण मूवा लव अंकुश मुनि भये अर राम मोहका मारा मूढ़ होय रहा है तब वैरी क्षोभको प्राप्त भये जैसे वर्षा ऋतुका समय पाय मेघ गाजै शंबुकका भाई सुन्दर इसका नन्दन विरोधरूप है चित्त जिसका सो इन्द्रजीतके पुत्र वज्रमाली पै आया अर कही मेरा बाबा अर दादा दोनों लक्ष्मणने मारे सो मेरा रघुवंशिनिसे वैर है अर हमारा पाताललंकाका राज्य खोस लिया अर विराधितको दिया अर वानर-वंशियोका शिरोमणि सुग्रीव स्वामीद्रोही होय रामसे मिला सो राम समुद्र उलंघ लंका आये राक्षसद्वीप

उजाड़ा रामको सीताका अति दुःख सो लङ्का लेयवेका अभिलाषी भया अर सिंहवाहिनी अर गरुड़वाहिनी दोय महा विद्या राम लक्ष्मणको प्राप्त भईं तिनकर इन्द्रजीत कुम्भकर्ण वन्दीमें किये अर लक्ष्मणके चक्र हाथ आया उसकर रावणको हता अब कालचक्र कर लक्ष्मण मूवा सो वानरवंशियोंकी पक्ष टूटी वानरवंशी लक्ष्मणकी भुजावोंके आश्रयसे उन्मत्त होय रहे थे अब क्या करेंगे वे निरपक्ष भये अर रामको ग्यारह पक्ष होय चुके बारहमां पक्ष लगा है सो गहला होय रहा है भाईके मृतक शरीरको लिये फिरे है ऐसा मोह कौनको होय ? यद्यपि राम समान योधा पृथ्वीमें और नहीं वह हल मूशलका धरणहारा अद्वितीय मल्ल है तथापि भाईके शोकरूप कीचमें फंसा निकसवे समर्थ नहीं सो अब रामसे वैर भाव लेनेका दाव है जिसके भाईने हमारे वंशके वहुत मारे शंवूकके भाईके पुत्रने इन्द्रजीतके बेटेको यह कहा सो क्रोधकर प्रज्वलित भया मन्त्रियोंको आज्ञा देय रण भेरी दिवाय सेना भेजीकर शंवूकके भाईके पुत्र सहित अयोध्याकी ओर चला सेनारूप समुद्रको लिए प्रथम तो सुग्रीव पर कोप किया कि सुग्रीवको मार अथवा पकड़ उसका देश खोसलें वहुरि रामसे लड़ें यह विचार इन्द्रजीतके पुत्र वज्रमालीने किया सुन्दरके पुत्र सहित चढ़ा तब ये समाचार सुनकर सवे विद्याधर जे रामके सेवक थे वे रामचन्द्रके निकट अयोध्यामें आय भेले भए जैसी भीड़ अयोध्यामें लव अंकुशके आयवेके दिन भई थी तैसी भई। वैरियोंकी सेना अयोध्याके समीप आई सुनकर रामचन्द्र लक्ष्मणको कांधे लिए ही धनुष वाण हाथविषै समारे विद्याधरनकी सङ्ग लेय आप वाहिर निकसे उस समय कृतांतवक्रका जीव अर जटायु पक्षीका जीव चौथे स्वर्गदेव भए थे तिनके आसन कम्पायमान भए, कृतांतवक्रका जीव स्वामी अर जटायु पक्षीका जीव सेवक सो कृतांतवक्रका जीव जटायुके जीवसे कहता भया हे मित्र ! आज तुम क्रोधरूप क्यों भए हो तब वह कहता भया जब मैं गृहपक्षी था तो रामने मुझे प्यारे पुत्रकी न्याईं पाला अर जिनधर्मका उपदेश दिया मरण समय नमोकार मंत्र दिया उसकर मैं देव भया अब वह तो भाईके शोककर तप्तायमान है अर शत्रुकी सेना उसपर आई है तब कृतांतवक्रका जीव जो देव था उसने अवधि जोड़कर कही—हे मित्र ! मेरा वह स्वामी था मैं उसका सेनापति

था मुझे वहुत लड़ाया भ्रात पुत्रोंसे भी अधिक गिना अर मेरे उनके वचन हैं जब तुमको खेद उपजेगा तब तिहारे पास मैं आऊंगा, सो ऐसा परस्पर कहकर वे दोनों देव चौथे स्वर्गके वासी सुन्दर आभूषण पहिरे मनोहर हैं केश जिनके सो अयोध्याकी ओर आए दोनों विचक्षण परस्पर दोनों वतलाए कृतांतवक्रके जीवने जटायुके जीवसे कहा तुम तो शत्रुओंकी सेनाकी ओर जावो उनकी वुद्धि हरो अर मैं रघुनाथके समीप जाऊं हूं तव जटायुका जीव शत्रुओंकी ओर गया कामदेवका रूपकर उनको मोहित किया अर उनके ऐसी माया दिखाई जो अयोध्याके आगे अर पाछे दुरगम पहाड़ पड़े हैं अर अयोध्या अपार है यह अयोध्या काहूसे जीती न जाय यह कौशलीपुरी सुभटोंकर भरी है कोट आकाश लग रहे हैं अर नगरके वाहिर भीतर देव विद्याधर भरे हैं हमने न जानी जो यह नगरी महाविषम है धरतीविषैं देखिये तो आकाशमें देखिये तो देव विद्याधर भर रहे हैं अब कौन प्रकार हमारे प्राण बचें कैसे जीवते घर जावें जहां श्रीराम देव विराजें सो नगरी हमसे कैसे लई जाय, ऐसी विक्रियाशक्ति विद्याधरनिविषैं कहां? हमने विना विचारे ये काम किया जो पटवीजना सूर्यसे वैर विचारै तो क्या कर सकै अब जो भागो तो कौन राह होयकर भागो मार्ग नाहीं या भांति परस्पर वार्ता कर कांपने लगे समस्त शत्रुओंको सेना विह्वल भई तव जटायुके जीवने देव विक्रियाकी क्रीड़ा कर उनको दक्षिणकी ओर भागनेका मार्ग दिया वे सव प्राणरहित होय कांपते भागे जैसे सिचान आगे परेवे भागें। आगे जायकर इन्द्रजीतके पुत्रने विचारी जो हम विभीषणको कहा उत्तर देंगे अर लोकोंको क्या मुख दिखावेंगे ऐसा विचार लज्जावान् होय सुन्दरके पुत्र चारों रत्न सहित अर विद्याधरनि सहित इन्द्रजीतके पुत्र वज्रमाली रतिवेग नामा मुनिके निकट मुनि भए, तव यह जटायुका जीव देव उन साधुओंका दर्शन कर अपना सकल वृत्तान्त कह क्षमा कराया अयोध्या आया जहां राम भाईके शोककर वालककीसी चेष्टा कर रहे हैं तिनके सम्बोधवेके अर्थ वे दोनों देव चेष्टा करते भए, कृतांतवक्रका जीव तो सूके वृक्षको सींचने लगा अर जटायुका जीव मृतक वैल युगल तिनकर हल वाहवेका उद्यमी भया अर शिला ऊपर वीज वोने लगा सो ये भो दृष्टान्त रामके मनमें न आया वहुरि

कृतान्तवक्रका जीव रामके आगे जलको घृतके अर्थ विलोवता भया अर जटायुका जीव वालू रेतको घानीमें तेलके निमित्त पेलता भया सो इन दृष्टान्तनिकर रामको प्रतिबोध न भया अर भी अनेक कार्य इसी भांति देवोंने किए तब रामने पूछी तुम बड़े मूढ़ हो, सूका वृक्ष सींचा सो कहा अर मूवे बैलोंसे हल वाहना करो सो कहा अर शिला ऊपर बीज बोवना सो कहा अर जलका विलोवना अर बालुका पेलना इत्यादि कार्य तुम किए सो कौन अर्थ ? तब वे दोनों कहते भए तुम भाईके मृतक शरीरको वृथा लिये फिरो हो उसविषैं क्या ? यह वचन सुनकर लक्ष्मणको गाढा उरसे लगाय पृथिवीका पति जो राम सो क्रोधकर उनसे कहता भया हे कुबुद्धि हो ! मेरा भाई पुरुषोत्तम उसे अमंगलके शब्द क्यों कहो हो ऐसे शब्द बोलते तुमको दोष उपजेगा या भांति कृतांतवक्रके जीवके और रामके विवाद होय है उसही समय जटायुका जीव मूवे मनुष्यका कलेवर लेय रामके आगे आया उसे देख राम बोले मरेका कलेवर काहेको कांधे लिये फिरो हो तब उसने कही तुम प्रवीण होय प्राणरहित लक्ष्मणके शरीरको क्यों लिये फिरो हो पराया अणुमात्र भी दोष देखो हो अर अपना मेरु प्रमाण दोष नहीं देखो हो, सारिखेकी सारिखेसे प्रीति होय है सो तुमको मूढ़ देख हमारे अधिक प्रीति उपजी है हम वृथा कार्यके करणहारे तिनविषैं तुम मुख्य हो हम उन्मत्तताकी ध्वजा लिए फिरे हैं, सो तुमको अति उन्मत्त देख तुम्हारे निकट आए हैं ॥

या भांति उन दोनों मित्रोंके वचन सुन राम मोहित भया शास्त्रनिके वचन चितार सचेत भए जैसे सूर्य मेघ पटलसे निकस अपनी किरण कर देदीप्यमान भासै तैसे भरतक्षेत्रका पति राम सोई भया भानु सो मोहरूप मेघपटलसे निकस ज्ञानरूप किरणनिकर भासता भया, जैसे शरदऋतुमें कारी घटासे रहित आकाश निर्मल सोहै तैसे रामका मन शोकरूप कर्दमसे रहित निर्मल भासता भया, राम समस्त शास्त्रनिमें प्रवीण अमृत समान जिनवचन चितार खेदरहित भए, धीरताके अवलंबनकर ऐसे सोहैं जैसा भगवान्‌का जन्माभिषेकविषैं सुमेरु सोहै जैसे महा दाहकी शीतल पवनके स्पर्शसे रहित कमलोंका वन सोहै अर फूले तैसे शोकरूप कलुपतारहित रामका चित्त विकसता भया जैसे कोई रात्रिके अन्धकारमें मार्ग भूल गया था

अर सूर्यके उदय भए मार्ग पाय प्रसन्न होय अर महाक्षुधाकर पीड़ित मन वांछित भोजन खाय अत्यन्त आनन्दको प्राप्त होय अर जैसे कोई समुद्रके तिरिवेका अभिलाषी जहाजको पाय हर्षरूप होय अर वनमें मार्ग भूला नगरका मार्ग पाय खुशी होय अर तृषाकर पीड़ित महा सरोवरको पाय सुखी होय, रोग कर पीड़ित रोग हरण औषधको पाय अत्यंत आनन्दको पावै, अर अपने देश गया चाहे अर साथी देख प्रसन्न होय अर वंदीगृहसे छूटा चाहै अर बेड़ी कटै जैसे हर्षित होय तैसे रामचन्द्र प्रतिबोधको पाय प्रसन्न भए। प्रफुल्लित भया है हृदय कमल जिनका परम कांतिको धारते आपको संसार अंधकूपसे निकसा मानते भए, मनमें जानी मैं नवा जन्म पाया श्रीराम विचारै हैं अहो डाभकी अणीपर पड़ी ओसकी बून्द ता समान चंचल मनुष्यका जीतव्य एक एक क्षणमात्रमें नाशको प्राप्त होय है चतुर्गति संसारमें भ्रमण करते मैंने अत्यंत कष्टसे मनुष्य शरीरको पाया सो वृथा खोया कौनके भाई कौनके पुत्र कौनका परिवार कौनका धन कौनकी स्त्री ? या संसारमें या जीवने अनंत संबंधी पाये एक ज्ञान दुर्लभ है या भांति श्रीराम प्रतिबुद्ध भए तब वे दोनों देव अपनी माया दूरकर लोकोंको आश्चर्यकी करणहारी स्वर्गकी विभूति प्रकट दिखावते भए शीतल मंद सुगन्ध पवन वाजी अर आकाशमें देवोंके विमान ही विमान होय गए अर देवांगना गावती भईं वीण वांसुरी मृदंगादि बाजते भए वे दोनों देव रामसे पूछते भए आपने इतने दिवस राज्य किया सो सुख पाया ? तब राम कहते भए, राज्यविषैं काहेका सुख ? जहां अनेक व्याधि हैं जो याहि तज मुनि भये वे सुखी अर मैं तुमको पूछूं हूं तुम महा सौम्यवदन कौन हो अर कौन कारण कर मोसूं इतना हित जनाया तब जटायुका जीव कहता भया—हे प्रभो ! मैं वह गृध्र पक्षी हूं आप मुनिनिकूं आहार दिया वहां मैं प्रतिबुद्ध भया अर आप मोहि निकट राखा, पुत्रकी न्याईं पाला अर लक्ष्मण सीता मोसूं अधिक कृपा करते सीता हरी गई ता दिन मैं रावणसे युद्धकर कंठगत प्राण भया, आपने आय मोहि पंचनमोकार मंत्र दिया सो मैं तुम्हारे प्रसाद कर चौथे स्वर्ग देव भया स्वर्गके सुखकर मोहित भया अबतक आपके निकट न आया अब अवधिज्ञान कर तुमको लक्ष्मणके शोक कर व्याकुल जान तुम्हारे निकट आया हूं अर कृतांतवक्रके

जीवने कही—हे नाथ ! मैं कृतांतवक्र आपका सेनापति हुता आपै मोहि भ्रात पुत्रनितैं हू अधिक जाना अर वैराग्य होते मोहि आप आज्ञा करी हुती जो देव होवो तो हमको कबहू चिंता उपजै तब चितारियो सो आपके लक्ष्मणके मरणकी चिंता जान हम तुमपै आये तब राम दोनों देवनिसूं कहते भये तुम मेरे परम मित्र हो महा प्रभावके धारक चौथे स्वर्गके महाऋद्धि धारी देव मेरे संबोधिवेको आये तुमको यही योग्य ऐसा कहकर रामने लक्ष्मणके शोकसे रहित होय लक्ष्मणके शरीरको सरयू नदीके डाहे दग्ध किया श्रीराम आत्मभावके ज्ञाता धर्मकी मर्यादा पालनेके अर्थ शत्रुघ्न भाईको कहते भए हे शत्रुघ्न ! मैं मुनिके व्रत धार सिद्ध पदको प्राप्त हुआ चाहूं हूं तू पृथिवीका राज्य कर तब शत्रुघ्न कहते भये हे देव ! मैं भोगनिका लोभी नहीं जाके राग होय सो राज्य करे मैं तिहारे संग जिनराजके व्रत धरूंगा अन्य अभिलाषा नहीं है मनुष्यनिके शत्रु ये काम भोग मित्र बांधव जीतव्य इनसे कौन तृप्त भया कोई ही तृप्त न भया तातैं इन सबनिका त्याग ही जीवको कल्याणकारी है ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषावचनिकाविषै लक्ष्मणकी दग्धक्रिया अर मित्रदेवनिका आगमन वर्णन करनेवाला एकसौ अठारहवां पर्व पूर्ण भया ॥११८॥

अथानन्तर—श्रीरामचन्द्रने शत्रुघ्नके वैराग्यरूप वचन सुन ताहि निश्चयसे राज्यसे पराङ्मुख जान क्षणएक विचार अनंग लवणके पुत्रको राज्य दिया सो पिता तुल्य गुणनिकी खान कुलकी धुराका धरणहारा नमस्कार करे हैं समस्त सामंत जाको, सो राज्यविषै तिष्ठा प्रजाका अति अनुराग है जासे महा प्रतापी पृथिवीविषै आज्ञा प्रवर्तावता भया अर विभीषण लंकाका राज्य अपने पुत्र सुभूषणको देय वैराग्यको उद्यमी भया अर सुग्रीव हू अपना राज्य अंगदको देयकर संसार शरीर भोगसे उदास भया ये सब रामके मित्र रामको लार भवसागर तरवेको उद्यमी भए राजा दशरथका पुत्र राम भरतचक्रवर्तीकी न्याई राज्यका भार तजता भया। कैसा है राम ? विषसहित अन्नसमान जाने हैं विषय सुख जाने अर कुलटा स्त्रीसमान जानी है समस्त विभूति जाने एक कल्याणका कारण मुनिनिके सेयवे योग्य सुर असु-

रोंकर पूज्य श्री मुनिसुव्रतनाथका भाषा मार्ग ताहि उरविषै धारता भया जन्ममरणके भयसे कम्पायमान
भया है हृदय जाका ढीले किये हैं कर्मबंध जाने धोय डाले हैं रागादिक कलंक जाने महावैराग्यरूप है
चित्त जाका क्लेशभावसे निवृत्त जैसा मेघपटलसे रहित भानु भासै तैसा भासता भया मुनिव्रत धारि-
वेका है अभिप्राय जाके ता समय अरहदास सेठ आया तब ताहि श्रीराम चतुर्विध संघकी कुशल
पूछते भए। तब वह कहता भया हे देव! तिहारे कष्टकर मुनिनिका हू मन अनिष्ट संयोगको प्राप्त भया ये
बात करे है अर खबर आई है कि मुनिसुव्रतनाथके वंशमें उपजे चार ऋद्धिके धारक स्वामी सुव्रत महा
व्रतके धारक कामक्रोधके नाशक आए हैं। यह वार्ता सुनकर महाआनन्दके भरे राम रोमांच होय गया है
शरीर जिनका फूल गए हैं नेत्र कमल जिनके अनेक भूचर खेचर नृपनिसहित जैसे प्रथम बलभद्र विजय
स्वर्णकुम्भ स्वामीके समीप जाय मुनि भये हुते तैसे मुनि होनेको सुव्रतमुनिके नकट गये ते महा श्रेष्ठ गु-
णोंके धारक हजारां मुनि माने हैं आज्ञा जिनकी तिनपै जाय प्रदक्षिणा देय हाथ जोड़ सिर निवाय नम-
स्कार किया साक्षात् मुक्तिके कारण महा मुनि तिनका दर्शनकर अमृतके सागरविषै मग्न भए परम श्रद्धा-
कर मुनिराजतैं रामचन्द्रने जिनचन्द्रकी दीक्षा धारवेकी विनती करी—हे योगीश्वरनिके इन्द्र! मैं भव प्रपं-
चसे विरक्त भया तिहारा शरण ग्रहा चाहूं हूं तिहारे प्रसादसे योगीश्वरनिके मार्गविषै विहार करूं या भांति
रामने प्रार्थना करी। कैसे हैं राम? धोये हैं समस्त रागद्वेषादिक कलंक जिन्होंने तब मुनींद्र कहते भये—
हे नरेन्द्र! तुम या बातके योग्य ही हो, यह संसार कहा पदार्थ है यह तज कर तुम जिनधर्मरूप समुद्रका
अवगाह करो, यह मार्ग अनादि सिद्ध बाधारहित अविनाशी सुखका देनहारा तुमसे बुद्धिमान हो आदरें।
ऐसा मुनिने कहा तब राम संसारसे विरक्त महा प्रवीण जैसे सूर्य सुमेरुकी प्रदक्षिणा करे तैसे मुनींद्रकी
प्रदक्षिणा करते भए। उपजा है महाज्ञान जिनको वैराग्यरूप वस्त्र पहिरे बांधी है कर्मोंके नाशको कमर
जिन्होंने आशारूप पाश तोड़ स्नेहका पींजरा दग्धकर स्त्रीरूप बंधनसे छूट मोहका मान मार हार कुण्डल
मुकट केयूर कटिमेखलादि सर्व आभूषण डार तत्काल वस्त्र तजे, परम तत्त्वविषै लगा है मन जिनका वस्त्रा-

भरण यूं तजे ज्यों शरीर ताजये महासुकुमार अपने कर तिनकर केश लोंच किए पद्मासन धर विराजे शीलके मन्दिर अष्टम वलभद्र समस्त परिग्रहको तजकर ऐसे सोहते भए जैसा राहुसे रहित सूर्य सोहै पंच महाव्रत आदरे पंच समिति अङ्गीकारकर तीन गुप्तिरूप गढ़विषैं विराजे मनोदण्ड वचनदण्ड कायदण्डके दूर करणहारे षट कायके मित्र, सप्त भयरहित आठ कर्मोंके रिपु नवधा ब्रह्मचर्यके धारक, दश लक्षण धर्म धारक श्रीवत्स लक्षणकर शोभित है उरस्थल जिनका गुणभूषण सकलदूषणरहित तत्वज्ञानविषैं दृढ़ रामचन्द्र महामुनि भए देवनिने पंचाश्चर्य किए सुन्दर दुन्दुभी वाजे अर दोनों देव कृतांतवक्रका जीव एक जटायुका जीव तिन्होंने परम उत्साह किए जव जीव पृथिवीका पति राम पृथिवीको तज निकसा तव भूमिगोचरी विद्याधर सव ही राजा आश्चर्यको प्राप्त भये अर विचारते भए जो ऐसी विभूति ऐसे रत्न यह प्रताप तजकर रामदेव मुनि भये तो और हमारे कहा परिग्रह ? जाके लोभतैं घरमें तिष्ठें व्रत विना हम एते दिन योंही खोये ऐसा विचारकर अनेक राजा गृह वन्धनसे निकसे अर रागमई पाशी काट द्वेषरूप वैरीको विनास सर्व परिग्रहका त्यागकर भाई शत्रुघ्न मुनि भये अर विभीषण सुग्रीव नील नल चन्द्रनख विराधित इत्यादि अनेक राजा मुनि भये विद्याधर सर्व विद्याका त्यागकर ब्रह्मविद्याको प्राप्त भये कैयकोंको चारणऋद्धि उपजी या भांति रामके वैराग्य भये सोलह हजार कछु अधिक महीपति मुनि भये। अर सत्ताईस हजार राणी श्रीमती आर्यिकाके समीप आर्यिका भईं ॥

अथानन्तर—श्रीराम गुरुकी आज्ञा लेय एकविहारी भये तजे हैं समस्त विकल्प जिन्होंने गिरिनिकी गुफा अर गिरिनिके शिखर अर विषम वन जिनविषैं दुष्ट जीव विचरें वहां श्रीराम जिनकल्पी होय ध्यान धरते भये अवधिज्ञान उपजा जाकर परमाणु पर्यन्त देखते भये अर जगतके मूर्तिक पदार्थ सकल भासे लक्ष्मणके अनेक भव जाने, मोहका सम्वन्ध नाहीं, तातैं मन ममत्वको न प्राप्त होता भया। अव रामकी आयुका व्याख्यान सुनो कौमार काल वर्ष सौ १०० मण्डलीक पद वर्ष तीन सौ ३०० दिग्विजय वर्ष चालीस ४० अर ग्यारह हजार पांचसै साठ वर्ष ११५६० तीन खण्डका राज्य वहुरि मुनि भये। लक्ष्मणका

मरण याही भांति था देवनिका दोष नाहीं अर भाईके मरणके निमित्ततैं रामके वैराग्यका उदय था अवधिज्ञानके प्रतापकर रामने अपने अनेक भव जाने, महा धीर्यको धरैं व्रत शीलके पहाड़, शुक्ल लेश्या कर युक्त महा गंभीर गुणनिके सागर समाधान चित्त मोक्ष लक्ष्मीविषैं तत्पर शुद्धोपयोगके मार्गविषैं प्रवरते। सो गौतम स्वामी राजा श्रेणिक आदि सकल श्रोताओंसे कहे हैं जैसे रामचन्द्र जिनेन्द्रके मार्गविषैं प्रवर्त्ते तैसे तुमहू प्रवरतो, अपनी शक्ति प्रमाण महा भक्ति कर जिनशासनविषैं तत्पर होवो जिन नामके अक्षर महारत्नोंको पाय कर हो प्राणी हो खोटा आचरण तजो, दुराचार महा दुःखका दाता है खोटे ग्रन्थनिकर मोहित है आत्मा जिनका अर पाखण्ड क्रियाकर मलिन है चित्त जिनका वे कल्याणके मार्गको तज जन्मके आंधेकी न्याईं खोटे पंथमें प्रवरते हैं, कैयक मूर्ख साधुका धर्म नाहीं जाने हैं, अर नानाप्रकारके उपकरण साधुके बतावे हैं अर निर्दोष जान ग्रहे हैं वे वाचाल हैं जे कुलिंग कहिये खोटे भेष मूढ़निने आचरें हैं वे वृथा हैं तिनसे मोक्ष नाहीं जैसे कोई मूर्ख मृतकके भारको वहे है सो वृथा खेद करै हैं, जिनके परिग्रह नहीं अर काहूसे याचना नहीं, वे ऋषि हैं वेई निर्ग्रन्थ उत्तम गुणनिकर मंडित पंडितों कर सेयवे योग्य हैं यह महाबली बलदेवके वैराग्यका वर्णन सुन संसारसे विरक्त होवो जाकर भवतापरूप सूर्यका आताप न पावो॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषावचनिकाविषैं श्रीरामका वैराग्य वर्णन करनेवाला एकसौ उन्नीसवां पर्व पूर्ण भया ॥११६॥

अथानन्तर—गौतम स्वामी राजा श्रेणिकसे कहे हैं—हे भव्योत्तम! श्रीरामचन्द्रके अनेक गुण धरणीन्द्र हू अनेक जीभ कर गायवे समर्थ नाही,वे महामुनीश्वर जगतके त्यागी महाधीर पचोपवासकी है प्रतिज्ञा जिनके सो ईर्यासमिति पालते नन्दस्थली नामा नगरी तहां पारणाके अर्थ गए उगते सूर्य समान है दीप्ति जिनकी मानों चालते पहाड़ ही हैं महा स्फटिकमणि समान शुद्ध हृदय जिनका वे पुरुषोत्तम मानों मूर्तिवन्त धर्मही, मानों तीन लोकका आनन्द एकत्र होय रामकी मूर्ति निपजी है महा कांतिके प्रवाहकर पृथ्वी को पवित्र करते मानों आकाशविषैं अनेक रंगकर कमलोंका वन लगावते नगरविषैं प्रवेश करते भए तिनके रूपको देख नगरके सव लोक क्षोभको प्राप्त भए लोक परस्पर बतलावे हैं—अहो देखो! यह अद्भुत रूप

ऐसा आकार जगतविषैं दुर्लभ कबहूं देखिवेविषैं न आवे यह कोई महापुरुष महासुन्दर शोभायमान अपूर्व नर दोनों बाहु लम्बाये आवै है। धन्य यह धीर्य धन्य यह पराक्रम धन्य यह रूप धन्य यह कांति धन्य यह दीप्ति धन्य यह शांति धन्य यह निर्ममत्वता यह कोई मनोहर पुराण पुरुष है ऐसा और नाहीं जूड़े प्रमाण धरती देखता जीव दया पालता शांतदृष्टि समाधानचित्त जैनका यति चला आवे है ऐसा कौनका भाग्य जाके घर यह पुण्याधिकारी आहार कर कौनको पवित्र करै? ताके बड़े भाग्य जाके घर यह आहार लेय, यह इन्द्रसमान रघुकुलका तिलक अक्षोभ पराक्रमी शीलका पहाड़ रामचन्द्र पुरुषोत्तम है, याके दर्शनकर नेत्र सफल होंय मन निर्मल होय जन्म सफल होय, देही पायेका यह फल जो चारित्र पालिए। या भांति नगरके लोक रामके दर्शन कर आश्चर्यको प्राप्त भए, नगरमें रमणीक ध्वनि भई श्रीराम नगरविषैं पैठे अर समस्त गली अर मार्ग स्त्री पुरुषनिके समूह कर भर गया, नर नारी नाना प्रकारके भोजन हैं घरविषै जिनके प्रासुक जलकी झारी भरे द्वारे पेखन करे हैं निर्मल जल दिखावते पवित्र धोवती पहिरें नमस्कार करे हैं। हे स्वामी! अत्र तिष्ठैं अन्न जल शुद्ध है या भांतिके शब्द करे हैं नाहीं समावे है हृदयविषैं हर्ष जिनके हे मुनींद्र! जयवन्त होवो, हे पुण्यके पहाड़! नादो विरदो इन वचनोंकर दशों दिशा पूरित भई, घर घरविषैं लोग परस्पर बात करे हैं स्वर्णके भोजनमें दुग्ध दधि घृत ईखरस दाल भात क्षीर शीघ्र ही तैयार कर राखो, मिश्री मोदक कपूरकर युक्त शीतल जल सुन्दर पूरी शिखिरणी भलीभांति विधिसे राखो। या भांति नर नारिनिके वचनालाप तिनकर समस्त नगर शब्दरूप होय गया महासंभ्रमके भरे जन अपने बालकोंको न विलोकते भए मार्गमें लोक दौड़ें सो काहूके धकेसे कोई गिर पड़ें या भांति लोकनके कोलाहल कर हाथी खूंटा उपाड़ते भए अर ग्रामविषैं दौड़ते भए तिनके कपोलोंसे मद झरिवे कर मार्गविषैं जलका प्रवाह होय गया, हाथिनिके भयसे घोड़े घास तज तज वन्धन तुड़ाय तुड़ाय भाजे अर हींसते भए सो हाथी घोड़निकी घमसाणकर लोक व्याकुल भए, तब दानविषैं तत्पर राजा कोलाहल शब्द सुन मंदिरके ऊपर आय खड़ा रहा दूरसे मुनिका रूप देख मोहित भया राजाके मुनिसे राग विशेष परन्तु विवेक नहीं

सो अनेक सामन्त दौड़ाए अर आज्ञाकारी स्वामी पधारे हैं सो तुम जाय प्रणामकर बहुत भक्ति विनती कर यहां आहारको ल्यावो सो सामन्त भी मूर्ख जाय पांयन पर पड़ कहते भए हे प्रभो ! राजाके घर भोजन करहु वहां महा पवित्र सुन्दर भोजन हैं अर सामान्य लोकनिके घर आहार विरस आपके लेयवे योग्य नाहीं अर लोकोंको मने किए कि तुम कहा दे जानों हो ? यह वचन सुनकर महा मुनि आपको अन्तराय जान नगरसे पीछे चले तब सब लोग अति व्याकुल भए। वे महापुरुष जिन आज्ञाके प्रतिपालक आचारांग सूत्र प्रमाण है आचरण जिनका आहारके निमित्त नगरविषैं विहार कर अन्तराय जान नगरसे पीछे वनविषैं गए। चिद्रूपध्यानविषैं मग्न कायोत्सर्ग धर तिष्ठे वे अद्भुत अद्वितीय सूर्य मन अर नेत्रको प्यारा लागे रूप जिनका नगरसे बिना आहार गए तब सबही खेदखिन्न भये ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषा वचनिकाविषै राममुनिका आहारके अर्थि नगरमें आगमन बहुरि लोकनिके कोलाहलतें अंतराय पाछा वनमें आना वर्णन करनेवाला एकसौ बीसवां पर्व पूर्ण भया ॥१२०॥

अथानन्तर—राम मुनियोंमें श्रेष्ठ बहुरि पंचोपवासका प्रत्याख्यान कर यह अवग्रह धारते भये कि वनविषैं कोई श्रावक शुद्ध आहार देय तो लेना नगरमें न जाना या भांति कांतारचर्याकी प्रतिज्ञा करी सो एक राजा प्रतिनन्द वाको दुष्ट तुरंग लेय भागा सो लोकनिकी दृष्टिसे दूर गया तब राजाकी पटरानी प्रभवा अतिचिन्तातुर शीघ्रगामी तुरंग पर आरूढ़ राजाके पीछे ही सुभटनिके समूह कर चली अर राजाको तुरंग हर ले गया था सो वनके सरोवरनिविषैं कींचमें फंस गया उतनेहीमें पटराणी जाय पहुंचो राजा राणी पै आया तब राणी राजासे हास्यके वचन कहती भई—हे महाराज। जो यह अश्व आपको न हरता तो यह नन्दन वनसा वन अर मानसरोवरसा सर कैसे देखते ! तब राजाने कही हे राणी ! वनयात्रा अब सुफल भई जो तिहारा दर्शन भया, या भांति दम्पती परस्पर प्रीतिकी वात कर सखीजन सहित सरोवरके तीर बैठे नाना प्रकार जलक्रीड़ा कर दोनों भोजनके अर्थ उद्यमी भए ता समय श्रीराम मुनि कांतारचर्याके करणहारे या तरफ आहारको आए यह साधुकी क्रियामें प्रवीण तिनको देख राजा हर्ष कर रोमांच भया,

राणीसहित सन्मुख जाय नमस्कार कर ऐसे शब्द कहता भया हे भगवन्! यहां तिष्ठो अन्न जल पवित्र है, प्रासुक जलकर राजाने मुनिके पग धोए, नवधा भक्ति कर सप्तगुण सहित मुनिको महापवित्र क्षीर आहार दिया, स्वर्णके पात्रमें लेय कर महा पात्र जे मुनि तिनके करपात्रमें पवित्र अन्न देता भया निरंतराय आहार भया तव देव हर्षित होय पंचाश्चर्य करते भए अर आप अक्षीण महा ऋद्धिके धारक सो वा दिन रसोईका अन्न अटूट होय गया, पंचाश्चर्यके नाम, पंच वर्ण रत्नोंकी वर्षा अर महा सुगंध कल्पवृक्षोंके पुष्पकी वर्षा शीतल मंद सुगंध पवन दुन्दुभी नाद, जय जय शब्द धन्य यह दान धन्य यह पात्र धन्य यह विधि धन्य यह दाता नीके करी नीके करी नादो विरधो फूलो फलो या भांतिके शब्द आकाशमें देव करते भए अथवा नवधा भक्तिके नाम, मुनिको पड़गाहनो ऊंचे स्थानक राखना चरणारविन्द धोवने चरणोदक माथे चढ़ावना पूजा करनी मन शुद्ध वचन शुद्ध काय शुद्ध आहार शुद्ध यह नवधा भक्ति अर श्रद्धा भक्ति निर्लोभता दया क्षमा अदेय सापणो नहीं हर्षसंयुक्त यह दाताके सात गुण वह राजा प्रतिनन्दी मुनिदानसे देवों कर पूज्य भया अर श्रावकके व्रत धारे निर्मल है सम्यक्त जाके पृथिवीमें प्रसिद्ध होता भया वहुत महिमा पाई अर पञ्चाश्चर्यमें नाना प्रकारके रत्न स्वर्णकी वर्षा भई सो दशों दिशामें उद्योत भया अर पृथिवीका दरिद्र गया, राजा राणी सहित महाविनयवान् भक्ति कर नम्रीभूत महा मुनिको विधिपूर्वक निरंतराय आहार देय परम प्रवोधको प्राप्त भया, अपना मनुष्य जंन्म सफल जानता भया अर राम महामुनि तपके अर्थ एकांत रहैं वारह प्रकार तपके करणहारे तप ऋद्धि कर अद्वितीय पृथिवीमें अद्वितीय सूर्य विहार करते भए॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषावचनिकाविषैं राम मुनिका निरंतराय आहार वर्णन करनेवाला एकसौ इक्कीसवां पर्व पूर्ण भया ॥१२१॥

अथानन्तर—गौतमस्वामी राजा श्रेणिकसे कहे हैं—हे श्रेणिक! वह आत्माराम मुनि वलदेव स्वामी शांत किए हैं रागद्वेष जाने जो और मनुष्योंसे न वन आवे ऐसा तप करते भए, महा वन विषैं विहार करते पंचमहाव्रत पंच समिति तीन गुप्ति पालते, शास्त्रके वेत्ता जितेंद्री जिनधर्ममें है अनुराग

जिनका स्वाध्यायाध्ययनमें सावधान अनेक ऋद्धि उपजो परंतु ऋद्धिनिकी खबर नहीं महा विरक्त निर्विकार वाईस परीषहके जीतनहारे तिनके तपके प्रभावतैं वनके सिंह व्याघ्र मृगादिकके समूह निकट आय बेठे, जीवोंका जाति विरोध मिट गया, रामका शांतरूप निरख शांतरूप भए श्रीराम महाव्रती चिदानन्दनविषैं है चित्त जिनका, परवस्तुकी वांछारहित, विरक्त कर्मकलंक हरिवेको है यत्न जिनके, निर्मल शिला पर तिष्ठते, पद्मासन धरे आत्मध्यानविषैं प्रवेश करते भए, जेसे रवि मेघमालाविषैं प्रवेश करै वे प्रभु सुमेरु सारिखे अचल है चित्त जिनका पवित्र स्थानविषैं कायोत्सर्ग धरे निज स्वरूपका ध्यान करते भये, कवहुंक विहार करैं सो ईर्या समिति पालते जूड़ा प्रमाण पृथिवी निरखते महा शांत जीव दया प्रतिपाल देव देवांगनादिक कर पूजित भए। वे आत्मज्ञानी जिन आज्ञाके पालक जैनके योगी ऐसा तप करते भए जो पंचम कालविषैं काहूके चितवनविषें न आवे एक दिन विहार करते कोटिशिला आए जो लक्ष्मणने नमोकार मंत्र जप कर उठाई हुती सो आप कोटि शिला पर ध्यान धर तिष्ठे कर्मोंके खिपायवे विषैं उद्यमी क्षपकश्रेणि चढ़वेका है मन जिनका ॥

अथानन्तर—अच्युतस्वर्गका प्रतीन्द्र सीताका जीव स्वयंप्रभ नामा अवधिकर विचारता भया, रामका अर आपका परम स्नेह अपने अनेक भव अर जिनशासनका माहात्म्य अर रामका मुनि होना अर कोटिशिलापर ध्यान धर तिष्ठना वहुरि मनविषैं विचारी वे मनुष्यनिके इन्द्र पृथिवीके आभूषण मनुष्यलोकविषैं मेरे पति हुते मैं उनकी स्त्री सीता हुती देखो कर्मकी विचित्रता, मैं तो व्रतके प्रभावतैं स्वर्गलोक पाया अर लक्ष्मण रामका भाई प्राणहूतैं प्रिय सो परलोक गया, राम अकेले रह गये, जगत्के आश्चर्यके करणहारे दोनों भाई वलभद्र नारायण कर्मके उदयतैं विछुरे श्रीराम कमल सारिखे नेत्र जिनके शोभायमान हल मूसलके धारक वलदेव महावली सो वासुदेवके वियोगकर जिनदेवकी दीक्षा अंगीकार करते भये राज अवस्थाविषैं तो शस्त्रोंकर सर्व शत्रु जीते वहुरि मुनि होय मन इन्द्रिय जीते अब शुक्लध्यान धार कर कर्म शत्रुको जीता चाहै हैं ऐसा होय जो मेरी देव मायाकर कछुइक इनका मन मोहमें आवै वह शुद्धोपयोगसे

च्युत होय शुभोपयोगविषैं आय यहां अच्युतस्वर्गविषैं आवें, मेरे इनके महाप्रीति है, मैं अर वे मेरु नन्दीश्वरादिककी यात्रा करें अर वाईस सागरपर्यंत भेले रहें। मित्रता बढावें अर दोनों मिल लक्ष्मणको देखें यह विचारकर सीताका जीव प्रतीन्द्र जहां राम ध्यानारूढ़ थे तहां आया इनको ध्यानसे च्युत करवे अर्थ देवमाया रची, वसन्त ऋतु वनविषैं प्रकट करी, नाना प्रकारके फूल फूले अर सुगन्ध वायु वाजने लगी, पक्षी मनोहर शब्द करने लगे अर भ्रमर गुञ्जार करे हैं कोयल वोले हैं, मैना, सूवा, नाना प्रकारकी ध्वनि कर रहे हैं आंव मौर आये भ्रमरोंकर मण्डित सोहे हैं कामके वाण जे पुष्प तिनकी सुगन्धता फैल रही है अर कर्णिकार जातिके वृक्ष फूले हैं तिनकर वह पीत हो रहा है सो मानों वसन्तरूप राजा पीताम्बर कर क्रीड़ा कर रहा है अर मौलश्रीकी वर्षा होय रही है ऐसी वसन्तकी लीलाकर आप वह प्रतीन्द्र जानकीका रूप धर रामके समीप आया, वह मनोहर वन जहां अर कोई जन नहीं अर नाना प्रकारके वृक्ष सवऋतुके फूल रहे हैं, ता समय रामके समीप सीता सुन्दरी कहती भई—हे नाथ! पृथिवीविषैं भ्रमण करते कोई पुण्यके योगतैं तुमको देखे वियोगरूप लहरका भरा जो स्नेहरूप समुद्र ताविषै मैं डूबू हूं सो मोहि थांभो अनेक प्रकार रागके वचन कहे परन्तु मुनि अकम्प सो वह सीताका जीव मोहके उदयकर कभी दाहिने कभी वांये भ्रमै कामरूप ज्वरके योगकर कम्पित है शरीर अर महा सुन्दर अरुण हैं अधर जाके या भांति कहती भई हे देव। मैं विना विचारे तिहारी आज्ञा विना दीक्षा लीनी मोहि विद्याधरिनिने वहकाया अब मेरा मन तुमविषैं है, या दीक्षा कर पूर्णता होवै। यह दीक्षा अत्यन्त वृद्धनिको योग्य है कहां यह यौवन अवस्था अर कहां यह दुर्द्धर व्रत? महाकोमल फूल दावानलकी ज्वाला कैसे सहार सके? अर हजारां विद्याधरनिकी कन्या और हू तुमको वरा चाहे हैं मोहि आगे धार ल्याई हैं कहे हैं तिहारे आश्रय हम वलदेवको वरें, यह कहे हैं अर हजारां दिव्य कन्या नाना प्रकारके आभूषण पहरे राजहंसिनी समान है चाल जिनकी सो प्रतीन्द्रकी विक्रिया कर मुनीन्द्रके समीप आईं कोयलतैं हू अधिक मधुर वोलें ऐसी सोहैं मानों साक्षात् लक्ष्मी ही हैं मनको आल्हाद उपजावें कानोंको अमृत समान ऐसे दिव्य गीत गावती भईं अर वीण वां-

सुरी मृदंग बजावती भई भ्रमर सारिखे श्याम केश विजुरी समान चमत्कार महासुकुमार पातरी कटि क-
ठोर अति उन्नत हैं कुच जिनके सुन्दर शृंगार करे नाना वर्णके वस्त्र पहिरे, हाव भाव विलास विभ्रमको
रती मुलकती अपनी कांतिकर व्याप्त किया है आकाश जिन्होंने मुनिके चौगिर्द बेठी प्रार्थना करती भई
हे देव ! हमारी रक्षा करो अर कोई एक पूछती भई हे देव । यह कौन वनस्पति है अर कोई एक माधवी
लताके पुष्पके ग्रहणके मिस बाहू ऊंची करती अपना अङ्ग दिखावती भई, अर कोई एक भेली होयकर
ताली देती रासमण्डल रचती भई, पल्लवसमान हैं कर जिनके अर कोई परस्पर जलकेलि करती भई या
प्रकार नाना भांतिकी क्रीड़ाकर मुनिके मन डिगायवेका उद्यम करती भई, सो हे श्रेणिक ! जैसे पवनकर
सुमेरु न डिगै तैसे श्रीरामचन्द्र मुनिका मन न डिगा आत्मस्वरूपके अनुभवी रामदेव सरल हैं दृष्टि जि-
नकी, विशुद्ध है आत्मा जिनका, परीषहरूप वज्रपातसे न डिगे, क्षपकश्रेणी चढ़े, शुक्लध्यानके प्रथम
पाएविषै प्रवेश किया, रामचन्द्रका भाव आत्माविषैं लग अत्यन्त निर्मल भया सो उनका जोर न पहुंचा
मूढ़जन अनेक उपाय करैं परन्तु ज्ञानी पुरुषनिका चित्त न चलै, वे आत्मस्वरूपविषैं ऐसे दृढ़ भए जो
काहू प्रकार न चिगे, प्रतीन्द्रदेवने मायाकर रामका ध्यान डिगायवेको अनेक यत्न किए परन्तु कछूही
उपाय न चला, वे भगवान् पुरुषोत्तम अनादि कालके कर्मोंकी वर्गणाके दग्ध करिवेको उद्यमी भये पहिले
पाएके प्रसादसे मोहका नाश कर बारहवें गुणस्थान चढ़े तहां शुक्लध्यानके दूजे पायेके प्रसादतैं ज्ञानावरण
अन्तरायका अन्त किया माघ शुक्ला द्वादशीकी पिछली रात्रि केवलज्ञानको प्राप्त भये केवलज्ञानविषैं सर्व
द्रव्य समस्त पर्याय प्रतिभासे ज्ञानरूप दर्पणमें लोकालोक सब भासे तब इन्द्रादिक देवनिके आसन क-
म्पायमान भये अवधिज्ञानकर भगवान् रामको केवल उपजा जानकर केवलकल्याणककी पूजाको आए,
महा विभूति संयुक्त देवनिके समूह सहित बड़े श्रद्धावान् सबही इन्द्र आये घातिया कर्मके नाशक अर्हन्त पर-
मेष्ठी तिनको चारणमुनि अर चतुरनिकायके देव सब ही प्रणाम करते भए । वे भगवान् छत्र चमर सिंहा-
सन आदिकर शोभित त्रैलोक्यकर वन्दिवे योग्य सयोगकेवली तिनकी गंधकुटी देव रचते भए दिव्यध्वनि

खिरता भई सब ही श्रवण करते भए अर बारम्बार स्तुति करते भये सीताका जीव स्वयंप्रभ नामा प्रतींद्र केवलीकी पूजाकर तीन प्रदक्षिणा देय बारम्बार क्षमा करावता भया, हेभगवन्! मैं दुर्बुद्धिने जो दोष किए सो क्षमा करो, गौतम स्वामी कहे हैं—हे श्रेणिक! वे भगवान् बलदेव अनंत लक्ष्मी कांतिकर संयुक्त आनंदमूर्त्ति केवली तिनकी इन्द्रादिक देव महाहर्षके भरे अनादि रीति प्रमाण पूजा स्तुतिकर विनती करते भए, केवली विहार किया, तब देवहु विहार करते भए।

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषा वचनिकाविषैं रामकू केवलज्ञानकी उत्पत्ति वर्णन करनेवाला एकसौ वाईसवा पर्व पूर्ण भया ॥१२२॥

अथानन्तर—सीताका जीव प्रतींद्र लक्ष्मणके गुण चितार लक्ष्मणका जीव जहां हुता अर खरदूषणका पुत्र शम्बूक असुरकुमार जातिका देव जहां था तहां जायकर ताकूं सम्यग्ज्ञानका ग्रहण कराया सो तीजे नरक नारकिनिकूं बाधा करावे हिंसानंद रौद्रध्यानविषैं तत्पर पापी नारकीको लड़ावै। पापके उदय कर जीव अधोगति जाय। सो तीजेतक तो असुरकुमारहू लड़ावैं आगे असुरकुमार न जायं, नारकी ही परस्पर लड़ै। जहां कैयकनिकूं अग्निकुण्डविषैं डारै हैं सो पुकारै हैं। कैयकनिकूं कांटेनिकर युक्त शाल्मली वृक्ष, तिनपर चढ़ाय घसीटै हैं। कैयकनिकूं लोहमई मुद्गरनिकरि कूटै है। अर जे मांस आहारी पापी तिनकूं उनहीका मांस काटि खवावै है अर प्रज्वलित लोहेके गोला तिनकौं मुखमें मारि २ देहै। अर कैयकनकी विक्रिया है। कैयकनिको सूली चढ़ावै हैं अर वज्रके मुद्गरनिते मारे हैं, कई एकनिकूं कुम्भीपाकविषै डारै हैं, कैयकनिको ताता तांबा गालि २ प्यावै हैं अर कहै हैं ये मदिरा पानके फल हैं। कैयकोंको काठमें बांधकर करौतोसे चीरे हैं अर कैयकोंको कुठारोंसे काटै हैं, कैयकोंको घानीमें पेले हैं कैयकोंकी आंख काढै हैं कैयकोंकी जीभ काढे हैं वह क्रूर कैयकोंके दांत तोड़ै हैं इत्यादि नारकीनिको अनेक दुःख हैं सो अवधिज्ञानकर प्रतीन्द्र नारकीनिकी पीड़ा देख शंबूकके समझायवेको तीजी भूमि गया सो असुरकुमार जातिके देव क्रीड़ा करते थे वे तो इनके तेजसे डर गए अर शम्बूकको प्रतींद्र कहते भए—अरे पापी निर्दई

तैंने यह क्या आरम्भा जो जीवोंको दुःख देवे है। हे नीच देव! क्रूरकर्म तज क्षमा पकड़, यह अनर्थके कारण-कर्म तिनकर कहा अर यह नरकके दुःख सुनकर भय उपजे है तू प्रत्यक्ष नारकियोंको पीड़ा करे है करावे है सो तुझे त्रास नहीं यह वचन प्रतीन्द्रके सुन शंबूक प्रशांत भया, दूसरे नारको तेज न सह सके रोवते भये अर भागते भए तब प्रतीन्द्रने कही हो नारकी हो मुझसे मत डरो जिन पापोंकर नरकमें आए हो तिनसे डरो, जब या भांति प्रतीन्द्रने कही तब उनमें कैयक मनमें विचारते भए जो हम हिंसा मृषावाद परधन हरण परनारिरमण बहु आरम्भ बहु परिग्रहमें प्रवर्ते रौद्रध्यानी भए उसका यह फल है भोगोंविषै आसक्त भए क्रोधादिककी तीव्रता भई खोटे कर्म किये उससे ऐसा दुःख पाया देखो यह स्वर्गलोकके देव पुण्यके उदयसे नाना प्रकारके विलास करे हैं रमणीक विमान चढ़े जहां इच्छा होय वहांही जायं या भांति नारकी विचारते भए अर शम्बूकका जीव जो असुरकुमार उसको ज्ञान उपजा फिर रावणके जीवने प्रतींद्रसे पूछा—तुम कौन हो? तब उसने सकल वृत्तांत कहा म सोताका जीव तपके प्रभावकर सोलवें स्वर्गमें प्रतींद्र भया, अर श्रीरामचन्द्र महामुनींद्र होय ज्ञानावरण दर्शनावरण मोहिनी अंतरायनिका नाशकर केवली भए सो धर्मोपदेश देते जगतको तारते भरतक्षेत्रविषैं तिष्ठे हैं नाम गोत्र वेदनी आयुका अन्तकर परमधाम पधारेंगे अर तू विषय वासनाकर विषम भूमिविषैं पड़ा अब भी चेत, ज्यूं कृतार्थ होय, तब रावणका जीव प्रतिबोधको प्राप्त भया अपने स्वरूपका ज्ञान उपजा अशुभ कर्म बुरे जाने, मनमें विचारता भया मैं मनुष्य भव पाय अणुव्रत महाव्रत न आराधे तिससे इस अवस्थाको प्राप्त भया। हाय, हाय, मैं कहा किया जो आपको दुःखसमुद्रमें डारा। यह मोहका माहात्म्य है जो जीव आत्महित न कर सकें रावण प्रतीन्द्रको कहे देव! तुम धन्य हो विषयकी वासना तजी जिनवचनरूप अमृतको पीकर देवोंके नाथ भए। तब दयालु होयकर कही तुम भय मत करो चलो हमारे स्थानको चलो ऐसा कह याके उठायवेको भया तब रावणके जीवके शरीरकी परमाणु बिखर गई जैसे अग्निकर माखन पिगल जाय काहू समर्थ न भया जैसे दर्पणमें तिष्ठती छाया न गही जाय, तब रावणका जीव कहता

भया, हे प्रभो ! तुम दयालु हो सो तुमको दया उपजेही परन्तु इन जीवनिने पूर्वे जे कर्म उपार्जे हैं तिनका फल अवश्य भोगे हैं विषयरूप मांसका लोभी दुर्गतिकी आयु बांधे है सो आयु पर्यंत दुःख भोगवे है यह जीव कर्मोंके आधीन इसका देव क्या करें हमने अज्ञानके योगसे अशुभ कर्म उपार्जे हैं इनका फल अवश्य भोगवेंगे आप छुड़ायवे समर्थ नहीं तिससे कृपाकर वह उपदेश कहो जिसकर फिर दुर्गतिके दुःख न पावें, हे दयानिधे ! तुम परम उपकारी हो, तब देवने कही परमकल्याणका मूल सम्यक्ज्ञान है सो जिनशासन का रहस्य है अविवेकियोंको अगम्य है तीन लोकमें प्रसिद्ध है आत्मा अमूर्तिक सिद्ध समान उसे समस्त परद्रव्योंसे जुदा जाने जिनधर्मका निश्चय करे यह सम्यग्दर्शन कर्मोंका नाशक शुद्ध पवित्र परमार्थका मूल जीवोंने न पाया तातैं अनंत भव ग्रहे यह सम्यग्दर्शन अभव्योंको अप्राप्य है अर कल्याणरूप है जगतमें दुर्लभ है सकलमें श्रेष्ठ है सो जो तू आत्मकल्याण चाहे है तो उसे अङ्गीकार कर जिसकर मोक्ष पावै उससे श्रेष्ठ और नहीं न हुआ न होयगा इसीकर सिद्ध भए हैं अर होयंगे जे अरहन्त भगवानने जीवादिक नव पदार्थ भाखे हैं तिनकी दृढ़ श्रद्धा करनी उसे सम्यग्दर्शन कहिए इत्यादि वचनोंकर रावणके जीवकों सुरेंद्रने सम्यक्त्व ग्रहण कराया अर याकी दशा देख विचारता भया जो देखो रावणके भवमें याकी कहा कांति थी महासुन्दर लावण्यरूप शरीर था सो अब ऐसा होय गया जैसा नवीन वन अग्निकर दग्ध हो जाय जिसे देख सकल लोक आश्चर्यको प्राप्त होते सो ज्योति कहां गई ? बहुरि ताहि कहता भया कर्मभूमिमें तुम मनुष्य भए थे सो इन्द्रियोंके क्षुद्र सुखके कारण दुराचारकर ऐसे दुःखरूप समुद्रमें डूवे ॥

इत्यादि प्रतींद्रने उपदेशके वचन कहे, तिनको सुन कर उसके सम्यक्दर्शन दृढ़ भया अर मनमें विचारता भया कर्मोंके उदय कर दुर्गतिके दुःख प्राप्त भए तिनको भोग यहांसे छूट मनुष्य देह पाय जिन-राजका शरण गहूंगा। प्रतींद्रसे कही अहो देव ! तुमने मेरा बड़ा हित किया जो सम्यक्दर्शनमें मोहि लगाया, हे प्रतींद्र महाभाग्य ! अब तुम जावो, वहां अच्युतस्वर्गमें धर्मके फलसे सुख भोग मनुष्य होय शिवपुरकूं प्राप्त होवो, जब ऐसा कहा तब प्रतीन्द्र उसे समाधान रूप कर कर्मोंके उदयको सोचते संते सम्यक्दृष्टि

वहांसे ऊपर आया संसारकी मायासे शंकित है आतमा जाका अर्हंत सिद्ध साधु जिनधर्म्मके शरणविषैं
तत्पर है मन जाका तीन वेर पंच मेरुकी प्रदक्षिणा कर चैत्यालयोंका दर्शन कर नारकीनिके दुःखसे कंपाय-
मान है चित्त जाका स्वर्ग लोकमेंहू भोगाभिलाषी न भया मानों नारकीनिकी ध्वनि सुनै है, सोलमें स्वर्गके
देवको छठे नरक लग अवधिज्ञान कर दीखे है तीजे नरकके विषैं रावणके जीवको अर शंबूकका जीव जो
असुरकुमार देव था ताहि संबोधि सम्यक्त्व प्राप्त किया। हे श्रेणिक! उत्तम जीवोंसे पर उपकार ही बने
बहुरि स्वर्ग लोकसे भरतक्षेत्रमें श्रीरामके दर्शनको आए पवनसेहू शीघ्रगामी जो विमान तामें आरूढ़ अनेक
देवोंको संग लिये नाना प्रकारके वस्त्र पहिरे हार माला मुकुटादिक कर मंडित शक्ति गदा खड्ग धनुष
बरछी शतघ्नी इत्यादि अनेक आयुधोंको धरे गज तुरंग सिंह इत्यादि अनेक वाहनों पर चढ़े मृदंग बांसुरी
वीण इत्यादि अनेक वादित्रनिके शब्द तिन कर दशों दिशा पूर्ण करते केवलीके निकट आए। देवोंके
वाहन गज तुरंग सिंहादिक तिर्यंच नहीं देवोंकी विक्रिया है। श्रीरामको हाथ जोड़ सीस नवाय वारंवार
प्रणाम कर सीताका जीव प्रतींद्र स्तुति करता भया—हे संसारसागरके तारक! तुमने ध्यानरूप पवन कर
ज्ञानरूप अग्नि दीप्त करी, संसार रूप वन भसम किया अर शुद्ध लेश्या रूप त्रिशूल कर मोहरिपु हना, वैरा-
ग्यरूप वज्र कर दृढ़ स्नेहरूप पिंजरा चूर्ण किया। हे नाथ! हे मुनीन्द्र! हे भवसूदन! संसाररूप वनसे जे
डरे हैं तिनको तुम शरण हो। हे सर्वज्ञ कृतकृत्य जगतगुरु पाया है पायवे योग्य पद जिन्होंने हे प्रभो!
मेरी रक्षा करो संसारके भ्रमणसे अतिव्याकुल है मन मेरा तुम अनादि निधन जिनशासनका रहस्य जान
प्रबल तप कर संसार सागरसे पार भए, हे देवाधिदेव! यह तुमको कहा युक्त? जो मुझे भववनमें तज आप
अकेले विमल पदको पधारे तब भगवान् कहते भए हे प्रतींद्र! तू राग तज जे वैराग्यमें तत्पर हैं तिन ही
को मुक्ति है। रागी जीव संसारमें डूबे है जैसे कोई शिलाको कंठमें बांध भुजावों कर नदीको नहीं तिर
सके तैसे रागादिक भार कर चतुर्गतिरूप नदी न तिरी जाय, जे ज्ञान वैराग्य शील संतोषके धारक हैं वेई
संसारको तिरे हैं जे श्रीगुरुके वचन कर आत्मानुभवके मार्ग लगे वेई भव भ्रमणसे छूटें और उपाय नहीं

काहूका भी ले जाया कोई लोकशिखर न जाय एक वीतराग भावी हीसे जाय। इसीभांति श्रीराम भगवान् सीताके जीवको कहते भए, सो यह वार्ता गौतमस्वामीने श्रेणिकसे कही बहुरि कहते भए हे नृप ! सीताके जीव प्रतीन्द्रने जो केवलीसे पूछी अर उनने कही सो तू सुन, प्रतीन्द्रने पूछी हे नाथ ! दशरथादिक कहां गए अर लव अंकुश कहां जावेंगे? तब भगवान्ने कही दशरथ कौशल्या सुमित्रा केकई सुप्रभा अर जनकका भाई कनक यह सब तपके प्रभाव कर तेरहमें देवलोक गए हैं यह सब ही समान ऋद्धिके धारी देव हैं अर लवअंकुश महाभाग्य कर्म रूप रजसे रहित होय विमल पदको इसही जन्मसे पावेंगे, इस भांति केवलीकी ध्वनि सुन भामंडलकी गति पूछी, हे प्रभो। भामंडल कहां गया, तब आप कहते भए हे प्रतीन्द्र। तेरा भाई राणी सुन्दरमालिनी सहित मुनिदानके प्रभाव कर देवकुरु भोगभूमिमें तीन पल्यकी आयुके भोक्ता भोगभूमिया भए तिनके दानकी वार्ता सुन—अयोध्यामें एक बहु कोटि धनका धनी सेठ कुलपति उसके मकरा नामा स्त्री जिसके पुत्र राजावोंके तुल्य पराक्रमी सो कुलपतिने सुनी सीताको वनमें निकासी तब उसने विचारी वह महागुणवती शीलवती सुकुमार अंग निर्जन वनमें कैसे अकेली रहेगी। धिक्कार है संसारकी चेष्टाको, यह विचार दयालुचित्त होय द्युति भट्टारकके समीप मुनि भया अर उसके दोय पुत्र एक अशोक दूजा तिलक यह दोनों मुनि भए सो द्युतिभट्टारक तो समाधि मरणकर नवमग्रैवेयकमें अहिमिन्द्र भए अर यह पिता पुत्र तीनों मुनि ताम्रचूड़नामा नगर वहां केवलीको वंदनाको गए सो मार्गमें पचास योजनकी एक अटवी वहां चतुर्मासिक आय पड़ा तब एक वृक्षके तले तीनों साधु विराजे मानों साक्षात् रत्नत्रयही हैं वहां भामण्डल आय निकसा अयोध्या आवे था सो विषम वनमें मुनिनिको देख विचार किया, यह महापुरुष जिनसूत्रकी आज्ञा प्रमाण निर्जन वनमें विराजे चौमासे मुनियोंका गमन नहीं अब यह आहार कैसे करें तब विद्याकी प्रबल शक्ति कर निकट एक नगर बसाया जहां सब सामग्री पूर्ण बाहिर नाना प्रकारके उपवन सरोवर अर धानके क्षेत्र अर नगरके भीतर बड़ी बस्ती महासंपत्ति, चार महीना आप भी परिवार सहित उस नगरमें रहा अर मुनियोंके वैयावृत किये, वह वन, ऐसा था जिसमें

जल नहीं सो अद्भुत् नगर बसाया, जहां अन्नजलको बाहुल्यता सो नगरमें मुनिनिका आहार भया अर और भी दुखित सुखित जीवोंको भांति भांतिके दान दिए, अर सुन्दरमालिनो राणी सहित आप मुनीको अनेक वार निरंतराय आहार दिया चतुर्मास पूर्ण भए मुनि विहार करते भए अर भामंडल अयोध्या आय फिर अपने स्थानक गया एक दिन सुन्दरमालिनी राणी सहित सुखसे शयन करे था सो महल पर विजुरी पड़ी राजा राणी दोनों मरकर मुनिदानके प्रभावसे सुमेरु पर्वतकी दाहिनी ओर देवकुरु भोग भूमि वहां तीन पल्यके आयुके भोक्ता युगल उपजे, सो दानके प्रभावसे सुख भोगवे हैं जे सम्यक्त रहित हैं अर दान करे हैं सो सुपात्र दानके प्रभावसे उत्तमगतिके सुख पावे हैं सो यह पात्रदान महासुखका दाता है यह बात सुन फिर प्रतीन्द्रने पूछी हे नाथ। रावण तीजो भूमिसे निकस कहां उपजेगा अर मैं स्वर्गसे चयकर कहां उपजूंगा मेरे अर लक्ष्मणके अर रावणके केते भव बाकी हैं सो कहो॥

तब सर्वज्ञदेवने कही—हे प्रतीन्द्र सुन, वे दोनों विजयावती नगरीमें सुनंद नामा कुटुम्बी सम्यकदृष्टि उसके रोहिणी नामा भार्या उसके गर्भविषैं अरहदास ऋषिदास नामा पुत्र होवेंगे महा गुणवान निर्मलचित्त दोनों भाई उत्तम क्रियाके पालक श्रावकके व्रत आराध समाधि मरणकर जिनराजका ध्यान धर स्वर्गविषैं देव होयंगे तहां सागरान्त पर्यन्त सुख भोगि स्वर्गसे चयकर बहुरि वाही नगरीविषैं वड़े कुलविषैं उपजेंगे सो मुनिनिको दान देकर हरिक्षेत्र जो मध्यम भोगभूमि वहां युगलिया होय दोय पल्यका आयु भोग स्वर्ग जावेंगे बहुरि उस ही नगरीविषैं राजा कुमारकीर्ति राणी लक्ष्मी तिनके महायोधा जयकांत जयप्रभ नामा पुत्र होवेंगे बहुरि तपकर सातवें स्वर्ग उत्कृष्ट देव होवेंगे देवलोकके महासुख भोगेंगे अर तू सोलवां अच्युत स्वर्ग वहांसे चयकर या भरतक्षेत्रविषैं रत्नस्थलपुर नामा नगर वहां चौदह रत्नका स्वामी षट् खंड पृथिवीका धनी चक्रनामा चक्रवर्ती होयगा तब वे सातवें स्वर्गसे चयकर तेरे पुत्र होवेंगे रावणके जीवका नाम तो इन्द्ररथ अर वसुदेवके जीवका नाम मेघरथ दोनों महाधर्मात्मा होवेंगे परस्पर उनमें अतिस्नेह होगा अर तेरा उनसे अतिस्नेह होयगा। जिस रावणने नीतिसे तीन खण्ड पृथिवीका अखण्ड राज्य किया

अर ये प्रतिज्ञा जन्मपर्यंत निबाही जो परस्त्री मोहि न इच्छे ताहि मैं न सेऊं सो रावणका जीव इन्द्ररथ धर्मात्मा कैयक श्रेष्ठ भव धार तीर्थंकर देव होयगा तीनलोक उसको पूजेंगे अर तू चक्रवर्ती राज्यपद तज मुनिव्रतधारी होय पंचोत्तरोंविषैं वैजयन्त नामा विमान तहां तपके प्रभावसे अहमिन्द्र होवेगा तहांसे चयकर रावणका जीव तीर्थंकर उसके प्रथम गणधर होय निर्वाण पद पावेगा। यह कथा श्रीभगवान् राम केवली तिनके मुख प्रतींद्र सुनकर अतिहर्षित भया बहुरि सर्वज्ञदेवने कही हे प्रतींद। तेरा चक्रवर्ती पदका दूजा पुत्र मेघरथ सो कैयक महाउत्तम भवधर धर्मात्मा पुष्पकर द्वीपके महा विदेह क्षेत्रविषैं शतपत्र नामा नगर तहां पञ्चकल्याणकका धारक तीर्थंकर देव चक्रवर्ती पदको धरे होयगा संसारका त्यागकर केवल उपाय अनेकोंको तारेगा अर आप परमधाम पधारेगा, ये वासुदेवके भव तोहि कहे अर मैं अब सात वर्ष विषैं आयु पूर्णकर लोक शिखर जाऊगा जहांसे बहुरि आना नहीं, अर जहां अनंत तीर्थंकर गए अर जावेंगे अनंत केवली तहां पहुंचे जहां ऋषभादि भरतादि विराजे हैं अविनाशी पुर त्रैलोक्यके शिखर हैं, जहां अनन्तसिद्ध है, वहां मैं तिष्ठूंगा ये वचन सुन प्रतीन्द्र पद्म नाम जे श्रीरामचन्द्र सर्वज्ञ वीतराग तिनको बार बार नमस्कार करता भया अर मध्यलोकके सब तीर्थ वन्दे भगवानके कृत्रिम अकृत्रिम चैत्यालय अर निर्वाणक्षेत्र वहां सर्वत्र पूजाकर अर नन्दीश्वरद्वीपविषैं अञ्जनिगिरि दधिमुख रतिकर तहां बड़े निधानसे अष्टाह्निकाकी पूजा करी देवाधिदेव जे अरहंत सिद्ध तिनका ध्यान करता भया, अर केवलीके वचन सुन ऐसा निश्चय भया जो मैं केवली होय चुका अल्प भव हैं अर भाईके स्नेहसे भोग भूमिविषै जहां भामण्डलका जीव है तहां उसे देखा अर उसको कल्याणका उपदेश दिया अर बहुरि अपना स्थान सोलवां स्वर्ग वहां गया जाके हजारों देवांगना तिनसहित मानसिक भोग भोगता भया। श्रीरामचन्द्रका सतरह हजार वर्षका आयु सोलह धनुषकी ऊंची काया कैयक जन्मके पापोंसे रहित होय सिद्ध भये वे प्रभु भव्य जीवोंको कल्याण करो जन्म जरा मरण महारिपु जीते परामात्मा भये जिनशासनविषैं प्रकट है महिमा जिनकी जन्मजरा मरणका विच्छेदकर अखंड अविनाशी परम अतींद्रिय सुख पाया सुर असुर मुनिवर तिनके जे अधिपति

तिनकर सेयवे योग्य नमस्कार करवे योग्य दोषोंके विनाशक पच्चीस वर्ष तपकर मुनिव्रत पाल केवली भये सो आयु पर्यंत केवली दशाविधि भव्योंको धर्मोपदेश देय तीन भवनका शिखर जो सिद्धपद वहां सिधारे।

सिद्धपद सकल जीवोंका तिलक है राम सिद्ध भए तुम रामको सीस नवाय नमस्कार करो राम सुर-नर मुनियोंकर आराधिवे योग्य हैं शुद्ध हैं भाव जिनके संसारके कारण जे रागद्वेष मोहादिक तिनसे रहित हैं परम समाधिके कारण हैं अर महामनोहर हैं, प्रतापकर जीता है तरुण सूर्यका तेज जिनने अर उन जैसो शरदकी पूर्णमासीके चन्द्रमामें कांति नहीं सर्व उपमा रहित अनुपम वस्तु हैं अर स्वरूप जो आत्मरूप उसमें आरूढ हैं, श्रेष्ठ हैं चरित्र जिनके, श्रीराम यतीश्वरोंके ईश्वर देवोंके अधिपति प्रतीन्द्रको मायासे मोहित न भए जीवोंके हितू परम ऋद्धिकर युक्त अष्टम बलदेव पवित्र शरीर शोभायमान अनन्त वीर्यके धारी अतुल महिमाकर मण्डित निर्विकार अठारह दोषकर रहित अष्टादशसहस्र शीलके भेद तिनकर पूर्ण अति उदार अति गम्भीर ज्ञानके दीपक तीन लोकमें प्रकट है प्रकाश जिनका अष्टकर्मके दग्ध करणहारे गुणोंके सागर क्षोभरहित सुमेरुसे अचल धर्मके मूल कषाय रूप रिपुके नाशक समस्त विकल्परहित महानिर्द्वन्द्व जिनेन्द्रके शासनका रहस्य पाय अन्तरात्मासे परमात्मा भए उनने त्रैलोक्यपूज्य परमेश्वरपद पाया तिनको तुम पूजो धोय डारे हैं कर्मरूप मल जिनने, केवलज्ञान केवल दर्शनमई योगीश्वरोंके नाथ सर्व दुःखके दूर करणहारे मन्मथके मथनहारे तिनको प्रणाम करो, यह श्रीबलदेवका चरित्र महामनोज्ञ जो भाव धर निरन्तर वांचें सुनें पढ़ें पढ़ावें शङ्कारहित होय महा हर्षका भरा रामकी कथाका अभ्यास करै तिनके पुण्यकी वृद्धि होय अर वैरी खड्ग हाथमें लिए मारिवेको आया होय सो शान्त होय जाय, या ग्रंथके श्रवणसे धर्मके अर्थी इष्टधर्मको लहैं यशके अर्थी यशको पावें राज्य भ्रष्ट हुए यदि राज्य कामना होय तो राज्य पावें यामें संदेह नाहीं, इष्ट संयोगका अर्थी इष्ट संयोग लहै धनका अर्थी धन पावे, जीतका अर्थी जीत पावे स्त्रीका अर्थी सुन्दर स्त्री पावे, लाभका अर्थी लाभ पावे, सुखका अर्थी सुख अर काहूका कोई वल्लभ विदेश गया होय अर उसके आयवेकी आकुलता होय सो वह सुखसे

घर आवै जो मनविषैं अभिलाषा होय सोही सिद्ध होय सर्व व्याधि शान्त होय ग्रामके नगरके वनके देव जलके देव प्रसन्न होंय अर नवग्रहोंकी बाधा न होय, क्रूर ग्रह सौम्य होय जायं अर जे पाप चितवनमें न आवैं वे विलाय जायं अर सकल अकल्याण राम कथाकर क्षय होय जायं, अर जितने मनोरथ हैं वे सव राम कथाके प्रसादसे पावैं अर वीतराग भाव दृढ़ होय उसकर हजारां भवके उपार्जे पापोंको प्राणी दूर करे कष्टरूप समुद्रको तिर सिद्धपद शीघ्र ही पावै। यह ग्रन्थ महापवित्र है, जीवको समाधि उपजावनेका कारण है नाना जन्ममें जीवने पाप उपार्जे महा क्लेशके कारण तिनका नाशक है और नाना प्रकारके व्याख्यान तिनकर संयुक्त है जिसमें बड़े २ पुरुषोंकी कथा भव्यजीवरूप कमलोंको प्रफुल्लित करणहारा है सकल लोककर नमस्कार करिवे योग्य श्रीवर्धमान भगवान उनने गौतमसे कहा अर गौतमने श्रेणिकसे कहा। याही भांति केवली श्रुतकेवली कहते भए। रामचन्द्रका चरित्र साधुवोंकी समाधिकी वृद्धिका कारण सर्वोत्तम महामंगलरूप सो मुनिनिका परिपाटीकर प्रकट होता भया। सुन्दर है वचन जिसमें समीचीन अर्थको धरे अति अद्भुत इन्द्रगुरु नामा मुनि तिनके शिष्य दिवाकरसेन तिनके शिष्य लक्ष्मणसेन तिनके शिष्य रविषेण तिनने जिनआज्ञा अनुसार कहा। यह रामका पुराण सम्यग्दर्शनकी सिद्धिका कारण महाकल्याणका कर्ता निर्मल ज्ञानका दायक विचक्षण जीवोंको निरंतर सुनिवे योग्य है अतुल पराक्रमी अद्भुत आचरणके धारक महासुकृती जे दशरथके नंदन तिनकी महिमा कहां लग कहूं इस ग्रन्थमें बलभद्र नारायण प्रतिनारायण तिनका विस्ताररूप चरित्र है। जो यामें बुद्धि लगावे तो अकल्याणरूप पापोंको तजकर शिव कहिये मुक्ति उसे अपनी करै जोव विषयकी वांछाकर अकल्याणको प्राप्त होय हैं। विषयाभिलाष कदाचित् शांतिके अर्थ नहीं, देखो विद्याधरनिका अधिपति रावण परस्त्रीकी अभिलाषाकर कष्टको प्राप्त भया कामके रागकर हना गया ऐसे पुरुषोंकी यह दशा है तो और प्राणी विषय वासनाकर कैसे सुख पावें, रावण हजारां स्त्रियों कर मण्डित निरन्तर सुख सेवे था तृप्त न भया परदाराकी कामनाकर विनाशको प्राप्त भया। इन व्यसनों कर जीव कैसे सुखी होय जो पापी परदाराका सेवन करे सो कष्टके सागरमें पड़े, अर

श्रीरामचन्द्र महा शीलवान परदारा पराङ्मुख जिनशासनके भक्त धर्मानुरागी वे वहुतकाल राज्य भोग संसारको असार जान वीतरागके मार्गमें प्रवर्ते परम पदको प्राप्त भए अर भी जे वीतरागके मार्गमें प्रवर्तेंगे वे शिवपुर पहुंचेंगे इसलिए जे भव्य जीव हैं वे जिनमार्गका दृढ़प्रतीति कर अपनी शक्ति प्रमाण व्रतका आचरण करो जो पूर्णशक्ति होय तो मुनि होवो अर न्यून शक्ति होय तो अणुव्रतके धारक श्रावक होवो। यह प्राणी धर्म फलकर स्वर्ग मोक्षके सुख पावे हैं अर पापके फलसे नरक निगोदके दुःख पावे हैं यह निःसंदेह जानो अनादि कालकी यही रीति है धर्म सुखदाई अधर्म दुखदाई पाप किसे कहिए अर पुण्य किसे कहिए सो उरविषे धारो जेते धर्मके भेद हैं तिनविषैं सम्यक्त्व मुख्य है अर जितने पापके भेद हैं तिनमें मिथ्यात्व मुख्य है सो मिथ्यात्व कहा ? अतत्त्वकी श्रद्धा अर कुगुरु कुदेव कुधर्माका आराधन परजीवको पीड़ा उपजावना अर क्रोध मान माया लोभकी तीव्रता अर पांच इन्द्रियोंके विषय सप्त व्यसनका सेवन अर मित्रद्रोह कृतघ्न विश्वासघात अभक्ष्यका भक्षण अगम्यविषैं गमन मर्मका छेदक वचन सुरापान इत्यादि पापके अनेक भेद हैं ते सब तजने अर दया पालनी सत्य बोलना चोरी न करनी शील पालना तृष्णा तजनी काम लोभ तजने शास्त्र पढ़ना काहूको कुवचन न कहना गर्व न करना प्रपंच न करना अदेखसका न होना शान्त भाव धारना पर उपकार करना परदारा परधन परद्रोह तजना परपीड़ाका वचन न कहना बहु आरंभ बहु परिग्रहका त्याग करना दान देना तप करना परदुःखहरण इत्यादि जो अनेक भेद पुण्यके हैं वे अङ्गीकार करने, अहो प्राणी हो सुखदाता शुभ है अर दुःखदाता अशुभ है दारिद्र दुःख रोग पीड़ा अपमान दुर्गति यह सब अशुभके उदयसे होय हैं अर सुख संपत्ति सुगति यह सब शुभके उदयसे होय हैं। शुभ अशुभही सुख दुःखके कारण हैं अर कोई देव दानव मानव सुख दुःखका दाता नहीं अपने अपने उपार्जे कर्माका फल सब भोगवे हैं सब जीवोंसे मित्रता करना किसीसे वैर न करना किसीको दुःख न देना सब ही सुखी होंं यह भावना मनमें धरना, प्रथम अशुभको तज शुभमें आवना बहुरि शुभाशुभसे रहित होय शुद्ध पदको प्राप्त होना, बहुत कहिवे कर क्या ? इस पुराणके श्रवणकर एक शुद्ध सिद्ध पदमें आरूढ़ होना अनेक भेद

कर्मोंका विलय कर आनन्द रूप रहना है। हो पंडित हो! परम पदके उपाय निश्चय थकी जिनशासनमें कहे हैं वे अपनी शक्ति प्रमाण धारण करो जिसकर भवसागरसे पार होवो यह शास्त्र अति मनोहर जीवोंको शुद्धताका देनहारा रवि समान सकल वस्तुका प्रकाशक है सो सुनकर परमानंद स्वरूपमें मग्न होवो, संसार असार है जिन धर्म सार है जिनकर सिद्ध पदको पाइये है सिद्धपद समान और पदार्थ नाहीं जब श्रीभगवान त्रैलोक्यके सूर्य वर्द्धमान देवाधिदेव सिद्ध लोकको सिधारे तब चतुर्थकालके तीन वर्ष साढ़े आठ महीना शेष थे सो भगवानको मुक्त भए पीछे पंचम कालमें तीन केवली अर पांच श्रुतकेवली भए सो वहां लग तो पुराण पूर्ण था, जैसे भगवान्ने गौतम गणधरसे कहा अर गौतमने श्रेणिकसे कहा वैसा श्रुतकेवलीनिने कहा श्रीमहावीर पीछे बासठ वर्ष लग केवलज्ञान रहा, अर केवली पीछे सौ वर्ष तक श्रुतकेवली श्रीभद्रबाहु स्वामी तिनके पीछे कालके दोषसे ज्ञान घटता गया तब पुराणका विस्तार न्यून होता भया, श्रीभगवान महावीरको मुक्ति पधारे बारह सौ साढ़े तीन वर्ष भए तब रविषेणाचार्यने अठारह हजार अनुष्टुपश्लोकोंमें व्याख्यान किया। यह रामका चरित्र सम्यक्त्वका कारण है केवली श्रुतकेवली प्रणीत सदा पृथिवीमें प्रकाश करो जिनशासनके सेवक देव जिनभक्तिविषें परणाय जिनधर्मी जीवोंकी सेवा करें हैं जे जिनमार्गके भक्त हैं तिनके सभी सम्यक् दृष्टि देव आवे हैं नानाविधि सेवा करे हैं महा आदर संयुक्त सर्व उपायकर आपदामें सहाय करें हैं अनादि कालसे सम्यक्दृष्टि देवोंकी ऐसीही रीति है। जैन शास्त्र अनादि है काहूका किया नहीं व्यंजन स्वर यह सब अनादि सिद्ध हैं रविषेणाचार्य कहे हैं मैंने कछु नहीं किया शब्द अर्थ अकृत्रिम हैं अलंकार छंद आगम निर्मलचित्त होय ताके जानने या ग्रन्थविषें धर्म अर्थ काम मोक्ष सब हैं अठारह हजार तेइस श्लोकका प्रमाण पद्मपुराण संस्कृत ग्रन्थ है इसपर यह भाषा भई सो जयवंत होवे जिनधर्मकी वृद्धि होवे राजा प्रजा सुखी होवें ॥

इति श्रीरविषेणाचार्यविरचित महापद्मपुराण भाषावचनिकाविषैं मोक्षप्राप्तिका वर्णन करनेवाला एकसौ तेईसवां पर्व पूर्ण भया ॥१२३॥

भाषाकारका परिचय ॥

चौपाई—जम्बूद्वीप सदा शुभथान । भरतक्षेत्र ता माहिं प्रमाण । उसमें आर्यखंड पुनीत । बसें ताहिमें लोक विनीत ॥ १ ॥ तिसके मध्य ढूंढार जु देश । निवसें जैनी लोक विशेष । नगर सवाई जयपुर महा । तिसकी उपमा जाय न कहा ॥ २ ॥ राज्य करे माधवनृप जहां । कामदार जैनी जन तहां । ठौर ठौर जिन मन्दिर बने । पूजें तिनको भविजन घने ॥ ३ ॥ बसें महाजन नाना जाति । सेवैं जिनमारग बहुभांति ॥ रायमल्ल साधर्मी एक । जाके घटमें स्वपर विवेक ॥ ४ ॥ दयावंत गुणवंत सुजान । पर उपकारी परम निधान ॥ दौलतराम सु ताको मित्र । तासों भाष्यो वचन पवित्र ॥ ५ ॥ पद्मपुराण महाशुभ ग्रन्थ । तामें लोकशिखरको पंथ ॥ भाषारूप होय जो येह । बहुजन बांच करें अतिनेह ॥ ६ ॥ ताके वचन हियेमे धार । भाषा कीनी श्रुतिअनुसार ॥ रविषेणाचारज कृतसार । जाहि पढ़ै बुधिजन गुणधार ॥ ७ ॥ जिनधर्मिनकी आज्ञा लेय । जिनशासनमांही चित देय ॥ आनन्दसुतने भाषा करी । नन्दो विरदो अतिरस भरी ॥ ८ ॥ सुखी होहु राजा अर लोक । मिटो सबनके दुख अरु शोक । वरतो सदा मंगलाचार । उतरो बहुजन भवजल पार ॥ ९ ॥ सम्वत् अष्टादश शत जान । ता ऊपर तेईस बखान (१८२३) शुक्लपक्ष नवमी शनिवार । माघमास रोहिणी ऋख सार ॥ १० ॥

दोहा—ता दिन सम्पूरण भयो, महा ग्रन्थ सुखदाय । चतुरसंघ मंगल करो. बढे धर्म जिनराय ॥

इति श्रीपद्मपुराणजी भाषा समाप्त ।